



अध्यात्मरामायणसंस्कृत

उमामहेश्वरसम्वाद

भाषाटीका सहित

जिसमें

श्रीसच्चिदानन्द आनन्दकन्द अविकारी सन्तसुखकारी अवि-
नाशी सुखराशी श्रीरामचन्द्रादि चारोंभ्राताओं की बाल-
लीला, राम लक्ष्मण सीता के बनगमन में रामकरके
ससैन्य खरदूषण बालि रावण कुम्भकर्ण मेघनादादि
वध पुनि अयोध्यागमनमें सीतापरित्याग, लवकुशो-
त्पत्ति तथा रामाश्वमेधमें सीताभूमिप्रवेश, पुनि
रामचन्द्रजीका अयोध्यावासियोंसहित परमधाम
गमनादि अनेक कथा वर्णित हैं

जिसको

श्रीयुतमुंशीनवलकिशोरजीकी आज्ञानुसार फ़र्रुख़ाबादनिवासि
बुधतुलारामसूनु पण्डितवर उमादत्तत्रिपाठी स्वर्गवासीनेप्रति
श्लोकका अक्षरार्थ टीका विवर्णसहित सरलभाषामेंकियाहै
रामचरित्र श्रवणानुरागियों के उपकारार्थ
बाजपेयि पण्डित रामरत्नके प्रबन्ध से

तीसरीबार

लखनऊ
मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छापीगई
अप्रेल सन् १८९३ ई० ॥
३६ जुज़ ३ वर्क



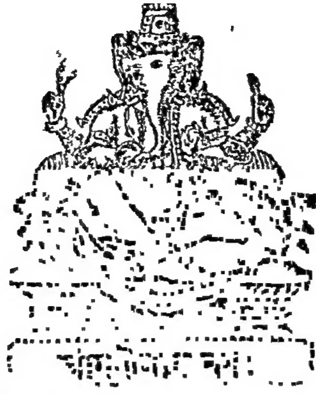
भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र ॥

प्रकटहो कि यह पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृति सांख्यादि सारभूतपरमरहस्य गीताशास्त्रका सर्वविद्यानिधान सौशील्यविनयौदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्यादि गुणसम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुनको परम अधिकारी जानके हृदयजनित मोहनाशार्थ सबप्रकार अपारसंसार निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचर कराया है वही उक्त भगवद्गीता वज्रवत् वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको अच्छे २ शास्त्रवेत्ता अपनी बुद्धिसे पारनहीं पासक्ते तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठन पाठन करनेकी सामर्थ्य है वहकब इसके अन्तराभिप्रायको जानसक्तेहैं--और यह प्रत्यक्षही है कि जबतक किसी पुस्तक अथवा किसी वस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धिमें न भासितहो तबतक आनन्द क्योंकर मिलै इसप्रकार सम्पूर्ण भारत निवासी श्रीमद्भगवत्पदाब्ज रसिकजनोंके चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ संतत धर्म्मधुरीण सकल कलाचातुरीण सर्वविद्याविलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमान् मुंशीनवलकिशोरजी (सी, आई, ई,) ने बहुतसाधन व्ययकर फर्रुखाबाद निवासि पण्डित उमादत्तजीसे इस मनोरंजन वेद वेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तकको श्रीशंकराचार्य्य निर्मित भाष्यानुसार संस्कृतसे सरल देशभाषामें तिलक रचाय नवलभाष्य आख्यसे प्रभातकालिक कमल सरिस प्रफुल्लित करादियाहै कि जिसको भाषामात्रके जाननेवाले पुरुषभी जानसक्तेहैं ॥

सारस्वत सटीकका विज्ञापनपत्र ॥

पण्डित लोगोंको उचितहै कि प्रथम जिस समय छोटे २ विद्यार्थी उनके पास पढ़नेको आवें उनको अत्यन्त आदरसे अपने पुत्रके समान समझकर बहुत लाड प्यारसे उनको अकारादि सबस्वरों और ककारादि सब व्यंजनोंको पहिचनवाकर लिखावें पढ़ावें और जिससमय छोटे बालकोंके खेलनेका समय योग्यसमझें थोडीदेरके लिये छुट्टीभी देदिया करें जिससे बालक आनन्दसे पढ़ें इसप्रकारसे बहुतशीघ्र ऐसी सामर्थ्य करादेवें कि जिससे बालकों

इत्यध्यात्म रामायणसटीक सूचीपत्रम् ॥



अथ अध्यात्मरामायण ॥

बालकाण्ड ॥

भाषाटीकासहित ॥

दोहा ॥ रामायणकीबिधिकही नारदसेश्रुतिसार ।
सूतकहीपुनिऋषिनसे महिमाअमितअपार १

सोरठा ॥ प्रथमकह्योसमुझाय सूतशौनकादिकनप्रति ॥
कह्योजोबिधिबिलगायअध्यातमरघुबरचरित १

दोहा ॥ रामायण अध्यातमहि उमादत्त भूदेव ॥
नरभाषाभूषितकरत सुमिरिगजाननदेव १
जोहियमेंरघुबरचरित दीपजगावतमोर ॥
सोजगमेंयुगयुगजियो मुन्शीनवलकिशोर २ ॥

अथभूमिका ॥

इस अध्यात्मरामायण का मुख्य प्रयोजन तो यह है कि सकल दुःखों का कारण जोअविद्या अर्थात् अज्ञान तिसकी निवृत्तिद्वारा परमानन्द प्राप्तिहोना औ धन पुत्र ऐश्वर्यादिकों की प्राप्ति तौ प्रासंगिक फल है अर्थात् जैसे कोई मनुष्य किसी ग्रामकोजावै उसको ग्रामकी प्राप्ति तौमुख्यफल कहाजाता है और मार्ग में तृण आदि पदार्थोंका स्पर्श प्रासंगिक कहलाताहै तैसेही सच्चिदानन्दघन श्रीरामस्वरूप ज्ञानके अनन्तर उसमें रमणहोना यहमुख्यफलहै औ धन पुत्र राज्य आदि भोगोंकी प्राप्ति प्रासंगिकहै जोअत्यन्तगुप्त अध्यात्मरामायणज्ञान श्रीमहादेवजीने पार्वतीजीसे कहा सोईज्ञानब्रह्माजी अपनेप्रियपुत्र नारदजीको उपदेश करतेहुये नारदजीके द्वारा व्यासबाल्मीकि आदि ऋषियोंको प्राप्तहुआ ऋषियों ने सूतजीसे कहा सूतजीने नैमिषारण्यमें शौनक आदि ऋषियोंको उपदेशकिया उनऋषियोंनेभी अपने शिष्योंसे कहा इसप्रकार यह दिव्य अध्यात्मरामायण

ज्ञानमनुष्यलोकमें प्रकटहुआ सो सबप्रकार स्पष्टकरनेको ग्रन्थका प्रारंभकरतेहैं और जबग्रन्थ प्रारंभकियाजाताहै तौ उसके आदिमें मंगलवाचकशब्द लिखना चाहिये यहरीति श्रेष्ठपुरुषों की सनातन चलीआतीहै इसका प्रयोजन यह है कि जिसग्रंथके आदि मध्य और अन्तमें मंगलहोताहै वहग्रंथलोकमें विख्यातहोता है औउसग्रन्थकी निर्विघ्नपूर्वक समाप्तिहोतीहै और उसकेपढ़नेवालोंकी सदा-वृद्धिहोतीहै सो वह मंगल तीनप्रकारका होताहै एकतो नमस्कारात्मक अर्थात् जिसग्रन्थ के आदिमें अपने इष्टदेवका नमस्कार लिखाहोवै और दूसरावस्तु निर्देशात्मक मंगल होताहै अर्थात् जहां आदिमें भगवान्का नामआदिस्वरूप का निर्देशहोय और तीसरा आशीर्वादात्मक मंगलहोताहै अर्थात् जहां आदि में आशीर्वाद का सूचक शब्दहोय तिसमें यहां अध्यात्मरामायण ग्रन्थके आ-दिमें कवि प्रथम श्लोककरिकै नमस्कारात्मकमंगल करतेहैं ॥

अप्रमेयत्रयातीतनिर्मलज्ञानमूर्त्तये ॥ मनोगिरांविदूरायदक्षिणामूर्त्तयेनमः १ सूतउवाच ॥ कदाचिन्नारदोयोगीपरानुग्रहवाञ्छया ॥ पर्यटन्सकलाँल्लोकान्सत्यलोकमुपागमत् २ ॥

अप्रमेयेति नहीं जिसका प्रमाण होसकै अर्थात् इतनाहै ऐसाजो मनमें न आसकै उसकोअप्रमेय कहतेहैं ऐसाजो तीनोंगुणोंसे परे जोनिर्मलज्ञान अर्थात् मायारूप मल जिसमें नहोवै ऐसाजो शुद्धज्ञान वही है मूर्तिस्वरूप जिसका औ इसीसे मन औरवाणी इनसेदूर अर्थात्इनकेविषय न होसके ऐसेजोदक्षिणामूर्त्ति सदाशिव तिनके अर्थ मेरा नमस्कारहै इसकाअभिप्राय यहहै कि जोत्रि-गुण पदार्थहै वहीमन और बाणीका गोचर होसक्ता है सदाशिव तो ब्रह्मरूप होनेसे मनऔर वाणी इनकेअगोचर हैं अथवा अप्रमेय यहपद त्रयका बिशेषण है तबऐसा अर्थहुआ कि अप्रमेय प्रमाण करनेको अशक्य जोत्रयनाम माया जीव ईश्वरइनको अतिक्रमण करनेवाला जो निर्मल ज्ञानशुद्ध ब्रह्मवहीस्व रूप जिसका ऐसेजो दक्षिणामूर्त्ति सदाशिव तिनको नमस्कारहै १ अबसूतजी-शौनकादि ऋषियोंसे कथा कहतेहैं किसी समय में योगाभ्यासमें तत्पर ऐसे जो नारदजी सो जीवोंके कल्याणकी इच्छा करिकै सब लोकोंमें विचरते सत्य-लोकमें आतेहुये सत्यलोकभी ब्रह्मलोकके अन्तर्गत है इससे यह शंकानहींक-रनी कि ब्रह्मानारदका संबाद तो ब्रह्मलोकमें होना चाहिये सत्यलोक कैसे कहा इसमें प्रमाणबाल्मीकीयके बालकाण्ड प्रथम सर्ग में ऐसाकहाकि ॥ रा-मोराज्यमुपासित्वाब्रह्मलोकंप्रयास्यतीति २ ॥

तत्रदृष्ट्वामूर्तिमद्भिश्छन्दोभिःपरिवेष्टितम् ॥ बालार्कप्रभयासस्य

गभासयंतंसभागृहम् ३ मार्कण्डेयादिमुनिभिःस्तूयमानंमुहुर्मुहुः ॥ सर्वार्थगोचरज्ञानंसरस्वत्यासमन्वितम् ४ चतुर्मुखंजगन्नाथंभक्ताभीष्टफलप्रदम् ॥ प्रणम्यदण्डवद्भक्त्यातुष्टावमुनिपुङ्गवः ५ ॥

तिस सत्यलोक में मुनियोंमें श्रेष्ठ जो नारदजी सो ब्रह्माजी को देखिकै बड़ी भक्तिसे दंडवत्प्रणाम कर स्तुति करनेलगे अब ब्रह्माजीका वर्णन करतेहैं जैसे कुछ नारदजीने देखाहै कैसे ब्रह्माजी हैं मूर्त्तिको धारणकरेहुये जो संपूर्णवेदसो जिनका सेवन कररहेहैं औ बालसूर्यके समान कान्ति करिकै उस अपनी सभा को प्रकाशित कररहेहैं ३ और मार्कण्डेयजीको आदिलैकै सब मुनीश्वर हाथजोड़े जिनकी स्तुतिकररहे हैं औ वेद आदि सब शास्त्र औ जे लौकिकपदार्थहैं तिनसबोंके जाननेवालेहैं औ सरस्वतीदेवी करिकै युक्तहैं ४ औ चारमुखों करिकैशोभितहैं औ सबजगत्के स्वामी हैं औ भक्तोंको अभीष्टफलोंके देनेवालेहैं अर्थात् जिसभक्तकी जैसीकामना है तैसो तिसकी पूर्णकररहे हैं ऐसे ब्रह्माजीकी नारदजी स्तुति करतेहुये ५॥

सन्तुष्टस्तंमुनिम्प्राहस्वयंभूर्वैष्णवोत्तमम् ॥ किम्प्रष्टुकामस्त्वमसितद्वदिष्यामितेमुने ६ इत्याकर्ण्यवचस्तस्यमुनिर्ब्रह्माणमब्रवीत् ॥ त्वत्तःश्रुतंमयासर्वंपूर्वमेवशुभाशुभम् ७ इदानीमेकमेवास्तिश्रोतव्यंसुरसत्तम ॥ तद्रहस्यमपिब्रूहियदितेनुग्रहोमयि ८ प्राप्तेकलियुगेघोरेनराःपुण्यविवर्ज्जिताः ॥ दुराचाररताःसर्वेसत्यवार्त्तापराङ्मुखाः ९ परापवादनिरताःपरद्रव्याभिलाषिणः ॥ परस्त्रीसक्तमनसःपरहिंसापरायणाः १० देहात्मदृष्टयोमूढानास्तिकाःपशुबुद्धयः ॥ मातापितृकृतद्वेषाःस्त्रीदेवाःकामकिंकराः ११ विप्रालोभग्रहग्रस्तावेदविक्रियजीविनः ॥ धनार्जनार्थमभ्यस्तविद्यामदविमोहिताः १२ त्यक्तस्वजातिकर्माणःप्रायशःपरवंचकाः ॥ क्षत्रियाश्चतथावैश्याःस्वधर्मत्यागशीलिनः १३ ॥

इसप्रकर नारदकी स्तुतिसे प्रसन्नहुये ब्रह्माजी अपनेपुत्रको परमवैष्णवजानि बोले हे मुने क्यातुम्हारे पूछनेकी इच्छाहै सो पूछिये मैं कहताहूं ऐसेवचनसुनिकै नारदजी ब्रह्माजीसे पूछनेलगे हे पितः!मैंने शुभा शुभ अर्थात् अच्छेबुरेकर्म्मोंकेफल पहिले आपसे सुनेहाहैं ७ अब इस समयमें एकबात पूछताहूं सो यद्यपि अत्यन्त गुप्तभीहो तौभी कहिये जोमेरे ऊपर आपकीकृपा दृष्टिहोयतो औ आप सर्व देवतोंमें श्रेष्ठहैं इससे आपही इसगूढ़प्रश्नके उत्तरदेनेको समर्थहैं ८ वही

प्रश्न नारदजी करते हैं हे भगवन् अब इसघोर कलियुग के प्राप्त होने से सब मनुष्य पुण्यकर्म्मोंसे रहितहोरहे हैं औ दुराचारमें प्रीतिकररहे हैं औ सत्यकी वार्ता से बिमुख होरहे हैं अर्थात् बिना प्रयोजन मिथ्या भाषण करते हैं ९ ॥ औ परनिन्दामें प्रीतियुक्त होरहे हैं अर्थात् जहां किसीकी निन्दा होती है उसको बड़ी प्रीतिसे सुनते हैं औ जैसेबने तैसे परद्रव्य हरणकी इच्छा कररहे हैं औ बिरानी स्त्रियाओं में जिनके मन आसक्तहोरहे हैं और जीवोंकी हिंसामें तत्पर होरहे हैं १० और देहमें जिनकी आत्मदृष्टि होरही है अर्थात् अपने वास्तव सच्चिदानन्दरूपको भूलिकै जब शरीरही को आत्मा माननेलगे तब शरीरके क्लेश में क्लेश मानते हैं और शरीरके सुखमें सुखमानरहे हैं इसीसे इष्ट मित्रके देह वियोगमें अपार दुःखको मोहबशसे प्राप्तहोरहे हैं औ इसीकारण से इसलोकके सुख दुःखको सत्यमानते हैं औ परलोकको मिथ्याजान नास्तिक होरहे हैं और पशुओंकी सी बुद्धिको प्राप्तहोरहे हैं और अपने मातापितासे द्रोहकरते हैं औ स्त्रियाओं में देवताकी सी प्रीति और आदर करतेहुये कामदेवके भृत्यहोरहे हैं ११ और ब्राह्मणलोग लोभरूप ग्राहकरके ग्रसेहुये अनेक धर्मरूप वेदीको बेंचिकै जीवन कररहे हैं अर्थात् जोधनदेवै तिसीको वेदपढ़ाते हैं औ जिसमें धनमिले उसी विद्यामें अभ्यासकरते हैं औ विद्याके मदसे गर्वितहोरहे हैं १२ और अपने ब्राह्मणजातिके जो शम,दम,इत्यादि धर्म तिनको त्यागकररहेहैं और जैसे बने तैसे लोगों के ठगने में तत्पर होरहे हैं और इसीप्रकार क्षत्रिय और वैश्य इन्होंने भी अपने २ धर्मको त्यागदियाहै १३ ॥

तद्वच्छूद्राश्चयेकेचिद्ब्राह्मणाचारतत्पराः॥स्त्रियश्चप्रायशोभ्रष्टाभर्त्रवज्ञाननिर्भयाः १४ श्वशुरद्रोहकारिण्योभविष्यन्तिनसंशयः ॥ एतेषांनष्टबुद्धीनांपरलोकःकथंभवेत् १५ इतिचिन्ताकुलंचित्तंजायतेममसन्ततम् ॥ लघूपायेनयेनैषांपरलोकगतिर्भवेत् १६ तमुपायमुपाख्याहिसर्ववेत्तियतोभवान् ॥ इत्यृषेर्वाक्यमाकर्ण्यप्रत्युवाचाम्बुजासनः १७ साधुपृष्टंत्वयासाधोवक्ष्येतच्छृणुसादरम् ॥ पुरात्रिपुरहंतारंपार्वतीभक्तवत्सला १८ श्रीरामतत्त्वंजिज्ञासुःपप्रच्छविनयान्विता ॥ प्रियायैगिरिशस्तस्यैगूढंव्याख्यातवान्स्वयम् १९ ॥

और शूद्रलोगभी शुश्रूषारूप अपनेसनातनधर्मको त्यागकरि ब्राह्मणोंके आचारमें तत्पर होरहेहैं अर्थात् जिन शूद्रोंकोवेदके श्रवण करनेकाभी अधिकार शास्त्रमें नहीं लिखाहै वह शूद्रलोग इस कलियुगकेप्रभावसे ऊंचे आसनपै वैठिकै ब्राह्मणलोगोंको धर्मज्ञानका उपदेश कररहेहैं और जैसे२ कलियुगआव-

ता आयगा तैसे२ अधिकभी करैंगे और स्त्रीलोग पतिशुश्रूषारूप अपने धर्मको त्यागकर परपुरुषोंमें प्रीतिबढ़ातीहुई अपने भर्त्ताकी अवज्ञामें अर्थात् तिरस्कारकरनेमें निर्भयहो बिचारकरेंगी १४ और अपने सास श्वशुर से द्रोहकरैंगी अर्थात् अपने गुरूलोगोंकी आज्ञाको उल्लंघनकर स्वतंत्रहोजावैंगी सो हेभगवन् इस कलियुगके नष्टबुद्धि पापियोंकोभी परलोकमें सुखकैसे होय १५हेभगवन् इस चिन्ताकरके व्याकुल मेराचित्त निरंतरहो रहाहै सो थोड़ेसे उपाय करनेसे जैसे इनकलियुगकेजीवोंका उद्धारहोय १६ सो उपायकृपाकर कहिये जिससे ऐसी कोई बातनहींहै जो आपनजानतेहो अर्थात् आप सर्वज्ञहैं इससे कहना उचितहीहै ऐसे नारदजीके बचनसुनिकै ब्रह्मा कहनेलगे १७ हे साधो हे परोपकारकुशल अच्छा तुमने प्रश्न किया अबमैं कहताहूं आदरसे मेरा बचन सुनिये पहिले एकसमयमें भक्त जिसको प्रियहै ऐसी पार्वतीदेवी श्रीरामचन्द्रजीके तत्त्वके जाननेकी इच्छाकर अर्थात् श्रीरामका यथार्थ स्वरूप जाननेकी इच्छा करिके नम्रता पूर्वकत्रिपुर दैत्यके मारनेवाले जो श्रीमहादेवजी तिनसे पूछती हुई यहां त्रिपुरहंता यह महादेवजीका नाम इससे कहा कि जैसे त्रिपुर दैत्यके तीनोंपुर आपने एकही बाणसे भेदनकर उसदैत्यका बधकिया ऐसेही सत्त्व रज तमये तीनोंगुणों के बन्धनको विवेकरूपी बाणसे भेदनकरि महामोहरूपी दैत्यके नाशकरने कोभी आपसमर्थहैं इससे यह कौतुककर अपनेभक्तोंके बंधनको दूरकरपरमानन्द प्राप्त करियेगा इसीसे पार्वती जीकाभी बिशेषण भक्तवत्सला ऐसाग्रंथकर्त्ताने कहा अब यह पार्वतीजीके प्रश्नका उत्तरदेनेको परम गुप्त श्रीमदध्यात्मरामायणका उपदेश करतेहुये श्रीमहादेवजी जिससे पार्वतीजी परमप्रियाहैं इससे परमरहस्यका भी उपदेश किया १९ ॥

पुराणोत्तममध्यात्मरामायणमितिस्मृतम्॥तत्पार्वतीजगद्धात्रीपूजयित्वादिवानिशम् २० आलोचयन्तीस्वानन्दमग्नातिष्ठतिसांप्रतम्॥ प्रचरिष्यतितल्लोकेप्राग्यदृष्टबशाद्यदा २१तस्याध्ययनमात्रेण जनायास्यन्तिसद्गतिम्॥तावद्विजृम्भतेपापंब्रह्महत्यापुरस्सरम् २२ यावज्जगतिनाध्यात्मरामायणमुदेष्यति॥तावत्कालिमहोत्साहोनिश्शंकंसंप्रवर्त्तते २३ यावज्जगतिनाध्यात्मरामायणमुदेष्यति ॥ यावद्यमभटाःशूराःसंचरिष्यन्तिनिर्भयाः २४ यावज्जगतिनाध्यात्मरामायणमुदेष्यति ॥ तावत्सर्वाणिशास्त्राणिविवदन्तेपरस्परम् २५ ॥

जो क्या पुराणों में उत्तम अध्यात्म रामायण विख्यात होरहाहै तिसको जगत्की माता पार्वतीजी दिनादिन पूजनकर बिचार करतीहुई परम आनन्द

में मग्नहोरहीहैं इस समयमें हेनारद २० जो कदाचित् प्राणियोंके परम भाग्यसे उस अध्यात्मरामायणका लोकमें प्रचारहोगा तौ उसके पाठ करनेवाले औ सुननेवाले मनुष्य अवश्य सद्गतिको प्राप्त होंगे २१ औरब्रह्महत्यादिक पाप तभीतक गर्जरहे हैं जबतक श्रीअध्यात्मरामायाण उदयको प्राप्तनहींहोताहै २२ और तभीतक यह कलियुग बड़े उत्साहसे शंकारहित लोकमें प्रवृत्त होरहाहै जबतक यह अध्यात्मरामायण उदय नहीं होताहै २३ और तभीतक बड़ेशूर यमराजके योधा निर्भय होकर पृथिवीमें बिचरेंगे जबतक अध्यात्मरामायण उदय नहीं करताहै २४ और तभीतक संपूर्ण शास्त्र परस्पर बिवाद करते हैं जबतक श्रीमदध्यात्म रामायण उदयनहीं करता है २५॥

यावज्जगतिनाध्यात्मरामायणमुदेष्यति ॥ तावत्स्वरूपंरामस्यदुर्बोधंमहतामपि २६ अध्यात्मरामायणसंकीर्त्तनश्रवणादिजम् । फलंवक्तुंनशक्नोमिकात्स्न्येंनमुनिसत्तम २७ तथापितस्यमाहात्म्यंवक्ष्येकिंचित्तवानघ ॥ शृणुचित्तंसमाधायशिवेनोक्तंपुरामम २८ अध्यात्मरामायणतःश्लोकंश्लोकार्द्धमेववा ॥ यःपठेद्भक्तिसंयुक्तःसपापान्मुच्यतेक्षणात् २९ यस्तुप्रत्यहमध्यात्मरामायणमनन्यधीः ॥ यथाशक्तिवदेद्भक्त्यासजीवन्मुक्तउच्यते ३० योभक्त्यार्चयतेध्यात्मरामायणमतन्द्रितः ॥ दिनेदिनेऽश्वमेधस्यफलंतस्यभवेन्मुने ३१॥

जबतक अध्यात्मरामयण संसारमें उदयको प्राप्त नहीं होताहै तबतक श्रीरामचन्द्रजीका स्वरूप महात्मा लोगोंकोभी जाननेको अशक्यहै २६ हे मुनियोंमें श्रेष्ठ नारद अध्यात्मरामायणके पाठकरनेका औ सुननेका संपूर्णफल मैंभी कहनेको अशक्तहौं अर्थात् समर्थ नहींहौं २७ तौभीमहादेव जीका पहिले कहाहुआ तिस अध्यात्म रामायणका कुछ थोड़ासा माहात्म्यमैं तुमसे कहताहूं एकाग्रचित्तसे सुनिये २८ अध्यात्मरामायण का एकश्लोक अथवा आधा श्लोकभी जो भक्तियुक्तहोके पढ़ताहै सो उसी समय पापसे छूटजाता है २९, जोतौ दिनदिन अर्थात् नित्य अध्यात्मरामायणको एकाग्रचित्तहो यथाशक्ति अपनीशक्तिके अनुसार पढ़ताहै सो जीवन्मुक्त कहा जाताहै ३० औ जोभक्तिकरके आलस्यछोड़ि अध्यात्मरामायणका पूजन करता है सो अश्वमेधयज्ञके दिन दिन फलको पावै है ३१॥

यदृच्छयापियोऽध्यात्मरामायणमनादरात् ॥ अन्यतःशृणुयान्मर्त्यःसोपिमुच्येतपातकात् ३२ नमस्करोतियोऽध्यात्मरामायणमदूरतः ॥ सर्वदेवार्चनफलंसंप्राप्नोतिनसंशयः ३३ लिखित्वापुस्तकेऽध्या

त्मरामायणमशेषतः ॥ योदद्याद्रामभक्तेभ्यस्तस्यपुण्यफलंशृणु ३४ अधीतेषुचवेदेषुशास्त्रेषुव्याकृतेषुच ॥ यत्फलंदुर्लभंलोकेतत्फलंतस्यसंभवेत् ३५ एकादशीदिनेऽध्यात्मरामायणमुपोषितः ॥ योरामभक्तःसदसिव्याकरोतिनरोत्तमः ३६ तस्यपुण्यफलंवक्ष्येशृणुवैष्णवसत्तम ॥ प्रत्यक्षरन्तुगायत्रीपुरश्चर्य्याफलंभवेत् ३७ ॥

जोपुरुष अकस्मात् ईश्वरेच्छा करिकै अध्यात्मरामयणका पाठ करताहोवै तिसके मुखसे अनादर सेभी श्रवण करै सोभी पापसे छूटजाताहै ३२ औरजो पुरुष अध्यात्म रामायणके पुस्तकमात्रकेभी समीप जाइकै प्रणामकरै सोभीसबदेवतोंके पूजन करनेका जो फल तिसको निःसंदेह प्राप्तहोताहै ३३ और जो कोईपुरुष अध्यात्मरामायणकी पुस्तकलिखिकै व लिखवाकर रामभक्तोंको देइ हे नारद तिसके पुण्य फलकोसुनिये ३४ जो सबवेदोंके पढ़नेसे और सब शास्त्रोंकेव्याख्यान करनेसे लोकमें दुर्लभफल होताहै उसफलको अध्यात्मरामायणका देनेवाला प्राप्तहोता है ३५ औ पुरुष एकादशीके दिनब्रतकरिकै रामभक्तोंकी सभामें अध्यात्मरामायणके अर्थ को सुनावै ३६ तिसको जो पुण्यफल होताहै सोसुनिये हेनारद एकएक अक्षरमें गायत्री पुरश्चरणका जो फलहै सोउसको प्राप्त होताहै ३७

उपवासब्रतंकृत्वाश्रीरामनवमीदिने ॥ रात्रौजागरितोऽध्यात्मरामायणमनन्यधीः ३८ यःपठेच्छृणुयाद्वापितस्यपुण्यंवदाम्यहम् ॥ कुरुक्षेत्रादिनिखिलपुण्यतीर्थेष्वनेकशः ३९ आत्मतुल्यंधनंसूर्यग्रहणे सर्वतोमुखे ॥ विप्रेभ्योव्यासतुल्येभ्योदत्त्वायत्फलमश्नुते ४० तत्फलंसंभवेत्तस्यसत्यंसत्यंनसंशयः ॥ योगायतेमुदाऽध्यात्मरामायणमहर्निशम् ४१ आज्ञान्तस्यप्रतीक्षन्तेदेवाइन्द्रपुरोगमाः ॥ पठन्प्रत्यहमध्यात्मरामायणमनुव्रतः ४२ यद्यत्करोतितत्कर्मततःकोटिगुणंभवे त्॥ तत्रश्रीरामहृदयंयःपठेत्सुसमाहितः ४३ ॥

जो पुरुष रामनवमीकेदिन निराहार ब्रत करिकै रात्रि जागरणकर एकाग्रचित्त ह्वैकै ३८ अध्यात्म रामायणका पाठकरै अथवा सुनै तिसको जोपुण्यहोताहै सो हमकहतेहैं हे नारदजी सुनिये कुरुक्षेत्र आदि अनेक पुण्यतीर्थोंके बिषे ३९ सर्वग्रस्त सूर्यग्रहणमें अपनेबराबर सुवर्णवा रजतव्यास तुल्य विद्वान्ब्राह्मणोंको देनेसे जोफल प्राप्तहोताहै ४० उसफलकोवहरामनवमीकी रात्रिमें अध्यात्म रामयणका पाठकरनेवाला प्राप्तहोताहै यहसत्यहै इसमें कुछसंशय नहींहै

औ जो पुरुष आनन्दपूर्वक अध्यात्मरामायणका नियमसे पाठ कियाही करता है ४१ उसकी आज्ञाकी इन्द्रादिक देवताभी प्रतीक्षा करतेहैं किकब यह हमसे आज्ञाकरै ऐसे ४२ जोराम भक्त दिन दिन अध्यात्म रामायण पाठकरताहै सो जो जो सत्कर्मकरताहै सो कोटिगुण होताहै तिसमें भी जोराम हृदय स्तोत्रकापाठ एकाग्रचित्त होकेकरै ४३ ॥

सब्रह्मघ्नोपिपूतात्मात्रिभिरेवदिनैर्भवेत् ॥ श्रीरामहृदयंयस्तुहनुमत्प्रतिमान्तिके ४४ त्रिःपठेत्प्रत्यहंमौनीससर्वेप्सितभाग्भवेत् ॥ पठन्श्रीरामहृदयन्तुलस्यश्वत्थयोर्यदि ४५ प्रत्यक्षरंप्रकुर्वीतब्रह्महत्यानिवर्त्तनम् ॥ श्रीरामगीतामाहात्म्यंकृत्स्नंजानातिशंकरः ४६ तदर्द्धं गिरिजावेत्तितदर्द्धंवेद्म्यहंमुने ॥ नतेकिंचित्प्रवक्ष्यामिकृत्स्नंवक्तुंनशक्यते ४७ यदज्ञात्वातत्क्षणाल्लोकश्चित्तशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ श्रीरामगीतायत्पापंननाशयतिनारद ४८ तन्ननश्यतितीर्थादौलोकेक्वापि कदाचन ॥ तन्नपश्याम्यहंलोकेमार्गमाणापिसर्वदा ४९ ॥

सो ब्रह्मघ्नभी होय अर्थात् ब्रह्महत्याका करनेवालाभी तीनदिनकरिकै पवित्रहोजाताहै और जो हनुमान्की प्रतिमाके समीप ४४ मौनहोके तीनबार दिन दिन श्रीरामहृदय स्तोत्रका पाठकरै तो जो कुछमनोरथ करै सो सिद्धहोजाय और जो तुलसी व पीपल के समीप श्रीरामहृदय स्तोत्रकापाठकरै ४५ तो एकएक अक्षरपै ब्रह्महत्यादि पापोंकी निवृत्तिकरता है और श्रीरामगीता का माहात्म्य संपूर्ण तो श्रीमहादेव जी जानते हैं ४६ और आधा पार्वतीजी जानतीहैं और चौथ्याईमें जानताहूं तिसमें कुछ माहात्म्य हम तुमसे कहतेहैं संपूर्ण तो कहनेको अशक्यहै ४७ जिसको जानिकै उसी समय में मनुष्य अंतःकरणकी शुद्धिको प्राप्त होताहै औरहेनारदजी जिसपापको श्रीरामगीता न नाशकरै उस पापको लोकमें कोई तीर्थादिकभी नहीं नाशकरसक्ताहै और हम खोजतेहुये भी अभीतक उसपापहीको नहींदेखते जो रामगीतासे नाशको प्राप्त न होवै अर्थात् यह रामगीता संपूर्ण पापोंकी नाशकरनेवाली है ॥४९॥

रामेणोपनिषत्सिंधुमुन्मथ्योत्पादितांमुदा ॥ लक्ष्मणायार्पितांगीतांसुधांपीत्वामरोभवेत् ५० जमदग्निसुतःपूर्वंकार्त्तवीर्यबधेच्छया ॥ धनुर्विद्यामभ्यसितुंमहेशस्यान्तिकेवसन् ५१ अधीयमानांपार्वत्यारामगीतांप्रयत्नतः ॥ श्रुत्वागृहीत्वाशुपठन्नारायणकलामगात् ५२ ब्रह्महत्यादिपापानांनिष्कृतिंयदिवाञ्छति ॥ रामगीतांमासमात्रंपठित्वा

मुच्यतेनरः ५३ दुष्प्रतिग्रहदुर्भोज्यदुरालापादिसम्भवम् ॥ पापंय त्तत्कीर्त्तनेनरामगीताविनाशयेत् ५४ शालग्रामशिलाग्रेचतुलस्यश्व त्थसन्निधौ ॥ यतीनांपुरतस्तद्वद्रामगीतांपठेत्तुयः ५५ तत्तत्फलम वाप्नोतियद्वाचोपिनगोचरम् ॥ रामगीतांपठेद्भक्त्यायःश्राद्धेभोजयेद् द्विजान् ५६ तस्यतेपितरःसर्वेयान्तिविष्णोःपरंपदम् ॥ एकादश्यां निराहारोनियतोद्वादशीदिने ५७ स्थित्वागस्त्यतरोर्मूलेरामगीतांप ठेत्तुयः ॥ सएवराघवःसाक्षात्सर्वदेवैश्चपूज्यते ५८ ॥

श्रीरामचन्द्रजी ने उपनिषत्रूपी समुद्रको मथिकै गीतारूपी अमृत निका- लिकै लक्ष्मणजी को दिया उसको पानकर मनुष्य अमरहोजाताहै ५० जम- दग्नि ऋषिके पुत्र परशुराम प्रथम कार्तवीर्य राजाके बधकरनेकी इच्छाकरके शस्त्र बिद्यापढ़नेको महादेवजीके समीप बसतेथे उससमयमें पार्वतीजी राम- गीताको पढ़तीथीं सो उस रामगीताको परशुरामजी सुनिकै और उसको ग्रह- णकर नारायण कलाको प्राप्तहुये ५१।५२ जो मनुष्य ब्रह्महत्यादि पापों के प्रायश्चित्तकी इच्छाकरै सो रामगीताको महीनेभरिपढ़ै तो सब पापोंसे छूटि जाइ ५३ और दुष्टपुरुषोंका प्रतिग्रह अर्थात् दानलेना और दुष्टअन्न और दुष्ट भाषण इनसे उत्पन्नहुआ जो पाप तिसको रामगीता के कीर्तन करके नाशको प्राप्तकरता है ५४ शालग्रामशिला के आगे और तुलसी और पीपल वृक्ष के समीप और संन्यासियों के आगे जो रामगीताका पाठकरे ५५ तौ उसफलको प्राप्तहोताहै जो बाणीसे भी कहनेमें न आवै अर्थात् मोक्षको प्राप्तहोताहै औरजो श्राद्धके दिन जिससमयमें ब्राह्मण भोजनकरैं उससमयमें जो उनको रामगीता का पाठसुनावै ५६ तो पितर विष्णुलोक को प्राप्तहोयँ और जो एकादशी के दिन निराहार ब्रतकर जितेंद्रिय होकर द्वादशीकेदिन अगस्त्य वृक्षकेनीचे राम- गीताका पाठकरै तो रामतुल्यहो देव पूजितहोइ ५७।५८ ॥

विनादानंविनाध्यानंविनातीर्थावगाहनम् ॥ रामगीतांनरोधीत्य तदनन्तरफलंलभेत् ५९ बहुनाकिमिहोक्तेनशृणुनारदतत्त्वतः ॥ श्रु तिस्मृतिपुराणेतिहासागमशतानिच६० अर्हंतिनाल्पामध्यात्मरामा यणकलामपि ॥ अध्यात्मरामचरितस्यमुनीश्वरायमाहात्म्यमेतदुदि तंकमलासनेन॥ यःश्रद्धयापठतिवाशृणुयात्समर्त्यःप्राप्नोतिविष्णुपद वींसुरपूज्यमानः ६१ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउत्तरखण्डेएकषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६१ ॥

दान और ध्यान और तीर्थोंका स्नान इनके विनाभी जो मनुष्य रामगीता को पढ़ैतौभी अनन्त फलको प्राप्तहोताहै अर्थात् जो दान आदिक साधनों के सहित रामगीता का पाठकरै वह अनन्त फलको प्राप्तहोय जीवन्मुक्त होय यह क्याकहना चाहिये ५९ औ हे नारद बहुत कहने से क्याहै परमार्थ से सुनिये वेद औ स्मृतियां औ पुराण औ इतिहास और तन्त्र मन्त्र शास्त्रादिक सैकड़ों ये सब अध्यात्म रामाणके सोलहवें हिस्से के तुल्य तो फलमें होही नहीं सक्ते हैं ६० यह अध्यात्मरामायणका माहात्म्य ब्रह्माजीने नारदसे कहाहै इसको जो मनुष्य श्रद्धासे पढ़ताहै अथवा सुनताहै सो देवताओं करिकै पूजितहुआ विष्णुलोक को प्राप्तहोताहै ६१ ॥

इत्यध्यात्मरामायणेभाषाटीकायांएकषष्टितमोऽध्यायः १ ॥

यःपृथ्वीभरवारणायदिविजैःसंप्रार्थितश्चिन्मयःसंजातःपृथिवीतलेरविकुलेमायामनुष्योऽव्ययः॥ निश्चक्रंहतराक्षसःपुनरगाद्ब्रह्मत्वमाद्यंस्थिरांकीर्तिंपापहरांविधायजगतांतंजानकीशंभजे १ विश्वोद्भवस्थितिलयादिषुहेतुमेकमायाश्रयंविगतमायमचिन्त्यमूर्तिम् ॥ आनंदसांद्रममलंनिजबोधरूपंसीतापतिंविदिततत्त्वमहंनमामि २ ॥

दोहा ॥ प्रथमसर्गशिवशिवाहित रामहृदयअभिराम ॥
कह्योजोहनुमतसपरम तत्त्वजानकीराम १ ॥

अब इस अध्याय में श्रीरामहृदय स्तोत्रका अर्थ कहतेहैं जो श्रीमहाराजाधिराज रामचन्द्रजी पृथिवीके भारको दूर करनेकेलिये देवताओंकरके प्रार्थित कियेगये इससे चिन्मात्र स्वरूप अविनाशी हैं मायाकरिकै मनुष्यवत् आकार स्वरूप जिसका सो पृथ्वीतलमें सूर्यबंश में प्रकट होकर राजसमूहकेविनाहीं अर्थात् केवल लक्ष्मणवानरोंके सहाय मात्र करिकै अथवा सुदर्शन चक्रके विना केवल धनुषबाणही करिकैजो रावणादिक राक्षसोंकावधकरतेहुये तिसके उपरान्त संपूर्ण लोकोंके पाप हरनेवाली निर्मल और जबतक सबलोकहैं तबतक स्थिर ऐसी अपनी कीर्तिस्थापन करि जो ब्रह्मभावको प्राप्त होताहुआ अर्थात् अपना जो वास्तव सच्चित् आनन्द घन स्वरूप है उसको प्राप्त होतेहुये ऐसे जो जानकीके ईश स्वामी तिनको मैं भजन करताहूं १औ जो रामचन्द्र संपूर्ण विश्वकी उत्पत्ति औ पालन औ संहार इनमें अद्वितीय दूसरेके सहायरहितही कारणहैं अर्थात् शक्ति औ शक्तिमान् इनके अभेदविवक्षामें माया कोई पृथक्तत्त्व नहींहै यह शुद्धवेदान्तीका मतहै औ सांख्यशास्त्रवाला तो प्रकृतिको कारण कहता है सो वेद विरुद्धहै जो शारीरकभाष्यमें विस्तारपूर्वक शंकराचार्यजीने

कहाहै फिर कैसेरामहैं आप अहेतु हैं और कारणकरकेरहितहैं औमायाके आ-श्रय हैं और विगतमाय हैं अर्थात् मायारहित हैं इसीसे अचिन्त्य है मूर्ति स्व-रूप जिनका और आनन्दघन निर्मल ज्ञानरूप हैं इसप्रकार भक्तोंने जाना है तत्त्व स्वरूप जिनका ऐसे जो सीतापति तिनको मैं नमस्कार करताहूं २ ॥

पठन्तियेनित्यमनन्यचेतसःशृण्वन्तिचाध्यात्मिकसंज्ञितंशुभम् ॥ रामायणंसर्वपुराणसंमतं निर्धूतपापाहरिमेवयांतिते ३ अध्यात्मरामायणमेवनित्यंपठेद्यदीच्छेद्भवबन्धमुक्तिम् ॥ गवांसहस्रायुतकोटिदानात्फलंलभेद्यःशृणुयात्सनित्यम् ४ पुरारिगिरिसंभूताश्रीरामार्णवसंगता ॥ अध्यात्मरामगंगेयंपुनातिभुवनत्रयम् ५ कैलासाग्रेकदाचिद्रविशताबिमलेमन्दिरेरत्नपीठे संविष्टंध्याननिष्ठंत्रिनयनमभयंसेवितंसिद्धसंघैः ॥ देवीवामाङ्कसंस्थागिरिवरतनयापार्वतीभक्तिनम्राप्राहेदंदेवमीशंसकलमलहरंवाक्यमानंदकन्दम् ६ पार्वत्युवाच ॥ नमोस्तुतेदेवजगन्निवाससर्वात्मदृक्त्वंपरमेश्वरोसि ॥ पृच्छामितत्त्वंपुरुषोत्तमस्यसनातनंत्वञ्चसनातनोसि ७ ॥

जेकोई सब पुराणों को संमत माननीय ऐसे अध्यात्मरामायणको एकाग्रचित्त होके पढ़ते हैं और सुनते हैं ते सबपापों से छूटिकै नारायणको प्राप्तहोते हैं ३ इससे जो संसारके बन्धनसे मुक्तिचा हैं सो अध्यात्मरामायणही को नित्यपढ़ैं और जो नित्य अध्यात्मरामायणका श्रवण करताहै सो करोड़ों हज़ारों गौवोंके दानके फलको प्राप्त होताहै ४ अध्यात्म रामायणरूप जो ग्रंथ है सो तीनोलोकोंको पवित्रकरतीहै जैसे प्रसिद्धगंगा तीनधारकरमर्त्य पाताल स्वर्गलोकको पवित्रकरतीहै तैसेही अध्यात्मरामायणरूपिणी गंगाभी मुक्त मुमक्षु विषयी इनतीनोंप्रकारके मनुष्योंको पवित्रकरतीहै अथवाब्रह्मलोकमें ब्रह्माजीके मुखरूपकमण्डलुसे निकलिकै नारदादिकऋषियोंको पवित्रकरतीहै और कैलासमें श्रीमहादेवजीसेप्रकटहुई रामायणरूपी गंगापार्वती आदिश्रोतोंकोपवित्रकरती है और मनुष्य लोकमें सूत शौनक वाल्मीकि भरद्वाजादि द्वारा श्रोतोंकोपवित्र करतीहै और प्रसिद्ध गंगातो हिमालयते प्रकटहुई है अध्यात्मरामायण रूप गंगा महादेवरूप पर्वतसे प्रकट हुईहै और प्रसिद्धगंगा समुद्रमें मिलीहै अध्यात्मरामायणरूप गंगारामरूपी समुद्रमें मिलीहै और प्रसिद्ध गंगापापियोंके मलदूरकरि स्वर्गलोकमें प्राप्त करतीहैं और रामायणरूपगंगा तो अन्तःकरण शुद्धकर ज्ञानद्वारा मुक्तिदेतीहै इससे बिचारकरेसे यहरामायणरूप गंगाश्रेष्ठहै५एकसमयमें कैलासपर्वतके ऊपर सैकड़ों सूर्य्यका प्रकाश जिस

में ऐसे मंदिरमें रत्नजटित सिंहासनपै बैठे ध्यानमें तत्पर भयरहित सिद्धोंके समूह करिकै सेवित जो महादेवजी तिनके वाम अंगमें स्थित जो पार्वतीजी सो बड़ी भक्ति से नम्रहोकर निर्मल औ सब जीवों के आनंददायक जो मधुर बचन तिनकों बोलती हुईं अर्थात् पार्वतीजी महादेवसे प्रश्नकरतीहुईं तिसमें सब जीवोंका कल्याणही है ६ जो पार्वतीजी बोलती हुईं सो कहते हैं। हे देव प्रकाश रूप जगन्निवास सब जगत् आपही में बसैहै ऐसे जो आपहैं तिनको मेरा नमस्कार है और आप सब जीवोंके बुद्धिके देखनेवाले परमेश्वर हौ इस से पुरुषोत्तम जो श्रीराम तिनके यथार्थ सत्यस्वरूप को मैं पूछती हों आप भी सत्यरूप हैं ७ ॥

गोप्यंयदत्यन्तमनन्यवाच्यंवदन्तिभक्तेषुमहानुभावाः ॥ तदप्यहोहंतवदेवभक्ताप्रियोसिमेत्वंवदयत्तुपृष्टम् ८ ज्ञानंसविज्ञानमथानुभक्तिवैराग्ययुक्तंचमितंविभास्वत् ॥ जानाम्यहंयोषिदपित्वदुक्तंयथातथाब्रूहितरन्तियेन ९ पृच्छामिचान्यच्चपरंरहस्यंतदेवचाग्रेवदवारिजाक्ष ॥ श्रीरामचन्द्रेखिलतत्त्वसारेभक्तिर्दृढानौर्भवतिप्रसिद्धा १०॥

जोबस्तु किसीके आगे कहने योग्यनहीं और अत्यंत गुप्तकरनेके योग्य होती है उसको भी महानुभाव भक्तोंसे कहते हैं और मैं भी तुम्हारी भक्तहों इससे मेरी प्रश्नको कहिये जिससे आप प्रियहैं ८ और हे भगवन् भक्तिरूप चिह्न करिकै युक्त और बैराग्ययुक्त और शास्त्रोक्त प्रमाण से निश्चित और प्रकाश मान ऐसा जो साधनसहित ज्ञान तिसको स्त्री जाति भी जिस प्रकार करके मैं जानसकूं सो प्रकार वर्णन करिये जिस ज्ञान करके संसार को पारहोतेहैं तिसको जाना चाहतीहों ९ और हेकमल नेत्र और भीकुछसंदेह पूछा चाहती हों तिस प्रश्नको प्रथम कहिये और सब तत्त्वों के सारभूत जो श्रीरामचन्द्र तिनके बिषे जोदृढभक्तिहै वोही संसार सागरतरिबेकोनौका प्रसिद्धहीहै १०॥

भक्तिःप्रसिद्धाभवमोक्षणायनान्यत्ततःसाधनमस्तिकिञ्चित् ॥ तथापिहृत्संशयबन्धनंमेविभेत्तुमर्हस्यमलोक्तिभिस्त्वम् ११ वदन्तिरामंपरमेकमाद्यंनिरस्तमायागुणसंप्रवाहम् ॥ भजंतिचाहर्निशमप्रमत्ताःपरंपदंयान्तितथैवसिद्धाः १२ वदंतिकेचित्परमोपिरामःस्वाविद्ययासंवृतमात्मसंज्ञम् ॥ जानातिनात्मानमतःपरेणसंबोधितोवेदपरात्मतत्त्वम् १३ यदिस्मजानातिकुतोविलापःसीताकृतेतेनकृतःपरेण ॥ जानातिनैवंयदिकेनसेव्यःसमोहिसर्वैरपिजीवजातैः १४ ॥

और संसारके बन्धन छुड़ाने में भक्तिही एक स्वतंत्रहै तिससेपरे औरकोई साधन नहींहै यहभी प्रसिद्धहै तौभी मेरे हृदयके संशय रूप बंधनको निर्मल बचनों करिकै भेदन करनेको आप योग्यहैं ११ अब तीनवचनों करिकै अपना संशय पार्वतीजी निवेदन करती हैं हे भगवन् ऋषिलोग श्रीरामको ऐसा कहते हैंकि प्रकृतिसे परेहैं और एकहैं अर्थात् अद्वितीयहैं और सबकाकारणहैं और निरस्तनाम दूरिहुआ मायागुण संप्रवाहरूप संसार जिससे और जो कोई सिद्धलोगहैं ते रात्रिदिवस सावधान होकै जिसका भजन करते हैं और उस भजनसे परमपदको प्राप्तहोते हैं १२ और कोई ऐसा कहते हैं कि सबसे उत्कृष्ट भी रामहैं परन्तु अपनी अविद्यासे ढकाहुआ जो अपना स्वरूप तिसको नहीं जानसक्के हैं और जब कोई दूसरा बोधकरावै तो सबसे परे रूपको जानसक्के हैं १३ और जो कदाचित् अपने आपही रामको ज्ञानहोता तौसीताके कारण इतना बिलाप किसवास्ते करते और जो अपने आप अपने स्वरूपको नहीं जानसक्के हैं तौ क्याकारणहै जिससे राम तौ सेव्यहोइँ और जीव उनके सेवकहोइं क्योंकि जैसे जीव अज्ञानयुक्तहोनेसेई अपने स्वरूपको नहीं जानसक्के हैं तैसे रामभी अज्ञानतासे अपनेको भूलगये तौ जीवोंके समानही होगये फिर कौन विशेषता राममें हुई जिससे रामसेव्य और जीव सेवक अर्थात् तुल्यता में सेव्य सेवकभाव नहीं होसक्काहै और यह भी बिचारनाचाहिये कि जो कोई भजनकरैगा तो अपने दुःखकी निवृत्तिके लियेही करैगा तौ राम अपने आपही दुःखितहुये तौ औरोंका दुःख कैसे निवृत्तकरसकैंगे इससे भी सेव्य सेवकभाव नहीं बनसक्काहै १४ ॥

अत्रोत्तरंकिंविदितंभवद्भिस्तद्ब्रूतमेसंशयभेदिवाक्यम्॥श्रीमहादेवउवाच ॥ धन्यासिभक्तासिपरात्मनस्त्वंयद्ज्ञातुमिच्छातवरामतत्त्वम् १५ पुराणकेनाप्यभिचोदितोऽहंवक्तुंरहस्यंपरमंनिगूढम् ॥ त्वयाद्यभक्त्यापरिनोदितोऽहंवक्ष्येनमस्कृत्यरघूत्तमंते १६ रामःपरात्माप्रकृतेरनादिरानन्दएकःपुरुषोत्तमोहि॥ स्वमाययाकृत्स्नमिदंहिसृष्ट्वानभोवदन्तर्बहिरास्तितोयः १७ सर्वान्तरस्थोपिनिगूढआत्मा स्वमाययासृष्टमिदंबिचष्टे ॥ जगन्तिनित्यंपरितोभ्रमंतियत्संनिधौचुम्बकलोहवद्धि १८ ॥

इसमें उत्तर जो आपका जानाहोय सो कहिये जिसमें मेरे हृदयका संशय दूरहोय ऐसी कृपाकरिके बाक्य कहिये यह पार्वतीजीका बचन सुनिकै महादेवजी कहते हैं हे पार्वति तुम धन्यहो औ श्रीरामकी परमभक्तहौ जिससे श्री

रामतत्त्वके जाननेकी इच्छाकरतीहौ १५ पहिले यह परमगुप्त रहस्य कहने की प्रेरणा हमसे किसीने नहींकी थी अब तुम भक्तिपूर्वक इस रामके गुप्तरहस्यको पूछतीहौ इससे हम कहते हैं इससे महादेवजीने यह भी सूचन किया कि कुतर्कसे पूछनेवालेके आगे परमेश्वरके रहस्यको न कहै अब महादेवजी श्रीरामचन्द्रके नमस्कारकरि कहते हैं १६ हे पार्वति रामप्रकृतिसे परे आत्मा हैं और कारणरहितहैं अर्थात् रामका कोई कारण नहीं रामही सबका कारणहैं औरआनन्दरूपहैं और पुरुषोत्तमहैं अक्षरआत्मासे भी उत्तमहैं औरअपनी माया करके सबविश्वको रचिकै आकाश तुल्यबाहर भीतर सबमें व्याप्तहोरहे हैं १७ सबके अंतर्गतभी आत्माहैं परन्तु अत्यन्त गुप्तहैं औरअपनी मायाकरके रचित जो सब जगत् जिसको देखरहे हैं और जिसके समीपअनेक ब्रह्मांड परिभ्रमण करते हैं अर्थात् जिसके समीपस्थितहोनेसे महत्तत्त्व अहंकार बुद्धि मनइत्यादि जड़वर्गभी अपने अपने कार्य में प्रवृत्तहोते हैं जैसेचुम्बक पत्थरके समीप लोहा अपने आप परिभ्रमण करताहै १८ ॥

एतन्नजानन्तिविमूढचित्ताःस्वाविद्ययासंवृतमानसाये॥ स्वाज्ञानमप्यात्मनिशुद्धबुद्धेस्वारोपयन्तीहानिरस्तमाये १९ संसारमेवानुसरन्तितेवैपुत्रादिसक्ताःपुरुकर्मयुक्ताः॥ जानन्तिनैवंहृदयेस्थितंवैचामीकरंकण्ठगतंयथाज्ञाः २० यथाप्रकाशोनतुविद्यतेरवौज्योतिस्स्वभावेपरमेश्वरेतथा ॥ विशुद्धविज्ञानघनेरघूत्तमेविद्याकथंस्यात्परतःपरात्मनि २१ यथाहिचाक्ष्णाभ्रमताग्रहादिकंविनष्टदृष्टेर्भ्रमतीवदृश्यते । तथैवदेहेन्द्रियकर्त्तुरात्माकृतंपरेध्यस्यजनोविमुह्यति २२ ॥

जेकोई संसारमें बिमूढ़चित्तहैं और मायाकरके आच्छादित मनजिन्होंकेवे इस रामतत्त्वको नहीं जानतेहैं और इसीसे शुद्धज्ञान स्वरूप मायारहित श्रीरामचन्द्र में अपना अज्ञान आरोपण करतेहैं अर्थात् जैसे आप पुत्रादि बियोग में बिकल होतेहैं ऐसेई श्रीरामकोभी सीता बिरह में बिकलही जानतेहैं १९ ऐसेपुरुष संसारमें स्त्रीपुत्रादिकों में प्रीतिसे बँधेहुये अनेक कर्मोंको करते हुये बारंबारजन्ममरणकोही प्राप्तहोतेहैं अपने हृदयमेंही स्थित श्रीरामरूपपरमात्मा उनको नहीं जानते जैसेकोई अपने कंठमेंही स्वर्णमणि धारणकर रहाहै और भूलसे बाहर ढूंढ़ता व्याकुलहोरहाहै २० और जैसे सूर्यमें कभी अंधकारका संभवनहीं तैसेई विशुद्ध बिज्ञानघन प्रकाशस्वरूप परमेश्वर श्रीराममें अबिद्या कैसे संभवहोसकतीहै क्योंकि अबिद्यासे परेजो अक्षर तिसते भीपरे रामतत्त्व है २१ जैसे नेत्रके घूमनेसे अज्ञपुरुषको घर आदि घूमते दिखाई पड़ते हैं बा-

स्तव में घर घूमतानहीं तैसेही मूढ़ पुरुषदेह इन्द्रिय अहंकारकाकियाहुआ जो कर्मतिसको इनसे पर जो शुद्ध आत्मा तिसमें आरोपण करिके तिसमें मानकर मोहकोप्राप्तहोताहै अर्थात् मैं करनेवालाहों मैं सुखी दुःखीहों यहझूठाहीमानताहै २२ ॥

नाहोनरात्रिःसवितुर्यथाभवेत्प्रकाशरूपाव्यभिचारतःक्वचित् ॥ ज्ञानंतथाज्ञानमिदंद्वयंहरौरामेकथंस्थास्यतिशुद्धचिद्घने २३ तस्मात्परानन्दमयेरघूत्तमेविज्ञानरूपेहिनविद्यतेतमः ॥ अज्ञानसाक्षिण्यरविन्दलोचनेमायाश्रयत्वान्नहिमोहकारणम् २४ अक्षतेकथयिष्यामिरहस्यमपिदुर्लभम् ॥ सीतारामम्मरुत्सूनुसंवादंमोक्षसाधनम् २५ पुरारामायणेरामोरावणन्देवकंटकम् ॥ हत्वारणेरणश्लाघीसपुत्रबलबाहनम् २६ सीतयासहसुग्रीवलक्ष्मणाभ्यांसमन्वितः ॥ अयोध्यामगमद्रामोहनुमत्प्रमुखैर्युतः २७ ॥

जैसे प्रकाश रूपसे कभी नहीं पृथक् होने से सूर्यकी दृष्टिमें यह दिन है यह रात्रि है ऐसा व्यवहार नहीं संभव होता ऐसेही ज्ञान और अज्ञानजे दोनों शुद्ध चिद् घनस्वरूप श्रीराममें कैसे स्थित होसक्तेहैं २३ तिसकारणसे परमानन्दमय-विज्ञानरूप और अज्ञानके साक्षी ऐसे जो कमलवत् बिशाल लोचन श्रीराम-चंद्र तिनमें हेपार्बति कभी अज्ञान संभव नहीं होताहै और वह मायाके आपही आश्रयहैं इससे मोहकारण भी संभव नहीं होता जैसे लोकमें मायाका आश्रय बाजीगरहै उसको उसकी माया मोहनहीं करासक्ती २४ तैसे हेपार्बति इसमें सीताराम औ हनुमान् जीका संबाद हमतुमसे कहतेहैं कैसा संबादहै अतिगुप्त और दुर्लभ औ मोक्षसाधनहै २५ पहिले श्रीरामचंद्रजी संग्राममें देवताओंका कंटक जोपरिवारसहित रावण तिसको मारके सीता लक्ष्मण सुग्रीव हनुमान् आदि मित्रवर्गसहित अयोध्यामें आतेहुये २६।२७ ॥

अभिषिक्तःपरिवृतोवशिष्ठाद्यैर्महात्मभिः ॥ सिंहासनेसमासीनःकोटिसूर्यसमप्रभः २८ दृष्ट्वातदाहनूमन्तंप्राञ्जलिंपुरतःस्थितम् ॥ कृतकार्य्यंनिराकांक्षंज्ञानापेक्षंमहामतिः २९ रामःसीतामुवाचेदंब्रूहितत्त्वंहनूमते ॥ निष्कल्मषोयंज्ञानस्यपात्रंनोनित्यभक्तिमान् ३० तथेतिजानकीप्राहतत्त्वंरामस्यनिश्चितम् ॥ हनूमतेप्रपन्नायसीतालोकविमोहनी ३१ सीतोवाच ॥ रामंविद्धिपरंब्रह्मसच्चिदानन्दमद्वयम्॥ सर्वोपाधिविनिर्मुक्तंसत्तामात्रमगोचरम् ३२ आनन्दंनिर्मलंशांतंनि

विकारन्निरंजनम् ॥ सर्वव्यापिनमात्मानंस्वप्रकाशमकल्मषम् ३३ ॥

तिस अयोध्यानगरमें राज्य अभिषेकको प्राप्त औ वशिष्ठादि महात्माओं करिकै युक्त और सिंहासन के ऊपरबैठे औ अनेकसूर्योंकासाप्रकाश जिनका ऐसे जो श्रीरामचंद्रजी २८ सो अपने आगे हाथजोड़े खड़े और कियेहैं अनेक-कार्य जिनने और कुछ कामना नहींहै हृदयमें जिनके औ केवल ज्ञानकी अ-पेक्षा जिनके ऐसे हनुमान् जीको देखिकै २९ सीताजीसे कहतेभये हेसीते परम जो ज्ञानहै तिसका उपदेश हनुमानको करिये क्योंकि ये पापरहितहैं औ हमारी तुम्हारी भक्ति करिकै युक्तहैं इससे ज्ञानके पात्रहैं ३० अब सीताजी जो रामका तत्त्व निश्चित अपने हृदयमेंथा तैसाहनुमान्के अर्थ कहनेलगीं कैसे हनुमान्जी हैं अपने स्वामीको प्रसन्नदेख प्रसन्नह्वैरहेहैं ३१ हे हनुमन् रामको तुमपरब्रह्म जानो कैसा ब्रह्म जो सत् चित् आनंदरूपहै औ द्वैतरहित औ जि-तनीउपाधियां हैं तिनकरिकैरहित और सत्तामात्र जैसे घट पटआदि पदार्थों में जोहोनेकी प्रतीतिहै सो ब्रह्मकीहै औ किसी इन्द्रियके गोचर नहीं है ३२ औ आनंद रूप औ निर्मल औशांत औ निर्विकार औ मायारूप मलरहित औ सर्व व्यापी अर्थात् सबको व्याप्त करनेवाला औ स्वयंप्रकाश औ कामादिक पापों करके रहित ऐसाजो ब्रह्महै तिसको तुम रामजानो ३३ ॥

मांविद्धिमूलप्रकृतिंसर्गस्थित्यंतकारिणीम् ॥ तस्यसन्निधिमात्रेणसृजामीदमतन्द्रिता ३४ तत्सान्निध्यान्मयासृष्टंतस्मिन्नारोप्यतेऽबुधैः ॥ अयोध्यानगरेजन्मरघुवंशेतिनिर्मले ३५ बिश्वामित्रसहायत्वंमखसंरक्षणंततः ॥ अहल्याशापशमनंचापभंगोमहेशितुः ३६ मत्पाणिग्रहणंपश्चाद्भार्गवस्यमदक्षयः ॥ अयोध्यानगरेवासोमया द्वादशवार्षिकः ३७ दण्डकारण्यगमनं विराधबधएवच ॥ माया मारीचमरणंमायासीताहृतिस्तथा ३८ जटायुषोमोक्षलाभःकबन्धस्य तथैवच॥ शबर्याःपूजनंपश्चात् सुग्रीवेणसमागमः ३९ बालिनश्चवधःपश्चात् सीतान्वेषणमेवच ॥ सेतुबन्धश्चजलधौ लङ्कायाश्च निरोधनम् ४० ॥

औ हे हनुमन् सृष्टि और पालन औ संहारकरनेवाली जो मूलप्रकृति ति-सको मुझे जानो औ उस रामरूप परमात्माकी सन्निधिमात्रकरिकै अर्थात् स-मीपमात्र होनेसेही सब संसारको सदा आलस्यरहित मैं रचतीहूं ३४ औ उस परमात्माकी सन्निधिमात्र से मेरा रचाहुआ जो जगत् सो अज्ञानियों करिकै

परमात्मामें आरोपण कियाजाताहै उसी परमात्माका अयोध्यानगरमें अत्यन्त निर्मल जो रघुबंश तिसमें जन्महोना ३५ औ विश्वामित्रका सहायकरना फिर विश्वामित्रके यज्ञकी रक्षाकरना फिर अहल्याको शापसे छुडाइदेना फिर महादेवजीके धनुषका भंगकरना ३६ फिर मेरा पाणिग्रहणकरना फिर परशुरामके गर्वका नाशकरना फिर बारहबर्षतक अयोध्यानगरीमें मुझ करिके सहित बासकरना ३७ फिर दण्डकारण्यवनमें जाना औ विराधराक्षसका बधकरना फिर मायारूपी मारीच मृगका मारना फिर मायारूपी सीताका हरणहोना ३८ फिर जटायुका मोक्षकरना औ कबन्धको शापसे मोक्षकरना फिर शंवरीका पूजन स्वीकारकरना फिर सुग्रीवसे समागमकरना ३९ फिर बालीकाबधकरना फिर सीताको बानरद्वारा अन्वेषण करना अर्थात् ढुंढवाना फिर समुद्रमें सेतुबँधवाना फिर लंकापुरीके द्वार रोकना ४० ॥

रावणस्यबधोयुद्धे सपुत्रस्यदुरात्मनः ॥ बिभीषणेराज्यदानं पुष्पकेणमयासह ४१ अयोध्यागमनंपश्चाद्राज्येरामाभिषेचनम् ॥ एवमादीनिकर्माणि मयैवाचरितान्यपि ४२ आरोपयंतिरामेस्मिन् निर्विकारेनिरात्मनि ४३ रामोनगच्छतिनतिष्ठतिनानुशोचत्याकाङ्क्षतेत्यजतिनोनकरोतिकिञ्चित् ॥ आनन्दमूर्त्तिरचलःपरिणामहीनो मयागुणाननुगतोहितथाविभाति ४४ श्रीमहादेवउवाच ॥ ततोरामःस्वयम्प्राह हनुमन्तमुपस्थितम् ॥ शृणुतत्त्वंप्रवक्ष्यामिह्यात्मानात्मपरात्मनाम् ४५ आकाशस्ययथाभेदास्त्रिविधोदृश्यतेमहान्॥जलाशयेमहाकाशस्तदवच्छिन्नएवहि ४६ प्रतिबिम्बाख्यमपरं दृश्यतेत्रिविधंनभः ॥ बुद्ध्यवछिन्नचैतन्यमेकम्पूर्णमथापरम् ॥ आभासस्त्वपरंबिम्बभूतमेवंत्रिधाचितिः ॥ साभासबुद्धेःकर्तृत्वमविच्छिन्नेविकारिणि ४८॥

फिर पुत्र सहित दुष्टात्मा रावणका युद्धमें बधकरना फिर विभीषणको राज्यदेनाफिर पुष्पक विमानके ऊपर चढ़िके मुझको संगलैकै ४१ अयोध्यामें आना फिर राज्यका अभिषेक रामको इत्यादिक मेरेहीकिये हुये कर्म ४२ परमात्मानिर्विकार जो यह रामहैं तिनमें आरोपण कियेजाते हैं ४३ वास्तवमें राम न चलतेहैं औ न खड़ेहोतेहैं और न कुछ शोचते हैं औ न कुछ इच्छाकरतेहैं औ न कुछ त्यागतेहैं औ न कुछ करते हैं औ आनन्दमूर्त्तिहैं औ अचलहैं औ परिणाम रूपविकारसेहीनहैं अर्थात् तरहतरहके नहीं होतेहैं सदा एकरसहैं औ

मायाके गुणोंमें प्रविष्टहोके तैसे तैसे मालूमपड़तेहैं ४४ श्रीमहादेवजी पार्वती जीसे कहतेहैं हे पार्वति तिसके उपरांत आपही रामजी हनुमान्से कहनेलगेकि हेहनुमन् मैं तुमसे आत्मा औ अनात्मा अर्थात् आत्मासे पृथक् और परमात्मा इनके तत्त्वको तुमसे वर्णनकरताहूं ४५ जैसे आकाश कातीन प्रकारका भेदहै एकतौ महाकाश दूसरा जलाशय युक्त आकाश सो मेघाकाश प्रसिद्धहै क्योंकि मेघस्थ जलमें जो आकाश न होता तौमेघके प्रतिबिम्ब में आकाश प्रतीयमान न होता ४६ और तीसरा प्रतिविम्बाकाश ऐसेही चैतन्यभी तीनप्रकारका है एकतोमायामें प्रतिबिम्बित होके सबमें पूर्ण होरहाहै जिसको ईश्वर कहतेहैं औ दूसरा बुद्धिमें प्रतिबिम्बित जिसको जीव कहतेहैं और तीसरा बिम्बरूप शुद्ध चैतन्य जिसको ब्रह्म कहतेहैं जबऐसा सिद्धान्तस्थित हुआ तौ आभास सहित बुद्धिका जो कर्तृत्वधर्म सो जब विच्छेद रहित भेद रहित औ विकार रहित ॥ ४७ । ४८ ॥

साक्षिण्यारोप्यतेभ्रान्त्याजीवत्वञ्चतथाबुधः ॥ आभासस्तुमृषाबुद्धिरविद्याकार्यमुच्यते ४९ अविच्छिन्नंतुतद्ब्रह्मविच्छेदस्तुविकल्पितः ॥ अविच्छिन्नस्यपूर्णेनएकत्वंप्रतिपाद्यते ५० तत्त्वमस्यादिवाक्यैश्चसाभासस्याहमस्तथा ॥ ऐक्यज्ञानंयदोत्पन्नंमहावाक्येनचात्मनः ५१ तदाविद्यास्वकार्यैश्चनश्यत्येवनसंशयः ॥ एतद्विज्ञायमद्भक्तोमद्भावायोपपद्यते ५२ ॥

साक्षिमात्र आत्मामें आरोपण किया जाताहै भ्रान्ति करिके तो मैं देखताहूं मैं जानताहूं मैं जाताहूं इत्यादि बुद्धिधर्म आत्मा में प्रतीयमान होते हैं ऐसेही परस्पर अध्यास बशसे जब आत्मधर्म बुद्धिमें आरोपित हुआ तौ बुद्धिमें ज्ञान कीप्रतीतिहोतीहै औ जीवत्वका जब साक्षीमें आरोपहुआ तोजीवनित्य इत्यादि व्यवहार होताहै औ आभास दृष्टि करके तो जीवमें नित्यत्व व्यवहार नहीं बन-सक्ता क्योंकि आभास नाममिथ्या बुद्धिसे प्रतीयमानहै औ अविद्याकार्यहै इसीसेदर्पणस्थ मुखकीसीतरह सत्यनहीं होसक्ताहै तिससे भेद रहितही ब्रह्महै और भेदकल्पितहै और भेद रहितचैतन्यको ईश्वरके साथ शास्त्र करिके एकत्व प्रतिपादन किया जाताहै जो सर्वथा भेदनहोतो शास्त्र अनर्थक और वास्तव भेदहो तोभीअनर्थक होजाय इससे कल्पितभेदहै औरजब "तत्त्वमस्यादि" महा-वाक्योंकर शुद्धत्व पदार्थका शुद्ध तत्पदार्थके साथ अभेद ज्ञान होताहै तौ अविद्या नाशको प्राप्त होती है ४९ । ५० । ५१ ॥

मद्भक्तिविमुखानांहिशास्त्रगर्तेषुमुह्यताम् ॥ नज्ञानंनचमोक्षःस्या

स्तेषांजन्मशतैरपि ५३ इदंरहस्यंहृदयंममात्मनोमयैवसाक्षात्कथितं तवानघ ॥ मद्भक्तिहीनायशठायनत्वयादातव्यमैन्द्रादपिराज्यताधिकम् ५४ श्रीमहादेवउवाच ॥ एतत्तेभिहितंदेविश्रीरामहृदयंमया ॥ अतिगुह्यतमंहृद्यंपवित्रंपापशोधनम् ५५ साक्षाद्रामेणकथितंसर्ववेदान्तसंग्रहम् ॥ यःपठेत्सततंभक्त्यासमुक्तोनात्रसंशयः ५६ ब्रह्महत्यादिपापानिबहुजन्मार्जितान्यपि ॥ नश्यंत्येवनसंदेहोरामस्यवचनं यथा ५७ जातिभ्रष्टोतिपापीपरधननिरतोब्रह्महामित्रहन्तास्वर्णस्तेयीकुलघ्नःकलुषशतयुतोयोगिवृन्दापकारी ॥ यःसंपूज्याभिरामंपठतिचहृदयंरामचंद्रस्यभक्त्या योगीन्द्रैरप्यलभ्यंपदमिहलभतेसर्वदेवैःसुपूज्यम् ५८ ॥ इत्युमामहेश्वरसंवादेअध्यात्मरामायणेश्रीरामहृदयंनामप्रथमःसर्गः ॥ १ ॥

हे हनुमन् जे पुरुष मेरी भक्तिसे बिमुख औ शास्त्ररूपी गढे में मोहको प्राप्त होरहेहैं तिनको सैकडों जन्मतक न ज्ञान होय न मोक्ष होताहै ५३ हे अनघ हे निष्पाप हनुमन् मैंने यह अत्यन्त गुप्त अपने हृदय के सदृश अथवा निरन्तर हृदय में रहनेवाला इसीसे राम हृदय इसका नाम है ऐसा ज्ञान तुमसे कहा इसको भक्तिहीन शठ पुरुष के अर्थ कभी न देना क्योंकि इन्द्रके राज्य से भी अधिकयहसुख को देनेवाला है ५४ अब महादेवजी पार्वतीजीसे कहतेहैं हे पार्वति देवि यह रामहृदय स्तोत्र अत्यन्तगुप्त औ हृदयको प्रिय और अतिपवित्र संपूर्ण पापोंका शोधक ऐसा मैंने तुमसे कहा ५५ यह रामहृदय साक्षात् रामचन्द्रजीने अपने मुखसे कहाहै और सबवेदांत शास्त्रका संग्रह है अर्थात् सारहै इसको जो निरन्तर भक्तिसे पढ़तो अवश्य संसार बन्धन से मुक्तहोजाय इसमें संदेह नहींहै ५६ औ बहुत जन्मोंके उपार्ज्जन कियेहुये ब्रह्महत्यादिक पापभी इसके जाननेसे नाशको प्राप्तहोतेहैं इसमें संदेहनहीं क्योंकि श्रीरामहीका ऐसा वचन है ५७ अब श्रीरामहृदय के पाठका फल विशेष कहतेहैं जो पुरुष अपनी जातिसे भ्रष्टभीहुआ होयऔ अत्यन्त पापीभी होय औ औरके धनस्त्रीमें जिसकी प्रीति होय औ ब्राह्मण औ मित्र इनके मारने वालाभी हो औ सुवर्णकी चोरी करनेवाला औ कुल नाशक होय औ ऐसे सैकड़ों पापोंसे युक्तभी होय औ योगियोंके समूह के तिरस्कार करनेवाला भी होय परन्तु श्रीरामकापूज नकर रामहृदयका पाठ भक्तिसे नित्यकरैतो वोपूर्वकृत संपूर्ण पापोंका नाश करयोगीन्द्रोंको दुर्लभ जो रामपद तिसकोप्राप्त होताहै औ सबदेवता उसको पूज तेहैं५८॥

इत्यध्यात्मरामायणेभाषाटीकायांप्रथमःसर्गः ॥ १ ॥

जगत्प्रभो ॥
पार्वत्युवाच ॥ धन्यास्म्यनुगृहीतास्मिकृतार्थास्मि त्वन्मुखाद्गलितंरामतत्त्वामृ
विच्छिन्नोमेतिसंदेहग्रंथिर्भवदनुग्रहात् १ तरसायनम् ॥ पिबन्त्यामेमनोदेवनतृप्यतिभवापहम् २ श्रीरामस्य
कथात्वत्तःश्रुतासंक्षेपतोमया । इदानींश्रोतुमिच्छामिविस्तरेणस्फुटा
क्षरम् ३ श्रीमहादेवउवाच ॥ शृणुदेविप्रवक्ष्यामिगुह्याद्गुह्यतरंमह
त् ॥ अध्यात्मरामचरितंरामेणोक्तंपुरामम ४ तदद्यकथयिष्यामिशृ
णुतापत्रयापहम् ॥यच्छ्रुत्वामुच्यतेजन्तुरज्ञानोत्थमहाभयात् ।प्राप्नो
तिपरमामृद्धिन्दीर्घायुःपुत्रसन्ततिम् ५ भूमिर्भारेणमग्नादशवदन
मुखाशेषरक्षोगणन्तं धृत्वागोरूपमादौदिविजमुनिजनैःसाकमब्जा
सनस्य ॥ गत्वालोकंरुदन्तीव्यसनमुपगतंब्रह्मणेप्राहसर्वंब्रह्माध्या
त्वामुहूर्तंसकलमपिहृदावेदशेषात्मकत्वात् ६ ॥

दोहा ॥ सर्गदूसरे भूमिसुर हितबोले भगवान् ॥
होइहौंदशरथसूनुकपि होइअमरबलवान् २

अवश्री पार्वतीजी महादेवसे कहतीहैं हेभगवन् मैं धन्यहों औ आपने अनुग्रह
युक्तकिया औ मैं कृतार्थहुई औ मेरे हृदयमें सन्देहरूपी ग्रन्थि आपके अनुग्रह
से छिन्नहुई १ परन्तु हे देव आपके मुखारबिन्दसे चुआहुआ जो संसाररोग के
नाश करनेवाला श्रीरामतत्व अमृत रसायन तिसको पानकरती हुई सो मैं
हूं तिसका मन नहीं तृप्त होताहै २ श्रीरामचन्द्रजी की कथा आपसे संक्षेप से
मैंने सुनी इस समयमें विस्तार पूर्वक सुनाचाहती हौं जिसमें सब स्पष्टअक्षर
औ अर्थ बिदित होय ३ यह पार्वतीजी के बचन सुनिकै श्री महादेवजी बोले हे
देवि तुम सुनो मैं कहताहूं गुप्त से भी गुप्त परमश्रेष्ठ जो अध्यात्म रामचरित्र
जैसे मैंने श्रीरामहीके मुख से कहाहुआ पहिले सुनाहै तैसे कहौंगा जो चरित्र
तीनों तापके शांतकरनेवालाहै हेपार्वति सुनिये ४ जिसको श्रवणकरके अज्ञान
से उत्पन्न जो बड़ी भय तिससे छूटजाताहै श्रीपरम समृद्धिको प्राप्त होता है
औ बड़ी आयुर्बल युक्त पुत्र पौत्रादि संततिको प्राप्त होता है ५ एक समय में
रावण आदि राक्षसों से भारसे पीड़ित हुई जो पृथ्वी सो गौकारूप धारणकर
और संपूर्ण देवता औ मुनीश्वर इनको संगलेके ब्रह्मलोकमें जाकेरोनेलगी औ
ब्रह्माजी से अपना सब राक्षसों का कियाहुआ दुःख कहा तो ब्रह्माजी एक
मुहूर्त्त भर ध्यान करके सब क्लेश जानते हुये क्योंकि ब्रह्मासर्वस्वरूप हैं ६ ॥

तस्मात्क्षीरसमुद्रतीरमगमद्ब्रह्माथदेवैर्वृतोदेव्याचाखिललोकहृत्स्थ

मजरंसर्वज्ञमीशंहरिम्॥अस्तौषीच्छ्रुतिसिद्धानिर्मलपदैःस्तोत्रैःपुराणो द्भवैर्भक्त्यागद्गदयागिरातिविमलैरानन्दबाष्पैर्वृतः ७ ततःस्फुरत्सह स्रांशुसहस्रासदृशप्रभः ॥ आविरासीद्धरिःप्राच्यांदिशांव्यपनयंस्त मः ८कथंचिद्दृष्टवान्ब्रह्मादुर्दर्शमकृतात्मनाम् ॥ इन्द्रनीलप्रतीकाशं स्मितास्यंपद्मलोचनम् ९ ॥

फिर ब्रह्माजी सब देवतोंको औ उस पृथ्वीको भी संगलैकै वहां से क्षीरस मुद्रके तीर जाकर सबके हृदयमें स्थित औ अजर अमर औ सर्वज्ञ ऐसे नारा यणकी वेदसे सिद्ध निर्मलपद जिनमें ऐसे प्राचीन स्तोत्रों करके और गद्गद वाणी से स्तुति करनेलगे और भक्तिकरके नेत्रों से आनन्दके अश्रुपात कररहे हैं ७ तिसके उपरांत हज़ार सूर्योंकीसी कांति जिनकी ऐसे नारायण प्रकटहोते हुये पूर्व दिशामें और सब अंधकार दिशाओंका नाश करतेहुये ८ ऐसे नारायण को ब्रह्मा कैसे देखते हुये अर्थात् तेजके पुंजकरके जिनके स्वरूपमें दृष्टिनहीं ठहरसक्ती है कैसे नारायण हैं जो अकृतात्मा पुरुष हैं जिन्होंने अपनाचित्त वश नहीं कियाहै तिनको दुर्दर्श हैं दुःखसे भी नहीं दिखाई पड़ते हैं और इंद्रनील मणिके तुल्य जिनकी कान्ति है और मंदमुसक्यान कररहे हैं और जिनके कम लवत् विशाल नेत्रहैं ९ ॥

किरीटहारकेयूरकुण्डलैःकटकादिभिः ॥ विभ्राजमानंश्रीवत्सकौ स्तुभप्रभयान्वितम् १० स्तुवद्भिःसनकाद्यैश्चपार्षदैःपरिवेष्टितम् ॥ शंखचक्रगदापद्मवनमालाविराजितम् ११ स्वर्णयज्ञोपवीतेनस्वर्णव र्णाम्बरेणच । श्रियाभूम्याचसहितंगरुडोपरिसंस्थितम् १२ हर्षग द्गदयावाचास्तोतुंसमुपचक्रमे ॥ ब्रह्मोवाच ॥ नतोस्मितेपदंदेवप्राण बुद्धीन्द्रियात्मभिः १३ यच्चिन्त्यतेकर्मपाशाद्धृदिनित्यंमुमुक्षुभिः ॥ मा यययागुणमय्यात्वंसृजस्यवसिलुम्पासि १४ जगत्तेननतेलेपआनन्दा नुभवात्मनः ॥ तथाशुद्धिर्नदुष्टानांदानाध्ययनकर्मभिः १५ शुद्धात्म तातेयशसिसदाभक्तिमतांयथा ॥ अतस्तवांघ्रिर्मेदृष्टिश्चित्तदोषापनु त्तये १६ सयोन्तर्हृदयेदृष्टोमुनिभिःसात्वतैर्वृतः ॥ ब्रह्माद्यैःस्वार्थसि द्ध्यर्थमस्माभिःपूर्वसेवितः १७ ॥

और मुकुटहार औ बाहुभूषण औ कुण्डल औ कड़े इन आभूषणों करिकै प्रकाशमान होरहे हैं और वक्षःस्थलमें लक्ष्मी के चिह्नको धारण किये हैं औ कंठमें कौस्तुभ मणि करिकै प्रकाशित होरहे हैं १० और स्तुति करते हुये जो

सनक आदि मुनि औ अपने पार्षदगण तिनकरिकै सेवितहैं औ शंख चक्र गदा पद्म वनमाला इन करिकै भूषित होरहे हैं ११ औ सुवर्ण के यज्ञोपवीत को धारणकरेरहैं औसुवर्ण सदृश झलकते हुये पीतवस्त्रको धारण करेहैं औलक्ष्मी औ पृथिवी इन करके सहित हैं और गरुड़जीके ऊपर स्थित होरहे हैं १२ ऐसे नारायणको देखिकै ब्रह्माजी बड़े आनंदसे गद्गद बाणीकरके स्तुति करतेहुये हे भगवन् आपके चरणारबिन्दको मैं प्रणाम करताहूं जो चरण प्राण बुद्धि इंद्रिय मन इनसे उत्पन्न जो कर्मरूप पाशतिससे छूटनेकी इच्छा करिकै योगी जनोंने नित्यही हृदयमें चिन्तन कियाहै १३ और आप अपनी गुणमयी माया करिकै जगत्को रचतेहौ औ पालन करतेहौ औ संहार करतेहौ तौ भी अपनें स्वरूपकी महिमासे उन कर्म्मों करिके लिपायमान नहीं होते हैं १४।१५ हेभगवन दुष्ट पुरुषोंकीदान अध्ययनादि कर्म्मों से तैसी शुद्धि नहीं होती जैसी भक्तिमान् पुरुषोंकी आपके यशगान करने से अन्तःकरणकी शुद्धि होती है १६ इसी से अपने चित्तके दोषके दूरकरने को मैंने आपके चरणारविन्दका दर्शन किया कैसे चरण हैं जो भक्तों करिकै परिवेष्टितहैं औ मुनियों ने ध्यानमार्ग्गकरिकै अपने हृदयके मध्यमें देखाहै औ हमसब जो ब्रह्माआदि जो देवगण तिन्हों ने अपने अपने कार्य्यकी सिद्धिके अर्थ पहिले भी सेवन किया है अर्थात् जब जब हमारे ऊपर बिपत्ति पड़ती है तब आपहीके चरणोंका सेवनकरतेहैं १७॥

अपरोक्षानूभूत्यर्थंज्ञानिभिर्हृदिभावितः ॥ तवांघ्रिधूतनिर्माल्य त्लसीमालयाविभो १८ स्पर्द्धतेवक्षसिपदंलब्ध्वापिश्रीःसपत्निवत् ॥ अतस्त्वत्पादभक्तेषुतवभक्तिःश्रियोधिका १९ भक्तिमेवाभिवांछंति त्वद्भक्ताःसारवेदिनः ॥ अतस्त्वत्पादकमलेभक्तिरेवसदास्तुमे २०संसारामयतप्तानांभेषजंभक्तिरेवते॥इतिब्रुवन्तंब्रह्माणंबभाषेभगवान्हरिः २१ किंकरोमीतितंवेधाःप्रत्युवाचातिहर्षितः ॥ भगवन्रावणोनामपौलस्त्यतनयोमहान् २२ राक्षसानामधिपतिर्मद्दत्तवरदर्प्पितः ॥ त्रिलोकींलोकपालांश्चबाधतेलोकबाधकः २३ ॥

औ आत्मसाक्षात्कारके अर्थजो चरण कमल ज्ञानियों करिकै बारंबार हृदय में ध्यानकियागयाहै औ हे विभो लक्ष्मी आपकेवक्षःस्थलमें स्थानको प्राप्तहोकै भी आपके चरणारविन्द में चढ़ीहुई अतिपवित्र जो तुलसीकीमाला तिसके संग सपत्नीकी तरह नित्यस्पर्द्धाही किया करतीहै अर्थात् आपके चरणारविन्दमें ऐसा लावण्यहै जो वक्षस्स्थलमें रहनेवालीभी लक्ष्मीचरण में बासकी इच्छा करके तुलसीके उत्कर्षको नहीं सहतीहुई सौतिकी तरह तिसके तिर-

स्कारकी इच्छाकरतीहै इससे आपके चरणके जोभक्तहैं तिनमें आपकी लक्ष्मी सेभी अधिकप्रीतिहै ऐसा जानाजाताहै १८।१९ इसीसे सारबस्तुके जानने वाले जे रसिक भक्तहैं ते सब त्यागकर केवल आपके चरण कमलके भक्तिही की इच्छा करतेहैं इससे आपके चरणकमलमें मेरीभी सदाभक्तिहोय २० काहेसे जिससे संसाररूपरोगके ताप करकेजे पुरुष संतप्त होरहे हैंतिनकीभक्तिही परम औषधहै ऐसीस्तुति करतेहुये जोब्रह्मा तिनसे विष्णुभगवान् बोलतेहुये २१ कि हेब्रह्मन् क्यातुम्हाराकार्य्य मैं करूं सो कहिये ऐसे नारायणके वचन सुनिकै ब्रह्माजी अत्यन्त आनन्द युक्तहोकै भगवान्से बोलतेहुये हे भगवन् पुलस्त्यका पौत्र औ बिश्रवाकापुत्र रावणनामकरके बड़ाबली सब राक्षसोंका स्वामी एकराक्षसहै सो मेरेदिये वर करके बड़ा गर्व युक्तहो रहाहै सो तीनों लोकों को औ इन्द्रादिक लोकपालोंको बाधताहै औ सबलोकों को बाधता है २२।२३ ॥

मानुषेणमृतिस्तस्यमयाकल्याणकल्पिता ॥ अतस्त्वंमानुषोभूत्वा जहिदेवरिपुंविभो २४श्रीभगवानुवाच ॥ कश्यपस्यवरोदत्तस्तपसातोषितेनमे ॥ याचितःपुत्रभावायतथेत्यंगीकृतंमया २५ सइदानींदशरथोभूत्वातिष्ठतिभूतले ॥तस्याहंपुत्रतामेत्यकौशल्यायांशुभेदिने २६ चतुर्द्धात्मानमेवाहंसृजामीतरयोःपृथक् ॥ योगमायापिसीतेतिजनकस्यगृहेतदा २७ उत्पत्स्यतेतयासार्द्धंसर्वंसंपादयाम्यहम् ॥ इत्युक्तान्तर्दधेविष्णुर्ब्रह्मादेवानथाऽब्रवीत् २८ ॥

और मनुष्यहीकरिकै उसकी मृत्यु मैंने रचीहै इससे हेप्रभो आपमनुष्यरूपहोकै उस देवकंटक रावणका नाश करिये २४ अबयह ब्रह्माजीके बचनसुनिकै भगवान् बोलतेहुये हे ब्रह्मन् पहिले कश्यप ऋषिने मेरातप किया तौ उस तपसे प्रसन्नहोकै मैंने कश्यपसे कहाकि बर मांगो तौ कश्यप जीने यह कहा किजो प्रसन्नहोउतो आपही मेरे पुत्रहोउ तोमैंने कहा ऐसेही होगा २५ सोई कश्यप अब इस समयमें पृथिवीतलमें दशरथरूपधारणकर स्थितहो रहाहै तिस दशरथकी स्त्रीकौशल्याके और उस दशरथकी दोभार्या औरभी हैं तिनका भी चाररूप धारण करिकेमैं इसप्रकार तीनों रानियोंके पुत्रभावको प्राप्तहोउँगा और मेरी योगमाया जोहै सो जनक गृहमें सीता नाम करिकै उत्पन्न होयगी तिसके सहाय करिकैमैं सम्पूर्ण पृथिवी का भारावतरण रूपकार्य्य सिद्धकरूंगा ऐसा कहिके विष्णुतो अन्तर्द्धानको प्राप्तहुये औ ब्रह्माजी देवतोंसे बोलतेहुये २६।२८ ॥

ब्रह्मोवाच ॥ विष्णुर्मानुषरूपेणभविष्यतिरघोःकुले ॥ यूयंसृजध्वं सर्वेपिवानरेष्वंशसंभवान् २९ विष्णोःसहायंकुरुतयावत्स्थास्यति भूतले ॥ इतिदेवान्समादिश्यसमाश्वास्यचमेदिनीम् ३० ययौब्रह्मास्वभवनंविज्वरःसुखमास्थितः ३१ देवाश्चसर्वेहरिरूपधारिणः स्थितास्सहायार्थमितस्ततोहरेः ॥ महाबलाःपर्वतवृक्षयोधिनःप्रतीक्षमाणाभगवन्तमीश्वरम् ३२

इत्यध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेबालकाण्डेद्वितीयःसर्गः ॥२॥

हे देवतो विष्णु भगवान् मनुष्यरूप करिकै रघुकुल में प्रकट होंगे इससे तुम संपूर्ण बानरोंके विषे अपने अपने अंशसे पुत्र उत्पन्न करो २९ औ जब तक विष्णु भगवान् भूतल में स्थित रहैं तबतक तुमभी सब पृथिवीमें स्थित होके विष्णुका सहाय करो इस प्रकार सब देवतोंको आज्ञा देके औ पृथिवी के चित्तको सावधान करिकै ३० ब्रह्माजी अपने लोकको जातेहुये औ संताप रहित सुखपूर्वक स्थितहोतेहुये ३१ अब सब देवता बानरोंकारूपधारणकरिकै भगवान्के सहायके अर्थ जहां तहां स्थितहोते हुये कैसे बानर हैं जे बड़े बलवान् हैं औ पर्वत औ वृक्ष इनको धारणकर युद्ध करनेवाले हैं और भगवान्की प्रतीक्षाकर रहेहैं अर्थात् कब परमेश्वरका दशरथ के यहां जन्म होय ३२ ॥

इत्यध्यात्मरामायणेबालकांडटीकायांद्वितीयस्सर्गः ॥ २ ॥

महादेवउवाच ॥ अथराजादशरथःश्रीमान्सत्यपरायणः ॥ अयोध्याधिपतिर्वीरःसर्वलोकेषुविश्रुतः १ सोऽनपत्यत्वदुःखेनपीड़ितो गुरुमेकदा ॥ वशिष्ठंस्वकुलाचार्यमाहूयेदमथाब्रवीत् २ स्वामिन्पुत्राः कथंमेस्युःसर्वलक्षणलक्षिताः ॥ पुत्रहीनस्यमेराज्यंसर्वंदुःखायकल्पते ३ ततोऽब्रवीद्वशिष्ठस्तंभविष्यन्तिसुतास्तव ॥ चत्वारःसत्त्वसम्पन्नालोकपालाइवापराः ४ शान्ताभर्तारमानीयऋष्यशृंगन्तपोधनम्॥ अस्माभिस्सहितःपुत्रकामेष्टिंशीघ्रमाचर ५ तथेतिमुनिमानीयमन्त्रिभिस्सहितःशुचिः ॥ यज्ञकर्मसमारंभेमुनिभिर्वीतकल्मषैः ६ श्रद्धया हूयमानेग्नौतप्तांगकनकप्रभः ॥ पायसंस्वर्णपात्रस्थंगृहीत्वोवाचहव्यवाट् ७ गृहाणपायसंदिव्यंपुत्रीयंदेवनिर्मितम् ॥ लप्स्यसेपरमात्मानंपुत्रत्वे नचसंशयः ८ ॥

दोहा। सर्गतीसरेपुत्रहित ऋष्यशृंगबुलवाय ॥
यज्ञकरतनृपमुदलह्यो यज्ञपुरुषसुतपाय ३ ॥

अब श्रीमहादेव पार्वतीजीसे कहते हैं हे पार्वति अयोध्या नगरी का अधिपति दशरथनामकरिकै एकराजाहोताहुआ कैसा वहराजाहै बड़ा लक्ष्मीवान्है और सत्याबिषे परायणहै अथवा सत्य जो परमात्मासोईहै परमउत्कृष्ट अयन आश्रय जिसका सो कहिये सत्यपरायण अर्थात् परमेश्वर का अनन्य भक्तहै औ सब लोकोंमेंविख्यातहै १ सो राजादशरथ एक समय पुत्रकेनहीं होनेसे दुःखकरिकै पीडितहुआ तौ अपने कुलके आचार्य वशिष्ठजी जो गुरू तिनको बुलाकरिकै कहताहुआकि २ हेस्वामिन् सबशुभलक्षणोंकरिकैयुक्तऐसे मेरेपुत्र कैसे उत्पन्न होयँ क्योंकि पुत्रहीन जो मैंहूं तिसको सब राज्य आदि सुखभीदुःखरूपही होरहाहै तिससे ऐसी कृपाकरिये जिससे पुत्रहोयँ ३ तौवशिष्ठजीबोले हेराजन् तुम्हारे चारपुत्रहोंगे सत्त्वगुण युक्त चारोंलोकपालोंके समान ४ परन्तु शांता जो तुम्हारी कन्याहै तिसका पति जो बड़ा तपस्वी मुनियोंमें श्रेष्ठ ऋष्यश्रृंग मुनिहैं तिनको बुलाइकै हम सब ऋषियोंकरिके सहित पुत्रके कामनाकरिकै यज्ञशीघ्रहीकरिये ५ यहवशिष्ठजीका बचनसुनिकै राजादशरथ मंत्रियोंके द्वारा ऋष्यश्रृंगकोबुलवाके बशिष्ठआदि महात्माऋषियों करकेसहित यज्ञकाप्रारम्भ करतेहुये ६ जब ऋषियोंने श्रद्धाकरिकै अग्निमें हवन किया उस समयमें तप्त-सुवर्णकीसी कांतिजिनकी ऐसेअग्नि दिव्यरूपधारणाकिये औसुवर्ण के थालमें खीरकोलियेहुये उसअग्निके कुण्डमेंसेनिकलके राजादशरथके समीप जाकेयह कहतेहुये ७ हे राजन् यह देवनिर्मित दिव्यपायस है इसको ग्रहण कीजिये यह पुत्रका देनेवाला है इसके प्रभावसे परमात्मरूप पुत्रको प्राप्त होउगे इसमें कुछ संशय नहीं है ८॥

इत्युक्त्वापायसंदत्त्वाराज्ञेसोन्तर्दधेनलः ॥ बबन्देमुनिशार्दूलौराजालब्धमनोरथः ९ वशिष्ठऋष्यश्रृंगाभ्यामनुज्ञातोददौहविः ॥ कौशल्यायैसकैकेय्यैअर्द्धमर्द्धंप्रयत्नतः १० ततःसुमित्रासंप्राप्तासंगृध्नुःपौत्रिकंचरुम् ॥ कौशल्यातुस्वभागार्द्धंददौतस्यैमुदान्विता ११ कैकेयीचस्वभागार्द्धंददौप्रीतिसमान्विता ॥ उपभुज्यचरुंसर्वाःस्त्रियोगर्भसमन्विताः १२ देवताइवरेजुस्ताःस्वभासाराजमन्दिरे ॥ दशमेमासिकौशल्यासुषुवेपुत्रमद्भुतम् १३ मधुमासेसितेपक्षेनवम्यांकर्कटेशुभे ॥ पुनर्वस्वृक्षसहितेउच्चस्थेग्रहपंचके १४ मेषंपूषणिसंप्राप्तेपुष्पवृष्टिसमाकुले ॥ आविरासीज्जगन्नाथःपरमात्मासनातनः १५ ॥

ऐसे बचन कहिकै राजाके हाथमें वह पायस से भरा सुवर्णका पात्र देके अग्नि अन्तर्द्धान होतेहुये औ प्राप्तहुआहै मनोरथ जिसको ऐसा राजा दशरथ

उस समयमें वशिष्ठ औ ऋष्यशृंग को प्रणाम करता हुआ ९ फिर उन दोनों मुनियों की आज्ञासे उस खीरका आधा भाग तो प्रथम कौशल्या को दिया औ आधा भाग कैकेयी को दिया १० तबतक तीसरी रानी सुमित्रा भी पुत्रेच्छा करके प्राप्त हुई तौ प्रथम कौशल्याने अपने भागसे आधाभाग पायसका हर्ष पूर्वक सुमित्राको दिया ११ फिर कैकेयीने भी आधाभाग सुमित्राको प्रीतिसे दिया इस प्रकार तीनोंरानी उस दिव्यखीरको भोजनकर गर्भको धारण करती हुईं १२ फिर उसगर्भके प्रभावसे राजाके मंदिरमें देवताके तुल्य अपनी कांति से प्रकाशमान होतीहुईं अर्थात् उन रानियोंके तेजकरिके वह मंदिरभी प्रकाश युक्त होताहुआ तिसके अनन्तर प्रथम कौशल्यारानी दशवें महीने में बड़ा अद्भुत पुत्र उत्पत्ति करती हुई अर्थात् जैसे लोकमें कहीं किसीका पुत्र न होय तैसे आश्चर्य युक्त पुत्रको कौशल्या उत्पन्न करती हुई सो आश्चर्य आगे वर्णन करैंगे १३ अबश्रीरामचंद्रजीके जन्मका समयकहते हैं चैत्रमास औशुक्लपक्ष औ नवमीके दिन जब कर्कलग्नका उदयहुआ और सब प्रकारसे शुभमहूर्त्त में औ पुनर्वसु नक्षत्र युक्तकालमें औ पांचग्रहके उच्चहोतसंते १४और मेषराशि स्थित सूर्यजबरहे और देवतागणपुष्पोंकी वृष्टि जबकरतेहुये उसपरमानन्दयुक्त समय में सब जगत् के स्वामी सनातन परमात्मा श्रीरामचंद्र प्रकटहोते हुये १५ ॥

नीलोत्पलदलश्यामःपीतवासाश्चतुर्भुजः॥जलजारुणनेत्रान्तःस्फुरत्कुण्डलमण्डितः १६ सहस्रार्कप्रतीकाशःकिरीटीकुञ्चितालकः ॥ शङ्खचक्रगदापद्मवनमालाविराजितः १७ अनुग्रहाख्यहृत्स्थेन्दुसूचितस्मितचंद्रिकः ॥ करुणारससंपूर्णविशालोत्पललोचनः १८ श्रीवत्सहारकेयूरनूपुरादिविभूषणः॥ दृष्ट्वातंपरमात्मानंकौशल्याविस्मयाकुला १९ हर्षाश्रुपूर्णनयनानत्वाप्रांजलिरब्रवीत् ॥कौशल्योवाच॥ देवदेवनमस्तेतुशंखचक्रगदाधर २० परमात्माच्युतोनन्तःपूर्णस्त्वंपुरुषोत्तमः ॥ वदन्त्यगोचरंवाचाम्बुद्ध्यादीनामतीन्द्रियम् २१ त्वांवेदवादिनःसत्तामात्रंज्ञानैकविग्रहम् ॥ त्वमेवमाययाविश्वंसृजस्यवसिहंसिच २२ ॥

अब जैसे आश्चर्य युक्त कौशल्याके पुत्र हुआ है सो आश्चर्य वर्णनकरते हैं कि नीलकमलदलके तुल्य श्यामवर्ण जिसका और पीतवस्त्रको धारण करे हैं और चारि जिसके भुजाहैं औ कमलके सदृश रक्तहै नेत्रोंका समीपदेश जिनका औ देदीप्यमान जो मकराकृत कुण्डल तिनकरिके भूषितहैं १६ औ हज़ार सूर्य के तुल्यहै प्रकाशजिसका औमुकुटको धारणकरेहैं औ घुंघुवारे केशहैं जिसके औ

शंखचक्र गदा पद्म बनमाला इन करिके शोभायमान १७ औ अनुग्रहरूपी हृदयमें बिराजमान जो चंद्रमा तिसके बोधन करनेवालीहै मंदमुसक्यानरूप उजियाली जिसकी और करुणारस करके पूर्ण विस्तृत कमलवत् नेत्र जिसके १८ औ लक्ष्मीका चिह्न और हार और बहूंटा औ पहुंटा इनको आदिलैके आभूषणोंको धारणकरेहैं ऐसा परमात्मरूप अद्भुत बालकको कौशल्या देखिकै बड़े आश्चर्य युक्त होकर १९ आनन्दाश्रु से पूर्णहोरहे नेत्र जिसके ऐसी होकर और हाथ जोड़कर स्तुतिकरती हुई हे शंख चक्र गदाके धारणकरनेवाले हे देवोंके भी देव बुद्धिप्रकाश तुम्हारेअर्थ नमस्कारहै २० आपपरमात्माहौ नाशरहितहौ औ अनन्तहौ अर्थात् तुम्हारा अन्तनहींहै और सर्वत्रपरिपूर्णहौ और पुरुषोत्तम हौ अर्थात् कूटस्थ आत्मासे परेहौ औ बाणी औ बुद्धयादिक इनके अगोचर नाम विषय नहीं इसीसे अतीन्द्रिय इंद्रियोंसे उल्लंघनकर बर्त्तमान ऐसे आपको वेदबादी ब्राह्मण कहते हैं २१ औ सत्तामात्रज्ञानही स्वरूप जिसका ऐसा भी कहते हैं और तुमही माया करिकै विश्वको रचते हौ औ पालन करते हौ औ संहार करते हौ २२ ॥

सत्त्वादिगुणसंयुक्तस्तुर्यएवामलाःसदा॥ करोषीवनकर्त्तात्वंगच्छसीवनगच्छसि २३ नशृणोषिशृणोषीवपश्यसीवनपश्यसि । अप्राणोह्यमनाःशुद्धइत्यादिश्रुतिरब्रवीत् २४ समःसर्वेषुभूतेषुतिष्ठन्नपिनलक्ष्यसे ॥ अज्ञानध्वान्तचित्तानांव्यक्तएवसुमेधसाम् २५ जठरेतवदृश्यंतेब्रह्माण्डःपरमाणवः ॥त्वंममोदरसंभूतइतिलोकान्विडम्बसे २६ भक्तेस्तुपारवश्यंतेदृष्टंमेद्यरघूत्तम ॥ संसारसागरेमग्नापतिपुत्रधनादिषु २७ भ्रमामिमाययातेद्यपादमूलमुपागता ॥ देवत्वद्रूपमेतन्मे सदातिष्ठतुमानसे २८ ॥

औ सदा निर्मल औ गुणातीत भी सत्त्वादिगुण संयुक्तहौ और करनेवालेकी नाईं प्रतीयमानभीहौ और नहीं करतेहौ और जैसे कोई गमनकरै ऐसेप्रतीयमान भीहौ औ नहीं चलतेहौ २३ औ सुननेवालेके तरहभीहौ औ नहीं सुननेवालेहौ औ देखनेवालेकीतरहभीहौ औ नहीं देखनेवालेहौ जिससे प्राणरहित औ मनरहित शुद्धपरमात्माहौ ऐसा वेद कहिरहाहै २४ और आप सब भूतोंमें स्थितभीहौ परंतु अज्ञानरूपी अंधकारकरिकैयुक्तहै चित्तजिनका तिनको न लक्षितहोते और निर्मलबुद्धि पुरुषोंको प्रतीयमानहौ २५ हे भगवन् तुम्हारेउदर में अनेकब्रह्मांड परमाणुकेसदृश दिखाईपड़तेहैं ऐसेआप मेरेउदरमेंउत्पन्नहोउ यह लोकोंको बिडम्बन कररहेहौ अर्थात् बड़े उपहास्यकी बार्त्ता है २६ औ हे

रघूत्तम आप ऐसे भक्तिके बशहौ यह मैंने देखा औ हे भगवन् संसारसागर में डूबी हुई मैं पति पुत्र धनादिकों में २७ भ्रमरहीहौं तुम्हारी माया करके परंतु अब आपके चरण समीप कोई पुण्यके लेशसे प्राप्त हुई हौं इससे हे देव यह आपका रूप सदा मेरे हृदयमें बासकरै २८ ॥

आवृणोतुनमांमायातवविश्वविमोहिनी ॥ उपसंहरविश्वात्मन्नेतद्रूपमलौकिकम् २९ दर्शयस्वमहानंदबालभावंसुकोमलम् ॥ ललितालिङ्गनालापैस्तरिष्यन्त्युत्कटंतमः ३० श्रीभगवानुवाच ॥ यद्यदिष्टंतवास्त्यम्बतत्तद्भवतुनान्यथा ॥ अहन्तुब्रह्मणापूर्वंभूमेर्भारापनुत्तये ३१ प्रार्थितोरावणंहन्तुंमानुषत्वमुपागतः ॥ त्वयादशरथेनाहंतपसाराधितःपुरा ३२ मत्पुत्रत्वाभिकांक्षिण्यातथाकृतमनिन्दिते ॥ रूपमेतत्त्वयादृष्टम्प्राक्तनंतपसःफलम् ३३ मद्दर्शनंविमोक्षायकल्पतेह्यन्यदुर्लभम् ॥ संवादमावयोर्यस्तुपठेद्वाशृणुयादपि ३४ सयातिममसारूप्यंमरणेमत्स्मृतिंलभेत् ॥ इत्युक्त्वामातरंरामोबालोभूत्वारुरोदह ३५

और विश्वके मोहन करनेवाली आपकी मायामुझको कभी आवरण न करै औ हे विश्वात्मन् इस अलौकिक रूपको आप छिपाइ लीजै २९ औ बड़े आनन्दका देनेवाला अति कोमल अपना बालस्वरूप दिखलाइये जिसस्वरूपका सुन्दरआलिंगन औ संभाषणादिककरिकै जनभयंकर संसारको पार होंगे ३० यह माताकेबचन सुनिकै भगवान् बोलते हुये हे मातः जो तुमनेइच्छा कीहै सोतैसेही होयगी अन्यथा न होगा औमैं तौ प्रथमपृथ्वीके भारउतारने को ब्रह्मा करिकै प्रार्थनाकियागया रावणकेमारनेको इसमनुष्य शरीरकोप्राप्तहुआहौं अर्थात्ब्रह्मा के बरदानके कारणसे रावणकी मृत्युविना मनुष्य के नहीं होनेके योग्यथी इस कारणसे मैंनेमनुष्य देहधारणकरना बिचार किया औरभीदूसरा कारण है कि तुमने और दशरथने पूर्वजन्ममें मुझको पुत्रहोनेकी इच्छासेबड़ा भारी तपकरिकै मेरा आराधन किया फिरमैंनेप्रसन्नहोके कहामैं तुम्हारापुत्र होउंगा सोबचन सत्यकरनेकोमैंहीं तुम्हारापुत्रहुआ औरयहजोमेरा दिव्यरूप तुमने देखा सो पूर्वजन्म के तपका फल है ३१ । ३२ औ मेरादर्शनसंसार से मोक्षही के अर्थजानो इसीसे औरोंकोदुर्लभहै औ जोकोई पुरुषहमारे तुम्हारे संवाद को पढ़ैगा अथवा सुनेगा ३४ सोमेरेसारूप्यमोक्षको प्राप्तहोगा औमरणसमयमेंमेरे स्मरणको प्राप्तहोगा यहबचनमातासे कहिकै रामजीबालकहो के रोनेलगे ३५॥

बालत्वेपीन्द्रनीलाभोविशालाक्षोतिसुन्दरः ॥ बालारुणप्रतीकाशोलालिताखिललोकपः ३६ अथराजादशरथःश्रुत्वापुत्रोद्भवोत्स

चम् ॥ आनन्दार्णवमग्नोसवाययौगुरुणासह ३७ रामंराजीवपत्राक्षंदृष्ट्वाहर्षाश्रुसंप्लुतः ॥ गुरुणाजातकर्माणिकर्तव्यानिचकारसः ३८ कैकेयीचाथभरतमसूतकमलेक्षणा ॥ सुमित्रायांयमौजातौपूर्णेन्दुसदृशाननौ ३९ तदाग्रामसहस्राणिब्राह्मणेभ्योमुदाददौ ॥ सुवर्णानिचरत्नानिवासांसिसुरभीःशुभाः ४० यस्मिन्रमंतेमुनयोविद्ययाज्ञानविप्लवे ॥ तंगुरुःप्राहरामेतिरमणाद्रामइत्यपि ४१ भरणाद्भरतोनाम लक्ष्मणंलक्षणान्वितम् ॥ शत्रुघ्नंशत्रुहन्तारमेवंगुरुरभाषत ४२ लक्ष्मणोरामचन्द्रेण शत्रुघ्नोभरतेनच ॥ द्वन्द्वीभूयचरंतौतौपायसांशानुसारतः ४३ ॥

श्री रामचन्द्रजी बालभावमें भी अति सुन्दर होतेहुये कैसेहैं इन्द्रनील जो श्याममणि तद्वत् कान्ति जिनकी औ बिशालहैं नेत्रजिनके औउदयकोप्राप्त जो अरुण तिसकेतुल्य प्रकाशजिनकाऔलाड़ लड़ायेहैं संपूर्ण लोकपाल जिसने अर्थात् सबके कारण भूतभी हैं परन्तुभक्त बशतासेबालस्वरूपको धारण करे हैं ३६ अब राजा दशरथ पुत्रके जन्मोत्सवको सुनकेआनन्दसमुद्रमें मग्नहुये वशिष्ठकरके सहित वहां आतेहुये ३७ कमलपत्रकेसे विशालनेत्र जिनके ऐसे श्रीरामरूप बालकको देखके आनन्दके अश्रुपातसे व्याप्तहुये उससमयमें करने के योग्य नान्दीमुखआदि जातकर्म वशिष्ठजीकी आज्ञानुसार करते हुये ३८ अब उसीसमयमें कमलकेसे नेत्र जिनके ऐसेकैकेयीभरतजीको उत्पन्नकरती हुई और पूर्ण चन्द्र सदृशहैं मुखजिनकाऐसेदोपुत्रसुमित्राकेहोतेहुये ३९ उस समयमें बड़े आनन्दयुक्त राजादशरथहजार ग्राम औरसुवर्णकेराशि औ बहुत रत्न औ अनेक प्रकारके वस्त्र औ बहुत श्रेष्ठगौवें ब्राह्मणोंकोदेतेहुये ४० औजिस तत्त्वमें मुनिलोग ज्ञान करके अविद्याका लयहोतसंते रमणकरतेहैं उसकानाम वशिष्ठजी 'राम,ऐसाकहतेहुये अथवा सबमें जोरमणकरताहै उससे कौशल्याके पुत्रको रामकहतेहुये ४१ औ सबका भरणकरताहै इससे कैकेयीपुत्रका 'भरत, नामकहतेहुये औ शुभललक्षणयुक्तहोनेसे सुमित्राके प्रथमपुत्रकानाम 'लक्ष्मण, कहते हुये औ शत्रुओंका नाश करनेसे सुमित्राके द्वितीय पुत्रकानाम 'शत्रुघ्न, कहते हुये ४२ और पायसरूप यज्ञके भागके अनुसार लक्ष्मण जी रामचन्द्र-केसंग औ शत्रुहन भरतके संग परस्पर दो दोमिलके विचरतेहुये ४३ ॥

रामस्तुलक्ष्मणेनाथविचरन्बाललीलया ॥ रमयामासपितरौचेष्टितैर्मुग्धभाषितैः ४४ भालेस्वर्णमयाश्वत्थपर्णमुक्ताफलप्रभम् ॥

कण्ठेरत्नमणिव्रातमध्यद्वीपिनखाञ्चितम् ४५ कर्णयोस्स्वर्णसंपन्नर त्नार्जुनसटालुकम् ॥ सिंजानमणिमञ्जीरकटिसूत्राङ्गदैर्वृतम् ४६ स्मि तवक्राल्पदशनमिन्द्रनीलमणिप्रभम् ॥ अङ्गणेरिङ्गमाणंतंतर्णकाननु सर्वतः ४७ दृष्ट्वादशरथोराजाकौशल्यामुमुदेतदा ॥ भोक्ष्यमाणोदश रथोराममेहीतिचासकृत् ४८ आह्वयत्यतिहार्देनप्रेम्णानायातिली लया ॥ आनयेतिचकौशल्यामाहसासस्मितासुतम् ४९ धावत्यपि नशक्नोतिस्प्रष्टुंयोगिमनोगतिम् ॥ प्रहसन्स्वयमावातिकर्दमाङ्कितपा णिना ५० किंचिद्गृहीत्वाकवलंपुनरेवपलायते ॥ कौशल्याजननीत स्यमासिमासिप्रकुर्वती ५१ वायनानिविचित्राणिसमलंकृत्यराघव म् ॥ अपूपान्मोदकान्कृत्वाकर्णशष्कुलिकास्तथा ५२ ॥

तिसमें श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मण के साथ विचरतेहुये बाललीला करिकै मधुर है भाषण जिनमें ऐसे चरित्रों करिकै माता पिता को रमण कराते हुये ४४ और मस्तकपै सुवर्ण के पीपलके पत्तेके समीप गुहे हुये जो मोती तिनक- रिकै शोभाजिसकी और कण्ठमें रत्नमणियोंके समूहके बीचमें गुहाहुआजो बा- घकानख तिसकरिकै शोभाजिनकी ४५ और कानोंमें सोनेकागढ़ाहुआ जोरत्न जटित अर्जुन वृक्षकाफल तिसकरके व्याप्तहोरहे और शब्दकरते हुये जो मणि- योंके नूपुर औ करधनी औ बाहुभूषण इनकरिके परिवेष्टित ४६ औ मंद मुस- क्यानकरनेवाले मुखारबिन्द में छोटे२ दन्तहैं जिनके औ इन्द्रनीलमणिके तुल्य है कान्ति जिनकी और कौशल्याके आंगनमें गौओंके बछड़ोंके चारोंतरफ घुटु ओंसेचलरहे ४७ ऐसे रामचन्द्रको दशरथ और कौशल्यादेखिकै परम आनंद को प्राप्तहोतेहुये औ जब दशरथ भोजन करने को बैठतेहैं तब अतिस्नेहसे राम को (एहि) अर्थात् आवो ऐसा शब्द कहिकै बुलातेहैं ४८ तिसपै भीखेलमें आ- सक्त जब नहीं आवतेहैं तौ कौशल्याके द्वारा बुलवातेहैं ४९ तौ कौशल्याको देख आपभागतेहैं फिर कौशल्याभी जिसराममें योगियोंका मनभी न जासके तिसको पकड़ने को दौड़ती हैं तौ और भी भागते हैं और कभी अपहीआ- कै कीचसेलसेहुये हाथसे ५० दशरथकी थालीसे ग्रासउठाके भागजाते हैं श्रीरामचन्द्रकी माता जो कौशल्याजी सो जब महीने महीने में जन्मनक्षत्र होता है उस दिन श्रीरामको उद्वर्तन औ स्नानकराकै नवीनवस्त्र आभूषणोंसे अलंकृत करती और अनेकप्रकार पक्वान विभागकरसब को यथोचितदेती हैं ५१।५२ ॥

कर्णपूराश्चविविधावर्षवृद्धौचवायनम् ॥ गृहकृत्यंतयात्यक्तंतस्य

चापल्यकारणात् ५३ एकदारघुनाथोसौगतोमातरमन्तिके ॥ भो जनंदेहिमेमातर्नश्रुतंकार्यसक्तया ५४ ततःक्रोधेनभाण्डानिलगुडे नाहनत्तदा ॥ शिक्यस्थंपातयामासगव्यंचनवनीतकम् ५५ लक्ष्म णायददौरामोभरताययथाक्रमम् ॥ शत्रुघ्नायददौपश्चाद्दधिदुग्धंतथै वच ५६ सूदेनकथितंमात्रेहास्यंकृत्वाप्रधाविता ॥ आगतांतांविलो क्याथततःसर्वैःपलायितम् ५७ कौशल्याधावमानापिप्रस्खलन्तीपदे पदे ॥ रघुनाथंकरेधृत्वाकिंचिन्नोवाचभामिनी ५८ ॥

औ जिसदिन वर्षगांठिहोती है तिस दिन जैसाशास्त्र में जन्मोत्सवकहा है वा रीतिसे श्रीरामको अलंकृत करिके सुवर्ण वस्त्र गौ आदि ब्राह्मणोंको दान दिवाइकर पुआ औ लड्डू औ पूरी कचौड़ी पिराक इत्यादि विविधप्रकारके पक्वान्नसे ब्राह्मणादिकोंको भोजन कराइ फिर वह बायन स्त्रियों में विभागकर नृत्यगीतादि जागरणांत उत्सवकरती हैं औ श्रीरामादिकों की बालक्रीड़ाकी चपलता देख ऐसी आनंद मग्न कौशल्याहोरहीहैं जिस को गृहकृत्यके काम-काभी पूर्वापर स्मरण नहीं रहता ५३ एक समयमें श्रीरामचंद्रजी माताके समीपजाके यह कहने लगे हे मातः भोजनमुझकोशीघ्रदे परंतु कौशल्या उस समयमें घरके कार्यमें व्यग्रथी इस्से पुत्रके वचनका ख्याल न किया ५४ तब श्रीरामजी क्रोधकर छीकेके ऊपरजो पात्ररक्खेथे उनको लाठीसे गिराकर फोरडाले और उनमें दहीदूध माखन रक्खाथा सो लक्ष्मणजीको दिया फिर भरत शत्रुघ्न को देतेहुये ५५।५६ यह वृत्तान्त रसोई दारने मातासे कहा तो माता कौशल्या हँसकर पुत्रके पकड़ने को दौड़तीहुई तो माताको आते देखते श्रीराम आदि सब बालक भयसे भागतेहुये५७तबतक कौशल्या गिड़ती पड़ती दौड़तीहुई रघुनाथ जीको हाथमें पकड़ लेतीहुई परंतु श्रीरामको देखिकै ऐसी आनन्द युक्तहुई जोकुछ बोलने मेंभी असक्त होगई ५८ ॥

बालभावंसमाश्रित्यमन्दंमन्दंरुरोदह ॥ तेसर्वेलालितामात्रागाढ मालिंग्ययत्नतः ५९ एवमानन्दसंदोहजगदानंदकारकः ॥ मायाबा लवपुर्धृत्वारमयामासदम्पती ६० अथकालेनतेसर्वेकौमारंप्रतिपेदि रे ॥ उपनीतावशिष्ठेनसर्वविद्याविशारदाः ६१ धनुर्वेदेचनिरताःसर्व शास्त्रार्थवेदिनः ॥ बभूवुर्जगतांनाथालीलयानररूपिणः ६२लक्ष्मण स्तुसदाराममनुगच्छतिसादरम् ॥ सेव्यसेवकभावेनशत्रुघ्नोभरतंत था ६३ रामश्चापधरोनित्यंतूणीबाणान्वितःप्रभुः ॥ अश्वारूढोवनं

यातिमृगयायैसलक्ष्मणः ६४ हत्वादुष्टमृगान्सर्वान्पित्रेसर्वंन्यवेदय त् ॥ प्रातरुत्थायसुस्नातःपितरावभिवाद्यच ६५ पौरकार्याणिसर्वाणिकरोतिविनयान्वितः ॥ बंधुभिस्सहितोनित्यंभुक्त्वामुनिभिरन्वहम् ॥ धर्मशास्त्ररहस्यानिशृणोतिव्याकरोतिच ६६ एवंपरात्मामनुजावतारोमनुष्यलोकाननुसृत्यसर्वम् ॥ चक्रेविकारीपरिणामहीनोविचार्यमाणेनकरोतिकिंचित् ६७ ॥

इत्यध्यात्मरामायणेबालकाण्डेतृतीयस्सर्गः ॥ ३ ॥

श्रीरघुनाथजी तौ बालभाव को अनुशरणकर मंदमंद रोदन करन लगे उस समयमें माताने भयभीत जानि सब बालकोंको बड़े प्रेमसे हृदयमें लगा लिया ५९ इसप्रकार आनन्द राशिरूप श्रीरामचन्द्र भक्तजनों को आनंद करतेहुये माया करिकै बालककेसे शरीर धारणकर दशरथ कौशल्या को रमण कराते हुये ६० तिसके अनन्तर सब रामआदि भ्राता कौमार अवस्थाको प्राप्त होते हुये फिर तिसके अनन्तर बशिष्ठजीने सबका यज्ञोपवीत किया तब सब वेद आदि विद्याओंमें कुशल होतेहुये ६१ औ धनुःशास्त्रमें बड़े प्रीतिसे तत्परहोते हुये औ संपूर्ण शास्त्रोंके अर्थको यथावत् जानतेहुए औ ईश्वररूप होनेसे हैं तो सब लोकोंके स्वामी परन्तु लीला करके मनुजरूप धारणकरेहैं ६२ इससे इनको कर्तृत्वको क्या अशक्यहै तिसमें लक्ष्मण तौ आदर पूर्वक सदा रामके अनुगामी होसेवन करते हैं तैसे शत्रुघ्न भरतका सेवन करते हैं ६३ औ जब रामचन्द्रजी धनुष बाण धारणकर घोड़के ऊपर चढ़िके शिकार खेलनेको बनको जाते हैं तो लक्ष्मणजी भी पीछेपीछे धनुषबाण लेके संगही रहते हैं कभी क्षणमात्र अलग नहीं रहते ६४ तहां पवित्र मृगोंको मारकर श्रीरामचन्द्र पिताके अर्थ निवेदन करते हुये अब श्रीरामचन्द्र नित्य प्रातःकाल स्नान संध्योपासन आदिकर्म करमाता पिताको प्रणाम करके ६५ बड़ी नम्रतासे पुरबासियोंके सब कार्य करते हैं फिर मुनियोंको भोजन कराइ आप सब भाइयोंके सहित भोजन करतेहैं फिर धर्म शास्त्रोंके जो रहस्य पदार्थहैं अर्थात् अति गुप्तकठिन जिनका आशय हर एक के समुझमें न आसकैं उनको चित्तदेके ऋषियों से सुनते हैं और आप भी उसके अर्थको खोलते हैं ६६ इस प्रकार परमात्माजो श्रीराम सो मनुष्य अवतार धारण करिके जैसे मनुष्योंके आचरण हैं वैसेई शास्त्रानुसार करतेहुये और वास्तवमें कोई बिचारकर देखै तौ बिकाररहित और बुद्धि के अनेक तरह होने में आप वैसे नहीं होते श्रीराम कुछ भी नहीं करतेहैं ६७॥

इत्यध्यात्मरामायणेभाषाटीकायांतृतीयस्सर्गः ३ ॥

शिवउवाच ॥कदाचित्कौशिकोभ्यागादयोध्यांज्वलनप्रभः । द्रष्टुंरा मपरात्मानंजातंज्ञात्वास्वमायया १ दृष्ट्वादशरथोराजाप्रत्युत्थायाचि रेणतु ॥ वशिष्ठेनसमागम्यपूजयित्वायथाविधि २ अभिवाद्यमुनिं राजाप्रांजलिर्भक्तिनम्रधीः ॥ कृतार्थोस्मिमुनींद्राहंत्वदागमनकारणा त्३ त्वद्विधायद्गृहंयांतितत्रैवायांतिसंपदः॥ यदर्थमागतोसित्वंब्रूहि सत्यंकरोमितत् ४ विश्वामित्रोपितंप्रीतःप्रत्युवाचमहामतिः ॥ अहं पर्वणिसंप्राप्तेदृष्ट्वायष्टुंसुरान्पितॄन् ५ यदारभेतदादैत्याविघ्नंकुर्वंति नित्यशः ॥ मारीचश्चसुबाहुश्चपरेचानुचरास्तयोः६ अतस्तयोर्बधा र्थायज्येष्ठंरामंप्रयच्छमे ॥ लक्ष्मणेनसहभ्रात्रातवश्रेयोभविष्यति ७॥

दोहा ॥ तृयेसर्ग में गाधिसुत राम लषण निधिपाय ॥
चले मुदित मग ताड़का रामहती बहुमाय ४

अब किसी समयमें अग्निकासा तेज जिनका ऐसे विश्वामित्रजी अपनी माया करके परमात्माही श्रीरामरूप प्रकट हुये हैं यह जानके श्री रामचन्द्रके दर्शन करने को अयोध्यामें आतेहुये १ तब राजादशरथ विश्वामित्रको देखके शीघ्रही उठिकर वशिष्ठजीको संगलेके बिधिपूर्वक पूजन करके २ फिर हाथ जोड़ मुनिको प्रणाम कर बड़ी नम्रतासे बचन बोलतेहुये कि हे मुनीश्वर आ- पके आने से मैं आज कृतार्थहुआ ३ क्योंकि आपके तुल्य पुरुष जिस घरमें प्राप्त होते हैं वहां सकल सम्पदा आती हैं और आप जिस प्रयोजन से आयेहोंय सो कहिये मैं सत्यकरूंगा ४ तब बिश्वामित्र जी बड़े प्रसन्न होके बोलतेभये ५ हे राजन् जब पूर्णमासी वा अमावास्या आदि कोई पर्व आके प्राप्त होताहै तब मैं देवतोंका यज्ञ प्रारम्भ करताहूं उसी समयमें मारीच औ सुबाहु ६ ये बड़े बली राक्षस औरोंको भी संगलेके मेरी यज्ञमें बिघ्न करते हैं अर्थात् मल मूत्र आदि वृष्टिकर यज्ञ विध्वंस कियाकरते हैं इससे इनके बधके लिये लक्ष्मण सहित ज्येष्ठपुत्र जो रामहैं तिनको दीजिये तब तुम्हारा बड़ा कल्याण होगा ७॥

वशिष्ठेनसहामंत्र्यदीयतांयदिरोचते ॥ पप्रच्छगुरुमेकान्तेराजा चिन्तापरायणः ८ किंकरोमिगुरोरामंत्यक्तुंनोत्सहतेमनः ॥ बहुवर्षसह स्रान्तेकष्टेनोत्पादिताःसुताः ९ चत्वारोमरतुल्यास्तेतेषांरामोतिबल्ल भः ॥ रामस्त्वितोगच्छतिचेन्नजीवामिकथंचन १० प्रत्याख्यातोयदि मुनिःशापंदास्यत्यसंशयः ॥ कथंश्रेयोभवेन्मह्यमसत्यंचापिनस्पृशे त्११ वशिष्ठउवाच ॥ शृणुराजन्देवगुह्यंगोपनीयंप्रयत्नतः ॥ रामोन

मानुषोजातःपरमात्मासनातनः १२ भूमेर्भारावतारायब्रह्मणाप्रार्थितःपुरा ॥ सएवजातोभवनेकौशल्यायांतवानघ १३ त्वंतुप्रजापतिःपूर्वंकश्यपोब्रह्मणःसुतः ॥ कौशल्याचादितिर्देवमातापूर्वंयशस्विनी १४

औ जो तुमको किसी बातका संदेह होय तो अपने गुरू बशिष्ठजी से सलाह करके जो अच्छा समझ पड़े तौ दीजिये अब राजादशरथ यह बिश्वामित्रजीके बचन सुनिकै बड़ी भारी चिन्तामें मग्न होके अर्थात् डूबताहुआ ८ एकान्त देशमें बशिष्ठजी से पूछताहुआ हे गुरो इस समय मैं क्याकरूं क्योंकि राम के त्याग करने में तो मेरे मनको उत्साह नहीं होता क्योंकि बहुत हज़ारबर्षों में बड़े कष्टसे इस अवस्थामें मेरे चारपुत्र उत्पन्न हुये ९ सो यद्यपि चारोंपुत्र देव तुल्य हैं तौभी सब पुत्रोंमें राम मुझको अत्यन्त प्रियहैं सो कदाचित् जो राम इहांसे जायंगे तो मैं नहीं जीऊँगा १० और जो मैं विश्वामित्र से मने करताहूं तौ ये अवश्य शाप देंगे इसमें कुछ संदेह नहीं है इससे कौन प्रकारसे मेरा कल्याणहो औ मेरा बचन भी मिथ्या न होय सो उपाय कहिये ११ तब बशिष्ठजी कहने लगे हे राजन् जो देवतों का गुप्तमत है सो मैं कहताहूं राम जो तुम्हारा पुत्रहै तिसको मनुष्य न जानो यह साक्षात्परमात्मा प्रकटहुआहै १२ जो नारायण प्रथम पृथ्वी के भारदूर करनेको ब्रह्माकरके प्रार्थना कियागया सो इससमय में तुम्हारे गृहमें कौशल्याके बिषे पुत्र हुआ १३ तुमतौ साक्षात् ब्रह्माकेपौत्र कश्यप प्रजापतिहौ और कौशल्या परम यश संयुक्त देवतोंकीमाता अदिति पूर्व जन्ममें थी १४ ॥

भवन्तौतपउग्रंवैतेपाथेबहुवत्सरम् ॥ अप्राप्यविषयौविष्णुपूजाध्यानैकतत्परौ १५ तदाप्रसन्नोभगवान्वरदोभक्तिवत्सलः ॥ वृणीष्ववरमित्युक्तेत्वंमेपुत्रोभवामल १६ इतित्वयायाचितोऽसौभगवान्भूतभावनः॥ तथेत्युक्त्वाद्यपुत्रस्तेजातोरामस्सएवहि १७ शेषस्तुलक्ष्मणोराजन्राममेवान्वपद्यत॥ जातौभरतशत्रुघ्नौशंखचक्रगदाभृतः १८ योगमायापिसीतेतिजाताजनकनन्दिनी ॥ विश्वामित्रोपिरामायतांयोजयितुमागतः १९ एतद्गुह्यतमंराजन्नवक्तव्यंकदाचन ॥ अतःप्रीतेनमनसापूजयित्वाथकौशिकम् २० प्रेषयस्वरमानाथंराघवंसहलक्ष्मणम् ॥ वशिष्ठेनैवमुक्तस्तुराजादशरथस्तदा २१ ॥

तुमदोनों जने बहुत वर्ष पर्यन्त उग्रतप करते हुये और इंद्रियोंकेविषय को नहीं भोगतेहुये और विष्णु भगवान् के पूजाध्यान में तत्पर रहे १५ उस

समयमें वरके देनेवाले भक्त वत्सलजो भगवान् सो तुमसे यह कहते भये कि वर मांगौ तौ तुमने कहाकि आपही हमारे पुत्रहोयँ १६ जब ऐसी तुमने प्रार्थनाकी तो भगवान्ने कहा ऐसेईहोंइ ऐसाकहकर वोही भगवान् नारायण तुम्हारे रामनाम करके पुत्र हुयेहैं १७ हे राजन् शेष भगवान् लक्ष्मण हो के रामहीका भजन करतेहुये और भगवान्के आयुधशंख चक्र जेहैं तेही भरत शत्रुघ्न होतेभये १८ और भगवानकी शक्ति योगमाया जनकनन्दिनी सीता हुईहैं तिनसे संबन्ध रामचन्द्र का करानेको विश्वामित्र प्राप्त हुयेहैं १९ हेराजन् यह गुप्त रहस्य किसीके आगे कहने योग्य नहीं है इससे अब प्रसन्न मनकरके विश्वामित्रको पूजन करके २० लक्ष्मणसहित लक्ष्मीनाथ जो श्रीरामचन्द्र तिनको भेजिये ऐसाजब वशिष्ठजीने कहा तब तौ राजा दशरथ बड़े प्रसन्नहो २१

कृतकृत्यमिवात्मानंमेनेप्रमुदितान्तरः ॥ आहूयरामरामेतिलक्ष्मणेतिचसादरम् २२ आलिंग्यमूर्धन्यवघ्रायकौशिकायसमर्पयत् ॥ ततोतिहृष्टोभगवान्विश्वामित्रःप्रतापवान् २३ आशीर्भिरभिनन्द्याथ आगतौरामलक्ष्मणौ ॥ गृहीत्वाचापतूणीरबाणखड्गधरौययौ २४ किञ्चिद्देशमतिक्रम्यराममाहूयभक्तितः ॥ ददौबलांचातिबलांविद्ये द्वेदेवनिर्मिते २५ ययोर्ग्रहणमात्रेणक्षुत्क्षामादिनजायते ॥ ततउत्तीर्यगंगान्तेताटकावनमागमत् २६ विश्वामित्रस्तदाप्राहरामंसत्यपराक्रमम् । अत्रास्तिताटकानामराक्षसीकामरूपिणी २७ बाधतेलोकमखिलंजहितामविचारयन्॥तथेतिधनुरादायसगुणंरघुनन्दनः२८॥

कृत कृत्य अपनाको मानते हुये फिर राम लक्ष्मणको बड़ेआदरसे बुलाकर २१ हृदयसेलगाके शिरमें सूंघके विश्वामित्र को सौंपतेहुये तौतौ बड़े प्रताप युक्त विश्वामित्र भगवान् २३ अत्यन्त प्रसन्नहोके अपने समीप प्राप्त धनुष बाण तरकस खड्गको धारणकरे जो रामलक्ष्मण तिन को बहुत आशीर्बादों से सराहनाकर मानों किसीको निधिमिली होय ऐसे आनन्दसे संगलैकै जाते भये २४ तब कुछदूर चलकर भक्तिसे अपने निकट रामचन्द्रजी को बुलाइकै देवतोंकी निर्माण करीजो बला औ अतिबला दो विद्याहैं तिनको देतेहुये २५ जिन विद्याओंके ग्रहणमात्र करनेसेही भूखप्यास दुर्बलताआदि उपद्रवनहीं होतेहैं तिस के उपरांत गंगाको उतारिकै विश्वामित्र रामलक्ष्मण ये तीनों ताड़का राक्षसीके बनमें पहुंचतेहुये २६ तब विश्वामित्र रामचन्द्रजी से कहनेलगे हे राम अनेकरूपोंके धारण करनेवाली ताड़का राक्षसी जिस बन में रहतीहै सो यही बनहै २७ यह राक्षसी सबलोकोंको बाधाकरा करती है इससे

लोकोंके सुखके लिये इसकोमारो और यहस्त्रीहै कैसेमारैं ऐसाबिचार न करो यह विश्वामित्र के वचन सुन रामचन्द्र धनुष चढ़ालेते भये २८

टंकारमकरोत्तेनशब्देनापूरयद्वनम् ॥ तच्छ्रुत्वासहमानासाताटका घोररूपिणी २९ क्रोधसंमूर्च्छितारामममभिदुद्रावमेघवत् ॥ तामेकेन शरेणाशुताडयामासवक्षसि ३० पपातविपिनेघोरावमन्तीरुधिरंबहु॥ ततोतिसुंदरीयक्षीसर्वाभरणभूषिता ३१ शापात्पिशाचतांप्राप्तामुक्ता रामप्रसादतः ॥ नत्वारामंपरिक्रम्यगतारामाज्ञयादिवम् ३२ ततोति हृष्टःपरिरभ्यराममंमूर्द्धन्यवघ्रायविचिन्त्यकिञ्चित् ॥ सर्वास्त्रजालंसर हस्यसन्त्रंप्रीत्याभिरामायददौमुनीन्द्रः ३३ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेबालकांडेचतुर्थस्सर्गः॥

फिर टंकोर शब्द करके उस वनको पूर्ण करते हुये उसशब्दको सुनकेघोर रूप २९ राक्षसी रामकेसम्मुखदौड़तीहुई मेघवत् अर्थात् जैसे कालेमेघकीघटा आतीहो ऐसेक्रोधसे ताड़काराक्षसी रामकेसामनेआतीहुई तिसराक्षसीकोएक हीबाणसे छातीमें रामचन्द्र ताड़न करतेहुये ३० तब बड़े भयंकररूपकोधारण कर बहुतसा रुधिर मुखसे वमन करती हुई उस बन में ताड़का गिरपरतभई फिर उसरूपको त्यागकर संपूर्ण आभरणों करके भूषित ३१ अति सुन्दर दिव्यदेह यक्षका रूपधारणकर श्रीरामके प्रसाद ते शापसे पिशाचयोनिसे छु-टिके रामको प्रणामकर और परिक्रमाकर रामकी आज्ञासे स्वर्गको जातीहुई ३२ तिसके उपरांत अति हर्षित बिश्वामित्रजी प्रसन्नमुख श्रीरामचन्द्रजी को हृदयसे लगाके शिरमें सूंघकै इनको आगे बहुत कार्य्य करनाहै ऐसा चिन्तन कर बड़ी प्रीतिसे मंत्रसहित सब अस्त्रोंका समूह रामको देतेहुये ३३ ॥

इत्यध्यात्मरामायणे बालकाण्डेभाषाटीकायांचतुर्थःसर्गः ४ ॥

शिवउवाच ॥ तत्रकामाश्रमेरम्येकाननेमुनिसंकुले ॥ उषित्वार जनीमेकांप्रभातेप्रस्थिताशनैः १ सिद्धाश्रमंगताःसर्वेसिद्धचारणसे वितम् ॥ विश्वामित्रेणसंदिष्टामुनयस्तन्निवासिनः २ पूजांचमहतीं चक्रूरामलक्ष्मणयोर्द्रुतम् ॥ श्रीरामःकौशिकंप्राहमुनेदीक्षांप्रविश्यता म् ३ दर्शयस्वमहाभागकुतस्तौराक्षसाधमौ ॥ तथेत्युक्त्वामुनिर्यष्टुमा रेभेमुनिभिस्सह ४ मध्माह्नेददृशातेतौराक्षसौकामरूपिणौ ॥ मारीच श्चसुबाहुश्चवर्षन्तौरुधिरास्थिनी५ रामोपिधनुरादायद्वौबाणौसंदधे सुधीः ॥ आकर्णान्तंसमाकृष्यविससर्जतयोःपृथक् ६ तयोरेकस्तुमा

रीचंभ्रामयञ्छतयोजनम् ॥पातयामासजलधौतदद्भुतमिवाभवत् ७

दोहा। मुनिमखकरुटकपांचवें सर्गहनेरघुनाथ ॥
पुनितारीगौतमतिया जिनगायेगुणगाथ ५

तिसके उपरांत मुनियोंसे व्याप्त बड़ारमणीय जो कामदेव का आश्रम है तिसमें एक रात्रि बासकर प्रातःकालके समय धीरेधीरे विश्वामित्र औ राम लक्ष्मण यात्रा करतेहुये १ फिर सिद्धचारणों करके सेवित सिद्धाश्रममें प्राप्त हुये जहांकि विश्वामित्रका आश्रमहै तहां विश्वामित्रजी की आज्ञासे उसआश्रमके रहनेवाले मुनिलोग २ श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण कीबड़ी पूजाकरतेहुये अर्थात् बड़ा सत्कार करतेहुये तिसके उपरांत श्रीरामचन्द्र विश्वामित्रसे बोलतेभये हेमुने अबअपनी यज्ञशालामें प्रवेशकरिये ३ और हे महाभागवे जो राक्षसों में अधम मारीच सुबाहुहैं तिनको दिखाइये वे कहां हैं तब विश्वामित्र जी बोले तैसेई करैंगे ऐसा कहिकरकै मुनियोंके संग यज्ञकाप्रारम्भ करते हुये ४ तब मध्याह्नके समय में रुधिर औ हाड़ इनकी वृष्टि करतेहुये यथेच्छारूपधारी मारीच औ सुबाहुये आकाशमें दिखातेहुये ५ तब श्रीरामचन्द्र धनुषको ग्रहण करदो बाण संधान करतेहुये फिर कर्ण पर्य्यन्त धनुषको खैंचकर बाणोंको अलग अलग निकासकर छोड़ते हुये ६ तिसमें एक बाणतो मारीचकी छातीमें प्रविष्टहोकै उसको घुमाताहुआ सौ योजनपर जाकेसमुद्रमें उस राक्षसकोडालताहुआ और प्राणोंसे बियोग नहींकराया जबबड़ाआश्चर्य्य होताहुआ ७ ॥

द्वितीयोग्निमयोबाणःसुबाहुमजयत्क्षणात् ॥ अपरेलक्ष्मणेनाशु हतास्तदनुयायिनः ८ पुष्पौघैराकिरन्देवाराघवंसहलक्ष्मणम् ॥ देव दुंदुभयोनेदुस्तुष्टुवुस्सिद्धचारणाः ९ विश्वामित्रस्तुसंपूज्यपूजार्हंरघु नन्दनम् ॥ अंकेनिवेश्यचालिंग्यभक्त्याबाष्पाकुलेक्षणः १० भोज यित्वासहभ्रात्रारामंपक्वफलादिभिः ॥ पुराणवाक्यैर्मधुरैर्निनायदिव सत्रयम् ११ चतुर्थेहनिसंप्राप्तेकौशिकोराममब्रवीत् ॥ रामराममहा यज्ञंद्रष्टुंगच्छामहेवयम् १२ विदेहराजनगरेजनकस्यमहात्मनः ॥ त त्रमाहेश्वरंचापमस्तिन्यस्तंपिनाकिना १३ द्रक्ष्यासित्वंमहासत्त्वंपूज्य सेजनकेनच ॥ इत्युक्त्वामुनिभिस्ताभ्यांययौगंगासमीपगम् १४ ॥

और दूसराबाण अग्निरूपहोकै सुबाहु राक्षसको जीतता हुआ अर्थात्खण्ड खण्ड कर भस्मकर पृथ्वीमें डालताहुआ और जो उनके अनुयायी राक्षसथे तिनको लक्ष्मणजी शीघ्रही बाणोंसे खण्डखण्ड कर पृथ्वीमें डालतेहुये ८ तब लक्ष्मण सहित श्रीराम के ऊपर देवता पुष्पोंकी वृष्टि करतेहुये और देवतोंके

नगाड़े बजतेहुये औ सिद्धचारण जो देवगणहैं ते स्तुतिकरतेहुये ६ औ विश्वामित्रजी तोपूजनके योग्य श्रीरामचन्द्रजी का पूजनकर अपने गोदमें बिठाकर हृदयसे लगाकर आनन्दाश्रुपात करतेहुये १० फिर लक्ष्मण सहित श्रीराम को पके हुये मधुरफल अतिवस्तुओं करके भोजन कराके बड़ी मधुर पुराणों की कथा सुनातेहुये विश्वामित्रजी तीनदिन व्यतीत करते भये ११ चौथा दिन जब आया तब रामचन्द्रजीसे यह कहने लगेकि हेराम राजा विदेहके नगरमें जनकके यहां बड़ाभारी यज्ञहोगा तिसको देखनेकोहम तुम सबचलेंगे १२ औ वहां जनक मंदिरमें महादेवजीका धनुषहै जोकिप्रथम महादेवजीने अपनी धरोहरकर जनकजीके पास स्थापन किया है १३ हेराम उसको तुम देखोगे औ राजा जनक तुम्हारा बड़ा सत्कार करेंगे यह कहिके विश्वामित्रजी मुनियोंको संगलेके औ रामलक्ष्मण सहित जनकपुरकी यात्रा करते भये तहां प्रथम गंगाजीके समीप १४ ॥

गौतमस्याश्रमंपुण्यंयत्राहल्यास्थितातपः ॥ दिव्यपुष्पफलोपेतंपादपैःपरिवेष्टितम् १५ मृगपक्षिगणैर्हीनंनानाजंतुविवर्जितम् ॥दृष्ट्वोवाच मुनिःश्रीमान्रामोराजीवलोचनः १६ कस्यैतदाश्रमपदंभातिभास्वच्छुभंमहत् ॥ पत्रपुष्पफलैर्युक्तंजन्तुभिःपरिवर्जितम् १७आह्लादयतिमेचेतोभगवन्ब्रूहितत्त्वतः ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ शृणुरामपुरावृत्तंगौतमोलोकविश्रुतः १८ सर्वधर्मभृतांश्रेष्ठस्तपसाराधयन्हरिम् ॥ तस्मैब्रह्माददौकन्यामहल्यांलोकसुन्दरीम् १९ ब्रह्मचर्येणसन्तुष्टःशुश्रूषणपरायणाम् ॥ तयासार्द्धमिहावात्सीद्गौतमस्तपतांवरः १० शक्रस्तुतांधर्षयितुमंतरंप्रेप्सुरन्वहम् ॥ कदाचिन्मुनिवेषेणनिर्गतेगौतमेगृहात् २१

गौतमऋषिके आश्रमको जातेहुयेजहां अहल्यातपकररही है फिरवह कैसा आश्रमहै जो दिव्यफलपुष्पोंकरयुक्त जो वृक्षहैं तिन्हकरिके परिवेष्टितहोरहाहै १५ औमृगपक्षियों करके हीनहै और कोईप्राणी उसमेंनहींरहनेपातासो ऐसे आश्रमकोदेखके कमलनेत्रजोरामहैंसो विश्वामित्रसेपूछतेहुये १६ हेभगवन् किसकायहआश्रमहै जो बड़ाप्रकाशमानहै औ पत्र पुष्पफलोंकरिकेयुक्तहै परन्तु पक्षीतक कोई नहीं बैठता और प्राणियों करिके हीनहै १७ औ मेरे चित्तको बड़ाआनन्ददेरहाहै इससे यथार्थ आप कहिये किसका यह आश्रमहैयह रामका वचन सुनिके विश्वामित्रजी कहतेभये हेराम पहिले जो वृत्तान्त हुआ तिसको सुनिये एकसमय में लोकों में विख्यात १८ औ सर्व धर्म धारियोंमें श्रेष्ठ गौ-

तमऋषितप करिकै भगवान्का आराधन करतेहुये तब तिस गौतमके अर्थ ब्रह्माजी अहल्या नाम करलोकों में एकबड़ी सुन्दरी कन्या रचकरके देतेहुये १९ क्योंकि ब्रह्मा गौतमजी के ब्रह्मचर्य से बड़े प्रसन्नहुयेथे फिर वह कन्या गौतमकी शुश्रूषा में परायणरही तबसे लेके तपकरनेवालों में श्रेष्ठ गौतमजी उस अहल्या भार्या करके सहित इसआश्रममें बासकरतेहुये २० परंतु इन्द्र उस अहल्याके रूपमें मोहितहो उससे प्रसंगकरने को दिन दिनछिद्र देखतारहा एकदिन गौतमजी तौ अपने आश्रमसे बाहरकहीं गयेथे उस अन्तरमें इन्द्र गौतमके रूपको धारणकर अहल्याके पासजाके प्रसंग करताहुआ २१ ॥

धर्षयित्वाथनिरगात्त्वरितंमुनिरप्यगात् ॥ दृष्ट्वायान्तंस्वरूपेणमुनिःपरमकोपनः २२ पप्रच्छकस्त्वंदुष्टात्मन्ममरूपधरोधमः ॥ सत्यंब्रूहिनचेद्भस्मकरिष्यामिनसंशयः २३ सोब्रवीद्देवराजोहंपाहिमांकामकिंकरम् ॥ कृतंजुगुप्सितंकर्ममयाकुत्सितचेतसा २४ गौतमःक्रोधताम्राक्षःशशापदिविजाधिपम् ॥ योनिलंपटदुष्टात्मन्सहस्रभगवान्भव २५ शप्त्वातंदेवराजानंप्रविश्यस्वाश्रमंद्रुतम् ॥ दृष्ट्वाहल्यांवेपमानांप्राञ्जलिङ्गौतमोब्रवीत् २६ दुष्टेत्वंतिष्ठदुर्वृत्तेशिलायामाश्रमेमम ॥ निराहारादिवारात्रंतपःपरममास्थिता २७आतपानिलवर्षादिसहिष्णुःपरमेश्वरम्॥ध्यायंतीराममेकाग्रमनसाहृदिसंस्थितम्२८

जब इसप्रकार इन्द्र अहल्याके साथ खोंटा कर्मकर उसके घरसे बाहर निकसाथा उसीसमय गौतम जीभी आगये २२ तब गौतमजी अपना स्वरूप धारणकरे जातेहुये इंद्रको देखके बड़ाक्रोधकर पूछतेहुये हे दुष्टकौनतू मेरेरूप को धारण करेहै सत्यकहु नहीं तौ मैं इसीसमय भस्मकर देऊँगा तब इंद्रने कहा कि मैं देवतों का राजा इन्द्रहौं औ काम वशहोके मैंनेनिंद्यकर्म किया है इससे हेभगवन् मेरी रक्षाकरो इस प्रकार इन्द्रने कहा तौ भी २४ गौतमऋषि क्रोधबश रक्तनेत्रहोके इंद्रको शाप देते भये किहेदुष्टात्मन् जिसकारणसे तू योनि लंपट अर्थात् असक्तहुआ इससे तेरे हजार भगहोंय २५ इस प्रकार इंद्रको शापदेकै फिरि शीघ्रही अपने आश्रम में प्रवेश करके वहभय करके कंपायमान हाथजोड़े खड़ीहुई अहल्याको देखिकै गौतमजी बोलतेहुये २६ हेदुष्टे इसमेरे आश्रममें रात्रिदिन निराहार घोरतप करतीहुई शिलाके ऊपर स्थितहो २७ और घाम पवन बर्षा इनको सहतीहुई एकाग्रचित्त से हृदयमें स्थित जो रामरूप परमेश्वर तिनको ध्यान करती रहैगी २८ ॥

नानाजंतुविहीनोयमाश्रमोमेभविष्यति ॥ एवंवर्षसहस्रेषुह्यनेके

षुगतेषुच २९ रामोदाशरथिःश्रीमानागमिष्यतिसानुजः ॥ यदातवा श्रमाशिलांपादाभ्यामाक्रमिष्यति ३० तदैवधूतपापात्वंरामसंपूज्यभ क्तितः ॥ परिक्रम्यनमस्कृत्यस्तुत्वाशापाद्विमोक्ष्यसे ३१ पूर्ववन्मम शुश्रूषांकरिष्यसियथासुखम् ॥ इत्युक्तागौतमःप्रागाद्धिमवंतंनगोत्त मम् ३२ तदाद्यहल्याभूतानामदृश्यास्वाश्रमेशुभे ॥ तवपादरजःस्प र्शकांक्षंतीपापनाशनम् ३३ आस्तेद्यापिरघुश्रेष्ठतपोदुष्करमास्थिता॥ पावयस्वमुनेर्भार्यामहल्यांब्रह्मणस्सुताम् ३४ इत्युक्काराघवंहस्तेगृ हीत्वामुनिपुंगवः ॥दर्शयामासचाहल्यामुग्रेणतपसास्थिताम् ३५ ॥

और यह आश्रम प्राणियों करकेहीन होजायगा अर्थात् पशुपक्षी इत्यादिक- भीकोई इसमें नरहैंगे सोबहुतहजार बर्ष जबव्यतीतहोंगे २९ तब अपने छोटे भाई करके सहित दशरथ केपुत्र श्रीरामचन्द्र इस आश्रम में आवेंगे और आ- कर जबतेरे आश्रमकी शिलाके ऊपर अपना चरण रक्खेंगे १० तभीतू संपूर्ण पापसे छूटजायगी फिर शुद्धहोकै श्रीरामको बड़ी भक्तिसे पूजनकर औ परि क्रमा करि और प्रणाम करके औ स्तुति करके शापसे छूटजावेगी ३१ और पहिलेकी तरह सुख पूर्वक मेरी फिरि शुश्रूषा कराकरैगी यह बचन कहिकै गौतम ऋषि हिमालय पर्वतको जातेहुये ३२ तब सेलेके अहल्या सब प्रा- णियोंको अदृश्य होके अर्थात् किसीको नहीं दिखाई देतीहुयी अपने आश्रम में वास करती आपके चरणरजके स्पर्शकी इच्छा करतीरही जिससे आपका पादरज पापनाशकहै ३३ हेराम अभीतक अहल्या दुष्करतपमें स्थितहोरही है इससे गौतमकी भार्या औ ब्रह्माकी पुत्री ऐसी जो अहल्यातिस को पवित्र करिये ३४ बिश्वामित्र ऐसा बचन कहिकै औ रामचन्द्रका हाथपकड़िकै बड़े तपकरिकै युक्त जो अहल्याहै तिसको दिखातेहुये ३५ ॥

रामःपदाशिलांस्पृष्ट्वातांचापश्यत्तपोधनाम् ॥ ननामराघवोऽहल्यां रामोहमितिचाब्रवीत् ३६ ततोदृष्ट्वारघुश्रेष्ठंपीतकौशेयवाससम् ॥ धनुर्बाणधरंरामंलक्ष्मणेनसमन्वितम् ३७स्मितवक्त्रपद्मनेत्रंश्रीवत्सां कितवक्षसम् ॥ नीलमाणिक्यसंकाशंद्योतयन्तंदिशोदश ३८ दृष्ट्वारा मंरमानाथंहर्षविस्फुरितेक्षणा ॥ गौतमस्यवचःश्रुत्वाज्ञात्वानारायणं परम् ३९ संपूज्यविधिवद्राममर्घादिभिरनिन्दिता ॥ हर्षाश्रुजलने त्रान्तादण्डवत्प्रणिपत्यसा ४० उत्थायचपुनर्दृष्ट्वारामंराजीवलोचन म् ॥ पुलकाङ्कितसर्वाङ्गीगिरागद्गदयैलत ४१ अहल्योवाच ॥ अहो

कृतार्थास्मिजगन्निवासतेपादाम्बुजेलग्नरजःकणादहम् ॥ स्पृशामि यत्पद्मजशंकरादिभिर्विमृग्यतेरोधितमानसैस्सदा ४२ ॥

अब रामचन्द्रजी अपने चरणसे शिलाको स्पर्श करिकै तिस तपस्विनी को देखतेहुये औ मैं रामहों ऐसाकहिकै अहल्या को प्रणाम करतेहुये ३६ तब तौ अहल्या श्रीरामचन्द्र को देखतीहुई कैसे राम हैं पीत जो रेशमी बस्त्र तिनको धारणकरे हैं औ धनुषबाण धारणकरे हैं औ लक्ष्मणको संगलियेहैं ३७ औ मन्द मुसक्यानयुक्तहै मुखारबिन्द जिनका और कमलकेतुल्य विशाल जिनकेनेत्रहैं औ लक्ष्मीका चिह्नहै बक्षस्स्थल में जिनके औ इन्द्रनीलमणि सदृशहै कांति जिनकी औ दशदिशाओंको प्रकाशितकरिरहे हैं ३८ ऐसे लक्ष्मीनाथ श्रीरामको देखिकै आनन्द से प्रफुल्लित हुये हैं नेत्र जिसके ऐसी जो अहल्या सो गौतम जीके बचनोंको स्मरण कर प्रकृतिसे परे नारायण श्रीराम को जानकर ३९ विधिपूर्वक अर्घ आदि सामग्री करिके पूजन कर आनन्दाश्रुजलसे पूर्ण नेत्र जिसके ऐसी जो अहल्या सो श्री रामचन्द्रको प्रणाम दण्डवत् कर ४० फिर उठिकै राजीवलोचन अर्थात् कमलनेत्र श्री रामको देखिकै नेत्र द्वारा हृदयमें प्रवेशकर रोमांचित हुआहै संपूर्ण अंग जिसका ऐसी हो गद्गदवाणी से स्तुति करती हुई ४१ हे जगन्निवास सब जगत्के आधार जिस कारण से आपके चरण कमलकी रजको मैं स्पर्श करती हौं इससे कृतार्थ हुई कैसी वो रज है जो नित्य समाधिके करनेवाले जे ब्रह्मा शंकर आदि देवगण हैं तिन करिकै केवल ढूंढीही जाती है अर्थात् नेत्रसे देखनेको भी दुर्लभ है तिसको स्पर्शकर रही हौं तौ मैं अपना भाग्य क्या कहौं ४२ ॥

अहोविचित्रंतवरामचेष्टितंमनुष्यभावेनविमोहयन्जगत् ॥ चल स्यजस्रंचरणादिवर्जितंसम्पूर्णआनन्दमयोतिमायिकः ४३ यत्पादप ङ्कजपरागपवित्रगात्राभागीरथीभवविरञ्चिमुखान्पुनाति ॥ साक्षा त्सएवममदृग्विषयोयदास्तेकिंवर्ण्यतेममपुराकृतभागधेयम् ४४ ॥ मर्त्यावतारेमनुजाकृतिंहरिंरामाभिधेयंरमणीयदेहिनम् ॥ धनुर्धरस्प द्मविशाललोचनंभजामिनित्यंपरमंपरायणम् ४५ यत्पादपङ्कजरजः श्रुतिभिर्विमृग्यंयन्नाभिपंकजभवःकमलासनश्च ॥ यन्नामसाररसि कोभगवान्पुरारिस्तंरामचन्द्रमनिशंहृदिभावयामि ४६ यस्यावतारच रितानिविरंचिलोकेगायन्तिनारदमुखाभवपद्मजाद्याः॥ आनन्दजाश्रु परिषिक्तकुचाग्रसीमावागीश्वरीचतमहंशरणंप्रपद्ये ४७ सोयंपरात्मा

पुरुषःपुराणःएकःस्वयंज्योतिरनन्तआद्यः॥मायातनुंलोकविमोहिनीं याधत्तेपरानुग्रहएषरामः ४८ अयंहिविश्वोद्भवसंयमानामेकःस्वमाया गुणबिम्बितोयः ॥ विरंचिविष्णवीश्वरनामभेदान्धत्तेस्वतन्त्रःपरि पूर्णआत्मा ४९ ॥

हे राम अहो आपका चेष्टित चरित्र बड़ा आश्चर्ययुक्त है जो आप मनुष्य भाव करिकै सब जगत् को मोहित कररहे हो औ चरणआदि इन्द्रियों करके रहितभी हौ निरन्तर चला करते हो औ मायायुक्त हौ तौभी अपने संपूर्ण आनन्दमयही रहते हौ ४३ और जिस आपके चरण पंकज की रेणुओं करिकै पवित्र हुआ है शरीर जिसका ऐसी जो गंगा सो महादेव ब्रह्मा आदि देवतों को पवित्रकरतीहै सोई साक्षात् आपमेरे नेत्रों के आगे स्थितहोरहेहौ तो मेरे पूर्वजन्म के सुकृतोंका भाग्य क्याबर्णनकियाजाय ४४ इससेरामहै नामजिस का ऐसाजो हरिहै तिसको नित्यहीमैं भजनकरतीहों कैसाहै जोमनुष्यावतारमें मनुष्यकीसी आकृति स्वरूप जिसका औ रमणीयहै देह जिसका औधनुषको धारण करे हैं औ कमलकेतुल्य बिशालहैं नेत्र जिनके औपरमउत्कृष्ट आश्रयरूप ४५ जिसके चरणारबिन्दकीरेणु श्रुतियोंकोभी ढूंढने योग्य है और जिसकी नाभिकमलसे ब्रह्मा उत्पन्नहुये औ जिसके सारके रसिकश्रीभगवान् महादेवजी हैं तौनजो श्रीरामचंद्र तिनको हृदयमें मैं निरन्तरध्यानकरतीहों ४६ औ जिसके अवतारके चरित्रोंकोब्रह्मलोकमें नारद आदि ऋषि लोग औ शिव ब्रह्मा आदि देवता गान करतेहैं औ आनन्दके अश्रुपात करिकै सींचा गया है स्तनका अग्रभाग जिसका ऐसी जो सरस्वतीदेवी सोभी जिसके चरित्रों का नित्यगानकरती है ऐसे जो राम तिनके मैं शरणप्राप्तहोतीहों ४७ सो यह राम परमआत्मा है अर्थात् मायातेपरे शुद्धआत्मा ब्रह्म हैं और यही राम पुराण पुरुषहै अर्थात् पहिलेभी नवीनरहै औ सबके हृदयमें शयनकरने वाले अन्तर्यामी हैं औ यह स्वयंप्रकाशहै अर्थात् जैसे सूर्यको प्रकाशकरने में किसी दीपक आदि साधनकी अपेक्षानहींहै ऐसे परमात्माकोभी अपने जताने में वा ज्ञानमें बुद्ध्यादिककी अपेक्षा नहीं है प्रत्युत आपही इनको प्रकाशनशक्ति देरहाहै औ फिर कैसाहै जो अनंतहै अर्थात् जिसकी महिमाका अंत नहीं औ सबका कारण है औ लोकों को मोहकरानेवाली जो माया वहीहुआ एक शरीर तिसको धारणकरे हैं सोभी केवल भक्तोंके अनुग्रहके लिये क्योंकि बिना सद्गुणरूप किसीकी अनुग्रह होनहीं सक्ती ऐसा यह रामहै ४८ औ यही परमस्वतंत्र परिपूर्ण आत्माराम अपने मायाके गुणोंमें प्रतिबिम्बितहो

के इस विश्वकी उत्पत्ति औ पालन औ संहारकरने को ब्रह्मा औ विष्णु औ रुद्र ये तीननामोंको धारणकरताहै ४९ ॥

नमोस्तुहेरामतवाङ्घ्रिपङ्कजंश्रियाधृतंवक्षसिलालितंप्रियात् । आक्रान्तमेकेनजगत्त्रयंपुराध्येयंमुनीन्द्रैरभिमानवर्ज्जितैः ५० जगतामादिभूतस्त्वंजगत्त्वंजगदाश्रयः ॥ सर्वभूतेष्वसंसक्तएकोभातिभवान्परः ५१ ओंकारवाच्यस्त्वंरामवाचामविषयःपुमान् ॥ वाच्यवाचकभेदेनभवानेवजगन्मयः ५२ कार्यकारणकर्त्तृत्वफलसाधनभेदतः ॥ एकोविभासिरामत्वं माययाबहुरूपया ५३ त्वंमायामोहितधियस्त्वांनजानन्तितत्त्वतः ॥ मानुषंत्वाभिमन्यन्तेमायिनंपरमेश्वरम् ५४ आकाशवत्त्वंसर्वत्रबाहिरन्तर्गतोमलः ॥ असङ्गोह्यचलोनित्यःशुद्धोबुद्धःसदाद्वयः ५५ योषिन्मूढाहमज्ञातेतत्त्वंजानेकथंविभो । तस्मात्तेशतशोरामनमस्कुर्य्यामनन्यधीः ५६ ॥

हेराम आपका जोचरणकमलहै तिसके अर्थ मेरा नमस्कारहै अथवा जिस आपका चरण कमल ऐसे गुणोंकरके युक्तहै तिन्हींके अर्थ नमस्कार है कैसा चरण कमलहै जो लक्ष्मीजीने बडीप्रीतिसे अपने बक्षस्स्थल में धारणकर लाड़लड़ायाहै औ जिस एकही चरणने पहिलेवामनावतारमें तीनोंलोकनापेहैं और जो चरणकमल अभिमानरहित जे मुनीश्वर हैं तिनको ध्यानकरने योग्यहैं ऐसे आपके चरणारबिन्दको नमस्कारहै ५० हेराम आप सब जगत् के कारणहो औ जगत् रूपभी आपही हो औ जगत्का आधारभी आपहीहो औ सबभूतोंसे अलग औ प्रकृतिसेभी परे आपही प्रकाशमान होरहेहो ५१ औ ओंकार शब्द करके वाच्य अर्थात् जो कहाजाताहै ऐसा जो बाणियों के अगोचर परमात्माहै सो आपहैं औ वाच्यवाचक भेदकरिकै सब जगत्रूप आपही हैं अर्थात् घटपटादिकजे शब्दहैं ते वाचकहैं औ जिससे जललयायाजाता है ऐसा जोपात्र विशेषहै वहवाच्यहुआ ऐसेजितने लोकबेदमें वाचकशब्द हैं औ जितने उन शब्दों करिकै कहेजाते वाच्यअर्थ हैं वे सब परमात्मरूपही हैं ५२ क्योंकि हेराम कार्य कारण कर्त्ता फलसाधन इनके भेदकरिकै बहुत रूपकी जो माया तिस करके एक आपही बहुरूपकरिकै प्रकाशकररहेहो जैसे कार्य तो हुआ घट औ कारण मृत्तिका औ कर्त्ता कुम्हार फल जलका आना औ साधन दंडचक्रडोरा आदि पदार्थजे सबलोक में प्रसिद्धहैं ऐसेई कार्यहुआ ब्रह्मांड और

कारण प्रकृति औ कर्त्ता ईश्वर औ फल सुख दुःख औसाधन पंचीकृतभूत+ जीवरचित सृष्टि पक्षमें कार्य शरीर औ कारण अविद्याकर्त्ता अहंकार फल सुख दुःख आदि साधन मनस्सह चरित इंद्रियवर्ग इन सबके भेद सत्त्व रजस्तमो गुणों के तारतम्य से हजारों लाखों वा अपरिमितहैं सो यद्यपि परमात्मा सदा एकरसहै तौभी बहुरूपकी मायामें प्रतिबिम्बित होनेसे अनेकप्रकारका प्रतीयमान होरहाहै जैसे सूर्य्य एकहै परंतु जलघृत तैलादि उपाधियोंके बहुत होनेसे औ अनेक प्रकारके होनेसे प्रतिबिम्ब भी बहुत औ अनेक प्रकार के मालूम पड़ते हैं वास्तवसें एकही है ऐसे इस अविद्याके बहुत भेदहोनेसे जीव भी बहुतमें औ बहुत प्रकारकेसे प्रतीयमान होरहे हैं सो अहल्याकहती है हेराम आपएकही हौ परंतु मायाके अनेक रूपहोने से आपभी अनेकसे मालूमपड़ते हौ ५३ औ जे कोई पुरुषआपकीमायाकरके मोहित बुद्धिहोरहे हैं ते आपको तत्त्वकरके अर्थात् जैसेहौ तैसा नहीं जानसक्के इसीसे मायाके प्रेरक परमेश्वर जो आपहैं तिनको मनुष्यमानते हैं ५४ औआप आकाशके तुल्य सबकेबाहिर औ भीतर व्याप्तहोरहेहौ औ निर्मलहौ औ जैसे आकाश कहींनहीं लिप्तहोता तैसे आपभी असंगहौ औअचलहौ औ नित्यहौ औसदा एकरसहौ औशुद्धहौ औ ज्ञानस्वरूपहौ औसदा द्वैतभावसे रहितहै ५५ हेराममूढ़स्त्रीजाति इसीसे अज्ञऐसी जो मैंहौं सो आपको कैसे जानसक्तीहौं तिससे हेराम मैंअनन्य चित्त होकै आपको सैकड़ों प्रणाम करती हौं ५६ ॥

देवमेयत्रकुत्रापिस्थितायाअपिसर्वदा ॥ त्वत्पादकमलेसक्ताभक्तिरेवसदास्तुमे ५७ नमस्तेपुरुषाध्यक्षनमस्तेभक्तवत्सल ॥ नमस्तेस्तु हृषीकेशनारायणनमोस्तुते ५८ भवभयहरमेकंभानुकोटिप्रकाशंकर धृतशरचापंकालमेघावभासम् ॥ कनकरुचिरवस्त्रंरत्नवत्कुण्डलाढ्यम्कमलविशदनेत्रंसानुजंराममीडे ५९ स्तुत्वैवंपुरुषंसाक्षाद्राघवं पुरतः स्थितम् ॥ परिक्रम्यप्रणम्याशुसानुज्ञातायोपतिम् ६० अहल्ययाकृतंस्तोत्रंयःपठेद्भक्तिसंयुतः ॥ समुच्यतेखिलैः पापैःपरंब्रह्माधिगच्छति ६१ पुत्राद्यर्थेपठेद्भक्त्यारामंहृदिनिधायच ॥संवत्सरेणल

+ पञ्चीकृत महाभूत अर्थात् आकाश १ वायु २ अग्नि ३ जल ४ पृथ्वी ५ ये महाभूत हैं इनमें आधाआधा अंश तौ अपनाहोय औआठवां आठवां भाग औरौं का मिलाहोय उसको पंचीकृतभूत कहतेहैं जैसे आकाशने अपनेदो भागकिये आधातो अपने पास रक्खा और आधे के चारभागकरिकै एकएकभाग पवन आदिकोंको दिया तोसबों में आधाभाग अपना और आठवांभाग औरौं का मिलता है ॥

भतेवंध्याअपिसुपुत्रकम् ६२ सर्वान्कामानवाप्नोतिरामचन्द्रप्रसाद
तः ६३ ब्रह्मघ्नोगुरुतल्पगोपिपुरुषःस्तेयीसुरापोपिवामातृभ्रातृविहिं
सकोपिसततंभोगैकबद्धातुरः॥ नित्यंस्तोत्रमिदंजपन्रघुपतिंभक्त्या
हृदिस्थंस्मरन्ध्यायन्मुक्तिमुपैतिकिंपुनरसौस्वाचारयुक्तोनरः६४॥

इत्यध्यात्मरामायणेबालकाण्डेपञ्चमःसर्गः ५ ॥

औ देव प्रकाश रूप कर्मवशसे जिस किसी योनिमें मैं जाउं तहां तहां आप के चरण कमलमें सदा मेरी भक्तिरहै यही कृपा करिकै दीजिये ५७ हे पुरुषाध्यक्ष सबके ईश्वर तुमको नमस्कार है औ हे भक्तबत्सल हे हृषीकेश अर्थात् इन्द्रियों के प्रबर्तक हे नारायण तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै ५८ श्रीलक्ष्मण सहित जो रामचन्द्र तिनकी मैं स्तुतिकरती हों कैसे हैं जे एक अद्वितीय संसार रूप भयके हरनेवाले हैं अर्थात् संसारके भय दूर करने में किसी की अपेक्षा नहीं रखते हैं औ करोर सूर्योंकासा प्रकाश जिनका औ हाथमें धनुष बाण धारणकरे हैं और नील मेघकेतुल्यहै कान्ति जिनकी औ सुबर्ण तुल्यहै पीतबस्त्र जिनके औ रत्नजटित कुण्डलों को धारणकरे हैं औ कमलतुल्यहैं विशाल नेत्र जिनके ऐसे जो अनुजसहित श्रीरामचन्द्र तिनकी मैं स्तुतिकरती हों ५९ इस प्रकार अहल्या अपने नेत्रोंके आगे स्थित जो रामचन्द्र तिनकी परिक्रमाकरिकै औ प्रणाम करिकै श्रीरामकी आज्ञासे पतिके समीप जातीहुई ६० जो कोई पुरुष भक्तियुक्त होकै इस अहल्याके कियेहुये स्तोत्रका पाठकरताहै सो संपूर्ण पापों से छूटिकैपरब्रह्मको प्राप्तहोताहै ६१ औ जिसकी स्त्रीके पुत्रआदि न होताहोय सो पुरुष जो रामचन्द्रको हृदयमें ध्यानकर पुत्र इच्छाकरिकै इस स्तोत्रका पाठकरै तौ बर्ष मध्यमेंही सुपुत्रको प्राप्तहोय ६२ औजिसजिसकामनाकरके इसस्तोत्रका पाठकरै तो संपूर्ण उनकामनाओंको श्रीरामके प्रसाद से प्राप्तहोय ६३ औ जो पुरुष ब्रह्मघ्नभी होय औ गुरुस्त्री गमन करनेवाला होय औ सुबर्णका चुरानेवाला भी होय औ मदिरापान करनेवाला होय औ मातापिताका हिंसकभी होय औ निरन्तर विषय भोगमें तत्परभी होय तौभी इस स्तोत्रको नित्यजोपढ़ै औ भक्तिकरके हृदयस्थ रामचन्द्रका ध्यानकरै तौ सबपापों से छूटकर परमपदको प्राप्तहोय औ स्वधर्म तत्पर पुरुष इसस्तोत्रके पाठसे मुक्तिको प्राप्तहोय यह क्या कहनाहै ६४ ॥

इत्यध्यात्मरामायणेबालकांडेटीकायांपञ्चमःसर्गः ५ ॥

सूतउवाच ॥ विश्वामित्रोथतंप्राह राघवंसहलक्ष्मणम् ॥ वयंग
च्छाममिथिलांजनकेनाभिपालिताम् १ दृष्ट्वाक्रतुवरंपश्चादयोध्यां

गन्तुमर्हसि ॥ इत्युक्काप्रययौगंगामुत्तर्त्तुंसहराघवः तस्मिन्कालेनाविकेननिषिद्धोरघुनन्दनः २ नाविकउवाच ॥ क्षालयामितवपादपंकजंनाथदारुदृषदोःकिमन्तरम् ॥ मानुषीकरणचूर्णमस्तिते पादयोरितिकथाप्रथीयसी ३ पादाम्बुजंतेविमलंहिकृत्वापश्चात्परंतीरमहंनयामि ॥ नोचेत्तरीसद्युवतीमलेनस्याद्यद्विभोविद्धिकुटुम्बहानिः ४ इत्युक्त्वाक्षालितौपादौपरतीरंततोगताः ॥ कौशिकोरघुनाथेनसहितोमिथिलांययौ ५ विदेहस्यपुरप्रान्तऋषिवाटंसमाविशत् ॥ प्राप्तंकौशिकमाकर्ण्यजनकोतिमुदान्वितः ६ पूजाद्रव्याणिसंगृह्यसोपाध्यायःसमाययौ ॥ दण्डवत्प्रणिपत्याथपूजयामासकौशिकम् ७ पप्रच्छराघवौदृष्ट्वा सर्वलक्षणलक्षितौ ॥ द्योतयन्तौदिशः सर्वाश्चन्द्रसूर्याविवापरौ ८ ॥

दोहा। छठेजनकपुरमुनिसहित आय शम्भुधनु भंज ॥
अनुजसहित पाणिग्रहण कीन्हींकरुणापुंज ६

अब इसकेअनन्तर विश्वामित्रजी लक्ष्मणसहित रामचन्द्रजी से कहते हुये कि हमसब जनकपालित मिथिलानगरीको चलतेहैं १ औ हेराम तुमभी हमारेसंग जनकके यज्ञको देखके फिर अयोध्यानगरीको जाना ऐसा कहिके रामसहित जो विश्वामित्रजी सो गंगाजीको उतरिकै जनकपुरको चलते हुये २ तब जब गंगाजीके पारजानेको नाव मँगाई तब उससमयमें मल्लाहने मनाकिया रामचन्द्रसे औ यह कहताहुआ कि हेनाथ विनाआपकेचरणोंको धोये मैं कैसेभी नावपै नचढ़ाऊंगो क्योंकि बिनामनुष्यकोभी मनुष्य भावको प्राप्तकरनेवाला चूर्ण आपके चरणों में रहताहै इसीसे आपके चरणके स्पर्श करतेही पाषाणरूप अहल्यामनुष्य भावको प्राप्त होगई यहकथा प्रसिद्धहै औ काष्ठमें औ पत्थरमें अन्तरही क्या है इससे मेरीनौका जो आपकेपाद रजसे मनुष्यहोजायगी तो मेरीतो आजीविकाही नष्ट होजावेगी इससेबिना आपके चरणोंके धोये मैं कभी नौका पै न चढ़ाऊंगा ३ । ४ ऐसी चतुराई के बचन कहिकै बड़ा बड़भागी वह मल्लाह रघुनाथजीके चरणोंको धोयकै नावपैचढ़ाके पारउतारताहुआ ५ इसप्रकार गंगाके पार उतरिके रामसहित विश्वामित्र-जी मिथिला नगरीको जातेहुये फिर वहां जनकपुरके समीप जहांऋषिलोग ठहरेथे वहां विश्वामित्रजीभी ठहरतेहुये अबराजा जनकप्राप्तहुये जो विश्वा मित्र तिनकोसुनिकै ६ संपूर्णपूजाकी सामग्रीलैकै और अपनेगुरुवर्गशतानन्द आदि ऋषियोंको संगलैके आवते हुये फिर जनकजी विश्वामित्रको दण्डवत्

प्रणामकर पूजनकरतेहुये ७ तिसकेअनन्तर संपूर्णशुभ लक्षणों करके युक्त और जैसेचन्द्रसूर्य प्रकाशकहैं तैसेसबदिशोंको प्रकाशितकररहे हैं ऐसे रामलक्ष्मणको देखिकै जनकजी पूछतेहुये ८ ॥

कस्यैतौनरशार्दूलौपुत्रौदेवसुतोपमौ ॥ मनःप्रीतिकरौमेद्यनरनारायणाविव ९ प्रत्युवाचमुनिःप्रीतोहर्षयन्जनकन्तदा ॥ पुत्रौदशरथस्यैतौभ्रातरौरामलक्ष्मणौ १० मखसंरक्षणार्थायमयानीतौपितुःपुरात् ॥ आगच्छन्राघवोमार्गेताडकांविश्वघातिनीम् ११ शरेणैकेन हतवान्नोदितोऽमितविक्रमः ॥ ततोममाश्रमंगत्वाममयज्ञविहिंसकान् १२सुबाहुप्रमुखान्हत्वामारीचंसागरेऽक्षिपत् ॥ ततोगंगातटेपुण्यगौतमस्याश्रमेशुभे १३ गत्वातत्रशिलारूपागौतमस्यवधूस्थिता ॥ पादपङ्कजसंस्पर्शाज्जातामानुषरूपिणी १४ दृष्ट्वाऽहल्यांनमस्कृत्यतयासम्यक्प्रपूजितः ॥ पादाम्बुरजःस्पर्शासापिशापाद्विमोचिता १५॥

कि हेभगवन् मनुष्योंमें श्रेष्ठ औ देवसुत तुल्य ये दोनोंपुत्र किसके हैं और इस समयमें नरनारायणकी नाईं मेरेमनमें ये दोनों प्रीतिको उत्पन्न कररहेहैं अर्थात् मेरेमनकी प्रीतिसे तो यह निश्चयहोताहै कि येसाक्षात् नरनारायणही हैं ९ ऐसे बचनजनकजीके सुनिकै विश्वामित्रमुनि बड़े प्रसन्नहोकै जनकको हर्षयुक्त करतेहुये बचनबोले कि हेराजन् ये दोनोंभाईहैं परस्पर औ राजादशरथकेपुत्रहैं औराम औ लक्ष्मण इनकानामहै १० औ मैं अपने यज्ञकी रक्षाके लिये इनके पिताके पुरसे अपनेआश्रममें प्राप्तकरताहुआ तहां आउतेहीमार्ग में विश्वके मारनेवाली ताड़का नामराक्षसीको ११ एकही बाणकरके बड़ा पराक्रमी जो रामहै सो मेरीआज्ञासे मारताहुआ तिसकेउपरान्त मेरेआश्रम में आयकर यज्ञकेविघ्न करनेवाला १२ जे सुबाहुआदि राक्षस तिनकोमारके रामचन्द्रजी मारीचको एकहीबाणसे शतयोजनपै समुद्रमें फेंकतेहुये फिर गंगातटमें पुण्ययुक्त गौतमऋषिके आश्रममें जाकर १३ शिलारूप गौतमकी स्त्रीकोअपने चरणरजसे मनुष्यरूप करदेतेहुये १४ फिर अहल्याको देखके नमस्कारकरतेहुये फिर अहल्याने बहुतप्रकारसे पूजनकिया और श्रीरामउसको अपनेचरण रजस्पर्शसे पतिकेशापसे छुड़ातेहुये १५ ॥

इदानींद्रष्टुकामस्तेगृहेमाहेश्वरंधनुः ॥ पूजितंराजभिस्सर्वैर्दृष्टमित्यनुशुश्रुम १६ अतोदर्शयराजेन्द्रशैवंचापमनुत्तमम् ॥ दृष्ट्वायोध्यांजिगमिषुःपितरंद्रष्टुमिच्छति १७ इत्युक्तामुनिनाराजापूजार्हावितिपू

जया ॥ पूजयामासधर्मज्ञोविधिदृष्टेनकर्मणा १८ ततःसंप्रेषयामास मन्त्रिणंबुद्धिमत्तरम् ॥ जनकउवाच ॥ शीघ्रमानयविश्वेशचापंरामा यदर्शय १९ ततोगतेमन्त्रिवरेराजाकौशिकमब्रवीत् ॥ यदिरामोधनु र्धृत्वाकोट्यामारोपयेद्गुणम् २० तदामयात्मजासीतादीयतेराघवाय हि॥तथेतिकौशिकःप्राहरामंसंवीक्ष्यसस्मितम् २१ शीघ्रंदर्शयचापा ग्र्यंरामायामिततेजसे॥एवंब्रुवतिमौनीशआगताश्चापवाहकाः २२॥

अब इस समयमें जो आपकेघर महादेवजीका धनुषहै तिसको देखाचाहते हैं और सबराजाओंनेभी उस धनुषकोदेखा और उसका पूजनकिया है ऐसा हम सुनतेहैं १६ इससे हे राजेन्द्र वह महादेवजीका धनुष रामकोभी दिख- लाइये फिरउस धनुषको देखिके अपनेपिताके देखनेको ये अयोध्याको जाया चाहतेहैं १७ ऐसेजब मुनिने बचनकहे तौराजाजनक पूजाकरनेके योग्य दोनों राजकुमारोंको देखिके शास्त्रकी विधिसे उनका प्रीतिपूर्वक पूजनकरतेहुये १८ तिसके अनन्तर बड़े बुद्धिमान् मन्त्रीको भेजतेहुये औउससे यह कहा कि वह जो महादेवजीका धनुष है तिसको शीघ्रही ल्याकर रामको दिखलावो १९ तब वह मन्त्री तौ धनुषलेने को गया औ राजाजनक विश्वामित्रजी से कहते हुये कि जो कदाचित् रामही धनुषको चढ़ायलेवैं २० तौ मेरी कन्या सीतारामके अर्थ दिईजावै तब विश्वामित्र मुनि रामको देखके मन्द मुसक्यान करतेहुये जनक से बोले कि जैसे आप कहते हौ तैसाही होगा २१ परन्तु वह श्रेष्ठ धनुषअमितहै तेज जिनका ऐसे जो राम तिनको शीघ्रही दिखलाइये ऐसेबचन जब विश्वामित्र कहतेथे तबतक राजाके मनुष्य धनुषको लेकेआतेहुये २२ ॥

चापंगृहीत्वाबलिनःपंचसाहस्रसंख्यकाः ॥ घंटाशतसमायुक्तंम णिवस्त्रैर्विभूषितम् २३ दर्शयामासरामायमन्त्रीमन्त्रवतांवरः॥दृष्ट्वा रामःप्रहृष्टात्माबध्वापरिकरंदृढम् २४ गृहीत्वावामहस्तेनलीलया तोलयन्धनुः॥ आरोपयामासगुणंपश्यत्स्वखिलराजसु २५ ईषदाक र्षयामासपाणिनादक्षिणेनसः ॥बभंजाखिलहृत्सारोदिशःशब्देनपूरय न् २६ दिशश्चविदिशश्चैवस्वर्गमर्त्यरसातलम्॥तदद्भुतमभूत्तत्रदेवा नांदिविपश्यताम् २७आच्छादयंतःकुसुमैर्देवाःस्तुतिभिरीडिरे॥ देवा दुंदुभयोनेदुर्ननृतुश्चाप्सरोगणाः २८ द्विधाभग्नंधनुर्दृष्ट्वाराजालिंग्य रघूद्वहं ॥ विस्मयंलेभिरेसीतामातरोन्तःपुराजिरे २९ सीतास्वर्णमयीं मालांगृहीत्वादक्षिणेकरे॥स्मितवक्त्रास्वर्णवर्णासर्वाभरणभूषिता३०

वे धनुषके ले आनेवाले मनुष्य पांचहजारथे और वहधनुष सैकड़ों घंटाओं करके युक्त औ मणि बस्त्रोंकरके भूषितथा २३ तबमन्त्रियोंमें श्रेष्ठ जो मंत्री सो रामचन्द्रको उस धनुषको दिखलाता हुआ औ रामचन्द्रजी उस धनुषको देख के बड़े प्रसन्नहोके औ अपनी फेंट दृढबांधके २४ लीलाही करके बायें हाथसे उस धनुषको उठाकर औ तौलकर सबराजों के देखतेई देखते धनुषको चढ़ा लेतेहुये २५ फिर सबके हृदयको जाननेवाले जो श्रीरामचन्द्र सो दक्षिण हस्तसे थोड़ाही खैंचकर दिशाओं को शब्दसे पूर्ण करतेहुये धनुषको बीचसे तोड़ डालतेहुये २६ औ स्वर्गमें देवताओंके देखतेही देखते दिशा औ विदिशा औ स्वर्ग और मनुष्यलोक औ पाताललोक इन सबोंको शब्दसे पूर्ण करते हुये जो धनुषटूटा सो बड़ा आश्चर्य्य होता हुआ २७ औ उससमयमें देवता लोग पुष्पोंकरके वहांकी पृथिवीको आच्छादन करतेहुये वेदोंके मन्त्रोंकरके श्रीरामचन्द्रजीकी स्तुति करते हुये औ देवताओं के नगाड़े बजनेलगे औ अप्सरा नृत्य करतीहुईं २८ औ दोखण्ड धनुषके देखके जनकजी रामको हृदय से आलिंगन करते हुये औ रानी आश्चर्यको प्राप्त हुईं २९ अब तिसके उपरान्त सीताजी दाहिने हाथमें सुवर्णकी मालाको ग्रहण कर मन्द मुसुकान युक्तहै मुखारबिन्द जिनका औ सुवर्णतुल्य है गौरबर्ण जिनका औ संपूर्ण आभूषणों करके भूषित ३० ॥

मुक्ताहारैःकर्णपत्रैःक्कणच्चलितनूपुरा ॥ दुकूलपरिसंवीतावस्त्रान्तर्व्यंजितस्तनी ३१ रामस्योरसिनिक्षिप्यस्मयमानामुदंययौ ॥ ततोमुमुदिरेसर्वेराजदाराःस्वलंकृताः ॥ गवाक्षजालरन्ध्रेभ्योदृष्ट्वालोकविमोहनं ३२ ततोब्रवीन्मुनिंराजासर्वशास्त्रविशारदः ॥ भोकौशिकमुनिश्रेष्ठपत्रंप्रेषयसत्वरं ३३ राजादशरथःशीघ्र मागच्छतुसपुत्रकः ॥ बिवाहार्थंकुमाराणांसदारःसहमंत्रिभिः ॥ तथेतिप्रेषयामासदूतांस्त्वरितविक्रमान् ३४ तेगत्वाराजशार्दूलंरामश्रेयोन्यवेदयन् ॥ श्रुत्वारामकृतंराजाहर्षेणमहताप्लुतः ३५ मिथिलागमनार्थायत्वरयामासमंत्रिणः ॥ गच्छन्तुमिथिलांसर्वेगजाश्वरथपत्तयः ३६ रथमानयमेशीघ्रंगच्छाम्यद्यैवमाचिरं ॥ वशिष्ठस्त्वग्रतोयातु सदारःसहितोग्निभिः ३७॥

औ मोतियोंके हार जिनके गलेमेंपड़े औ जड़ाऊ कर्णफूल पातबाली आदि आभूषणोंको कानोंमें धारण किये औ शब्दयुक्त कंपित होरहेहैं चरणोंमें नूपुर जिनके औ नवीनबस्त्रोंको धारण करे औ बस्त्रोंके मध्यमें प्रकट होरहे हैं स्तन जिनके ऐसी जो सीता हैं सो रामचन्द्रजी के गलेमें मालाको पहिराके मन्द

मुसुकानकरती परम आनंदको प्राप्तहोतीहुईं ३१ तिसके उपरांत सुंदर अलं-कृत राजाजनककी रानियां झरोखों के छिद्र द्वारा लोकविमोहन श्रीराम के स्वरूपको देखके बड़ी आनंद युक्त होतीहुईं ३२ फिर तिसके अनंतर राजा जनक सब शास्त्रोंमें प्रवीण जो विश्वामित्रजी तिनसे कहतेहुये कि हे मुनि-श्रेष्ठ हेकौशिक आप शीघ्रही राजा दशरथके पासपत्र भेजिये ३३ जिससे पुत्रों करके सहित औ रानियों करके सहित औ मंत्रिवर्ग सहित राजादशरथ अपने लड़कोंके विवाह करने के लिये बरात सहित शीघ्रही आवें इस प्रकार विश्वा-मित्रजी की सम्मतिसे राजा जनकजी बड़े चलनेवाले दूतों को शीघ्र भेजते हुये ३४ ते दूत अयोध्याको जाते हुये फिर विश्वामित्र जनकके पत्रद्वारा राजा दशरथसे रामकी कुशल कहते भये ३५ तब राजादशरथरामकीकुशल सुनिकै औ रामजीने जो चरित मार्गमेंकिया और जो जनकपुरमें धनुषभंगआदिकमें किया तिसको विश्वामित्र औ जनक इनके पत्रकेद्वारा और दूतोंके मुखसेसुन कर बड़े आनन्दसे युक्त होके मिथिला नगरीके यात्राके लिये मन्त्रियोंको आज्ञा देतेहुये जिसमें शीघ्र यात्राहोय और यहकहतेहुये कि हाथी औ घोड़े औरथ औ पैदर यह सब सेना मिथिला नगरीको चलै ३६ औ मेरेरथको शीघ्रही लावो विलम्ब न करो क्योंकि अभीहम चलैंगे औ अबवशिष्ठजी गुरु अपने स्त्रियों कर सहित औ अग्निसहित ३७

राममातृःसमादायमुनिर्भगवान्गुरुः ॥ एवंप्रस्थाप्यसकलंराजर्षिर्विपुलंरथम् ३८ महत्यासेनयासार्द्धमारुह्यत्वरितोययौ ॥ आगतंराघवंश्रुत्वाराजाहर्षसमाकुलः ३९ प्रत्युज्जगामजनकःशतानन्दपुरोधसा ॥ यथोक्तपूजयपूज्यंपूजयामाससत्कृतम् ४० रामस्तु लक्ष्मणेनाशुववन्देचरणौपितुः ॥ ततोहृष्टोदशरथोरामंवचनमब्रवीत् ४१ दिष्ट्यापश्यामितेराममुखम्फुल्लाम्बुजोपमम् ॥ मुनेरनुग्रहात्सर्वंसम्पन्नंममशोभनम् ४२ इत्युक्त्वाघ्रायमूर्द्धानमालिंग्यचपुनःपुनः ॥ हर्षेणमहताविष्टोब्रह्मानंदंगतोयथा ४३ ततोजनकराजेनमंदिरेसन्निवेशितः ॥ शोभनेसर्वभोगाढ्येसदारःससुतःसुखी ४४ ॥

औ रामकीमाताओंको संग लैकैअगाड़ीचलैं इसप्रकार राजर्षि राजादशरथ सबको यात्रा कराके आप अपने श्रेष्ठरथ पै सवारहो ३८ बड़ीभारीसेनासहित शीघ्रही मिथिलानगरीको जातेहुये फिर आयेहुये राजादशरथको सुनिके बड़े आनन्दयुक्त ३९ राजा जनकअपनेपुरोहित शतानन्दको संगलैके राजादशरथ जीको अगाड़ीसेही मिलनेको आतेहुये फिर जैसे शास्त्रमें लिखाहै तैसेराजा

दशरथ का पूजन करतेभये ४० और रामचन्द्र जी तो लक्ष्मणसहित शीघ्रही पिताके चरणारबिन्दों को प्रणाम करतेहुये तब राजादशरथ प्रसन्नहो रामसे वचन बोलतेहुये ४१ हेराम जो मैंप्रफुल्लित कमलकेतुल्य तुम्हारे मुखको देखताहूं यह बड़ आनन्द की वार्त्ता है और मुनिके अनुग्रहसे मेरे सब मंगल सिद्ध हुये ४२ यह कहिके रामके शिरको सूंघिके और बारंबार आलिंगनकर ऐसेआनन्दित होतेहुये जैसे कोई ब्रह्मानन्दको प्राप्तहोय ४३ सोराजाजनकजी सब भोगोंकी सामग्रियों करके युक्त औ बड़े शोभायमान मन्दिरमें शुभ मुहूर्त में स्त्री पुत्र सहित राजा दशरथजीको ठहरातेहुये ४४ ॥

ततःशुभेदिनेलग्नेसुमुहूर्त्तेरघूत्तमम्॥आनयामासधर्म्मज्ञोरामंसभ्रातृकंतदा४५ रत्नस्तंभसुविस्तारेसुवितानेसुतोरणे॥मण्डपेसर्वशोभाढ्येमुक्तापुष्पफलान्विते ४६ वेदविद्भिःसुसंबाधेब्राह्मणैःस्वर्णभूषितैः॥सुवासिनीभिःपरितोनिष्ककंठीभिरावृते ४७ भेरीदुन्दुभिनिर्घोषेर्गीतनृत्यैःसमाकुले॥ दिव्यरत्नाञ्चितेस्वर्णपीठेरामंन्यवेशयत्४८वशिष्ठंकौशिकंचैवशतानन्दःपुरोहितः ॥ यथाक्रमंपूजयित्वारामस्योभयपार्श्वयोः ४९ स्थापयित्वासतत्राग्निंज्वालयित्वायथाविधि ॥ सीतामानीयशोभाढ्यांनानारत्नविभूषिताम् ५० सभार्योजनकःप्रायाद्रामंराजीवलोचनम् ॥ पादौप्रक्षाल्यविधिवत्तदपोमूर्ध्न्यधारयत् ५१ ॥

तिसके उपरान्त अच्छेदिनऔशुभमुहूर्तमेंभाइयोंके सहितश्रीरामचन्द्रजीको बड़े धर्मके जाननेवाले जनकजी अपनेघर बुलातेभये ४५ फिररत्नजटित खम्भोंकरके जिसका बड़ा विस्तार होरहाहै औ सुंदरचंदोवा जिसमेंबँध रहा है औ बंदनवारी जिसकेचारोंतरफ लटक रही हैं औ संपूर्ण शोभा युक्त बनाया गयाहै औ मोतियोंकी लड़ी जिसमें लटकरही हैं औसोनेचांदीके पुष्पों से शोभित हो रहाहै ४६ औ सुवर्णके आभूषणोंकरके भूषित वेदके जाननेवाले ब्राह्मणों करके शोभित होरहाहै औ नानाप्रकारके आभूषणों से भूषित और कंठमें निष्क आभरण भूषित ऐसी सौभाग्यवती स्त्रियों करके वह शोभित हो रहाहै ४७ औ भेरी दुंदुभी आदि मंगलके बाजे जिसमें बजरहेहैं औ गान हो रहाहै औ नाचनेवाले तहां नृत्यकररहे हैं ऐसे मंडपके मध्यमें रत्नोंकरके जटित सुवर्ण के आसन पै श्रीरामचंद्रजी को राजा जनक बिठालते हुये ४८ फिर जनकजीके पुरोहित शतानन्दजी बशिष्ठ औरबिश्वामित्रजीको यथोचित क्रमसे पूजन करके रामचन्द्रजी के दोनों तरफ बिठालतेहुये ४९ फिर शतानंदजी बिधिपूर्वक अग्निका स्थापनकर और प्रज्वलितकरके मोती औ रत्नों

करके भूषित शोभायुक्त सीताजीको बुलाके रामके संमुख बिठालतेभये फिर रानी करके सहित राजा जनक राजीवलोचन जो श्रीरामचंद्र तिनके समीप आकर रामके चरणकमल धोके वहजल अपने शिरके ऊपर धारतेहुये ५०।५१

याधृतामूर्ध्निशर्वेणब्रह्मणामुनिभिःसदा ॥ ततःसीतांकरेधृत्वासाक्षतोदकपूर्वकम् ५२ रामायप्रददौप्रीत्यापाणिग्रहविधानतः ॥ सीताकमलपत्राक्षीस्वर्णमुक्तादिभूषिता ५३ दीयतेमेसुतातुभ्यंप्रीतोभवरघूत्तम ॥ इतिप्रीतेनमनसासीतांरामकरेऽर्पयन् ५४ मुमोदजनकोलक्ष्मींक्षीराब्धिरिवविष्णवे । ऊर्मिलांचौरसींकन्यांलक्ष्मणायददौमुदा ५५ तथैवश्रुतिकीर्त्तिञ्चमांडवींभ्रातृकन्यके ॥ भरतायददावेकांशत्रुघ्नायापरांददौ ५६ चत्वारोदारसंपन्नाभ्रातरःशुभलक्षणाः ॥ विरेजुःप्रभयासर्वेलोकपालाइवापरे ५७ ततोब्रवीद्वशिष्ठायविश्वामित्रायमैथिलः ॥ जनकःस्वसुतोदन्तंनारदेनाभिभाषितम् ५८ ॥

जो रामचन्द्रजी के चरणों को जल गंगारूप पहिले महादेवजी ने और ब्रह्माजी ने औ मुनीश्वरों ने अपने शिरके ऊपर धारण किया है वही जलको रानी सहित राजा जनक अपने शिरके ऊपर धारणकरते हुये तिसके अनन्तर रानी सहित राजा जनकजी सीताजीका हाथ अपने हाथके ऊपर धरिकै कुश अक्षत जल सहित ५२ शास्त्रोक्त पाणिग्रहण की बिधिपूर्वक प्रीतिसे रामचन्द्र के अर्थ देतेहुये और यह बचन कहतेभये कि हे रघूत्तम कमलपत्र के तुल्य बिशाल हैं नेत्र जिनके औ सुबर्ण रत्नोंकरके भूषित ऐसी सीता नाम कन्या भार्यास्वरूप धर्म करके आपके अर्थ दीजाती है इसकरके आप प्रसन्न हूजिये यह कहिकै राजा जनक प्रीति युक्त मनसे सीताजी को रामचन्द्रके हस्त कमलमें अर्पण करतेहुये ५३।५४ जैसे क्षीरसागर लक्ष्मी को विष्णुके अर्थ अर्पणकर आनन्दको प्राप्तहुआ तैसेई राजाजनकभी सीताजी को रामके अर्थ देके प्रसन्न होताहुआ अब इसी बिधिसे राजाजनक ऊर्मिला नाम करके जो अपनी औरस कन्याथी तिसको लक्ष्मणजी के अर्थ देतेभये ५५ औ तिसी प्रकारसे श्रुतिकीर्त्ति औ मांडवी जे दो कन्या जनकके भाई कुशध्वजकी थीं तिनमें से मांडवी को भरतजी के अर्थ देतेहुये औ श्रुतिकीर्त्ति को शत्रुघ्नजी के अर्थ देतेभये ५६ अब शुभहैं लक्षण चिह्न जिन्हों के ऐसेस्त्रियों करके युक्त चारोंभाई रामादि अपनी कांति करके अत्यंत शोभित हुये मानों इन्द्रआदि चारों लोकपाल शोभित हैं ५७ तिसके उपरांत राजाजनक नारदजी का कहाहुआ अपनीकन्या सीताजी का वृत्तांत वशिष्ठ और विश्वामित्रसे कहतेभये ५८ ॥

यज्ञभूमिविशुद्ध्यर्थंकर्षतोलांगलेनमे ॥ सीतामुखात्समुत्पन्नाकन्यकाशुभलक्षणा ५९ तामद्राक्षमहंप्रीत्यापुत्रिकाभावभाविताम् ॥ अर्पितापियभार्यायैशरच्चन्द्रनिभानना ६० एकदानारदोभ्यागाद्रहिविक्तेमयिसंस्थिते ॥ रणयन्महतींवीणांगायन्नारायणंविभुम् ६१ पूजितःसुखमासीनोमामुवाचसुखान्वितः ॥ शृणुष्ववचनंगुह्यतवाभ्युदयकारणम् ६२ परमात्माहृषीकेशोभक्तानुग्रहकाम्यया ॥ देवकार्यार्थसिद्ध्यर्थंरावणस्यबधायच ६३ जातोरामइतिख्यातोमायामानुषवेषधृक् ॥ आस्तेदाशरथिर्भूत्वाचतुर्धापरमेश्वरः६४ योगमायापिसीतेतिजातावैतववेश्मनि ॥ अतस्त्वंराघवायैवदेहिसीतांप्रयत्नतः ६५ ॥

हेमुनीश्वरो एक समय सोनेके हलसे यज्ञभूमिके शुद्धिकेलिये मैं पृथ्वीको जोतताथा उससमयमें हलके अग्रभागसे जो पृथ्वी में छिद्रहुआ तिसते शुभ लक्षणयुक्त एककन्या उत्पन्नहुई उसका नामसीता होताहुआ क्योंकि हलके अग्रभाग का नाम सीताहै उसके व्यापार से वह उत्पन्नहुई इससे उनका नाम भी सीताहुआ ५९ उस कन्याको पुत्रीके भावसे मैं प्रीतिसे देखताहुआ फिर शरदृऋतु चंद्रतुल्यहै मुख जिसका ऐसी सीतारूप कन्याको अपनीरानी को मैंने अर्पणकिया ६० फिर एक समयमें एकांत देशमें बैठाथा उसी समय बीणाको बजातेहुये और नारायणका ध्यानकरते हुये नारदजी मेरे समीपआये ६१ मैंने उनका यथोचित पूजनकिया और आसनपै बिठाला फिर वे सुखपूर्वक स्थितहोके मुझसे कहनेलगे कि हेराजन् तुम्हारे कल्याणका कारण एक गुप्तवचन हमकहते हैं सो सुनिये ६२ जो सबकी इंद्रियों का प्रवृत्तिकरानेवाला परमात्माहै वोही भक्तोंके अनुग्रहकी इच्छाकरके और देवकार्य्य के सिद्धिके अर्थ रावणके बधकेलिये ६३ रामनामकर प्रसिद्ध मायाही से मनुष्य वेषको धारणकिये प्रकटहुआहै सो परमेश्वर चारिरूपसे दशरथके पुत्रहोके इससमय में अयोध्यामें बासकर रहेहैं ६४ उनकी योगमाया शक्ति आपके गृहमें सीता प्रकटहुई हैं इसते उनको आप यत्नकर रामही के अर्थ दीजिये ६५ ॥

नान्यस्यपूर्वभार्यैषारामस्यपरमात्मनः ॥ इत्युक्त्वाप्रययौदेवगतिंदेवमुनिस्तदा ६६ तदारभ्यमयासीताविष्णोर्लक्ष्मीर्विभाव्यते ॥ कथंमयाराघवायदीयतेजानकीशुभा ६७ इतिचिन्तासमाविष्टःकार्यमेकमचिन्तयम् ॥ मत्पितामहगेहेषुन्यासभूतमिदंधनुः ६८ ईश्वरेणपुराक्षिप्तंपुरदाहादनन्तरं॥धनुरेतत्पणंकार्यमितिचिंत्यकृतंतथा६९सी

तापाणिग्रहार्थायसर्वेषांमाननाशनं ॥ त्वत्प्रसादान्मुनिश्रेष्ठरामोरा जीवलोचनः ७० आगतोत्रधनुर्द्रष्टुंफलितोमेमनोरथः ॥ अद्यमेस फलंजन्मरामत्वांसहसीतया ७१ एकासनस्थंपश्यामिभ्राजमानंरविं यथा ॥ त्वत्पादाम्बुधरोब्रह्मासृष्टिचक्रप्रवर्तकः ७२ ॥

क्योंकि सिवाय परमात्मा रामके यह सीताकिसीकी कभी भार्यानहीं भई इससे रामहीके अर्थ इसको देना चाहिये यह बचनकहि नारदजी आकाशमार्ग से देवलोक को जाते भये ६६ तबसे लेकरके मैंने ऐसी प्रीतिकी कि सीता साक्षात् विष्णुकी लक्ष्मी हैं और किस प्रकार से यह सीता रामहीके अर्थ दी जायँ ६७ इस चिन्तामें मग्नहोके मैं यह कार्य चिन्तनकरता हुआ कि मेरे पितामहके यहां त्रिपुरदैत्यको मारिकै महादेवजीने अपना धनुष धरोहरकी तरह स्थापन कियाहै इससे इस धनुष को जोकोई चढ़ावै उसकोअपनी कन्या देउँगा ऐसा प्रण राजोंके मान भंग के लिये मैंने किया और यहभी जानताथा सिवाय परमेश्वर के और कोई महादेवजीके धनुषको न चढ़ाय सकैगा सो हेमु- निश्रेष्ठ आपके अनुग्रह से कमलतुल्य विशालनेत्र ६८।६९।७० श्रीराम- चन्द्र धनुषके देखनेको यहां आये हैंइससे मेरामनोरथपूर्ण भया इतना वृत्तांत जनकजी विश्वामित्र और वशिष्ठसे कहिके अबरामसे कहनेलगे कि हेराम जो मैं सूर्यकी तरह प्रकाशमान एक आसनपै सीता सहित तुमको स्थित देखरहा हौं इससे मेराजन्म आज सफलहुआ और आपके चरणके जलको कमंडलु में धारण करनेवाला ब्रह्मा संपूर्ण सृष्टिको कररहाहै ७१।७२ ॥

बलिस्तत्पादसलिलंधृत्वाभूद्दिविजाधिपः ॥ त्वत्पादपांसुसंस्पर्शा दहल्याभर्तृशापतः ७३ सद्यएवविनिर्मुक्ताकोन्यस्त्वत्तोधिरक्षिता ७४ यत्पादपङ्कजपरागसुरागयोगिवृंदैर्जितंभवभयंजितकालचक्रैः ॥ य न्नामकीर्त्तनपराजितदुःखशोकादेवास्तमेवशरणंसततंप्रपद्ये ७५ इ तिस्तुत्वान्नृपः प्रादाद्राघवायमहात्मने ॥ दीनाराणांकोटिशतंरथाना मयुतंतथा ७६ अश्वानांनियुतंप्रादाद्गजानांषट्शतंतथा ॥ पत्तीनां लक्ष्यमेकंतुदासीनांत्रिशतंददौ ७७ दिव्यांबराणिहारांश्चमुक्तारत्नम योज्ज्वलान् ॥ सीतायैजनकःप्रादात्प्रीत्यादुहितृवत्सलः ७८ वशिष्ठा दीन्सुसंपूज्यभरतंलक्ष्मणंतथा ॥ पूजयित्वायथान्यायंतथादशरथं नृपम् ७९ ॥

और राजाबलि आपके चरणके जलको अपने शिरपैधारणकर सबदेवतोंका

स्वामी होताभया और आपके चरणारबिंद की रजके स्पर्श करनेसे अहल्या शीघ्रही पतिके शापसे छूटजातीहुई इससे आपके सिवाय अन्य कौन रक्षक है ७३।७४ औ जिस आपके चरणारबिंदके पराग में शोभितहै रागप्रीति जिन्हों की और इससे जीतीहै कालकी आज्ञा जिन्होंने ऐसे योगियों के समूहने सं-सारभय जीतलियाहै और जिस आपके नामकीर्त्तन में परायण भक्तजन दुःख शोक को जीतिकै देवभावको प्राप्तहोतेहैं तिस आपके शरण निरन्तर मैंप्राप्तहौं ७५ इसप्रकार राजा जनक रामचंद्र की स्तुति करके सौ करोड़ अशरफी देते हुये औ दशहजार रथ देतेहुये ७६ औ एक लाखघोड़े देतेहुये औछः सै हाथी देतेहुये औ एक लाख प्यादे देते हुये औ तीनसै दासी देतेहुये ७७ औ कन्या है प्रिय जिनको ऐसे जो राजा जनक सो दिव्य नाम देवनिर्मित बहुत से बस्त्र औ रत्न जटित मोतियों के हार सीताजीके अर्थ प्रीति करके देतेभये ७८ फिर वशिष्ठ आदि जो ऋषीश्वर तिनका बिधिपूर्बक पूजन कर फिर भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न इनका विधिपूर्बकपूजनकर राजादशरथका यथोचित पूजनकिया ७९॥

प्रस्थापयामासनृपोराजानंरघुसत्तमं॥ सीतामालिंग्यरुदतींमातरःसाश्रुलोचनाः ८० श्वश्रुशुश्रूषणपरानित्यंराममनुव्रता॥ पातिव्रत्यमुपालंव्यतिष्ठवत्सेयथासुखं ८१ प्रयाणकालेरघुनंदनस्यभेरीमृदंगानकतूर्यघोषः॥ स्वर्लोकभेरीघनतूर्यशब्दैःसंमूर्च्छितोभूतभयंकरोभूत् ८२॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेबालकाण्डेषष्ठःसर्गः ६

फिर अयोध्याकी यात्राकरातेहुये फिर आंशुओं करके परिपूर्ण हैं नेत्रजिन्हों के ऐसी जो सीताजीकी माताहैं ते रोतीहुई सीताको आलिंगन करके यहबचन कहतीभईं ८० कि हेसीते अपनी सासुकी शुश्रूषामें तत्पररहना औ पातिव्रत्य धर्मका आश्रयणकर रामजी के निरंतर अनुकूल रहना औ हेवत्से सुखपूर्बक पतिकी आज्ञामें स्थित हूजियो ८१ जिस समय में राजादशरथने अयोध्या नगरी के जानेकी यात्राकी उससमयमें भेरी और मृदंग औ नगाड़े इनका शब्द देवतोंके बजायेहुये भेरी आदि बाजोंके शब्दसे मिलाहुआ बड़ाभारी शब्द सब प्राणियों के भयका देनेवालाहोताभया यहांकबिके भयंकरशब्दके लिखनेसे पर-शुरामजीआनेवाले हैं इससेआगामि भयकेकरनेवाला उत्पातसूचनाकिया ८२॥

इत्यध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेबालकांडेटीकायांषष्ठस्सर्गः ६॥

श्रीमहादेवउवाच॥ अथगच्छतिश्रीरामेमैथिलाद्योजनत्रयं॥ निमित्तान्यतिघोराणिददर्शनृपसत्तमः १ नत्वावशिष्ठंपप्रच्छकिमिदंमु

निपुंगव ॥ निमित्तानीहदृश्यंतेविषमाणिसमंततः २ वशिष्ठस्तमथा प्राहभयमागामिसूच्यते ॥ पुनरप्यभयंतेद्यशीघ्रमेवभविष्यति ३ मृगाःप्रदक्षिणंयान्तिपश्यत्वांशुभसूचकाः ॥ इत्येवंवदतस्तस्यववौघोरतरोनिलः ४ मुष्णंश्चक्षूंषिसर्वेषांपांशुवृष्टिभिरार्दयन् ॥ ततोव्रजन्ददर्शाग्रेतेजोराशिमुपस्थितम् ५ कोटिसूर्यप्रतीकाशंविद्युत्पुञ्जसमप्रभम् ॥ तेजोराशिंददर्शाथजामदग्न्यंप्रतापवान् ६ नीलमेघनिभंप्रांशुंजटामण्डलमण्डितम् ॥ धनुःपरशुपाणिंचसाक्षात्कालमिवान्तकम् ७

दोहा । जामदग्न्यबलगञ्जि पथि गृहपहुँचेभगवान ॥
मातुलपुर सप्तमगये सानुज भरत सुजान ७

अब श्री महादेवजी पार्वती से कहतेहुये कि हे पार्वति इसके अनन्तर श्री रामजी चलतेभये जब मिथिलानगरी से तीनयोजन परपहुँचे तब राजादशरथ बड़ेघोर असगुन देखके १ बशिष्ठजी को नमस्कार करके पूछतेहुये कि हेमुनिश्रेष्ठ ये चारों तरफसे भयसूचक निमित्त दिखलाई पड़ते हैं सो क्या कारणहै २ तब बशिष्ठजी दशरथसे कहतेहुये कि हे राजन् इन उत्पातों से आनेवाली भय सूचित होती है औ फिरशीघ्रही तुम्हारीभयकी निवृत्ति भी होजायगी ३ क्योंकि जिससे मृग तुम्हारे दाहिने तरफ जारहे हैं इससे वे शुभको कहिरहेहैं ऐसा बचन बशिष्ठ कहतेईथे तबतक बड़ाघोर पवन चलताहुआ ४ फिर वह पवन धूलियोंकी वृष्टिकरके सब प्राणियोंके नेत्रोंको चुराताहुआ अर्थात् अंधाकरता हुआ सबको पीड़ित करताभया फिर तिसके आगे चलके एक तेज की राशि दिखाई पड़तीभई ५ फिर उसतेजकी राशिमें अनेक सूर्योंकासा प्रकाश जिनका औ बिजुलियोंके समूहके तुल्यहै कांति जिनकी ऐसे जो जमदग्निके पुत्र परशुरामजी तिनको राजा दशरथ देखतेभये ६ कैसे परशुरामजीहैं कि नीलमेघ तुल्य जिनकी कांति औ लम्बायमान जिनका शरीर है औ जटाओंके समूह करके शोभित हैं औ धनुष औ कुठार जिनके हाथमें है औ नाश करनेवाला साक्षात्कालही मानो मूर्त्ति धारण कियेहोय ७ ॥

कार्तवीर्यान्तकंरामंदृप्तक्षत्रियमर्दनम् ॥ प्राप्तंदशरथस्याग्रेकालमृत्युमिवापरम् ८ तंदृष्ट्वाभयसंत्रस्तोराजादशरथस्तदा ॥ अर्घ्यादिपूजांविस्मृत्यत्राहित्राहीतिचाब्रवीत् ९ दण्डवत्प्रणिपत्याहपुत्रप्राणान्प्रयच्छमे ॥ इतिब्रुवन्तंराजानमनादृत्यरघूत्तमम् १० उवाचनिष्ठुरंवाक्यंक्रोधात्प्रचलितेन्द्रियः ॥ त्वंरामइतिनाम्नामेचरसिक्षत्रियाध

म ११ द्वंद्वयुद्धंप्रयच्छाशुयदित्वंक्षत्रियोसिवै॥ पुराणंजर्जरंचापंभंक्त्वा त्वंकत्थसेमुधा १२ अस्मिंस्तुवैष्णवेचापेआरोपयसिचेद्गुणम् ॥ तदायुद्धंत्वयासार्द्धंकरोमिरघुनन्दन १३ नोचेत्सर्वान्हनिष्यामिक्षत्रियान्तकरोह्यहम् ॥ इतिब्रुवतिवैतस्मिन्चचालवसुधाभृशम् १४ ॥

औ कार्तवीर्यके नाश करनेवाले औ गर्विष्ठ जो क्षत्री तिनके मर्दन करनेवाले हैं औ राजादशरथ के अगाड़ी मानो दूसराकाल मृत्युही आके प्राप्तहोय ऐसेखड़े हैं८ तब राजादशरथ ऐसे भयंकररूप परशुरामजीको देखके अर्घ्यादि पूजाको तो भूलगये औ त्राहि त्राहि ये बचन कहतेहुये बड़े भयभीत होके ९ औ दण्डवत्प्रणाम करिके यह कहनेलगे कि हे मुने मेरे पुत्रप्राणोंको कृपाकरिकै दीजिये ऐसे वचन कहतेहुये जो राजा दशरथ तिनको अनादर करिकै अर्थात् दशरथके तरफ़ देखते भी न हुये १० औ क्रोधसे चलायमान होरही है इन्द्रिय जिनकी ऐसे परशुरामजी रामचन्द्रहीसे कठोर वचन बोलतेहुये कि हे क्षत्रियाधम तू राम ऐसे मेरे नामसे बिचर रहाहै ११ जो तू क्षत्रिय हो तो शीघ्रही मुझको द्वन्द्वयुद्ध दे औ पुराना औ जीर्ण धनुषको तोड़के तू वृथाही अपने को बहुत मानरहा है १२ और यह मेरे पास एक बैष्णवधनुष है तिसमें जो तू कदाचित् रोदेको चढ़ालेवे तौ हे रघुवंशज तेरे साथ मैं युद्ध करौंगा १३ और जो इस बैष्णव धनुषको न चढ़ासकै तौ जितने तुम क्षत्रिय आयेहो तिनको सबको मैं मार डालौंगा क्योंकि क्षत्रियोंका नाश करनेवाला मैं प्रसिद्धही हों जब ऐसे बचन परशुरामजीने कहे तब पृथ्वी कांपनेलगी १४ ॥

अन्धकारोबभूवाथसर्वेषामहिचक्षुषाम् ॥ रामोदाशरथिर्वीरोवीक्ष्यतंभार्गवंरुषा १५ धनुराच्छिद्यतद्धस्तादारोप्यगुणमञ्जसा ॥ तूणीराद्बाणमादायसन्धायाकृष्यवीर्य्यवान् १६ उवाचभार्गवंरामंशृणु ब्रह्मन्वचोमम ॥ लक्ष्यंदर्शयबाणस्यह्यमोघोममशायकः १७ लोकान्पादयुगंवापिवदशीघ्रम्ममाज्ञया ॥ अयंलोकःपरोवाथत्वयागन्तुंन शक्यते १८ एवंहित्वंप्रकर्त्तव्यंवदशीघ्रम्ममाज्ञया ॥ एवंवदतिश्रीरामेभार्गवोविकृताननः १९ संस्मरन्पूर्ववृत्तान्तमिदंवचनमब्रवीत् ॥ रामरामम्महाबाहोजानेत्वांपरमेश्वरम् २० पुराणंपुरुषंविष्णुंजगत्सर्गलयोद्भवम् ॥ बाल्येहंतपसाविष्णुमाराधयितुमञ्जसा २१ ॥

और सबके नेत्रोंके आगे अंधकार होजाता हुआ तौ उस समयमें बीर जो दशरथके पुत्र श्री रामचन्द्र सो क्रोधकरके परशुरामको देखिकरि १५ परशु-

रामके हाथसे उस वैष्णव धनुषको छीनके शीघ्रही चढ़ाइकै और तरकस से निकालकर अमोघबाणोंको उस धनुषमें संधानकर धनुषको खींचके १६ परशुरामसे बोलतेहुये कि हेब्रह्मन् मेरा बचन सुनो औ मेरे बाणका निशाना दिखलाओ क्योंकि यह मेरा बाण अमोघहै १७ और इस बाणके दोही निशाने हैं कितो तुम्हारे पुण्यके जीतेहुये जितने लोकहैं तिनको मैं इस बाणसे नाश करूं कितो तुम्हारी चलनेकी गतिका नाश करताहूं जिससे कहीं जा न सको क्योंकि अब तुम्हारे दोनों लोक मेरे बाणके आधीन हैं इससे शीघ्र बताइये कौनसे लोकका नाशकरौं ऐसा जब रामचन्द्रजीने कहा तो परशुरामका मुख सूख जाताहुआ अर्थात् परशुरामका तेज सब नष्टहोगया १८ । १९ और परशुराम पहिले वृत्तान्त को स्मरणकर श्रीरामजीसे यह बचन बोलतेहुये कि हेराम हेमहाबाहो मैंने अब जाना आप साक्षात् पुराण पुरुष बिष्णु भगवान् परमेश्वरहैं औ संपूर्ण जगत् के उत्पत्ति औ पालन औ संहारकरने वाले हो औ बाल्यअवस्थामें मैं तपकरके विष्णुका आराधन करताभया २० । २१ ।

चक्रतीर्थेशुभंगत्वातपसाविष्णुमन्वहम् ॥ अतोषयंमहात्मानंनारायणमनन्यधीः २२ ततःप्रसन्नोदेवेशःशंखचक्रगदाधरः ॥ उवाच मांरघुश्रेष्ठप्रसन्नमुखपङ्कजः २३ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ उत्तिष्ठतपसोब्रह्मन्फलितंतेतपोमहत् ॥ मच्चिदंशेनयुक्तस्त्वंजहिहैहयपुङ्गवम् २४ कार्त्तवीर्यंपितृहणंयदर्थंतपसःश्रमः ॥ ततस्त्रिःसप्तकृत्वस्त्वंहत्वाक्षत्रियमण्डलम् २५ कृत्स्नांभूमिंकश्यपायदत्त्वाशान्तिमुपावह ॥ त्रेतामुखेदाशरथिर्भूत्वारामोहमव्ययः २६ उत्पत्स्येपरयाशक्त्यातदाद्रक्ष्यसिमांततः ॥ मत्तेजःपुनरादास्येत्वयिदत्तंमयापुरा २७ तदातपश्चरंल्लोकेतिष्ठत्वंब्रह्मणोदिनम्॥इत्युक्त्वांतर्दधेदेवस्तथासर्वंकृतंमया २८॥

चक्रतीर्थ में जाकरके वहां एकाग्र चित्त करके दिन दिन तप करके सर्व व्यापक महात्मा जो नारायण तिनको प्रसन्न करता हुआ २२ तब हे रघुश्रेष्ठ वह शंख चक्र गदा को धारणकरे सब देवोंका स्वामी और प्रफुल्लितहै मुख पंकज जिनका सोमेरेऊपर प्रसन्नहोकेबोले २३ कि हेब्रह्मन् अबतुम तपसेउठो और तुम्हारा तप सिद्धहुआ और तुम मेरे अंश करके युक्तहोके अपने पिताके मारने वाले कार्तवीर्य्य को मारौ २४ जिसलिये तुमनेतप में श्रम कियाहै तिसके उपरान्त इक्कीसवार सबभूमण्डलके क्षत्रियों को मारकै २५ संपूर्ण पृथ्वी कश्यपजीको दे शान्तिको प्राप्तहोउ फिर त्रेतायुगमें दशरथका पुत्र राम करके मैं अवताररलेउंगा २६ तहां मेरी शक्ति जो सीता तिस करके सहित मुझको

तुम देखोगे तब जो तेज अपना तुमको मैंने दियाहै उस तेजको फिर ग्रहण करलेउँगा २७ तिसके अनन्तर इसलोक में तपकरतेहुये कल्प पर्यन्त यहां स्थितरहो यह वचन कहिकै नारायण अन्तर्हित होतेहुये फिर जैसे नारायणने कहा तैसे मैंने सब किया २८ ॥

सएवविष्णुस्त्वंरामजातोऽसिब्रह्मणार्थितः ॥ मयिस्थितन्तुत्वत्तेजस्त्वयैवपुनराहृतम् २९ अद्यमेसफलंजन्मप्रतीतोसिमयाप्रभो ॥ ब्रह्मादिभिरलभ्यस्त्वंप्रकृतेःपारगोमतः ३० त्वयिजन्मादिषड्भावा नसन्त्यज्ञानसंभवाः ॥ निर्विकारोसिपूर्णस्त्वंगमनादिविवर्जितः ३१ यथाजलेफेनजालंधूमोवह्नौतथात्वयि ॥ त्वदाधारात्वद्विषयामाया कार्यंसृजत्यहो ३२ यावन्मायावृतालोकास्तावत्त्वांनविजानते ॥ अविचारितसिद्धैषाऽविद्याविद्याविरोधिनी ३३ अविद्याकृतदेहादिसंघाते प्रतिबिम्बिता ॥ चिच्छक्तिर्जीवलोकेस्मिन्जीवइत्यभिधीयते ३४ यावद्देहमनःप्राणबुद्ध्यादिष्वभिमानवान् ॥ तावत्कर्तृत्वभोक्तृत्वसुखदुःखादिभाग्भवेत् ३५ ॥

हे राम सोई विष्णुरूप आप ब्रह्माजी के प्रार्थनासे प्रकटहुयेहो और मेरे बिषे स्थित जो आपकातेजरहा सो आपही ने फिर खैंचलिया २९ और हेप्रभू आज मेराजन्म सफलहुआ जो आपको जाना औ आप ब्रह्मादिकों को भी अलभ्यहो अर्थात् नहीं प्राप्तहोसक्तेहो इससे प्रकृति के पारगामी हो ३० औ आपमें अज्ञानसे उत्पन्नहुये जन्म आदि छः विकारनहीं हैं इससे निर्विकारहो और सर्वत्रपरिपूर्णहो और इसीसे गमनादि क्रियारहितहो ३१ और जैसे शुद्ध जो जलहै तिसमें फेनआदिविकार औपाधिकहै और अग्निमेंधूम जैसे औपाधिकहै तैसेही तुम्हींहो आधारजिसका औतुमहीहो बिषयजिसका ऐसीजोमाया सो जगत् को रचतीहै इससे औपाधिकही आप में क्रिया प्रतीत होतीहै ३२ और जबतक मायाकरके आवृतमनुष्य आदि प्राणी रहतेहैं तबतक नहीं आप को जानतेहैं इसीसे बिद्यासे बिरोध करनेवाली अविद्या अविचारहीसे सिद्धहै अर्थात् विचार करने से विद्याके उदय में अन्धकार की नाईं अविद्या आपही नाशको प्राप्त होजाती है ३३ विद्याकरके कल्पितजो देहादिकोंका संघात तिस में प्रतिबिम्बभावको प्राप्त चिच्छक्ति अर्थात् चैतन्य सो इसलोकमें जीव कहा जाताहै ३४ इससे जबतकदेह मन प्राण और बुद्ध्यादिक इनमें अभिमान करताहै अर्थात् अविवेकसे देहादिकोंके धर्मको अपनाधर्ममानताहै तबतक कर्तृत्व औ भोक्तृत्व औ सुख दुःखादि इनके सेवन करनेवाला होता है ३५ ॥

आत्मनःसंसृतिर्नास्तिबुद्धेर्ज्ञानंनजात्वति ॥ अविवेकाद्द्वयंयुक्त्वा संसारीतिप्रवर्त्तते ३६ जडस्यचित्समायोगाच्चित्त्वंभूयाच्चितेस्तथा ॥ जडसंगाज्जडत्वंहिजलाग्न्योर्मेलनंयथा ३७ यावत्त्वत्पादभक्तानांसंगसौख्यंनविन्दति ॥ तावत्संसारदुःखौघान्ननिवर्त्तेन्नरःसदा ३८ सत्संगलब्धयाभक्त्यायदात्वांसमुपासते॥ तदामायाशनैर्यातितानवंप्रतिपद्यते३९ ततस्त्वज्ज्ञानसम्पन्नस्सद्गुरुस्तेनलभ्यते ॥ वाक्यज्ञानंगुरोर्लब्ध्वात्वत्प्रसादाद्विमुच्यते ४० तस्मात्त्वद्भक्तिहीनानांकल्पकोटिशतैरपि ॥ नमुक्तिशंकाविज्ञानशङ्कानैवसुखंतथा ४१ अतस्त्वत्पादयुगलेभक्तिर्मेजन्मजन्मनि ॥ स्यात्त्वद्भक्तिमतांसंगोऽविद्यायाश्यांविनश्यति ४२ ॥

क्योंकि वास्तवमें जन्ममरणादिरूप संसार असंग आत्मा में नहीं संभव होता और जडबुद्धिमें ज्ञानकभी नहीं संभवहोता अविवेकसे दोनोंको मिलाय के संसारी अर्थात् मैं करताहौं मैं भोक्ताहौं ऐसा व्यौहार संभवहोताहै ३६ जड जोबुद्धिहै तिसको चैतन्यके संबन्धसे बुद्धिमें ज्ञानकी प्रतीतिहोतीहै और चेतन जो आत्माहै तिसको जड़जोबुद्धि तिसके संबन्धसे अज्ञहौं ऐसीप्रतीति होती है जैसे जल और अग्नि इनकेमिलापसे परस्परमें प्रतीति होती है तैसे अर्थात् जैसे लोकमें बिजुली का स्वरूप प्रकाशरूपभी है परन्तु मेघजल के संबन्धसे चमक कै छिपजाना प्रतीति होताहै औ जल अप्रकाश रूपभी है परंतु प्रकाश रूप बिजुली के संबन्धसे चमकतासा मालूम पड़ताहै तैसे आत्म बुद्धि संबन्ध में भी जानना ३७ इससे जबतक आपके चरणारविन्दोंके भक्तोंकेसंगके सुख को संसारी मनुष्य नहीं प्राप्तहोताहै तबतक संसारके दुःखोंके समूहसे नहीं निवृत्त होताहै ३८ जब सत्संग करके प्राप्तहुई भक्ति तिसकरके मनुष्य आपकी उपासना करतेहैं तब माया धीरे धीरे क्षीणताको प्राप्तहोती है ३९ फिर आप के भक्ति योगके प्रभावसे आपके अभेद ज्ञानयुक्त सद्गुरु उसको प्राप्तहोताहै फिर उस दयालु गुरुके सकाशते(तत्त्वमसि)इत्यादि महावाक्यके ज्ञानकोप्राप्त होकर फिर तिस ज्ञानके प्रसादसे संसारके बन्धनसे छूटजाता है ४० तिससे आपकी भक्तिसे हीन जो पुरुषहैं तिनको शतकोटि कल्पोंकरके भी मुक्ति की संभावना औ बिज्ञानकी संभावनाभी नहीं है और ज्ञानके बिना सुखभी नहीं होता ४१ इससे हे भगवन् आपके चरण युगलमें जन्म जन्म मुझको भक्ति होइ औ आपकी भक्तिकरकेयुक्त जोपुरुषहैं तिनका संयोगहोइ जिससे अविद्या नाशको प्राप्तहोय ४२ ॥

लोकेत्वद्भक्तिनिरतास्त्वद्धर्मामृतवर्षिणः ॥ पुनंतिलोकमखिलंकिंपुनस्स्वकुलोद्भवान् ४३ नमोस्तुजगतांनाथनमस्तेभक्तिभावन ॥ नमःकारुणिकानन्तरामचन्द्रनमोस्तुते ४४ देवयद्यत्कृतंपुण्यंमयालोकजिगीषया ॥ तत्सर्वंतवबाणायभूयाद्रामनमोस्तुते ४५ ततःप्रसन्नोभगवान्श्रीरामःकरुणामयः ॥ प्रसन्नोस्मितवब्रह्मन्यत्तेमनसिवर्त्तते ४६ दास्येतदखिलंकाममाकुरुष्वात्रसंशयम् ॥ ततःप्रीतेनमनसाभार्गवोराममब्रवीत् ४७ यदिमेनुग्रहोरामतवास्तिमधुसूदन ॥ त्वद्भक्तसङ्गस्त्वत्पादेदृढाभक्तिःसदास्तुमे ४८ स्तोत्रमेतत्पठेद्यस्तुभक्तिहीनोपिसर्वदा ॥ त्वद्भक्तिस्तस्यविज्ञानंभूयादन्तेस्मृतिस्तव ४९ ॥

और जे कोई संसार में आपकी भक्तिमें निरत हैं और तत्त्वज्ञानरूपी अमृतकी वृष्टि करनेवालेहैं अर्थात् तत्त्वज्ञानके उपदेश करने वालेहैं ते सब लोकको पवित्रकरतेहैं और अपने कुटुम्बियोंको पवित्र करैं यह क्या कहना चाहिये ४३ औ हे जगन्नाथ तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै औ हे भक्तोंके ऐश्वर्य बढ़ानेवाले औ हे कारुणिक हे अनन्त हे रामचन्द्र तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै ४४ औ हेराम जो २ पुण्यस्वर्गादि लोकोंकी जीतनेकी इच्छाकरके मैंने कियाहै सो सब पुण्य आपकेबाणकेअर्थहो अर्थात् इसकारणकरके मेरेपुण्यलोक नाशकरिये पादगति बनीरहै औ हेराम तुमको नमस्कारहै ४५ तब करुणाके आलय आश्रय ऐसे जो भगवान रामहैं सो प्रसन्न होकै वचन कहते हुये कि हे ब्रह्मन मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहौं इससे जो तुम्हारे मनमेंहो सोमांगिये ४६ संपूर्ण मनका अभीष्ट फलहम तुमको देवैंगे इसमें संशयनकरना तब तो प्रीतियुक्त मनसे परशुराम जी श्रीरामसे कहतेहुये ४७ हेराम जो मेरे ऊपर आपका अनुग्रहहोय तो आपके भक्तोंका तौ संगहो औ आपके चरणकमल में सदा दृढभक्ति होय ४८ और जो मैंने स्तोत्रकियाहै इसको जो कदाचित् भक्तिहीनपुरुष पाठकरै तौ तिसको आपकी भक्तिहोय औ आपके स्वरूपकाज्ञानहोय औ अन्त समयमें आपका स्मरणहोय ४९ ॥

तथेतिराघवेणोक्तःपरिक्रम्यप्रणम्यतम् ॥ पूजितस्तदनुज्ञातोमहेन्द्राचलमन्वगात् ५० राजादशरथोहृष्टोरामंमृतमिवागतम् ॥ आलिंग्यालिंग्याहर्षेणनेत्राभ्यांजलमुत्सृजत् ५१ ततःप्रीतेनमनसास्वस्थचित्तःपुरंययौ ॥ रामलक्ष्मणशत्रुघ्नभरतादेवसंमिताः ५२ स्वांस्वांभार्यामुपादायरेमिरेस्वस्वमन्दिरे ॥ मातापितृभ्यांसंहृष्टोरामःसीतास

न्वितः ५३ रेमेवैकुण्ठभवनेश्रियासहयथाहरिः ॥ युधाजिन्नामकै केयीभ्राताभरतमातुलः५४ भरतंनेतुमागच्छत्स्वराज्यंप्रीतिसंयुतः॥ प्रेषयामासभरतंराजास्नेहसमन्वितः ५५ शत्रुघ्नंचापिसंपूज्ययुधा जितमरिन्दमः ॥ कौशल्याशुशुभेदेवीरामेणसहसीतया॥ देवमातेव पौलोम्याशच्याशक्रेणशोभना॥ ५६ ॥

तौश्रीरामचन्द्रजीनेकहा हेब्रह्मन[तथास्तु]तैसेहीहोगा तबपरशुरामजी रामचंद्रकोपरिक्रमाकरके औप्रणामकरके रामकीआज्ञासे बड़ेसत्कारकोप्राप्तहुये महेंद्र पवर्तको जातेहुये५० तबतो राजादशरथ प्रसन्नहोकै मराहुआ जैसेफिरप्राप्तंहोय तैसेरामचंद्रकोबड़ेहर्षसे बारंबार आलिंगन करिकैनेत्रोंसेअश्रुधारा छोड़तेहुये ५१फिर प्रसन्नमनसेस्वस्थ चित्तहोके अयोध्यानगरीकोजातेहुये तिसकेअनन्तर देवतोंकेतुल्य रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्न येचारोंभाई ५२ अपनीअपनी स्त्रियों को स्वीकारकरके अपनेअपने मन्दिरमेंरमण करतेहुये मातापिताकी प्रीतियुक्त जो सीता सहितरामचन्द्र जी सोअपनेभवनमें ऐसेरमणकरतेहुये५३जैसेबैकुण्ठलोकमें लक्ष्मीकरके सहित नारायणऔरयुधाजित्है नामजिसकाऐसा केकयीका भाई औ भरतजीका मामा ५४ अपनेघर भरतको लिवाइजाने को आता हुआ बड़ी प्रीति युक्त होकै तब राजादशरथ स्नेहयुक्तहो भरत औ शत्रुघ्न को भेजते हुये अपने शाले युधाजित्का बड़ा सत्कार करके ५५ अबकौशल्यारानी रामचन्द्र सीताकरके शोभाको प्राप्त होतीहुई जैसे देवतोंकी माता अदिति इन्द्राणी औ इन्द्र इन करके शोभित होरही है ५६ ॥

साकेतेलोकनाथप्रथितगुणगणोलोकसंगीतकीर्त्तिः श्रीरामःसीतयास्तेऽखिलजननिकरानन्दसन्दोहमूर्त्तिः ॥ नित्यश्रीर्निर्विकारोनिरवधिविभवोनित्यमायानिरासोमायाकार्य्यानुसारीमनुजइवसदाभाति देवोऽखिलेशः ५७ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादे बालकाण्डेसप्तमःसर्गः॥ ७ ॥

जोदेवप्रकाशस्वरूपश्रीरामअयोध्यानगरीमें सीतासहितबिद्यमान सदा प्रकाश करते हैं कैसेहैं कि लोकनाथ जो ब्रह्मादिक देव तिन्होंके बिषे विख्यात नाम प्रसिद्ध गुण समूहहैं जिनके औ संपूर्ण लोकोंमें गानकीगईहै कीर्त्तिजिनकी औ संपूर्ण मनुष्योंके वृन्दके आनंदोंकासमूह है मूर्त्तिस्वरूप जिनका औ नित्य सदा

रहतीहै श्री शोभा लक्ष्मी जिनकी औ बिकार रहितहैं औ निरवधि अवधिर-हितहै विभव ऐश्वर्य जिनका अर्थात् और देवोंके ऐश्वर्य कीतौ अवधिहै कि इतने काल तकरहै और परमेश्वरका ऐश्वर्य अवधि रहितहै औ सदाही रहता है औसदामाया का निरास खंडन हुआहै जिससे अर्थात् जिसके आगे माया सदा तिरस्कृतहो लज्जित रहतीहै औ मायाके कार्यको अनुसरण कररहाहै अर्थात् उसीके सत्ता प्रकाशसे माया सृष्टि आदि कार्य करती है ऐसे जो श्रीराम चन्द्र सो यद्यपि सबके ईश्वरभी हैं तौभी अयोध्यामें सदा मनुजके सदृश सीता सहित प्रकाश करतेहैं यह बालकाण्डके अन्तमें वस्तुनिर्देशरूप मंगल सूचित कियागया ५७॥

इत्यध्यात्मरामायणेबालकाण्डेटीकायांसप्तमः सर्गः॥ ७॥
समाप्तोयं बालकाण्डः॥ १॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ अध्यात्मरामायण ॥

अयोध्याकाण्ड ॥

भाषाटीकासहित ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ एकदासुखमासीनंरामंस्वांतःपुराजिरे ॥ सर्वाभरणसंपन्नंरत्नसिंहासनेस्थितम् १ नीलोत्पलदलश्यामंकौस्तुभामुक्तकंधरम् ॥ सीतयारत्नदण्डेनचामरेणाथवीजितम् २ विनोदयंतंतांबूलचर्वणादिभिरादरात् ॥ नारदोऽवतरद्द्रष्टुमम्बराद्यत्रराघवः ३ शुद्धस्फटिकसंकाशःशरच्चन्द्रइवामलः ॥ अतर्कितमुपायातोनारदोदिव्यदर्शनः ४ तंदृष्ट्वासहसोत्थायरामःप्रीत्याकृतांजलिः ॥ ननामशिरसाभूमौसीतयासहभक्तिमान् ५ उवाच नारदंरामः प्रीत्या परमयायुतः ॥ संसारिणांमुनिश्रेष्ठ दुर्लभंतवदर्शनम् ६ अस्माकंविषयासक्त चेतसांनितरांमुने ॥ अवाप्तम्मेपूर्वजन्म कृतपुण्य महोदयैः ७ ॥

दोहा। बिधिसुत सुरहित भूमिहित आये रघुपतिपास ॥
मुनि संशय हर आदिमें नियत कियोबनवास १
कारण तनु सीतासहित सुमिरिराम सुखधाम॥
करौं अयोध्याकाण्ड की नरभाषा अभिराम २
केकयसुता निमित्त करि कीन्हचहत सुरकाज ॥
सो प्रभु मोरे हिय बसौ सुरनर मुनि शिरताज ३

यहां बालकाण्डके अन्त में सीता सहित श्रीराचन्द्रजी अयोध्यामें मनुष्य की नाईं विहार करतेहुये प्रकाशमान होरहेहैं यह वर्णन कर आये हैं सो अब अयोध्याकाण्ड में उसको विस्तारपूर्वक वर्णन करनेको श्रीमहादेवजी पार्वती से कहतेहुये आदिमें श्रीरामस्मरणरूप मंगलकरते हैं हे पार्वती एकसमय में अपने महलमें रत्नजटित सिंहासन के ऊपर सुखपूर्वक स्थित औ आभूषणों करके भूषित १ और नीलकमलके तुल्य श्यामवर्ण औ कौस्तुभमणिको कण्ठमें धारणकिये औ ताम्बूलचर्वणादिकों करके क्रीडाकरतेहुये औरत्न

का दण्डजिसमें ऐसा चमर सीताजी जिनकेऊपर डुलारही हैं २ ऐसेरामचंद्र जी के दर्शन करनेको नारदजी आकाशसे उतरतेहुये ३ कैसेनारदजी हैं कि शुद्ध जो स्फटिक मणि तिसके तुल्यहै स्वरूप जिनका और शरद्ऋतुके चंद्रमा के तुल्य निर्मलहैं औ दिव्यहै दर्शन जिनका औ अकस्मातुही आके प्राप्तहुये हैं ४ ऐसेनारदजीको आते देखके सीतासहित श्रीरामचंद्रजी शीघ्रही उठि हाथजोड़के बड़ी भक्तिसे नारदको प्रणाम करते हुये ५ और परम प्रीतियुक्त होके नारदसे बोले कि हेमुनिश्रेष्ठ संसारी पुरुषोंको आपकादर्शन दुर्लभहै ६ औ हेमुने विषयमें आसक्त है चित्त जिनका ऐसे जो हमलोग हैं तिनको निरन्तर आपका दर्शन दुर्लभ है तौभी पूर्वजन्म के किये पुण्यों से आपका दर्शन प्राप्तहुआ ७॥

संसारिणाऽपिहिमुनेलभ्यतेसत्समागमः॥ अतस्त्वद्दर्शनादेवकृतार्थोऽस्मिमुनीश्वर ८ किंकार्य्यंतेमयाकार्य्यंब्रूहितत्करवाणिभो॥ अथ तन्नारदोऽप्याहराघवंभक्तवत्सलम् ९ किंमोहयसिमांरामवाक्यैर्लोकानुसारिभिः॥ संसार्यहमितिप्रोक्तंसत्यमेतत्त्वयाविभो १० जगतामादिभूतायासामायागृहिणीतव॥ त्वत्सन्निकर्षाज्जायन्तेतस्यांब्रह्मादयःप्रजाः ११ त्वदाश्रयातदाभाति मायायात्रिगुणात्मिका॥ सूतेऽजस्रंशुक्लकृष्णलोहिताःसर्वदाप्रजाः १२ लोकत्रयमहागेहेगृहस्थस्त्वमुदाहृतः॥ त्वंविष्णुर्जानकीलक्ष्मीः शिवस्त्वंजानकीशिवा १३ ब्रह्मात्वंजानकीवाणीसूर्यस्त्वंजानकीप्रभा॥ भवान्शशांकः सीतातुरोहिणीशुभलक्षणा १४॥

क्योंकि संसारी मनुष्योंको महात्माओंका समागम पुण्य समूहोंसेहीप्राप्त होवैहै इससे हेमुनीश्वर आपके दर्शनहीसे मैं कृतार्थहुआ ८ अबमैं आपका क्या कार्य करौं सो कहिये अब इसके अनन्तर नारदजीभी भक्तवत्सल जो श्रीरामजीहैं तिनसे कहतेहुये ९ हे राम जैसे कोई लौकिक मनुष्यकहै तैसे वचनोंसे क्यामोह कराहेहौ अथवा हेविभो जोआपने अपनाको संसारीकहा सोभी सत्यहै १० क्योंकि सबजगत्की कारणभूतजो मायाहै सो आपकी घर वालीहै औआपके समीप होनेसे उसमायामें ब्रह्माआदि सबप्रजा उत्पन्न होती हैं ११ जो त्रिगुणात्मिका माया आपके आश्रयसे प्रकाशमान हुई शुक्ल कृष्ण लोहित इसभेदसे तीनप्रकारकीप्रजा सदा उत्पन्न कियाकरती है इस का आशय यहहै किमाया जड़है इससेस्वतन्त्रतौ जगत्को उत्पन्न कर नहीं

शक्तीहै परमात्माके समीप होनेसे चुंवक लोहकीतरह उत्पन्न करनेको समर्थ होतीहै अर्थात् जगतूरूपकरिकै परिणामको प्राप्तहोतीहै सोवह सत्व रज तम इसभेदसे त्रिगुणमयीहै तिसमें सत्वगुणका शुक्लरूपहै औ रजोगुणका रक्तरूप अर्थात् विषयमें प्रीतिकराना औतमोगुण का कृष्ण कालारूप अर्थात् बुद्धिको आवरणकर अन्धकारकी नाईं आत्माका अप्रकाश कराना औसत्वगुणका शुक्ल रूप कहिआयेहैं सोयहां शुक्लरूपकरिके शुद्धऔप्रकाशरूप जानना इसीआशय से वेदमें भी अजाशब्द करिकै प्रकृति का शुक्ल रक्त कृष्ण रूप वर्णन कियाहै इस प्रकार यह तीनरूपकी प्रकृति परमात्माकी सन्निधिसे सत्वाप्रकाश धर्म युक्तहो अपने रूपके समान शुक्लरक्त कृष्णभेदसे तीन प्रकारकी प्रजाउत्पन्न करतीहै तहां शुक्लरूप प्रजादेवगण आदि ऋषि मुनि त्रैकालिक ज्ञान करिके प्रकाशमान औ रक्तरूप प्रजा मनुष्यादिक जो धनोपार्जनादि कर्मों में प्रीति कररहे हैं औ कृष्णवर्ण पशु वृक्ष सर्प आदि जो कि तमोगुणसे आच्छादितहो अच्छा बुराकुछनहीं जानसकतेहैं तिसमेंभी सत्व रज तम इन तीनोंगुणोंके परस्पर मिलनेसे और कमती बढ़तीहोने से लाखों करोड़ों तरहकी प्रजा होती हुई जैसे मनुष्योंमेंभी तीनिप्रकारके भेद दिखलाई पड़तेहैं कोई मनुष्य सत्व गुणके अधिक होनेसे विद्या आदि गुणयुक्त देवतुल्य हैं कोई रजोगुण के अधिकहोनेसे रात्रि दिवस व्यापारमें आसक्तहैं कोई तमोगुण के अधिकहोने से पशवादिकों के तुल्य धर्माधर्म हितअहित कुछनहीं जानसक्ते हैं इसी प्रकारसब देवादि सृष्टि मेंभी भेद जानना १२ सो नारदजी कहते हैं हे राम सब लोक तुम्हाराही गृहहै ऐसेभारी आपगृहस्थहौ और आप जब विष्णुरूप हैं तबसीता लक्ष्मी रूपहैं औ आप जो शिवरूपहौ तो सीता पार्वती हैं १३ औ आपब्रह्मा रूपहैं तौ सीता सरस्वतीहैं औ आप सूर्य रूपहैं तौ सीता प्रभारूपहैं औ आप चन्द्रमाहैं तौ सीता सौभाग्यादि गुणयुक्त रोहिणी हैं १४ ॥

शक्रस्त्वमेवपौलोमीसीतास्वाहानलोभवान् ॥ यमस्त्वंकालरूपश्चसीतासंयमिनीप्रभो १५ निर्ऋतिस्त्वंजगन्नाथतामसीजानकी शुभा ॥ रामत्वमेववरुणोभार्गवीजानकीशुभा १६ वायुस्त्वंरामसीतातुसदागतिरितीरिता ॥ कुबेरस्त्वंरामसीतासर्वसंपत्प्रकीर्त्तिता १७ रुद्राणीजानकीप्रोक्तारुद्रस्त्वंलोकनाशकृत् ॥ लोकेस्त्रीवाचकंयावत्तत्सर्वंजानकीशुभा १८ पुन्नामवाचकंयावत्तत्सर्वंत्वंहिराघव ॥ तस्माल्लोकत्रयेदेवयुवाभ्यांनास्तिकिंचन १९ त्वदाभासोदिताज्ञानमव्याकृतमितीर्यते ॥ तस्मान्महांस्ततः सूत्रंलिंगंसर्वात्मकंततः २०

अहंकारश्चबुद्धिश्च पंचप्राणेन्द्रियाणिच ॥ लिंगमित्युच्यतेप्राज्ञैर्जन्मसृत्युसुखादिमत् २१ ॥

औ आपइंद्रहैं तौ सीताइन्द्राणीहैं औ आप अग्निहैं तौ सीतास्वाहारूपहैं औ आप यमराज रूपहौ तौ सीता संयमिनीहैं १५ औ आप निर्ऋति देवहौ तौ सीता तामसी हैं औ हेराम आपवरुणहौ तौ सीताभार्गवी हैं १६ औ आप पवनहैं तौ सीतासदागतिहैं औ हेराम आपकुबेरहैं तौ सीतासर्व सम्पत् रूपहैं १७ औ हेराम आप सबके संहार कर्त्ता रुद्रहैं तौ सीतारुद्राणी रूपहैं औ हेराम कहां तक कहौं लोकमें जितने स्त्री वाचकशब्दहैं तिनका अर्थ सीताहीहै १८ और जितने पुरुषवाचक शब्दहैं तिनसबोंके अर्थरूप आपही हैं तिससे हेराम तीनों लोक में ऐसीकोई वस्तु नहीं जो आप दोनोंके बिनाहोवै १९ औ हे राम आपके आभासरूप करिकै कहा जो अज्ञान सो अव्याकृत कहाताहै तिससे महत्त्व उत्पन्नहुआ तिससे सूत्रात्मा उत्पन्न हुआ तिससे लिंगशरीर उत्पन्नहुआ जोकि सब स्थूलशरीरोंमें व्यापकहोरहाहै २० औ अहंकार औ बुद्धि औ पांचप्राण औ दश इन्द्रिय इनके समुदाय को लिंगशरीर कहते हैं जो जन्म मृत्यु सुखादि धर्मों करिकै युक्त है २१ ॥

सएवजीवसंज्ञश्चलोकेभातिजगन्मयः ॥ अवाच्यानाद्यविद्यैवकारणोपाधिरुच्यते २२ स्थूलंसूक्ष्मंकारणाख्यसुपाधित्रितयंचितेः ॥ एतैर्विशिष्टोजीवःस्याद्वियुक्तःपरमेश्वरः २३ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्याख्यासंसृतिर्याप्रवर्त्तते ॥ तस्याविलक्षणःसाक्षीचिन्मात्रस्त्वंरघूत्तम २४ त्वत्तएवजगज्जातंत्वयिसर्वंप्रतिष्ठितम् ॥ त्वय्येवलीयतेकृत्स्नंतस्मात्वंसर्वकारणम् २५ रज्जावहिमिवात्मानंजीवंज्ञात्वाभयंभवेत् ॥ परात्माऽहमितिज्ञात्वा भयदुःखैर्विमुच्यते २६ चिन्मात्रज्योतिषासर्वाःसर्वदेहेषुबुद्धयः ॥ त्वयायस्मात्प्रकाश्यंतेसर्वस्यात्माततोभवान् २७ अज्ञानान्न्यस्यतेसर्वं त्वयिरज्जौभुजंगवत् ॥ त्वज्ज्ञानाल्लीयतेसर्वं तस्माज्ज्ञानंसदाभ्यसेत् २८ ॥

उसीकोलोकमें जीव कहतेहैं औ वह जगन्मयहै सबमें रहनेवालाहै इसका आशय यहहै कि यह सत्रह तत्त्वका लिंग शरीर जीवकी उपाधिहै अर्थात् इसमें अभिमानकरनेवाला जो चैतन्य वही जीवहै इसीसे अभिमानके त्याग दशामें तत्त्वमस्यादि महावाक्यों करिकै बोधित ब्रह्मभावको प्राप्त होताहै और लोकमें तौ लक्षणाकरिकै लिंगशरीरमेंभी जीवशब्दका प्रयोग देखतेहैं इसीसे

महाभारत में ऐसाकहा कि यमराज सत्यवान्के देहसे अंगुष्ठमात्र पुरुषकोनि-
कालके खैंचते हुये ॥ न कहौ प्रकृति से परे शुद्धस्वरूप जीवको लिंगशरीर में
अभिमान क्योंहुआ इससे नारदजी कहते हैं हेराम अनिर्बचनीय जो कहने में
न आसकै ऐसी जो अनादि अविद्यासो इसजीवकी कारण उपाधि कहलाती
है अर्थात् अभिमान में विद्याही कारणहै २२ हे राम इस प्रकार स्थूल सूक्ष्म
कारण जे तीन उपाधि चैतन्यकीहैं इनतीन उपाधियों करिकै युक्तजो चिदंश
सो जीव कहा जाताहै औ इन उपाधियों करिकै रहित होताहै तौ परमेश्वर
कहलाताहै २३ औ हेराम जाग्रत्स्वप्न सुषप्तिभेद करिकै तीनप्रकार का संसार
प्रवृत्त होरहाहै इससे विलक्षण साक्षी चैतन्य रूप आपहैं २४ औ हेराम यह
संपूर्ण जगत् आपहीसे उत्पन्नहुआहै औ आपही में स्थित होरहाहैऔ आपही
में लयको प्राप्तहोताहै इससे आपसबके कारणहौ २५ औ हे रामरज्जुमें स-
र्पकी नाईं जीवरूप लिंगशरीरहीको आत्मामानिकरिकै अनेक प्रकारकी भय
को प्राप्तहोताहै औ जब विवेक युक्त बुद्धि करिकै परमात्माही मैं हौं येजानता
है तो संसारके दुःखोंसे छूटजाताहै २६ औ हे राम चिन्मात्र के प्रकाश क-
रिकै सब प्राणियों की बुद्धिवृत्तियां जिस कारण से आपही करिकै प्रकाशित
की जाती हैं इससे सबके आत्मा आपही हैं २७ और अज्ञानते रज्जुके बिषे
सर्पकी नाईं तुम्हारे बिषे सब जगत् आरोपण किया जाता है और आपके
यथार्थ ज्ञानसे लीन होजाताहै तिससे सब कालमें ज्ञानका अभ्यास करै २८ ॥

त्वत्पादभक्तियुक्तानांविज्ञानंभवतिक्रमात् ॥ तस्मात्त्वद्भक्तियुक्ताये
मुक्तिभाजस्तएवहि २९ अहंत्वद्भक्तभक्तानांतद्भक्तानांचकिंकरः ॥ अ
तोमामनुगृह्णीष्वमोहयस्वनमांप्रभो ३० त्वन्नाभिकमलोत्पन्नोब्रह्मा
मेजनकःप्रभो ॥ अतस्तवाहंपौत्रोस्मिभक्तंमांपाहिराघव ३१ इत्यु
क्त्वाबहुशोनत्वास्वानंदाश्रुपरिप्लुतः ॥ उवाचवचनंरामब्रह्मणानोदि
तोऽस्म्यहम् ३२ रावणस्यवधार्थायजातोसिरघुसत्तम ॥ इदानीं
राज्यरक्षार्थंपितात्वामभिषेक्ष्यति ३३ यदिराज्याभिसंसक्तोरावणंनह
निष्यसि ॥ प्रतिज्ञातेकृतारामभूभारहरणायवै ३४ तत्सत्यंकुरुराजेन्द्र
सत्यसंधस्त्वमेवहि ॥ श्रुत्वैतद्गदितंरामोनारदंप्राहसस्मितम् ३५ ॥

और हे राम आपके चरणारविंद की भक्तियुक्त जो पुरुषहैं तिनको क्रमसे
आत्मसाक्षात्कार होताहै तिससे जे आपकी भक्ति युक्त पुरुष हैं तेई मुक्ति-
भागी होतेहैं २९ औ मैं तो आपके भक्तों के जो भक्तहैं तिनका किंकरहौं इस
से हेप्रभो मेरे ऊपर अनुग्रह करिये ऐसा बचन न कहिये जिसमें मोह उत्प-

सहोय ३० औ हे प्रभो मेरापिता जो ब्रह्माहै सो आपके नाभिकमल से उ-त्पन्न हुआ है इससे मैं आपका पौत्रहौं और भक्तहौं इससे रक्षाकरिये ३१ आनंद के अश्रुपात जिनके होरहेहैं ऐसे जो नारदजी सो ऐसा कहके औ बहुत प्रणाम करिकै यह बचन बोले कि हे भगवन् ब्रह्माका भेजा हुआ मैं आपके पास प्राप्तहुआहौं ३२ और आपरावण के बधके अर्थ प्रकटहुयेहौ और हे रघूत्तम इस समय में दशरथ राज्यकी रक्षाके लिये आपका अभिषेक करैगा ३३ सो जो कदाचित् राज्यमें आसक्तहोके रावणको न मारौगे तो आपने पृथ्वी के भारके दूरकरने की जो प्रतिज्ञाकीहै सो मिथ्या होजायगी ३४ इससे हे राजेन्द्र उस प्रतिज्ञाको सत्यकीजिये क्योंकि आपही लोकमें सत्यसंध विख्यातहौ ३५॥

शृणुनारदमेकिंचिद्विद्यतेऽविदितंक्वचित्॥ प्रतिज्ञातंचयत्पूर्वंकरिष्येतन्नसंशयः ३६ किंतुकालानुरोधेनतत्तत्प्रारब्धसंक्षयात्। हरिष्येसर्वभूभारंक्रमेणासुरमण्डलम् ३७ रावणस्यविनाशार्थंश्वोगन्तादंडकाननम्॥ चतुर्दशसमास्तत्रह्युषित्वामुनिवेषधृक् ३८ सीतामिषेणतंदुष्टंसकुलंनाशयाम्यहम्॥ एवंरामेप्रतिज्ञातेनारदःप्रमुमोदह ३९ प्रदक्षिणत्रयंकृत्वादंडवत्प्रणिपत्यतम्॥ अनुज्ञातश्चरामेणययौदेवगतिंमुनिः ४० संवादंपठतिशृणोतिसंस्मरेद्वा योनित्यंमुनिवररामयोःसभक्त्या॥ संप्राप्नोत्यमरसुदुर्लभंविमोक्षंकैवल्यंविरतिपुरःसरंक्रमेण ४१॥
इत्यध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेऽयोध्याकाण्डेप्रथमःसर्गः १॥

ऐसा वचन नारदजीका सुनिकै श्रीरामचन्द्रजी मंदमुसक्यान करिकै नारद से बोले कि हे नारद मुझको किसी समयमें कुछ अविदित नहीं है अर्थात् न जानताहोउं सो नहीं है ३६ और जो मैंने प्रथम प्रतिज्ञाकी है उसको सत्य करूंगा इसमेंकुछ संशय नहीं है परन्तु समयके अनुरोधकरिकै तौनतौन जीवों के प्रारब्ध भोगके अनन्तर ३७ असुरोंका समूहरूप जो पृथिवीका भारहै तिसको हरौंगा और रावणके बधके अर्थ दण्डक बनको प्रातःकाल जाऊँगा ३८ हे नारद उस दण्डकारण्य में मुनिका वेष धारण करिकै चौदहवर्ष बासकरिकै सीताके मिसकरिकै कुल सहित इसदुष्ट रावणकानाशकरोंगा ३९ ऐसी जब रामचन्द्रने प्रतिज्ञाकी तब नारदजी बड़े हर्षको प्राप्त होतेहुये और रामचन्द्रजी की तीन प्रदक्षिणा करिकै और दण्डवत्प्रणाम करिकै रामचन्द्रकी आज्ञालेकै आकाशमार्ग करिकै नारदजी जातेहुये ४० जो कोई पुरुष यह नारद रामके

संवादको भक्तिकरिके नित्य पढ़ेगा अथवा श्रवण करेगा सो संसारके भोगों से विरक्त होके देवदुर्लभ मोक्षको प्राप्त होगा ४१ ॥

इत्यध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेऽयोध्याकाण्डे
भाषाटीकायांप्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ अथराजादशरथः कदाचिद्रहसिस्थितः ॥ वशिष्ठंस्वकुलाचार्य्यमाहूयेदमभाषत १ भगवन्रामखिलाःप्रशंसंतिमुहुर्मुहुः ॥ पौराश्चनैगमावृद्धामंत्रिणश्चविशेषतः २ ततः सर्वगुणोपेतंरामंराजीवलोचनम्॥ज्येष्ठंराज्येऽभिषेक्ष्यामिवृद्धोऽहंमुनिपुंगव ३ भरतोमातुलंद्रष्टुंगतःशत्रुघ्नसंयुतः ॥ अभिषेक्ष्येश्वएवाशुभवांस्तच्चानुमोदताम् ४ संभाराः संभ्रियंतांचगच्छमंत्रयराघवम् ॥ उच्छ्रीयंतांपताकाश्चनानावर्णाःसमंततः ५ तोरणानिविचित्राणिस्वर्णमुक्तामयानिवै ॥ आहूयमंत्रिणंराजासुमन्त्रंमंत्रिसत्तमम् ६ आज्ञापयातियद्यत्त्वांमुनिस्तत्तत्समानय॥यौवराज्येऽभिषेक्ष्यामिश्वोभूतेरघुनन्दनम् ७

दोहा । सर्गदूसरे मंथरा सुनि रघुवर अभिषेक ॥
केकयजाकी मतिकुमति करीआय अविवेक १ ॥

अब महादेवजी पार्वतीजी से कहते हैं हे पार्वति इसके अनन्तर किसी समयमें एकान्तदेश में बैठेहुये जो राजादशरथ सो आचार्य वशिष्ठजीको बुलाके यह कहतेहुये कि १ हे भगवन् सब पुरवासी लोग और बणिग्जन और वृद्ध मन्त्री लोग ये सब रामकी प्रशंसा करते हैं अर्थात् श्रीरामके निर्मल चरित्रोंसे सब प्रसन्नहैं २ हे मुनिश्रेष्ठ तिसकारण से सम्पूर्णगुणों करिकै युक्त जो कमल नेत्र ज्येष्ठपुत्र श्रीरामचन्द्र तिनका राज्याभिषेक करौंगा क्योंकि जिससे मैं वृद्ध हौं अर्थात् मैं अपने नेत्रों से रामको राज्यसिंहासन पै स्थित देखौं यह अभिलाषाहै ३ और शत्रुघ्नसहित भरत अपने मामाके देखने को ननसारको गये हैं इससे प्रातःकालही रामका अभिषेककरौंगा सो आपभी इसका अनुमोदनकरैं अर्थात् जो मैंने विचाराहै तिसमें आपकी भी सम्मति होना चाहिये ४ औ जितनी अभिषेक की सामग्री हैं तिनको इकट्ठा करवाइये और रामजीसे जाके सलाहकीजिये और नानावर्णोंकी झण्डियां खड़ी करवाइये ५ औ सुवर्ण औ मोतियोंसे बनीहुई बन्दनवारी चारों तरफ़ बँधवाना चाहिये फिर तिसके उपरान्त राजा दशरथ मंत्रियों में श्रेष्ठ जो सुमंत्रनाम मंत्री को बुलाइके यह आज्ञा देतेहुये ६ किमुनिवशिष्ठ जो जो बस्तुकी आज्ञाकरैं वहवस्तु सबल्याकरदेवो क्योंकिप्रातःकाल होतेही हम रामका अभिषेक करैंगे ७ ॥

तथेतिहर्षात्समुनिंकिंकरोमीत्यभाषत ॥ तमुवाचमहातेजावशि
ष्ठोज्ञानिनांवरः ८ श्वःप्रभातेमध्यकक्षेकन्यकाःस्वर्णभूषिताः ॥ तिष्ठं
तुषोडशगजःस्वर्णरत्नादिभूषितः ९ चतुर्दन्तःसमायातुऐरावतकुलो
द्भवः ॥ नानातीर्थोदकैःपूर्णाःस्वर्णकुम्भाःसहस्रशः १० स्थाप्यंतांनव
वैय्याघ्रचर्माणित्रीणिचानय । श्वेतछत्रंरत्नदंडंमुक्तामणिविराजितम्
११ दिव्यमाल्यानिवस्त्राणिदिव्यान्याभरणानिच ॥ मुनयःसत्कृता
स्तत्रतिष्ठंतुकुशपाणयः १२ नर्त्तक्योवारमुख्याश्चगायकावेणुकास्त
था ॥ नानावादित्रकुशलावादयंतुनृपांगणे १३ हस्त्यश्वरथपादाता
बहिस्तिष्ठंतुसायुधाः ॥ नगरेयानितिष्ठंतिदेवतायतनानिच १४ ॥

तब वह सुमंत्रमंत्री बडेहर्षसे हमतैसाही करैंगे ऐसाराजासेकहिके फिर
वशिष्ठजीकेपास जाके हेभगवन् क्याहमकरैं सोआज्ञाकरिये यहकहताहुआ
तबज्ञानियोंमें श्रेष्ठ बशिष्ठजी सुमंत्रसे कहतेहुये ८ कि हेसुमंत्र कल्हप्रातःकाल
बीचकी डिउढीपर सुवर्णके आभूषणसेभूषित सोरहकन्यास्थितरहैं औरसुवर्ण
करिकै भूषितऐरावतहाथी के कुलमें उत्पन्नहुआ चारदांतकाहाथी एकस्थित
रहैऔरअनेकतीर्थोंके जलसे भरेहुए सोनेकेहजारोंघट तैयाररहैं ९ । १० और
नवीन तीनव्याघ्रकेचर्म तैयाररहैं औररत्नदण्ड जिसमेंहोयऔ मोतियोंकी
लडीजिसमें लटकतीहोयँ औमणियोंकरकेशोभित ऐसाएक श्वेतछत्रउपस्थित
रहै ११ और दिव्यपुष्प औदिव्यबस्त्र औदिव्यआभूषण उपस्थितरहैं औरकुश
जिनके हाथमें होयँ औ सत्कार कियेगये ऐसे मुनि लोग स्थितरहैं १२ औ नृ-
त्यकरनेवाली बहुतसी वेश्यानृत्य करनेको तैयार रहैं और गानेवाले और बेणु
बजानेवाले औ नानाप्रकार के बाजे बजाने में कुशल राजाके आँगनमें बाजे
बजावैं १३ और हाथियों पै चढ़े योधा औ घोड़ों पै सवार औ रथोंके ऊपर स्थित
बीर औ प्यादे ये सब अपने अपने शस्त्रोंको ग्रहण करेहुये बाहर स्थितरहैं१४॥

तेषुप्रवर्त्ततांपूजानानाबलिभिरावृता ॥ राजानःशीघ्रमायांतुना
नोपायनपाणयः १५ इत्यादिश्यमुनिःश्रीमान्सुमंत्रंनृपमंत्रिणम् ॥
स्वयंजगामभवनंराघवस्यातिशोभनम् १६ रथमारुह्यभगवान्वशि
ष्ठोमुनिसत्तमः ॥ त्रीणिकक्षाण्यतिक्रम्यरथात्क्षितिमवातरत् १७ अं
तःप्रविश्यभवनंस्वाचार्यत्वादवारितः ॥ गुरुमागतमाज्ञायरामस्तू
र्णंकृतांजलिः १८ प्रत्युद्गम्यनमस्कृत्यदंडवद्भक्तिसंयुतः ॥ स्वर्णपात्रे
णपानीयमानिनायाशुजानकी १९ रत्नासनेसमावेश्यपादौप्रक्षाल्यभ

क्तितः॥ तदापःशिरसाधृत्वासीतयासहराघवः२०धन्योऽस्मीत्यब्रवी द्रामस्तवपादांबुधारणात्॥श्रीरामेणैवमुक्तस्तुप्रहसन्मुनिरब्रवीत्२१

और अयोध्या नगरी में जितने देवताओं के मंदिर हैं तिन सब मंदिरों में उन मूर्त्तियों का पुष्पधूप वलि आदि सामग्री करिकै पूजन होय और नाना देशवासी राजा लोग भेंट हाथोंमें लिये हुये शीघ्रही आवैं १५ इसप्रकार वशिष्ठ मुनि सुमन्त्रको आज्ञादेकै आप रामचन्द्रका शोभायमान जो मंदिरहै तिसको जातेहुये १६ रथके ऊपर चढ़े जो भगवान् बशिष्ठ मुनि सो रामचन्द्रजी की तीन ढिउढ़ी नांघकर चौथी डिउढ़ी पररथसे उतरते हुये १७ फिर वशिष्ठजी रामचन्द्रजीके अन्तःपुरमें प्रवेश करतेहुये और इक्ष्वाकुबंशके आचार्य हैं इस से किसी ने न रोका फिर रामचन्द्र वशिष्ठजीका आगमन जानके शीघ्रही हाथ जोड़ेहुये १८ अगाड़ी से मिलके बड़ीभक्ति से दण्डवत्प्रणाम करिके फिर सुवर्ण के पात्रसे सीताजी के लायेहुये जल से १९ मुनिको रत्नकी चौकी पै बिठालकर अपने हाथ से चरण धोके उसजलको सीता सहित अपने शिरपै धारणकरि २० हे मुने आपके चरण जलके धारण करनेसे मैं धन्यहौं ऐसावचन कहतेहुये ऐसे ब्रह्मण्यदेव श्रीरामका वचन सुनि हँसकरिके वशिष्ठ मुनिबोलते हुये २१ ॥

त्वत्पादसलिलंधृत्वाधन्योऽभूद्गिरिजापतिः ॥ ब्रह्मापिमत्पितातेहिपादतीर्थहताशुभः २२ इदानींभाषसेयत्त्वंलोकानामुपदेशकृत् ॥ जानामित्वांपरात्मानं लक्ष्म्यासंजातमीश्वरम् २३ देवकार्य्यार्थसिद्ध्यर्थंभक्तानांभक्तिसिद्धये ॥ रावणस्यबधार्थायजातंजानामिराघव २४ तथापिदेवकार्य्यार्थंगुह्यंनोद्घाटयाम्यहम्॥ यथात्वंमाययासर्वं करोषिरघुनन्दन २५ तथैवानुविधास्येहंशिष्यस्त्वंगुरुरप्यहम् ॥ गुरुर्गुरूणांत्वंदेवपितॄणांत्वंपितामहः २६ अंतर्यामीजगद्यात्रावाहकस्त्वमगोचरः॥ शुद्धसत्वमयंदेहंधृत्वास्वाधीनसंभवम् २७ मनुष्यइवलोकेस्मिन्भासित्वंयोगमायया ॥ पौरोहित्यमहंजानेविगर्ह्यंदुष्यजीवनम् २८ ॥

कि हेराम आपकोपादसलिल जोगंगा तिसको शिरपै धारणकरिकै गिरिजापति जो महादेव सो धन्य होतेहुये और तैसेही मेरे पिता जो ब्रह्माहैं सो भी आपके चरण जल स्पर्शही से सब पापोंको नाश करतेहुये २२ सोई आप इस समय में कहते हौ कि आपके चरण जलसे मैं धन्यहुआ इससे विदित हुआ

कि यह वचन केवल लोक शिक्षार्थही है और यह मैं जानताहूं कि आप प्रकृति से परे परमात्मा ईश्वर लक्ष्मी सहित प्रकटहुये हौ २३ देवतोंके कार्यकी सिद्धिके अर्थ और भक्तोंको भक्तिका फलदेने के अर्थ औ रावणके बधके अर्थ हे राघव आप प्रकटहुयेहो यह मैं जानताहूं २४ तौ भी देवतोंके कार्य के अर्थ यह गुप्त रहस्य मैं प्रकटनहीं करता हौं औ हे रघुनन्दन जैसे आप माया करके सब कार्य करतेहौ २५ तैसे मैं भी आपके अनुकूलही सब विधानकरौंगा इसीसे व्यवहार दृष्टिमें आप शिष्यहैं मैं गुरुहौं औ हे देव वास्तवमें तौ आप गुरुओं के भी गुरुहौ औ पितरोंके भी पितामह हौ अर्थात् दादे हौ २६ और जगत् रूपी यन्त्रके निर्वाहक अर्थात् सब जगत् के कार्य्यके सिद्ध करनेवाले और किसी इन्द्रियके विषय नहीं होते ऐसे अन्तर्यामी आपहैं और अपने स्वाधीन शुद्ध सत्वमय देहको धारणकर २७ मनुष्यकी नाईं इस लोकमें प्रकाशमान होरहे हौ औ हे राम यह मैं जानतारहा कि पुरोहिताईका कर्म निंद्यहै औ शास्त्रसे भी यह आजीविका दोष युक्त है २८॥

इक्ष्वाकूणांकुलेरामःपरमात्माजनिष्यते॥ इतिज्ञातंमयापूर्वंब्रह्मणाकथितंपुरा २९ ततोहमाशयारामतवसंबन्धकांक्षया॥ अकार्षंगर्हितमपितवाचार्यत्वसिद्धये ३० ततोमनोरथोऽमेद्यफलितोरघुनन्दन॥ त्वदधीनामहामायासर्वलोकैकमोहिनी ३१ मांयथामोहयेन्नैवतथाकुरुरघूद्वह ॥ गुरुनिष्कृतिकामस्त्वंयदिदेह्येतदेवमे ३२ प्रसंगात्सर्वमप्युक्तन्नवाच्यंकुत्रचिन्मया ॥ राज्ञादशरथेनाहंप्रेषितोऽस्मिरघूद्वह ३३ त्वामामंत्रयितुंराज्येश्वोऽभिषेक्ष्यतिराघव ॥ अद्यत्वंसीतयासार्द्धमुपवासंयथाविधि ३४ कृत्वाशुचिर्भूमिशायीभवरामजितेंद्रियः ॥ गच्छामिराजसान्निध्यंत्वंतुप्रातर्गमिष्यसि ३५ ॥

तौ भी इक्ष्वाकुवंशमें साक्षात् परमात्मा राम रूपहोके प्रकटहोगा यह पहिले ब्रह्माका कहा हुआ जानतारहा २९ इससे हे राम तबसे बड़ी आशासे आपके संबन्धकी इच्छा करिकै निन्दित भी पौरोहित्य कर्म मैंने स्वीकार किया केवल आपके आचार्य्य कर्मके सिद्धके अर्थ ३० हे रघुनन्दन सो मेरा मनोरथ अब सिद्धहुआ औ हे राम सबलोकोंको मोहकरानेवाली जो मायाहै सो आपके आधीन होरही है ३१ सो हे रघूद्वह रघुवंशियों के उद्धार करनेवाले वह आपकी माया मुझको जैसे मोह न करावै तैसा करिये औ जो गुरु दक्षिणा आपको देनी है तौ यही गुरुदक्षिणा दीजिये ३२ परन्तु प्रसंगसे मैंने यह बात कही आपको यहभी रहस्य किसीसे नहीं कहना चाहिये औ हे रघूद्वह इ-

स समयमें तौ राजा दशरथके भेजे हुये हम आये हैं ३३ आपसे कुछ वार्ता कहनेको क्योंकि राजा दशरथ प्रातःकाल आपका राज्याभिषेक करेंगे इससे हे राघव आजकी रात्री आप सीता करके सहित विधि पूर्वक उपवास ३४ करके पवित्रहोकर भूमिमें शयनकर जितेन्द्रिय हूजिये अब मैं राजाके समीप जाताहौं औ आप प्रातःकाल जाइँगे ३५ ॥

इत्युक्त्वारथमारुह्य ययौराजगुरुर्द्रुतम् ॥ रामोऽपिलक्ष्मणंदृष्ट्वा प्रहसन्निदमब्रवीत् ३६ सौमित्रेयौवराज्येमेऽभिषेकोभविष्यति ॥ निमित्तमात्रमेवाहंकर्त्ताभोक्तात्वमेवहि ३७ ममत्वंहिबहिःप्राणोनात्र कार्याविचारणा ॥ ततोवशिष्ठेनयथाभाषितंतत्तथाकरोत् ३८ वशिष्ठोऽपिनृपंगत्वाकृतंसर्वंन्यवेदयत् ॥ वशिष्ठस्यपुरोराज्ञाह्युक्तंरामाभिषेचनम् ३९ यदातदैवनगरेश्रुत्वाकश्चित्पुमान्जगौ ॥ कौशल्यायै राममात्रेसुमित्रायैतथैवच ४० श्रुत्वातेहर्षसंपूर्णेददतुर्हारमुत्तमम् ॥ तस्मैततःप्रीतमनाःकौशल्यापुत्रवत्सला ४१ लक्ष्मींपर्यचरद्देवींरामस्यार्थप्रसिद्धये ॥ सत्यवादीदशरथः करोत्येवप्रतिश्रुतम् ४२ ॥

यह वचन कहि और रथपै चढ़िकै वशिष्ठजी शीघ्रही जातेहुये रामचन्द्रभी लक्ष्मणको देखिकै हँसिकै यह कहतेहुये ३६ कि हे लक्ष्मण प्रातःकाल के समय यौवराज्य पदवीमें पिता मेरा अभिषेक करेंगे सो निमित्त मात्र राज्यको करनेवाला तौ मैं होऊंगा और भोक्ता तौ तुम्हीं होउगे ३७ क्योंकि तुम बाहर के प्राण मेरे हौ इसमें किसीप्रकारका बिचार नहीं करनाहै तिसके अनंतर वशिष्ठजीने जैसी आज्ञाकी थी तैसेही उपवास आदि रामचन्द्रजी करते हुये ३८ अब वशिष्ठमुनि भी राजादशरथके पासजाके जो कुछ किया सो सब कहते हुये और जिस समय में वशिष्ठजीके आगे राजा दशरथने रामचन्द्रके अभिषेक की वार्ता कीथी उस समयमें कोई अयोध्याका पुरुष उसी वार्ताको सुनिकै कौशल्या औ सुमित्रासे कहताभया ३९ तब कौशल्याजी औ सुमित्राजी रामाभिषेकको सुनिकै आनन्दसे परिपूर्ण बड़ी प्रसन्नहोकै उस खबर सुनाने वालेको बड़ा श्रेष्ठ रत्नोंका हारदेतीहुई ४० । ४१ तिसके अनन्तर कौशल्या रानी रामचन्द्रके अर्थकी सिद्धिके लिये बड़े प्रेमसे लक्ष्मीजी का पूजन करती हुई औ कौशल्या यह बिचार उस समय में करती हुई कि राजादशरथ सत्यवादी हैं इससे तौ जो कुछ कहाहै सो अवश्य करेंगे ४२ ॥

कैकेयीवशगःकिंतुकामुकःकिंकरिष्यति ॥ इतिव्याकुलचित्तासादु

गाँदेवीमपूजयत् ४३ एतस्मिन्नंतरेदेवादेवींवाणीमचोदयन् ॥ गच्छ देविभुवोलोकमयोध्यायांप्रयत्नतः ४४ रामाभिषेकविघ्नार्थंयतस्व ब्रह्मवाक्यतः ॥ मंथरांप्रविशस्वादौकैकेयींचततःपरम् ४५ ततो विघ्नेसमुत्पन्नेपुनरेहिदिवंशुभे ॥ तथेत्युक्त्वातथाचक्रेप्रविवेशाथमंथ राम् ४६ सापिकुब्जात्रिवक्रातुप्रासादाग्रमथारुहत् ॥ नगरंपरितो दृष्ट्वासर्वतःसमलंकृतम् ४७ नानातोरणसंबाधंपताकाभिरलंकृत म्॥ सर्वोत्सवसमायुक्तंविस्मितापुनरागमत् ४८ धात्रींपप्रच्छमातः किंनगरंसमलंकृतम्॥नानोत्सवसमायुक्ताकौशल्याचातिहर्षिता४९॥

परन्तु जो अत्यंत कामीहो कैकेयी के बशीभूत होरहे हैं सो क्या करेंगे इस प्रकार व्याकुलहै चित्त जिनका ऐसी कौशल्या सो दुर्गा देवीको पूजतीहुई ४३ उसी समयमें सब देवता सरस्वती देवीको भेजतेभये औ यह कहतेहुये कि हे देवि तुम भूलोकमें अयोध्या नगरीको जावो ४४ और वहां जाके रामचन्द्र के अभिषेकके बिघ्नके अर्थ ब्रह्माकी आज्ञासे यत्न करौ औ हे देवि पहिले तौ मंथराकी बुद्धिमें प्रवेश करो औ फिर कैकेयीमें प्रवेश कीजिये ४५ हे देवि इस प्रकार रामके अभिषेकका बिघ्न करके फिर स्वर्ग को आवो तब सरस्वती ने कहा तैसेही होंगा यह देवतोंसे कहकरके अयोध्यामें आके प्रथम मंथरामें प्रवेश करतीहुई ४६ तब वह कुबड़ी जो मंथरा सो महलके ऊपर चढ़िके चारों तरफ से अलंकृत नगरको देखती जहां तहां बन्दनवारी बँध रही हैं ४७ औ झंडियों करके शोभित होरहाहै औ घरघर उत्सव होरहा है ऐसे नगरको देखके बड़ी विस्मित होके धाइसे पूछती हुई ४८ कि हे माता आज यह क्याहै जो अयोध्या नगरी सबउत्सव युक्त होरही है और नानाप्रकारके उत्सव कररही बड़े हर्ष युक्त कौशल्या मुख्य २ ब्राह्मणोंको नानाप्रकारके बस्त्रोंको देरही हैं ४९॥

ददातिविप्रमुख्येभ्योवस्त्राणिविविधानिच ॥ तामुवाचतदाधात्री रामचन्द्राभिषेचनम् ५० श्वोभविष्यतितेनाद्यसर्वतोऽलंकृतंपुरम् ॥ तच्छ्रुत्वात्वरितंगत्वाकैकेयीवाक्यमब्रवीत् ५१ पर्यंकस्थांविशालाक्षी मेकान्तेपर्यवस्थिताम् ॥ किंशेषेदुर्भगेमूढेमहद्भयमुपस्थितम् ५२ नजानीषेऽतिसौंदर्यमानिनीमत्तगामिनी ॥ ५३ रामस्यानुग्रहाद्राज्ञा श्वोऽभिषेकोभविष्यति ॥ तच्छ्रुत्वासहसोत्थायकैकेयीप्रियवादिनी ५४ तस्यैदिव्यंददौस्वर्णनूपुरंरत्नभूषितम् ॥ हर्षस्थानेकिमितिमेक

ध्यतेभयमागतम् ५५ भरतादधिकोरामःप्रियकृन्मेप्रियंवदः ॥ कौश ल्यांमांसमंपश्यन्सदाशुश्रूषतेहिमाम् ५६ ॥

सो आज यह कौनसा बड़ाभारी उत्सव है वह कहिये ऐसा मंथराका वचन सुनके धात्री कहनेलगी कि रामचन्द्रका राज्याभिषेक कल्ह होगा ५० इस कारण से अयोध्या नगरीमें सब जगह उत्सव होरहा है यह वचन मन्थरा सुनिकै शीघ्रही आ कैकेयी से कहती हुई ५१ और कैकेयी उस समयमें एकांत देशमें पलँगके ऊपर बैठीथी औ बिशालहैं नेत्र जिसके ऐसी कैकेयी से मंथरा कहनेलगी कि हे दुर्भगे हे मूढे हे कैकेयि तू बड़ी मूर्ख है जो पड़ी पड़ी पलँगपै सोइ रही है ५२ जो शिरके ऊपर बड़ी भारी भयप्राप्त हुईहै उसको नहीं जानती और तेरी मतवाली हाथीकीसी चालहै और अपने सौंदर्यको बहुतमान रही है ५३ और इसीसे यह नहींजानती है कि राजादशरथके अनुग्रहसे कलके दिन प्रातःकाल रामको राज्यका अभिषेक होगा यह बचन मंथराके सुनके कैकेयी शीघ्रही उठिकरके बड़े आनन्दसे ५४ प्रिय बचन सुनानेवाली मंथराको रत्न जटित सुवर्णका नूपुर देतीहुई और कहतीहुई कि हे मंथरे हर्षके कारणमें क्या तू भयको कहिरही है ५५ और भरतसे अधिक राम मेरेमें प्रीति करते हैं औ सदाप्रिय बचनही बोलते हैं और कौशल्या और मुझको सदा समानही देखते हैं औ नित्य मेरी शुश्रूषा करते हैं ५६ ॥

रामाद्भयंकिमापन्नंतवमूढेवदस्वमे ॥ तच्छ्रुत्वाविषसादाथकुब्जकार णावैरिणी ५७ शृणुमद्वचनंदेवियथार्थंतेमहद्भयम् ॥ त्वांतोषयन्सदा राजाप्रियवाक्यानिभाषते ५८ कामुकोऽतथ्यवादीचत्वांवाचापरितो षयन् ॥ पापंकरोतितस्याँवैराममातुःसुपुष्कलम् ५९ मनस्येतन्निधा यैवप्रेषयामासतेसुतम् ॥ भरतंमातुलकुलेप्रेषयामाससानुजम् ६० सुमित्रायाःसमीचीनंभविष्यतिनसंशयः ॥ लक्ष्मणोराममन्वेतिराज्यं सोऽनुभाविष्यति ६१ भरतोराघवस्याग्रेकिङ्करोवाभविष्यति ॥ विवा स्यतेवानगरात्प्राणैर्वाहाप्यतेऽचिरात् ६२ त्वंतुदासीवकौशल्यांनित्यं परिचरिष्यति ॥ ततोऽपिमरणंश्रेयोयत्सपत्न्याःपराभवः ६३ ॥

औ हे मूढे रामसे क्या भय प्राप्तहै सो बतलाउ ये कैकेयी के बचन सुनिकै सरस्वतीजीके कारणसे बैरिणी जो मन्थराहै सो बड़े क्लेशको प्राप्तहोतीहुई ५७ और यह कहतीभई कि हे देवि जिसकारण तुझको भय प्राप्तहै उसको सुनु राजा दशरथ केवल तेरे तोषके लिये अर्थात् जिसमें तेरी प्रसन्नता होय इसके

अर्थ तुझको सदा प्रिय वचन सुनाते हैं ५८ और कामी हैं इसीसे मिथ्या बोलनेवाले ऐसे जो राजाहैं सो तेरा तौ झूंठे प्रिय वचनोंसे परितोष करते हैं और कौशल्याका संपूर्ण कार्य सिद्ध करते हैं ५९ यहीबात मनसे बिचारिके तेरा पुत्र भरत तौ शत्रुघ्न सहित मामाके घर भेजदियाहै ६० और सुमित्राको भी इसमें अच्छा है क्योंकि सुमित्राका पुत्र लक्ष्मण रामका अनुगामी है इससे राज्य सुखको प्राप्तहोयगा ६१ और भरत रामके आगे सेवकहोके रहा अथवा नगरसे बाहर निकास दियाजायगा अथवा थोड़ेसे कालमें प्राणोंहीसे रहित होजायगा ६२ और तूतौ दासीके तुल्य कौशल्याकी नित्य शुश्रूषाकरा करैगी फिर जो सपत्नी अर्थात् सौति जो कौशल्या तिससे जो तिरस्कारहोगा उससे तौ फिर मरनाही अच्छाहै ६३ ॥

अतःशीघ्रंयतस्वाद्यभरतस्याऽभिषेचने॥ रामस्यबनवासार्थंवर्षाणिनवपञ्चच ६४ ततोरूढोऽभयेपुत्रःतवराज्ञिभविष्यति॥ उपायंते प्रवक्ष्यामिपूर्वमेवसुनिश्चितम् ६५ पुरादेवासुरेयुद्धेराजादशरथःस्वयम्॥ इन्द्रेणयाचितोधन्वीसहायार्थंमहारथः ६६ जगामसेनयासार्द्धंत्वयासहशुभानने ॥ युद्धंप्रकुर्वतस्तस्यराक्षसैःसहधन्विनः ६७ तदाक्षकीलोन्यपतच्छिन्नस्तस्यनवेदसः ॥ त्वंतुहस्तंसमावेश्यकीलरंध्रेतिधैर्यतः ६८ स्थितवत्यसितापांगीपतिप्राणपरीप्सया ॥ ततोहत्वाऽसुरान्सर्वान्ददर्शत्वामरिन्दमः ६९ आश्चर्यंपरमंलेभेत्वामालिंग्यमुदान्वितः॥ वृणीष्वयत्तेमनसिवाञ्छितंवरदोऽस्म्यहम् ७० ॥

इसलिये शीघ्रही अभी भरतके राज्याभिषेकमें यत्नकर और रामको जिसमें चौदह वर्षका बनवास होवै ऐसा यत्न शीघ्रही करनाचाहिये ६४ फिर जब चौदह वर्ष रामवनमें रहैंगे तौ भरतकी राज्यमें जड़ बँधजायगी अब उपाय तुझको बतलातीहौं जो पहिलेसे निश्चित होरहाहै ६५ प्रथम एक समय में राजा दशरथसे देवासुर संग्राममें इन्द्रने सहायके अर्थ प्रार्थनाकी तब राजादशरथ ६६ सेनासहित और तुझको भी संगलेके असुरोंके साथ युद्धकरनेको जातेहुये फिर जब राजा दशरथ रथमें बैठिकै धनुषबाण ग्रहणकर राक्षसों से युद्धकरनेलगे ६७ तब रथके पाहियेके छिद्रमें धुरेकी कील निकलगई और राजाने जानी नहीं तौ तू अत्यन्त धैर्यसे उस छिद्रमें ६८ अपना हाथ प्रवेशकरदेतीहुई औ हे कैकेयि पतिके प्राणोंकी रक्षाके लिये उस समयमें तू सावधान होतीहुई तब राजा दशरथ सब असुरोंको मारके तुझको देखके बड़े आश्चर्य को प्राप्तहुये ६९ और तुझको बड़े हर्षसे आलिंगनकरके यह कहतेभये किहे

प्रिये तेरे ऊपर मैं बहुत प्रसन्नहौं जो तेरे मनमें होय सो बर मांग ७० ॥

वरद्वयंवृणीष्वत्वमेवंराजाऽवदत्स्वयम् ॥ त्वयोक्तोवरदोराजन्यदिदत्तंवरद्वयम् ७१ त्वय्येवतिष्ठतुचिरंन्यासभूतंममानघ ॥ यदामेऽवसरोभूयात्तदादेहिवरद्वयम् ७२ तथेत्युक्तास्वयंराजामंदिरंव्रजसुव्रते ॥ त्वत्तःश्रुतंमयापूर्वमिदानींस्मृतिमागतम् ७३ अतःशीघ्रम्प्रविश्याद्यक्रोधागारंरुषान्विता ॥ विमुच्यसर्वाभरणंसर्वतोविनिकीर्यच ॥ भूमावेवशयानात्वंतूष्णींमातिष्ठभामिनी ७४ यावत्सत्यंप्रतिज्ञायराजाऽभीष्टंकरोतिते ॥ श्रुत्वात्रिवक्रयोक्तंतत्तदाकेकयनंदिनी ७५ तथ्यमेवाखिलंमेनेदुःसंगाहितविभ्रमा ॥ तामाहकैकयीदुष्टाकुतस्तेबुद्धिरीदृशी ७६ एवंत्वांबुद्धिसंपन्नांनजानेवक्रसुंदरि ॥ भरतोयदिराजामेभविष्यतिसुतः प्रियः ७७ ॥

और तुझको मैं दोवरदान देताहौं तब तूने यह कहा कि हे राजन् जो आप प्रसन्न होके मुझको दो वरदान दिया चाहतेहो ७१ तौ दोनों वरदान अभी धरो हरिके तुल्य आपहीके पास रहैं जब मुझको काम पड़ैगा तौ मैं लैलेउंगी ७२ तब राजा दशरथ (तथास्तु) तैसेहीहोय ऐसे वचन कहिकै फिर तेरे संग गृहको आतेहुये यह वार्त्ता तुझीसे मैंने सुनीथी इस समयमें यादहुई ७३ इससे अब शीघ्रही क्रोधयुक्त होके क्रोधके मन्दिरमें प्रवेशकरो वहां सब आभूषणोंको उतारि करि और शिर खोलके हे कैकेयि तू मौनहोके भूमिमें शयन कर ७४ जबतक राजा सत्यप्रतिज्ञा करिकै तेरे मनोरथको न करैं तब तक तू वैसेही पृथ्वीमें बिना बिछौनेके पड़ीरहु तब कैकेयी यह मन्थराके बचन सुनिकै ७५ अपना हित इससे सत्यही मानती हुई क्योंकि दुस्संगके वशसे प्राप्त हुआ विभ्रम जिसको ऐसी होरही है और मन्थरासे यह बचन कहतीहुई कि हे मन्थरे यह बुद्धि तुझको कहांसे प्राप्तहुई ७६ और मैं नहीं जानतीथी कि तू ऐसी बुद्धि युक्तहै और विदित होताहै कि तेरेकूबडमें बुद्धियोंका खजानाहै जो कदाचित् मेरा प्रियपुत्र भरत राजा होयगा ७७ ॥

ग्रामाञ्छतंप्रदास्यामिममत्वंप्राणवल्लभा ॥ इत्युक्त्वाकोपभवनंप्रविश्यसहसारुषा ७८ विमुच्यसर्वाभरणंपरिकीर्यसमंततः ॥ भूमौशयानामलिनामलिनाम्बरधारिणी ७९ प्रोवाचश्रृणुमेकुब्जेयावद्रामोवनंव्रजेत् ॥ प्राणांस्त्यक्ष्येऽथवावक्रेशयिष्येतावदेवहि ८० निश्चयंकुरुकल्याणिकल्याणंतेभविष्यति ॥ इत्युक्त्वाप्रययौकुब्जागृहंसाऽपित

थाऽकरोत् ८१ धीरोत्यंतदयान्वितोऽपिसुगुणाचारान्वितोवाऽथवा नीतिज्ञोविधिवाददेशिकपरोविद्याविवेकोऽथवा ॥ दुष्टानामतिपापभावितधियांसंगंसदाचेद्भजेत्तद्बुद्ध्यापरिभावितोव्रजति तत्साम्यंक्रमेणस्फुटम् ८२ अतः संगःपरित्याज्योदुष्टानांसर्वदैवहि ॥ दुःसंगीच्यवतेस्वार्थाद्यथेयंराजकन्यका ८३ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेऽयोध्याकाण्डे द्वितीयः सर्गः २ ॥

तो मैं तेरेको सौ गांवदेउँगी और तूमेरे प्राणोंको अति प्रियहै ऐसावचन मंथरासे कहिके कैकेयी शीघ्रही क्रोधकरिकै कोपमन्दिरमें प्रवेश करकेसब आभूषणों को उतारिकै और केशखोलिकै और मैले वस्त्रों को धारणकरपृथ्वी में शयनकरतभिई ७८।७९ मंथरासे यहबचनबोली कि हेकुब्जेजबतकरामबनको नहीं जायँगे तबतकमैं नहीं उठौंगी प्राणभलेही त्यागदेवों ८० तब मन्थराने कहाकि जोतू ऐसे करैगी तौ निश्चयसे तेरा कल्याणहोगा ऐसाकहिकै मन्थरातो अपने गृहजातीहुई औ कैकेयी कोप भवनमें सोतीभई ८१ अब इस कथा कातात्पर्यकहतेहैं किजो मनुष्य धीर भी होय औ अत्यन्तदयायुक्त भीहोय और अच्छेगुण और अच्छे आचारोंकरके युक्तभी होय और नीति काजाननेवालाभी होय औ शास्त्रका जाननेवाला गुरुभक्तभी होय और विद्या विवेक युक्तभी होय तौभी अत्यन्त पाप भावना करके पापग्रस्त हुईहै बुद्धिजिन्होंकी ऐसे दुष्टोंके संगको जो सेवन करै तौ उनकी बुद्धि करिकै संस्कार युक्तहुई बुद्धि जिसकी ऐसा होकर कुछ कालमें क्रमकरिकै वैसाही होजाताहै ८२ इससे सबकालमें दुष्टोंकासंगत्याग करिबे योग्यहीहै क्योंकि दुस्संगके कारणसे अपने पुरुषार्थ से भ्रष्टहोजाताहै जैसे यह राजकन्या कैकेयी भ्रष्टमति होगई है ८३ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकाण्डेद्वितीयस्सर्गः २॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ ततोदशरथोराजा रामाभ्युदयकारणात् ॥ आदिश्यमंत्रिप्रकृतीःसानन्दोगृहमाविशत् १ तत्राद‍ृष्ट्वाप्रियांराजा किमेतदितिविह्वलः ॥ यापुरामंदिरंतस्याःप्रविष्टेमयिशोभना २ हसंतीमामुपायातिसाकिंनैवाद्यद‍ृश्यते ॥ इत्यात्मन्येवसंचिन्त्यमनसातिविदूयता ३ पप्रच्छदासीनिकरंकुतोवःस्वामिनीशुभा ॥ नायातिमांयथापूर्वंमत्प्रियाप्रियदर्शना ४ ताऊचुःक्रोधभवनंप्रविष्टानैवविद्महे ॥ कारणंतत्रदेवत्वंगत्वानिश्चेतुमर्हसि ५ इत्युक्तोभयसंत्रस्तो

राजातस्याःसमीपगः ॥ उपविश्यशनैर्देहंस्पृशन्वैपाणिनाऽब्रवीत् ६ किंशेषेवसुधापृष्ठेपर्य्यंकादीन्विहायच ॥ मांत्वंखेदयसेभीरुयतोमांना वभाषसे ७ ॥

दो० कोप भवनमें तीसरे स्वपति शपथ दृढ मान ॥
यँाचत केकयजा भरत तिलक राम बनजान ३

तिसके उपरांत राजादशरथ मन्त्रियोंको व प्रजाओंको रामचन्द्रके ऐश्वर्य के कारणसे आज्ञादेकै आनन्द सहित गृहमें प्रवेश करतेहुये १ तिसगृहमें प्रिया जो कैकेयी तिसको बिना देखे राजा दशरथ अति व्याकुल होकै अपने मनमें यह चिन्ता करनेलगे कि जबमैं कैकेयी के गृहमें प्रवेश करताथा तो पहिलेही से आके प्रिया मेरी अपने दर्शनसे आनन्दित करतीथी २ आज मेरा क्या अ- पराध है जो दिखाई नहीं पड़ती यह चिंतनकर अति संतप्त चित्तसे कैकेयीकी दासियोंसे पूछताहुआ कि तुम्हारी स्वामिनी कहांहै ३ और प्रियदर्शन जिसका ऐसी जो मेरी प्रिया सो जैसे पहिले मुझको मिलतीथी तैसे आजुनहीं प्राप्त हुई इसमें क्या कारणहै ४ तब दासी कहनेलगीं हे देव आपकी प्रिया क्रोध भवनमें प्रविष्ट होरही हैं इसका कारण आपहीजाके निश्चय करिये हम नहीं जानसक्तीं ५ ऐसा जब बचन दासियोंने कहा तौभयकरके संत्रस्तराजा उस कैकेयीके समीप जाके धीरेधीरे उसके अंगको अपने हाथसे स्पर्शकर बोलता हुआ ६ किहे प्रिये जोतू शय्यादि भोगकी सामग्रियोंको त्यागिकै भूमिमें शयन कररही है सो क्या कारणहै औ हे भीरु जो तू मुझसे नहीं संभाषणकरती इस से मेरेचित्तको भी खेद करारहीहै ७ ॥

अलंकारंपरित्यज्यभूमौमलिनवाससा ॥ किमर्थंब्रूहिसकलंविधा स्येतववाञ्छितम् ८ कोवातवाहितंकर्त्तानारीवापुरुषोऽपिवा ॥ समे दण्ड्यश्चबध्यश्चभविष्यतिनसंशयः ९ ब्रूहिदेवियथाप्रीतिस्तदव श्यंममाग्रतः ॥ तदिदानींसाधयिष्येसुदुर्लभमपिक्षणात् १० जाना सित्वंममस्वान्तं प्रियंमांस्ववशेस्थितम् ॥ तथापिमांखेदयसे वृथा तवपरिश्रमः ११ ब्रूहिकंधनिनंकुर्यान्दरिद्रन्तेप्रियंकरम् ॥ धनिनं क्षणमात्रेणनिर्द्धनंचतवाहितम् १२ ब्रूहिकंवाबाधिष्यामि बधार्होवा विमोक्ष्यते ॥ किमत्रबहुनोक्तेन प्राणान्दास्यामितेप्रिये १३ ममप्रा णात्प्रियतरोरामोराजीवलोचनः ॥ तस्योपरिशपेब्रूहित्वद्धितंतत्क रोम्यहम् १४ ॥

और सब आभूषणों को त्यागकर मलिन वस्त्रको धारणकर किसवास्ते पृथिवी में शयन करती है सो अपना अभीष्टकहु ८ और कौन स्त्री वा पुरुषतेरे अहितका करनेवालाहै सो मेरे दण्डको प्राप्तहोय अथवा बधको प्राप्तहोय ९ और हे देवि जिसप्रकारसे तेरी प्रसन्नताहोवै सो मेरेआगे कहु सो जोदुर्लभभी होयतो मैं इसीसमय सिद्धकरसक्ता हौं १० और तू मेरेहृदयके अभिप्राय को जानती है कि मैं तेराप्रिय तेरेबशमें स्थितहौं तो भी मुझको खेदकराय रहीहै इससे वृथा तेरा परिश्रम है ११ और यह कहुकि कौनसे तेरे प्रियकरनेवाले दरिद्रीको धनीकरौं और कौनसेतेरे अपराधी धनीको निर्धनकरिदेवों एक क्षणमात्रमेंही १२ और कहुकौन तेरे कहनेसे माराजाय और कौन मारने के योग्य भी छोड़ाजावै औ हे प्रिये बहुत कहने से क्याहै अपने प्राणभीतेरे अर्थदेसक्ता हौं १३ और मुझको अपने प्राणोंसे भी प्रियराम हैं जिसके कमलवत् विशाल नेत्रहैं तिसरामकी शपथकरताहौं जो तेराप्रियहोय सोमैं करौंगा १४ ॥

इतिब्रुवाणंराजानंशपन्तंराघवोपरि ॥ शनैर्विमृज्यनेत्रेसाराजानं प्रत्यभाषत १५ यदिसत्यप्रतिज्ञोसिशपथंकुरुषेयदि ॥ याञ्चामेसफलांकर्त्तुंशीघ्रमेवत्वमर्हसि १६ पूर्वंदेवासुरेयुद्धे मयात्वंपरिरक्षितः तदावरद्वयंदत्तंत्वयामेतुष्टचेतसा १७ तद्द्वयंन्यासभूतंमेस्थापितं त्वयिसुव्रत ॥ तत्रैकेनवरेणाशुभरतंमेप्रियंसुतम् १८ एभिःसंभृतसंभारैर्यौवराज्येऽभिषेचय ॥ अपरेणवरेणाशुरामोगच्छतुदण्डकान् १९ मुनिवेषधरःश्रीमान्जटावल्कलभूषणः॥ चतुर्दशसमास्तत्रकंदमूलफलाशनः २० पुनरायातुतस्यांतेवनेवातिष्ठतुस्वयम् ॥ प्रभाते गच्छतुवनंरामोराजीवलोचनः २१

अब रामके ऊपरभी शपथ करिकै ऐसे वचन कहताहुआ जो राजा तिससे कैकेयी नेत्रोंसे आंशुओंको पोंछके बोलती हुई १५ कि हेराजन् जो आपसत्य प्रतिज्ञहो और जो रामकी शपथ करतेहौ तो शीघ्रही मेरी प्रार्थना को सफल करने को योग्यहो १६ पहिले देवासुर संग्राममें मैंने तुम्हारी रक्षाकी थी तो उससमयमें आपने प्रसन्नहोके मुझको दो बरदियेथे १७ ते दोनों वरमैंने आपहीके पास धरोहर स्थापन करदिये थे तिनमें से एक बरदान करिकै तो मेरा प्रियपुत्र भरत १८ इन्हीं सामग्रियों करके शीघ्रही यौवराज्य पदमें अभिषिक्त कियाजावै अर्थात् जो रामको राज्य बिचाराहै सो भरतको मिलै और दूसरे बरदान करके शीघ्रही राम दण्डक बनको जावैं १९ औ श्रीमान् जो रामहैं सो जटा औ वल्कल वस्त्रको धारणकर मुनि वेषधारी चौदहवर्षतक कंदमूलफल

आदि मुनियोंका अन्नभोजनकर २० तादण्डकारण्यमें बासकरैं तिसके अनंतर अयोध्यामें आवें चाहे वनही में बासकरैं और प्रातःकाल होते कमलवत् बिशाल नेत्र जो राम सो बनको जायँ २१ ॥

यदिकिंचिद्विलंबेतप्राणांस्त्यक्ष्येतवाग्रतः ॥ भवसत्यप्रतिज्ञस्त्वमेतदेवममप्रियम् २२ श्रुत्वैतद्दारुणंवाक्यंकैकेय्यारोमहर्षणम् ॥ निपपातमहीपालो वज्राहतइवाचलः २३ शनैरुन्मील्यनयनेविमृज्यपरयाभिया ॥ दुस्वप्नोवामयादृष्टोह्यथवाचित्तविभ्रमः २४ इत्यालोक्यपुरःपत्नींव्याघ्रीमिवपुरःस्थिताम् ॥ किमिदंभाषसेभद्रेममप्राणहरंवचः २५ रामःकमपराधंतेकृतवान्कमलेक्षणः॥ममाग्रेराघवगुणान्वर्णयस्यनिशंशुभान् २६ कौशल्यांमांसमंपश्यन्शुश्रूषांकुरुतेसदा॥ इतिब्रुवंतीत्वंपूर्वमिदानींभाषसेऽन्यथा २७ राज्यंगृहाणपुत्रायरामस्तिष्ठतुमंदिरे ॥ अनुगृह्णीष्वमांवामेरामान्नास्तिभयंतव २८ ॥

जो कदाचित् कुछ देरकरेगा तो तुम्हारे आगेही मैं प्राणोंको त्याग देवोंगी और हेराजन् आप सत्य प्रतिज्ञहूजिये और यही मुझको प्रियहै २२ अब जिसके सुने से रोमखडे होजायँ ऐसादारुण बड़ा भयंकर कैकेयी का वचन सुनिकै बिजुलीके मारेहुये वृक्षके सदृश राजा दशरथ पृथिवीमें गिरपड़ता हुआ २३ अब राजादशरथ धीरेधीरे नेत्रोंको खोलकै औ पोंछकै बड़ीभयसे यह कहनेलगे कि मैंने कोई दुस्स्वप्नदेखा है अथवा मेरा चित्त भ्रमहै २४ ऐसा बिचारकर व्याघ्री के तुल्यआगे खड़ी कैकेयीको देखके कहतेहुये कि हेभद्रे क्या मेरे प्राणके हरने वाला यह वचन कहरही है २५ और कमल लोचन जो रामहै तिसने क्या तेरा अपराध कियाहै और तू मेरे आगे निरंतर रामके शुभगुणों को बर्णनकरती है २६ कि राम कौशल्याको औ मुझको एकसा देखके सदा शुश्रूषा करता है इसप्रकार तू प्रथम मुझसे कहतीथी अब क्यों वृथा भाषण करतीहै २७और अपने पुत्रके अर्थ राज्य को तुही ग्रहण कर परन्तु रामगृह में रहैं और हे वामे इस प्रकार मेरे ऊपर अनुग्रह कर और रामसे तुझको भयनहींहै २८ ॥

इत्युक्त्वाऽश्रुपरीताक्षःपादयोर्निपपातह ॥ कैकेयीप्रत्युवाचेदंसापिरक्तांतलोचना २९ राजेंद्रकिंत्वंभ्रांतोऽसिउक्तंतद्भाषसेऽन्यथा ॥ मिथ्याकरोषिचेत्स्वीयंभाषितंनरकोभवेत् ३० वनंनगच्छेद्यदिरामचन्द्रः प्रभातकालेऽजिनचीरयुक्तः ॥ उद्बन्धनंवाविषभक्षणंवाकृत्वामरिष्येपुरतस्तवाहम् ३१ सत्यप्रतिज्ञोऽहमितीहलोके विडंबसेसर्वसभांत

रेषु॥ रामोपरित्वंशपथंचकृत्वामिथ्याप्रतिज्ञोनरकंप्रयाहि ३२ इत्युक्तःप्रिययादीनोमग्नोदुःखार्णवेनृपः ॥ मूर्च्छितःपतितोभूमौविसंज्ञोमृतकोयथा ३३ एवंरात्रिर्गतातस्यदुःखात्संवत्सरोपमा॥ अरुणोदयकालेतुवंदिनोगायकाजगुः ३४ निवारियत्वातान्सर्वान्कैकेयीरोषमास्थिता॥ ततःप्रभातसमयेमध्यकक्षमुपस्थिताः ३५॥

फिर राजादशरथ कैकेयीसे ऐसावचन कहि कैकेयीके पांवोंपर गिरपड़ता हुआ औरनेत्रोंसे अश्रुपात करताहुआ औकैकेयी लालनेत्रकर बोलतीहुई २९ औ हेराजेन्द्र क्या तुम भ्रमयुक्त होगये हौ जो अपने कहे को बदलतेहौ और जो अपना बचन मिथ्याकरोगे तो नरकहोगा ३० और जो प्रातःकालमृगचर्म और चीर वस्त्रधारण करके राम बनको न जावेंगे तो मैं तुम्हारे अगाड़ीही गलाबांधकै मरजाउँगी अथवा बिषखाइकै मरोंगी ३१ और राजा दशरथ सत्यप्रतिज्ञ है यहबार्ता सब लोकों में सभाओं में विख्यात है औ रामके ऊपर शपथ करिकै जो अपनी प्रतिज्ञा मिथ्या करौ तौ नरक को जाउगे ३२ ऐसे बचन जब कैकेयी ने कहे तौदीन और दुःख समुद्र में डूबा हुआ जो राजा दशरथ सो मृतक तुल्य अचेतहो पृथिवी में मूर्च्छित गिर पड़ता हुआ ३३ इस प्रकार बिलाप करते करते वह रात्रि दशरथ को दुःख से बर्ष तुल्य होतीहुई जब अरुणोदय कालहुआ तौ बन्दीजन औ गानेवाले गान करतेहुये ३४ तब कैकेयी उनसबोंको निवारणकर क्रोधमें आविष्टहोती हुई तिसके उपरान्त प्रभात समय में बीचकी डिउढ़ी,के चौकमें ३५॥

ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याऋषयःकन्यकास्तथा॥ क्षत्रंचचामरंदिव्यंगजोबाजीतथैवच ३६ अन्याश्चवारमुख्यायाःपौरजानपदास्तथा॥ वशिष्ठेनयथाज्ञप्तंतत्सर्वंतत्रसंस्थितम् ३७ स्त्रियोबालाश्चवृद्धाश्चरात्रौनिद्रांनलेभिरे॥ कदाद्रक्ष्यामहेरामंपीतकौशेयवाससम् ३८ सर्वाभरणसंपन्नंकिरीटकटकोज्ज्वलम् ॥ कौस्तभाभरणश्यामंकंदर्पशतसुन्दरम् ३९ अभिषिक्तंसमायातंगजारूढंस्मिताननम् ॥ श्वेतछत्रधरंतत्रलक्ष्मणंलक्षणान्वितम् ४० रामंकदावाद्रक्ष्यामःप्रभातंवाकदाभवेत् ॥ इत्युत्सुकधियःसर्वेबभूवुःपुरवासिनः ४१ नेदानीमुत्थितोराजाकिमर्थंचेतिचिंतयन्॥सुमंत्रःशनकैःप्रायाद्यत्रराजावतिष्ठते ४२॥

ब्राह्मण और क्षत्रिय औ वैश्य औऋषि औ कन्या औश्वेतछत्र औ दिव्यचमर और हाथी घोड़ा ३६ और वेश्या औ पुरवासी औ देशवासी और जो जो

वशिष्ठ जी ने अभिषेक की सामग्री की आज्ञाकीथी सो संपूर्ण जलपूरित सुवर्ण घटादिक वहां उपस्थित होतीहुई ३७ औ अयोध्यावासीस्त्री औ बाल औ वृद्ध आदि जितने जनथे उनको आनन्दसे रात्रि में निद्रा नहीं आई औ सब यह कहतेथे कि कब हम पीताम्बर को धारण करेहुये श्रीरामचन्द्र को देखेंगे ३८ कैसे रामको कि संपूर्ण आभूषणोंको धारण कियेहैं और मुकुट और रत्नजटित कटक इनको धारणकिये औ कौस्तुभमणि को कण्ठ में धारणकिये औ श्याम वर्ण औ सैकड़ों कामदेवों सेभी सुन्दर ३९ और अभिषेक जिनका हुआ है औ हाथीके ऊपरचढ़ेहुयेहैं और मन्दमुसक्यान कररहेहैं औ लक्ष्मण जी जिनके ऊपर श्वेत छत्र धारण करेहैं ४० ऐसे रामको कबहम दर्शन करें और कब प्रातःकाल होय ऐसी उत्कण्ठा युक्तहै बुद्धि जिनकी ऐसे जे अयोध्या पुरवासी तिनको मनोरथ करते२ रात्रिव्यतीतहुई ४१ अब प्रातःकालके समय सुमन्त्र मन्त्रीने यह बिचार कियाकि सूर्य्योदय होनेकोहुआ राजा अभी नहीं उठे सो क्या कारणहै ऐसा चिन्तन कर जहां राजादशरथथे ४२ ॥

वर्द्धयन्जयशब्देनप्रणमच्छिरसानृपम् ॥ अतिखिन्नंनृपंदृष्ट्वाकैकेयींसमपृच्छत ४३ देविकैकेयिवर्द्धस्वकिंराजादृश्यतेऽन्यथा ॥ तमाहकैकयीराजारात्रौनिद्रांनलब्धवान् ४४रामरामेतिरामेतिराममेवानुचिंतयन्॥प्रजागरेणवैराजाह्यस्वस्थइवलक्ष्यते॥ राममानयशीघ्रंत्वंराजाद्रष्टुमिहेच्छति ४५ सुमंत्रउवाच॥ अश्रुत्वाराजवचनंकथंगच्छामिभामिनी॥ तच्छ्रुत्वामंत्रिणोवाक्यंराजामंत्रिणमब्रवीत्४६सुमंत्ररामंद्रक्ष्यामिशीघ्रमानयसुन्दरम् ॥ इत्युक्तस्त्वरितंगत्वासुमंत्रोराममंदिरम् ४७ अवारितःप्रविष्टोऽयंत्वरितंराममब्रवीत् ॥ शीघ्रमागच्छभद्रन्ते रामराजीवलोचन ४८ पितुर्गेहंमयासार्द्धं राजात्वांद्रष्टुमिच्छति ॥ इत्युक्तोरथमारुह्य संभ्रमात्त्वरितोययौ ४९ ॥

तहां जयशब्दसे राजाको बढ़ाताहुआ शिरसे प्रणाम कर अतिखेद युक्त राजाको देख कैकेयी से पूछताहुआ ४३ हे देवि हे कैकेयि तू वृद्धिको प्राप्तहो परंतु राजाका स्वरूप आजु अन्यथा दिखाई पड़ताहै सो क्या कारण है तब सुमंत्र से कहनेलगी हे सुमन्त्र राजाको रात्रिभर निद्रा नहीं आई ४४ हेराम हे राम हे राम ऐसे शब्दोंको उच्चारण कर रामहीका चिन्तन करतेहुये सारी रात्रि व्यतीत होगई इससे जागरण करनेसे राजा अस्वस्थ से लक्षित होते हैं अर्थात् जैसे किसीका चित्त सावधान न होवै तैसे दिखाई पड़तेहैं ४५ इससे अब शीघ्रही रामको लिवायल्यावो राजा देखा चाहते हैं तब सुमन्त्रने कहा हे

भामिनि बिना राजाके मुखके बचन सुने मैं कैसे रामके पास जासक्ताहौं ४६ यह मन्त्रीके बचन सुनिकै राजा बोलते हुये कि हे सुमन्त्र रामको मैं देखा चाहताहौं इससे शीघ्रही सुन्दर जो राम हैं तिनको ल्यावो ऐसे राजाके बचन सुनिकै शीघ्रही सुमंत्र राजमन्दिर को जाताहुआ ४७ तब सुमंत्रको किसीने नहींरोका शीघ्रही राममन्दिर में प्रवेशकर रामसे बोलता हुआ कि हे राम हे राजीवलोचन तुम्हारा कल्याण होय ४८ आप शीघ्रही मेरे साथ पिता के घर को चलिये राजा तुमको देखा चाहते हैं ४९ ॥

रामःसारथिनासार्द्धं लक्ष्मणेनसमन्वितः॥ मध्यकक्षेवशिष्ठादीन् पश्यन्नेवत्वरान्वितः ५० पितुःसमीपंसंगम्य ननामचरणौपितुः॥ राममालिंगितुंराजा समुत्थायससम्भ्रमः ५१ बाहूप्रसार्यरामेति दुःखान्मध्येपपातह॥ हाहेतिरामस्तंशीघ्रमालिंग्यांकेन्यवेशयत् ५२ राजानंमूर्च्छितंदृष्ट्वाचुक्रुशुःसर्वयोषितः॥किमर्थंरोदनमितिवशिष्ठोऽपिसमाविशत् ५३ रामःपप्रच्छकिमिदंराज्ञोदुःखस्यकारणम्॥ एवंपृच्छतिरामेसाकैकेयीराममब्रवीत् ५४ त्वमेवकारणंह्यत्रराज्ञोदुःखोपशान्तये॥ किंचित्कार्यंत्वयारामकर्त्तव्यंनृपतेर्हितम् ५५ कुरुसत्यप्रतिज्ञस्त्वंराजानंसत्यवादिनम्॥ राज्ञावरद्वयंदत्तंममसंतुष्टचेतसा ५६॥

ऐसे जब सुमंत्रने बचनकहे तब राम शीघ्रही लक्ष्मणसहित संभ्रम पूर्वक जातेहुये सुमंत्र युक्त रथपै चढ़िकै ५० मध्यकी डिउढ़ी परबैठे हुये जो वशिष्ठ आदि ऋषिलोग तिनको देखते हुये बड़ी शीघ्रता से पिताही के समीप राम प्राप्तहो पिताके चरणोंको प्रणाम करतेहुये ५१ तब राजादशरथ संभ्रमसहित रामको आलिंगन करने को उठके हे राम ऐसाकहिकै भुजाओं को फैलाते हुये तब तक दुःखसे रामको नहीं प्राप्तहो मध्यहीमें गिरपड़ते हुये ५२ उसीसमय में परम दयालु श्रीराम हाहा ऐसा शब्द उच्चारणकर दशरथको आलिंगन करके अपनी गोदीमें बिठालते हुये औ राजाको मूर्च्छित देखके सब रानियां रोतीहुईं ५३ और किसकारण से राजमन्दिरमें रोदन शब्द सुनाई पड़ता है इससे बशिष्ठऋषि भी वहां आतेहुये तब रामने पूछा कि राजाके दुःखकाक्या कारणहै ५४ ऐसाजब रामने पूछा तो कैकेयी रामसे कहती हुई कि हे राम राजाके दुःखका कारण तुम्हींहौ ५५ इससे राजाके दुःख की शांतिके अर्थ कुछ ऐसा तुमको करनाचाहिये जिसमें राजाका हितहोय सो हित कब होय जब तुम सत्यप्रतिज्ञ होके राजा को सत्यवादी करो ५६ ॥

त्वदधीनन्तुतत्सर्वं वक्तुंत्वांलज्जतेनृपः॥ सत्यपाशेनसम्बद्धं पि

तरंत्रातुमर्हसि ५७ पुत्रशब्देनचैतद्धिनरकात्त्रायतेपिता ॥ रामस्त योदितंश्रुत्वा शूलेनाभिहतोयथा ५८ व्यथितःकैकयींप्राह किंमामेवं प्रभाषसे ॥ पित्रर्थेजीवितंदास्ये पिबेयंविषमुल्वणम् ५९ सीतांत्यक्षे ऽथकौशल्यां राज्यंचापित्यजाम्यहम् ॥ अनाज्ञप्तोऽपिकुरुते पितुः कार्यंसउत्तमः ६० उक्तःकरोतियःपुत्रः समध्यमउदाहृतः ॥ उक्तोऽपि कुरुतेनैवसपुत्रोमलउच्यते ६१ अतःकरोमितत्सर्वंयन्मामाहपिता मम ॥ सत्यंसत्यंकरोम्येवरामोद्विर्नाभिभाषते६२ इतिरामप्रतिज्ञांसा श्रुत्वावक्तुंप्रचक्रमे ॥ रामत्वदभिषेकार्थंसम्भाराःसंभृताश्चये ६३ ॥

औ हे राम प्रसन्न चित्त होके राजाने मुझको दोबर दियेहैं सो सब तुम्हारे आधीनहै औ राजा तो तुमसे कहनेको लज्जा कर रहे हैं ५७ इससे सत्यरूप पाशसे बँधाहुआ जो राजा तिसको रक्षा करने को योग्य हो और पुत्र शब्द करके इतनाही अर्थ है जो नरकसे पितारक्षा कियाजाय इसका आशय यहहै कि व्याकरणकी रीतिसे पुत्र शब्दमें जो दो अक्षर हैं तिनका अर्थ यह होताहै कि पुत्नाम जो नरक तिससे पितरोंका त्रनाम रक्षकहोवै सो पुत्र कहाता है तौ आप दशरथके पुत्र तभी होसक्ते हो जब दशरथको सत्यवादी करिकै नरक से रक्षा करौ और जो ऐसा न करोगे तौ दशरथ मिथ्यावादी होके नरकमें जायगाही तब तुममें पुत्र शब्दका अर्थ कहां बनसकैगा अब राम ऐसे कैकेयी के कहेहुये वचन सुनिकै जैसे कोई हृदयमें शूलको प्रहारकरै तैसे व्यथायुक्त होकै ५८ कैकेयी से बोलते हुये कि हे मातः किस वास्ते ऐसे वचन मुझ से कहती हो मैं तो पिता के अर्थ प्राण भी दे सक्ताहौं और पिताकी आज्ञासे घोर विषका भी पानकरौं ५९ औसीताको भी त्यागदेवों और कौशल्याको और सबराज्यको भी त्यागदेवों क्योंकि जोपिताकी आज्ञाके बिनाही पिताका कार्य करै वहउत्तम पुत्रकहाजाताहै ६० औरजोकहेसे करै वहमध्यम पुत्रकहा जाता है और जोकहेसे भी नकरै वहपुत्र पिताका मल कहाजाताहै ६१ इससे जोमेरे पिताकी आज्ञाहै सो मैं सब करौंगा और मैं सत्यही करौंगा क्योंकि रामकभी दूसरी बातनहीं कहताहै अर्थात् जोकही सोपत्थरकी लीकहोगई कुछदूसरीबार कहनेका प्रयोजननहीं यह मेरास्वभावही है ६२ ऐसीरामकी प्रतिज्ञाको कैकयी सुनके अब अपना अभीष्टकहने को प्रारम्भकरतीहुई कि हेराम तुम्हारे अभि-षेकके अर्थ जोसामग्री सांचित की गईहै ६३॥

तैरेवभरतोऽवश्यमभिषेच्यःप्रियोमम ॥ अपरेणवरेणाशुचीरवा

साजटाधरः ६४ वनंप्रयाहिशीघ्रंत्वमद्यैवपितुराज्ञया ॥ चतुर्दशसमास्तत्रवसमुन्यन्नभोजनः ६५ एतदेवपितुस्तेद्यकार्यंत्वंकर्त्तुमर्हसि ॥ राजातुलज्जतेवक्तुंत्वामेवंरघुनन्दनम् ६६ श्रीरामउवाच ॥ भरतस्यैवराज्यंस्यादहंगच्छामिदण्डकान् ॥ किन्तुराजानवक्तीहमांनजानेऽत्रकारणम् ६७ श्रुत्वैतद्रामवचनंदृष्ट्वारामंपुरःस्थितम् ॥ प्राहराजादशरथोदुःखितोदुःखितंवचः ६८ स्त्रीजितंभ्रान्तहृदयमुन्मार्गपरिवर्त्तिनम् ॥ निगृह्यमां गृहाणेदंराज्यंपापंनतद्भवेत् ६९ एवंचेदनृतंनैवमांस्पृशेद्रघुनन्दन ॥ इत्युक्त्वादुःखसन्तप्तोविललापनृपस्तदा ७० ॥

तिसीसामग्री करिकै मेराप्रियपुत्र जो भरतहै तिसका अवश्य अभिषेकहोय और दूसरेवर करिकै शीघ्रही तुमचीरवस्त्र और जटाओंको धारणकरिकै ६४ अभीपिताकी आज्ञासे बनकोजाउ फिर उसदण्डकारण्यमें चौदहवर्षलौं मुनियोंके अन्नकोभोजन करते बासकरो ६५ इतनाही पिताकाकार्यहै सो तुमकरनेको योग्यहो औहेरघुनन्दनराजा तो साक्षात् कहनेको तुमसे लज्जाकरते हैं ६६ तबश्रीराम केकयीसे कहनेलगे कि भरतहीको राज्यहोय औ मैं दण्डकवनको जाताहौं परन्तु राजा अपने मुखसे कुछनहीं कहतेहैं इससेमैं कारणनहीं जानताहौं ६७ तबराजादशरथ ऐसेरामके बचनसुनिकै और अपनेआगे रामकोखड़े देखिकै बडे दुःखितहोके अदुःषित दुःखरहित जोरामहैं तिनसे बचनबोलतेहुये इसकाआशययहहै कि यद्यपिजिससमयमें रामकोराज्य उपस्थितथा उसीसमयमें कैकेयी ने आकस्मात् वज्रके तुल्य चौदह वर्ष बनवासका बचन राम से कहा तौ आत्माराम होने से रामको कुछभी दुःख नहुआ इससे यहां रामका विशेषण कविने अदुःखित ऐसाकहा अथवादेवतोंके कार्य सिद्धकरनेको रामको बनकागमन अभीष्टहीथा तिसपै और पिताकीआज्ञा इससेराममें दुःखकासंभव नहींहोनेसे अदुःखित कहा इसीसे वाल्मीकीयरामायणमें जिससमयमें कैकेयी नेरामको बनबासका बचनकहा उससमयमें ऐसालिखाहै (श्लोक) इतीवतस्यांपरुषं वदन्त्यां नचैवरामः प्रविवेश शोकम् ॥ प्रविव्यथेचापि महानुभावो राजाचपुत्रव्यसनाभितप्तः इति ॥ इसका अर्थयहहै कि जबकैकेयीने ऐसेकठोर बचनकहे तौरामको कुछभीशोक न होताहुआ औमहानुभाव जो राजा दशरथ सोपुत्रके दुःखसेबडा संतप्तहुआ ॥ इससे यहांअदुःखित ऐसा पदच्छेदयुक्त है और इस अध्यात्म रामायणके संस्कृत सेतुनामकटीका में तौदुःखित ऐसा पदच्छेद करिकै राजाके नहीं बोलनेसे रामभी उससमयमें दुःखितहैं इससेदुःखित जोराजा सोदुःखित रामसेबोलताहुआ यहअर्थ कियाहै सोभी व्यवहारदशा में

संभवहोताहै परन्तु इन दोनोंअर्थोंका वलाबल तौमहाशयलोग विवेचनकरैं ६८ सोअब दशरथके वचनकहतेहैं कि हे रामस्त्रीजित् स्त्रीके वशीभूत इसीसेभ्रान्त है हृदय जिसका और उन्मार्ग जो अधर्ममार्ग तिसमें चलनेवाला ऐसाजो मैं हौं तिसका निग्रहकरिकै अर्थात् मुसकबांध बन्धनागारमें डारिकै राज्यकाग्रहण करौतौ पापतुमको नहींहोगा इसका आशययहहै कि नीतिशास्त्रमें ऐसाकहाहै (श्लोक) गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्य्याकार्य्यमजानतः ॥ उत्पथंप्रतिपन्नस्य दण्ड एवविधीयते ॥ इसका अर्थयहहै कि जोगर्वयुक्तहोकै कार्य औ अकार्यको नजानताहोय औकुमार्गमें चलताहोय तोऐसे गुरूकोभी दंडउचितहै इसभारतके प्रमाणसे यहांदशरथभी स्त्रीके आधीनहोकै ज्येष्ठपुत्रसे राज्यछीनिकै कनिष्ठको दियाचाहताहै तोयह कुमार्गवर्तनहुआही इससे दशरथनेभी कहा मेरा निग्रह करिकै राज्य लेनेमें दोषनहींहोगा ६९ अब कदाचित् रामकहैं मिथ्यावादसे तुम को तौदोषहीहोगा इसहेतुसे दशरथकहतेहैं कि हेरघुनन्दनऐसा करौगे तौ मुझको भीअनृतनहीं स्पर्शकरैगा अर्थात् झूठकादोष तोवहांहै जहांअपने आधीनहै और नदेवै और जब मैंहीं पराधीनहुआ तौक्यादोषरहा यहबचनकहि दुःखसंतप्तजो राजादशरथहै सोउससमयमें विलाप करताहुआ ७० ॥

हारामहाजगन्नाथहाममप्राणवल्लभ ॥ मांविसृज्यकथंघोरंविपिनं गन्तुमर्हसि ७१ इतिरामंसमालिंग्यमुक्तकंठोरुरोदह ॥ विमृज्यनय नेरामःपितुःसजलपाणिना ७२ आश्वासयामासनृपंशनैःसनयकोवि दः ॥ किमत्रदुःखेनविभोराज्यंशास्तुमेऽनुजः ७३ अहंप्रतिज्ञांनिस्ती र्यपुनर्यास्यामितेपुरम् ॥ राज्यात्कोटिगुणंसौख्यंममराजन्वनेसतः ७४ त्वत्सत्यपालनंदेवकार्यंचापिभविष्यति ॥ कैकेय्याश्चप्रियोराजन्वन वासोमहागुणः ७५ इदानींगन्तुमिच्छामि व्येतुमातुश्चहृज्ज्वरः ॥ सं भाराश्चोपह्रीयन्तामभिषेकार्थमागताः ७६ मातरंचसमाश्वास्यअनु नीयचजानकीम् ॥ आगत्यपादौवंदित्वातवयास्येसुखंवनम् ७७ ॥

कि हा राम हा जगन्नाथ हा मेरे प्राणोंके वल्लभ प्रिय अथवा आत्मरूप होनेसे प्राणोंसे भीहे अति प्रिय मोको त्याग कैसे तुमघोरबनको जानेको योग्य हौ इसका आशय यह है कि यद्यपि तुम जगन्नाथहौ सब लोकोंके स्वामीहौ इससे तुमको वन औ राज्यसमानही है तौभी मेरे तौ प्राणवल्लभहौ इससे तुम्हारे संगही प्राण जावेंगे ये कैसेभी नहीं रहिसक्ते और जो कदाचित् रहैंतौ प्राणवल्लभताही में संदेह होजायगा यहबात प्राणवल्लभपद करिकै सूचित की ७१ अब यह वचन कहिकै राजा दशरथ रामको आलिंगनकर ऊंचे स्वर-

सेरोदन करताहुआ तब रामचन्द्र जलयुक्त हाथसे पिताके नेत्रोंको पोंछकरिके ७२ नीति में निपुण जो रामहैं सो धीरेधीरे राजाको सावधान करतेहुये और यह कहतेहुये कि हे विभो मेरा अनुज जो भरतहै सो राज्यकी शिक्षा पूर्वक रक्षाकरौ इसमें दुःखकरके क्या प्रयोजन है ७३ और मैंतो प्रतिज्ञाको पूर्णकर फिर अयोध्याको आवोंगा औ हेराजन् राज्यसे करोड़गुना सुख मुझको वनमें रहनेसे होगा ७४ क्योंकि हे देव आपका सत्य पालनरूप कार्य होगा और कैकेयीका प्रियहोगा इससे वनबासमें बहुत गुणहै और इहां देवकार्य पद में श्लेष अलंकारकरनेसे देवतों काभी कार्य वनहीके रहनेसे सिद्धहोगा यहभी सूचित होताहै ७५ औ इसी समयमें मैं जानेकी इच्छा करताहौं इससे माता कैकेयी के हृदयका सन्ताप दूरहोय औ ये मेरे राज्याभिषेक के लिये जो सामग्री उपस्थित हुईहै सो दूरकी जावै ७६ औ अबमैं माता कौशल्याके चित्त कोसावधानकर औ सीताको समुझाके फिर यहां आके आपके चरणारविन्दोंको प्रणामकर सुखपूर्वक बनको जाऊंगा ७७ ॥

इत्युक्त्वातुपरिक्रम्यमातरंद्रष्टुमाययौ ॥ कौशल्याऽपिहरेःपूजांकुरुतेरामकारणात् ७८ होमंचकारयामासब्राह्मणेभ्योददौधनम् ॥ ध्यायतेविष्णुमेकाग्रमनसामौनमास्थिता ७९ अन्तस्थमेकंघनचित्प्रकाशंनिरस्तसर्वातिशयस्वरूपम् ॥ विष्णुंसदानन्दमयंहृदब्जेसाभावयंतीनददर्शरामम् ८० ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादे
अयोध्याकाण्डेतृतीयस्सर्गः ॥ ३ ॥

ऐसा वचन कहि राजाके परिक्रमाकरके राम माताके दर्शन करनेको जाते हुये और कौशल्याभी उस समयमें रामके कारण से नारायणका पूजन करती थी ७८ और कौशल्या ब्राह्मण द्वारा होम करातीहुई और ब्राह्मणों को धन देतीहुई औ मौन होके एकाग्र मनसे विष्णु भगवान्का ध्यान करतीहुई ७९ अब उस समयमें हृदयरूप कमलके बिषे विष्णुका ध्यानकरती जो कौशल्या सो अगाड़ी खड़ेहुये जो राम तिनको नहीं देखती हुई कैसे विष्णु हैं जो अन्तर्यामि रूप करके हृदयमें स्थितहैं औ सघनहैं चैतन्य प्रकाश जिनका और दूरकरे विशेषरूप जिसने अर्थात् निर्गुण औ सत्रूप और आनन्द स्वरूप ऐसा ध्यानकरती जो कौशल्या सो रामको नहीं देखती हुई ८० ॥

इत्यध्यात्मरामायणेऽयोध्याकाण्डेभाषाटीकायां तृतीयःसर्गः ॥ ३ ॥

ततःसुमित्रादृष्ट्वैनंरामंराज्ञींससंभ्रमा ॥ कौशल्यांबोधयामासरा मोऽयंसमुपस्थितः १ श्रुत्वैवरामनामैषाबहिर्दृष्टिप्रवाहिता ॥ रामंदृ ष्ट्वाविशालाक्षमालिंग्यांकेन्यवेशयत् २ मूर्ध्न्यवघ्रायपस्पर्शगात्रंनीलो त्पलच्छवि ॥ भुंक्ष्वपुत्रेतिचप्राहमिष्टमन्नंक्षुधार्दितः ३ रामःप्राहनमे मातर्भोजनावसरःकृतः ॥ दण्डकागमनेशीघ्रंममकालोऽद्यनिश्चितः ४ कैकेयीवरदानेनसत्यसंधःपितामम ॥ भरतायददौराज्यंममाप्यार ण्यमुत्तमम् ५ चतुर्दशसमास्तत्रह्युषित्वामुनिवेषधृक्॥ आगमिष्ये पुनःशीघ्रंनचिन्तांकर्त्तुमर्हसि ६ तच्छ्रुत्वासहसोद्विग्नामूर्च्छितापुनरु त्थिता ॥ आहरामंसुदुःखार्त्तादुःखसागरसंप्लुता ७॥

दो० चौथे अनुज प्रबोधिकै कौशल्यादिक मात ॥
बन्दि लषण सीतासहित पुनि आयेजहँतात ४ ॥

अब श्रीमहादेवजी पार्वती से कहते हुये हे पार्वति तिसके उपरान्त क्या कारणहै कि राम इस समयमें आये ऐसे संभ्रमयुक्त सुमित्रारानी रामको देख के कौशल्याको जनाती हुई कि राम तेरे समीप खड़े हैं औ तू नहीं देखती १ तब कौशल्या रामका नाम सुनतेही समाधिसे विरत हो बाहर नेत्रों की दृष्टि से विशाल नेत्र राम को देखकै आलिंगनकर गोदी में बिठालेती हुई २ फिर शिर को सूंघके नीलकमलतुल्य जो श्रीरामका अंग तिसको स्पर्शकरि हे पुत्र तुम भूखे होगे इससे मीठा अन्न यह भोजन कीजिये ३ तब रामचन्द्र बोले कि हे मातः अब मेरे भोजन का समय कहां क्योंकि शीघ्रही दण्डकबन जाने का यह मेरा समय उपस्थित हुआहै ४ सत्य है प्रतिज्ञा जिसकी ऐसा जो मेरा पिता है सो कैकेयी के बरदान करिकै भरतको राज्य देता हुआ औ मुझको उत्तम बन देता हुआ ५ तिस बन में मुनि बेष धारण किये चौदह वर्षभर बास करिकै फिर शीघ्रही तेरे समीप आवोंगा इससे चिन्ता करने के योग्य नहीं हो ६ यह रामके वनवासके बचन सुनिकै सहसा शीघ्रही भयभीत हो पृथिवीमें मूर्च्छित गिरपड़ती हुई फिर उठकर दुःख करिकै पीड़ित दुःख सागरमें डूबीहुई कौशल्या राम से बचन बोलती हुई ७ ॥

यदिरामवनंसत्यंयासिचेन्नयमामपि ॥ त्वद्विहीनाक्षणार्द्धंवाजी वितंधारयेकथम् ८ यथागौर्बालकंवत्संत्यक्त्वातिष्ठेन्नकुत्रचित् ॥ त थैवत्वांनशक्नोमित्यक्तुंप्राणात्प्रियंसुतम् ९ भरतायप्रसन्नश्चेद्राज्यं राजाप्रयच्छतु ॥ किमर्थंवनवासायत्वामाज्ञापयतिप्रियम् १० कैके

य्यावरदोराजासर्वस्वंवाप्रयच्छतु ॥ त्वयाकिमपराधंहिकैकेय्यावान्
परस्यवा ११ पितागुरुर्यथारामतवाहमधिकाततः ॥ पित्राज्ञप्तोवनं
गंतुंवारयेयमहंसुतम् १२ यदिगच्छसिमद्वाक्यमुल्लंघ्यनृपवाक्यतः
तदाप्राणान्परित्यज्यगच्छामियमसादनम् १३ लक्ष्मणोपिततःश्रु
त्वाकौशल्यावचनंरुषा॥उवाचराघवंवीक्ष्यदहन्निवजगत्त्रयम् १४॥

हेराम जो तुम सत्यही बनको जातेहौ तौ मुझकोभी लेचलौ तुम्हारे बिना आधेक्षण भी मैं कैसे जीवन धारण करसक्तीहौं ८ हे राम जैसेगौ अपने छोटे बछड़े को त्यागकरके कहीं नहीं स्थित होती तैसेही प्राणोंसेभी प्रियपुत्र जो तुमहौ तिसको त्यागकरने को मैं समर्थ नहींहौं ९ औ राजा प्रसन्न होके भरतके अर्थ राज्य भलेही देयँ परन्तु प्रिय पुत्र जो तुमहौ तिसको बन बास के अर्थ किसवास्ते आज्ञा देते हैं १० अथवा राजा कैकेयी को बर देतेहैं तो जो कुछहै सो सबदै देवो परन्तु मैंने कैकेयीका क्या अपराध कियाहै अथवा राजा का जो तुम्हें बनको भेजतेहैं ११ औ हे राम पिता जैसे गुरू हैं औ मैं तौ तिस पिता सेभी अधिक हौं तौ पिताने बनके जानेको आज्ञा दीहै मैं बनके जानेको मना करती हौं इसका आशय यहहै कि पिता से दश गुणीमाता अधिक होतीहै ऐसा धर्मशास्त्रमें कहाहै तो मेरीआज्ञा करिकै बनकोनहींहीजाना तुमको उचित है १२ औ जो मेरे बचनको उल्लंघन कर राजा की आज्ञासे बनको जाउगेही तौ अपने प्राणोंको त्यागकर यमराजके मन्दिर को जाउँगी १३ अब उस समयमें लक्ष्मण भी यहकौशल्याके बचन सुनिकै क्रोध करके तीनों लोकों को मानो भस्म करदेवेंगे ऐसे कुपित होके राम से बोलते हुये १४॥

उन्मत्तम्भ्रान्तमनसंकैकेयीवशवर्त्तिनम् ॥ बध्वानिहन्मिभरतंत
द्बन्धून्मातुलानपि१५अद्यपश्यन्तुमेशौर्यंलोकान्प्रदहतःपुरा॥राम
त्वमभिषेकायकुरुयत्नमरिन्दम १६ धनुःपाणिरहंतत्रनिहन्म्यांविघ्न
कारिणः॥इतिब्रुवंतंसौमित्रिमालिंग्यरघुनन्दनः १७शूरोऽसिरघुरा
दूलममात्यन्तंहितेरतः ॥ जानामिसर्वंतेसत्यंकिन्तुतेसमयोनहि१८
यदिदंदृश्यतेसर्वंराज्यंदेहादिकंचयत् ॥ यदिसत्यंभवेत्तत्रआयासः
सफलश्चते १९ भोगामेघवितानस्थविद्युल्लेखेवचंचलाः॥ आयुर
प्यग्निसन्तप्तलोहस्थजलबिन्दुवत् २० यथाव्यालगलस्थोऽपिभे
कोदंशानपेक्षते॥तथाकालाहिनाग्रस्तोलोकोभोगानशाश्वतान् २१॥

कि हे राम उन्मत्त अर्थात् सिड़ी औ भ्रमयुक्त है मन जिसका औ कैकेयी

के वशीभूत ऐसे राजा दशरथको बांधिकै भरतको और भरतके पक्षी जो उस के मामाहैं तिनको मारडालोंगा १५ आजु मेरी शूरताको सब देखैं जैसे प्रलय कालमें कालाग्नि रुद्ररूप करिकै लोकोंको भस्म करताहै तिसके तुल्य औ हे राम हे अरिन्दम हे शत्रुओं के दमन करनेवाले आप अपने अभिषेक के अर्थ यत्न करिये १६ उस अभिषेक में जे कोई विघ्नकरेंगे तिन सबको धनुष को हाथ में लेके मारौंगा ऐसा वचन कहताहुआ जो लक्ष्मण तिसको रामचन्द्र हृदयसे लगाके १७ वचन बोलते हुये कि हेरघुशार्दूल रघुबंशियों में सिंह तुम शूरहो औ मेरे हितमें अति प्रीतियुक्तहौ यहमैं जानताहौं औ तुम्हारी सत्यप्रतिज्ञाभी जानताहौं परंतु पराक्रम करनेका यह समय नहींहै १८ औ हे लक्ष्मण जो जगत् दिखाई पड़ताहै औ राज्य औ देह इंद्रिय आदिपदार्थजे देखपड़तेहैं ते जो सत्यहोयँ तौ तुम्हारा इतना परिश्रम भी सफल होय इसका आशय यहहै कि जिन देहेन्द्रियोंके सुखके लिये राज्यसंपादन कियाचाहतेहो वेइंद्रिय देहादिकही मिथ्या हैं और जिस राज्यके लिये यत्न करते हो वह राज्यभी झूठाहै तोझूठेके लिये तुम्हारा श्रमनिष्फलही देख पड़ताहै १९ औ हे लक्ष्मण जितने इंद्रियों के भोगहैं ते सब मेघोंके समूहमें बिजुलीके चमकके तुल्य चंचलहैं और आयुर्बलभी आगमें तपायाहुआ जो लोहा तिसके ऊपर जैसे पानीकी बूंद डालै वह जैसे शीघ्रही सूखजाती है तैसे क्षणभंगहै २० औ हेलक्ष्मण जैसे सर्पने अपने गलेमें निगला जो मेड़क सो जैसे सर्पके गले में स्थित होके उस सर्पहीके गलेके कोमल मांसको ग्रासकरने की इच्छाकरै और अपनी निकट मृत्युकी तरफ ख्याल न करै तैसेही सब मनुष्य कालरूपी सर्प करके ग्रसेहुये भी अनित्य भोगोंकी इच्छा कररहे हैं २१ ॥

करोतिदुःखेनहिकर्मतंत्रंशरीरभोगार्थमहर्निशंनरः ॥ देहस्तुभिन्नःपुरुषात्समीक्ष्यतेकोवात्रभोगःपुरुषेणभुज्यते २२ पितृमातृसुतभ्रातृदारबन्ध्वादिसंगमः । प्रपायामिवजंतूनांनद्यांकाष्ठौघवच्चलः २३ छायेवलक्ष्मीश्चपलाप्रतीतातारुण्यमम्बूर्मिवदध्रुवंच । स्वप्नोपमंस्त्रीसुखमायुरल्पंतथाऽपिजन्तोरभिमानएषः २४ संसृतिःस्वप्नसदृशीसदारोगादिसंकुला ॥ गन्धर्वनगरप्रख्यामूढस्तामनुवर्त्तते २५ आयुष्यंक्षीयतेयस्मादादित्यस्यगतागतैः ॥ दृष्ट्वाऽन्येषांजरामृत्यूकथंचिन्नैवबुध्यते २६ सएवदिवसःसैवरात्रिरित्येवमूढधीः ॥ भोगाननुपतत्येवकालवेगंनपश्यति २७ प्रतिक्षणंक्षरत्येतदायुरामघटाम्बुवत् ॥ सपत्नाइवरोगौघाःशरीरंप्रहरन्त्यहो २८ ॥

औ हे लक्ष्मण यह जो संसारी मनुष्यहै सो शरीर के भोगके अर्थ रात्रि दिवस धनादिकों का उपार्जन रूप लौकिक कर्म करताहै औ स्वर्गादि कामना करिकै वैदिक कर्म भी करताहै तौ जिसदेहके भोगके अर्थ दो प्रकारका कर्म करताहै वह देह आत्मासे भिन्न दिखाई पड़ताहै अर्थात् जड़है और ऐसा भोग कौनहै जो आत्मा करिकै भोग कियाजावै अर्थात् भोगा जावै इसका आशय यह है कि जिस शरीरके भोगके लिये यह मनुष्य रात्रि दिवस कर्मों में तत्पर होरहाहै वह भोग शरीर को होताहै किंवा आत्माको होता है तिसमें शरीर मात्रको तो संभव नहीं क्योंकि शरीरतौ आत्मासे भिन्न है इसीसे मेरा शरीर स्थूल है कृशहै ऐसी प्रतीति होती है ऐसेही बुद्धि आदि भी आत्मासे भिन्न हैं इसीसे मेरी मलिन बुद्धिहै मेरी शुद्ध बुद्धिहै ऐसी प्रतीति होती है और शरीर जड़है इसीसे मरेहुये शरीरको चन्दनादि लेपनसे अथवा जलाने से सुख दुःखादिक नहीं होते और भोग नाम मैं सुखी हौं मैंदुःखीहौं इसप्रकारसे सुख दुःखादि विकार को कहतेहैं इससे शरीर के जड़होनेसे सुख दुःखादिक ज्ञानके नहीं होने से भोगका सम्भव नहीं होता है और आत्मा शुद्धहै और असंग है और सदा आनन्दरूप है और एक रसहै उसको भी भोग नहीं सम्भव होता इससे अविवेक परस्पर अध्यास करिकै चित्तमें भोग प्रतीयमान है सोभी भ्रान्ति मलकहै अर्थात् आत्मा औ बुद्धि इन दोनोंको जैसा कुछ जानना चाहिये तैसे अलगाके नहीं जानताहै उसको अविवेक कहते हैं तिस अविवेक करिकै जो परस्पर अध्यास अर्थात् झूठाही और काधर्म और में मानलेना जैसे बुद्धि का धर्म जो सुख दुःखादिक तिनको आत्मा में मानना और आत्मधर्म जो ज्ञान है उसको बुद्धिमें मानना इसको अध्यास कहते हैं तिस करिकै बुद्धि में मैं सुखी हौं मैं दुःखी हौं ऐसा कर्मों का भोग प्रतीत होताहै तौ विचार करने से विवेक करके जो देखाजाय तौ यह भोग न बुद्धिही को होताहै न आत्माको है किन्तु दोनों के संबन्ध से झूठाही जल स्थित सूर्य में कंपादि धर्मके तुल्य प्रतीत होताहै तौ हे लक्ष्मण ऐसे झूठ राज्य भोग के लिये कौन विवेकी यत्नकरैगा २२ कदाचित् लक्ष्मणजी कहैं कि आपको ऐसे विवेक से यद्यपि राज्य भोग और बनभोग तुल्यही है तौ भी अयोध्यामें माता पिता मित्र इनको आपका संगम होरहा उसका तो वियोग होगा तिससे श्री राम जी कहते हैं हे लक्ष्मण पिता औ माता औ पुत्र औ भाई औ दारा औ बंधु इनको आदि लेके मित्र वर्गोंका जो मिलाप है सो तौ जैसे प्याऊ पै पानी पीनेको अनेक प्राणी आते हैं उनका जैसे मिलाप होताहै तैसे है अथवा जैसे नदी में अनेक काष्ठोंका मिलाप होताहै फिर जल के प्रवाहसे बियोग भी हो जाताहै तैसे प्राचीन कर्माधीन पिता पुत्रादिकों का मिलाप भी चल है २३

और लक्ष्मी भी छायाके तुल्य चंचलहैं औ तरुण अवस्थाभी जैसे जलकी तरंग स्थिर नहीं रहती है तैसे अस्थिरहै औ स्त्री लोगोंका सुख स्वप्न तुल्य है औ आयुर्बल भी बहुत थोड़ी है तौ भी मनुष्यों को ऐसा अभिमान होरहा है यह मेरा धनहै यह स्त्री है इसको मैं बहुत काल भोग करौंगा २४ औ हे लक्ष्मण संसारकी स्थिति स्वप्न तुल्यहै औ जैसे सहाबादेख पड़ता है ऐसे अत्यन्त अस्थिर है औ मूढ़ पुरुष उसको सत्य करिकै ग्रहण कररहा है २५ औ सूर्य के उदय औ अस्त करिकै मनुष्योंकी दिन दिन आयुर्बल क्षीण होती है जिससे इसीसे औरोंकी वृद्धावस्था और मृत्यु इनको देखताभीहै तौ यह नहीं जानता मूढ़ पुरुष कि मैं भी ऐसेही बूढ़ा होउंगा औ मरजाउँगा २६ और जो मूढ़ बुद्धि पुरुषहै सो यह जानरहाहै कि कल्ह की दिनरात्रि में हमने जो भोग कियाहै वैसाही दिन रात्रि यह भी है अर्थात् कुछ विशेष नहीं है इस रीति से रात्रि दिवस इन्द्रियों के भोगोंही में आसक्त होताहै औ कालके वेगको नहीं देखता कि दिनदिन मेरी आयु क्षीण होती है २७ औ हे लक्ष्मण कच्चे घड़े के जलके सदृश क्षण क्षण में इस पुरुषकी आयु नष्ट होती है और शत्रुओंके तुल्य रोगोंके समूह इसके शरीर के ऊपर प्रहार करते हैं २८ ॥

जराव्याघ्रीवपुरतस्तर्जयंत्यवतिष्ठते ॥ मृत्युःसहैवयात्येषसमयं संप्रतीक्षते २९ देहेऽहंभावमापन्नोराजाऽहंलोकविश्रुतः ॥ इत्यस्मिन्मनुतेजन्तुःकृमिविट्भस्मसंज्ञिते ३० त्वगस्थिमांसविण्मूत्ररेतोरक्तादिसंयुतः ॥ विकारीपरिणामीचदेहआत्माकथंवद ३१ यमास्थायभवाँल्लोकंदग्धुमिच्छतिलक्ष्मण॥ देहाभिमानिनःसर्वेदोषाःप्रादुर्भवन्तिहि ३२ देहोऽहमितियाबुद्धिरविद्यासाप्रकीर्तिता ॥ नाहंदेहश्चिदात्मेतिबुद्धिर्विद्येतिभण्यते ३३ अविद्यासंसृतेर्हेतुर्विद्यातस्यानिवर्तिका ॥ तस्माद्यत्नःसदाकार्य्योविद्याभ्यासेमुमुक्षुभिः ॥ कामक्रोधादयस्तत्रशत्रवःशत्रुसूदन ३४ तत्रापिक्रोधएवालंमोक्षविघ्नायसर्वदा ॥ येनाविष्टःपुमान्हन्तिपितृभ्रातृसुहृत्सखीन् ३५ ॥

और वृद्धावस्था व्याघ्री के तुल्य अगाड़ी खड़ी इसको डरायाकरती है और मृत्यु संनित्यहीरहती तौभी अपने प्रहारकरनेको समयकी प्रतीक्षा करती है अर्थात् कब मेरासमय आवै कब मैं इसके प्राणोंको हरों इस प्रकार से २९ और अंत्यमें जो देह पड़ारहे तौ कृमि पड़जाते हैं और कोई भक्षण करिलेय तौ बिष्टाहो जाताहै और कोई जलादेय तौ भस्म होजाताहै ऐसे देह में यह

पुरुष मैं लोकमें विख्यात राजाहौं ऐसा अभिमान करिरहाहै ३० हे लक्ष्मण जो तुम देहमें आत्मबुद्धिकर क्रोधकरतेहौ सो बन नहीं सक्ता क्योंकि देह तो त्वचा औ हाड़ औ मांस औ विष्ठा औ मूत्र औ वीर्य औ रुधिर आदिकों करिकै संयुक्त होनेसे रसआदिधातु बिकारयुक्तहै औबाल युवादि अवस्था रूप परिणाम युक्त होने से परिणामभी है और आत्मा तो अविकारी है नाम विकार रहित है औ परिणाम रहितहै अर्थात् और और रूपहो जानेको परिणाम कहते हैं सो आत्मामें नहीं है इससे अपरिणामी है ३१ औ हे लक्ष्मण जिस रागादि दोष समूहको आश्रयण करिके तुम क्रोध करिकै लोकको भस्म करनेकी इच्छा करतेहौ वे रागादि दोष देहाभिमानी पुरुषको प्रकट होतेहैं ३२ क्योंकि देहमैं हौं ऐसी बुद्धिको अविद्या कहते हैं औ मैं देहनहीं हौ किन्तु चित्रूप आत्माहौं ऐसी बुद्धिको विद्या कहते हैं ३३ तिसमें अविद्या तो जन्म मरणादिरूप संसारका हेतु है और विद्या संसारकी निवृत्ति करनेवाली है तिस कारणसे मुमुक्षुओं को अर्थात् जिनको मोक्षकी इच्छाहोय तिन पुरुषों को सब कालमें बिद्याहीका अभ्यास करना चाहिये ३४ औ हे शत्रुओंके नाशक तिस विद्या में काम क्रोधआदि शत्रुकहेहैं तिसमें भी मोक्षबिद्यामें एकक्रोधही बड़ाप्रबलशत्रु है जिस क्रोध करिकै आविष्ट पुरुष पिताभाईमित्र आदिकोंको मारताहै ३५॥

क्रोधमूलोमनस्तापःक्रोधःसंसारबन्धनम् ॥ धर्मक्षयकरःक्रोधस्तस्मात्क्रोधंपरित्यज ३६ क्रोधएषमहान्शत्रुस्तृष्णावैतरणीनदी ॥ सन्तोषोनंदनवनंशान्तिरेवहिकामधुक् ३७ तस्माच्छांतिंभजस्वाद्य शत्रुरेवंभवेन्नते ॥ देहेन्द्रियमनःप्राण बुद्ध्यादिभ्योविलक्षणः ३८ आत्माशुद्धःस्वयंज्योतिरविकारीनिराकृतिः ॥ यावद्देहेन्द्रियप्राणैर्भिन्नत्वंनात्मनोविदुः ३९ तावत्संसारदुःखौघैःपीड्यन्तेमृत्युसंयुताः ॥ तस्मात्त्वंसर्वदाभिन्नमात्मानंहृदिभावय ४० बुद्ध्यादिभ्योबहिःसर्वमनुवर्तस्वमाखिदः ॥ भुंजन्प्रारब्धमखिलं सुखंवादुःखमेववा ४१ प्रवाहपतितःकार्य्यंकुर्वन्नापिनलिप्यते ॥ बाह्येसर्वत्रकर्तृत्वमावहन्नपिराघव ४२ ॥

हे लक्ष्मण क्रोधही मूलका कारणहै जिसमें ऐसा मनकाताप होताहै इसका आशय यहहै कि जिससमयमें अन्तःकरणमें क्रोधका बेगबढ़ताहै उससमय में पुरुषको यह विचार नहीं होता कि यह हमको करना उचितहै किनहीं इसी से अपने बड़ोंकोभी दुर्वचन कहताहै औ तिसपै भी क्रोधनहीं शांतहोता तौ ताड़नादिकभी करताहै फिर पिछाड़ीसे घोर संताप को प्राप्त होताहै और

इसीसे क्रोध संसारमें वन्धनको करताहै औ धर्मका क्षय करनेवालाभी क्रोध ही है तिससे हे लक्ष्मण इसक्रोधको त्यागकरो ३६ औ हे लक्ष्मण यह क्रोधही बड़ाभारी शत्रुहै क्योंकि यहक्रोधही अपने मृत्युका भी कारणहै इससे क्रोध वशसे विषभक्षण आदि उपायों करके आत्मघात करताहै औ हे लक्ष्मण यह तृष्णा जो उतरोत्तर बढ़तीहुई धनादि पदार्थों की इच्छाहै सोई बैतरणी नदी है अर्थात् जैसे यमराजके द्वारपै बड़ीभयंकर एक बैतरणी नदी पापी पुरुषोंके तरनेको अशक्य मालूम पड़ती है तैसेही यह तृष्णा रूप नदीभी दुर्मति संसारी पुरुषोंको दुस्तरहै और हे लक्ष्मण संतोष जो बाह्यविषयों के अभिलाषकात्याग सोनंदन वनके तुल्य आनन्दका देने वालाहै औ शांति जो है मनकादमन सोई कामधेनु है अर्थात् जैसे कामधेनु सब पदार्थोंकी देनेवालीहै तैसे शांतिभी सब पदार्थोंकी प्राप्तिमें सुखहै तिससे अधिक सुखके देनेवाली है ३७ हे लक्ष्मण तिस कारणसे शांतिका सेवन इस समयमें करौतो तुम्हारा कोई शत्रु न होगा क्योंकि आत्मामें कोई विकार नहीं है जिससे शत्रु उत्पन्न होय इस आशयसे रामचन्द्र लक्ष्मण से आत्मस्वरूप प्रतिपादन करते हैं कि हे लक्ष्मण आत्मा जो है सो देह इन्द्रिय मन बुद्धि प्राण आदिकों से विलक्षण है ३८ क्योंकि आत्मा शुद्ध है औ स्वयं प्रकाश है औ अविकारी है औ आकाररहित है और देहादिकतौ इससे विपरीत हैं अर्थात् अशुद्ध औ परप्रकाश्य औ विकारी औ साकार हैं इससे आत्मा विलक्षण है औ हे लक्ष्मण जबतक जे पुरुष देह इन्द्रिय प्राण इनसे भिन्न आत्माको नहीं जानते हैं ३९ तबतक जन्ममरणको प्राप्त होते हुये संसारके दुःखोंके समूहों करके पीड़ित होते हैं तिससे तुम सबकालमें आत्माको भिन्नजानो ४० औ हे लक्ष्मण बुद्धि आदि पदार्थोंसे अपनाको न्यारा जानतेहुये बुद्ध्यादिकों को अवलम्बनकरिकै बाहर से लोक व्यवहारको बर्त्तौ औ खेदमत करो और जो प्रारब्ध करके प्राप्त जो सुख व दुःख तिसको भोगते हुये ४१ इस प्रकार संसाररूपी प्रवाहमें गिरेहुयेभी जो तुमहोसो पापपुण्य करके बाह्य जो इन्द्रियादिकहैं तिनमें कर्तृत्व धर्मविचारते हुयेभी नहींलिप्त होउगे ४२ ॥

अन्तःशुद्धस्वभावस्त्वंलिप्यतेनचकर्मभिः॥एतन्मयोदितंकृत्स्नं हृदिभावयसर्वदा ४३ संसारदुःखैरखिलैर्बाध्यसेनकदाचन ॥ त्वमप्यम्बमयादृष्टंहृदिभावयनित्यदा ४४ समागमंप्रतीक्षस्वनदुःखैःपीड्यसेऽचिरम् ॥ नसदैकत्रसंवासः कर्ममार्गानुवर्त्तिनाम् ४५ यथा प्रवाहपतितप्लवानांसरितांतथा ॥ चतुर्दशसमासंख्याक्षणार्द्धमिव

जायते४६ अनुमन्यस्वमामम्बदुखंसंत्यज्यदूरतः ॥ एवंचेत्सुखसंवा सोभविष्यतिवनेमम ४७ इत्युक्त्वादंडवन्मातुःपादयोरपतच्चिरम् ॥ उत्थाप्यांकेसमावेश्यआशीभिरभिनन्दयत् ४८ सर्वेदेवाःसगन्धर्वा ब्रह्मविष्णुशिवादयः ॥ रक्षन्तुत्वांसदायांतंतिष्ठन्तंनिद्रयायुतम् ४९

और भीतरसे शुद्धस्वभाव रहोगे तौ कर्मोंकरके नहीं लिप्तहोउगे हेलक्ष्मण यह मुझकरके कहा जो ज्ञानहै तिसको सब कालमें हृदयमें ध्यानकरो ४३ तौ संपूर्ण जो संसारके दुःखहैं तिनकरिकै कभी न बाधित होउगे अब ऐसे लक्ष्मण से कहिकै मातासे कहते हैं कि हे मातः तुमभी मेरा कहाहुआ जो ज्ञानहै तिसको सदा हृदयमें ध्यानकरो ४४ औ मेरे समागमकी प्रतीक्षा किया करौ गीतौ दुःखकरके नहीं पीड़ित होउगी औ हे मातः कर्म मार्गमें चलनेवाले जो प्राणीहैं तिनका बहुतकाल एकजगह सदा संवास नहीं होता ४५ जैसे नदियों के प्रवाहमें चलतीहुई जो छोटी छोटी नौकाहैं तिनकी एक स्थानपै स्थिति नहीं होसक्ती है तैसे हेमातः चौदह वर्षोंकी संख्याहै सो अर्द्धक्षण के तुल्य व्यतीत होगी ४६ औ हेअम्ब तुम दुःखको त्यागकरकै मुझको आज्ञादी-जिये इसप्रकार तुम्हारी आज्ञासे बनमें सुखपूर्वक मेरा बासहोगा ४७ यहवचन कहिकै श्रीराम माताके चरणोंमें दण्डवत्प्रणाम करतेहुये तब कौशल्याजी श्री रामचन्द्रको उठाकरके अपनीगोदमें बिठाकर आशीर्वाद देतीहुईं ४८ हेराम जिससमयमें तुममार्ग में चलौ अथवा स्थितहोउ अथवा शयनकरौ उससमय में गन्धर्बोंकरके सहितब्रह्मा बिष्णु शिवादिक संपूर्ण देवतारक्षा करैं ४९ ॥

इतिप्रस्थापयामाससमालिंग्यपुनःपुनः॥लक्ष्मणोपितदारामंनत्वा हर्षाश्रुगद्गदः ५० आहराममम्मांतस्थःसंशयोऽयंत्वयाहतः॥यास्यामि पृष्ठतोरामसेवांकर्त्तुन्तदादिश ५१ अनुगृह्णीष्वमांरामनोचेत्प्राणां स्त्यजाम्यहम् ॥ तथेतिराघवोऽप्याहलक्ष्मणंयाहिमाचिरम् ५२ प्रत स्थेतांसमाधातुंगतःसीतापतिर्विभुः ॥ आगतंपतिमालोक्यसीतासु स्मितभाषिणी ५३ स्वर्णपात्रस्थसलिलैः पादौप्रक्षाल्यभक्तितः ॥ पप्रच्छपतिमालोक्यदेवकिंसेनयाविना ५४ आगतोऽसिगतःकुत्रश्वे तच्छत्रंचतेकुतः ॥ वादित्राणिनवाद्यंतेकिरीटादिविवर्जितः ५५ सा मंतराजसहितःसंभ्रमान्नागतोऽसिकिम् ॥ इतिस्मसीतयापृष्टोरामः सस्मितमब्रवीत् ५६ ॥

इसप्रकाररामको बारम्बार हृदयमें आलिंगनकर यात्राकरातीहुई तब उस

समयमें आनन्दके अश्रुपात जिसकेहोरहे और गद्गद बाणी जिसकी होरही है ऐसे जो लक्ष्मणसो राम से वचनबोलतेभये कि हे राम आपने मेरे हृदय का संशय दूर किया और मैं आपके पीछेपीछे सेवा करनेको संग चलाचाहताहूं सो आज्ञा करिये ५० । ५१ औ हेराम मेरे ऊपर अनुग्रहकरिये और जो आप संग न लेजावोगे तौ मैं अपनेप्राणोंको त्यागदेउँगा तब रामचन्द्र कहतेहुये कि हे लक्ष्मण शीघ्रचलौ बिलम्ब न करौ ५२ तिसके उपरान्त सीताजी के चित्त सावधान करनेको राम अपने गृह जातेभये तब मन्द मुसुकानकर बोलनेकाहै स्वभाव जिसका ऐसी जो सीतासो आवतेहुये पतिको देखके सुवर्ण पात्र में जललाके श्रीरामचन्द्र के चरण कमल प्रक्षालनकर आसनपर बिठालके पूछतीहुई कि हेदेव सेनाकेबिना आप कैसेआये५३।५४ और कहांसे इससमय में आवतेहौ और तुम्हाराश्वेत छत्रकहां है और तुम्हारे संग बाजेबजनाचाहिये सो क्यों नहींबजते और मण्डलवर्ती जो राजाहैं तिनके बीचमें सबको संभ्रम उत्पन्नकरतेहुये आपका आगमन उचित था सो इसरीतिसे नहींआये इसमें क्याकारणहै अर्थात् आपको आजराज्यहोनाथा और चक्रवर्तीराजोंकी सवारी जब निकलती है तौ सेनासंग होतीहै और बाजे बजते हैं और श्वेत छत्र शिर के ऊपर होताहै और चौंर ढुरतेहैं और देशदेशके राजा भयभीतहुये संगचलते हैं सो इस राज चिह्नों से नहीं आये इसमें क्या कारणहै ऐसे जब सीताजीने पूछा तौ मंदमुसुकानकर श्रीरामचन्द्रजी वचन बोलतेभये ५५ । ५६ ॥

राज्ञामेदण्डकारण्येराज्यंदत्तंशुभेऽखिलम् ॥ अतस्तत्पालनार्थाय शीघ्रंयास्यामिभामिनि ५७ अद्यैवयास्यामिवनंत्वंतुश्वश्रूसमीपगा । शुश्रूषांकुरुमेमातुर्नमिथ्यावादिनोवयम् ५८ इतिब्रुवंतंश्रीरामंसीता भीताऽब्रवीद्वचः ॥ किमर्थंवनराज्यंते पित्रादत्तंमहात्मना ५९ तामाहरामःकैकेय्यै राजाप्रीतोवरंददौ ॥ भरतायददौराज्यं वनवासंममानघे ६० चतुर्दशसमास्तत्रवासोमेकिलयाचितः ॥ तयादेव्याददौ राजासत्यवादीदयापरः ६१ अतःशीघ्रङ्गमिष्यामिमाविघ्नंकुरुभामिनि ॥ श्रुत्वातद्रामवचनंजानकीप्रीतिसंयुता ६२ अहमग्रेगमिष्यामि वनंपश्चात्त्वमेष्यसि ॥ इत्याहमांविनागंतुंतवराघवनोचितम् ६३ ॥

किहे सीते राजाने मुझको दण्डकवन का सम्पूर्ण राज्य दियाहै इससे तिस आज्ञाको पालन करने को मैं शीघ्रही दण्डकारण्य को जाऊंगा ५७ औ मैं अभीवनको जाताहूं औ हेसीते तुममेरीमाता जो तुम्हारी सासुहै तिसके पासजाके शुश्रूषाकरो औ मैं मिथ्यावादी नहींहूं अर्थात् सत्यही कहताहूं ५८

ऐसाकहते हुये जो श्रीराम तिनसे सीता भयभीतहो बोलतीहुई कि किस प्रयोजनसे महात्मा पिताने तुमको बनका राज्यदिया ५९ तब रामसीता से कहतेभये कि राजादशरथ प्रसन्नहोके कैकेयीको बरदेतेभये हैं तिसमें भरत को राज्य दिया औ मुझको वनदिया ६० तिसमें भी चौदहबर्ष पर्यन्त मेरा बनवास केकयीने राजा से मांगा तौ सत्यबादी औ दयायुक्त राजा वरको देता भया ६१ इससे शीघ्रही मैं बनको जाऊंगा और हे भामिनि तुमको इसमें कुछ बिघ्ननहीं करनाचाहिये यह रामका बचन सुनिकै प्रीति सहित सीता बोलती भई ६२ कि हे राम मैंतो आगे बनको चलौंगी और तुम पीछे चलोगे औ हे राघव मेरे बिना तुमको जाना उचित नहीं है ६३ ॥

तामाहराघवःप्रीतःस्वप्रियांप्रियवादिनीम् ॥ कथंवनंत्वांनेष्येऽहं बहुव्याघ्रमृगाकुलम् ६४ राक्षसाघोररूपाश्चसंतिमानुषभोजिनः ॥ सिंहव्याघ्रवराहाश्च संचरंतिसमंततः ६५ कट्वम्लफलमूलानिभो जनार्थंसुमध्यमे ॥ अपूपानिव्यंजनानिविद्यन्तेनकदाचन ६६ काले कालेफलंवाऽपिविद्यतेकुत्रसुंदरि ॥ मार्गोनदृश्यतेक्वापिशर्कराकंटका न्वितः ६७ गुहागह्वरसंबाधंझिल्लीदंशादिभिर्युतम् ॥ एवंबहुविधं दोषंबनंदंडकसंज्ञितम् ६८ पादचारेणगंतव्यंशीतवातातपादिकम्॥ राक्षसादीन्वनेदृष्ट्वाजीवितंहास्यसेचिरात् ६९ तस्माद्भद्रेगृहेतिष्ठशी घ्रंद्रक्ष्यसिमांपुनः ॥ रामस्यवचनंश्रुत्वासीतादुःखसमन्विता ७० ॥

तब प्रीतियुक्त जो राम सो प्रियवचन कहनेवाली जो प्रिया तिससे बोलते भये कि हेप्रिये बहुतव्याघ्र मृगोंकरके व्याप्त जो बन तिसमें तुझको कैसेलेचलौं ६४ औमनुष्योंके भोजनकरनेवाले भयंकररूपराक्षस जहांबसतेहैं औसिंहब्या- घ्र औशूकरये सबजगह जहां विचरतेहैं ६५ औ करुये खट्टे फल औ मूल ये जहां भोजनको मिलतेहैं औ पुआ औ नानाप्रकारके व्यंजन येकभी जहां मिलतेनहीं ६६ औ हे सुन्दरि फलभीकभी समयमें कभी असमयमें मिलतेहैं औमार्ग जहां नहीं दिखाई पड़ताहै और जहांहै भी तहां कांटे औकंकड़ी बहुतसीहैं ६७ औ झींगुर औ डांस आदि उपद्रवों करके युक्त जहां गुहा आदि स्थानठहरनेकोमि- लताहै हे सीते इसप्रकार बहुतदोषयुक्त दण्डक वनहै ६८ औरजहां पावोंपावँ चलने पड़ताहै और शीत घाम आंधी इनको आदि बहुतसेदोषहैं औ हे सीते भयंकररूप राक्षस आदि दुष्टजीवोंको देखकै जहां तुम शीघ्रही अपने जीवनको त्यागदेवोगी ६९ तिससे हे कल्याण गुणयुक्त सीते तुम गृहमें रहियो तौशीघ्रही फिर मुझको देखोगी ऐसे रामके बचन सुनिकै दुःखपीड़ित जोसीता ७० ॥

प्रत्युवाचस्फुरद्वक्त्राकिंचित्कोपसमन्विता ॥ कथंमामिच्छसेत्यक्तुं धर्मपत्नींपतिव्रताम् ७१ त्वदनन्यामदोषांमांधर्मज्ञोसिदयापरः ॥ त्वत्समीपेस्थितांरामकोवामांधर्षयेद्वने ७२ फलमूलादिकंयद्यत्तवभुक्तावशेषितम् ॥ तदेवामृततुल्यंमेतेनतुष्टारमाम्यहम् ७३ त्वयासहचरंत्यामे कुशाःकाशाश्चकण्टकाः ॥ पुष्पास्तरणतुल्यामे भविष्यन्तिनसंशयः ७४ अहंत्वांक्लेशयेनैवभवेयंकार्यसाधिनी ॥ बाल्येमांवीक्ष्यकश्चिद्वैज्योतिःशास्त्रविशारदः ७५ प्राहतेविपिनेवासःपत्यासहभविष्यति ॥ सत्यवादीद्विजोभूयाद्गमिष्यामित्वयासह ७६ अन्यत्किंचित्प्रवक्ष्यामिश्रुत्वामांनयकाननम् ॥ रामायणानिबहुशःश्रुतानिबहुभिर्द्विजैः ७७ ॥

सो रामसों क्रोध युक्तहोके औ ओंठ जिसका फरकरहा ऐसी बोलतीहुई कि हे राम धर्मपत्नी औ पतिव्रता ऐसी जो मैंहों तिसको कैसे त्यागकरने की इच्छा करतेहो ७१ और आप बड़े धर्म के जाननेवाले औ दयायुक्त होके सिवाय आपके और किसीमें चित्त नहीं जिसका और इसीसे दोषरहित ऐसी जो मैंहों तिसको कैसे त्यागोगे औ हे राम तुम्हारे समीप स्थित जो मैंहों तिसको वनमें कौन तिरस्कार करसक्ताहै ७२ और हे राम तुम्हारे भोजन करने से बाक़ी रहा जो कन्दमूल फलादिक तिसको अमृत तुल्य भोजनकर रमण करोंगी ७३ औ हे राम तुम्हारे संग बनमें चलतीहुई जो मैं तिसको कुश औ कांसकांटे ये सब पुष्पोंके बिछौनोंके तुल्य होंगे इसमें कुछ संशय नहीं है ७४ और हे राम मैं तुमको क्लेश नहीं उत्पन्नकरोंगी और तुम्हारेकार्यके सिद्धकरने वाली होऊंगी अर्थात् राक्षसोंके बधरूपकार्यके साधन करनेवाली मैं हूंगी यह सीताजीका गूढ़ आशय है और भी एक कारण है जिससे मैं अवश्य बनको जाऊंगी सो सुनिये एकसमय बाल्य अवस्थामें एक ज्योतिषशास्त्रमें बड़ानिपुण ब्राह्मण ७५ मुझको देखिकै कहताहुआ कि पतिकेसाथ तेराबनमें बास होगा सो जो तुम्हारे संगबनको जाऊं तौवह ब्राह्मण सत्यबादी होय ७६ और भी कुछ कहतीहों तिसको सुनिकै आपबनको मुझको ले चलिये ब्राह्मणों के मुखसे बहुतसी रामायण मैंने सुनीहै ७७॥

सीतांविनावनंरामोगतःकिंकुत्रचिद्वद ॥ अतस्त्वयागमिष्यामिसर्वथात्वत्सहायिनी ७८ यदिगच्छसिमांत्यक्त्वाप्राणांस्त्यक्ष्यामितेऽग्रतः ॥ इतितन्निश्चयंज्ञात्वासीतायारघुनन्दनः ७९ अब्रवीद्देविगच्छ

त्वंवनंशीघ्रम्मयासह ॥ अरुन्धत्यैप्रयच्छाशुहारानाभरणानिच८० ब्राह्मणेभ्योधनंसर्वंदत्त्वागच्छामहेवनम् ॥ इत्युक्त्वालक्ष्मणेनाशुद्विजानाहूयभक्तितः ८१ ददौगवांवृन्दशतंधनानिवस्त्राणिदिव्यानिविभूषणानि ॥ कुटुंबवद्भ्यःश्रुतशीलवद्भ्योमुदाद्विजेभ्योरघुवंशकेतुः ८२ अरुन्धत्यैददौसीतामुख्यान्याभरणानिच ॥ रामोमातृसेवकेभ्योददौधनमनेकधा ८३ स्वकांतःपुरवासिभ्यःसेवकेभ्यस्तथैवच ॥ पौरजानपदेभ्यश्चब्राह्मणेभ्यःसहस्रशः ८४ ॥

तिनमें सीताके विनराम कभी वनको गयेहोवैं तौ आपही कहिये इससे तुम्हारे संगवनको मैं चलौंगी औ सर्वप्रकारसे तुम्हारा सहाय करौंगी ७८ और जो कदाचित् मुझको त्यागकै वनको जावोगे तौ तुम्हारे आगेही अपने प्राणोंको त्यागकरदेऊंगी अब श्रीरामचन्द्र यह सीता का निश्चय जानके ७९ बोलतेहुये कि हेदेवि शीघ्रही मेरेसंग वनको चलौ और अरुन्धती जो वशिष्ठकी स्त्रीहैं तिनके अर्थ शीघ्रही अपना हार औ आभूषण देवो ८० और मैं भी ब्राह्मणोंके अर्थ अपना सबधनदेकै बनको चलताहूं यद्यपि बाल्मीकीय रामायणमें सीताजीने बनके जानेके समयमें अरुन्धतीके पुत्रकी स्त्रीको अपना आभूषण दियाहै और रामचन्द्रने बिशेषकरके बशिष्ठके पुत्रहीको अपना मुख्य धन दिया और भी ब्राह्मणों को सुवर्णकी राशि लगाकर देतेभये ऐसा लिखा है तौभी आत्माही अपनापुत्र होता है ऐसे वेदकी आज्ञासे वशिष्ठके पुत्रको औ पुत्रबधूको धन देने मेंभी वास्तवमें वशिष्ठ और अरुन्धतीही को प्राप्त हुआ इस आशयसे यहां अरुन्धती को आभूषण देना कहने में बहुत बिरोध वाल्मीकीयसे नहीं है यहसज्जन पुरुष विचारकरैं अब श्रीरामचन्द्र ऐसेपूर्वोक्त वचन सीतासे कहके लक्ष्मण के द्वारा ब्राह्मणोंको बुलवाकर ८१ भक्तियुक्त श्रीरामचन्द्र विद्याबिनय युक्त कुटुंबी श्रेष्ठ ब्राह्मणों को गौवों के सैकड़ों समूह औ सुवर्णकी राशि लगाकर औ नानाप्रकार के बस्त्र औ आभूषण प्रीतिपूर्वक देतेभये ८२ औ सीताजी अरुन्धती के अर्थ अपने आभूषण देती भईं औ रामचन्द्र अपनी माताके सेवकोंको अनेक प्रकारका धन देतेभये ८३ और अपने महलके जो सेवकहैं तिनकोभी देतेभये और पुरवासी और देश देशके जो हजारों ब्राह्मण आयेथे तिनके अर्थ भी धनदेतेभये ८४ ॥

लक्ष्मणोऽपिसुमित्रान्तुकौशल्यायैसमर्पयत् ॥ धनुःपाणिःसमागत्यरामस्याग्रेव्यवस्थितः ८५ रामःसीतालक्ष्मणश्चजग्मुःसर्वेनृपालयम् ८६ श्रीरामःसहसीतयानृपपथेगच्छन्शनैःसानुजःपौरान्जानपदा

न्कुतूहलदृशःसानंदमुद्वीक्षयन् ॥ श्यामःकामसहस्रसुन्दरवपुःकांत्या दिशोभासयन्पादन्यासपवित्रिताऽखिलजगत्प्रापालयन्तत्पितुः८७

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकाण्डे चतुर्थस्सर्गः ४ ॥

और लक्ष्मणजी भी सुमित्रामाताको कौशल्याको सौंपते भये औ आप धनुषको हाथमें लेके शीघ्रही आय रामके आगे स्थित होतेभये ८५ अब इस प्रकार अपनी अपनीतैयारी करके राम औ सीता औ लक्ष्मणयेसबराजा दशरथ के मंदिरको जातेभये ८६ अब सीता लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्र धीरे धीरे राजमार्गमें चलते हुये औआजु राजाधिराज दशरथके पुत्र श्रीरामचन्द्र चरणों से पृथिवीमें चलरहेहैं ऐसे आश्चर्य युक्तहैं नेत्रजिनके ऐसे पुरबासियोंको औ देशदेशोंके मनुष्योंको आनन्द पूर्वक देखतेहुये औ हजारों कामदेवोंसे सुन्दर जो श्यामवपु तिसको धारण किये और अपनी कान्ति करके सब दिशोंको प्रकाशित करते हुये औ अपने चरणोंके धरनेसे पृथिवी लोकको पवित्र करते हुये पिताके मन्दिरमें प्राप्तहोतेभये ८७ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकाण्डे भाषाटीकायांचतुर्थस्सर्गः ४ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ आयांतंनागराहृष्ट्वामार्गेरामंसजानकिम् ॥ लक्ष्मणेनसमंवीक्ष्यऊचुःसर्वेपरस्परम् १ कैकेय्यावरदानादिश्रुत्वा दुःखसमावृताः ॥ बतराजादशरथःसत्यसंधंप्रियंसुतम् २ स्त्रीहेतोर त्यजत्कामीतस्यसत्यवताकुतः॥कैकेयीवाकथंदुष्टारामंसत्यंप्रियंकरम् ३ विवासयामासकथंक्रूरकर्माऽतिमूढधीः ॥ हेजनानात्रवस्तव्यंग च्छामोद्यैवकाननम् ४ यत्ररामःसभार्यश्चसानुयोगंतुमिच्छति ॥ प श्यंतुजानकींसर्वेपादचारेणगच्छतीम् ५ पुंभिःकदाचिदृष्ट्वाजान कीलोकसुंदरी ॥ सापिपादेनगच्छंती जनसंघेष्वनावृता ६ रामोऽपि पादचारेणगजाश्वादिविवर्जितः ॥ गच्छतिद्रक्ष्यथविभुंसर्वलोकैक सुंदरम् ७ ॥

दोहा । पितु आयसु लै पांचमें गवन धीर धरि कीन्ह ॥
तमसाजन तजि गुह मिले जटा मुकुट करिलीन्ह ५

अब श्री महादेवजी पार्वती से कहतेहैं कि हे पार्वति सीता लक्ष्मणसहित श्रीरामचन्द्र को राजमार्ग में आते देखके पुरबासी मनुष्य परस्पर बोलते

हुये १ केकयी के वरदानादि कथा सुनके बड़े दुःखसे पीड़ित हो यह कहते हुये कि बड़े खेदकी बार्ता है कि राजादशरथ स्त्रीके कारणसे जो सत्यमर्याद प्रिय पुत्रको २ त्यागताभया तो उसकी सत्यता कहांहै और केकयी भी प्रथम तो राममें प्रीतियुक्त थी ३ फिर दुष्टाहोके सत्य बोलनेवाला औ प्रीति का करनेवाला जो राम तिसको कैसे बनबास को भेजतीहुई इससे बिदित होता है कि केकयी बड़ी कठोर हृदय और मूढ़मति है इससे हे मनुष्यो इस दुष्टा केकयी के नगर में नहीं बासकरना योग्य है अभी सब हम बनको जातेहैं ४ जिस बनमें सीता लक्ष्मण सहित श्रीराम जानेकी इच्छा करते हैं और तुम सब देखो राजा जनककी कन्या अपने पावोंसे चल रहीहै ५ जो सीताकभी किसी पुरुषने नहीं देखी सो लोक में एकही सुन्दरी सीता अनावृत देशमें अर्थात् सबके सामने अपने चरणों से पृथिवी में चल रही है ६ और रामभी हाथी घोड़ेआदि सवारियोंके बिनाही जो पावोंसे चलरहेहैं ऐसे जो सब लोकों में एकसुन्दर औ स्वामी तिनको देखो ७ ॥

राक्षसीकैकयीनाम्नीजातासर्वविनाशिनी ॥ रामस्यापिभवेदुःखं सीतायाःपादयानतः ८ बलवान्विधिरेवात्रपुंप्रयत्नोहिदुर्बलः ॥ इति दुःखाकुलेवृन्देसाधूनांमुनिपुंगवः ९ अब्रवीद्वामदेवोऽथसाधूनांसंघ मध्यगः ॥ मानुशोचथरामंवासीतांवावच्मितत्त्वतः १० एषरामःपरो विष्णुरादिनारायणःस्मृतः ॥ एषासाजानकीलक्ष्मीर्योगमायेतिविश्रु ता ११ असौशेषस्तमन्वेतिलक्ष्मणाख्याऽद्यसांप्रतम् ॥ एषमाया गुणैर्युक्तस्तत्तदाकारवानिव १२ एषयेवरजोयुक्तोब्रह्माऽभूद्विश्वभूव नः ॥ सत्वाविष्टस्तथाविष्णुस्त्रिजगत्प्रतिपालकः १३ एकरुद्रस्ता मसोंऽतेजगत्प्रलयकारणम् ॥ एषमत्स्यःपुराभूत्वाभक्तंवैवस्वतं म नुम् १४ ॥

और केकयी के नामसे कोई दुष्टाराक्षसी हमारे सबके नाश करनेको प्रकट हुई है और सीताके चरणोंसे चलने में रामकोभी दुःख होताहोगा ८ और देखो भाइयो दैवबड़ा बलवान् है और पुरुषोंकायत्न सब दुर्बल है अर्थात् जहां लोकनाथ राम और सीता इस रीति से मार्गमें चलरहे हैं ऐसे दुःखकरके व्याकुल सज्जन पुरुषोंको देखके सबके मध्यमें स्थित जो मुनियों में श्रेष्ठ बामदेव मुनि ९ सो बोलते भये कि तुमसबजने रामको व सीताको मतशोचकरौ मैं यथार्थ सत्यवचन कहताहूं सो सुनो १० यह राम प्रकृति से परे सब का कारण बिष्णुहै जिसको नारायण कहतेहैं और यह सीता जो है सो योगमाया

श्रीलक्ष्मी नाम कर विख्यात है ११ और जो इससमयमें इनके पीछे जारहा है सो लक्ष्मणसा शेषहै और यह राम माया गुणों करके युक्तहोके तैसे तैसे स्वरूप का प्रतीयमान होताहै १२ जब यह रजोगुण युक्तहोताहै तौ ब्रह्मारूप होके सब विश्वको उत्पन्न करताहै औ जब सत्त्वगुण युक्तहोताहै तौ विष्णुरूप हो तीनों लोकों का पालन करताहै १३ और जो तमोगुण युक्त होताहै तौ रुद्ररूप होके अन्तमें सबका संहार करता है और यही राम पहिले मत्स्यरूप धारण करके अपनाभक्तजो वैवस्वत मनुहै तिसको १४ ॥

नाव्यारोप्यलयस्यांतंपालयामासराघवः ॥ समुद्रमथनेपूर्वंमंदरे सुतलंगते १५ अधारयत्स्वपृष्ठेन्द्रिकूर्मरूपीरघूत्तमः ॥ महींरसात लंयाताप्रलयेसूकरोऽभवत् १६ तोलयामासदंष्ट्राग्रेतांक्षोणींरघुनंद नः ॥ नारसिंहंवपुःकृत्वाप्रह्लादवरदःपुरः १७ त्रिलोककंटकंरक्षःपा टयामासतन्नखैः ॥ पुत्रराज्यंहृतंदृष्ट्वाह्यदित्यायाचितःपुरा १८ वा मनत्वमुपागम्ययांचयाचाहरत्पुनः ॥ दुष्टक्षत्रियभूभारनिवृत्त्यैभार्ग वोऽभवत् १९ सएवजगतांनाथइदानींरामतांगतः ॥ रावणादीनि रक्षांसिकोटिशोनिहनिष्यति २० मानुषेणैवमरणंतस्यदृष्टंदुरात्मनः ॥ राज्ञादशरथेनापितपसाराधितोहरिः २१ ॥

नौका पै बिठा करके प्रलय काल पर्यन्त रक्षा करता हुआ और पहिले समुद्र के मन्थन में मन्दर पर्वत जब पाताल को चलागया १५ तबयही रघु- नन्दन कूर्म रूप धारण करके आपने पीठके ऊपर मन्दराचल को धारण करता हुआ और जब पृथिवी रसातलको चलीगई तब प्रलय कालके जलमें श्रीराम वाराह रूप धारणकरके १६ अपनीदंष्ट्राके अग्रभाग में अर्थात् दाढ़के ऊपर पृथिवीको धारण करतेहुये फिर यहीराम पहिले नृसिंहरूप धारणकर तीनोंलोकका कंटक जो हिरण्यकशिपु दैत्य तिसको अपने नखोंसे विदारण करते हुये औ प्रह्लादको बरदेते हुये १७ और जब इन्द्रका राज्य राजा बलि ने हरलिया तब यही राम अदिति करके प्रार्थना कियेगये १८ बामनरूप धा- रणकर यांचाके छल करके तीनोंलोक बलिसे लैकै इन्द्रको दै देतेहुये फिर यही राम दुष्ट क्षत्रिय रूप जो पृथिवी का भार तिसको दूर करनेको भृगुवंशमें जमदग्निके पुत्र परशुराम रूप धारण करि क्षत्रियोंका नाश करतेहुये १९ सोई सब जगत् का नाथ अब इस समयमें रामनाम करकेहुआहै सो रामजीरावण आदि जो कड़ोरों राक्षस तिनको नाश करेंगे २० क्योंकि उस दुष्टात्मा की

मनुष्यही करके मृत्यु देखीगई औरराजा दशरथने भी प्रथम तपकरके नारायण का आराधन कियाहै २१ ॥

पुत्रत्वाकांक्षयाविष्णोस्तदापुत्रोभवद्धरिः ॥ सएवविष्णुःश्रीरामो रावणादिवधायहि २२ गंताद्यैववनंरामोलक्ष्मणेनसहायवान् ॥ एषासीताहरेर्मायासृष्टिस्थित्यन्तकारिणी २३ राजावाकैकयीवाऽपिनात्रकारणमण्वपि ॥ पूर्वेद्युर्नारदःप्राहभूभारहरणायच २४ रामोऽप्याहस्वयंसाक्षाच्छ्वोगमिष्याम्यहंवनम् ॥ अतोरामंसमुद्दिश्यचिंतांत्यजतबालिशाः २५ रामरामेतियेनित्यं जपंतिमनुजाभुवि ॥ तेषांमृत्युभयादीनिनभवंतिकदाचन २६ कापुनस्तस्यरामस्यदुःखशंकामहात्मनः ॥ रामनाम्नैवमुक्तिःस्यात्कलौनान्येनकेनचित् २७मायामानुषरूपेणविडंबयतिलोककृत्॥भक्तानांभजनार्थायरावणस्यवधायच २८

कि विष्णुही मेरा पुत्रहो इस कामनासे तिस कारण से साक्षात् नारायण ही दशरथका पुत्र होताहुआ सो विष्णु जो ये रामहैं सो अभी रावण आदि राक्षसों के बधके अर्थ २२ लक्ष्मण सहित बनको जावेंगे और यह जो सीता हैं सो सब जगत्के रचनेवाली औ पालन करनेवाली औसंहार करनेवाली मायारूप हरिकी शक्ति हैं २३ राजा दशरथ अथवा केकयी ये कुछ भी इसमें कारण नहीं हैं क्योंकि पहिलेदिन नारद आके इन रामसे पृथिवीके भार के हरण के लिये प्रार्थना करतेभये २४ तौ रामने साक्षात् नारदसे कहा कि मैंप्रातःकाल वनको जावोंगा इससे हे मूर्खो रामको दुःख होरहा है ऐसामानके जो चिन्ताहै तिसको त्यागदेवो २५ और जे मनुष्य पृथिवी पै राम राम ऐसा नित्य जपते हैं तिन पुरुषोंको मृत्यु भयादिक भी नहीं होते हैं २६ और तिस महारामको दुःख की शंका करनी यह क्या कहनाहै और कलियुगमें रामही करके मुक्ति होती है और कोई उपाय नहीं है २७ सो राममायामनुष्यरूप धारणकर मनुष्योंको अपने अच्छे आचरण करके शिक्षा करता है और भक्तों को भजनके अर्थ और रावण के बधके लिये २८ ॥

राज्ञश्चाभीष्टसिध्यर्थंमानुषंवपुराश्रितः ॥ इत्युक्त्वाविररामाथवामदेवोमहामुनिः २९ श्रुत्वाऽतेपिद्विजाःसर्वेरामंज्ञात्वाहरिंविभुम् ॥ जहुर्हृत्संशयग्रंथिंराममेवान्वचिंतयन् ३०-यइदंचिंतयेन्नित्यं रहस्यं रामसीतयोः ॥ तस्यरामेदृढाभक्तिर्भवेद्विज्ञानपूर्विका ३१ रहस्यं गोपनीयंवोयूयंवैराघवप्रियाः ॥ इत्युक्त्वाप्रययौविप्रस्तेऽपिरामंपरंवि

दुः ३२ ततोरामस्समाविश्यपितृगेहमवारितः॥ सानुजःसीतयागत्वा कैकेयीमिदमब्रवीत् ३३ आगतास्मोवयंमातस्त्रयस्तेसंमतंवनम्॥ गंतुंकृतधियःशीघ्रमाज्ञापयतुनःपिता ३४ इत्युक्तासहसोत्थायचीराणि प्रददौस्वयम् ॥ रामायलक्ष्मणायाथसीतायैचपृथक्पृथक् ३५ ॥

औरराजा दशरथकेअभीष्ट सिद्धिकेअर्थ मनुष्य वपुका आश्रयणकियाहै इतना कहके वामदेव जो मुनियोंमें श्रेष्ठहैं सो मौन होजातेहुये २९ यहवामदेवजीका वचन सुनि जितने ब्राह्मण लोगथे तेसब अपनेहृदयकी संशय रूप ग्रंथिको भेदन कर रामहीका चिन्तन करते हुये ३० अबजोकोई मनुष्य इस राम सीताके रहस्यको नित्य स्मरण करैगा।तिसकी राममें विज्ञानपूर्वक अर्थात् ज्ञान सहित दृढ भक्तिहोगी ३१ औ हे ब्राह्मणो जिससे तुमको राम प्रिय है इस मेरेकहेहुये रहस्यको गुप्त रक्खोगे अर्थात् लोकमें भी प्रिय वस्तु गुप्तकीजाती है जैसे लोभीकाधन यह वचनकहि वामदेवजी जाते हुये औ वे ब्राह्मण श्रीराम को परमतत्त्व जानते हुये ३२ तिसके अनन्तर लक्ष्मण सीता सहित रामचन्द्र पिताके घरमें प्रवेश कर केकयीसे यह वचन बोलतेहुये ३३ कि हेमातः तुमको अभीष्ट जो वन तिसकोजानेकी कीहैबुद्धि जिन्होंने ऐसे हम तीनोंजने प्राप्त हुयेहैं इससे ऐसाकीजिये जिससेशीघ्रही पिता आज्ञा हमको देवैं ३४ ऐसा रामका वचन सुनके केकयी शीघ्रही उठकर अपने हाथसे राम और सीता औ लक्ष्मण इनको चीरवस्त्र देती हुई ३५ ॥

रामस्तुवस्त्राण्युत्सृज्यवन्यचीराणिपर्यधात् ॥ लक्ष्मणोपितथाचक्रेसीतातन्नविजानती ३६ हस्तेगृहीत्वारामस्यलज्जयामुखमैक्षत ॥ रामोगृहीत्वातच्चीरमंशुकेपर्यवेष्टयत् ३७ तदृष्ट्वारुरुदुःसर्वेराजदाराःसमंततः ॥ वशिष्ठस्तुतदाकर्ण्यरुदितंभर्त्सयन्रुषा ३८ कैकेयींप्राहदुर्वृत्तेरामएवत्वयावृतः ॥ वनवासायदुष्टेत्वंसीतायैकिंप्रयच्छसि ३९ यदिरामंसमन्वेतिसीताभक्त्यापतिव्रता ॥ दिव्याम्बरधरानित्यंसर्वाभरणभूषिता ४० रमयत्वनिशंरामंवनदुःखनिवारिणी ॥ राजा दशरथोऽप्याहसुमंत्रंरथमानय ४१ रथमारुह्यगच्छंतुवनंवनचरप्रियाः ॥ इत्युक्तारामालोक्यसीतांचैवसलक्ष्मणम् ४२ ॥

तब रामचन्द्र अपने वस्त्रोंको उतारिकै केकयी के दियेहुये जो वनके योग्य वस्त्रहैं तिनको धारणकरते हुये तैसेही लक्ष्मणभी धारणकरते हुये और सीता तौ उन वस्त्रोंका पहिनना न जानती थी ३६ इससे केवल हाथमें लेकै लज्जा

करिकै रामके मुखको देखती हुई तौ राम सीताके हाथसे उन वस्त्रोंको लैके सीताके बस्त्रोंके ऊपर लपेट देतेहुये ३७ यह चरित्रको देखके राजा दशरथकी जो सातसौ रानी थीं वे सब रोनेलगीं उससमय में वशिष्ठजी महाराज उन रानियों के रोनेका घोर शब्द सुनिकै क्रोधकरिकै केकयी को ललकारतेहुये ३८ केकयी से यह कहतेहुये कि हेदुर्वृत्ते खोटे आचरण करनेवाली औ हेदुष्टे तूने बनवासके लिये एकरामका वरमांगाथा फिर सीताको क्यों वनके बस्त्रपहिरने को देती है ३९ और जो कदाचित् पतिव्रता सीता अपनी इच्छासे भक्तिकरके रामके संगजाती है तो दिव्यबस्त्रों को धारणकरे औ संपूर्ण आभूषणों करके भूषितहुई ४० निरन्तर रामको रमण करावै और रामके बनके दुःखोंको निवारण करतीहुई जावै और राजा दशरथभी सुमंत्रसे कहतेहुये कि हे सुमंत्र तुम रथको ल्यावो ४१ क्योंकि बनमें रहनेवाले मुनिलोग हैं प्रिय जिन्हों को अथवा मुनियों को प्रिय ऐसे जो राम लक्ष्मण सीता ये तीनोंरथके ऊपर चढ़िकै बनको जावैं ऐसे वचन राजादशरथ कहिकै औ रामको देखिकै औ लक्ष्मण औ सीता इनको देखिकै ४२ ॥

दुःखान्निपतितोभूमौरुरोदाश्रुपरिप्लुतः ॥ आरुरोहरथंसीताशीघ्रंरामस्यपश्यतः ४३ रामःप्रदक्षिणंकृत्वापितरंरथमारुहत् ॥ लक्ष्मणःखड्गयुगलंधनुस्तूणीयुगंतथा ४४ गृहीत्वारथमारुह्यनोदयामाससारथिम् ॥ तिष्ठतिष्ठसुमंत्रेतिराजादशरथोब्रवीत् ४५ गच्छगच्छेतिरामेणनोदितोऽचोदयद्रथम् ॥ रामेदूरंगतेराजामूर्च्छितःप्रापतद्भुवि ४६ पौरास्तुबालवृद्धाश्चवृद्धाब्राह्मणसत्तमाः ॥ तिष्ठतिष्ठेतिरामेतिक्रोशन्तोरथमन्वयुः४७राजारुदित्वासुचिरंमानयंतुगृहंप्रति ॥ कौशल्यायाराममातुरित्याहपरिचारकान् ४८ किंचित्कालंभवेत्तत्रजीवनंदुःखितस्यमे ॥ अतऊर्ध्वंनजीवामिचिरंरामंविनाकृतः ४९ ॥

बड़े भारी दुःखसे पृथिवी में गिरपड़ा औ नेत्रोंसे अश्रुधारा जिसके चली जाती हैं ऐसा रोताहुआ अब रामके देखतेई सीता शीघ्रही रथके ऊपर चढ़ती हुई ४३ औ राम पिताकी प्रदक्षिणा करकै रथपै चढ़तेहुये औ लक्ष्मणदोखड्ग औ दो धनुष औ दो तरकस इनको ग्रहणकर रथपै चढ़िकै सारथी को चलने की आज्ञा देतेहुये ४४ अब उससमय में हेसुमंत्र तिष्ठ तिष्ठ अर्थात् खड़ेहो खड़ेहो ऐसा वचन तो सारथी से दशरथ कहतेहुये ४५ औ गच्छ गच्छ अर्थात् चलौ चलौ ऐसा वचन राम कहते हुये परन्तु उस समयमें रामकी आज्ञासे सुमंत्र रथको चलाताई हुआ जब रामचन्द्र राजाके नेत्रोंकी दृष्टिसे दूरचले

गये अर्थात् जब रथभी नहीं दिखाईदिया तब राजादशरथ मूर्च्छित होके पृथिवी में गिरपड़ताहुआ ४६ अब बालवृद्धपर्यंत पुरवासीलोग और बड़े श्रेष्ठ ब्राह्मणलोग ये सब हेरामरखड़ेहो २ ऐसा चिचियाते हुये रथके पीछे चलते हुये ४७ अब राजा वहुत काल रोदनकर राम की माता जो कौशल्या तिसके सेवकोंसे यह कहते हुये कि तुमसब कौशल्याके गृह मुझकोप्राप्तकरौ ४८ क्योंकि रामवियोग करिकै दुःखित जो मैं हौं तिसका जीवन कुछ काल कौशल्या के गृहमें होगा तिसके उपरांत रामके विना बहुत काल में जीवोंगा नहीं ४९ ॥

ततोगृहंप्रविश्यैवकौशल्यायाःपपातह ॥ मूर्च्छितश्चिराद्बुध्वातूष्णीमेवावतस्थिवान् ५० रामस्तुतमसातीरंगत्वातत्रावसत्सुखी । जलंप्राश्यनिराहारो वृक्षमूलेऽस्वपद्विभुः ५१ सीतयासहधर्मात्माधनुःपाणिस्तुलक्ष्मणः ॥ पालयामासधर्मज्ञःसुमंत्रेणसमन्वितः ५२पौराःसर्वेसमागत्यास्थितास्तस्याविदूरतः॥ शक्तारामंपुरंनेतुंनोचेद्गच्छामहेवनम् ५३इतिनिश्चयमाज्ञायतेषांरामोतिविस्मितः॥ नाहंगच्छामिनगरमेतेवैक्लेशभागिनः ५४ भविष्यंतीतिनिश्चित्यसुमंत्रमिदमब्रवीत् ॥ इदानीमेवगच्छामःसुमंत्ररथमानय५५इत्याज्ञप्तःसुमंत्रोपिरथंवाहैरयोजयत् ॥ आरुह्यरामःसीताचलक्ष्मणोपिययुर्द्रुतम्५६॥

तिससे अनन्तर राजा कौशल्याके गृहमें प्रवेश करिकै पृथिवीमें गिरपड़ता हुआ फिर मूर्च्छित राजा बहुतकालमें सचेतहो मौनही होकै स्थितहोताहुआ ५० रामचन्द्र तौ तमसानदीकेतीर प्राप्तहोकै तहां सुखपूर्वक वास करतेहुये केवल जलमात्र पीकरके सीताकरके सहित धर्मात्मा रामवृक्ष के तले जड़के समीप शयन करतेहुये ५१ उस समयमें सुमन्त्र सहित जो लक्ष्मण सो धनुष हाथ में ले करके रामकी रक्षा करताहुआ क्योंकि सेवा धर्मको जाननेवाले हैं ५२ इतने में पुरबासी लोग भी वहां आकर रामके समीपही स्थितहोते हुये और यह निश्चय करतेहुये कि रामको अयोध्या लेजानेको नहीं समर्थहोंगे तो रामके संग बनहीं को जायँगे ५३ ऐसे पुरबासियों की निश्चय जानके अतिबिस्मित आश्चर्ययुक्त सो राम ऐसा बिचारकरते हुये कि मैं तो नगरको जाऊंगा नहीं और ये सबक्लेश भागी होयँगे ५४ ऐसा निश्चयकरके कुछ रात्रि अवशिष्ट रहीथी उसीसमय सुमन्त्रको आज्ञाकरतेहुये कि अभीहम जावेंगे हे सुमन्त्ररथ को ल्यावो५५ इसप्रकारआज्ञापित जो सुमन्त्र सो रथघोड़ोंसेजोड़के समीपप्राप्त करताहुआतौ राम औ सीता औ लक्ष्मण ये शीघ्रही रथपै चढ़के जातेहुये५६॥

अयोध्याभिमुखंगत्वाकिंचिद्दूरंततोययुः ॥ तेऽपिराममदृष्ट्वैवप्रात रुत्थायदुःखिताः ५७ रथनेमिगतंमार्गंपश्यंतस्तेपुरंययुः ॥ हृदिरा मंससीतंतेध्यायंतस्तस्थुरन्वहम् ५८ सुमंत्रोऽपिरथंशीघ्रंनोदया माससादरम् ॥ स्फीतान्जनपदान्पश्यन्रामःसीतासमन्वितः ५९ गंगातीरंसमागच्छच्छृंगिवेराद्विदूरतः ॥ गंगांदृष्ट्वानमस्कृत्यस्नात्वा सानंदमानसः ६० शिंशपावृक्षमूलेसनिषसादरघूत्तमः ॥ ततोगुहो जनैःश्रुत्वारामागममहोत्सवम् ६१ सखायंस्वामिनंद्रष्टुंहर्षात्तूर्णंसमा पतत् ॥ फलानिमधुपुष्पादिगृहीत्वाभक्तिसंयुतः ६२ रामस्याग्रेवि निक्षिप्यदंडवत्प्रापतद्भुवि॥ गुहमुत्थाप्यतंतूर्णंराघवःपरिषस्वजे६३॥

कुछदूर अयोध्या की तरफ़ रथको हांकके फिरबनके मार्गही जातेहुये और पुरबासी लोग तौ प्रातःकाल उठिकर रामको बिनादेखे अतिदुःखितहोके ५७ रथके पहियों के मार्गको देखिकै पुरहीको जातेहुये अर्थात् रामकी आज्ञासे सु- मन्त्रने ऐसा रथचलाया जिसमें अयोध्या पुरबासियोंको अपनामार्ग न मिलै इससे व्यामोहित होकै अयोध्याहीको लौटजातेहुये फिर सब अयोध्यामें जाके सीता सहित रामको हृदयमें ध्यान करते हुये दिनादिन स्थित होतेहुये ५८सु- मन्त्र भी आदरपूर्वक शीघ्रही रथको चलाताहुआ और सीता सहित राम बड़े समृद्धयुक्त देशोंको देखतेहुये ५९ शृंगवेरपुर के समीप गंगातीर प्राप्तहोतेहुये अब श्रीरघुनाथजी गंगाजीको देखके औ नमस्कारकरके औ स्नान करके आ- नन्दयुक्तहै मन जिनका ६० ऐसे होके शिंशपावृक्षके जड़के समीप अर्थात् शि- रसाके वृक्षके समीप बैठतेहुये तब गुहजो निषादसो रामके आगमनको अपने मनुष्यों से सुनिकै ६१ बड़ेहर्ष से फलमधु पुष्प आदि भेटलेकै परमभक्तियुक्त निषाद अपने सखा जो रामचन्द्र तिनको देखनेको शीघ्रही आवताहुआ ६२ फिर रामके आगे सम्पूर्ण वस्तु स्थापनकर दण्डवत् पृथ्वी में चरणों के समीप पड़ताहुआ तब श्रीरामचन्द्र शीघ्रही निशादको उठाकर अपने हृदयसे आलिं- गन करतेहुये ६३ ॥

संपृष्टकुशलोरामंगुहः प्रांजलिरब्रवीत् ॥ धन्योऽहमद्यमेजन्मनै षादंलोकपावन ६४ बभूवपरमानंदःस्पृष्ट्वातेऽगंरघूत्तम ॥ नैषादरा ज्यमेतत्तेकिंकरस्यरघूत्तम ६५ त्वदधीनंवसत्रत्रपालयास्मान्रघूद्व ह ॥ आगच्छयामोनगरंपावनंकुरुमेगृहम् ६६ गृहाणफलमूलानि त्वदर्थंसंचितानिमे ॥ अनुगृह्णीष्वभगवन्दासस्तेऽहंसुरोत्तम ६७

रामस्तमाहसुप्रीतोवचनंशृणुमेसखे ॥ नवेक्ष्यामिगृहंग्रामंनववर्षाणिपंचच ६८ दत्तमन्येननोभुंजेफलमूलादिकंचन ॥ राज्यंममैतत्तेसर्वंत्वंसखामेऽतिवल्लभः ६९ वटक्षीरंसमानाय्यजटामुकुटमादरात्॥ वबंधलक्ष्मणेनाथसहितोरघुनंदनः ७० ॥

जब श्रीरामचन्द्र ने कुशलपूछी तब निषाद हाथजोड़के बोला कि हे लोकपावन लोकों के पवित्र करनेवाले आजुमैं धन्यहुआ और आपके अंगके स्पर्श से मेरा निषाद कुलमें जो जन्म सो धन्यहुआ ६४ औ हेरघूत्तम आपकेअंगको स्पर्शकरके परमउत्कृष्ट जो आनन्दहै सो होताहुआ औ हे रघूत्तम आपका किंकर सेवक जो मैं हौं तिसका जो निषादोंका राज्यहै ६५ सो सब तुम्हारे आधीनहै अर्थात् तुम्हारे समर्पणहै औ आप यहां बासकरके हमारी सबकी रक्षा कीजिये औ नगरको आइये हम आपसबचलैं औ दासके गृहको पवित्र करिये औ आपके अर्थ संचयकिये जो कंदमूलफल तिनको ग्रहणकरिये औ हे भगवन् हे सुरोत्तम मैं आपकादासहौं मेरेऊपर अनुग्रह करिये ६६ । ६७ तब रामचंद्र वड़े प्रसन्नहोके निषादसे बोले कि हे सखे मेरे वचनोंको सुनो मैं नगरमें औ किसी के गृहमें चौदहबर्षतक प्रवेश न करूंगा ६८ और किसी के दियेहुये फल मूल आदि भोजन नहीं करूंगा ऐसी मेरी प्रतिज्ञाहै औ तुम्हारा जो राज्यहै सो सब मेराही है और तुम मेरे अतिबल्लभ अर्थात् अत्यंत प्रिय सखाहौ ६९ तब लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्र निषादसे वटका दुग्धमँगवाके बड़ेआदरसे जटाजूट बांधतेहुये ७० ॥

जलमात्रंतुसंप्राश्यसीतयासहराघवः ॥ आस्तृतंकुशपर्णाद्यैःशयनंलक्ष्मणेनहि ७१ उवासतत्रनगरप्रासादाग्रेयथापुरा ॥ सुष्वापतत्रवैदेह्यापर्यंकइवसंस्कृते ७२ ततोविदूरेपरिगृह्यचापंसबाणतूणीरधनुःसलक्ष्मणः।ररक्षरामंपतितोविपश्यन्गुहेनसार्द्धंसशरासनेन ७३

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकांडे पंचमस्सर्गः ५ ॥

फिर सीता सहित राम उसदिन जलमात्रही पान करके कुश औ पत्तों से वनाई जो लक्ष्मणने शय्या तिसपै रात्रिमें वास करतेहुये जैसे पहिले अयोध्या नगरके महलमें वासकरतेथे ७१ फिर उस कुशशय्यामें सीता सहित शयन करते हुये जैसे प्रथम कोमल विछौने से बिछेहुये पलँगपै शयन करते थे ७२ तिसके उपरांत धनुषबाणको ग्रहण कियेहुये जो निषाद तिस करके सहित लक्ष्मणजी तरकसको बांधके और धनुषबाण हाथमें लेके रामकी शय्या

से न बहुत दूर न बहुत निकट स्थान पै चारोंतरफ से देखते हुये खड़ेखड़े रात्रिभर रामकी रक्षा करतेहुये ७२ ॥

इत्यध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकांडेटीकायांपंचमस्सर्गः५ ॥

सुप्तंरामंसमालोक्यगुहःसोऽश्रुपरिप्लुतः ॥ लक्ष्मणंप्राहविनया द्भ्रातःपश्यसिराघवम् १ शयानंकुशपात्रौघसंस्तरेसीतयासह॥यःशेतेस्वर्णपर्यंकेस्वास्तीर्णेभवनोत्तमे २ कैकेयीरामदुःखस्यकारणंविधिनाकृता ॥मंथराबुद्धिमास्थायकैकेयीपापमाचरत् ३ तच्छ्रुत्वालक्ष्मणः प्राहसखेशृणुवचोमम ॥ कःकस्यहेतुर्दुःखस्यकश्चहेतुःसुखस्यवा ४ स्वपूर्वार्जितकर्मैवी कारणंसुखदुःखयोः ५ सुखस्यदुःखस्यनकोऽपि दातापरोददातीतिकुबुद्धिरेषा ॥ अहंकरोमीतिवृथाऽभिमानः स्वकर्मसूत्रग्रथितोहिलोकः ६ सुहृन्मित्रार्युदासीनद्वेष्यमध्यस्थबांधवाः। स्वयमेवाचरन्कर्मतथातत्रविभाव्यते ७ ॥

दो० बाल्मीकिकेआश्रमहिं रामबसेमुनिराज ॥
बहुबिधिपूजनकरतभे छठेसर्गयहकाज ६ ॥

अब भूमिमें कुशों के ऊपर रामको शयन करते देखके अश्रुपात जिसके नेत्रोंसे होरहे ऐसा जो निषाद सो लक्ष्मणसे विनयपूर्बक बोलताहुआ कि हे भ्राता तुम रामको देखतेहो १ जो कुश औ पत्तोंके बिछौने पै सीता सहित शयन कररहे हैं सो क्या पहिले मणिरत्नोंके समूह करके प्रकाशमान मन्दिरमें से सुवर्ण के पलँगपै अति कोमल बिछौनेपै सोतेथे २ औ ब्रह्माने राम के दुःखका कारण रूपही केकयी रची जो केकयी मन्थराकी बुद्धिमें आके ऐसा पाप करतीहुई ३ यह निषादके वचन सुनिके लक्ष्मणकहतेहुये कि हे सखे जो मैं कहताहौं सोसुनो कौनकिसके दुःखका कारणहै और कौनकिसके सुख काकारणहै ४ अपनापूर्व किया हुआ जो कर्म सोई सुख दुःखका कारणहै ५ औ हे निषाद सुखका वा दुःखका देनेवाला कोईनहीं है दूसराकोई सुख दुःख को देताहै यहकेवल कुबुद्धिहै और जो कदाचित् कोई ऐसा कहै किहम ऐसा कर्म करसक्तेहैं जिसमें केवल सुखही होय सोभी झूठा अभिमानहै क्योंकि कर्म रूप डोरासे सबलोक बँधापड़ाहुआहै इससे स्वतन्त्रनहीं है ६ इसका आशय यहहैकि जैसे काठकी पुतलीको नचानेवालापुरुष धागेमेंबांधके पुतलीको जैसाजैसानाच नचाया चाहताहै तैसा २ वह पुतलीधागेके चलाने के अनुसार नाचती है उससे और प्रकार कुछभी नहीं करसकी है और जब उसधागेको बन्दकरदे तो चुपचाप बैठरहतीहै तैसेई पूर्व जन्मके कियेहुये जो

कर्म वोही हुआ धागा तिसमें बांधकै परमेश्वर जैसा जिससेकराया चाहता है तैसाकरांताहै और इसीसे अनेक प्रकारके सुख दुःखादि विचित्र फल देनेमें भी ईश्वरमें वैषम्य और निर्दयत्व दोषनहीं आता क्योंकि कर्मानुसार जीवों कोफल देताहै और उसीके अनुसार कराताभी तिसकारणसे जैसे लोकमें नीतियुक्त धर्मात्माराजा का न कोईमित्रहै औ न कोई शत्रुहै तोभी जिसने अच्छाकाम किया है उसको अच्छाफल देताहै और जो बुराकाम करता है उसको दंड देताहै और कभी ऐसाभी होताहै कि बड़ेभारी अपराधमें राजा नेकिसीको जन्म कैदकरदी फिर उसकैदमेंही ऐसी सर्कारकी खैरख्वाही बन पड़ी जिससे उस कैदसे छोड़दिया जाताहै तैसे सत्संगबशसे भक्ति ज्ञानहोने से छूटिभी जाता है तबजैसे उस राजा में बिषमदृष्टिका दोषनहीं आसक्ता तैसेपरमेश्वरमेंभी उक्त दोषनहीं आसक्ताहै ६ औ हेनिषाद सुहृद और मित्र औ अरि और उदासीन औ द्वेष्य औ मध्यस्थ औ बांधव ये जैसेलोकमें भेद कर्मसे प्रसिद्ध हैं तैसेई कर्म करके मनुष्य सुखी अथवा दुःखी प्रतीयमान होताहै ७ इसका अभिप्राय यहहै कि उपाधि रहित स्नेहकरनेवाला पुरुष सुहृद् कहाताहै जैसे माता पिता बिनाही प्रयोजन पुत्रमें स्नेहकरतेहैं और कुछ प्रयोजनबशसे परस्परस्नेह करै वह मित्र कहाता है और विनाही प्रयोजन वैरकरै वह अरि कहाताहै और न किसीसे बैर करै न मित्रता करै वह उदासिन कहाता है और जो प्रयोजनपाइ बैरकरै वह द्वेष्य कहाताहै और किसीसे व्यवहारमें बनेबिगरेका साक्षीहोय वह मध्यस्थ कहाता और जिस से विवाहादि संबंधहै वह बांधव कहाजाता है तो इतने सुहृद मित्रादिभेद जैसेकर्मही करके होते हैं तैसेही जिसने सुखकाकर्म किया है उसकोसुखहो ताहै और जिसने किसीको दुःखहोने का कर्मकिया है वहदुःखित होता है सुख दुःख होनेमें अपनाकर्मही कारण है किसीका अपराधनहीं है यहलक्ष्मण जीका आशय है ॥ यद्यपि क्लेशकर्म विपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुष विशेष ई-श्वरः १ । १ । २४ इसयोगसूत्र के प्रमाणसे परमेश्वर जो रामहै तिसमें सुखदुःखादिक नहीं संभवहोतेहैं और योगसूत्रका अर्थयहहै कि अविद्यादिक क्लेश औकर्म औ फल और बासना इनकरिकैजोनहीं परामृष्ट होय नहींस्पर्श कियाजाय अर्थात् इनकरिकै तिरस्कृत न होय ऐसाजो पुरुषविशेष सबका अन्तर्यामीआत्मा उसको ईश्वरकहतेहैं तौभीदेवताऔ साधुजन औ दैत्य राक्ष-सादिकइनकेकर्म विशेषसेपरमेश्वरकाअवतारहोताहै तौइनदेवादिकोंका अव-शिष्ट प्रारब्ध कर्म फलरूप सुख दुःखादिक शुद्ध स्फटिकमणिके समीप जपा पुष्पके संबंधसे रक्तताकीनाईं अविद्याकरके राममेंभी प्रतीयमान होते हैं इस आशयसे सभी परमेश्वरके अवतारोंमें मनुष्यनाट्यकरके सुख दुःखादिकथा

ऋषियोंने वर्णन करी हैं और जो ऐसा न मानाजाय तौ भारतरामायणादिकों में पूर्वापरविरोध शान्त न होगा ७॥

सुखंवायदिवादुःखंस्वकर्मवशगोनरः॥ यद्यद्यथागतंतत्तद्भुक्त्वास्वस्थमनाभवेत् ८ नमेभोगागमेवांछानमेभोगविवर्जने॥ आगच्छत्वथमागच्छत्वभोगवशगोभवे ९ यस्मिन्देशेचकालेचयस्माद्वायेनकेनवा॥कृतंशुभाशुभंकर्मभोज्यंतत्तत्रनान्यथा १० अलंहर्षविषादाभ्यांशुभाशुभफलोदये॥ विधात्राविहितंयद्यत्तदलंघ्यंसुरासुरैः ११ सर्वदासुखदुःखाभ्यांनरःप्रत्यवरुध्यते॥ शरीरंपुण्यपापाभ्यामुत्पन्नंसुखदुःखवत् १२ सुखस्यानंतरंदुःखंदुःखस्यानंतरंसुखम्॥ द्वयमेतद्धिजंतूनामलंघ्यंदिनरात्रिवत् १३ सुखमध्येस्थितंदुःखंदुःखमध्येस्थितंसुखम्॥ द्वयमन्योऽन्यसंयुक्तंप्रोच्यतेजलपंकवत् १४॥

औ हे निषाद अपने कर्मके आधीन जो मनुष्य सो सुख अथवा दुःख जैसे जैसे प्राप्त होता है तिसको भोग करिकै स्वस्थ मन होता है अर्थात् जबतक सुखनहीं भोगता है तबतक उसमें राग बना रहताहै और जबतक दुःखनहीं भोगताहै तबतक द्वेष बनारहताहै भोगके अनन्तर रागद्वेष रहितहोताहै ८ और हेनिषाद मुझकोतो न सुखभोगकेप्राप्तिकीइच्छाहै औ न दुःख भोगकी निवृत्तिकीइच्छा है दैवबशसे सुखप्राप्तहो अथवा दुःखनहीं प्राप्तहो कुछभोगकेवशमें नहींहूं इसकाआशययहहैकि तत्त्वज्ञ होनेसे जब मैंहींकर्म भोगकेबश नहीं हौं तौ मेरेस्वामी जोरामहैं सोकैसेकर्म भोगके आधीनहोसक्के हैं अर्थात् जैसे जीवकर्मभोगके आधीनहोकै सुखदुःखकोप्राप्तहोतेहैं तैसे ईश्वर को सुख दुःखका स्पर्श नहीं होताहै इससेरामको कैकेयीके कियाहुआ दुःखका संबन्धनहीं है ९ औहे निषाद सब जीवोंकी व्यवस्था देखकै तुमको बिषादनहीं करना चाहिये क्योंकि जिस देशमें औ जिसकालमें और जिसकारणसे जिस किसीने शुभ व अशुभ कर्म कियाहै सो अवश्य भोगना पडताहै तिसी तिसी प्रकारसे कभी अन्यथा नहीं होसक्ताहै१०इससे शुभाशुभ फलके उदय में अर्थात् सुख दुःख की प्राप्तिमें हर्षबिषाद करकै कुछ कृत्यनहीं है अर्थात् कुछ होना नहीं है क्योंकि जो ईश्वरने रचाहै वह सुर औ असुर इनको भी उल्लंघन करनेको अशक्यहै अर्थात् समर्थ नहींहै ११ इसीसे सबकालमें यह पुरुष सुख व दुःख इन करिकै युक्त बनाही रहता है क्योंकि जिसकारण से यह मनुष्य शरीर पुण्य औ पाप इनदोनों से उत्पन्न हुआहै इससे यहशरीर सुखदुःख युक्त होताहै १२

सोभी इसप्रकार होताहै कि सुखके अनन्तर दुःख होताहै औ दुःखके अनन्तर सुख होताहै ये दोनों सब प्राणियों को अलंघनीयहैं अर्थात् कोई इनको उल्लंघन नहीं करसक्ता जैसेदिन और रात्रियेऊ आयाही करतेहैं १३ औहेनिषाद विषयेन्द्रिय संबन्धसे जो सुखदुःख होताहै सो सब त्रिगुणात्मकहै इसीसे सुखके मध्यमेंदुःखस्थितहै और दुःखके मध्यमें सुख स्थितहै ये दोनों परस्पर जल औ कीचके सदृशमिलेही रहते हैं इससे ये दोनों त्यागकरनेके योग्यहैं इसमें प्रमाणपतंजलिका योगसूत्रभीहै ॥ परिणामतापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाच्चसर्वमेवदुःखंविवेकिन इति १ । २ । १५ ॥ इस सूत्र का अर्थ यहहै कि विषय सुखके परिणाममें दुःख और उस विषय सुखको कोई मनाकरै उसके संगविरोधमें संताप रूप दुःख और विषयों के स्मरण करनेसे चित्तमें संस्कार होताहै फिर उस संस्कार के आधीन होकै उसके उपार्जनमें दुःख इन तीनों दुःखों करिके और परस्पर गुण वृत्तियोंके बिरोध से सब विषय सुखयोगी को त्याग करिबे योग्यहैं इसका आशययहहै कि विषय सुख त्रिगुणमयहै और गुणोंकी वृत्ति चंचलहै सब काल में स्थिर नहीं रह सक्ती औ सुख बिना सत्व गुणके होता नहीं तो बिषय और इन्द्रिय संयोगसे जबसुख उत्पन्न हुआ औ उसीसमय रजोगुणकी वृत्ति बढ़ीतौ सात्विक वृत्तिके छिपजाने से सुखभी नष्ट होजाताहै ऐसेही तमोगुण की वृत्ति बढ़नेसे निद्रा आलस्य प्रसादसे सात्विक वृत्ति नहीं रहतीहै कदाचित् कहौ निद्रामें चित्तका लय होनेसे निद्राही का सुखहोगा तौ रजोगुणकी वृत्तिहोने से जब स्वप्न देखनेलगेगा तौ वहभी सुख स्थिरनहीं रहिसक्ता औ रजोगुणी पुरुषको तौचित्तके स्थिर नहीं होनेसे सुख दुर्लभही है इसप्रकार गुणों के वृत्तियों के विरोधसे विषय सुख दुःखरूप है अथवा सत्वगुणकी वृत्तिहै शान्त औ रजोगुण की वृत्तिहै घोर और तमोगुण की वृत्ति है मूढ़ तौइन वृत्तियोंका परस्पर विरोध होनेसे सम्पूर्ण विषय सुख दुःखरूप है इस योगसूत्रके अर्थका विस्तार ग्रन्थ विस्तार भयसे नहीं लिखा १४ ॥

तस्माद्धैर्येणविद्वांसइष्टानिष्टोपपत्तिषु॥ नहृष्यंतिनमुह्यंतिसर्वंमायेतिभावनात् १५ गुहलक्ष्मणयोरेवंभाषतोर्विमलंनभः ॥ बभूवरामः सलिलंस्पृष्ट्वाप्रातःसमाहितः १६ उवाचशीघ्रंसुदृढांनावमानयमेसखे ॥ श्रुत्वारामस्यवचनंनिषादाधिपतिर्गुहः १७ स्वयमेवदृढांनावमानिनायसुलक्षणाम् ॥ स्वामिन्नारुह्यतांनौकासीतयालक्ष्मणेनच १८ वाहयेज्ञातिभिःसार्द्धमहमेवसमाहितः ॥ तथेतिराघवःसीतामारोप्यशुभलक्षणाम् १९ गुहस्यहस्तावालंब्यस्वयंचारुहदच्युतः ॥ आयु

धादीन्समारोप्यलक्ष्मणोऽप्यारुरोहच २० गुहस्तान्वाहयामासज्ञा
तिभिःसहितःस्वयम् ॥ गंगामध्येगतागंगांप्रार्थयामासजानकी २१॥

हे निषाद तिसकारण से ज्ञानीपुरुष इष्टवस्तुकी प्राप्ति में कुछ हर्षयुक्त नहीं होते हैं औ अनिष्टवस्तुकी प्राप्तिमें मोहको नहीं प्राप्तहोते हैं क्योंकि सबमायाही है ऐसे बिचार करने से १५ अब इस प्रकार लक्ष्मण औ निषाद इनकेसंभाषण करते २ आकाश निर्मल होताहुआ अर्थात् प्रातःकाल हुआ और रामचंद्र स्नान संध्योपासनादि कृत्यकरके सावधानहोतेहुये १६ और निषादसे यह कहतेहुये कि हे सखे अच्छी दृढ नौका शीघ्रही हमारे अर्थ ल्यावो तब निषादों का स्वामी जो गुहहै सो रामके बचनसुनिकै १७ बहुत अच्छी मजबूत नौका आपही ल्यावताहुआ और यह कहताहुआ कि हे स्वामिन् सीता लक्ष्मण सहित आप इस नावपै चढ़िये १८ अपने कुटुम्बियों करके सहित मैं अपनेआप इस नौकाको खेवोंगा तब श्रीरामचन्द्र तैसाही होय ऐसा निषादसे कहिकै उस सुंदर नौकापै सीताको चढ़ावतेहुये १९ और उसगुह के हाथ पकड़िकै आप चढ़तेहुये और अपने शस्त्रोंको स्थापनकर लक्ष्मण भी चढ़तेहुये २० तब गुह अपने ज्ञातिके मनुष्यों करिकै सहित उस नौकाको आपही चलाताहुआ जब गंगाके बीचमें नावपहुंची तो सीता प्रार्थना करती हुई २१ ॥

देविगंगेनमस्तुभ्यंनिवृत्ताबनबासतः ॥ रामेणसहिताऽहन्त्वांल
क्ष्मणेनचपूजये २२ सुरामांसोपहारैश्चनानाबलिभिरादृता ॥ इत्यु
क्त्वापरकूलंतौशनैरुत्तीर्यजग्मतुः २३ गुहोऽपिराघवंप्राहगमिष्यामि
त्वयासह ॥ अनुज्ञांदेहिराजेन्द्रनोचेत्प्राणांस्त्यजाम्यहम् २४ श्रुत्वा
नैषादिवचनंश्रीरामस्तमथाब्रवीत् ॥ चतुर्दशसमाःस्थित्वादंडकेपुन
रप्यहम् २५ आयास्याम्युदितंसत्यंनासत्यंरामभाषितम् ॥ इत्युक्त्वा
लिंग्यतंभक्तंसमाश्वास्यपुनःपुनः २६ निवर्तयामासगुहंसोऽपिकृच्छ्रा
द्ययौगृहम् ॥ तत्रमेध्यंमृगंहत्वापक्त्वाहुत्वाचतेत्रयः २७ भुक्त्वावृक्षद
लेसुप्त्वासुखमासततांनिशाम् ॥ ततोरामस्तुवैदेह्यालक्ष्मणेनसम
न्वितः २८ ॥

हे देवि गंगे तेरे अर्थ नमस्कार है जब मैं राम औ लक्ष्मण करके सहित बनबास से निवृत्त होवोंगी तब तुम्हारा पूजन करौंगी २२ मदिरा औ मांस औ पुष्पादि सामग्री और बलि इनकरिकै आदरपूर्वक पूजाकरौंगी इसप्रकार प्रार्थना की तिसके अनन्तर धीरेसे उसपार उतरके राम औ सीता लक्ष्मण स-

हित चलते हुये २३ तब गुह रामचन्द्रसे बोला कि हे राम मैं भी आपके संग चलताहौं आज्ञादीजिये नहीं तो प्राणोंको त्यागदेउंगा २४ अब यह निषादके वचन सुनिकै रामचन्द्र उससे बोलतेहुये कि हे सखे चौदहबर्षभर दण्डकवन में स्थित हो के फिर तुम्हारे पास आवोंगा औ २५ जो मैंने कहा सो सत्यहै क्योंकि रामकावचन कभी मिथ्या नहींहोताहै ऐसा कहिकै भक्त जो निषादहै तिसको हृदयसे आलिंगनकर बारम्बार उसको समुझाकर २६ लौटारते हुये और वह निषाद भी बड़ेकष्टसे अपने गृहको आवताहुआ और रामचन्द्र भी वहां गंगातीरके बनमें एक पवित्रमृगको मारिकै और पकाकर हवन करिकै२७ तीनोंजने भोजन करिकै वृक्षके कोमलपत्तों की शय्यापै शयनकर उसरात्रिमें सुखपूर्वक वहां बास करतेहुये तिसके उपरांत सीता सहित और लक्ष्मण करिकै सहित रामचन्द्र २८ ॥

भरद्वाजाश्रमपदंगत्वाबहिरुपास्थिता॥तत्रैकंबटुकंदृष्ट्वारामःप्राहचहेबटो २९ रामोदाशरथिःसीतालक्ष्मणाभ्यांसमन्वितः ॥ आस्तेबहिर्वनस्येतिह्युच्यतांमुनिसंनिधौ ३० तच्छ्रुत्वासहसागत्वापदयोःपतितोमुनेः॥ स्वामिन्रामःसमागत्यवनाद्बाहिरवस्थितः३१सभार्यःसानुजःश्रीमानाहमांदेवसन्निभः॥भरद्वाजायमुनयेज्ञापयस्वयथोचितम् ३२ तच्छ्रुत्वासहसोत्थायभरद्वाजोमुनीश्वरः॥ गृहीत्वार्घ्यंचपाद्यंचरामसामीप्यमाययौ ३३ दृष्ट्वारामंयथान्यायंपूजयित्वासलक्ष्मणम्॥आहमेपर्णशालांभोरामराजीवलोचन ३४ आगच्छपादरजसापुनीहरघुनंदन ॥ इत्युक्तोटजमानीयसीतयासहराघवौ ३५ ॥

भरद्वाजऋषिके आश्रममें जाकर बाहरहो स्थितहुये तहां एकऋषिकेबालकको देखिकै रामचन्द्र उससे बोलते हुये २९ कि हे बटो भरद्वाजमुनि केसमीप जाकर तुम यह कहौ कि सीतालक्ष्मण सहित दशरथके पुत्र राम आपके आश्रमबनके बाहर स्थितहैं ३० यहरामका बचन सुनिकै वह ऋषि बालक शीघ्रही जाकर भरद्वाज मुनिके चरणोंपर गिरिकै कहनेलगा कि हेस्वामिन् राम आपके आश्रम के समीप आकर बनके बाहर स्थितहैं ३१ और भार्या सहित और भाई सहित बड़े शोभायमान राममुझ से यह कहते हुये कि यथायोग्य भरद्वाज मुनिसे हमारी खबर करदेवो ३२तब भरद्वाज मुनि उस बालकके मुखसे ऐसा सुनिकै शीघ्रही उठकर अर्घ पाद्यादि पूजनकी सामग्री ग्रहणकर रामचन्द्र के समीप आवतेहुये ३३ फिर लक्ष्मण सहित रामको देखकै विधिपूर्वक पूजनकरके बोलतेहुये कि हेराजीवलोचन रामआपमेरी पर्णशालाको चलिये३४

और अपने चरण कमलकी रजसे मेरे आश्रमको पवित्र कीजिये यह बचन कहिकै सीता सहित राम लक्ष्मण को पर्णशालामें प्राप्तकर ३५॥

भक्त्यापुनःपूजयित्वाचकारातिथ्यमुत्तमम्॥ अद्याहंतपसःपारंगतोऽस्मितवसंगमात् ३६ ज्ञातंरामतवोदन्तंभूतंचागामिकंचयत्॥ जानामित्वांपरात्मानंमाययाकार्यमानुषम् ३७ यदर्थमवतीर्णोऽसिप्रार्थितंब्रह्मणापुरा॥ यदर्थंवनवासस्तेयत्करिष्यसिवैपुरः ३८ जानामिज्ञानदृष्ट्याऽहंजातयात्वदुपासनात्॥ इतःपरंत्वांकिंवक्ष्येकृतार्थोऽहंरघूत्तम३९ यस्त्वांपश्यामिकाकुत्स्थंपुरुषंप्रकृतेःपरम्॥ रामस्तमभिवन्द्याहसीतालक्ष्मणसंयुतः ४० अनुग्राह्यास्त्वयाब्रह्मन्वयंक्षात्रियबांधवाः॥ इतिसंभाष्यतेऽन्योऽन्यमुषित्वामुनिसन्निधौ ४१ प्रातरुत्थाययमुनामुत्तीर्य्यमुनिदारकैः॥कृताप्लवेनमुनिनादृष्टमार्गेणराघवः४२॥

भक्ति करके फिर पूजन कर उत्तम सत्कार करतेहुये और भरद्वाज मुनि यह कहतेहुये कि हे राम आज मैं तुम्हारे समागम से औ मिलने से तपका जो पार फल है तिसको प्राप्तहुआ अर्थात् सब तपका फल रूपही आपका दर्शन है ३६ औ हे राम आपका जो वृत्तान्त होचुका है औ होनेवाला है सो सब मैंने जाना है और यह मैं जानताहौं कि तुम परमात्मा हौ औ माया करिकै असुर बधादि कार्यके अर्थ मनुष्य देह धारण किया है जिसने ऐसा जो परमात्मा सो तुम हौ तिसको जानताहौं ३७ और पहिले ब्रह्मा करिकै प्रार्थना कियेगये जिस रावण बधादि कार्यके लिये आपने अवतार धारण किया है और जिन राक्षस बध आदि कार्यके लिये बनबास हुआहै और जो आगे करौगे ३८ सो सब आपकी उपासना करके उत्पन्न हुई जो ज्ञान दृष्टि तिस करिकै मैं जानताहौं औ हे रघूत्तम इससे अधिक मैं तुमको क्या कहौं जो तुम्हारे दर्शन से मैंही कृतार्थ हौं ३९ क्योंकि जो मैं प्रकृति से पर जो पुरुष है सोई ककुत्स्थ बंशमें उत्पन्न हुआ है ऐसे जो तुमहौ तिनको नेत्रों से देखताहौं अब तिसके अनन्तर सीता लक्ष्मण युक्त जो रामचंद्र सो भरद्वाज को प्रणाम कर बोलते हुये ४० कि हे ब्रह्मन् हम तो क्षत्रिय कुलमें उत्पन्न हुये हैं इससे आपके अनुग्रहके योग्य हैं अर्थात् ब्राह्मण सदा बड़ेचले आये हैं और क्षत्रियों के ऊपर अनुग्रह करते हैं तैसे आप भी हमारेऊपर अनुग्रह करिये ऐसेपरस्पर मुनि औ राम येसंभाषण करतेहुये फिर उस रात्रिमें रामचंद्र मुनिके समीप वासकरके ४१ प्रातःकाल उठिकै कियाहै स्नान जिसने ऐसे मुनिने दिखाया जो मार्ग तिसकरके रामचंद्र मुनि बालकोंके सहाय करके यमुनानदीको उतरके ४२॥

प्रययौचित्रकूटाद्रिंवाल्मीकेर्यत्रचाश्रमः ॥ गत्वारामोऽथवाल्मीके राश्रमंऋषिसंकुलम् ४३ नानामृगद्विजाकीर्णंनित्यपुष्पफलाकुलम् ॥ तत्रदृष्ट्वासमासीनंवाल्मीकिंमुनिसत्तमम् ४४ ननामशिरसारामो लक्ष्मणेनचसीतया ॥ दृष्ट्वारामंरमानाथंवाल्मीकिर्लोकसुंदरम् ४५ जानकीलक्ष्मणोपेतंजटामुकुटमण्डितम् ॥ कंदर्पसदृशाकारंकमनीयां बुजेक्षणम् ४६ दृष्ट्वैवंसहसोत्तस्थौविस्मयानिमिषेक्षणः ॥ आलिं ग्यपरमानंदंरामंहर्षाश्रुलोचनः ४७ पूजयित्वाजगत्पूज्यंभक्त्याऽ र्घ्यादिभिरादृतः ॥ फलमूलैःसमधुरैर्भोजयित्वाचलालितः ४८ रा घवःप्राञ्जलिःप्राहवाल्मीकिंविनयान्वितः ॥ पितुराज्ञांपुरस्कृत्यदं डकानागतावयम् ४९ ॥

चित्रकूटको जातेहुये जहां बाल्मीकि मुनिका आश्रमहै अब रामचंद्र चित्रकूटमें प्राप्त होके तहां वाल्मीकि मुनिके आश्रममें जाकर उस आश्रममें बैठे हुये मुनियों में श्रेष्ठ जो बाल्मीकिमुनि तिनको सीता लक्ष्मण सहित शिर से प्रणाम करतेहुये ४३ कैसा आश्रम है जो ऋषियों करिकै व्याप्तहै औ नानाप्रकारके जो मृग औ पक्षी तिनकरके व्याप्तहै औ नित्य पुष्पफलयुक्तही जो है ४४ अब वाल्मीकि जी सबलोकों में एक सुन्दर औ लक्ष्मी के नाथस्वामी ४५ औ सीता लक्ष्मण करकेयुक्त औ जटारूपी मुकुट तिसकरके भूषित औ कामदेव के समान स्वरूप जिसका औ बड़ासुन्दर जो कमलतद्वत् विशाल हैं नेत्र जिनके ऐसेराम ४६ को देखके शीघ्रही उठिकर विस्मययुक्तहैं नेत्रजिनके ऐसे होकर परमानन्द रूप जो राम तिनको आलिंगनकरके आनन्दके आंशुओं करके पूर्ण हैं नेत्र जिसके ऐसे ४७ बाल्मीकि अर्घादि सामग्रीकरके जगतों करके जगतोंको पूजनीय ऐसे जो रामचन्द्र तिनको आदरपूर्वक पूजनकरके बड़े मधुर जो फल औ मूल तिनकरके भोजनकराके बड़ेस्नेहसे लाड़लड़ातेहुये४८ तब रामचन्द्र बड़ेनम्रहो हाथजोड़के बाल्मीकिसे बोलते हुये कि हे मुने पिता की आज्ञाकरके हम दण्डकबनको आये हैं ४९ ॥

भवन्तोयदिजानंतिकिंवक्ष्यामोऽत्रकारणम् ॥ यत्रमेसुखवासाय भवेत्स्थानंवदस्वतत् ५० सीतयासहितःकालंकिंचित्तत्रनयाम्यहम् ॥ इत्युक्तोराघवेणासौमुनिःसस्मितमब्रवीत् ५१ त्वमेवसर्वलोकानांनि वासस्थानमुत्तमम् ॥ तवापिसर्वभूतानिनिवाससदनानिहि ५२ एवं साधारणंस्थानमुक्तंतेरघुनंदन ॥ सीतयासहितस्येतिविशेषंपृच्छत

स्तव ५३ तद्वक्ष्यामिरघुश्रेष्ठयत्तेनियतमंदिरम् ॥ शांतानांसमदृष्टी नामद्वेष्टाणांचजंतुषु ॥ त्वामेवभजतांनित्यंहृदयंतेऽधिमंदिरम् ५४ धर्माधर्मान्परित्यज्यत्वामेवभजतोऽनिशम् ॥ सीतयासहतेरामतस्य हृत्सुखमन्दिरम् ५५ त्वन्मंत्रजापकोयस्तुत्वामेवशरणंगतः ॥ निर्द्वंद्वोनिस्पृहस्तस्यहृदयंतेसुखमन्दिरम् ५६ ॥

औ आप इसके कारणको जानतेही होंगे इससे हम क्याकहैं परन्तु अबहम को जो स्थान सुखकरके बसने के योग्यहो सो बतलाइये ५० जहां सीता करके सहित कुछकाल व्यतीतकरौं जबऐसे रामनेपूछा तौ हँसकरके वाल्मीकि जी कहतेहुये ५१ कि हे राम तुमहीं सब भूतोंका उत्तम निवासस्थान हौ औ सब भूत तुम्हारे निवासस्थानहैं अर्थात् जहां आप नहींहो ऐसा कोई स्थानहै ही नहीं ५२ हे रघुनन्दन यह मैंने सामान्यकरके तुम्हारा निवासस्थान कहा औ सीता करके सहित अपना विशेष करके रहनेका स्थान पूछतेहौ तौ ५३ उसस्थानको भी अबमैं कहताहौं जहां निरंतर अपने ज्ञानैश्वर्यादि गुणोंका आविर्भाव करिकै अर्थात् प्रकाशकरके बासकरतेहौ हे राम जे कोई शांतस्वभावके मनुष्य हैं और जिनके समानदृष्टिहैं अर्थात् सब जगह ईश्वरको देखते हैं और इसी से जे किसी से द्वेष नहीं करते हैं और इसी से वे नित्यही तुम्हारा भजन करते हैं ऐसा पुरुषोंका जो हृदयहै सो आपका अधिक करके मन्दिरहै अर्थात् तुम्हारे सदारहनेके योग्यस्थानहै ५४ और जो पुरुषधर्म औ अधर्म इनदोनों को त्यागकरके अर्थात् इनदोनों में रागद्वेषका त्यागकरके जो केवल तुम्हारा ही निरन्तर भजन करताहै हे राम तिसभक्तका हृदय सीता करके सहित तुम्हारे सुखपूर्वक रहनेके योग्यहै ५५ और जो पुरुष तुम्हारे मंत्रका जपकरता होय और तुम्हारे शरणागतहोय और शीत उष्ण सुखदुःखादि द्वन्द्वरहित होय औ सिवाय तुम्हारे और किसी पदार्थ की इच्छा जिसको न होय तिसभक्तका हृदय तुम्हारा शुभ मन्दिरहै ५६ ॥

निरहंकारिणःशांतायेरागद्वेषवर्जिताः ॥ समलोष्ठाश्मकनकास्तेषांतेहृदयंगृहम् ५७ त्वयिदत्तमनोबुद्धिर्यःसन्तुष्टःसदाभवेत् ॥ त्वयिसंत्यक्तकर्मायस्तन्मनस्तेशुभंगृहम् ५८ योनद्वेष्ट्यप्रियंप्राप्तप्रियंप्राप्यनहृष्यति ॥ सर्वंमायेतिनिश्चित्यत्वांभजेत्तन्मनोगृहम् ५९ षड्भावादिविकारान्योदेहेपश्यतिनात्मनि ॥ क्षुत्तृट्सुखंभयंदुःखंप्राणबुद्ध्योर्निरीक्षते ६० संसारधर्मैर्निर्मुक्तस्तस्यतेमानसंगृहम् ६१ प

ञ्यन्तियेसर्वगुहाशयस्थंत्वांचिद्घनंसत्यमनंतमेकम् ॥ अलेपकंस र्वगतंवरेण्यन्तेषांहृदब्जेसहसीतयावस ६२ निरंतराभ्यासदृढीकृ तात्मनांत्वत्पादसेवापरिनिष्ठितानाम् ॥ त्वन्नामकीर्त्याहतकल्मषाणां सीतासमेतस्यगृहंहृदब्जे ६३ ॥

और जे पुरुष अहंकार रहितहैं औ शान्तचित्त हैं और न जिनकी किसी से प्रीति न किसी से बैरहै और जिनको मिट्टीका ढेला और पत्थर औ सुवर्ण ये समान हैं हे राम तिनका हृदय आपके रहने योग्यहै ५७ और जिसने तुम्हीं में मनबुद्धिको लगायाहै और जो सदा संतोषयुक्तहो और आपही के बिषे स-मर्पण करे हैं कर्म जिसने ऐसे पुरुषकामन तुम्हारा मन्दिरहै ५८ और जो पु-रुष प्रियवस्तुको प्राप्तहोके हर्ष के वेगमें न डूबजाय औ अप्रियवस्तुको प्राप्तहोके द्वेष न करे सबमायाही है ऐसा निश्चयकर तुम्हारा भजनकरै उसपुरुषकामन तुम्हारा मन्दिर है ५९ औ जो पुरुष जन्म १ औ सत्ता २ औ बढ़ता ३ औ घटना ४ औ रूपका दलना ५ औ नाश ६ इनछः बिकारों को देह के बि-षेही देखै आत्मा के बिषे न देखै तैसेही भूख १ औ प्यास २ इनदोनों को प्राणका धर्मजाने ६० औ भय १ औ दुःख इनदोनों को बुद्धिका धर्म जानै औ संसार धर्म जो पुण्य पाप इनसे छूटगयाहोय हे राम तिस ज्ञानीका हृदय तुम्हारा स्थानहै ६१ और जे पुरुष सबकी बुद्धिरूप गुहामें स्थित और चैतन्य घन औ सत्य औ अनंत औ एक औ लेपरहित औ सर्व व्यापक औ सबको सेवन करिबे योग्य ऐसा तुमको देखते तिनके हृदय रूप कमलमें सीता स-हित तुम वासकरौ ६२ औ हे राम निरन्तर व्यवधान रहित अर्थात् नित्य जो अभ्यास अर्थात् चित्तको तुम्हारे बिषे लगाना तिस करिकै दृढ किया है नाम स्थिर कियाहै चित्त जिन्होंने और तुम्हारे चरणोंकी सेवामें जे स्थित होरहे हैं और आपके नाम कीर्त्तनकरिकै जिन्होंने पापोंका नाशकरदियाहै ऐसे भक्तों के हृदयरूप कमलमें सीतासहित तुम्हारागृह है ६३ ॥

रामत्वन्नाममहिमावर्ण्यतेकेनवाकथम् ॥ यत्प्रभावादहंरामब्रह्म र्षित्वमवाप्तवान् ६४ अहंपुराकिरातेषुकिरातैःसहवर्द्धितः ॥ जन्ममा त्रद्विजत्वंमेशूद्राचाररतःसदा ६५ शूद्रायांबहवःपुत्राउत्पन्नामेऽजिता त्मनः ॥ ततश्चौरैश्चसंगम्यचोरोऽहमभवंपुरा ६६ धनुर्बाणधरोनि त्यंजीवानामंतकोपमः ॥ एकदामुनयःसप्तदृष्टामहतिकानने ६७ सा क्षान्मयाप्रकाशंतोज्वलनार्कसमप्रभाः ॥ तानन्वधावंलोभेनतेषांस र्वपरिच्छदान् ६८ ग्रहीतुकामस्तत्राहंतिष्ठतिष्ठेतिचाब्रुवन् ॥ दृष्ट्वा

मांमुनयोप्रच्छन्किमायासिद्वजाऽधम ६९ अहंतानब्रुवंकिंचिदादातुं मुनिसत्तमाः ॥ पुत्रदारादयःसंतिबहवोमेबुभुक्षिताः ७० ॥

औ हे राम आपके नामके महिमा किस करिकै वर्णन करी जाती हौ अर्थात् किसी करिकै बर्णन करनेको शक्य नहीं है औ हे राम जिस तुम्हारे नामहीके प्रभावसे मैं ब्रह्मर्षि पदवीको प्राप्त हुआ ६४ हे राम मैं पहिले किरात देशके बिषे किरातों के अन्न से पुष्टहुआ औ किरातोंके संग बास भी करता हुआ एक जन्ममात्र करिकै तो ब्राह्मण रहा औ सदा शूद्रोंके आचारमें रत रहा ६५ फिर नहीं जीताहै आत्मा मन जिसने ऐसा जो मैं तिसके शूद्र जाति की स्त्रीमें बहुतसे पुत्र उत्पन्न हुये फिर चोरों के संगसे मैंभी चोरही होगया अर्थात् चोरोंकी जीविका से निर्बाह करताहुआ ६६ औ नित्यही धनुषबाण को धारण करेरहौं औ सब जीवोंको यमराज तुल्य निर्दय होताहुआ तब एक समयमें बडेभारी बनमें मैंने सातमुनि आतेदेखे ६७ और वे मुनि उस बनको प्रकाशित कररहेहैं और अग्नि औ सूर्य इनके तुल्य जिनकी कांति है फिर मैं लोभ करिकै उन ऋषियोंकी चीजबस्तु छीननेको उनके पीछे दौडताहुआ६८ और खडेरहौ खडेरहौ ऐसा कहताभी हुआ तौ मुझको पिछाडी आवते देखके वे मुनीश्वर पूछनेलगे कि अरे ब्राह्मणोंमें अधम तूक्यों आवताहै ६९ तो मैं उन से बोलताहुआ हे मुनिसत्तमो मैं तुम्हारे बस्त्रादिक लेनेको आवताहौं क्योंकि बहुतसे पुत्र औ स्त्री आदि मेरे कुटुम्बी मनुष्यभूखे बैठहोंगे ७० ॥

तेषांसंरक्षणार्थायचरामिगिरिकानने ॥ ततोमामूचुरव्यग्राःपृच्छगत्वाकुटुम्बकम् ७१ योयोमयाप्रतिदिनंक्रियतेपापसंचयः ॥ यूयंतद्भागिनःकिंवानेतिनेतिपृथक्पृथक् ७२ वयंस्थास्यामहेतावदागामिष्यसिनिश्चयः ॥ तथेत्युक्त्वागृहंगत्वामुनिभिर्यदुदीरितम् ७३ अपृच्छंपुत्रदारादीन्तैरुक्तोऽहंरघूत्तम ॥ पापंतवैवतत्सर्वंवयंतुफलभागिनः ७४ तच्छ्रुत्वाजातनिर्वेदो विचार्यपुनरागमम् ॥ मुनयोयत्रतिष्ठंतिकरुणापूर्णमानसाः ७५ मुनीनांदर्शनादेवशुद्धांतःकरणोऽभवम्॥ धनुरादीन्परित्यज्यदण्डवत्पतितोस्म्यहम् ७६ रक्षध्वंमांमुनिश्रेष्ठागच्छंतंनिरयार्णवम् ॥ इत्यग्रेपतितंदृष्ट्वामामूचुर्मुनिसत्तमाः ७७ ॥

तिनकी रक्षाके लिये बन औ पर्वत इनमें बिचरता हौं तिसके उपरान्त मुझको देखके नहीं व्याकुल ऐसे जो वे मुनीश्वर तेमुझसे कहतेहुये कि तू अपने कुटुम्बियों से जाकर यह बात अलग २ सबसे पूछ ७१ कि जो पाप सं-

चय दिनदिन तुम्हारे सबकेलिये करताहौं तिस पापके भागी अर्थात् इसपाप के बटानेवाले तुमहोउगे या नहीं सो कहो यह सबसे पूछ और जबतक तू घरसे पूछके नहीं आवैगा तबतक यहां हमसब खड़ेहैं ७२ यह हम निश्चयसे कहते हैं तिसके उपरान्त मैं तैसेही करौंगा ऐसा मुनियों से कहि मैंने घरआके वैसेही सबसे पूछा जैसे मुनियों ने कहाथा ७३ तौ हेराम उन सब कुटुम्बियोंने मुझसे यहकहा कि पापतौ सब तुमही को होगा अर्थात् हम कोई पापके साथी न होवैंगे हम तौ फलभागी हैं अर्थात् धनके भागीहैं७४तब यह सबपुत्रादिकों के वचन सुनिकै हेराम मेरे हृदयमें बड़ा तीव्रबैराग्यहुआ कि हायवृथाही मेरा इतना जन्मगया ऐसा विचारकर फिर वहांहीं मैं आवताहुआ जहां परमदयालु सातमुनीश्वर थे ७५ फिर उनमुनीश्वरोंका दर्शन करतेही मेरा अन्तःकरण शुद्धहोगया और धनुषबाण आदि सब शस्त्रोंको त्यागकरिकै उन मुनीश्वरोंके चरणों में दण्डवत् पड़ताहुआ ७६ औ यहवचन बोला कि हेमुनीश्वरो मैं नरकरूपी समुद्रमें जारहाहौं मेरी रक्षाकरिये ऐसे अपने आगे पड़ाहुआ मुझको देखिकै वे मुनीश्वर बोलतेहुये ७७ ॥

उत्तिष्ठोत्तिष्ठभद्रन्ते सफलःसत्समागमः ॥ उपदेक्ष्यामहेतुभ्यं किञ्चित्तेनैवमोक्ष्यसे ॥ परस्परंसमालोच्यदुर्वृत्तोऽयंद्विजाधमः ७८ ॥ उपेक्ष्यएवसद्भिस्तथाऽपिशरणंगतः ॥ रक्षणीयःप्रयत्नेनमोक्षमार्गोपदेशतः ७९ इत्युक्त्वारामतेनामव्यत्यस्ताक्षरपूर्वकम् ॥ एकाग्रमनसात्रैवमरेतिजपसर्वदा ८० आगच्छामःपुनर्यावत्तावदुक्तंसदाजप॥ इत्युक्त्वाप्रययुःसर्वेमुनयोदिव्यदर्शनाः ८१ अहंयथोपदिष्टंतैस्तथाकरवमंजसा ॥ जपन्नेकाग्रमनसाबाह्यंविस्मृतवानहम् ८२ एवंबहुतिथेकालेगतेनिश्चलरूपिणः ॥ सर्वसंगविहीनस्यवल्मीकोऽभून्ममोपरि ८३ ततोयुगसहस्रांतेऋषयःपुनरागमन् ॥ मामूचुर्निष्क्रमस्वेतितच्छ्रुत्वातूर्णमुत्थितः ८४ ॥

कि हे ब्राह्मण तेरा कल्याण होवे और तू उठ तेरेको सत्समागम सफलहै और तुझको कुछउपदेश हमकरतेहैं तिसी करिकै मोक्षको प्राप्तहोगा अब सब मुनीश्वर परस्पर विचार करनेलगे कि यहब्राह्मणोंमें अधमहै और बड़ा दुराचारहै ७८ अर्थात् इसके बड़े दुष्ट आचरणहैं इससे सत्पुरुषोंकोउपेक्षाहीकरने योग्य है अर्थात् त्यागकरनेही योग्यहै तौभी हमारे शरण आया है इससे अवश्यकोई मोक्षमार्गके उपदेशकरिकै रक्षाकरने योग्यहै ७९ हे राम इस प्रकार वे सब मुनीश्वर आपसमें सलाहकरिकै तुम्हारे उलटे नामका उपदेश करते

हुये और यहकहा कि तू इसी स्थानमें बैठके एकाग्रमनकरिकै अर्थात् अक्षरों-हीमें मनरहै और जगह न जानेपावे सदामरा ये दो अक्षरोंको जप ८० परन्तु जब तक हमफिर इसबनमें आवें तबतक निरन्तर इसमंत्रका जपकरते रहौ हे राम यहबचन कहिकै दिव्यदर्शन जिनका ऐसे जो वेमुनि ते चले जाते हुये ८१ और मैं जैसे उनमुनियोंने कहाथा तैसेही करताहुआ एकाग्रमन करिकै जपते जपते जितना बाहर इन्द्रियोंका विषयहै उसको भूलजाताहुआ ८२ इसप्रकार जब बहुत काल व्यतीतहुआ तब निश्चलहुआ शरीरजिनका और सब संगकरिकै हीन अर्थात् किसी में आशक्तनहीं ऐसा जोमैं हौं तिसकेऊपर बामी होजातीहुई ८३ तब हजार युगके अन्तमें वे ऋषि फिरि आतेहुये और मुझसे कहते हुये कि तुमइस बामीमेंसे निकलो यह बचनसुनिकै मैं शीघ्रही उठता हुआ ८४ ॥

बल्मीकान्निर्गतश्चाहंनीहारादिवभास्करः ॥ ममाप्याहुर्मुनिगणा वाल्मीकिस्त्वंमुनीश्वर ८५ वल्मीकात्संभवोयस्माद्द्वितीयंजन्मतेभवत् ॥ इत्युक्त्वातेययुर्दिव्यगतिंरघुकुलोत्तम ८६ अहंतेरामनाम्नश्च प्रभावादीदृशोऽभवम्॥अद्यसाक्षात्प्रपश्यामिससीतंलक्ष्मणेनच८७ रामंराजीवपत्राक्षंत्वांमुक्तोनात्रसंशयः ॥ आगच्छरामभद्रंतेस्थलंवै दर्शयाम्यहम् ८८ एवमुक्त्वामुनिःश्रीमाल्लक्ष्मणेनसमन्वितः ॥ शिष्यैःपरिवृतोगत्वामध्येपर्वतगंगयोः ८९ तत्रशालांसुविस्तीर्णांकारयामासवासभूः ॥ प्राक्पश्चिमंदक्षिणोदक्शोभनंमंदिरद्वयम् ९० जानक्यासहितोरामोलक्ष्मणेनसमन्वितः ॥ तत्रतेदेवसदृशाह्यवसन्भवनोत्तमे ९१ ॥

फिर उसबामीमेंसेकैसेमैं निकलाजैसेकुहरसे सूर्यअलगहोय तब मुनीश्वर मुझसे वाल्मीकि नाम करिकै तुमलोक में होवोगे यह कहतेहुये ८५ क्योंकि वल्मीकसे यहतुम्हारा दूसराजन्म हुआ है इससेतुमवाल्मीकिहोउगे हेराम यह कहिकै वे मुनिदेवलोकको जातेहुये ८६ और मैं तुम्हारे राम नामके माहात्म्यसे ऐसाहोजाताहुआ और अबइस समयमें सीता लक्ष्मण सहित औ कमलकेतुल्यहैं नेत्रजिनके ऐसेजोआपहैं तिनकोसाक्षात् देखरहाहौं ८७ इससे मुक्त हुआइसमेंकुछसंशयनहींहै औ हे रामतुम आवो और तुम्हारा कल्याण होय और मैं आपको रहनेको स्थान दिखाताहौं ८८ यह वचन कहिकै परम शोभायुक्त जो मुनिहैं सो लक्ष्मण औशिष्यसहित गंगा औ पर्वत इनदोनों के मध्य में जाय कर ८९ तहां सुन्दर बिशाल शाला बनावतेहुये एकतो पूर्व

पश्चिम और दूसरादक्षिण उत्तर ऐसे दो मन्दिर बनवातेहुये ९० तिस शाला में सीता औ लक्ष्मण करिकै सहित औ सब जगत् निवासरूप जो रामहैं सो वास करते हुये तिस स्थानमें देवतोंके सदृश जो राम सीता लक्ष्मण ये तीनों निवास करते हुये ९१ ॥

वाल्मीकिनातत्रसुपूजितोऽयंरामःससीतासहलक्ष्मणेन॥ देवैर्मुनीन्द्रैःसहितोमुदाऽस्तेस्वर्गेयथादेवपतिःसशच्या ९२ ॥

इत्यध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादे अयोध्याकांडेषष्ठःसर्गः ६॥

तिस चित्रकूट पै परम सुन्दर भवन में बाल्मीकि करिकै सत्कार किये गये सीता लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्र मुनिगण सहित कैसे शोभित हो रहे हैं जैसे स्वर्गमें देवगण औ इन्द्राणीसहित इन्द्रजैसे शोभित होरहेहैं ९२॥ जो प्रचेतों के वंश में उत्पन्न और जिनने रामायण किया है तिन बाल्मीकि ऋषिसे चित्रकूट वाले बाल्मीकि और हैं ऐसाबहुतकहतेहैं ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकाण्डेभाषाटीकायांषष्ठःसर्गः ॥ ६ ॥

सुमंत्रोपितदाऽयोध्यांदिनांतेप्रविवेशह ॥ वस्त्रेणमुखमाच्छाद्यबाष्पाकुलितलोचनः १ बहिरेवरथंस्थाप्यराजानंद्रष्टुमाययौ ॥ जयशब्देनराजानस्तुत्वातंप्रणनामह २ ततोराजानमंतन्तंसुमंत्रंविह्वलोब्रवीत् ॥ सुमंत्ररामःकुत्रास्तेसीतयालक्ष्मणेनच ३ कुत्रत्यक्तस्त्वयारामः किंमांपापिनमब्रवीत् ॥ सीतावालक्ष्मणोवाऽपिनिर्दयंमांकिमब्रवीत् ४ हारामहागुणनिधेहासीतेप्रियवादिनि ॥ दुःखार्णवेनिमग्नंमांम्रियमाणंनपश्यसि ५ विलप्यैवंचिरंराजानिमग्नोदुःखसागरे ॥ एवंमंत्रीरुदंतंतंप्रांजलिर्वाक्यमब्रवीत् ६ रामःसीताचसौमित्रिर्मयानीतारथेनते ॥ शृंगिवेरपुरभ्याशेगंगाकूलेव्यवस्थिताः ७ ॥

सोरठा श्रवणपिताको शाप कौशल्यासेनृपतिकहि ।
सुरपुरगेपुनिआप सप्तममें आयेभरत १ ॥

अब महादेवजी पार्वतीसे कहतेहैं किहे पार्वति तब रामकी आज्ञासे गंगातट से अयोध्याको आवता हुआ जो सुमंत्र सो नेत्रोंसे अश्रुधाराको छोड़ताहुआ और मुखकोवस्त्रसे आच्छादनकरसंध्यासमयमें अयोध्यानगरीमें प्रवेश करता हुआ १ बाहररथको स्थापनकरि राजाके देखनेको आवताहुआ फिर जयशब्द कहिकै राजाकी स्तुतिकरप्रणामकरता हुआ २ तिसके अनन्तर शोक में बि-

हुवल जो राजा सो प्रणामकरताहुआ जो सुमंत्र तिससे बोलताहुआ किहे सुमंत्र सीता लक्ष्मण करिकै सहित राम कहां हैं ३ और कौन स्थानपर तुम ने रामको छोड़ा और जिस समय तुमचलतेहुयेहो उससमयमें पापी जो मैंहूं तिसको राम क्या कहतेहुये और सीता अथवा लक्ष्मण जे निर्दय जो मैंहूं तिससे क्या कहतेहुये ४ अब राजादशरथ हा राम हा गुणनिधे हा प्रियबादिनि सीते दुःखरूपी समुद्रमें डूबा हुआ और इससमयमें प्राण त्यागकर रहा जो मैंहौं तिसको तुम नहीं देखते हौ ५ इस प्रकार बहुत काल बिलाप करिकै राजा दुःखरूप समुद्रमें डूब जाताहुआ और इस प्रकार रोवता हुआ जो राजा तिससे हाथ जोड़के सुमंत्र बोलता हुआ ६ कि हे राजन् राम औ सीता औ लक्ष्मण ये तीनों रथपै चढ़ाके प्राप्त कियेहुये शृंगवेर पुरके समीप गंगातटपै स्थित होतेहुये ७॥

गुहेनकिंचिदानीतंफलमूलादिकंचयत् ॥ स्पृष्ट्वाहस्तेनसंप्रीत्यानाग्रहीद्विससर्जतत् ८ वटक्षीरंसमानाय्यगुहेनरघुनंदनः॥ जटामुकुटमाबध्यमामाहनृपतेस्वयम् ९ सुमंत्रब्रूहिराजानंशोकस्तेऽस्तुनमत्कृते ॥ साकेतादधिकंसौख्यंविपिनेनोभविष्यति १० मातुर्मेवंदनंब्रूहि शोकंत्यजंतुमत्कृते ॥ आश्वासयतुराजानंवृद्धंशोकपरिप्लुतम् ११ सीताचाश्रुपरीताक्षीमामाहनृपसत्तम ॥ दुःखगद्गदयावाचारामंकिंचिदवेक्षती १२ साष्टांगप्रणिपातंमेब्रूहिश्वश्वोःपदाम्बुजे ॥ इतिप्ररुदतीसीतागताकिंचिदवाङ्मुखी १३ ततस्तेऽश्रुपरीताक्षानावमारुरुहुस्तदा ॥ यावद्गंगांसमुत्तीर्यगतास्तावदहंस्थितः १४ ॥

वहां गुह जो निषादहै तिसने फल मूल आदि जो कुछ ल्याके समीप स्थापन किया सो रामचन्द्रने केवल प्रीतिसे हाथसे स्पर्श किया और कुछनहीं ग्रहण किया सब लौटारदिया ८ फिर राम निषादसे बरगदका दूधमँगाके जटा मुकुट बांधके हे राजन् फिर आपही मुझसे कहते हुये कि ९ हेसुमंत्र जो राजा से कहौगे कि मेरे अर्थ आपको शोकनहीं करना चाहिये अयोध्यासेभी अधिक सुख हमको वनमेंहोगा १० और मातासे मेरा प्रणाम कहियो और यह कहियो मेरे अर्थ शोक न करैं और शोकमें डूबाहुआ वृद्ध जो राजा है तिसके चित्तको सावधान करैं ११ और हे राजन् तिसके उपरान्त आंशुवों करिकै व्याप्त हैं नेत्र जिसके ऐसी जो सीता सो दुःख करिकै गद्गद बाणीसे मुझसे कहती हुई रामके तरफ कुछ देखके १२ कि हे सुमन्त्र सासुके चरणार विन्दमें साष्टांग प्रणाम मेरा कहियो ऐसा कहिकै रोवती हुई जो सीताहै सो कुछ नीचे

को मुख करती हुई १३ तब तीनों जने रोवतेहुये नौका पै चढ़तेहुये जबतक गंगाको उतरके पारगये तबतक मैं वहां स्थितरहा १४ ॥

ततोदुःखेनमहतापुनरेवाहमागतः ॥ ततोरुदन्तीकौशल्याराजानमिदमब्रवीत् १५ कैकेय्येप्रियभार्यायैप्रसन्नोदत्तवान्वरम् ॥ त्वंराज्यंदेहितस्यैवमत्पुत्रःकिंविवासितः १६ कृत्वात्वमेवतत्सर्वमिदानींकिंनुरोदिषि ॥ कौशल्यावचनंश्रुत्वाक्षतेस्पृष्टइवाग्निना १७ पुनःशोकाश्रुपूर्णाक्षःकौशल्यामिदमब्रवीत् ॥ दुःखेनम्रियमाणंमांकिंपुनर्दुःखयस्यलम् १८इदानीमेवमेप्राणाउत्क्रमिष्यंतिनिश्चयः ॥ शप्तोऽहंबाल्यभावेनकेनचिन्मुनिनापुरा १९ पुराहंयौवनेदृप्तश्चापबाणधरोनिशि ॥ अचरंमृगयासक्तोनद्यास्तीरेमहावने २० तत्रार्द्धरात्रसमये मुनिःकश्चित्तृषार्दितः ॥ पिपासार्दितयोःपित्रोर्जलमानेतुमुद्यतः । अपूरयज्जलेकुम्भंतदाशब्दोऽभवन्महान् २१ ॥

तिसके उपरांत बड़े भारी दुःख करिकै मैं यहां आके प्राप्त हुआ तिसके उपरांत रोवती हुई जो कौशल्या सो राजा से यह बचन बोलती हुई १५ कि प्यारी जो कैकेयी भार्या तिसको प्रसन्न होके तुम बरदेते हुये तौ राज्य कैकेयी के देते मेरापुत्र किसवास्ते बनको निकार दिया १६ आपही सबकर्म ऐसा करिकै अब इस समय में क्यों रोवतेहौ ऐसे कौशल्या के बचन सुनके जैसे घाउकोकोई अग्निसे स्पर्शकरै १७ तैसे राजा फिर अधिक शोकके आंशुओं करके नेत्रोंको परिपूर्ण कर कौशल्या से यह बचन बोलते हुये कि हे कौशल्ये मैंतो आपही दुःख करिकै मररहाहौं तिसको अधिक दुःख फिर क्यों उत्पन्न करती है १८ अब इसीसमय में मेरे प्राण निकलैंगे ऐसा निश्चय होता है क्योंकि पहिले मूर्खता के कारण से किसी मुनिने मुझको शाप दियाहै १९ पहिले मैं यौवन अवस्था में बड़े गर्व युक्त होके रात्रि में धनुषबाण धारण कर शिकार खेलने में बड़ा आशक्त नदी के तीर बनमें बिचरता हुआ २० तहां अर्द्धरात्रिके समय में कोई मुनि बड़ाप्यासा औ प्यासकरके पीड़ित जो माता पिता तिनके अर्थभी जल लेनेको नदीके तीरघड़ालेके आया फिर जब जलसे घड़ा भरनेलगा तब जब उसमें जलके जानेसे बड़ा शब्द हुआ २१ ॥

गजःपिबतिपानीयमितिमत्वामहानिशि ॥ बाणंधनुषिसंधायशब्देवेधिनमाक्षिपम् २२ हाहतोऽस्मीतितत्राभूच्छब्दोमानुषसूचकः ॥ कस्यापिनकृतोदोषोमयाकेनहतोविधे २३ प्रतीक्षतेमांमाताचपिता

चजलकांक्षया ॥ तच्छ्रुत्वाभयसंत्रस्तस्ततोऽहंपौरुषंवचः २४ शनै र्गत्वाऽथतत्पार्श्वेस्वामिन्दशरथोऽस्म्यहम्॥ अजानतामयाविद्धस्त्रा तुमर्हसिमांमुने २५ इत्युक्त्वापादयोस्तस्यपतितोगद्गदाक्षरः॥ तदा मामाहसमुनिर्माभैषीर्नृपसत्तम २६ ब्रह्महत्यास्पृशेन्नत्वांवैश्योहंतप सिस्थितः॥ पितरौमांप्रतीक्षेतेक्षुत्तृड्भ्यांपरिपीडितौ २७ तयोस्त्व मुदकंदेहिशीघ्रमेवाविचारयन् ॥ नचेत्वांभस्मसात्कुर्य्यात्पितामेय दिकुप्यति २८॥

तब मैंने यह जाना कि कोई हाथी जल पीरहा है इस अर्द्ध रात्रिमें यह जानिकै एक शब्दबेधी बाण धनुषमें संधान कर छोड़ता हुआ २१ तिसके उपरांत हे कौशल्ये हाहतोस्मि ऐसा मनुष्यके बोध करनेवाला शब्द होता हुआ अर्थात् मैं मारागया ऐसा मनुष्यके बतानेवाला शब्दहुआ और यह कहता हुआ कि हेबिधे मैंने तोकिसीका अपराध नहीं कियाथा किसनेमुझकोमारा२३ माता औ पिता जलकी इच्छाकरिकै मेरीप्रतीक्षा करतेहोंगे अर्थात् कबहमारा पुत्रजल लावै कबहम पीवैं ऐसा बिचार करतेहोंगे सो बचनसुनिकै मनुष्य बाणीका निश्चय कर भयकरिकै त्रासको प्राप्त जो मैं हौं २४ सो धीरेधीरेउस पुरुषके समीप जाके मैंने कहाकि हेस्वामिन् मैं दशरथहौं बिनाजाने मैंने बाण से बेधन किया इससे हेमुने मुझको रक्षा करनेयोग्य हो २५ ये बचन कहिकै उसमुनिके चरणोंतलेमें पड़ताहुआ तौ वह मुनिगद्गद और बचनसे अर्थात् कुछ अक्षर निकलेकुछनहीं वहगद्गदबाणीकहातीहै सो मरण समयमें मूर्च्छा वशसे ऐसी बाणीसे वहतपस्वी बोलाकि २६ हे नृपसत्तम ब्रह्महत्या तुमको नहीं स्पर्श करैगी जिसकारणसे मैं तपमें स्थित वैश्यहौं परन्तु भूख प्यास क- रिकै पीड़ितमेरे मातापिता होंगे २७ तिन दोनों के पीनेको जल तुम शीघ्रही जाकेदेवो इसमें कुछविचार न करो और जो ऐसा न करौगे तौ मेरा पिता जो क्रोधकरैगा तौ तुमको भस्मकरिदेगा २८॥

जलंदत्वातुतौनत्वाकृतंसर्वंनिवेदय ॥ शल्यमुद्धरमेदेहात्प्राणां स्त्यक्ष्यामिपीडितः २९ इत्युक्तोमुनिनाशीघ्रम्बाणमुत्पाट्यदेहतः॥ सजलंकलशंधृत्वागतोहंयत्रदम्पती ३० अतिवृद्धावन्धदृशौक्षुत्पि पासार्दितौनिशि ॥ नायातिसलिलंगृह्यपुत्रःकिंवाऽत्रकारणम् ३१ अनन्यगतिकौवृद्धौशोच्यौतृट्परिपीडितौ ॥ आवामुपेक्षतेकिंवाभ क्तिमानावयोःसुतः ३२ इतिचिन्ताव्याकुलौतौमत्पादन्यासजंध्वनि

म् ॥ श्रुत्वाप्राहपितापुत्रकिंविलम्बःकृतस्त्वया ३३ देह्यावयोःसुपानीयंपिवत्वमपिपुत्रक ॥ इत्येवंलपतोर्भीत्यासकाशमगमंशनैः ३४ पादयोप्रणिपत्याहमब्रुवंविनयान्वितः ॥ नाहंपुत्रस्त्वयोध्यायाराजा दशरथोऽस्म्यहम् ३५॥

इससे मेरे माताको जल देके फिर तिन दोनों को नमस्कार करिकै जो कुछ तुमनेकर्म कियाहै सो निवेदन करो और मेरे देहसे शीघ्रही इस बाणको निकालो इसकी व्यथासे पीड़ित जो मैं हौं सो प्राणत्याग करताहौं २९ ऐसा जब मुनिने वचनकहा तोमैं शीघ्रही उस मुनिके देहके बाणको निकासकरि फिर जलसहित कलशको धारण करिकै वहां मैं जाताहुआ जहां वे दोनों स्त्री पुरुषथे ३० अति वृद्धैरहे और अंध जिनके नेत्र हैं और भूख प्यास करिके रात्रिमें पीड़ितरहे और जललेके हमारा पुत्रनहीं आया इसमें क्या कारण है ३१ यह नहीं जाना जाता और सिवाय उसपुत्रके नहीं और गति जिनकी ऐसे हमहैं और वृद्धहैं औ शोच करिबेयोग्यहैं और प्यासकरके पीड़ितहोरहे हैं भक्तिमान् जो हमारापुत्रहै सो कहीं त्याग तो न करिदेवै ३२ ऐसी चिन्तामें दोनों व्याकुल होरहेथे सो मेरेपाओंका धरनेका शब्द सुनिकै पिताबोला कि हेपुत्र आजु विलंब तुमने कैसेकिया ३३ हे पुत्र हमको सुन्दरजल पीनेको देउ फिर तुमभी पीवो ऐसा वचन कहिरहे जो दोनोंवृद्ध तिनके समीप भयकरके मैं धीरेसे जाताहुआ ३४ फिरदोनों वृद्धोंके पावोंमें गिरिकै प्रणामकर नम्रता पूर्वकमें वचन बोलताहुआ कि मैं तुम्हारा पुत्रनहींहों मैं अयोध्या का राजा दशरथ हौं ३५ ॥

पापोऽहंमृगयासक्तो रात्रौमृगविहिंसकः॥ जलावताराद्दूरेऽहंस्थित्वाजलगतंध्वनिम् ३६ श्रुत्वाऽहंशब्दवेधित्वादेकंबाणमथात्यजम्॥ हतोऽस्मीतिध्वनिंश्रुत्वाभयात्तत्राहमागतः ३७ जटाविकीर्यपतितं दृष्ट्वाऽहंमुनिदारकम् ॥ भीतोगृहीत्वातत्पादौरक्षरक्षेतिचाब्रुवम् ३८ माभैषीरितिमांप्राहब्रह्महत्याभयंनते ॥ मत्पित्रोःसलिलंदत्वानत्वा प्रार्थयजीवितम् ३९ इत्युक्तोमुनिनातेनह्यागतोमुनिहिंसकः ॥ रक्षेतांमांदयायुक्तौयुवांहिशरणागतम् ४० इतिश्रुत्वातुदुःखार्त्तौविलप्यबहुशोच्यतम् ॥ पतितौनौसुतोयत्रनयतत्राविलम्बयन् ४१ ततोनीतौसुतोयत्रमयातौवृद्धदम्पती ॥ स्पृष्ट्वासुतंतौहस्ताभ्यांबहुशोऽथविलेपतुः ४२॥

और मैं शिकार खेलनेमें आसक्त औ रात्रिमें मृगोंकी हिंसाकरनेवालापापयुक्त होरहाहौं सो मैं जहां नदीकाजल भरने का घाटहै तिसके दूर स्थित होकै जलमें शब्दको सुनिकै ३६ शब्दबेधी एकबाण छोड़ताहुआ फिर हतोस्मि अर्थात् मैं मारागया ऐसा मनुष्यका शब्दसुनिकै भयसे वहां आवताहुआ ३७ फिरजटा जिसकी फैलरहीहैं ऐसे पड़ेहुये मुनिके बालकको देखिकै ब्रह्महत्या के भयसे उसके चरणोंको ग्रहणकर रक्ष रक्ष अर्थात् रक्षाकरो रक्षाकरो ऐसा वचन उसमुनि बालकसे कहता हुआ ३८ तबउसने यह कहाकि भयमतकरो ब्रह्महत्याकाभय तुम कोनहींहै परन्तु मेरेमाता पिताको जलदेकै और नमस्कार करिकै अपने जीवनके अर्थ प्रार्थनाकरो ३९ इसप्रकार उस मुनिका भेजाहुआ जो मैंहौंसो तुम्हारे समीप प्राप्त हुआ सो दयायुक्त जो तुम दोनोंहौ सो शरणागतजो मैंहौं तिसकी रक्षाकरिये ४० यह मेरे मुखकावचन वेदोनों वृद्ध सुनिकै दुःख करिकै पीड़ितहो बहुत बिलापकर उसपुत्रको शोचके यह कहते हुये कि जहांहमारापुत्र पड़ाहै तहां शीघ्रही हमको प्राप्तकरौ बिलंब नकरो ४१ तब हे कौशल्ये मैंने वे वृद्धस्त्री पुरुष वहां प्राप्तकिये जहां उनका पुत्रमराहुआपड़ाथा तब अपने हाथोंसे वेवृद्ध अपनेपुत्रको स्पर्शकर बहुत प्रकारकाबिलाप करतेहुये ४२॥

हाहेतिक्रन्दमानौतौपुत्रपुत्रेत्यवोचताम् ॥ जलंदेहीतिपुत्रेतिकिमर्थंनददास्यलम् ४३ ततोमामूचतुःशीघ्रञ्चितिरचयभूपते ॥ मयातदैवरचिताचितिस्तत्रनिवेशिताः ॥ त्रयस्तत्राग्निरुत्सृष्टोदग्धास्तेत्रिदिवंययुः ४४ तत्रवृद्धःपिताऽऽहत्वमप्येवंभविष्यसि ॥ पुत्रशोकेनमरणंप्राप्स्यसेवचनान्मम ४५ सइदानींममप्राप्तःशापकालोनिवारितः ॥ इत्युक्त्वाविललापाथराजाशोकसमाकुलः ४६ हारामपुत्रहासीतेहालक्ष्मणगुणाकर ॥ त्वद्वियोगादहंप्राप्तोमृत्युंकैकेयिसंभवम् ४७ वदन्नेवंदशरथःप्राणांस्त्यक्त्वादिवंगतः ॥ कौशल्याचसुमित्राचतथान्याराजयोषितः ४८ चुक्रुशुश्चविलेपुश्चउरस्ताडनपूर्वकम् ॥ वशिष्ठःप्रययौतत्रप्रातर्मन्त्रिभिरावृतः ४९ ॥

हा हा ऐसा शब्दकर रोदनकर पुत्र यह शब्द कहतेहुये अर्थात् हा पुत्र हा पुत्रऐसे शब्द उच्चारण करके विलाप करतेहुये और हेपुत्र तुम जल देउ और कौनकारणसे जल नहीं देतेहौ ४३ तब मुझसे दोनों वृद्ध कहने लगे कि हे राजन् शीघ्रही हमारी चितारचो फिर मैंने शीघ्रही चिता रचिकै उस चितामें वे दोनों वृद्ध और उनका पुत्र ये तीनोंको स्थापनकर अग्निदेके भस्मकरदिये

तो वे तीनों स्वर्गको जातेभये ४४ तब मरण समयमें जो वृद्धमुनिका पिता सो मुझसे कहताहुआ कि हेराजन् जैसे मैं पुत्र शोकमें प्राणोंको त्यागताहूं तैसे तुम्हारे भी प्राण पुत्रशोकही में जायँगे ४५ हे कौशल्ये वह शापकाकाल अब इससमयमें मुझको प्राप्तहुआहै सो वह निवारण करनेको अशक्यहै ऐसेबचन कहिकै राजा शोकमें व्याकुलहो बिलाप करताहुआ ४६ कि हाराम हागुणाकर पुत्र हासीते हा लक्ष्मण तुम्हारे वियोगसे केकयीसे उत्पन्नहुआ जो मृत्यु तिसको मैं प्राप्तहोताहूं ४७ ऐसे कहिकै राजादशरथ प्राणोंको त्यागकर स्वर्गको जातेहुये स्वर्ग शब्दकरके यहांब्रह्मलोकका ग्रहणहै क्योंकि दशरथको ब्रह्मलोक प्राप्त हुआ ऐसा बाल्मीकीय रामायण आदि बहुत ग्रंथोंसे निश्चयहोताहै अब कौशल्या औ सुमित्रा आदि बहुतसी दशरथकी रानियां ४८ छातीकूटके बिलाप करतीहुईं फिर प्रातःकाल वशिष्ठजी महाराज मंत्रियों को संग लेके राजमंदिरको आतेहुये ४९ ॥

तैलद्रोण्यांदशरथंक्षिप्त्वादूतानथाब्रवीत्॥गच्छतत्वरितंसाश्वायुधाजिन्नगरंप्रति५०तत्रास्तेभरतःश्रीमाञ्छत्रुघ्नसहितःप्रभुःउच्यतांभरतःशीघ्रमागच्छेतिममाज्ञया ५१ अयोध्यांप्रतिराजानंकैकेयींचापिपश्यतु ॥ इत्युक्तास्त्वरितंदूतागत्वाभरतमातुलम् ५२ युधाजितंप्रणम्योचुर्भरतंसानुजंप्रति ॥ वशिष्ठस्त्वाब्रवीद्राजन्भरतःसानुजःप्रभुः ५३ शीघ्रमागच्छतुपुरीमयोध्यामविचारयन् ॥ इत्याज्ञप्तोऽथभरतस्त्वरितंभयविह्वलः ५४ आययौगुरुणादिष्टः सहदूतैस्तु सानुजः ॥ राज्ञोवाराघवस्यापिदुःखंकिंचिदुपस्थितम् ५५ इतिचिंतापरोमार्गेचिंतयन्नगरंययौ॥नगरंभ्रष्टलक्ष्मीकंजनसंबाधवर्जितम्५६

दशरथकी देहको तैलकी नौका में स्थापन कराके दूतोंसे यह वचन कहते हुये कि तुम सब घोड़ोंपै चढ़िकै शीघ्र युधाजितके नगरको जाओ ५० तिस नगर में शत्रुघ्न सहित श्रीमान् भरत बासकरताहै सो भरत शीघ्रही मेरीआज्ञा करके आवैं ऐसा जाके कहो ५१ और अयोध्या में आके राजाको औ केकयी को देखैं ऐसे वशिष्ठकी आज्ञासे वहदूतशीघ्रही जाके भरतका मामा जो युधाजित तिसको प्रणाम करके ५२ कहतेहुये कि हेराजन्शत्रुघ्न सहित भरत के प्रति वशिष्ठजीने यहकहा कि अनुज सहित भरत अयोध्याको इसी समयआवैं ५३ कुछ बिचार न करैं ऐसी वशिष्ठकी आज्ञा सुनिकै भय करिकै विह्वल हुआ जो भरत ५४ सो शत्रुघ्न करके सहित और दूतों करके सहित गुरू की आज्ञा के वश शीघ्रही आवता हुआ अब भरत मार्गमें यह विचार करता हुआ

कि राजाको अथवा रामको कुछ दुःख प्राप्त होरहाहै ५५ ऐसी चिन्तामें मग्न हुआ भरत नगरमें प्राप्तहोता हुआ फिर भ्रष्टहुईहै शोभाजिसकी औ मनुष्यों के समूह करके रहित ५६ ॥

उत्सवैश्चपरित्यक्तंदृष्ट्वाचिन्तापरोऽभवत् ॥ प्रविश्यराजभवनंराजलक्ष्मीविवर्जितम् ५७ अपश्यत्कैकयींतत्रएकामेवासनेस्थिताम्॥ ननामशिरसापादौमातुर्भक्तिसमन्वितः ५८ आगतंभरतंदृष्ट्वाकैकेयी प्रेमसंभ्रमात् ॥ उत्थायालिंग्यरभसास्वांकमारोप्यसंस्थिता ५९ मूर्ध्न्यवघ्रायपप्रच्छकुशलंस्वकुलस्यसा॥ पितामेकुशलीभ्राातामाताच शुभलक्षणा६० दिष्ट्यात्वमद्यकुशलीमयादृष्टोऽसिपुत्रक ॥ इतिपृष्टः सभरतोमात्राचिंताकुलेंद्रियः ६१ दूयमानेनमनसा मातरंसमपृच्छत ॥ मातःपितामेकुत्रास्तेएकात्वमिहसंस्थिता ६२ त्वयाविनानमे तातःकदाचिद्रहासिस्थितः॥ इदानींदृश्यतेनैवकुत्रतिष्ठतिमेवद ६३॥

और उत्सवों करके रहितऐसे नगरको देखके भरत और भी चिन्ता में परायण होताहुआ फिर राजलक्ष्मीसे हीन जो राजाका मन्दिर तिस में प्रवेश कर ५७ अकेली आसनपै बैठी कैकेयीको देखताहुआ फिर भक्तिकरके सहित शिरकरके माताके चरणों को प्रणाम करता हुआ ५८ अब आवते हुये भरत को देखके कैकेयी प्रेमके संभ्रमसे शीघ्रही उठकर हृदयसे आलिंगन कर गोदमें बिठाकर आसनपै बैठतीहुई ५९ शिर सूंघकर अपने पिताके कुलकी कुशल पूछतीहुईकि हेभरत पिता मेराकुशल युक्तहै और भाई माता ये कुशलयुक्तहैं ६० और हे पुत्र बड़े आनन्दकी बार्त्ताहै जो मैं तुमको कुशलयुक्त देखतीहूं इसप्रकारमाता करके पूछाहुआ भी भरतहै तौभी चिन्ताकरके व्याकुल इन्द्री जिस की ६१ और संतापयुक्त मनकरके मातासे पूछताहुआ कि हेमातःमेरा पिता कहां है और तू अकेली यहांकैसे बैठीहै ६२ क्योंकि तेरे विना मेरा पिता कभी एकान्त में नहीं बैठता था और इस समय में अब नहीं दिखाईपड़ता है सो कहां स्थित यह मुझसे कहु ६३ ॥

अदृष्ट्वापितरंमेद्यभयंदुःखंचजायते ॥अथाहकैकयीपुत्रं किंदुःखेनतवानघ ६४ यागतिर्धर्म्मशीलानामश्वमेधादियाजिनाम् ॥ तांगतिंगतवानद्यपितातेपितृवत्सल ६५ तच्छ्रुत्वानिपपातोर्व्यांभरतः शोकविह्वलः ॥ हातातक्वगतोऽसित्वं त्यक्त्वामांवृजिनार्णवे ६६ असमर्प्यैवरामाय राज्ञेमांक्वगतोऽसिभो ॥ इतिविलापितंपुत्रंपतितंमुक्त

मूर्द्धजम् ६७ उत्थाप्यामृज्यनयनेकैकेयीपुत्रमब्रवीत् ॥ समाश्वसिहि भद्रंते सर्व्वंसंपादितंमया ६८ तामाहभरतस्तातो म्रियमाणःकिमब्रवीत् ॥ तमाहकैकयीदेवीभरतंभयवर्ज्जिता ६९ हारामरामसीतेति लक्ष्मणेतिपुनःपुनः ॥ विलपन्नेवसुचिरं देहंत्यक्त्वादिवंययौ ७० ॥

विना पिताके देखे मुझको इस समयमेंभय और दुखः उत्पन्नहोरहाहै अब कैकेयी पुत्रसे कहनेलगी हेअनघ पापरहित तुमको दुःखसे क्याप्रयोजनहै ६४ और जो गति धर्म्मशील पुरुषोंकी होतीहै और अश्वमेधादि यज्ञ करनेवालों की जो गति होतीहै तिसगतिको इस समयमें तुम्हारा पिता प्राप्तहुआ ६५ यह वचन सुनिकै शोककरके व्याकुल जो भरत सो पृथिवीमें गिरपड़ताहुआ औ हा तात तुम दुःखके समुद्र में मुझको डालके कहांगये ६६ औ राम जो राजा हैं तिनको मुझे बिनासौंपे आप कहांगये ऐसे विलाप करताहुआ औ पृथिवीमेंपड़ा औरखुलेकेश हैं जिसके ऐसा जो पुत्र तिसको ६७ कैकेयी उठाकरके औ आंखोंकोपोंछकै यह बोलतीहुई कि हेपुत्र अपनेचित्तको सावधानकरो और तुम्हारा कल्याणहोय और मैंने तुम्हारे वास्ते सब सिद्धकर रक्खाहै ६८ तब भरत कैकेयी से पूछतेहुये कि जबपिता मरनेलगे तब क्या कहतेहुये तब कैकेयी निर्भयहोकै भरतसे कहतीहुई ६९ कि हेपुत्र हाराम हा राम हा सीता हा लक्ष्मण इसप्रकार बारम्बार बहुत कालतक बिलाप करते करते तुम्हारा पिता देहको त्यागकर स्वर्गकोगया ७० ॥

तामाहभरतोहेम्बरामःसन्निहितोनकिम् ॥ तदानींलक्ष्मणोवाऽपि सीतावाकुत्रतेगताः ७१ कैकेय्युवाच ॥रामस्ययौवराज्यार्थंपित्रातेसंभ्रमःकृतः ॥ तवराज्यप्रदानायतदाऽहंविघ्नमाचरम् ७२ राज्ञादत्तंहि मेपूर्व्वंवरदेनवरद्वयम् ॥ याचितंतदिदानीमेतयोरेकेनतेऽखिलम् ७३ राज्यंरामस्यचैकेन वनवासोमुनिव्रतम् ॥ ततःसत्यपरोराजा राज्यं दत्त्वातवैवहि ७४ रामंसंप्रेषयामास वनमेवपितातव ॥ सीताऽप्यनुगतारामं पातिव्रत्यमुपाश्रिता ७५ सौभ्रात्रंदर्शयन्राम मनुयातोऽपि लक्ष्मणः ॥ बनंगतेषुसर्वेषुराजातानेवचिन्तयन् ७६ प्रलपन्रामरामेतिममारनृपसत्तमः ॥ इतिमातुर्वचःश्रुत्वावज्राहतइवद्रुमः ७७ ॥

तौ भरत कैकेयी से बोले कि हेमातः क्याराम उससमयमें पिताके समीप नहींथे और उससमयमें लक्ष्मण और सीताजी भी क्या न थीं और जो नहीं थे तोये सब कहांगये ७१ तब कैकयी कहतीहुई कि हेपुत्र जब रामके यौवरा-

ज्यके अर्थ तुम्हारे पिताने आदरपूर्वक प्रारंभ किया तबमैंने तुम्हारे राज्यकी प्राप्तिकेलिये रामके राज्यमें बिघ्नकिया ७२ राजाने पहिले एकसमय प्रसन्न हो मुझको दोबर देरक्खे थे सो इससमयमें वे दोनोंबर राजासे मैंनेमांगे ७३ तिसमें एकबर करके तो तुम्हारे अर्थ सब राज्यमांगा और दूसरेबर करके राम को बनबास मुनियों के व्रतको धारण करके तबसत्यमें परायण जो राजा हैं सो तुम्हारेई अर्थ राज्य देके ७४ रामको बनको भेजताहुआ और पाति-व्रत धर्मको आश्रयणकर सीताभी रामके पीछे जातीहुई ७५ और लक्ष्मण जीभी अच्छे भाइयोंका जो धर्महै तिसको अपने में दिखाताहुआ रामके पीछे पीछे जाताहुआ इसप्रकार जब येतीनों बनकोगये तब राजा इनका चिन्तन करताहुआ ७६ और रामराम ऐसे कहतेकहते प्राणोंको छोड़ताहुआ यह माताके वचनसुनिकै जैसे बज्रकरिकै ताड़ित वृक्षहोवै तैसे मूर्च्छित होकै ७७॥

पपातभूमौनिःसंज्ञस्तंदृष्ट्वादुःखितातदा॥ कैकेय्यापुनरप्याहवत्स शोकेनकिंतव ७८ राज्येमहतिसंप्राप्तेदुःखस्यावसरःकुतः॥ इतिब्रुवंतीमालोक्यमातरंप्रदहन्निव ७९ असंभाष्याऽसिपापेमेघोरेत्वंभर्तृघातिनी॥ पापेत्वद्गर्भजातोऽहंपापवानस्मिसांप्रतम्॥ अहमग्निंप्रवेक्ष्यामिविषंवाभक्षयाम्यहम् ८० खड्गेनवाऽथचात्मानंहत्वायामियमक्षयम्॥ भर्तृघातिनिदुष्टेत्वंकुंभीपाकंगमिष्यसि ८१ इतिनिर्भर्त्स्यकैकेयींकौशल्याभवनंययौ॥ साऽपितंभरतंदृष्ट्वामुक्तकण्ठारुरोदह ८२ पादयोःपतितस्तस्याभरतोऽपितदारुदन्॥ आलिंग्यभरतंसाध्वीराममातायशस्विनी ८३ कृशातिदीनवदनासाश्रुनेत्रेदमब्रवीत्॥ पुत्रत्वयिगतेदूरमेवंसर्वमभूदिदम्॥ उक्तंमात्राश्रुतंसर्वंत्वयातेमातृचेष्टितम् ८४॥

भरत पृथिवी में गिरपड़ता हुआ तिसको देखिकै दुःखित जो कैकेयी सो फिर वचन बोलतीहुई कि हेबत्स तुमको शोककरके क्या प्रयोजनहै ७८ अर्थात् तुम्हारे बैरियोंको शोकहोय तुमको तो बड़ाभारी राज्य प्राप्तहुआहै दुःख का अवसर कौनहै ऐसे भरतके स्वभाव से विरुद्ध वचन कहतीहुई जो कैकेयी तिसको मानोभस्म करिदेवैंगे ऐसी क्रोधकी दृष्टिसे देखकै ७९ भरत बोलते हुये कि हेपापे तू मेरे संभाषण करनेयोग्य नहींहै हेघोरे तू अपने पतिके मारने वाली है अरे पापिनि तेरेगर्भसे मैं उत्पन्नहुआ इससे मैंभी इस समयमें पापी हौं ८० सो मैं कितौ अग्निमें प्रवेश करूंगा अथवा विषभक्षण करूंगा अथवा खड्गसे अपना शिर काटिकै मरजाऊंगा अरे भर्त्ताके मारनेवाली दुष्टे तू अवश्य

इस पापसे कुम्भीपाक नरकको जायगी ८१ इसप्रकार भरत कैकेयीका तिर-स्कार करके आप कौशल्याके गृहजातेहुये सो कौशल्याभी भरत को देखके कण्ठखोल कै रोवतीहुई ८२ और भरतभी उस समय में रोवतेहुये कौशल्या के चरणों में गिरतेहुये तब यशस्विनी जो रामकी माता कौशल्या सो भरतको हृदय से लगालेतीहुई ८३ अति दुर्बल औ दीनमुख जिसका औ नेत्रोंसे अश्रुपात जिसके होरहाहै ऐसी जो कौशल्या सो भरतसे बोलतीहुई हे पुत्र तुमतौ दूरगयेरहे तबतक यहां सब यह चरित्रहुआ जो कुछ माताने कहाहोगा अपना कियाकर्म सो तुमने सुनाहीहोगा ८४ ॥

पुत्रःसभार्योवनमेवयातःसलक्ष्मणोमेरघुरामचन्द्रः॥ चीराम्बरोबद्धजटाकलापःसंत्यज्यमांदुःखसमुद्रमग्नाम् ८५ हारामहामेरघुवंशनाथजातोऽसिमेत्वंपरतःपरात्मा ॥ तथापिदुःखंनजहातिमांवैविधिर्बलीयानितिमेमनीषा ८६ सएवंभरतोवीक्ष्यविलपन्तींभृशंशुचा॥ पादौगृहीत्वाप्राहेदंशृणुमातर्वचोमम ८७ कैकेय्यायत्कृतंकर्मरामराज्याभिषेचने ॥ अन्यद्वायदिजानामिसामयानोदितायदि ८८पापंमेऽस्तुतदामातर्ब्रह्महत्याशतोद्भवम् ॥ हत्वावशिष्ठंखड्गेनअरुन्धत्यासमन्वितम् ८९ भूयात्तत्पापमखिलंममजानामियद्यहम् ॥ इत्येवंशपथंकृत्वारुरोदभरतस्तदा ९० कौशल्यातमथालिंग्यपुत्रजानामिमाशुचः ॥ एतस्मिन्नन्तरेश्रुत्वाभरतस्यसमागमम् ९१ ॥

हे भरत रघुकुल में जो चन्द्ररूप ऐसा जो मेरा रामनाम पुत्रसो चीर वस्त्र धारण कर औ जटाजूटको बांधि कै दुःखसमुद्रमें डूबरहीजो मैं तिसकोत्याग कर सीता लक्ष्मण सहित आप वनहीको जाताहुआ८५हाराम हारघुवंशनाथ सबसेपरे अधिक ऐसा जो परमात्मा सो तुम आनकर यद्यपि मेरे पुत्रहुये तब भी मुझको दुःख नहीं त्यागकरता इससे बिधि जो दैवहै सोई बलवान्है यह मेरी बुद्धिहै अर्थात् ऐसा मेरी बुद्धिमें आताहै ८६ अब सो भरत शोक करके इस प्रकार विलापकरतीहुई जो कौशल्या तिसको देखके कौशल्याके चरण स्पर्शकर कहताहुआ कि हे मातः यह मेरे बचनको सुनो ८७ कि रामके राज्यके अभिषेकमें जो कैकेयीने कर्म किया अथवाऔरकोई तेरादुःख मूल कर्म कियाहै सो मैंजानताहोऊं अथवा मेरीप्रथमसे संमतिहोय अथवा मैंने कभी प्रेरणाकरी होय ८८ तौ हे माता सैकड़ों ब्रह्महत्या का जो पापहै सो मुझको होय और अरुन्धती करके सहित वशिष्ठको खड्ग करके वध करनेमें जो पापहै सो संपूर्ण मुझकोहोय ८९ या मेरी संमतिहोय और इस कर्मको जो जानता भी

होऊँ इस प्रकार शपथ करके फिर भरत रोवता हुआ ९० तब कौशल्या भरत को आलिंगन करके कहतीहुई कि हे पुत्र मैं जानतीहूं तू मत शोचकर उसी समयमें वशिष्ठजी भरतका समागम सुनिकै ९१ ॥

वशिष्ठोमन्त्रिभिःसार्द्धंप्रययौराजमन्दिरम् ॥ रुदन्तंभरतंदृष्ट्वावशिष्ठःप्राहसादरम् ९२ वृद्धोराजादशरथोज्ञानीसत्यपराक्रमः॥भुक्त्वामर्त्यसुखंसर्वमिष्ट्वाविपुलदक्षिणैः ९३ अश्वमेधादिभिर्यज्ञैर्लब्ध्वारामंसुतंहरिम् ॥ अन्तेजगामत्रिदिवंदेवेन्द्रार्द्धासनंप्रभुः ९४ तंशोचसिवृथैवत्वमशोच्यंमोक्षभाजनम् ॥ आत्मानित्योऽव्ययःशुद्धोजन्मनाशादिवर्जितः ९५ शरीरंजडमत्यर्थमपवित्रंविनश्वरम् ॥ विचार्यमाणेशोकस्यनावकाशःकथंचन ९६ पितावातनयोवाऽपियदिमृत्युवशंगतः मूढास्तमनुशोचन्तिस्वात्मताडनपूर्वकम् ९७ निःसारेखलुसंसारेवियोगोज्ञानिनांयदा ॥ भवेद्वैराग्यहेतुःसशान्तिसौख्यंतनोतिच ९८ ॥

मंत्रियों करके सहित राजमन्दिरको आवतेहुये तहांरोवतेभरतको देखकै आदरपूर्बक बचन बोलतेहुये ९२ राजादशरथ बृद्धरहे औरज्ञानी औरसत्यहै पराक्रम जिनका ऐसेरहे सोदशरथसंपूर्ण मनुष्यलोकके सुखको भोगके और बहुतहै दक्षिणाजिनमें ऐसेरहे अश्वमेधआदियज्ञों करके यजनकरके ९३ और साक्षात्हरिरूप पुत्रकोप्राप्तहोके अन्तमेंस्वर्गकोजाताहुआ तहांमहेन्द्रकेअर्द्धासन पैबैठताहुआ ९४ तिसराजाको वृथाहीतुमशोचतेहौ क्योंकिजोराजा सर्वथा शोचकरनेयोग्यनहींहै जिस्सेमोक्षका भागीहै औरआत्मानित्य और अविनाशी है शुद्धहैऔजन्मनाशादिकरके रहितहै ९५ औरशरीरतौ जड़है औरअत्यन्त अपवित्रहै औनश्वरहै अर्थात्नाशहोनेका जिसकास्वभावही है ऐसा विचार करनेसे शोकका कैसो भी अवकाशनहींहै ९६ और हे भरत पिताहोय अथवा पुत्र जोमृत्युकेबश प्राप्तहोताहै उसको मूढ़पुरुष अपनीछाती कूटकेशोचतेहैं ९७ और साररहित जो यहसंसार तिसमें ज्ञानियोंको जबकि जीका वियोग होता है तौवहवियोग वैराग्यकाकारणहोताहै और शान्तिरूप सुखको देताहै ९८ ॥

जन्मवान्यदिलोकेऽस्मिन्तर्हितंमृत्युरन्वगात् ॥ तस्मादपरिहार्योऽयंमृत्युर्जन्मवतांसदा ९९ स्वकर्मवशतःसर्वजन्तूनांप्रभवाप्ययौ ॥ विजानन्नप्यविद्वान्यःकथंशोचतिबान्धवान् १०० ब्रह्माण्डकोटयोनष्टाःसृष्टयोबहुशोगताः ॥ शुष्यन्तिसागराःसर्वेकैवास्थाक्षणजी

विते १०१ चलपत्रान्तलग्नाम्बुविन्दुवत्क्षणभंगुरम् ॥ आयुस्त्य जत्यवेलायांकस्तत्रप्रत्ययस्तव १०२ देहीप्राक्तनदेहोत्थकर्मणादेह वान्पुनः । तद्देहोत्थेनचपुनरेवंदेहःसदाऽऽत्मनः १०३ यथात्यजतिवै जीर्णवासोगृह्णातिनूतनम् ॥ तथाजीर्णंपरित्यज्यदेहीदेहंपुनर्नवम् १०४ भजत्येवसदातत्रशोकस्यावसरःकुतः ॥ आत्मानंम्रियतेजात जायतेनचवर्द्धते १०५ ॥

जो इस लोक में जन्मवान् पुरुषहै तौ उसके पीछे पीछे मृत्यु भी गमन करतीहै तिससे जन्मवान पुरुषोंको मृत्यु सदा अपरिहार्य्य है अर्थात् अवार-णीयहै ९९ और जो अविद्वान् भीहो अर्थात् आत्मतत्त्व को नहीं भी जानता होय और अपने कर्म वशसे सब प्राणियोंके जन्म मृत्यु होतेहैं यह जानते सुन-तेभी कैसे बान्धवोंका शोचकरै १०० औ करोरों ब्रह्माण्ड नष्ट होगये औ बहु-तसी सृष्टिभी व्यतीतहोगई औसमुद्रभी सर्व सूखजातेहैं तौ क्षणमात्रके जीव-नमें किसकी नाईं विश्वास कियाजाय १०१ औ चंचल जो पत्र तिसके अन्त में अर्थात् किनारेपै लगा हुआ जो जलका विन्दु तिसके तुल्य क्षण भंगुर जो आयुसो समयपर बाल्यअवस्था में भी जोत्यागदेती है तौ उसके विषे तुमको कौन विश्वासहै १०२ देहीजो जीवहै सो पूर्व जन्मके देहसे किये जो कर्म तिस कर्म करके यहदेह उत्पन्न हुआ अब जो इस देहमें कर्म कराता है तिसकर्म करकै अगाड़ीका देह उत्पन्नहोगा इसप्रकार जबतक देहाभिमानहै तबतक देह परंपरा नहीं छूटती १०३ जैसेपुराने वस्त्रोंकोत्यागकरके नवीन वस्त्रको धारण करताहै तैसेही जीव जीर्ण देहको त्यागकर नवीन देहको सदाभजन करताहै अर्थात् ग्रहण करताहै १०४ तिसदेहमें शोकका अवसरकैसे होय और आत्मा तौ नमरताहै कभी और न उत्पन्नहोताहै और न बढ़ताहै १०५ ॥

षड्भावरहितोऽनन्तःसत्यप्रज्ञानविग्रहः ॥ आनन्दरूपोबुद्ध्या दिसाक्षीलयविवर्जितः १०६ एकएवपरोह्यात्माह्यद्वितीयःसमस्थितः॥ इत्यात्मानंदृढंज्ञात्वात्यक्त्वाशोकंकुरुक्रियाम् १०७ तैलद्रोण्याःपितु र्देहमुद्धृत्यसचिवैस्सह।कृत्यंकुरुयथान्यायमस्माभिःकुलनंदन १०८ इतिसंबोधितःसाक्षाद्गुरुणाभरतस्तदा ॥ विसृज्याज्ञानजंशोकंचक्रे सविधिवत्क्रियाम् १०९ गुरुणोक्तप्रकारेणआहिताग्नेर्यथाविधि॥ सं स्कृत्यसपितुर्देहंविधिदृष्टेनकर्मणा ११० एकादशेऽहनिप्राप्तेब्राह्मणा न्वेदपारगान् ॥ भोजयामासविधिवच्छतशोऽथसहस्रशः १११ उ

दिश्यपितरंतत्रब्राह्मणेभ्योधनंबहु ॥ ददौगवांसहस्राणिग्रामान्रत्नाम्बराणिच ११२ ॥

इस छवों विकारों करके रहितहै औ अनन्त है जिसका अन्त नहीं है औ प्रज्ञान विग्रह है अर्थात् विषयरहित जो ज्ञान सोई विग्रह स्वरूप जिसका औ आनन्दरूप है औ बुद्धि आदि जो अंतःकरण तिनका साक्षी है नाम साक्षात् देखनेवाला है औ नाश करके रहित १०६ और एकहै औ प्रकृतिसे परे है औ सबका आत्मा औ द्वैतभाव करके रहित है औ सब जगह सम रूपही करके स्थितहै हे भरत इसप्रकार आत्माको दृढ़ जानिकै शोकको त्यागकर राजाकी परलोककी क्रियाकरौ १०७ और तैलकी नौका तिससे पिताके देहको निकालकर हम जो सब मन्त्री तिन करिकै सहित जैसे शास्त्र बिधिहै तैसे कर्म करौ १०८ इसप्रकार साक्षाद् गुरु वशिष्ठकरिकै बोध कराये गये जो भरत सो अज्ञान से उत्पन्न जो शोक तिसको त्यागकर बिधिवत्संपूर्ण क्रिया करते हुये १०९ गुरुने बताया जो प्रकार तिस करिकै आहिताग्निकी जैसी बिधिहै अर्थात् अग्निहोत्र यज्ञ करनेवाले की जो बिधि तिस करिकै शास्त्रकी आज्ञा पूर्वक पिता के देहको संस्कार करिकै ११० जब ग्यारहवां दिन प्राप्तहुआ तौ वेद पारग जो सैकड़ों हजारों ब्राह्मणहैं तिनको भोजनकराके १११ फिर पिताके अर्थ बहुत धन देतेहुये और हजारों गौवें और ग्राम और रत्न और वस्त्र देतेहुये ११२ ॥

अवसत्स्वगृहेतत्ररामभेवानुचिन्तयन् ॥ वशिष्ठेनसहभ्रात्रामंत्रिभिःपरिवारितः ११३ रामेऽरण्यंप्रयातेसहजनकसुतालक्ष्मणाभ्यां सुघोरंमातामेराक्षसीवप्रदहतिहृदयंदर्शनादेवसद्यः॥ गच्छाम्यारण्यमद्यास्थिरमतिमखिलंदूरतोऽपास्यराज्यं रामंसीतासमेतंस्मितरुचिरमुखंनित्यमेवानुसेवे ११४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकांडे सप्तमस्सर्गः ७ ॥

फिर रामहीका केवल चिन्तनकरतेहुये अर्थात् स्मरण करतेहुये जो भरत हैं सो अपने गृहमें बसते हुये वशिष्ठकरके सहित औ शत्रुघ्न करके सहित औ मन्त्रियों करके सहित भरत रामचन्द्रका स्मरण करतेही कालको व्यतीत करते हुये ११३ अब भरतजी जैसे रामका चिन्तन करतेहुये तैसे प्रकार को कहते हैं भरत यह कहते हैं कि सीता लक्ष्मण करिकै सहित श्रीराम घोर बनमें प्राप्तहुये और मेरी माता जो केकयी है सो मेरे नेत्रोंके आगे आवतेही राक्षसी के तुल्य मेरे हृदयको भस्म करती है इससे संपूर्ण राज्यको दूरहीसे त्यागक-

रिकै अभी वनको जाऊंगा औ स्थिरबुद्धि होकर सीतासहित मंद मुसुकानिकर के सुन्दरहै मुखारविन्द जिनका ऐसे जो रामहैं तिनका नित्य सेवन करूंगा १४

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकाण्डे भाषाटीकायांसप्तमःसर्गः ७ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ वशिष्ठोमुनिभिःसार्द्धंमंत्रिभिःपरिवारितः ॥ राज्ञःसभांदेवसभासन्निभामविशद्विभुः १ तत्रासनेसमासीनश्चतुर्मुखइवापरः ॥ आनीयभरतंतत्रउपवेश्यसहानुजम् २ अब्रवीद्वचनंदेशकालोचितमरिंदमम् ॥ वत्सराज्येऽभिषेक्ष्यामस्त्वामद्यपितृशासनात् ३ कैकेय्यायाचितंराज्यंत्वदर्थेपुरुषर्षभ ॥ सत्यसंधोदशरथःप्रतिज्ञायददौकिल ४ अभिषेकोभवत्वद्यमुनिभिर्मंत्रपूर्वकम् ॥ तच्छ्रुत्वाभरतोऽप्याहममराज्येनकिंमुने ५ रामोराजाधिराजश्चवयंतस्यैवकिंकराः ॥ श्वःप्रभातेगमिष्यामोराममानेतुमंजसा ६ अहंयूयंमातरश्चकैकेयींराक्षसींविना॥ हनिष्याम्यधुनैवाहंकैकेयींमातृगंधिनीम्७

दो० सर्ग आठवें भरत मुनि आयसु पाय ससैन ॥
चित्रकूट सिय रामपद देखि भये सुखचैन १

श्री महादेवजी पार्वती जीसे कहतेहैं कि हेपार्वति अब वशिष्ठजी मुनियों को संगलैकै औ मन्त्रियों करके सहित देवसभाके तुल्य जो राजसभाहै तिसमें प्रवेशकरतेभये १ तिससभामें आसनके ऊपरस्थित ब्रह्माके तुल्य जो वशिष्ठजी सो शत्रुघ्न सहित भरतको बुलवाय के अपने समीप बिठाकर २ देशकाल के उचित जो वचन तिनको बोलतेहुये कि हे बत्स तुमको आज हमराज्यके बिषे अभिषेकयुक्त करैंगे तुम्हारे पिताकी आज्ञानुसार ३ क्योंकि हे पुरुषर्षभ केकयीने तुम्हारे अर्थ राजासे राज्यकी याचनाकी और सत्यमर्याद जो राजा दशरथ सो प्रतिज्ञा करके राज्य देतेहुये ४ इससे आज मुनियों करके मन्त्रपूर्वक तुम्हारा अभिषेक होय यह बचन सुनिकै भरत बोले कि हेमुने मुझको राज्य करके क्या प्रयोजनहै ५ औ राजाधिराज तौ श्रीरामहैं औ हम सब तो उनके किंकर हैं अर्थात् सेवकहैं इससे कल्ह प्रातःकालही रामके लानेको हम साक्षात् जावेंगे ६ हम औ आप सब औ मेरी सब माता ये सब जावैंगे एक राक्षसी केकयी के बिना औ हेमुने माताहै नाम जिसका ऐसी जो केकयी राक्षसी तिसको मारतो मैं अभीडालूं ७ ॥

किंतुमांनोरघुश्रेष्ठःस्त्रीहंतारंसहिष्यते ॥ तच्छ्रुत्वोभूतेगमिष्या

मिपादचारेणदण्डकान् ८ शत्रुघ्नसहितस्तूर्णंयूयमायांतुवानवा ॥ रामोयथावनेयातस्तथाऽहंबल्कलांबरः ९ फलमूलकृताहारःशत्रुघ्न सहितोमुने ॥ भूमिशायीजटाधारीयावद्रामोनिवर्त्तते १० इतिनि श्चित्यभरतस्तूष्णीमेवावतस्थिवान् ॥ साधुसाध्वितितंसर्वेप्रशशं सुर्मुदान्विताः ११ ततःप्रभातेभरतंगच्छंतंसर्वसैनिकाः॥अनुजग्मुः सुमंत्रेणनोदिताःसाश्वकुञ्जराः १२ कौशल्याद्याराजदारावशिष्ठप्र मुखाद्विजाः ॥ छादयंतोभुवंसर्वेपृष्ठतःपार्श्वतोऽग्रतः १३ शृंगवेरपु रंगत्वागंगाकूलेसमंततः॥ उवासमहतीसेनाशत्रुघ्नपरिचोदिता १४॥

परन्तु क्याकरूं यह भय मुझको है कि स्त्रीके बध करनेवाला जो मैं हूं तिसको राम नहीं सहिसकैंगे तिससे प्रातःकाल पावँ पावँही मैं दण्डक बनको जाऊंगा ८ मैंतो शत्रुघ्नसहित शीघ्रही जाऊंगा आप सबआवैं वा न आवैं राम जैसे बनकोगये हैं तिसी रीतिसे मैंभी बल्कल बस्त्रको धारणकरूंगा ९ औफल मूल इनका आहार करताहुआ और शत्रुहन सहित अर्थात् शत्रुहनभी ऐसे ब्रतको धारणकरेंगे औ पृथ्वी में शयनकरताहुआ औ जटाओंको धारणकरेरहूंगा जबतक राम लौटिकैआवेंगे तबतक ऐसेही ब्रतको धारणकरूंगा १० इतना कहिकै भरत फिर मौन स्थितहोते हुये और सभामें जे मनुष्यथे ते सब ये भरतके वचनों को साधुसाधु अच्छाकहे अच्छाकहा इसप्रकार सराहना करते हुये ११ तिसके उपरांत प्रातःकाल जब भरत यात्रा करतेहुये तब जितने सेनाके मनुष्यथे ते सब सुमंत्रकी आज्ञासे भरतके पीछे २ चलतेहुये घोड़े और हाथियों करके सहित १२ और कौशल्या आदि जो राजादशरथ की रानियां और वशिष्ठआदि जो ब्राह्मण ये सबकोई पाछे कोई आगेकोई भरतके दोनों भाग में पृथ्वी को आच्छादन करके चलतेहुये १३ अबशृंगवेर पुरको जाकर गंगाजी के तटपै चारोंतरफ शत्रुघ्नकी आज्ञासे वह बड़ीभारी सेना पड़ती हुई १४ ॥

आगतंभरतंश्रुत्वागुहःशंकितमानसः ॥ महत्यासेनयासार्द्धमाग तोभरतःकिल १५ पापंकर्त्तुंनवायातिरामस्याविदितात्मनः ॥ गत्वा तद्धृदयंज्ञेयंयदिशुद्धस्तरिष्यति १६ गंगांनोचेत्समाकृष्यनावतिष्ठं तुसायुधाः ॥ ज्ञातयोमेसमायत्ताः पश्यंतःसर्वतोदिशम् १७ इतिस र्वान्समादिश्यगुहोभरतमागतः ॥ उपायनानिसंगृह्यविविधानिबहू न्यपि १८ प्रययौज्ञातिभिःसार्द्धंबहुभिर्विविधायुधैः ॥ निवेद्योपायना न्यग्रेभरतस्यसमंततः १९ दृष्ट्वाभरतमासीनंसानुजंसहमंत्रिभिः ॥

चीराम्बरंघनश्यामंजटामुकुटधारिणम् २० राममेवानुशोचंतंरामरा मेतिवादिनम् ॥ ननामशिरसाभूमौगुहोहमितिचाब्रवीत् २१ ॥

अब गुह जो निषादहै सो भरतको सेनासहित आवता सुनिकै शंकायुक्त है मन जिसका ऐसा निषाद यह विचार करनेलगा कि भरत बड़ीसेना करके सहित जो आये हैं १५ सो कहीं रामके संग पाप करनेको तो नहीं आये हैं अर्थात् भरतने कहीं यह तो नहीं विचाराहै कि रामको मारके निष्कंटक राज्य करौं औ राम इस वृत्तको अभी जानते नहीं हैं इससे भरतके पासजाके उनके हृदय का आशय जानना चाहिये फिर मैं जानलेऊंगा कि भरत शुद्धहैं तौ तौ गंगाउतरने देऊंगा १६ और जो कहीं पापहोगा तो तुम सबमें जो ज्ञातिहो सो सब नौकाओं को दूर खैंचके लेजावे जिसमें भरत न उतरने पावें और अपने अपने शस्त्रोंको ग्रहण कर सब सावधान रहना सब दिशाओंको देखतेहुये १७ इसप्रकार वहगुहनाम जिसका ऐसा जो रामका परममित्र निषाद सो अपने ज्ञातिके मनुष्यों को आज्ञादेकै और भरत जीके वास्ते बहुत प्रकारकी और बहुत सी भेटेंलैके १८ और हथियारबन्द बहुतसे मनुष्यों को संगलैके भरतके समीप आवता हुआ फिर आके भरत जीके आगे सब वस्तु निवेदन करता हुआ १९ फिर मन्त्रियों करिकै सहित औ शत्रुघ्नसहित और चीर वस्त्र धारण करे और मेघतुल्य श्यामवर्ण जिनका और जटा मुकुट धारण किये २० औ रामहीका शोचकर रहेहैं औ राम राम यह शब्द उच्चारण कर रहेहैं ऐसे भरतको स्थित देखके वह निषाद पृथ्वीमें गिरके दण्डवत् प्रणाम करता हुआ और गुह मेरा नामहै ऐसा कहता हुआ २१ ॥

शीघ्रमुत्थाप्यभरतोगाढमालिंग्यसादरम् ॥ पृष्ट्वाऽनामयमव्यग्रः सखायमिदमब्रवीत् २२ भ्रातस्त्वंराघवेणात्रसमेतःसमवस्थितः ॥ रामेणालिंगितःसार्द्धनयनेनामलात्मना २३ धन्योऽसिकृतकृत्योऽसि यत्त्वयापरिभाषितः ॥ रामोराजीवपत्राक्षोलक्ष्मणेनचसीतया २४ यत्ररामस्त्वयादृष्ट स्तत्रमांनयसुव्रत ॥ सीतयासहितोयत्रसुप्तस्तद्दर्शयस्वमे २५ त्वंरामस्यप्रियतमोभक्तिमानसिभाग्यवान्॥इतिसंस्मृत्यसंस्मृत्यरामंसाश्रुविलोचनः २६गुहेनसहितस्तत्रयत्ररामःस्थितो निशि॥ययौददर्शशयनंस्थलंकुशसमास्तृतम्२७सीताभरणसंलग्नस्वर्णविन्दुभिरञ्चितम् ॥ दुःखसंतप्तहृदयोभरतःपर्यदेवयत् २८ ॥

फिर भरतजी शीघ्रही निषादको उठाकर औ दृढ जैसे होय तैसे आलिंगन

करके सावधानहोकेसखा जो निषाद तिससे यह बचन बोलते हुये २२ कि हे भ्रातः तुमरामसे इसी स्थानपै मिलते हुये औ नेत्रोंमें जल जिनके भराहुआ है ऐसेजोरामहैं सो अपने निर्मल हृदयसे तुमको आलिंगन करतेहुये २३ इस से तुमधन्यहो औ कृतकृत्यहो जो तुमसों साक्षात् संभाषण किया औरकमल-पत्र तुल्यहैं बिशाल नेत्र जिनके ऐसे जो सीता लक्ष्मण सहित राम २४ सो तुमने जिसस्थानपै देखेहैं वहां मुझको लेचलो औ सीता करके सहित राम जिसस्थानपै शयनकरतेभये हैं उस स्थानको दिखावो २५ औ हेगुह तुम राम को अत्यन्त प्रिय हौ इससे तुम भक्तिमान् हौ औ बड़े भाग्यशाली हौ इसप्र-कार भरतजी रामको स्मरण करके आंशुओं करके पूर्णनेत्र जिनके ऐसे होते हुये २६ फिर भरत निषादको संगलैके वहां जातेहुये जहां राम रात्रिमें स्थित हुयेथे तहां कुशोंसे बिछाहुआ शयनस्थान देखतेहुये २७ सीताजीके जो आ-भूषण औ स्वर्णबस्त्र तिन्हींका जो संघर्षण अर्थात् रगड़ तिसकरके जो सुवर्ण के विन्दु तिन्हीं करके शोभायमान ऐसा रामका शयनस्थान तिसको देखकर के दुःखसंतप्तहै हृदय जिनका ऐसे जो भरतसो बिलाप करतेहुये २८ ॥

अहोऽतिसुकुमारीयासीताजनकनन्दिनी ॥ प्रासादेरत्नपर्यंकेकोमलास्तरणेशुभे २९ रामेणसहिताशेतेसाकथंकुशविष्टरे ॥ सीतारामेणसहितादुःखेनममदोषतः ३० धिङ्मांजातोऽस्मिकैकेय्यांपापराशिसमानतः ॥ मन्निमित्तमिदंक्लेशंरामस्यपरमात्मनः ३१ अहोतिसफलंजन्मलक्ष्मणस्यमहात्मनः ॥ राममेवसदान्वेतिवनस्थमपिहृष्टधीः ३२ अहंरामस्यदासायेतेषांदासस्यकिंकरः ॥ यदिस्यांसफलंजन्ममभूयान्नसंशयः ३३ भ्रातर्जानासियदितत्कथयस्वममाऽखिलम् ॥ यत्रातिष्ठतितत्राहंगच्छाम्यानेतुमंजसा ३४ गुहस्तंशुद्धहृदयंज्ञात्वासस्नेहमब्रवीत् ॥ देवत्वमेवधन्योऽसियस्यतेभक्तिरीदृशी ३५ ॥

बड़े आश्चर्य की बातहै कि अत्यन्त सुकुमारी जो जनकनन्दिनी सीतासो महलों में सुवर्ण के पलंगके ऊपर बिछेहुये जो कोमल बिछौने तिनके ऊपर रामके साथ सोती थीं २९ सो कैसे कुशोंके आसनके ऊपर राम करके सहित मेरे दोषसे दुःखकरके शयनकरती हैं ३० और पापराशि के समान जो केकयी तिसके बिषे उत्पन्नहुआ जो मैं तिसको धिक्कारहै जिसमेरे निमित्तसे महात्मा जो राम तिनको इतना क्लेशहोरहाहै जो पृथ्वीमें कुश बिछाके सोतेहैं ३१ और लक्ष्मण जो महात्माहैं तिनका सफल जन्महै क्योंकि सो लक्ष्मण बनमें स्थित जो राम तिनके पिछाड़ी चलते हैं औ प्रसन्नचित्त रहते हैं ३२ औ जो रामके

दासहैं तिनका जो कोई दास तिसका किंकर अर्थात् दास जो कदाचित् मैं होऊं तौ मेरा जन्म सफल होय इसमें कुछ संशय नहीं है ३३ औ हे भ्रातः जो तुम उस स्थानको जानते हो तौ कहो जहां राम स्थित हैं तहां मैं साक्षात् उनको लिवाने को जाऊं ३४ तब गुह जो निषाद सो भरत को शुद्धहृदय जान के स्नेह सहित बचन बोलताहुआ कि हे देव तुम धन्यहौ जिन की ऐसी राममें भक्ति है ३५ ॥

रामेराजीवपत्राक्षेसीतायांलक्ष्मणेतथा ॥ चित्रकूटाद्रिनिकटेमंदाकिन्याविदूरतः ३६मुनीनामाश्रमपदेरामस्तिष्ठतिसानुजः॥जानक्या सहितोनन्दात्सुखमास्तेकिलप्रभुः ३७ तत्रगच्छामहेशीघ्रंगंगांतर्त्तुमिहार्हसि ॥ इत्युक्त्वात्वरितंगत्वानावःपंचशतानिह३८समानयत्स सैन्यस्यतर्तुंगंगांमहानदीम् ॥ स्वयमेवानिनायैकांराजनावंगुहस्तदा ३९ आरोप्यभरतंतत्रशत्रुघ्नंराममातरम् ॥ वशिष्ठंचतथाऽन्यत्रकैकेयींचान्ययोषितः ४० तीर्त्वागंगांययौशीघ्रंभरद्वाजाश्रमंप्रति॥ दूरेस्थाप्यमहासैन्यंभरतःसानुजोययौ ४१ आश्रमेमुनिमासीनंज्वलंतमिवपावकम् ॥ दृष्ट्वाननामभरतःसाष्टांगमतिभक्तितः ४२ ॥

औ तैसेही सीता औ लक्ष्मण इनके बिषे भक्ति है औ चित्रकूट पर्वतके समीप औ मंदाकिनी के समीप अर्थात् चित्रकूट मन्दाकिनी के मध्य में ३६ और मुनियों के आश्रमों के समीप शुभाश्रममें सीता लक्ष्मण सहित राम स्थित होरहे हैं ३७ तहां शीघ्रही चलैंगे परन्तु प्रथम गंगाजीको उतरनेके योग्यहौ ऐसा बचन निषाद कहिकै पांचसौ नौकाओं को भृत्यों के द्वारा मँगाताहुआ ३८ तौ भरतजीकी सेना के पार होनेको औ राजाके योग्य नौका को तो गुह आपही लावताहुआ ३९ उस नौकामें भरतको औ शत्रुघ्नको औ कौशल्याको औ वशिष्ठको बैठाइकै औ दूसरी नौका में केकयी को और अवशिष्ट रानियों को बैठालके ४० गंगा को उतरिकै भरद्वाज के आश्रम को जातेहुये तहां बड़ी भारी सेनाको आश्रम से बाहर स्थापन कर शत्रुघ्नसहित भरद्वाज के समीप जातेहुये ४१ वहां आश्रममें अग्निके तुल्य प्रकाशमान जो भरद्वाज मुनि तिनको देखके भरतजी बड़ी भक्तिसे साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करतेहुये ४२ ॥

ज्ञात्वादाशरथिंप्रीत्यापूजयामासमौनिराट् ॥ पप्रच्छकुशलंदृष्ट्वा जटावल्कलधारिणम् ४३ राज्यंप्रशासतस्तेऽद्यकिमेयद्वल्कलादिकम् ॥ आगतोऽसिकिमर्थंत्वंविपिनंमुनिसेवितम् ४४ भरद्वाजवचःश्रु

त्वाभरतःसाश्रुलोचनः ॥सर्वंजानासिभगवन्सर्वभूताशयस्थितः४५ तथापिपृच्छसेकिंचित्तदनुग्रहएवमे ॥ कैकेय्यायत्कृतंकर्मरामराज्य विघातनम् ४६ वनवासादिकंवापिनहिजानामिकिंचन॥ भवत्पादयु गंमेऽद्यप्रमाणंमुनिसत्तम ४७ इत्युक्त्वापादयुगलंमुनेःस्पृष्ट्वाऽर्तमा नसः ॥ ज्ञातुमर्हसिमांदेवशुद्धोवाशुद्धएववा ४८ ममराज्येनकिंस्वामि न्रामेतिष्ठतिराजनि ॥ किंकरोऽहंमुनिश्रेष्ठरामचन्द्रस्यशाश्वतः४९॥

तौ मुनिराज भरद्वाजजी भरतको दशरथका पुत्र जानके प्रीति करके पूजन करतेहुये औ जटा औ बल्कल बस्त्र धारण करके भरतको देखके कुशल पूछते हुये ४३ औ भरद्वाज यह कहते हुये कि राज्यकी शिक्षा करतेहुये तुम हौ तिनको जटा बल्कलादिकों से क्या प्रयोजन है और कौन प्रयोजन से मुनिसेवित जो बनहै तिसको तुम आये हौ ४४ भरद्वाज का आशय यहहै कि रामके संग कछु पापदृष्टि करके तौ नहीं आये हौ सो अब भरद्वाज के बचन सुनिके अश्रु-पात करतेहुये भरत बोले कि हे भगवन् सब प्राणियों के अन्तःकरण में स्थित होके आप सबके हृदयका भाव जानतेहौ ४५ तौभी मुझसे जो बनके आगमनका कारण पूछते हौ सो मेरे ऊपर आपका परम अनुग्रह है औ हे भगवन् जो कुछ कैकेयीने रामके राज्यका बिघातन रूप कर्म किया ४६ और जो बन-बासादि कर्म किया तिसको मैं कुछ भी नहीं जानता हौं अर्थात् मेरी संमति बिनाही इसने यह काम किया है हे मुनिसत्तम इसमें प्रमाण आपके दोनों चरण कमलही हैं ४७ यह कहि के मुनिके दोनों चरणोंको हाथसे स्पर्श कर बड़े दुःखित मनसे कहताहुआ कि हे देव आपही मुझको जाननेके योग्यहैं कि मैं शुद्धहौं अथवा अशुद्धहौं ४८ औ हे स्वामिन् रामराजा स्थित होत संते मुझको राज्य करके क्या प्रयोजन है हे मुनि श्रेष्ठ मैं तो रामचन्द्रका नित्य किंकरही हौं ४९॥

अतोगत्वामुनिश्रेष्ठरामस्यचरणांतिके ॥ पतित्वाराज्यसंभारान् समर्प्यात्रैवराघवम् ५० अभिषेक्ष्येवशिष्ठाद्यैःपौरजानपदैःसह ॥ नेष्येऽयोध्यांरमानाथंदासःसेवेऽतिनीचवत ५१ इत्युदीरितमाकर्ण्य भरतस्यवचोमुनिः ॥ आलिंग्यमूर्ध्न्यवाघ्रायप्रशशंससविस्मयः५२ वत्सज्ञातंपुरैवैतद्भविष्यंज्ञानचक्षुषा॥ माशुचस्त्वंपरोभक्तःश्रीरामेल क्ष्मणादपि ५३ आतिथ्यंकर्तुमिच्छामिससैन्यस्यतवानघ ॥ अद्यभु क्त्वाससैन्यस्त्वंश्वोगंतारामसन्निधिम् ५४ यथाज्ञापयतिभवांस्तथे

तिभरतोब्रवीत् ॥ भरद्वाजस्त्वपःस्पृष्ट्वामौनीहोमगृहेस्थितः ५५ दध्यौकामदुघांकामवर्षिणींकामदोमुनिः ॥ असृजत्कामधुक्सर्वंयथा काममलौकिकम् ५६ ॥

इससे हे मुनिश्रेष्ठ रामके चरण के समीप जाकर औ चरणों पै गिरके राज्य की सामग्री समर्पणकर ५० चित्रकूट में ही वशिष्ठादि मुनियों करके सहित राम का अभिषेककर सब पुरबासी और देश के मनुष्यों करके सहित लक्ष्मीनाथ जो राम हैं तिनको अयोध्या में लेजाऊंगा और फिर मैं दास होके अति नीच के सदृश सेवन करूंगा ५१ ऐसे भरत के कहेहुये बचन भरद्वाज मुनि सुनके भरतको हृदयसे लगाकर औ शिरमें सूंघके आश्चर्य्य युक्तहो प्रशंसा करते हुये ५२ हेवत्स यह संपूर्ण भविष्यनाम होनेवाला वनवासादि ज्ञानदृष्टि करिकै पहिलेही मैंने जान लियाथा इससे तुममत शोचकरौ और यह मैं जानताहौं तुम श्रीरामके बिषे लक्ष्मणसे भी अधिक भक्तहौ ५३ औ हेअनघ निष्पाप सेनाकरके सहित तुम्हारा सत्कार किया चाहताहौं इससे सेना सहित आजु इहां भोजन करिकै प्रातःकाल रामके समीप जावोगे ५४ तौ भरतजी कहतेहुये जैसे आप आज्ञाकरते हैं वहीहोगा और भरद्वाज तो आचमन करके अग्निहोत्रशालामें प्रवेशकर मौनहोकै ५५ कामोंकी वृद्धिकरनेवाली जो कामधेनु है तिसका ध्यान करतेहुये फिर कामधेनु आकै संपूर्ण अलौकिक पदार्थ रचती हुई जैसी जिसकी कामना है तैसे सब पदार्थों को उत्पन्न करती हुई ५६ ॥

भरतस्यससैन्यस्य यथेष्टंचमनोरथम् ॥ तथाववर्षसकलंतृप्तास्तेसर्वसैनिकाः ५७ वशिष्ठंपूजयित्वाग्रेशास्त्रदृष्टेनकर्मणा ॥ पश्चात्ससैन्यंभरतंतर्पयामासयोगिराट् ५८ उषित्वादिनमेकंतुआश्रमेस्वर्गसंनिभे ॥ अभिवाद्यपुनःप्रातर्भरद्वाजंसहानुजः ॥ भरतस्तुकृतानुज्ञः प्रययौरामसन्निधिम् ५९ चित्रकूटमनुप्राप्यदूरेसंस्थाप्यसैनिकान् ॥ रामसंदर्शनाकांक्षीप्रययौभरतःस्वयम् ६० शत्रुघ्नेनसुमंत्रेण गुहेनचपरंतपः ॥ तपस्विमंडलंसर्वंविचिन्वानोन्यवर्त्तत ६१ अदृष्ट्वारामभवनमपृच्छदृषिमंडलम् ॥ कुत्रास्तेसीतयासार्द्धंलक्ष्मणेनरघूत्तमः ६२ ऊचुरग्रेगिरेःपश्चात्गंगायाउत्तरेतटे ॥ विविक्तंरामसदनं रम्यंकाननमंडितम् ६३ ॥

अब सेनासहित जो भरतहैं तिनको जैसे मनोरथ इष्टहै तैसाही कामधेनु

वृष्टि करतीहुई है जिससे सेनाके सब मनुष्य तृप्त होजातेहुये ५७ प्रथम तौ भरद्वाज शास्त्रोक्तविधानकरिकै वशिष्ठका पूजन करिकै फिर सेनासहित भरत को तृप्तकरतेहुये ५८ इसप्रकार स्वर्गतुल्य जो आश्रम तिसमें एकदिन बासकर फिरि प्रातःकाल शत्रुघ्न सहित जो भरत सो भरद्वाजको प्रणामकरि भरद्वाज मुनिकी आज्ञालेके रामके समीप जातेहुये ५९ अब चित्रकूट के समीप प्राप्त होके सेनाको दूर स्थापनकर राम दर्शनकी अभिलाषा जिनको ऐसे जो भरत सो आपही जातेहुये ६० फिर शत्रुघ्न औ सुमन्त्र और गुह इनकरिकै सहित तपस्वियों के समूहमें रामको ढूंढ़ते २ निवृत्तहो ६१ रामके मन्दिरको नहीं देखके ऋषियों से भरत पूछतेहुये कि सीता लक्ष्मण सहित रघुवंशियों में श्रेष्ठ राम कहां बसते हैं ६२ तो ऋषिलोगोंने कहा हेभरत पर्वतके आगे औ मंदाकिनी के उत्तर तटमें एकान्त देश में और सुन्दर वन करिकै भूषित राम का स्थान है ६३ ॥

सफलैराम्रपनसैःकदलीखंडसंवृतम् ॥ चंपकैःकोविदारैश्चपुन्नागैर्विपुलैस्तथा ६४ एवंदर्शितमालोक्यमुनिभिर्भरतोऽग्रतः ॥ हर्षाद्ययौरघुश्रेष्ठभवनंमंत्रिणासह ६५ ददर्शदूरादतिभासुरंशुभंरामस्यगेहंमुनिवृंदसेवितम्॥ वृक्षाग्रसल्लग्नसुवल्कलाजिनंरामाभिरामम्भरतःसहानुजः ६६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकाण्डेअष्टमःसर्गः ८ ॥

फलों करिकै सहित जो आम औ कटहर तिन करिकै शोभितहै औ केले के वृक्षोंके समूह करिकै शोभितहै औ कोविदार औ पुन्नाग औ चंपक इनकरके शोभितहै ६४ इसप्रकार मुनियों करिकै दिखायाहुआ जो राम मन्दिर तिसको अगाड़ी से देखके बडेहर्षसे मन्त्री करिकै सहित भरत श्रीराम भवनको जाते हुये ६५ अब दूरही से भासुर अर्थात् प्रकाशमान और कल्याण के देनेवाला औ मुनि समूह करिकै सेवित औ वृक्षके अग्रभागमें लटकरहाहै सुन्दर बल्कल मृगचर्म जिसमें और श्रीरामके बासकरने से अत्यंत रमणीय ऐसा जो रामका गृहहै तिसको शत्रुघ्न सहित भरत देखतेहुये ६६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकाण्डेभाषाटीकायामष्टमःसर्गः ८॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ अथगत्वाऽऽश्रमपदसमीपम्भरतोमुदा ॥ सीतारामपदैर्युक्तंपवित्रमतिशोभनम् १ सतत्रवज्रांकुशवारिजांचि

तध्वजादिचिन्हानिपदानिसर्वतः ॥ ददर्शरामस्यभुवोऽतिमङ्गलान्य चेष्टयत्पादरजःससानुजः २ अहोसुधन्योऽहममूनिरामपादारविंदांकितभूतलानि ॥ पश्यामियत्पादरजोविमृग्यंब्रह्मादिदेवैःश्रुतिभिश्च नित्यम् ३ इत्यद्भुतप्रेमरसाप्लुताशयोविगाढचेतारघुनाथभावने ॥ आनंदजाश्रुस्नपितस्तनांतरःशनैरवापाश्रमसन्निधिंहरेः ४ सतत्र दृष्ट्वारघुनाथमास्थितंदूर्वादलश्यामलमायतेक्षणम् ॥ जटाकिरीटं नववल्कलांबरंप्रसन्नवक्त्रं तरुणारुणद्युतिम् ५ विलोकयंतंजनकात्मजांशुभांसौमित्रिणासेवितपादपंकजम् ॥ तदाऽभिदुद्रावरघूत्तमंशुचाहर्षाच्चतत्पादयुगंत्वराऽग्रहीत् ६ रामस्तमाकृष्यसुदीर्घबाहुदोर्भ्यांपरिष्वज्यासिषिंचनेत्रजैः ॥ जलैरथांकोपरिसंन्यवेशयत्पुनः पुनःसंपरिषस्वजेविभुः ७ ॥

दो० नवम सर्ग में रामके भरत परेहैंपाइ ॥
गुरुबोधित लौटेपुरहि राम खड़ाऊं पाइ १ ॥

अब श्रीमहादेवजी पार्वतीसे कहतेहैं हे पार्वति अब इसके उपरान्त भरतजी वड़े आनन्दसे सीतारामके चरणोंके चिह्नों करिके युक्त औ अति पवित्र औ अतिशोभन १ रामके आश्रम के समीप स्थानको प्राप्तहोकै वहांवज्र अंकुश कमल ध्वजा इनचिह्नों करिकै युक्त जोरामके चरण तिनके जोपृथिवी के मंगल करनेवाले चिह्न तिनको शत्रुघ्नसहित भरतजी देखतेहुये औरफिर रामके चरणोंकी धूलियोंमें लोटतेहुये २ और यहकहतेहुये कि बड़ामेराभाग्य औ मैं धन्यहौं जोमैं आश्चर्य युक्त रामके चरणारविन्दों करके चिह्नित पृथिवीतलोंको देखताहौं जिनचरणोंकी रज ब्रह्मा आदि देवगणों करके औ श्रुतियों करकेभी विमृग्य अर्थात् ढूंढ़ने योग्यही है साक्षात् दर्शन तौजिसका अतिदुर्लभहै ३ इसप्रकार करके अद्भुत जोप्रेमरस नाम प्रीतिरस तिसकरिकै व्याप्त है अन्तःकरण जिसका औ श्रीरामके ध्यानमें तत्परहै चित्त जिसका और आनंद के आंसुओंकरके स्नानकरायाहै स्तनोंका मध्यभाग जिसने ऐसा जोभरत है सोधीरेधीरे रामके आश्रमके निकट पहुंचताहुआ ४ सोभरत तिस आश्रम में स्थितनाम वैठेहुये और दूर्वादलके तुल्यश्यामवर्ण औ विस्तृतहैं नेत्र जिसके औ जटामुकुटको धारणकरे औ नवीन वल्कल वस्त्रको धारणकरे औ प्रसन्न है मुखारविंद जिसका औ तरुण सूर्यकेतुल्य प्रकाशयुक्त ५ औ सीताको देख रहे हैं औ लक्ष्मण करके सेवितहैं चरणकमल जिसके ऐसे जो रामचन्द्र तिनको भरत देखकै सन्मुख दौड़तेहुये औ फिर आनन्दसे श्रीरामचन्द्रजीके चरण

युगलबेग करके ग्रहणकरते हुये अर्थात् चरणके समीप दण्डवत् गिरके हाथ बढ़ाके चरणोंको ग्रहण करते हुये ६ तबलम्बायमान है भुजा जिसकी ऐसेजो रामचन्द्र सो भरतको भुजाओंसे उठाकर हृदयसे आलिंगनकर नेत्रोंकेजलसे सिंचनकरतेहुये औफिरभरतको गोदमेंबिठाकर बारम्बारआलिंगनकरतेहुये७॥

अथतामातरःसर्वाःसमाजग्मुस्त्वरान्विताः॥राघवंद्रष्टुकामास्तास्तृषार्त्तागौर्यथाजलम् ८ रामःस्वमातरंवीक्ष्यद्रुतमुत्थायपादयोः॥ववंदेसाश्रुसापुत्रमालिंग्यातीवदुःखिता ९ इतराश्चतथानत्वाजननीरघुनन्दनः॥ ततःसमागतंदृष्ट्वावशिष्ठंमुनिपुङ्गवम् १० साष्टांगंप्रणिपत्याहधन्योऽस्मीतिपुनःपुनः ॥ यथाऽर्हमुपवेश्याहसर्वानेवरघूद्वहः ११ पितामेकुशलीकिंवामांकिमाहातिदुःखितः ॥ वशिष्ठस्तमुवाचेदम्पितातेरघुनन्दन १२ त्वद्वियोगाभितप्तात्मात्वामेवपरिचिन्तयन्॥रामरामेतिसीतेतिलक्ष्मणेतिममारह १३ श्रुत्वातत्कर्णशूलाभंगुरोर्वचनमंजसा॥हाहतोऽस्मीतिपतितोरुदन्रामःसलक्ष्मणः १४

अबइसके उपरान्तकौशल्याआदि जोसंपूर्ण मातातेरामके देखनेको बड़ेबेग करिकै आवती हुईं जैसे प्यासकरिकै पीड़ित गौजलके ऊपरगिरै ८रामअपनी माताजोकौशल्या तिसको देखके शीघ्रही उठकर चरणोंमें प्रणाम करतेहुये और माता कौशल्यानेत्रोंसे आंशुओंको छोड़तीहुई पुत्रको आलिंगनकर अत्यंत दुःखित होतीहुई ९ फिर श्रीराम और सब माताओंको भी तिसी प्रकार से प्रणामकर आवतेहुये वशिष्ठको देखकै १० उठकर दण्डवत् प्रणामकर मैं आपकेदर्शन से धन्यहुआ यह बारम्बार कहतेहुये फिर यथायोग्य सबसे मिलकै औ आसनपै बिठालकरबोल तेहुये ११ कि पितामेरा कुशल युक्तहै औ अति दुःखितहो मुझसे क्या कहताहुआ तब वशिष्ठजी रामसे कहतेहुये कि हेरघुनंदन तुम्हारा पिता १२ तुम्हारे बियोगसे संतप्तहोकै हेराम हेराम हे सीते हेलक्ष्मण ऐसे बचन कहते कहते और तुम्हाराही स्मरण करताहुआ शरीर को त्याग देता हुआ १३ तब लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्र कानोंको शूलके तुल्य ये साक्षाद् गुरूका बचन सुनिकै हाहतोस्मि ऐसा बचनकहिकै अर्थात् मैं हत हुआ यह कहिकैरोवतेहुये पृथ्वी में गिरपड़तेभये १४ ॥

ततोनुरुरुदुःसर्वामातरश्चतथाऽपरे ॥ हातातमांपरित्यज्यक्वगतोऽसिघृणाकर १५ अनाथोऽस्मिमहाबाहोमांकोवालालयेदितः ॥ सीताचलक्ष्मणश्चैवविलेपतुरतोभृशम् १६ वशिष्ठःशांतवचनैः श

मयामासतांशुचम् ॥ ततोमंदाकिनींगत्वास्नात्वातेवीतकल्मषाः १७ राज्ञेददुर्जलंतत्रसर्वेतेजलकांक्षिणे ॥ पिंडान्निर्वापयामासरामोलक्ष्मणसंयुतः १८ इंगुदीफलपिण्याकरचितान्मधुसंप्लुतान् ॥ वयंयदन्नाःपितरंस्तदन्नाःस्मृतिनोदिताः १९ इतिदुःखाश्रुपूर्णाक्षःपुनःस्नात्वागृहंययौ । सर्वेरुदित्वासुचिरंस्नात्वाजग्मुस्तथाऽश्रमम् २० तस्मिंस्तुदिवसेसर्वेउपवासंप्रचक्रिरे॥ततःपरेद्युर्विमलेस्नात्वामंदाकिनीजले २१

तिसके अनन्तर सबमाता औ और भीजन रोवतेहुये और राम यहकहते हुये कि हेदयाके समुद्र पिता आप मुझको त्यागकरके कहांगये १५ औ हेमहा-बाहो मैं अब अनाथहुआ और अब आपके बिना मेरा कौन लाड़करैगा ऐसे रामकेविलाप के अनन्तर सीता औ लक्ष्मण येभी अत्यंत बिलापकरतेहुये १६ तौ वशिष्ठजी शान्तिके बचनोंकरिकै शोकको शांत करतेहुये तब मंदाकिनीनदी को जाके स्नानकरके सब शुद्धहोतेहुये १७ फिर रामके हाथसे जलकी इच्छा करताहुआ जो राजादशरथ तिसके अर्थ राम औ सीता औ लक्ष्मण ते जल देतेहुये फिर लक्ष्मण युक्त रामसो पिताके अर्थ पिंडदेते हुये १८ इंगुदी जो गोंदनी तिसके फलोंकरिकै रचित औ सहतसे मिलाये हुये जे पिंड तिनको देतेहुये न कहो राजाके योग्य बहुमूल्य अन्नके पिंड देनाचाहिये इससे राम क-हतेहुये कि जो अन्न हम भोजनकरते हैं वही अन्न हमारे पितरोंका भी है इस प्रकार के धर्म्मशास्त्रके बचनकरिकै प्रेरेहुये हम १९ आपको इस बनफलके पिंडोंको देतेहैं यह कहकर आंशुओं से पूर्णहैं नेत्रजिसके ऐसे जो राम सो पिंड दानकरिकै और फिर स्नान करिकै गृहको आतेहुये और सबभी बहुतकाल रोकर औ स्नान करिकै आश्रमको आतेहुये २० उसदिन तौ सबजनें उपवास करतेहुये तिसके दूसरे दिन निर्मल मंदाकिनी के जलमें स्नानकर २१ ॥

उपविष्टंसमागम्यभरतोराममब्रवीत् ॥ रामराममहाभागस्वात्मानमभिषेचय २२ राज्यंपालयपित्र्यन्तेज्येष्ठस्त्वंमेपितातथा । क्षत्रियाणामयंधर्म्मोयत्प्रजापरिपालनम् २३ इष्ट्वायज्ञैर्बहुविधैःपुत्रानुत्पाद्यतंतवे ॥ राज्येपुत्रंसमारोप्यगमिष्यसिततोवनम् २४ इदानींवनवासस्यकालोनैवप्रसीदमे ॥ मातुर्मेदुष्कृतंकिंचित्स्मर्त्तुंन्नार्हसिपाहिनः २५ इत्युक्त्वाचरणौभ्रातुःशिरस्याधायभक्तितः ॥ रामस्यपुरतःसाक्षाद्दण्डवत्पतितोभुवि २६ उत्थाप्यराघवःशीघ्रमारोप्यांकेतिभक्तितः ॥ उवाचभरतंरामःस्नेहार्द्रनयनःशनैः २७ शृणुवत्सप्रवक्ष्यामि

त्वयोक्तंयत्तथैवतत् ॥ किन्तुमामब्रवीत्तातोनववर्षाणिपञ्चच २८ ॥
आसनपै बैठेहुये जो राम तिनके पास जाकर भरत बचन बोलतेहुये कि हे राम हेराम हेमहाभाग अपना अभिषेक कराइये २२ और जिसकारणसे आप ज्येष्ठहैं इससे पितासे प्राप्तहुआ जोराज्य तिसकी रक्षाकरिये औ मुझको तौ जैसे दशरथपितारहे तैसे आपहैं औ क्षत्रियोंका यहीधर्म है जो प्रजाकापरिपालन करना २३ और बहुत प्रकारके यज्ञों करिकै देवतोंका पूजनकरिकै और वंशकी वृद्धिके अर्थ पुत्रोंको उत्पन्नकर औरराज्यकेबिषे पुत्रको स्थापन कर तब बनको जावोगे २४ और इससमय में आपके बनबासका समयनहीं है इससे मेरेऊपर प्रसन्नहूजिये और मेरी माताका जो अपराधहै तिसके स्मरण करने योग्यनहींहौ और मेरीरक्षा करिये २५ यह कहिकै भरत भक्ति करिकै भाई के चरण शिरके ऊपर धारणकरके औ साक्षात् रामके आगे पृथिवीमें दण्डवत् गिर पड़ताहुआ २६ तब श्रीरामचंद्र शीघ्रही भरतको उठाकर अतिप्रीतिसेगोदमें बिठालकर स्नेहकरकेनयनोंसे जल छोड़तेहुये भरतसे धीरेसे बचनबोलतेहुये २७ हेवत्स सुनो जो तुमने वचन कहे सो तैसेहीहैं परंतुपितामुझ सेयह बचन कहता हुआ कि तुम चौदहवर्ष पर्य्यंत दण्डकारण्यमें बासकरौ २८ ॥

उषित्वादण्डकारण्येपुरंपश्चात्समाविश ॥ इदानींभरतायेदंराज्यंदत्तंमयाऽखिलम् २९ ततःपित्रैवसुव्यक्तंराज्यंदत्तंतवैवहि ॥ दण्डकारण्यराज्यंमेदत्तंपित्रातथैवच ३० अतःपितुर्वचःकार्यमावाभ्यामतियत्नतः ॥ पितुर्वचनमुल्लंघ्यस्वतन्त्रोयस्तुवर्त्तते ३१ सजीवन्नेवमृतकोदेहान्तेनिरयंव्रजेत् ॥ तस्माद्राज्यंप्रशाधित्वंवयंदण्डकपालकाः ३२ भरतस्त्वब्रवीद्रामंकामुकोमूढधीःपिता ॥ स्त्रीजितोभ्रान्तहृदयउन्मत्तोयदिवक्ष्यति ॥ तत्सत्यमितिनग्राह्यंभ्रान्तवाक्यंयथासुधीः ३३ रामउवाच ॥ नस्त्रीजितःपिताब्रूयान्नकामीनैवमूढधीः॥पूर्वंसेतिश्रुतंतस्यैसत्यवादीददौभयात् ३४ असत्याद्भीतिरधिकामहतांनरकादपि॥करोमीत्यहमप्येतत्सत्यंतस्यैप्रातिश्रुतम् ३५ ॥

तिसके उपरान्त पुरमें प्रवेशकरौ और इससमयतौ संपूर्ण राज्य मैंने भरत को दिया २९ तौ फिर पिताहीने प्रकट जैसेहोय तैसे तुमहीं को राज्यदियाहै तैसेही दंडकारण्यका राज्य मुझको दियाहै ३० इससे हम औ तुम इन दोनों जनोंको अत्यन्त यत्न करिकै पिताका वचन करना चाहिये और पिताका बचन उल्लंघन करके जो स्वतन्त्रहोके वर्तताहै ३१ सो जीवतेही मरे के तुल्यहै और

देहके अंतमें नरकको जाताहै इससे राज्यकी तौ तुम रक्षाकरौ और दंडक वनकी हम रक्षाकरैं ३२ तो भरतजी फिर रामसे कहते हुये कि हेराम पिता तौ कामीरहा और मूढ़बुद्धिरहा और स्त्रीजितरहा और भ्रांत हृदयरहा और इसी से उन्मत्त रहा तौ ऐसा पिता जो वचन कहै सो सत्यमान के नहीं ग्रहण करना चाहिये जैसे भ्रमयुक्त पुरुष के वचनकोई पंडित नहीं ग्रहण करताहै ३३ तब राम कहतेहुये कि हे भरत कि पिता स्त्रीजित होके नहीं कहताहुआ और न पिताकामीरहा और न पिता मूढबुद्धिरहा क्या तो जो पूर्वही प्रतिज्ञाकीथी उसके भंगके भयेते सत्यवादी पिता कैकेयीको वर देताहुआ ३४ तात्पर्य यहहै कि जिस समयमें कैकेयीको दोबरदेने कहेथे उस समयमें कुछ कामी वा स्त्रीजित वा भ्रांत हृदय न था अब इससमयमें यद्यपि कामीरहा परन्तु पहिले कहेहुयेको सत्यबादी राजा भूंठकैसे करसक्ताहै सोई रामभरतसे फिर कहते हैं कि हेभरत महात्मा पुरुषोंको नरकसे भी अधिकभय मिथ्यावादसे होतीहै यहमैं करौंगा ऐसे जो तिस कैकेयी के अर्थ मैंने प्रतिज्ञाकी है अर्थात् मैं वनको जाताहौं यह कैकेयी से कहिचुकाहौं उस बचनको अब मिथ्या कैसेकरौं ३५ ॥

कथंवाक्यमहंकुर्य्यामसत्यंराघवोहिसन् ॥ इत्युदीरितमाकर्ण्य रामस्यभरतोब्रवीत् ३६ तथैवचीरवसनोवनेवत्स्यामिसुव्रत ॥ चतुर्दशसमास्त्वंतुराज्यंकुरुयथासुखम् ३७ रामउवाच ॥ पित्रादत्तन्तवैवैतद्राज्यंमह्यंवनंददौ ॥ व्यत्ययंयद्यहंकुर्य्यामसत्यंपूर्ववत्स्थितम् ३८ भरतउवाच ॥ अहमप्यागमिष्यामिसेवेत्वांलक्ष्मणोयथा ॥ नोचेत्प्रायोपवेशेनत्यजाम्येतत्कलेवरम् ३९ इत्येवंनिश्चयंकृत्वादर्भान्नास्तीर्यचातपे ॥ मनसापिविनिश्चित्यप्राङ्मुखोपाविवेशसः ४० भरतस्यापिनिर्बंधंदृष्ट्वारामोऽतिविस्मितः ॥ नेत्रान्तसंज्ञांगुरवेचकाररघुनन्दनः ४१ एकान्तेभरतंप्राहवशिष्ठोज्ञानिनांवरः ॥ वत्सगुह्यं शृणुष्वेदंममवाक्यात्सुनिश्चितम् ४२ ॥

और रघुकुल में उत्पन्नहोके अर्थात् कोई रघुकुलमें मिथ्यावादी नहीं हुआ मैं कैसेहोवौं अब ऐसे रामके वचन सुनिकै भरत कहतेहुये कि ३६ हेराम जैसे आपने वनके जानेकी प्रतिज्ञाकी उस आपकी प्रतिज्ञा सत्य करने को आपके वदले मैं चीरवस्त्र धारणकरि चौदहवर्ष पर्यंत बनमें बास करौंगा आप सुखपूर्वक राज्य करिये ३७ तब फिर राम कहतेहुये कि हेभरत पिताने राज्य तुमहीं को दियाहै औ मेरे अर्थ वन देतेहुये इसमें जो वदला मैं करौं तौ मिथ्या तौ

पहिलेकी तरह बनाहीरहा अर्थात् और का काम और करै यह अशक्ततामें कहा है ३८ तब भरत फिर रामचन्द्रसे कहतेहुये कि हेराम तुम्हारा ऐसाही निश्चय है तौ मैंभी तुम्हारे संग बनहीं को चलौं जैसे लक्ष्मण शुश्रूषा करते हैं तैसेमैंभी शुश्रूषामें तत्परहोंगा और जो आपनहीं प्रार्थना स्वीकार करौगे तौ प्रायोपवेशन कर अर्थात् अन्न जल त्यागकर शरीरको त्याग देऊंगा ३९ अब भरत ऐसा निश्चयकर कुशोंको घाममें बिछाकर और मनसे भी निश्चय करके पूर्व को मुखकरके कुशोंकेऊपर बैठतेहुये ४० अब ऐसा भरतका हठदेखके अतिविस्मित जो रामसो नेत्रोंका इशारह वशिष्ठको करतेहुये अर्थात् भरतको इस आग्रहसे निवृत्त करो ऐसे इशारा करतेहुये ४१ तब ज्ञानियों में श्रेष्ठ जो वशिष्ठ सो एकान्त में भरतसे कहतेहुये कि हे वत्स यह निश्चय कियाहुआ गुह्यमत मेरे वाक्यसे सुनो ४२ ॥

रामोनारायणःसाक्षाद्ब्रह्मणायाचितःपुरः ॥ रावणस्यवधार्थाय जातोदशरथात्मजः ४३ योगमायाऽपिसीतेतिजाताजनकनंदिनी ॥ शेषोऽपिलक्ष्मणोजातोराममन्वेतिसर्वदा ४४ रावणंहन्तुकामास्तेग मिष्यंतिनसंशयः ॥ कैकेय्यावरदानादियच्चनिष्ठुरभाषणम् ४५ सर्वं देवकृतंनोचेदेवंसाभाषयेत्कथम् ॥ तस्मात्त्यजाग्रहंतातरामस्यविनिव र्त्तने ४६ निवर्त्तस्वमहासैन्यैर्भ्रातृभिःसहितःपुरम् ॥ रावणंसकुलंह त्वाशीघ्रमेवागमिष्यति ४७ इतिश्रुत्वागुरोर्वाक्यंभरतोविस्मयान्वि तः ॥ गत्वासमीपंरामस्यविस्मयोत्फुल्ललोचनः ४८ पादुकेदेहिराजे न्द्रराज्यायतवपूजिते ॥ तयोःसेवांकरोम्येवयावदागमनंतव ४९ ॥

रामसाक्षात् नारायणहैं सोपूर्व समयमें रावणके बधके अर्थ प्रार्थना किये हुये दशरथके पुत्रहुयेहैं ४३ और जोयोगमाया नारायणकी शक्तिहै सोई सीता हुईहै और शेषजी लक्ष्मणहुयेहैं सोसदा रामके अनुगामी रहते हैं ४४ इससे रावणके मारनेकी इच्छाकरके ये अवश्य जायँगे इसमें कुछसंशय नहीं है और जोकैकेयीका बरदानादिक और कठोर बचन कहना ४५ सो संपूर्ण देवतोंका कृत्यहै और यह न होता तौऐसा सम्भाषण क्यों करती तिससे हेतात रामके लौटारनेमें जोआग्रह तिससे निवृत्तहोउ ४६ और सेनाकरके सहित अयोध्या को लौटजावो औराम सकुलरावणको मारके भाइयों सहित अयोध्यामें प्रवेशकरेंगे ४७ तबऐसे गुरूके बचनसुनिकै आश्चर्ययुक्त जो भरतहै सो राम के समीपजाके यह कहताहुआ कि ४८ हे राजेन्द्रराज्य करने के अर्थ पूजित जो

अपनी पादुकाहैं अर्थात् खड़ाऊं तिनको दीजिये फिर दोनों पादुकाओंकी सेवा मैं करौंगा जबतक आपआवोगे ४९ ॥

इत्युक्त्वापादुकेदिव्येयोजयामासपादयोः॥रामस्यतेददौरामोभरतायातिभक्तितः५०गृहीत्वापादुकेदिव्येभरतोरत्नभूषिते॥रामंपुनःपरिक्रम्यप्रणनामपुनःपुनः५१भरतःपुनराहेदंभक्त्यागद्गदयागिरा ॥ नवपंचसमांतेतुप्रथमेदिवसेयदि ५२ नागमिष्यसिचेद्रामप्रविशामिमहानलम् ॥ बाढ़मित्येवतंरामोभरतंसंन्यवर्त्तयत् ५३ ससैन्यःसवशिष्ठश्चशत्रुघ्नसहितःसुधीः ॥ मातृभिर्मंत्रिभिःसार्द्धं गमनायोपचक्रमे ५४ कैकेयीराममेकांतेस्रवन्नेत्रजलाकुला ॥ प्रांजलिःप्राह हेरामतवराज्यविघातनम्५५कृतंमयादुष्टधियामायामोहितचेतसा॥ क्षमस्वममदौरात्म्यंक्षमासाराहिसाधवः ५६ ॥

यह बचन कहिकै भरत दिव्य जो पादुका तिनको रामके चरणों में पहिराय देताहुआ फिर उनपादुकाओं को राम अतिप्रीतिसे भरतको देतेहुये ५० तबभरत रत्नोंकरिकै भूषित औदिव्यनाम अलौकिक अर्थात् देवनिर्मित ऐसी जोपादुकाहैं तिनको ग्रहणकरिकै औरामकी बारम्बारपरिक्रमाकरिकै औरबारम्बारप्रणामकरिकै५१यहबचन भक्तिपूर्वक गद्गदवाणी करिकै भरत बोलतेहुये कि चौदहबर्षके अन्तमें पहिले दिन५२जोआपनहीं आवोगे तोमैंअग्निमें प्रवेश करूंगा तबरामचन्द्र येभरतके बचन स्वीकार करिकै भरतको लौटावतेहुये ५३ तबसेना करिकै सहित और वशिष्ठकरिकै सहित औ शत्रुघ्न करिकै सहित और माता मन्त्रीआदि प्रजाकरिकै सहित भरत गमनके अर्थ प्रारम्भ करतेहुये ५४ तबबहिरहाहै नेत्रोंसे जल जिसके ऐसी जोकैकेयी सोहाथ जोड़के रामसे एकांतबचन बोलतीहुई हे रामजो आपके राज्यका बिघात मैंने मूढ़-बुद्धिसे और आपकी मायाकरिकै मोहित चित्तकरिकै किया ५५ उसमेरे दौरात्म्यको क्षमाकरने योग्यहो जिससे साधुजन क्षमासार होतेहैं ५६ ॥

त्वंसाक्षाद्विष्णुरव्यक्तःपरमात्मासनातनः॥मायामानुषरूपेणमोहयस्यखिलंजगत् ॥ त्वयैवप्रेरितोलोकःकुरुतेसाध्वसाधुवा ५७ त्वदधीनमिदंविश्वमस्वतंत्रंकरोतिकिम् ॥ यथाकृत्रिमनर्तक्योनृत्यंतिकुहकेच्छया ५८ त्वदधीनातथामायानर्तकीबहुरूपिणी ॥ त्वयैवप्रेरिताऽहंचदेवकार्य्यंकरिष्यता ५९ पापिष्ठम्पापमनसाकर्माचरमरिन्दम ॥ अद्यप्रतीतोऽसिममदेवानामप्यगोचरः ६० पाहिविश्वेश्वरा

नन्तजगन्नाथनमोस्तुते॥छिंधिस्नेहमयंपाशंपुत्रवित्तादिगोचरम् ६१ त्वज्ज्ञानामलखड्गेनत्वामहंशरणंगता॥ कैकेय्यावचनंश्रुत्वारामःसस्मितमब्रवीत् ६२ यदाहमांमहाभागेनानृतंसत्यमेवतत् ॥ मयैवप्रेरितावाणीतववक्काद्विनिर्गता ६३ ॥

और तुम साक्षात् विष्णुभगवान सनातन परमात्माहौ और मायाहीकरिकै मानुषरूप करिकै सब जगत्को मोहित कररहेहो और तुमहीं करिकै प्रेरित जगत् पाप वा पुण्य करताहै ५७ और जब तुम्हारे आधीन यहजगत् है इसीसे अस्वतन्त्रहै इससे आपकेबिना क्याकरसक्ताहै अर्थात् कुछभी नहीं करसक्ता है जैसे काठकीपुतली सूत्रधार नचाने वालेकी इच्छासे नृत्यकरतीहै ५८ तैसेही आपके आधीन जो माया सो नर्तकी के सदृश बहुत रूप धारणकररही है और देवोंके कार्य करनेको तुमहीं करके प्रेरितजोमैंहौं सो पापकर्म करतीहुई ५९ और देवतों कोभी अगोचर जाननेको अशक्य ऐसेजो आपहैं सोअब मुझ करिकै जानेगये ६० औ बिश्वेश्वर हे अनन्त हे जगन्नाथ मेरी रक्षाकरिये और तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै और हेभगवन् पुत्रमें औ धन आदि और पदार्थों में लगाहुआ जोस्नेहरूपी पाश अर्थात् फांसी तिसको काटिये६१अपने ज्ञानरूपी निर्मल खड्ग करिकै और तुम्हारे में शरण प्राप्तहुईहौं तबये कैकेयीके बचन सुनिकैमन्द मुसुक्यानकरते श्रीरामचन्द्र वचन बोलतेहुए ६२ हे महाभागे जो तूमुझसे कहतीहै सोझूंठ नहीं है सत्यहीहै क्यों कि मोकरकेही प्रेरितबाणी देवतोंके कार्यके अर्थ तेरेमुखसे निकलतीहुई ६३ ॥

देवकार्य्यार्थसिद्ध्यर्थमत्रदोषःकुतस्तव ॥ गच्छत्वंहृदिमांनित्यंभावयन्तीदिवानिशम् ६४ सर्वत्रविगतस्नेहामद्भक्त्यामोक्षसेऽचिरात् ॥ अहंसर्वत्रसमदृक्द्वेष्योवाप्रियएववा ६५ नास्तिमेकल्पकस्येवभजतोऽनुभजाम्यहम् ॥ मन्मायामोहितधियोमामम्बमनुजाकृतिम् ६६ सुखदुःखाद्यनुगतंजानन्तिनतुतत्त्वतः ॥ दिष्ट्यामद्गोचरंज्ञानमुत्पन्नंतेभवापहम् ६७ स्मरन्तीतिष्ठभवनेलिप्यसेनचकर्मभिः । इत्युक्तासापरिक्रम्यरामंसानंदविस्मया ६८ प्रणम्यशतशोभूमौययौगेहंमुदान्विता ॥ भरतस्तुसहामात्यैर्मातृभिर्गुरुणासह ६९ अयोध्यामगमच्छीघ्रंराममेवानुचिंतयन् ॥ पौरजानपदान्सर्वानयोध्यायामुदारधीः ७० ॥

तिसमें तेराक्या दोषहै और तुमजावो हृदयमें नित्य दिनरातमेराही ध्यान

करतीहुई ६४ और सबजगहसे स्नेह त्यागकर मेरी भक्तिकर थोडेही काल में बन्धनसे छूटके परमपदको प्राप्तहोवोगी औ हे कैकेयी मैंतौ सबमें समदर्शीहों औ मेरे न कोई शत्रुहै औ न कोई मित्रहै ६५ जैसे मायावी पुरुषको अपने रचेहुये पदार्थमें न किसीमें प्रीतिहोती है और न किसीमें द्वेषहोता क्योंकि सब को वह मिथ्या जानताहै यह बात लोकमें प्रसिद्धहै कि जैसे इन्द्रजाली पुरुष अपनी मायासे रुपया पैसा व्याघ्रसर्पआदि नानाप्रकारकी वस्तुरचताहै परन्तु उस इन्द्रजाली को रुपयाआदि वस्तुमें प्रीति नहीं होती और व्याघ्रआदि पदार्थों में द्वेषनहीं होता अर्थात् भयनहीं होता क्योंकि दोनोंको मिथ्याजानता है इससे तैसे परमेश्वर जो मैंहूं सोभी अपने मायारचित पदार्थों में रागद्वेष नहीं करताहूं क्योंकि मैं जानताहूं कि ये पदार्थ सबमिथ्याहैं इसीसे मेरे शत्रु मित्रआदि कोई नहीं हैं तौभी जो कोई मेरा भजनकरताहै तिसको मैंभी भजताहूं क्योंकि कल्पवृक्षके तुल्य यह मेरास्वभावही है औ हे अम्ब हे मातःजो कोई पुरुष मेरीमाया करिकै मोहित बुद्धि होरहे हैं वेमुझको सुख दुःखआदि धर्म्मोंको प्राप्त मनुष्यही जानते हैं ६६ और यह नहीं जानते कि मनुष्य काला आकार अर्थात् स्वरूप तौ इनकाहै और हैं ये साक्षात् प्रकृतिसे परे नारायण ऐसे तत्त्वकर यथार्थ मुझको नहीं जानते हैं और यह बड़े हर्षकी बात है कि संसारका नाशकरने वाला मेरा ज्ञान तुझको उत्पन्नहुआ ६७ और हे मातः मेरा स्मरणकरतीहुई तू अपने मंदिरहीमें स्थितरह तौभी कर्म्मों करकै नहीं लिप्तहोगी ऐसे जब रामने कहा तौ कैकेयी आनन्द और विस्मय अर्थात् आश्चर्य युक्तहोके ६८ रामकी परिक्रमा करिकै और पृथ्वी में पड़के सैकरों प्रणामकरके आनन्द पूर्वक गृहको जातीहुई और भरत तौ मनसे रामही का स्मरणकरतेहुये मन्त्री और माता और वशिष्ठ इन करिकै सहित शीघ्र अर्थात् जल्दी ६९ अयोध्याको जातेहुए और उदार है बुद्धि जिसकी ऐसा जो भरत है सो पुरवासी और अवध देशके मनुष्यों को ७० ॥

स्थापयित्वायथान्यायंनंदिग्रामंययौस्वयम्॥तत्रसिंहासनेनित्यंपादुकेस्थाप्यभक्तितः ७१ पूजयित्वायथारामंगंधपुष्पाक्षतादिभिः ॥ राजोपचारैरखिलैःप्रत्यहंनियतव्रतः ७२ फलमूलाशनोदांतोजटाबल्कलधारकः ॥ अधःशायीब्रह्मचारीशत्रुघ्नसहितस्तदा ७३ राजकार्याणिसर्वाणियावंतिपृथिवीतले ॥ तानिपादुकयोःसम्यक्निवेदयातिराघवः ७४ गणयन्दिवसान्येवरामागमनकांक्षया ॥ स्थितोरामार्पितमनाःसाक्षाद्ब्रह्ममुनिर्यथा ७५ रामस्तुचित्रकूटाद्रौवसन्मुनिभि

रावृतः ॥ सीतयालक्ष्मणेनापि किंचित्कालमुपावसत् ७६ नागरा श्चसदायांतिरामदर्शनलालसाः ॥ चित्रकूटस्थितंज्ञात्वासीतयाल क्ष्मणेनच ७७ ॥

जहां जिसका स्थानथा वहां भिजवाके और आपनन्दिग्रामको जातेहुये तहां सिंहासनके ऊपर उन पादुकाओं को स्थापनकर रामकी बुद्धिकरके गन्ध पुष्प अक्षतादि करिकै नित्य भक्तिसे पूजन करतेहुये ७१ और राजके योग्य जो पूजनकी सामग्रियां हैं तिन्हों करके दिन दिन नियमसे पूजनकरतेहुये ७२ और शत्रुघ्न सहित आप भरतजी फल मूलका भोजन करतेहुये और इन्द्रियोंको बश करतेहुये और जटा और बल्कल अर्थात् मुकुटा इनको धारण करते हुये और ब्रह्मचर्य ब्रतको धारणकर भूमिमें शयन करतेहुये ७३ और पृथिवी पै जितने राजकार्य हैं अर्थात् जो कुछ खजानेमें धन आवताहै और जो कुछ व्यय अर्थात् खर्च होताहै और जो शास्त्रानुकूल कचहरी में फैसला होते हैं सो सब राज कार्य्य भरतजी खड़ाउँओंके आगे नित्य नित्य निवेदन करदेते हैं ७४ औ रामके आगमनकी इच्छाकरके नित्य दिनोंको गिनाकरते हैं औ रात्रि दिवस रामहीमें अर्पणकियाहै अर्थात् लगायाहै मन जिसने ऐसे भरत जी ब्रह्मर्षिके तुल्य तपकरतेहुये ७५ अब रामचन्द्र तौ चित्रकूट पर्वतपै मुनियों करके युक्त औ सीता लक्ष्मण सहित कुछ काल बासकरतेहुये ७६ तब वहां सीता लक्ष्मण करके सहित चित्रकूटपै स्थित अर्थात् ठहरेहुये रामचन्द्रको जानके दर्शनकी इच्छाकरके शहरोंके और ग्रामोंके मनुष्य आते हुये ७७ ॥

दृष्ट्वातज्जनसंबाधंरामस्तत्याजतंगिरिम् ॥ दंडकारण्यगमनेका र्यमप्यनुचिन्तयन् ७८ अन्वगात्सीतयाभ्रात्राह्यत्रेराश्रममुत्तमम् ॥ सर्वत्रसुखसंवासंजनसंबाधवर्जितम् ७९ अत्रिंमुनिमुपासीनंभासयं तंतपोवनम् ॥ दंडवत्प्रणिपत्याहरामोहमभिवादये ८० पितुराज्ञांपुर स्कृत्यदंडकानहमागतः ॥ वनवासमिषेणापिधन्योहंदर्शनात्तव ८१ श्रुत्वारामस्यवचनंरामंज्ञात्वाहरिंपरम् ॥ पूजयामासविधिवद्भक्त्याप रमयामुनिः ८२ वन्यैःफलैःकृतातिथ्यमुपविष्टंरघूत्तमम् ॥ सीतांचल क्ष्मणंचैवसंतुष्टोवाक्यमब्रवीत् ८३ भार्यामतीवसंवृद्धाह्यनसूयेतिवि श्रुता॥तपश्चरंतीसुचिरंधर्म्मज्ञाधर्म्मवत्सला ८४ ॥

तब श्रीरामचन्द्रजी बहुतसी भीर भार देखके और दण्डकारण्यमें राक्षसों का बधरूपकार्य भी करनाहै यह विचारकरके उस चित्रकूटको त्यागदेतेहुये ७८

फिर सीता और लक्ष्मण करके सहित रामचन्द्र सब कालमें सुखदायक और मनुष्योंके समूह से रहित ऐसा जो अत्रिऋषि का उत्तम आश्रम तिसको जाकर ७९ उसआश्रममें बैठेहुये और तपोवनको प्रकाशमान कररहे ऐसे अत्रिमुनि को रामचन्द्र दण्डवत् प्रणामकर मैं रामहूं आपको अभिवादन करताहूं अर्थात् नमस्कार करके आप से आशर्बाद कहाया चाहता हूं ८० और पिताकी आज्ञा करके दण्डक वनको मैं आयाहूं और वनवास के मिष करके अर्थात् छल करके जो आपके दर्शन हुये हैं तिसीसे मैं धन्यहुआ ॥ इसका आशय यह है कि पिता की आज्ञासे मुझको बनवास तौ करनाही था तिस वनवास में आपके दर्शन हुये तिस दर्शनही से जब मैं धन्यहुआ अर्थात् कृतार्थ हुआ तो खास आपही के दर्शन करनेको जोघरसे चलता तौ आप के दर्शन से धन्य होता यह क्या कहनाहै ८१ अब अत्रिऋषि ये रामके बचनसुन के राम को साक्षात् हरि अर्थात् नारायण जान के विधिवत् परमभक्ति करके पूजन करतेहुये अर्थात् जैसे शास्त्र में कहा है तैसे और बड़ी प्रीति से पूजन करतेहुये ८२ फिर वनके फलों करके कराया है भोजन जिन्होंको ऐसे जो राम औ सीता औ लक्ष्मण इनसे प्रसन्न हो अत्रिमुनि वचन बोलते हुये ८३ किमेरी भार्या जो अनसूयाहै सो अति वृद्धहै और बहुत काल तप करतीहुई औ धर्म जाननेवाली है और धर्महीं प्रिय जिसको ऐसी है ८४ ॥

अंतस्तिष्ठतितांसीतापश्यत्वरिनिषूदन ॥ तथेतिजानकींप्राहरामोराजीवलोचनः ८५ गच्छदेवींनमस्कृत्यशीघ्रमेहिपुनःशुभे ॥ तथेतिरामवचनंसीताचापितथाऽकरोत् ८६ दंडवत्पतितामग्रेसीतांदृष्ट्वाऽतिहृष्टधीः ॥ अनसूयासमालिंग्यवत्सेसीतेतिसादरम् ८७ दिव्येददौकुंडलेद्वेनिर्मितेविश्वकर्मणा ॥ दुकूलेद्वेददौतस्यैनिर्मलेभक्तिसंयुता ८८ अंगरागंचसीतायैददौदिव्यंशुभानना ॥ नत्यक्ष्यतेऽगरागेणशोभात्वांकमलानने ८९ पातिव्रत्यंपुरस्कृत्यराममन्वेहिजानकि ॥ कुशलीराघवोयातुत्वयासहपुनर्गृहम् ९० भोजयित्वायथान्यायंरामंसीतासमन्वितम् ॥ लक्ष्मणंचतथारामंपुनःप्राहकृतांजलिः ९१ रामत्वमेवभुवनानिविधायतेषांसंरक्षणायसुरमानुषतिर्यगादीन् ॥ देहान्बिभर्षिनचदेहगुणैर्विलिप्तस्त्वत्तोबिभेत्यखिलमोहकरीचमाया ९२॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकाण्डे नवमःसर्गः ९ ॥

सो भीतर मन्दिरके बैठीहै सो हे रामतिसको जाकर सीतादर्शन करैतब राजीवलोचन जो राम अर्थात् कमल सरीखे हैं विशाल नेत्र जिनके ऐसेजो राम सो सीता को आज्ञा देतेहुये कि तुम अनसूयाके दर्शनकरो ८५ और यह कहते हुये किहेशुभेसीते अर्थात् हे मंगलरूपे सीते तुमजाओ और देवी जो अनसूया तिसको नमस्कार कर के शीघ्रही आवो तब सीता भी राम वचन को तैसेही करती हुई ८६ तब अनसूया अपने आगे दण्डवत् प्रणाम करती सीताको देखके अतिप्रसन्नहोके हे वत्से हेसीते ऐसेआदरपूर्वक कहिके और हृदयसे बड़े आनन्दसे आलिंगन करके ८७ विश्वकर्माके रचेहुये दिव्य अर्थात् अलौकिक दो कुण्डल और दो दिव्यवस्त्र भी सीताजीकेअर्थ भक्तियुक्तअनसूया देतीहुई ८८ औरशुभ है आनन मुखारविन्द जिसका ऐसी जो अनसूया सो दिव्य जो अंगराग अर्थात् शरीर में लगाने का सुगन्ध द्रव्य तिसको देती हुई और यह कहती हुई कि हे कमलानने कमल तुल्य है मुख जिसका ऐसी जो तुम हौ सो मेरा वचन सुनौ इस अंगराग के शरीर में लगाने से शोभा कभी तुमको त्याग न करैगी ८९ औ हे जान कि हे सीते तुम पातिव्रत्य धर्म को आदर से ग्रहण करि रामके समीप जाओ अर्थात् स्त्रियोंका उत्तम आभूषण पतिही की प्रसन्नताके अर्थ है इससे मेरेदिये वस्त्र आभूषण पहिरके और इस अंगरागको शरीर में लगाकर रामके समीप प्राप्तहोके अपनीशोभा रामके अर्थ सम्पर्णकर इतने अनसूया के कहने से सब पातिव्रत्य धर्म का उपदेश सूचित हुआ और हे सीते तुम करके सहित कुशलपूर्वक राम फिर गृहको आवैंगे ९० फिर शास्त्रकी विधिपूर्वक सीतासहित रामको और लक्ष्मणको भोजन कराके हाथजोड़ कर रामसे वचन बोलती हुई ९१ हे राम तुमहीं सब लोकोंको रचिके फिर उनलोकों की रक्षा के अर्थ सुर और मनुष्य औ तिर्यगादि देहोंको धारण करते हो तिसमें सुरदेह वामनआदि और मनुष्य देहराम आदि औ तिर्यग्देह मत्स्य वाराह आदि इनदेहोंको धारण करते हौ और देहके गुणों करके लिप्त नहीं होते हौ और सबको मोह करानेवाली जो माया है सो तुमसे भय करती अर्थात् डराकरती है क्योंकि तुम्हारे ज्ञान होतेहीं छिप जातीहै ९२ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकाण्डे श्रीमदुमादत्तकृतौ भाषाटीकायांनवमःसर्गः ९ ॥ समाप्तश्चायमयोध्याकाण्डः ॥ २ ॥

श्रीगणेशायनमः

अथ अध्यात्मरामायण ॥

आरण्यकाण्ड

भाषाटीकासहित

श्रीमहादेव उवाच ॥ अथतत्रदिनंस्थित्वा प्रभातेरघुनन्दनः ॥ स्नात्वामुनिंसमामंत्र्य प्रयाणायोपचक्रमे १ मुनेगच्छामहेसर्वे मुनिमण्डलमण्डितम् ॥ विपिनंदण्डकंयत्र त्वमाज्ञातुमिहार्हसि २ मार्गप्रदर्शनार्थाय शिष्यानाज्ञप्तुमर्हसि ॥ श्रुत्वारामस्यवचनं प्रहस्यात्रिर्महायशः ३ सर्वस्यमार्गद्रष्टात्वं तवकोमार्गदर्शकः ॥ तथापिदर्शयिष्यंति तवलोकानुसारिणः ४ इतिशिष्यान्समादिश्य स्वयंकिंचित्तमन्वगात् ॥ रामेणवारितःप्रीत्या अत्रिःस्वभवनंययौ ५ क्रोशमात्रंततोगत्वा ददर्शमहतींनदीम् ॥ अत्रेःशिष्यानुवाचेदं रामोराजीवलोचनः ६ नद्याःसंतरणेकश्चिदुपायोविद्यतेनवा ॥ ऊचुस्तेविद्यतेनौका सुदृढारघुनन्दन ७ ॥

दो० प्रथम सर्ग आरण्यमें हाति बिराध रघुनाथ ॥
तिहिको निजपददेतपुनि स्तुतिकीन्हेगुणगाथ १ ॥

अब महादेवजी पार्वतीजीसे कथा कहैहैं कि हे पार्वति जिसदिन चित्रकूटसे यात्राकीथी वा दिन अत्रिऋषिके आश्रममें बासकर प्रातःकाल स्नानकरके दण्डकारण्य के जाइबेको मुनिसेआज्ञा मांगनेको यहबचन रामबोले कि १ हे मुने मुनियोंके समूहकरके शोभित जोदण्डक बन तिसको हमजाया चाहते हैं सो आपकृपाकर आज्ञादीजिये २ और मार्गके बतलानेको अपनेशिष्योंकोभी आज्ञाकीजिये तौयह रामकेवचन सुनिके बडे यशस्वी अत्रिमुनि बोलते हुये कि हे राम आपसब देवतोंके आश्रयहो ३ और आपही सबमार्गों के दिखलानेवालेहो आपको मार्गकौन दिखला सक्ताहै तौभी आपमनुष्योंकेसे चरित्र कररहेहो इससे मेरे शिष्यलोग आपकोमार्ग बतलावेंगे ४ इसप्रकार शिष्यों

को अज्ञाकर आपभी अत्रिमुनि कुछ दूरतक रघुनाथजीके संग पहुचाने को जातेहुये फिर बड़ी प्रीतिसे रघुनाथजीने मनेकिया तो अपने आश्रमको लौटतेहुये ५ फिर श्रीरामचन्द्रजी कोशभर चलिके आगे एकबड़ी भारी नदीको देखकै अत्रिऋषिके शिष्योंसे बोलतेहुये ६ कि हे भाई ब्राह्मणोंके बालक इस नदीके पारहोनेका कोई उपायहै या नहीं है तब वे अत्रिमुनिके शिष्य कहते हुये कि हे रघुनन्दन बड़ी अच्छी एकपुष्ट नौकाहै ७ ॥

तारयिष्यामहेयुष्मान्वयमेवक्षणादिह ॥ ततोनाविसमारोप्य सीतांराघवलक्ष्मणौ ८ क्षणात्संतारयामासुर्नदींमुनिकुमारकाः ॥ रामाभिनन्दितास्सर्वे जग्मुरत्रेरथाश्रमम् ९ तावत्थविपिनंघोरं झिल्लीझंकारनादितम् ॥ नानामृगगणाकीर्णं सिंहव्याघ्रादिभीषणम् १० राक्षसैर्घोररूपैश्च सेवितंरोमहर्षणम् ॥ प्रविश्याविपिनंघोरं रामोलक्ष्मणमब्रवीत् ११ इतःपरंप्रयत्नेन गंतव्यंसहितेनमे ॥ धनुर्गुणेन संयोज्य शरानपिकरेदधत् १२ अग्रेयास्याम्यहंपश्चात्वमन्वेहिधनुर्धरः ॥ आवयोर्मध्यगासीतामायेवात्मपरात्मनोः १३ चक्षुश्चारयसर्वत्र दृष्टंरक्षोभयंमहत् ॥ विद्यतेदण्डकारण्ये श्रुतपूर्वमरिंदम १४ ॥

तिसपै बैठालकरअभी हमलोग सब आपको क्षणभरमें पारउतारतेहैं फिर वे मुनियोंके बालकऐसा कहिके शीघ्रही नौकामें सीताजीको और रामलक्ष्मणको अच्छीतरह बैठालकर एकक्षणभर में नदीकेपार उतारतेहुये फिर रामचन्द्रजीने बड़ी तारीफ करके उनको आज्ञादी तौअपने अपने आश्रमको आतेहुए ८ । ९ फिर राम लक्ष्मण घोरबनमें जाके प्राप्तहोतेहुये जिसबनमें अनेक झींगुर बोलरहेहैं और अनेकतरहके हिरणआदि जीव बिचररहे हैं और सिंह व्याघ्रोंकरके भयको कररहाहै १० और भयंकररूप जिन्होंके ऐसेराक्षस जिसमें बसरहेहैं और देखतेही जिसके रोमावली खड़ीहोजाय ऐसे घोरबनमें प्रवेश कर रामचन्द्रजी लक्ष्मणसे बोलतेहुए ११ कि हे लक्ष्मण इसके आगे अब हमारेसंग सङ्ग यत्नसे चलनाचाहिये औ धनुषचढ़ाके और बाणहाथ में लेके आगेआगे मैं चलताहूं तुममेरे पीछे२ धनुषबाण लियेहुएआवोऔरहमारेतुम्हारे बीचमें सीताचलै जैसे जीव और ब्रह्म इनके मध्यकें माया रहती है१२ । १३ और हे लक्ष्मण चारोंतरफ़ निगाह करतेचलौ क्यों कि ऐसे असगुन दिखाई पड़ते हैं जिससे बड़ीभारी राक्षसकी भय दिखलाईही दियाचाहतीहै और हे लक्ष्मण इसबनमें पहिले सुनभी रक्खाहै कि भयहोती है १४ ॥

इत्येवंभाषमाणौतौजग्मतुःसार्द्धयोजनम्॥तत्रैकापुष्करिण्यास्ते कह्लारकुमुदोत्पलैः १५ अम्बुजैःशीतलोदेनशोभमानाऽभ्यदृश्यत॥ तत्समीपमथोगत्वापीत्वातत्सलिलंशुभम् १६ ऊषुस्तेसलिलाभ्या सेक्षणंछायामुपाश्रिताः ॥ ततोददृशुरायांतंमहासत्त्वंभयानकम् १७ करालदंष्ट्रवदनंभीषयंतंस्वगर्जितैः ॥ वामांसेन्यस्तशूलाग्रग्रथितानेकमानुषम् १८ भक्षयंतंगजव्याघ्रमहिषंवनगोचरम्॥ज्यारोपितंधनुर्धृत्वारामोलक्ष्मणमब्रवीत् १९ पश्यभ्रातर्महाकायोराक्षसोऽयमुपागतः॥आयात्यभिमुखंनोऽद्यभीरूणांभयमावहन् २०सज्जीकृतधनुस्तिष्ठसाभैर्जनकनंदिनि ॥ इत्युक्त्वाबाणमादायस्थितोरामइवाचलः २१॥

ऐसे परस्पर कहतेहुये राम लक्ष्मण डेढ़ योजन अर्थात् छःकोशतक पहुंचे होंगे तहां एक झील दिखलाई पड़ती भई जिसमें अनेक प्रकारके कमल फूल रहेंहैं १५ और बड़े सुंदर शीतल जलसे भरी हुईहै और बड़ी शोभायमानहै उसके समीपजाके राम लक्ष्मण सीता जलपान करके १६ वहां वृक्षोंकी छायामें क्षणमात्र विश्रामकरते हुये और वहां एक बड़े भयंकर राक्षस को आवते देखतेहुये १७ और जिसके मुखमें बड़ी बड़ी डाढ़ें भयंकरहैं और वह अपने गर्जनेके शब्द करके सबको डरपारहाहै और वांयेंकन्धेके ऊपर अनेक मनुष्यों कोअपने त्रिशूलमें परोह करके धारण कर रहाहै१८और वनके हाथी और बाघ और भैंसे इनको खायरहा है तब श्रीरामचन्द्रजी ऐसे राक्षसको आवते देखके और धनुष चढ़ाके लक्ष्मणसे बोलतेहुये १९ कि हे भाई देखो यह बड़ेभारी शरीरका राक्षस हमारे तुम्हारे सामने चला आताहै और जे कोई डरने वाले कातर मनुष्य हैं तिनको भय उत्पन्नकरारहाहै २० इससे हे लक्ष्मण तुम तो अपने धनुष को तैयार रक्खो और जनकजीकी पुत्री तुम भय न करो ऐसा राम कहके और धनुषमें बाण लगाके आप पर्वतकी तरह अचलहो स्थित होगये २१॥

सतुदृष्ट्वारमानाथंलक्ष्मणंजानकींतथा॥अट्टहासंततःकृत्वाभीषयन्निदमब्रवीत् २२ कौयुवांबाणतूणीरजटावल्कलधारिणौ ॥ मुनिवेषधरौबालौस्त्रीसहायौसुदुर्मदौ २३ सुंदरौवतमेवक्त्रप्रविष्टकवलोपमौ किमर्थमागतौघोरंवनंव्यालनिषेवितम् २४ श्रुत्वारक्षोवचोरामःस्मयमानउवाचतम् ॥ अहंरामस्त्वयंभ्राताlक्ष्मणोममसम्मतः २५ एषा सीताममप्राणवल्लभावयमागताः ॥ पितृवाक्यंपुरस्कृत्य शिक्षणार्थम्भवादृशाम् २६ श्रुत्वातद्रामवचनमट्टहासमथाकरोत् ॥ व्यादायव

स्कम्बाहुभ्यां शूलमादायसत्वरः २७ मांनजानासिरामत्वं विराधं लोकविश्रुतम् ॥ मद्भयान्मुनयःसर्वे त्यक्त्वावनमितोगताः २८ ॥

उससमयमें वह राक्षसभी राम और लक्ष्मण औ सीता इनको देखके और बड़ेस्वरसे हंसके डरपाताहुआ यह बचन बोला २२ कि तुमदोनों बाणोंसे भरे तरकस को धारण किये हौ और जटा और वल्कल अर्थात् मुनि बस्त्र मुकुटा आदि धारण किये हो और मुनियोंका वेष बनाये और स्त्रीको भी संग लिये और हौतौ बालक परन्तु बड़े गर्बयुक्त मालूम पड़ते हौ सो तुम कौनहौ २३ और तुम बड़े सुन्दरहौ परन्तु बड़े खेदकी बातहै जो तुम दोनों मेरे मुख में ग्रासके तुल्य प्राप्तहुये हौ और सर्प व्याघ्र आदि जीवों करके सेवित घोरवनमें किस वास्ते आये हौ २४ अब श्रीराम राक्षसके बचन सुनिकै मंद मुसक्यान करतेहुये उससे बोले कि हेराक्षस मेरा राम नामहै और यह मेरा भाई है इसका लक्ष्मण नाम है २५ और यह सीता मेरी प्राणप्यारी स्त्री है और पिता की आज्ञासे तुम्हारे सरीखे राक्षसों के दण्ड देनेको बनमें आये हैं २६ अब वह राक्षस रामचन्द्रके वचन सुनिकै बड़ा ठट्ठा मारके हँसा और मुख फैला कर और शीघ्रही त्रिशूल हाथ में लेकर बोलताहुआ २७ कि हे राम लोक में प्रसिद्ध विराधनाम करके मैं राक्षसहों सो तुम मुझको नहीं जानते जिस मेरी भयसे सब मुनिलोग इस बनको छोड़के चलेगये हैं २८ ॥

यदिजीवितुमिच्छाऽस्ति त्यक्त्वासीतांनिरायुधौ ॥ पलायतंनचे त्शीघ्रम्भक्षयामियुवामहम् २९ इत्युक्त्वाराक्षसःसीतामादातुमभि दुद्रुवे ॥ रामश्चिच्छेदतद्बाहू शरेणप्रहसन्निव३०ततःक्रोधपरीता त्मा व्यादायाविकटंमुखम् ॥ राममभ्यद्रवद्रामश्चिच्छेदपरिधाव तः ३१ पदद्वयंविराधस्य तदद्भुतमिवाभवत् ३२ ततःसर्पइवास्येन ग्रसितंराममापतत् ॥ ततोऽर्धचन्द्राकारेणबाणेनास्यमहाच्छिरः ३३ चिच्छेदरुधिरौघेणपपातधरणीतले ॥ ततःसीतासमालिंग्यप्रशशं सरघूत्तमम् ३४ ततोदुन्दुभयोनेदुर्दिविदेवगणेरिताः ॥ नन्तृतुश्चा प्सरोहृष्टाजगुर्गंधर्वकिन्नराः ३५ ॥

इससे जो तुमको जीवनेकी इच्छाहोवै तो तुम दोनोंजने सीताको छोड़के और शस्त्र डालके शीघ्रही अर्थात् जल्दीभाग जाओ नहीं तौमैं दोनों को भक्षण करूंगा २९, अब ऐसाबचन कहिके बिराध राक्षस सीता के लेनेको दौड़ता हुआ तब रामचन्द्रजी बाण करके उसकी भुजा हँसते हँसते काटते हुये ३० तवतो

बड़े क्रोधसे भराहुआ राक्षस मुखको फैलाकर रामको निगलने दौड़ताहुआ तबदौड़तेहुए राक्षसकेदोनोंपांव रामचन्द्रजी शीघ्रही काटडालते हुए यह बड़ा अद्भुतचरित्र होताहुआ ३१ । ३२ तबफिरभी वह विराध राक्षस सर्पकीतरह घसलके रामके निगलनेको सन्मुखआवताहीहुआतबरामचन्द्रजी अर्द्धचन्द्राकार अर्थात् हँसियेकीसो जिसकी भालहोतीहै ऐसे बाणकरके उसकाबड़ाभारी शिरकाटडालते हुए ३३ फिरवह रुधिरको बहाताहुआ पृथिवी में पड़ता हुआ तबसीताजी रामकोहृदयसे लगाकरबड़ी तारीफकरतीहुई ३४फिर तिसके उपरान्त आकाशमें देवतोंके बजायेहुये नगाड़े बाजतेहुये और बड़ीप्रसन्न अप्सरा नाचतीहुई और गन्धर्व और किन्नरगान करते हुये ३५ ॥

विराधकायादतिसुंदराकृतिर्विभ्राजमानोविमलाम्बरावृतः॥प्रतप्तचामीकरचारुभूषणोऽव्यदृश्यताग्रेगगनेरविर्यथा ३६ प्रणम्यरामंप्रणतार्तिहारिणंभवप्रवाहोपरमंघृणाकरम्॥ प्रणम्यभूयःप्रणनामदण्डवत्प्रपन्नसर्वार्तिहरंप्रसन्नधीः ३७ विराधउवाच॥ श्रीरामराजीवदलायताक्षविद्याधरोऽहंविमलप्रकाशः॥दुर्वाससाकारणकोपमूर्त्तिनाशप्तःपुरासोऽद्यविमोचितस्त्वया ३८ इतःपरंत्वच्चरणारविंदयोःस्मृतिःसदामेऽस्तुभवोपशांतये ॥ त्वन्नामसंकीर्त्तनमेववाणीकरोतुमेकर्णपुटंत्वदीयम् ३९ कथामृतंपातुकरद्वयंतेपादारविंदार्चनमेवकुर्य्यात् ॥ शिरश्चतेपादयुगप्रणामंकरोतुनित्यंभवदीयमेवम् ४० नमस्तुभ्यंभगवतेविशुद्धज्ञानमूर्त्तये॥ आत्मारामायरामायसीताशमायवेधसे४१ प्रपन्नंपाहिमांरामयास्यामित्वदनुज्ञया ॥ देवलोकंरघुश्रेष्ठमायामांमावृणोतुते ४२ ॥

और बिराधके शरीर से निकलके एकबड़ा सुन्दर दिव्यबस्त्रोंको और दिव्य सुवर्णके आभूषणोंकोधारणकरे सूर्यकेतुल्य प्रकाशमान पुरुष दिखलाईपड़ता हुआ ३६ फिर वहपुरुषभक्तोंके दुःख हरनेवाले और जन्म मरण रूप संसार के निवृत्ति करनेवाले परमदयालु श्रीरामचन्द्रजीको बारम्बार दण्डवत् प्रणाम करके प्रसन्न हो बोलताहुआ कि ३७ हेकमलदलवत् विशालनेत्र श्रीराम मैं निर्मल प्रकाशयुक्त विद्याधररहासो बड़े क्रोधी दुर्वासाकेशापसे राक्षसयोनिको प्राप्तहुआ सो अब आपने उसशाप से छुड़ादिया है ३८ सो हे भगवन् अब मुझको आपकेचरणारविन्दोंका स्मरणसदा बनारहै जिससे संसारदुःखों की शान्तिहोवे और मेरीवाणीआपकेनामकीर्त्तनको सदाकियाकरै और मेरे दोनों

कान सदाआपके कथारूप अमृतको पानकरैं ३९ और मेरे दोनोंहाथ आपके चरणोंके पूजन को करैं और मेरा शिर सदा आपके चरणोंको प्रणाम करै ४० औरविशुद्ध जोज्ञान सोईहै मूर्त्ति जिसकी और अपने आत्माही में है रमण क्रीड़ाजिसकी और सबके रचनेवाले ऐसे जो सीतासहित और ऐश्वर्य युक्त आपहैं तिनकेअर्थ मेरा नमस्कार है ४१ औ हेराम मैं आपके शरणागत हौं मेरीरक्षा करिये और आपकी आज्ञासे देवलोकको जायाचाहताहूं सोअब से लेकै आपकीमाया मेरीबुद्धिको न ढांकलेवे ऐसा अनुग्रह कीजिये ४२ ॥

इतिविज्ञापितस्तेनप्रसन्नोरघुनंदनः॥ददौवरंतदाप्रीतोविराधायमहामतिः ४३ गच्छविद्याधराशेषमायादोषगुणाजितः ॥ त्वयामद्दर्शनात्सद्योमुक्तोज्ञानवतांवरः ४४ मद्भक्तिर्दुर्लभालोकेजाताचेन्मुक्तिदायतः ॥ अतस्त्वंभक्तिसंपन्नःपरंयाहिममाज्ञया ४५ रामेणरक्षोनिधनंसुघोरंशापाद्विमुक्तिर्वरदानमेवम् ॥ विद्याधरत्वंपुनरेवलब्धंरामंगृणन्नतिनरोऽखिलार्थान् ४६ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादे आरण्यकांडे प्रथमःसर्गः १॥

ऐसी जब उसने विज्ञप्तिकी अर्थात् अपनादुःख जताया तौ श्रीराम प्रसन्न हो उस विराधको बर देतेहुए ४३ और यह कहतेहुए हे विद्याधर तुम अपने लोकको जाओ और मेरे दर्शनसे तुमने दोषरूपजे मायाके गुणहैं ते जीतलिये और तुम ज्ञानियोंमें श्रेष्ठहो मुक्तहोवोगे ४४ क्योंकि जिससे मुक्तिकी देनेवाली लोक में दुर्लभ जो मेरी भक्ति है सो तुमको उत्पन्न हुईहै इससे भक्तियुत होकै मेरी आज्ञासे मोक्षको प्राप्तहोउ ४५ इस प्रकार श्रीरामचन्द्र ने बड़े भयंकर बिराध राक्षसको मारा और उसको शाप से छुड़ाया और वरदान दिया फिर उसको रामकी कृपासे बिद्याधर पदवी प्राप्तहुई इस रामचरित्रको जो कोई वर्णन करताहै सो संपूर्ण अर्थोंको प्राप्त होताहै ४६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेआरण्यकाण्डे भाषाटीकायांप्रथमःसर्गः १ ॥

विराधेस्वर्गतेरामोलक्ष्मणेनचसीतया ॥ जगामशरभंगस्यवनंसर्वसुखावहम् १ शरभंगस्ततोदृष्ट्वारामंसौमित्रिणासह ॥ आयातंसीतयासार्द्धंसंभ्रमादुत्थितःसुधीः २ अभिगम्यसुसंपूज्यविष्टरेषूपवेशयत्॥आतिथ्यमकरोत्तेषांकंदमूलफलादिभिः ३ प्रीत्याऽहशरभंगोऽ

पिरामंभक्तपरायणम् ॥ बहुकालमिहैवासंतपसेकृतनिश्चयः ४ तव संदर्शनाकांक्षीरामत्वंपरमेश्वरः ॥ अद्यमत्तपसासिद्धंयत्पुण्यंबहुविद्यते ॥ तत्सर्वंतवदास्यामितलोमुक्तिंव्रजाम्यहम् ५ समर्प्यरामस्य महत्सुपुण्यंफलंविरक्तःशरभङ्गयोगी॥ चितिंसमारोहयदप्रमेयंरामंससीतंसहसाप्रणम्य६ ध्यायंश्चिरंराममशेषहृत्स्थंदूर्वादलश्यामलमम्बुजाक्षम्॥चीराम्बरंस्निग्धजटाकलापंसीतासहायंसहलक्ष्मणंतम्७

दो० । सुगति दई शरभंगको सर्ग दूसरे राम ॥
निर्भयकरिमुनिवृंदपुनि गयेसुतीक्षणधाम २

अब श्रीमहादेवजी पार्वतीजीसे कहतेहुये कि हेपार्वति विराधराक्षस जब रामकी कृपासे स्वर्गको प्राप्त हुआ तब फिर लक्ष्मण सीतासहित श्रीराम जी शरभंगऋषि के बनकोजाते हुए जो बन सबकालमें सुखका देनेवालाहै १ तब शरभंगऋषि सीता लक्ष्मण सहित रामको आवते देखके शीघ्रही उठकर अगाड़ीजाके मिलतेहुए २ फिर आश्रममें लाकर आसनके ऊपर बैठालकर विधिपूर्वक बड़ीप्रीति से पूजनकर कन्दमूलफल आदि भोजन करातेहुए ३ फिर भक्तोंको सेवन करनेयोग्य जो श्रीराम तिनसे यह कहतेहुए कि हे राम बहुत कालसे इस आश्रममें तपकरताहुआ आपके दर्शनकी इच्छा करके बासकर रहाहौं ४ और हे राम आपसाक्षात् परमेश्वरहैं और अबतक तपकरने से जो कुछ पुण्यमेरा सञ्चितहुआहै सो सब आपको देके मैं मुक्तिको प्राप्त होताहौं५ इसप्रकार परमयोगी जो शरभंगमुनि सो श्रीराम को अपना सब पुण्य समर्पण करि सबसे विरक्तहो रामलक्ष्मण सीताको प्रणामकर चिता रचिकै उसके ऊपर बैठताहुआ ६ अब उससमयमें शरभंगऋषि दूबके तरह श्यामबर्ण है जिसका और कमल के सरीखे विशालहैं नेत्र जिसके और मुनियोंके वस्त्र को धारणकरे और कोमल जटाओंको धारणकरे और सब के हृदय में स्थित होनेवाले ऐसे लक्ष्मण सीतासहितरामको बहुतकाल ध्यानकरताहुआ ७ ॥

कोवादयालुस्स्मृतिकामधेनुरन्योजगत्यांरघुनायकादहो॥ स्मृतोमयानित्यमनन्यभाजाज्ञात्वास्मृतिंमेस्वयमेवयातः ८ पश्यत्विदानीं देवेशोरामोदाशरथिःप्रभुः ॥ दग्ध्वास्वदेहंगच्छामिब्रह्मलोकमकल्मषः ९ अयोध्याऽधिपतिर्मेऽस्तुहृदयेराघवस्सदा ॥ यद्वामांकेस्थितासीतामेघस्येवतडिल्लता १० इतिरामंचिरंध्यात्वादृष्ट्वाचपुरतःस्थितम् ॥ प्रज्वाल्यसहसावह्निंदग्ध्वापञ्चात्मकंवपुः ११ दिव्यदेहधरासा

क्षाध्ययौल्लोकपतेःपदम् ॥ ततोमुनिगणाःसर्वेदण्डकारण्यवासिनः ॥ आजग्मूराघवंद्रष्टुंशरभंगनिवेशनम् १२ दृष्ट्वामुनिसमूहंतंजानकी रामलक्ष्मणाः ॥ प्रणेमुःसहसाभूमौमायामानुषरूपिणः १३ आशीर्भि रभिनंद्याथरामंसर्वहृदिस्थितम् ॥ ऊचुःप्रांजलयःसर्वेधनुर्बाणधरंह रिम् १४ ॥

और यह कहताहुआ कि स्मरण मात्रही करनेसे संपूर्णकामनाओंका पूर्ण करनेवाला एक रामको छोड़ दूसरा दयालु कौनहै और जो मैं अनन्य होके नित्यस्मरण करतारहा सो मेरे स्मरणको जानिकै आपही प्राप्तहुये ८ और मैं इससमयमें अपने शरीरको भस्म करके पापरहित हो ब्रह्मलोकको जाताहूं यह सब मेरी व्यवस्थाको सबका स्वामी जो दशरथकापुत्र सो देखै ९ जैसे मेघके समीप बिजुली शोभायमान होती है तैसे जिसके बामभाग में सीता स्थितहै ऐसेजो अयोध्याकेपति रामचन्द्र सो मेरे हृदय में सदा बासकरैं १० इसप्रकार रामको अपने नेत्रों के आगे स्थित देखिकै बहुत काल ध्यान करता हुआ शरभंग चितामें अग्निको लगाके प्रज्वलित अग्निमें पंचमहाभूत शरीर को भस्मकर ११ दिव्यदेहको धारणकरि साक्षात् ब्रह्मलोकको प्राप्त होताहुआ तिसके उपरान्त दण्डकारण्य वासी जे सम्पूर्ण मुनिलोग ते रामचन्द्रके देखने को शरभंग मुनिके आश्रम में आतेहुए १२ फिरमायाही करके मनुष्य रूप धा- रणकरे जो सीता और रामलक्ष्मण ये मुनियोंको आते देखके शीघ्रही उठकर प्रणाम करतेहुए १३ तब सब मुनिलोग सबके हृदयमेंस्थित जो धनुर्बाण धा- रणकरे राम तिनको आशीर्बाद देकै हाथजोड़के बोले कि १४ ॥

भूमेर्भारावतारायजातोसिब्रह्मणाऽर्थितः॥जानीमस्त्वांहरिंलक्ष्मीं जानकींलक्ष्मणंतथा १५ शेषांशंशंखचक्रेद्वेभरतंसानुजंतथा ॥ अत इत्यादौऋषीणांत्वंदुःखंमोक्तुमिहार्हसि १६ आगच्छयामोमुनिसेविता निवनानिसर्वाणिरघूत्तमक्रमात्॥द्रष्टुंसुमित्रासुतजानकीभ्यांतदादया स्मासुदृढाभविष्यति १७ इतिविज्ञापितोरामः कृतांजलिपुटोविभुः ॥ जगाममुनिभिःसार्द्धं द्रष्टुंमुनिवनानिसः १८ ददर्शतत्रपतितान्यने कानिशिरांसिसः ॥ अस्थिभूतानिसर्वत्र रामोवचनमब्रवीत् १९ अ स्थीनिकेषामेतानि किमर्थंपतितानिवै ॥ तमूचुर्मुनयोराम ऋषीणां मस्तकानिहि २० राक्षसैर्भक्षितानीश प्रमत्तानांसमाधितः ॥ अंतरायंमुनीनांते पश्यन्तोऽनुचरंतिहि २१ ॥

सस्मितमब्रवीत् ॥ मुनेजानामितेचित्तंनिर्म्मलम्मदुपासनात् ३५ ॥

औ हे रामतुम सवजीवोंके हृदयमेंवासभी करतेहौ तौभी तुम्हारे मन्त्र जपआदिभजन से जे विमुखहैं तिनकी बुद्धिमें मायाका विस्तारकरतेहौ अर्था-त् जिससे वे मूढहृदयस्थ आपको नहीं जानसक्तेहैं और आपके मन्त्र जप करनेवाले जोभक्तहैं तिनको मायानहीं व्यापतीहै इससे सेवाके योग्यराजा की तरह आपफलदेतेहौ जैसेलोकमें राजाका शत्रुमित्र कोई नहींहै परन्तु राजाके मन्त्रको जाननेवाला नहीं बन्धनको प्राप्तहोता और मन्त्रसे उलटे चलनेवाला दण्डको प्राप्तहोताहै तैसे २९ हे राम एकतुमहीं इसविश्वकी सृष्टि और पालन और संहारके कारणहौ और तुम्हारी मायाकरिकै मोहितहै बुद्धिजिन्होंकी तिनकोतौब्रह्मा विष्णु शिवआदि अनेक रूपकरके न्यारे न्यारे प्रकाशित होतेहौ जैसे एकहीसूर्य जलकरिकै भरेहुये पात्रोंमें अनेक रूपप्रतीय-मानहोताहै ३० औ हे राम अविद्यासे परेजोआपहैं तिनके चरणारविंदको मैं प्रत्यक्ष देखरहाहूं क्योंकि असत् पुरुषोंकी दृष्टिके अगोचर भीहौ अर्थात् नहीं सूझपड़तेहौ तौभी आपके मन्त्रकरिकै शुद्धहुआहै हृदय जिन्होंका ऐसे भक्तोंको तोदिखलाई पड़तेहीहौ ३१ औ हेराम रूपरहित जोआपहैं तिनका भी माया व्यवहारसे कियाहुआ कड़ोरों कामदेवोंसे सुन्दर औ दिव्य धनुष बाणधारणकिये और दयासे द्रवीभूत हृदय जिनका और मन्दमुसक्यान युक्त है मुख जिसका ऐसा सुन्दर मनुष्यबेष मैं देखताहूं ३२और सीताकरकेसहित और मृगछालाधारणकिये और नित्य लक्ष्मणकरके सेवितहैं चरणकमल जिन के औरनीलकमलके तुल्यहै कान्ति जिनकी और कोई जिनका तिरस्कार न करसके और अनन्तहैं कल्याणगुण जिनके ऐसेमेरेभाग्यरूप जोरामहैं तिनकोमैं निरंतरप्रणाम करताहूं३३औ हेराम संपूर्णदेश कालआदि परिच्छेदरहित अ-र्थात् इतनेवीचमें यहरूपहै और इससमयमेंहै फिर नहींरहै यहव्यवहार जिसमें नहीं है ऐसा जो चैतन्यघनप्रकाश निर्गुणरूप आपका जे कोई जानते हैं ते जानैं मुझको तो यह प्रत्यक्ष श्यामसुन्दर आपकारूप दिखाई पड़ताहै उसीकी सदा ध्यानकी इच्छाहै ३४ ऐसे स्तुति करतेहुये जो सुतीक्ष्ण ऋषि तिससे मन्द-मुसक्यानकर श्रीरामचन्द्र बोलतेहुये कि हे मुने मेरी उपासना करके तुम्हारा निर्मल चित्तहै यह मैं जानताहूं ३५ ॥

अतोऽहमागतोद्रष्टुंमदृतेनान्यसाधनम् ॥ मन्मन्त्रोपासकालोके मामेवशरणंगताः ३६ निरपेक्षानान्यगतास्तेषांदृश्योऽहमन्वहम् ॥ स्तोत्रमेतत्पठेद्यस्तुत्वत्कृतंमत्प्रियंसदा ३७ सद्भक्तिर्मेभवेत्तस्यज्ञानं

चविमलंभवेत् ॥ त्वंममोपासनादेवविमुक्तोऽसीहसर्वतः ३८ देहांते ममसायुज्यंलप्स्यसेनात्रसंशयः ॥ गुरुंतेद्रष्टुमिच्छामिह्यगस्त्यंमुनिनायकम् ॥ किंचित्कालंतत्रवस्तुंमनोमेत्वरयत्यलम् ३९ सुतीक्ष्णोऽपितथेत्याहश्वोगमिष्यसिराघव ॥ अहमप्यागमिष्यामिचिराद्दृष्टोमहामुनिः ४० अथप्रभातेमुनिनासमेतोरामःससीतःसहलक्ष्मणेन ॥ आगस्त्यसंभाषणलोलमानसःशनैरगस्त्यानुजमन्दिरंययौ ४१ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे आरण्यकांडे द्वितीयःसर्गः २ ॥

और इसीसे मैं तुमको देखने आयाहूं और मेरी भक्तिके बिना और कोई मेरी प्राप्तिका साधननहीं है क्योंकि लोकमें जे कोई मेरे मंत्रके उपासक हैं ते मेरेही शरणागत हैं ३६ और वे किसी की चाहनानहीं करते और न मेरे सिवाय उनकी और कोई गति है तिन भक्तोंको मैं नित्य दिखाई देताहों और हे मुने जो कोई पुरुष मेरे अतिप्रिय तुम्हारे कियेहुये स्तोत्रको सदा पढ़ेगा३७ उसको मेरी श्रेष्ठ भक्ति होवैगी और निर्मल ज्ञानहोगा और तुम तौ मेरी उपासनाही से सब बन्धनसे मुक्तहौ ३८ और देहके अंतमें मेरे सायुज्य पदको प्राप्तहोउगे इसमें कुछ संदेह नहीं है और सब मुनियोंमें श्रेष्ठ जो तुम्हारे गुरु अगस्त्य मुनिहैं तिनको मैं देखाचाहताहौं और कुछकाल वहां बास करने को मेरामन होरहाहै ३९ तौ सुतीक्ष्ण मुनि बोले हे राम प्रातःकाल वहां आप जावोगे और मैं भी चलोंगा क्योंकि बहुत कालहुआ मुनिको देखे ४० अब प्रातःकाल सुतीक्ष्ण मुनिसहित और सीतालक्ष्मणसहित रामचन्द्रजी अगस्त्यसे संभाषण में चित्तकी उत्कंठासे प्रथमधीरे धीरे अगस्त्यके छोटेभाई जो अग्निजिह्व नाम ऋषितिनके आश्रमको जातेहुये ४१ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेआरण्यकाण्डे भाषाटीकायांद्वितीयःसर्गः २ ॥

अथरामःसुतीक्ष्णेनजानक्यालक्ष्मणेनच ॥ अगस्त्यस्यानुजस्थानंमध्याह्नेसमपद्यत १ तेनसंपूजितःसम्यक्भुक्त्वामूलफलादिकम् ॥ परेद्युःप्रातरुत्थायजग्मुस्तेऽगस्त्यमण्डलम् २ सर्वर्तुफलपुष्पाढ्यंनानामृगगणैर्युतम् ॥ पक्षिसंघैश्चविविधैर्नादितंनन्दनोपमम् ३ ब्रह्मर्षिभिर्देवर्षिभिःसेवितंमुनिमन्दिरैः ॥ सर्वतोऽलंकृतंसाक्षाद्ब्रह्मलोक

मिवापरम् ४ बहिरेवाश्रमस्याथस्थित्वारामोऽब्रवीन्मुनिम् ॥ सुती क्ष्णगच्छत्वंशीघ्रमागतंमांनिवेदय ५ अगस्त्यमुनिवर्यायसीतयाल क्ष्मणेनच ॥ महाप्रसादइत्युक्त्वासुतीक्ष्णःप्रययौगुरोः ६ आश्रमंत्वर यातत्रऋषिसंघसमावृतम्॥उपविष्टंरामभक्तैर्विशेषेणसमायुतम् ७॥

दो० । मुनिअगस्त्य को तीसरे सर्गमिले रघुनाथ ॥
शस्त्रपुरातनमुनिदिये स्तुतिकरि हरि गुणगाथ १

अब महादेवजी पार्वतीजी से कहते हैं कि हे पार्वति अब इसके उपरान्त सुतीक्ष्ण मुनिकरके सहित और जानकी औ लक्ष्मणसहित श्रीराम मध्याह्न समयमें अर्थात् दोपहर दिनचढ़े अगस्त्यजीके छोटे भाईके आश्रममें प्राप्तहोते हुये १ तब वहां अगस्त्यके भ्रातासे बड़े सत्कारको प्राप्तहुये जो रामचन्द्र सो कंदमूल फल भोजन करके दूसरे दिन प्रातःकाल उठिकै चारों जने अगस्त्य ऋषिके आश्रमको जातेहुये २ कैसा अगस्त्य मुनिका आश्रमहै जो सबऋतु- ओंके फूलोंकरके युक्तहै और नानाप्रकार के मृगोंके समूह करिकै युक्तहै और अनेक तरहके पक्षी जिसमें बोलरहे हैं मानों इन्द्रका नन्दनवनहो ऐसा शो- भितहोरहाहै ३ और ब्रह्मर्षियों करके और देवर्षियों करके सेवितहै अर्थात् जे ब्राह्मण कुलमें उत्पन्नहो वेदोंके मन्त्रों को जानें वे ब्रह्मर्षि कहाते हैं और जो देवताहो वेदोंके मन्त्रोंको जानतेहों वे देवर्षि कहाते हैं तिन्हों करके सेवितहै और चारोंतरफ से मुनियों के मंदिरों करके भूषितहो रहाहै जैसे मानों दूसरा ब्रह्मलोकही होय ४ तहां रामचन्द्रजी आश्रमके बाहरही स्थितहोके सुतीक्ष्ण मु- निसे बोले कि हेमुने तुम शीघ्रहीजाके अगस्त्यमुनि से कहो कि सीता लक्ष्मण सहित राम आपके दर्शनकरने को आये हैं ५ तब सुतीक्ष्ण मुनिरामके वचन सुनिकै शीघ्रही गुरुके आश्रमको जातेहुये ६ फिर वहांजाके ऋषियों के समूह करके युक्त और विशेषकरके रामभक्त जिनके समीप बैठे हैं ऐसे अगस्त्यजी को देखतेहुये ७ ॥

व्याख्यातराममंत्रार्थंशिष्येभ्यश्चातिभक्तितः ॥ दृष्ट्वागस्त्यंमुनि श्रेष्ठंसुतीक्ष्णःप्रययौमुनेः ८ दण्डवत्प्रणिपत्याहविनयावनतःसुधीः॥ रामोदाशरथिर्ब्रह्मन्सीतयालक्ष्मणेनच ९ आगतोदर्शनार्थन्तेबहि स्तिष्ठतिसांजलिः ॥ अगस्त्यउवाच ॥ शीघ्रमानयभद्रन्तेराममममहृ दिस्थितम् ॥ तमेवध्यायमानोऽहंकांक्षमाणोऽत्रसंस्थितः १० इत्यु क्त्वास्वयमुत्थायमुनिभिःसहितोद्रुतम् ॥ अभ्ययात्परयाभक्त्यागत्वा राममथाब्रवीत् ११ आगच्छरामभद्रन्तेदिष्ट्यातेऽद्यसमागमः॥ प्रि

यातिथिर्मम प्राप्तोस्यद्यमेसफलंदिनम् १२ रामोऽपिमुनिमायान्तंदृष्ट्वाहर्षसमाकुलः॥ सीतयालक्ष्मणेनापिदण्डवत्पातितोभुवि १३ द्रुतमुत्थाप्यमुनिराट्राममालिंग्यभक्तितः॥ तद्गात्रस्पर्शजाह्लादस्रवन्नेत्रजलाकुलः १४॥

और रामके मन्त्रके अर्थका व्याख्यान अति भक्तिसे शिष्यों से कररहे हैं ऐसे मुनियों में श्रेष्ठ अगस्त्यको देखिके सुतीक्ष्ण मुनि दण्डवत् प्रणामकरके बड़ी नम्रतासे बचन बोलतेहुये ८ कि हे ब्रह्मन् दशरथके पुत्र जो रामहैं सो सीता लक्ष्मण सहित आपके दर्शनके लिये आये हैं सो आश्रमके बाहर हाथ जोड़ेखड़े हैं ९ तब अगस्त्यजी बोले हे सुतीक्ष्ण शीघ्रही रामको ल्यावो जो मेरे हृदयमें सदा स्थितरहते हैं और मैं रामहीका ध्यानकर रहाथा और रामहीके दर्शनकी इच्छाकरके यहांस्थितहों १० यहकहके फिर आपही उठकर मुनियों करके सहित शीघ्रही रामके मिलने को अगाड़ी से जातेहुये फिर बड़ी प्रीतिसे रामको प्राप्तहो बोले ११ कि हेराम तुमआवो और तुम्हारा कल्याणहोय और बड़ा आनन्दहुआ जो इससमय में तुम्हारा समागम भया और आजकादिन सफलहुआ जो प्रिय अतिथि प्राप्तहुये १२ और रामचन्द्र भी मुनिको आते देखके आनन्दसे पूर्णहो सीता लक्ष्मण सहित दण्डवत्प्रणाम करतेहुये १३ तबमुनियों में श्रेष्ठ अगस्त्यजी शीघ्रही रामको उठाके हृदयसे आलिंगनकर रामचन्द्रके शरीरस्पर्शसे उत्पन्नहुआ जो आनन्द तिससे प्रकटजोनेत्रोंमें जल तिसकरके व्याप्तहोतेहुये अर्थात् आनन्दके आंशुओंको छोड़तेहुये १४॥

गृहीत्वाकरमेकेन करेणरघुनन्दनम्॥ जगामस्वाश्रमंहृष्टो मनसामुनिपुंगवः १५ सुखोपविष्टंसम्पूज्य पूजयाबहुविस्तरम्॥ भोजयित्वायथान्यायं भोज्यैर्वन्यैरनेकधा १६ सुखोपविष्टमेकांते रामंशशिनिभाननम्॥ कृतांजलिरुवाचेदमगस्त्योभगवानृषिः १७ त्वदागमनमेवाहं प्रतीक्षन्समवस्थितः॥ यदाक्षीरसमुद्रांते ब्रह्मणाप्रार्थितःपुरा १८ भूमेर्भारापनुत्यर्थं रावणस्यबधायच॥ तदादिदर्शनाकांक्षी तव राम तपश्चरन्॥ वसामि मुनिभिःसार्द्धं त्वामेव परिचिन्तयन् १९ सृष्टेः प्रागेकएवासीनिर्विकल्पोऽनुपाधिकः॥ त्वदाश्रयात्वद्विषयामाया ते शक्तिरुच्यते २० त्वामेव निर्गुणं शक्तिरावृणोतियदातदा॥ अव्याकृतमिति प्राहुर्वेदान्त परिनिष्ठिताः २१॥

फिर अपने एकहाथसे रामकाहाथ पकड़के प्रसन्नमनहुये अगस्त्यजी अपने

आश्रमको लिवालेजातेभये १५ फिर आसनपै सुखसे बैठेजोरामचन्द्र तिनका विधिपूर्वक विस्तारसे पूजनकरिकै बनकेअनेक प्रकारकी अन्नकी सामग्रियों करके विधिसे भोजनकराके १६ चन्द्रमाके तुल्यहै मुख जिनका औ सुखपूर्वक आसनपै बैठे ऐसे जोरामहैं तिनसे एकान्तमें हाथजोड़के अगस्त्य भगवान् बोलतेहुये १७ हे राम तुम्हारे दर्शनकी प्रतीक्षा करताहुआ अर्थात् कबआवैंगे ऐसा विचार करताहुआ मैं इसआश्रममें स्थितहोरहाहूं कदाचित् रामकहैं कबसेस्थितहो तबअगस्त्यजी कहते हैं कि हे राम जबसे क्षीरसागर के समीप जाके ब्रह्माजीने पृथिवीके भारदूरकरनेको और रावणके बधके अर्थ अर्थात् मारनेकी प्रार्थनाकी१८तबसे लेकरके तुम्हारे दर्शनकी इच्छासे तप करताहुआ मुनियों करके सहित तुम्हाराही स्मरणकरताहुआ इसआश्रम में बासकर रहाहौं १९ अब अगस्त्यजी अपने शिष्योंको बोध कराने का और राममें मनुष्यादि भावकी शंकाकी निवृत्तिके लिये रामहीके आगे रामका स्वरूप वर्णन करते हुये कहते हैं कि हेराम सृष्टिके पहिले निर्विकल्प अर्थात् प्रपञ्चरहित और निरुपाधि नाम उपाधि रहित एकही तुमहोतेहुये और तुम्हीं हो आश्रय जिसको और तुम्हीं हो विषय जिसको ऐसी जो माया सो तुम्हारी शक्तिकही जाती है इसका आशय यह है कि जैसे जलाने की जो शक्ति है तिसका आश्रय अग्निहै वहशक्ति अग्निसे न्यारीनहीं रहसक्ती अग्निही में रहती है तैसेई माया के आश्रय आपही हैं और माया और मायाका रचा हुआ पदार्थ सोई हुआ विषयसो भी तुम्हीं हो तुमसे भिन्ननहीं है अर्थात् शक्तिरूप तत्त्वकहीं शक्तिमान् से न्यारा गिनती में नहीं आताहै जैसे इन्द्र जाली अपनी शक्तिसे अनेक पदार्थों को रचताहै तोवे पदार्थ मिथ्या होनेसे इन्द्रजालीकी दृष्टिमें न्यारे गिनती में नहीं आते क्यातो उस शक्तिही में गिनेजातेहैं और इन्द्रजाली की शक्तिभी इन्द्रजाली से न्यारी नहीं होसक्तीहै तैसे परमेश्वरभी अपनी मायारूप शक्तिसे अपनेही स्वरूपको अनेक रूपोंको रचता है फिर जब शक्ति खैंच लेताहै तो एकही शेष रहताहै इससे सृष्टिके पहिले एकही रामरूप परमात्मा रहा यह सिद्धहुआ २० औ हे राम निर्गुण जो तुमहो तिनको जबवह मायारूप शक्ति आवरणकरतीहै अर्थात् ढांकलेतीहै तब उसको वेदांतमें कुशलजन अव्याकृतनाम करके कहतेहैं २१ ॥

मूलप्रकृतिरित्यकेप्राहुर्मायेतिकेचन॥अविद्यासंसृतिर्बंधइत्यादिबहुधोच्यते२२त्वयासंक्षोभ्यमाणासामहत्तत्त्वंप्रसूयतेमहत्तत्त्वादहंकारस्त्वयासंचोदितादभूत् २३ अहंकारोमहत्तत्त्वसंवृतस्त्रिविधोभवत् ॥ सात्विकोराजसश्चैवतामसश्चेतिभण्यते२४तामसात्सूक्ष्मतन्मात्रा

ण्यासन्भूतान्यतःपरम्॥ स्थूलानिक्रमशोरामक्रमोत्तरगुणानिह २५ राजसानींद्रियाण्येवसात्त्विकादेवतामनः॥ तेभ्योऽभवत्सूत्ररूपंलिंगं सर्वगतंमहत् २६ ततोविराट्समुत्पन्नःस्थूलाद्भूतकदंबकात्॥ विरा जःपुरुषात्सर्वंजगत्स्थावरजंगमम् २७ देवतिर्यङ्मनुष्याश्चकालक मेक्रमेणतु॥ त्वंरजोगुणतोब्रह्माजगतःसर्वकारणम् २८ ॥

इसका आशययहहै कि निर्गुणही रूपकरके प्रकाशमान जो तुमहौ तिन-कोमाया आवरण करतीहै अर्थात् अपने कल्पित संबन्ध करके तुम्हारासं-बन्ध अपने में मानते नहीं इससे निर्गुणही कहाये जातेहो और उस अवस्था में विशेष आकारकरके रहितहै इससे अव्याकृत कहातीहै॥ और हे राम सांख्य मतवाले उसी शक्तिको मूलप्रकृतिनाम करके कहतेहैं और कोई कोई आचार्य्यों करके माया और अविद्या औसंसृति औरबन्ध शब्दकर वही अव्याकृत प्रकृति कही जाती है २२ और हे राम तुम करके क्षोभको प्राप्त अर्थात् सत्त्वादि गुणोंके न्यूनाधिक्य भावको प्राप्त जो प्रकृतिहै सो प्रथममहत्तत्त्व को उत्पन्न करती हुई सबविकारोंकी आदि है और सकल ब्रह्माण्डकी सृष्टि इसीसे होती है इससे इस प्रथम बिकारका नाम महान् है॥ इसका आशय यह है कि जब सत्त्व रज तम ये तीनों गुण बराबर रहते हैं तब तक प्रलयही बना रहता है और उन्हीं गुणोंकी साम्य अवस्थाको मूलप्रकृति और कारणावस्था कहते हैं और जब सृष्टि होने का समय होताहै तो चैतन्यके प्रतिबिम्बसे उन गुणोंमें कमती बढ़ती भाव होताहै उसीको क्षोभ कहते हैं तबवही प्रकृति महत्त्वरूप करके परिणामको प्राप्ति होती है तब उसको महान् कहते हैं यद्यपि इस म-हत्तत्त्वमें तीनों गुणहैं तौ भी सत्त्वगुण प्रधानहै और जब इससे और बिकार उत्पन्न होने को होताहै तो इसमें रजोगुण प्रधान होताहै तब इसीसे सूत्रात्मा कहते हैं और हेराम तुम करके प्रेरित जोमहत्त्व तिससे अहंकार उत्पन्न होता हुआ २३ हे राम सो अहंकार त्रिगुण महत्तत्त्वके कार्य होने से तीन प्रकारका होताहुआ सात्त्विक राजस तामस ये तीन भेद करके कहाजाताहै २४ तिस में तामस अहंकार से शब्दस्पर्श रूप रस गन्ध ये पांच तन्मात्रा उत्पन्न होती हुई तिन तन्मात्राओंसे आकाश आदि स्थूल भूतहोतेहुये तिनके गुण अगाड़ी अगाड़ी के अधिक अधिक क्रमसे हुये इसका आशय यहहै कि शब्द तन्मात्रा से आकाश उत्पन्नहुआ और शब्द सहित स्पर्श तन्मात्रासे वायु उत्पन्नहुआ और शब्द स्पर्श सहित रूपतन्मात्रासे तेज उत्पन्नहुआ और शब्द स्पर्शरूप सहित रसतन्मात्रासे जल उत्पन्नहुआ और शब्दस्पर्श रूप रससहित गन्ध

तन्मात्रासे पृथ्वी उत्पन्नहुई और इसीसे आकाशका तौ एकशब्दही गुणहुआ और वायुमें एक अपना एक अपने कारणका मिलाकर शब्द स्पर्श दोगुणहुये और अग्निके शब्द स्पर्श रूप ये तीनगुणहुये और जलके शब्दस्पर्शरूप रसये चारगुणहुये औरपृथिवीके शब्द स्पर्शरूप रसगन्ध येपांचोगुणहुये २५औ हेराम राजस अहंकार से इन्द्रिय सबहोतीहुई और सात्त्विक अहंकारसे इन्द्रियों के देवता और मन उत्पन्न हुआ और इन सब सूक्ष्म तत्त्वोंसे समष्टि रूपहोने से सब जगत्का प्राणरूप सूत्रात्मा हिरण्य गर्भहोताहुआ जो सबमें व्यापक और महत्तत्त्व का अभिमानी महान् कहाजाता है तिसमें चक्षु १ श्रोत्र २ त्वक् ३ रसना ४ घ्राण ५ ये पांचज्ञानेन्द्रिय कहाती हैं और चक्षु १ इंद्रियका विषयरूप है और श्रोत्र २ इन्द्रियका विषय शब्दहै और त्वचा ३ इन्द्रियका विषयस्पर्श है और घ्राण ४ इन्द्रियका विषयगन्धहै और जिह्वामें जो रसना इन्द्रियहै तिसका विषय मधुर आदिरसहैं और वाक् १ औ हाथ २ और पांव ३ और गुदा४ और लिंग ५ ये कर्मेन्द्रियहैं इनमें चक्षु इन्द्रियका देवता सूर्य है १ और श्रोत्र के दिशा २ और त्वचाका पवन ३ औ रसनाका वरुण ४ और घ्राणके अश्विनी कुमार ५ ये ज्ञानेंद्रियोंके देवताहैं और वाक् इन्द्रियका देवता अग्निहै १ और हाथके इन्द्र २ और पांवके विष्णु ३ और गुदाकामित्र ४ और लिंगकाब्रह्मा ५ ये कर्मेन्द्रियों के देवता हैं और मन दशइन्द्रियों की प्रवृत्ति करानेवाला ग्यारहवां अंतर की इन्द्रियहै तिसका देवता चन्द्रमा है और सबजीवों के प्राण और इंद्रिय और देवता इनको अपना मानैं अर्थात् ये सब मेरेही हैं औ मैं इन सबों का स्वामी हौं ऐसा जिसको अभिमान होय उसको हिरण्यगर्भ कहतेहैं २६ हे राम तिस हिरण्यगर्भसे विराट् उत्पन्न होताहुआ अर्थात् सब प्राणियोंके स्थूलशरीर और समुद्र पर्वत नदी वृक्ष पृथिवी आदि सम्पूर्णब्रह्माण्डहोता हुआ और इस स्थूलब्रह्माण्डको जोअपनामानरहाहै अर्थात्येसब मेरेहीहैं और मैंइनकास्वामीहौं उसकोब्रह्माकहतेहैं औ वैराजपुरुषकहतेहैंफिरउस ब्रह्मासे सब स्थावर जंगमशरीरोंके अभिमानी न्यारे न्यारे प्राणी उत्पन्न होते भये २७ तिसमें भी कोई कालमें कोई प्राणीहुये कोई कालमें कोई और काल सहित किसी कर्मकरके देवता हुये और किसी कर्म करके मनुष्य होते हुये और किसीकाल सहित कर्मकरके शूकरआदि तिर्यग्योनिके प्राणी उत्पन्नहुये इसप्रकार करके हेराम तुमहीं रजोगुणसे सब जगत्का कारणब्रह्मारूपहौ २८॥

सत्त्वाद्विष्णुस्त्वमेवास्यपालकःसद्भिरुच्यते॥लयेरुद्रस्त्वमेवास्य त्वन्मायागुणभेदतः २९ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्याख्यावृत्तयोबुद्धिजैर्गुणैः॥ तासांविलक्षणोरामस्त्वंसाक्षीचिन्मयोऽव्ययः३०सृष्टिलीलांयदाकर्त्त

मीहसेरघुनन्दन॥ अंगीकरोषिमायात्वंतदावैगुणवानिव३१ राममा याद्विधाभातिविद्याविद्येतितेसदा॥ प्रवृत्तिमार्गनिरताअविद्यावशवर्तिनः॥निवृत्तिमार्गनिरतावेदांतार्थविचारकाः३२त्वद्भक्तिनिरतायेच तेवैविद्यामयाःस्मृताः॥ अविद्यावशगायेतुनित्यंसंसारिणश्चते॥ विद्याभ्यासारतायेतु नित्यमुक्तास्तएवहि ३३ लोकेत्वद्भक्तिनिरता स्त्वन्मंत्रोपासकाश्चये॥ विद्याप्रादुर्भवेत्तेषां नेतरेषांकदाचन ३४ अतस्त्वद्भक्तिसम्पन्ना मुक्ताएवनसंशयः॥ त्वद्भक्तिमृतहीनानां मोक्षःस्वप्नेऽपिनोभवत् ३५॥

और सत्त्वगुणते सबजगत्के पालक विष्णुभी महात्मा पुरुषोंकरके तुमहीं कहे जातेहौ और तुम्हारी मायाके तमोगुणके भेदसे प्रलय समय में रुद्र भी तुमहीहौ २९ औ हेराम इसीप्रकारसे तुम्हारी मायाके जो सत्त्वरज तम तीन गुणतिन्हों करके जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति ये तीन अवस्थाबुद्धिही की हैं और तुम तौ इनतीनों से बिलक्षण अविनाशी चिन्मय साक्षीमात्रहौ ३० औ हे राम जब सृष्टि लीलाकरने की इच्छा करतेहौ तब गुणवान्की नाईं उस मायाको अंगीकार करतेहौ ३१औ हेराम तुम्हारी मायाही विद्या और अविद्या ये दोभेद करके लोकमें प्रकाशित होरही हैं तिसमें जे प्रवृत्ति मार्गमें प्रीतिकर रहे हैं वे अविद्याके बश हैं और जे बेदान्त शास्त्रके बिचारमें तत्पर निवृत्तिमार्ग में प्रीति युक्तहैं ३२ और जे आपकी भक्तिमें प्रीति कररहे हैं ते विद्या शक्ति युक्तहैं और जे अविद्याके बशीभूत हैं वे नित्य संसारी कहाते हैं और जे विद्याके अभ्यासमें तत्पर हैं वे नित्य मुक्त कहाते हैं ३३ और जे लोकमें तुम्हारी भक्तिमें तत्पर हैं और तुम्हारे मन्त्रके उपासकहैं तिनको बिद्या आपही प्रकट होती है और जो बिमुख हैं तिनको तो कभी बिद्या होतीही नहीं ३४ इसकारणसे जे तुम्हारी भक्ति युक्त हैं वे मुक्तही हैं इसमें कुछ संशयनहीं और तुम्हारे भक्तिरूप अमृत करके जे हीनहैं तिनको स्वप्नमें भी मोक्ष दुर्लभहै ३५॥

किंरामबहुनोक्तेनसारंकिंचिद्ब्रवीमिते॥ साधुसंगतिरेवात्रमोक्षहेतुरुदाहृतः३६साधवःसमचित्तायेनिस्पृहाविगतैषिणः॥दांताःप्रशांतास्त्वद्भक्तानिवृत्ताखिलकामतः ३७ इष्टप्राप्तिविपत्त्योश्च समाःसंगविवर्जिताः॥संन्यस्ताखिलकर्माणःसर्वदाब्रह्मतत्पराः३८ यमादिगुणसम्पन्नाःसंतुष्टायेनकेनचित् ॥ सत्संगमोभवेद्यर्हित्वत्कथाश्रवणेरतिः३९ समुदेतिततोभक्तिस्त्वयिरामसनातने॥ त्वद्भक्तावुपपन्नायांवि

ज्ञानंविपुलंस्फुटम् ४० उदेतिमुक्तिमार्गोऽयमाद्यश्चतुरसेवितः ॥ तस्माद्राघवसद्भक्तिस्त्वयिमेप्रेमलक्षणा ४१ सदाभूयाद्धरेःसंगस्त्वद्भक्तेषुविशेषतः ॥ अद्यमेसफलंजन्म भवत्संदर्शनादभूत् ४२ अद्यमेक्रतवःसर्वे वभूवुःसफलाःप्रभो॥दीर्घकालंमयातप्तमनन्यमतिनातपः॥ तस्येहतपसोराम फलंतवयदर्चनम् ४३ ॥

औ हेराम बहुत कहने से क्या है सबकासार मैं तुमसे कहताहौं कि साधु पुरुषोंका संगम जोहै सोई केवल मोक्षका कारणहै ३६ और साधुवेहैं जे समचित्तहैं अर्थात् शत्रुमित्रमें बैर प्रीति रहितहैं औ जिनको किसी बातकी इच्छा नहीं और विद्यमान भी पुत्र धन आदि पदार्थोंमें जे प्रीति रहित हैं और जे इन्द्रियोंके दमन करनेवाले हैं और जिन्होंने मनको वशकियाहै और जे तुम्हारी भक्तियुक्त हैं और जिन्हों ने सब कामना त्यागदी हैं ३७ और जे इष्टवस्तुकी प्राप्तिमें व नाश होजाने में समानहैं अर्थात् हर्ष बिषाद रहितहैं और जेदुस्संग करके रहितहैं और त्याग करदिये हैं संपूर्ण कर्म जिन्होंने और ब्रह्म बिचारमें तत्परहैं ३८ और यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार ध्यान धारणा समाधिरूप जो योगशास्त्रमें कहेहुये गुणहैं तिनकरके युक्तहैं और जो कुछ दैवयोगसे मिलजाय उसी करके संतोष युक्त हैं हे राम ऐसे साधु पुरुषों का जब कभी सत्संग होताहै तब तुम्हारी कथाके श्रवणमें प्रीति उत्पन्न होती है ३९ तिससे फिर तुम्हारेमें भक्ति होतीहै और भक्तिसे फिर निर्मलज्ञान होताहै ४० उस ज्ञानसे मुक्ति होती है यह मार्गबड़े बुद्धिमान् पुरुषों करके सेवितहै हे राम तिस कारण से सदा प्रेम लक्षणा भक्ति तुममें मेरीहोय ४१ और तुम्हारे भक्तों में सदा संगहोय और आज आपके दर्शनसे मेरा जन्म सफलहुआ ४२ और आजमेरे सब यज्ञसफल हुये और जो एकाग्रचित्त करके बहुत काल मैंने तप कियाथा उस तपकाफल यही है जो प्रत्यक्ष आपका पूजनकिया ४३ ॥

सदामेसीतयासार्द्धं हृदयेवसराघव ॥ गच्छतस्तिष्ठतोवाऽपि स्मृतिःस्यान्मेसदात्वयि ४४ इतिस्तुत्वारमानाथमगस्त्योमुनिसत्तमः ॥ ददौचापंमहेंद्रेण रामार्थेस्थापितंपुरा ४५ अक्षय्यौबाणतूणीरौ खड्गोरत्नविभूषितः ॥ जहिराघवभूभार भूतंराक्षसमण्डलम् ४६ यदर्थमवतीर्णोसि माययामनुजाकृतिः ॥ इतोयोजनयुग्मेतुपुण्यकाननमण्डितः ४७ अस्तिपञ्चवटीनाम्ना आश्रमोगौतमीतटे ॥ नेतव्यस्तत्रते कालः शेषोरघुकुलोद्वह ॥ तत्रैवबहुकार्याणि देवानां कुरु

सत्पते ४८ श्रुत्वातदागस्त्यसुभाषितंवचः स्तोत्रंचतत्त्वार्थसमन्वितं विभुः॥मुनिंसमाभाष्यमुदान्वितोययौप्रदर्शितंमार्गमशेषविद्धरिः४९ इति श्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादे आरण्यकांडे तृतीयःसर्गः ३॥

औ हे राघव सदा सीता करके सहित मेरे हृदयमें वास करिये और चलते बैठते सदा तुम्हारा स्मरणरहै ४४ अब मुनियों में श्रेष्ठ जो अगस्त्य सो इस प्रकार श्रीरामकी स्तुति करके जो धनुष इन्द्रने राम के लिये अगस्त्यजी के पास पहिले रक्खाथा उस धनुषको देतेहुये ४५ और बाणों से भरे हुये औ कभी जिनमें से बाणनहीं घटैं ऐसे दोतरकस औ रत्नों करके भूषित खड्ग इनको देतेहुये और यह कहा कि हेरामचन्द्र इनशस्त्रों करके पृथ्वी का भार जो राक्षसोंका समूहतिसको मारिये ४६ जिसके अर्थ आपने मायाकरके मनुष्य अवतार धारण कियाहै और यहांसे दोयोजनपै अर्थात् आठकोस एक पुण्यवनकरके भूषित बड़ा शोभायमान ४७ पञ्चबटीनाम करके आश्रमहै गोदावरी नदीके तटपै हेराम वहांजो वनवासका कालबाकीरहा सो व्यतीत करिये और हे महात्मापुरुषों के पालक उसी स्थानपै सब देवतों के कार्य सिद्धकरिये अर्थात् राक्षसोंका बध करिये ४८ अब श्रीरामचन्द्र ये अगस्त्यजी के कहेहुये वचन सुनिकै और यथार्थ अपना स्तोत्र सुनके बड़े आनन्दसे मुनिसे संभाषण करके सब पदार्थों के जाननेवाले जो राम सो मुनिका दिखायाहुआ जो पञ्चबटीका मार्ग तिसको जातेहुये ४९ ॥

इत्यध्यात्मरामायणेउमाशिवसंवादेआरण्यकांडेभाषा टीकायांतृतीयः सर्गः ३॥

सूतउवाच ॥ मार्गेब्रजन्ददर्शाथ शैलशृंगमिवस्थितम्॥ गृध्रंजटायुषंरामःकिमेतदितिविस्मितः १ धनुरानयसौमित्रेराक्षसोऽयंपुरःस्थितः ॥ इत्याहलक्ष्मणंरामो हनिष्याम्यृषिभक्षकम् २ तच्छ्रुत्वारामवचनंगृध्रराट्भयपीडितः॥वधार्होऽहंनतेराम पितुस्तेहंप्रियःसखा३ जटायुर्नामभद्रन्तेगृध्रोऽहंप्रियकृत्तव ४ पंचवट्यामहंवत्स्येतवैवप्रियकाम्यया ॥ मृगयायांकदाचित्तुप्रयातेलक्ष्मणेऽपिच५ सीताजनककन्या मेरक्षितव्याप्रयत्नतः ॥ श्रुत्वातद्गृध्रवचनंरामःसस्नेहमब्रवीत् ६ साधुगृध्रमहाराजतथैवकुरुमेप्रियम् ॥ अत्रैवमेसमीपस्थोनातिदूरेवनेवसन् ७॥

दो० चौथे सर्ग जटायुको मिले लषण सियराम ।
पञ्चवटी वसिलषण सों कहो रामनिजधाम १ ॥

अब श्रीमहादेवजी पार्वतीसे कहते हैं हेपार्वति अब इसके उपरांत श्रीरामचन्द्र मार्ग में जातेहुये पर्वतके शृंगके तुल्य बड़ाभारी बैठाहुआ गृद्धराज जो जटायु तिसको देखतेहुये और देखके यहकौन है ऐसे आश्चर्ययुक्त चिन्तन करतेहुये १ और लक्ष्मणसे यह कहतेहुये कि हेलक्ष्मण मेरा धनुष लाओ यह कोई ऋषियों के भोजनकरनेवाला राक्षसआगे बैठाहै इसको मैं बधकरौं २ तव यह वचन रामका सुनिकै बड़ाभय पीड़ित गृद्धराज बोला कि हेराम मैं तुम्हारेबधके योग्य नहीं हौं जिससे कि मैं तुम्हारे पिताका सखाहौं ३ और जटायु मेरा नामहै मैं गृद्धहौं और तुम्हारे प्रियका करनेवाला हौं औ हेराम तुम्हारा कल्याण होय ४ और पंचबटी में मैं तुम्हारीही प्रीतिकी इच्छासे वास कररहा हौं औ तुम व लक्ष्मण जबकभी शिकारखेलने को जाउगे ५ तब जनकनन्दिनी सीताकी रक्षामैं यत्नसे करौंगा यह गृद्धके वचन सुनिकै रामचन्द्र स्नेह पूर्वक गृद्धसे बोलतेहुये ६ कि हे गृद्धराज अच्छा वचन तुमने कहा और तैसेही मेरा प्रिय तुमकरौ और इसी पंचबटी में नहीं अत्यंत दूर मेरे समीप बसतेरहौ ७ ॥

इत्यामंत्रितमालिंग्ययर्यौपंचवटींप्रभुः॥ लक्ष्मणेनसहभ्रात्रासीतयारघुनंदनः ८ गत्वातेगौतमीतीरंपंचवट्यांसुविस्तरम् ॥ मंदिरंकारयामासलक्ष्मणेनसुबुद्धिना ९ तत्रतेन्यवसन्सर्वेगंगायाउत्तरेतटे ॥ कदंबपनसाम्रादिफलवृक्षसमाकुले १० विविक्तेजनसंबाधवर्ज्जितेनीरुजस्थले॥ विनोदयंज्जनकजांलक्ष्मणेनविपश्चिता ११ अध्युवाससुखंरामोदेवलोकइवामरः ॥ कंदमूलफलादीनिलक्ष्मणोनुदिनंतयोः १२ आनीयप्रददौरामसेवातत्परमानसः॥धनुर्वाणधरोनित्यंरात्रौजागर्तिसर्वतः १३ स्नानंकुर्वंत्यनुदिनंत्रयस्तेगौतमीजले ॥ उभयोर्मध्यगतासीताकुरुतेचगमागमौ १४ ॥

ऐसा अपना आशय जनाइकै और गृद्धको हृदयसे भेंटके सीता लक्ष्मण सहित राम पंचबटीको जातेहुये ८ फिर श्रीराम पंचबटी में जाकर गोदावरी नदी के तीर विस्तार युक्त बड़ा सुन्दर मन्दिर बुद्धिमान् लक्ष्मण से बनवाते हुये ९ फिर उस गोदावरी के उत्तर तटके समीप मन्दिरमें राम लक्ष्मण सीता वास करतेहुये कैसा वह आश्रमहै जो कदम्ब और कटहर और आम इत्यादि फल सहित वृक्षोंकरके शोभायमान होरहाहै १० और मनुष्यों के समूहकरके

रहित और कोई रोगकी बाधा वहां नहीं है ऐसे उस आश्रम में एकांत देशमें श्रीराम सीताजी को क्रीड़ाकरातेहुये ज्ञानवान् लक्ष्मण करके सहित ११ देवलोकमें देवतनकी नाईं सुख पूर्वक वासकरतेहुये और रोज रोज लक्ष्मणजी कंदमूल फललाके राम सीताको निवेदनकरते हैं १२ और रामचन्द्रकी सेवामें तत्परहै मन जिनका ऐसे जो लक्ष्मण सो रात्रि में नित्य धनुषबाणलेके चारोंतरफ़ से रक्षाकरतेहुये जागते हैं १३ और तीनोंजने दिन दिन गोदावरी नदी में स्नानकरते हैं और राम लक्ष्मणके बीचमें सीताचलती हैं १४ ॥

आनीयसलिलंनित्यंलक्ष्मणःप्रीतिमानसः॥ सेवतेऽहरहःप्रीत्या एवमासन्सुखंत्रयः १५ एकदालक्ष्मणोराममेकांतेसमुपस्थितम् ॥ विनयावनतोभूत्वापप्रच्छपरमेश्वरम् १६ भगवन्श्रोतुमिच्छामिमोक्षस्यैकांतिकींगतिम् ॥ त्वत्तःकमलपत्राक्षसंक्षेपाद्वक्तुमर्हसि १७ज्ञानं विज्ञानसहितंभक्तिवैराग्यबृंहितम् ॥ आचक्ष्वमेरघुश्रेष्ठवक्तानान्योऽस्तिभूतले १८ श्रीरामउवाच ॥ शृणुवक्ष्यामितेवत्सगुह्याद्गुह्यतरंपरम् ॥ यद्विज्ञायनरोजह्यात्सद्योवैकल्पिकंभ्रमम् १९ आदौमायास्वरूपंतेवक्ष्यामितदनन्तरम् ॥ ज्ञानस्यसाधनंपश्चात्ज्ञानंविज्ञानसंयुतम् २० ज्ञेयंचपरमात्मानंयज्ज्ञात्वामुच्यतेभयात् ॥ अनात्मनिशरीरादावात्मबुद्धिस्तुयाभवेत् २१ ॥

और प्रीति युक्त लक्ष्मण दिनदिन जल भरिकै बड़ी प्रीतिसे रामचन्द्रकासेवनकरतेहैं इसप्रकार सुखपूर्वक तीनोंजने पंचबटी में वासकरतेहुये १५ एक समयमें लक्ष्मण एकांतमें रामचन्द्रजीको बैठे देखकर बड़े बिनय से नम्रहोकर परमेश्वर जो राम तिनसे पूछतेहुये १६ कि हेभगवन् हेकमलवत् विशालनेत्र आपसे मोक्षमार्गकी निश्चययुक्त गतिमैं सुनाचाहताहौं सो संक्षेपसे कृपाकरके कहिये १७ और हेरघुश्रेष्ठ भक्ति वैराग्य करके वृद्धको प्राप्त आत्मा साक्षात्कार सहित जो ज्ञानहै तिसको कहिये जिससे आपके तुल्य कोई वक्ता पृथिवी में नहीं है १८ अब श्रीरामचन्द्र लक्ष्मणजी से कहते हैं हेवत्स गुप्तसे गुप्त जो ज्ञानहै सो मैं तुमसे कहताहूं जिसको जानकरके मनुष्य इस संसाररूपी भ्रमको शीघ्रही त्यागकरदेवै १९ हे लक्ष्मण प्रथम तो मायाकास्वरूप मैं तुमसे कहताहूं फिर तिसके अनन्तर ज्ञानका साधन फिर तिसके पीछे विज्ञान सहित अर्थात् आत्म साक्षात्कार सहित ज्ञानको कहताहौं २० और जानिबे योग्य जो परमात्माहै तिसको भी कहताहूं जिसको जानिकै संसाररूप भयसे

छूट जाताहै हे लक्ष्मण आत्मरहित देह आदि पदार्थ में जो आत्म बुद्धि होना अर्थात् मैं हौं ऐसी बुद्धि होना २१ ॥

सैवमायातयैवासौसंसारःपरिकल्प्यते ॥ रूपेद्वेनिश्चितेपूर्वेमायायाःकुलनंदन २२ विक्षेपावरणेतत्रप्रथमंकल्पयेज्जगत् ॥ लिंगाद्यब्रह्मपर्यंतंस्थूलसूक्ष्मविभेदतः २३ अपरंत्वखिलंज्ञानरूपमावृत्यतिष्ठति ॥ माययाकल्पितंविश्वंपरमात्मनिकेवले २४ रज्जौभुजंगवद्भ्रांत्याविचारेनास्तिकिंचन ॥ श्रूयतेदृश्यतेयद्यत्स्मर्यतेवानरैःसदा २५ असदेवहितत्सर्वंयथास्वप्नमनोरथौ॥देहएवहिसंसारवृक्षमूलंदृढंस्मृतम् २६ तन्मूलःपुत्रदारादिबंधःकिंतेऽन्यथाऽत्मनः २७ देहस्तुस्थूलभूतानांपंचतन्मात्रपंचकम् ॥ अहंकारश्चबुद्धिश्चइंद्रियाणितथादश २८ ॥

सोई मायाहै जिसकरके यह सब संसार कल्पना किया जाताहै औ हे लक्ष्मण तिसमाया के दोरूप निश्चित कियेगये हैं २२ एकविक्षेप और दूसराआवरण अर्थात् दोशक्ती मायामें जो रहती हैं तिसमें विक्षेपशक्ति तौ स्थूल सूक्ष्म भेद करके महत्तत्त्वको आदिलेके ब्रह्मा पर्यंत जगत्को कल्पनाकरती है अर्थात् रचती है २३ और आवरण शक्तितौ संपूर्ण ज्ञानरूपको आवरणकरके अर्थात् आच्छादन करके स्थित है इस प्रकार माया केवल परमात्माही में ज्ञानको आच्छादनकर जगत्रूप की कल्पना करती है २४ जैसे रज्जुमें अज्ञानही वास्तव रज्जु रूपको ढकिकै सर्पको रचताहै भ्रांतिकरके बिचार करनेसे तो सर्प आदि कुछ भी नहीं रहता केवल रज्जुही प्रतीत होती ऐसेही हे लक्ष्मण जो पदार्थ सुननेमें और देखने में और स्मरणसे आताहै २५ सो सब मिथ्याही जानो जैसे स्वप्न के देखे सुने पदार्थ मिथ्याही होते हैं तिससे देहही संसाररूपी वृक्षकी दृढ मूलहै २६ क्योंकि देहही संसारके कारणरूप कर्मोंको उत्पन्न करताहै और देहही मूलकारण जिसका ऐसा पुत्रदाराआदि वन्धनहै और देह नहोय तौ आत्माके पुत्र दारादिक कौन होतेहैं २७ सो देह दो प्रकारकाहै एक स्थूल एक सूक्ष्म तिसमें स्थूलमहाभूतों करके रचाहुआ जो दिखाई पड़ता मनुष्यादिदेहहै सो स्थूल देह है और शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध येपंचतन्मात्रा और पंचज्ञानेन्द्रिय औ पंच कर्मेन्द्रिय २८ ॥

चिदाभासोमनश्चैवमूलप्रकृतिरेवच ॥ एतत्क्षेत्रमितिज्ञेयंदेहइत्यभिधीयते २९ एतैर्विलक्षणोजीवःपरमात्मानिरामयः ॥ तस्यजी

वस्यविज्ञानेसाधनान्यपिमेशृणु ३० जीवश्चपरमात्माचपर्य्यायोनात्रभेदधीः॥ मानाभावस्तथादंभहिंसादिपरिवर्जनम् ३१ पराक्षेपादिसहनंसर्वत्रावक्रतस्तथा॥ मनोवाक्कायसद्भक्त्यासद्गुरोःपरिसेवनम् ३२ बाह्याभ्यंतरसंशुद्धिःस्थिरतासत्क्रियादिषु ॥ मनोवाक्कायदण्डश्चविषयेषुनिरीहता ३३ निरहंकारताजन्मजराद्यालोचनंतथा॥ असक्तिःस्नेहशून्यत्वंपुत्रदारधनादिषु ३४ इष्टानिष्टागमेनित्यंचित्तस्यसमतातथा॥ मयिसर्व्वात्मकेरामेह्यनन्यविषयामतिः ३५ ॥

और मन बुद्धि अहंकार यह अठारह तत्त्वका सूक्ष्मदेहहै और मूलप्रकृतिरूप ईश्वर का देहहै और मूलप्रकृति सहित अहंकारादि तत्त्वोंका क्षेत्र भी कहतेहैं और देह कहतेहैं और यह सूक्ष्म देह चिदाभास है अर्थात् चित्त के सदृश प्रतीत हो रहा है जिससे बुद्धि करके मैं स्थूलहौं कृशहौं ऐसा प्रतीत होताहै २९ औरजीवतौ इनसबोंसे बिलक्षणहै अर्थात्न्याराहै औरपरमात्माहीहैऔर दोषरहितहै और सुजीव औरपरमात्मा इनदोनोंकाएकहीअर्थहै शब्द मात्रकाभेदहै वास्तवमेंकुछ भेदनहीं और दोनों देशकालपरिच्छेदसेरहित हैं अर्थात् इसदेशमेंहै और देशमेंनहीं है औरइसकालमेंहैऔरदूसरेकाल में नहीं रहैगा ऐसा परिच्छेद जीव औ परमात्मा में नहींहै हे लक्ष्मण तिसजीव को ऐसेज्ञान होने में जे साधनहैं तिनको मैं कहताहूं ३० दंभ हिंसा आदि दोषों का त्याग करना अर्थात् औरों के ठगने को महात्माओं कासा बेष बनाना और भीतर कामक्रोध लोभसे भरेरहैं यह दंभ कहाताहै तिसको त्यागना ३१ और मनबचन कर्म करके तीन प्रकारकी हिंसा होतीहै तिसको भी छोड़ना औरकोईअपनासे कठोर बचनकहै उसको सहिलेना और किसीसे कुटिलता नहीं करनी और मन बचन कायकरके भक्ति से सद्गुरु का सेवन करना ३२ और बाहर से मृत्तिका जल आदि करके शुद्ध रहना और भीतर से कपट त्याग से शुद्ध रहना और सत्कर्मों में स्थिरता करना अर्थात् अवश्य हमको यहकरना चाहिये यह बुद्धिकरना और मनसे किसीका अनिष्ट अर्थात् बुरा न चिंतन करै और बाणी करके किसीका हृदय न विदारण करना और हाथसे किसी की ताड़ना न करना ३३ और बिषयोंमें आसक्त न होना और गर्वका छोड़ना और जन्म जरादि संसार के दोषोंका विचार करना और पुत्र दारादिकोंमें स्नेह नहीं बढ़ाना ३४ और अपनाको प्रिय वस्तुके मिलने में हर्ष न करना और अप्रियके मिलनेमें बिषाद न करना और सर्वात्मा जो मैं रामहौं तिसमें अनन्य भक्ति करना अर्थात् सबसे अधिक प्रीति करना३५॥

जनसंबाधरहितशुद्धदेशनिषेवणम् ॥ प्राकृतैर्जनसंघैश्चह्यरतिः सर्वदाभवेत् ३६ आत्मज्ञानेसदोद्योगोवेदांतार्थावलोकनम् ॥ उक्तैरेतैर्भवेज्ज्ञानंविपरीतैर्विपर्ययः ३७ बुद्धिप्राणमनोदेहाऽहंकृतिभ्योबिलक्षणः ॥ चिदात्माऽहंनित्यशुद्धोबुद्धएवेतिनिश्चयम् ३८ येनज्ञानेनसंवित्तेतज्ज्ञानंनिश्चितंचमे ॥ विज्ञानंचतदैवैतत्साक्षादनुभवेद्यदा ३९ आत्मासर्वत्रपूर्णःस्याच्चिदानंदात्मकोऽव्ययः ॥ बुद्ध्याद्युपाधिरहितः परिणामादिवर्ज्जितः ४० स्वप्रकाशेनदेहादीन्भासयंननपावृतः ॥ एकएवाद्वितीयश्चसत्यज्ञानादिलक्षणः ४१ असंगःस्वप्रभोद्रष्टाविज्ञानेनावगम्यते ॥ आचार्यशास्त्रोपदेशादैक्यज्ञानंयदाभवेत् ४२ ॥

और मनुष्यों के समूह रहित जो पवित्र देश तिसका सेवन करना और संसारी मनुष्यों से प्रीति नहीं करना ३६ और आत्मज्ञानमें सदा उद्योग करना और वेदान्त शास्त्रके अर्थका सदा बिचार करना इन साधनों करके ज्ञान होताहै और इनसे बिपरीत अर्थात् उलटे आचरणों करके संसार होताहै ३७ और हे लक्ष्मण बुद्धि और प्राण औ मन औ देह और अहंकार इनसे बिलक्षण और तरहका अर्थात् इनसे न्यारा शुद्धबुद्ध चिदात्माही मैंहों ऐसे निश्चय को ३८ जिसज्ञान करके प्राप्तहोय वह ज्ञान है यह मेरा निश्चय है और साक्षात् जब आत्मस्वरूपका अनुभव करे अर्थात् जानें तब उसको बिज्ञान कहते हैं ३९ और हे लक्ष्मण आत्मा सब जगह परिपूर्ण होरहा है और चित्रूपही आनन्द स्वरूप है और नाशरहितहै औ बुद्ध्यादि उपाधि से रहित है और परिणाम आदि विकारसे रहितहै तहां और और रूप बदलने को परिणाम कहते हैं ४० और अपनेप्रकाशकरके देहादिकों को प्रकाश करताहुआआप आवरण रहितहै और एकहै और अद्वितीयहै जिससेदूसराकोईनहीं है और सत्यज्ञान अनन्तस्वरूपहै ४१ और संग रहितहै औ स्वयंप्रकाशहै और सबका देखने वालाहै और विज्ञानकरके जानाजाताहै औरजिस अवस्थामेंशास्त्र और आचार्य के उपदेशसे जीव और परमात्मा इनका एकाकारज्ञानहोताहै ४२॥

आत्मनोर्जीवपरयोर्मूलाविद्यातदैवहि ॥ लीयतेकार्यकरणैःसहैव परमात्मनि ४३ सावस्थामुक्तिरित्युक्ताह्युपचारोऽयमात्मनि ॥ इदंमोक्षस्वरूपंतेकथितंरघुनंदन ४४ ज्ञानविज्ञानवैराग्यसहितंमेपरात्मनः ॥ किंत्वेतद्दुर्लभंमन्येमद्भक्तिविमुखात्मनाम् ४५ चक्षुष्मतामपि यथारात्रौसम्यक्नदृश्यते ॥ पदंदीपसमेतानांदृश्यतेसम्यगेवहि ४६

एवंमद्भक्तियुक्तानामात्मासम्यक्प्रकाशते ॥ मद्भक्तेःकारणंकिंचिद्ध क्ष्यामिशृणुतत्त्वतः ४७ मद्भक्तसंगोमत्सेवामद्भक्तानांनिरंतरम् ॥ एकादश्युपवासादिममपर्वानुमोदनम् ४८ मत्कथाश्रवणेपाठेव्याख्यानेसर्वदारतिः ॥ मत्पूजापरिनिष्ठाचममनामानुकीर्त्तनम् ४९ ॥

उसी अवस्थामें कार्य कारण सहित मूल अविद्या परमात्माही में लीन होती है ४३ सोई मुक्ति अवस्थाकही जातीहै परन्तु यहभी सबव्यवहार कंठ चामीकरन्याय करके गौणही है मुख्य नहीं बन सक्ताहै इसका आशय यह है कि जैसे कोई कंठमें तो सुवर्ण मणिधारण करेहै परन्तु भूलिके घर और बनमें खोजता फिरताहै फिर दैवगतिसे किसी जानकार मनुष्यने कहाकि अरे मणि तौ तू कण्ठहीमें धारणकरेहै कहां और जगह खोजताहै फिर यह सुनिके वह पुरुष भी स्मरणकर कंठमें देखनेलगा तो उसको मणिमिली और उसके मिलने से आनन्द भी हुआ और यह कहताहै कि मणि मुझको मिलगई तौ देखिये जैसे उसको मणिका मिलना गौणहै क्योंकि उसकी मणि प्राप्तिहीथी केवल उसकी भूल से इतना दुःखहुआ और भूलके दूरहोने में कोई और अपूर्व मणि नहीं मिली जिसकी मुख्य प्राप्तिहोती मिलेका मिलना तौ लोक में आरोपितत्व होने से गौणही होताहै तैसे जीवभी शुद्धबुद्ध आनन्द संदोहरूप प्रथम भी था अविद्या वशते यथार्थ स्वरूपके भूलने से देहको आत्मामानने से क्लेशोंको भोगताहै जब दयालु तत्त्ववेत्ता मिला तो यथार्थ स्वयंसिद्ध अपने स्वरूपके बोधकराने से परमात्माकीप्राप्तिभी गौणहै क्योंकि वह तो सदा प्राप्तहीथा एक अविद्याकी महिमा से अप्राप्ततुल्यरहा ४४ फिर ज्ञान महिमा से जैसेका तैसाही परमानन्द रूपहुआ उसीको मोक्षकहते हैं और हेलक्ष्मण यह ज्ञान विज्ञान सहित परमात्म संबन्धी मोक्षरूप मैंने तुमसे कहा परन्तु मेरी भक्तिसे जे पुरुष बिमुखहैं तिनको तो स्वयंसिद्ध भी यह ज्ञान दुर्लभही होता है ४५ जैसे नेत्रवाले पुरुषोंको भी रात्रिमें अच्छी तरह नहीं देखपड़ता और दीपकहोय तो अच्छीतरह देखताहै ४६ ऐसेही जे पुरुष मेरी भक्तिकरके युक्त हैं तिनको आत्मा अच्छीतरह प्रकाश करताहै और हेलक्ष्मण मेरी भक्तिका और भी कारणहै तिसको मैं तत्त्व करके कहताहौं ४७ मेरे भक्तोंका सत्संग और मेरी सेवा और मेरे भक्तोंकी निरन्तरसेवा और एकादशी आदि उपवास औररामनवमीआदिका उत्सवकरना ४८ और मेरीकथाकेसुननेमेंऔरपाठकरने में और व्याख्यान करने में सदा प्रीति होना और मेरी पूजाकरना और मेरे में विश्वासकरके एकमेराही आश्रयकरना और मेरे नामकाकीर्त्तन करना ४९ ॥

एवंसततयुक्तानांभक्तिरव्यभिचारिणी ॥ मयिसंजायतेनित्यंततः किमवशिष्यते ५० अतोमद्भक्तियुक्तस्यज्ञानंविज्ञानमेवच ॥ वैराग्यं चभवेच्छीघ्रन्ततोमुक्तिमवाप्नुयात् ५१ कथितंसर्वमेतत्तेतवप्रश्नानुसारतः ॥ अस्मिन्मनःसमाधाययस्तिष्ठेत्सतुमुक्तिभाक् ५२ नवक्तव्यमिदंयत्नात्मद्भक्तिविमुखायहि ॥ मद्भक्तायप्रदातव्यमाहूयापिप्रयत्नतः ५३ यइदंतुपठेन्नित्यंश्रद्धाभक्तिसमन्वितः ॥ अज्ञानपटलध्वांतंविधूयपरिमुच्यते ५४ भक्तानांममयोगिनांसुविमलस्वांतातिशांतात्मनां मत्सेवाभिरतात्मनांचविमलज्ञानात्मनांसर्वदा॥ संगंयःकुरुतेसदोद्यतमतिःसत्सेवनानन्यधीर्मोक्षस्तस्यकरेस्थितोऽहमनिशंदृश्योभवेन्नान्यथा ५५ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादे आरण्यकाण्डे चतुर्थःसर्गः ४ ॥

हेलक्ष्मण इसप्रकार निरन्तर इन साधनों करके युक्त जो पुरुषहैं तिनको मेरे विषे अव्यभिचारिणी अर्थात् कभी नहीं छूटनेवाली प्रेमलक्षणा भक्ति होतीहै तब फिर ऐसी भक्तिसे अधिक क्या बाक़ीरहा अर्थात् ज्ञानादि सब पुरुषार्थ इसके अंतर्गत होजाते हैं ५० इससे मेरी भक्तियुक्त पुरुषको ज्ञान और विज्ञान और वैराग्य ये शीघ्रही प्रकटहोते हैं फिर वह मुक्तिको प्राप्तहोताहै ५१ हेलक्ष्मण तुम्हारी प्रश्नके अनुसार करके अर्थात् क्रमकरिके जो कुछ पूछा सो सब मैंने कहा इस मेरे कहेहुये ज्ञानमें जो कोई मनको स्थिर करके इसका अनुष्ठान करैगा अर्थात् इस मार्गमें चलैगा सो मुक्ति भागीहोगा ५२ और हे लक्ष्मण इस ज्ञानको मेरी भक्तिसे विमुख पुरुषके अर्थ कभी न देना और भक्तको तो बुलाइ करके भी देना इसका अभिप्राय यहहै कि विमुख दुर्जन पुरुषतो विना कुतर्क करेरहेगा नहीं तो उसमें भगवद्धर्मकी अवज्ञा होगी और भक्तको तो यह ज्ञान प्राणसे भी अधिक प्रियहोगा तो वहांउपदेशकी सफलता होगी ५३ और जो पुरुष श्रद्धाभक्ति युक्तहो इसको नित्यपढ़ेगा वह अज्ञानके समूहको नाशकरके मुक्तिको प्राप्तहोगा ५४ अब एकश्लोक करके सत्संगका माहात्म्य कहतेहैं हेलक्ष्मण मेरी भक्ति योग करके युक्त और निर्मल हृदय जिनका और इसीसे अत्यंत शांतहै चित्त जिनका और मेरी सेवामें प्रीतियुक्त है मन जिनका और बिमलज्ञानही आत्मास्वरूप जिनका अर्थात् ब्रह्मभूत हुये ऐसे मेरे भक्तोंका जो पुरुष नित्यही संग करताहै और सदा ज्ञानकीप्राप्ति

में उद्यम युक्तहै बुद्धि जिनकी और सत्संगमें एकाग्रहै बुद्धि जिनकी ऐसे पुरुषों के हाथमें मोक्ष स्थितहै और मैं सदा उसको दिखाई देताहौं इसमें कुछ अन्यथा नहीं अथवा मेरे मिलनेका यही उपायहै और कोईनहीं है ५५ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेआरण्यकाण्डे भाषाटीकायां चतुर्थःसर्गः ४ ॥

तस्मिन्कालेमहारण्ये राक्षसीकामरूपिणी ॥ विचचारमहासत्वा जनस्थाननिवासिनी १ एकदागौतमीतीरे पञ्चवट्याःसमीपतः ॥ पद्मवज्रांकुशांकानि पदानिजगतीपतेः २ दृष्ट्वाकामपरीतात्मा पादसौंदर्यमोहिता ॥ पश्यन्तीसाशनैरायाद्राघवस्यनिवेशनम् ३ तत्रसातंरमानाथं सीतयासहसंस्थितम् ॥ कन्दर्पसदृशंरामं दृष्ट्वाकामविमोहिता ४ राक्षसीराघवंप्राह कस्यत्वंकःकिमाश्रमे ॥ युक्तोजटावल्कलाद्यैः साध्यंकिंतेऽत्रमेवद ५ अहंशूर्पणखानाम राक्षसीकामरूपिणी ॥ भगिनीराक्षसेन्द्रस्य रावणस्यमहात्मनः ६ खरेणसहिता भ्रात्रा वसाम्यत्रैवकानने॥राज्ञादत्तंचमेसर्वंमुनिभक्षावसाम्यहम् ७॥

दो० । सर्ग पांच में राक्षसी लषण बिरूपा कीन्ह ॥
राम खरादिकखलहते सो सुधिरावणदीन्ह १ ॥

अब श्रीमहादेवजी पार्वती से कहते हैं हे पार्वति उस समयमें वा पंचबटी के घोरबनमें जनस्थान में रहनेवाली और बड़े पराक्रम करके युक्त और अपनी इच्छासे चाहे तैसा रूप धारण करनेवाली ऐसी एक राक्षसी बिचरतीहुई १ एक समयमें वह राक्षसी बिचरते बिचरते गोदावरी नदी के तीर पंचबटी के समीप कमल और वज्र और अंकुशआदि चिह्नों करके युक्त श्रीरामके चरणोंके चिह्न पृथिवी में देखके २ चरणों के सौन्दर्य करके मोहित कामपीड़ित होके उस मार्गमें चरणोंके चिह्न देखती रामचन्द्रके आश्रममें प्राप्त होतीहुई ३ उस आश्रममें साक्षात् लक्ष्मीके नाथ सीताकरके सहित बैठेहुये कामदेवके सदृश सुन्दर रामको देखके कामबेग करके मोहित होजातीहुई ४ फिर वह काम मोहित राक्षसी रामसे बोली तुम किसके पुत्रहो और जटा वल्कल वस्त्रधारण कर इस आश्रममें वासकरने का क्या प्रयोजनहै सो सब कहिये ५ और मुझ से पूछौ तो मैं शूर्पणखा नामकरके राक्षसीहौं और जैसी इच्छाहोवै तैसा रूप धारण करनेवाली राक्षसों के स्वामी रावणकी भगिनीहौं ६ और खर जो अपना भाई है तिस करके सहित इसी बनमें बास करती हौं और यह सब वन

का राज्य रावणने मुझको दियाहै सो मुनियोंको भक्षण करतीहुई मैं यहां वास करतीहौं ७ ॥

त्वांतुवेदितुमिच्छामि वदमेवदतांवर ॥ तामाहरामनामाहमयोध्याधिपतेःसुतः ८ एषामेसुन्दरीभार्या सीताजनकनन्दिनी ॥ सतुभ्राताकनीयान्मेलक्ष्मणोऽतीवसुंदरः ९ किंकृत्यंतेमयाब्रूहिकार्यंभुवनसुन्दरि॥ इतिरामवचःश्रुत्वाकामार्त्तासाऽब्रवीदिदम् १०एहिराममयासार्द्धंरमस्वगिरिकानने॥ कामार्त्ताऽहंनशक्नोमित्यक्तुंत्वांकमलेक्षणम् ११रामःसीतांकटाक्षेणपश्यन्सस्मितमब्रवीत् ॥भार्यामेसैषाकल्याणीविद्यतेह्यनपायनी १२ त्वंतुसापत्न्यदुःखेनकथंस्थास्यसिसुंदरि॥ बहिरास्तेममभ्रातालक्ष्मणोऽतीवसुंदरः १३ तवानुरूपोभवितापतिस्तेनैवसंचर ॥ इत्युक्तालक्ष्मणंप्राहपतिर्मेभवसुंदर १४ ॥

औ हे बोलनेवालोंमें श्रेष्ठ तुमको मैं जानाचाहती हौं तिससे अपनाकुल गोत्र कहिये तौ राम बोलतेहुये कि हे सुन्दरि राम मेरा नामहै और अयोध्या नगरीके राजाका पुत्रहौं ८ और यह सुन्दरी जनककी पुत्री सीता मेरी भार्या है और यह अति सुन्दर लक्ष्मण मेरा छोटाभाई है ९ और हे सब लोकों में सुन्दरि तेरा हमसे क्या कार्यहै सो कहनाचाहिये ऐसे रामके बचन सुनिकै काम पीड़ित शूर्पणखा यह कहतीहुई १० कि हे राम आवो मेरे साथपर्वत और बनमें बिहार करो और मैं तुमको देखतेही अत्यन्त कामकरके पीड़ित होरहीहौं इससे कमल नेत्र जो तुमहौ तिसके छोड़ने को समर्थ नहींहौं ११ तब श्रीरामचन्द्र नेत्रोंकी कोरसे सीताको देखतेहुये मन्द मुसक्यानकर बोलते हुये कि यह कल्याण गुणकरके युक्त और इसी से क्षणमात्रभी त्यागकरने को अयोग्य मेरी भार्या तौ विद्यमानही है १२ और हेसुन्दरि तू तौ सौतिके दुःख करके मेरे पास कैसे रहिसकैगी इससे इसमकानके बाहर लक्ष्मण जिसका नाम ऐसा अतिसुन्दर मेराभाई है १३ सोतेरे योग्य पतिहोगा इससे तिसीके संगविचरु ऐसेजब रामने कहा तौ वह शूर्पणखा लक्ष्मणके पासजाके बोली कि हेसुन्दर तुम मेरे पतिहोवो १४ ॥

भ्रातुराज्ञांपुरस्कृत्यसंगच्छावोऽद्यमाचिरम् ॥ इत्याहराक्षसीघोरालक्ष्मणंकाममोहिता १५ तामाहलक्ष्मणःसाध्विदासोऽहंतस्यधीमतः॥ दासीभविष्यसित्वंतुततोदुःखतरंनुकिम् १६ तमेवगच्छभद्रंतेसतुराजाऽखिलेश्वरः॥ तच्छ्रुत्वापुनरप्यागाद्राघवंदुष्टमानसा १७

क्रोधाद्रामकिमर्थंमांभ्रामवस्यनयस्थितः॥इदानीमेवतांसीतांभक्षयामितवाग्रतः १८इत्युक्त्वाविकटाकाराजानकीमनुधावती॥ततोरामाज्ञयाखड्गमादायपरिगृह्यताम् १९ चिच्छेदनासांकर्णौचलक्ष्मणोऽलघुविक्रमः॥ ततोघोरध्वनिंकृत्वारुधिराक्तवपुर्द्रुतम् २० क्रन्दमानापपाताग्रेखरस्यपरुषाक्षरा॥ किमेतदितितामाहखरःखरतराक्षरः २१॥

और भाईकी आज्ञालेके शीघ्रही मेरेसंग चलो देर न करौ इसप्रकार काम मोहित वह घोर राक्षसी लक्ष्मणसे कहतीहुई १५ तब लक्ष्मणजी उससे बोले कि हे शोभन स्वभाव वाली मैं तौ बड़ी श्रेष्ठ बुद्धियुक्तरामका दासहौं जो तू मेरी भार्या हुई तौ दासी कहावैगी फिर इससे अधिक क्यादुःखहोगा १६ इससे तू उन्हीं के पासजा और वे सबके स्वामी हैं और राजाहैं और तेरा कल्याण होगा तब फिर दुष्टमन है जिसका ऐसी वह राक्षसी रामके पासआतीहुई १७ और क्रोधसे यह बचन बोली कि हे राम तुम्हारी बातका कुछ ठीक नहीं और किस वास्ते मुझको बारम्बार भ्रमातेहौ और सीताकी प्रीतिसे ऐसा करतेहौ तौ सीताहीको मैं तुम्हारे आगे भक्षण करे लेतीहौं १८ ऐसा बचन कहिकै शूर्पणखा भयंकर रूपधारणकर सीताके सन्मुख दौड़ती हुई तब रामकी आज्ञासे लक्ष्मण खड्ग निकासिकै और उसको पकड़िकै १९ उसकी नाक और दोनोंकान शीघ्रही खड्गसे काटलेहुये फिर वह राक्षसी बड़ाभयंकर शब्दको करके और रुधिरसे डूबेहुये शरीरको धारणकरे २० और रोवती हुई खरनाम अपने भाई के आगे गिरपड़तीहुई और कठोर वचनकरके खरको धिक्कारतीहुई तब खर क्रोधकरके लालनेत्रकर बोला कि यहहै क्या २१॥

केनैवंकारिताऽसित्वंमृत्योर्वक्त्रानुवर्तिना॥ वदमेतंवधिष्यामिकालकल्पमपिक्षणात् २२ तमाहराक्षसीरामःसीतालक्ष्मणसंयुतः॥ दंडकंनिर्भयंकुर्वन्नास्तेगोदावरीतटे २३ मामेवंकृतवांस्तस्यभ्रातातेनैवचोदितः॥ यदित्वंकुलजातोऽसिवीरोऽसिजहितौरिपू २४ तयोस्तुरुधिरंपास्येभक्षयैतौसुदुर्मदौ॥ नोचेत्प्राणान्परित्यज्ययास्यामियमसादनम् २५ तच्छ्रुत्वात्वरितंप्रागात्खरःक्रोधेनमूर्च्छितः॥ चतुर्दशसहस्राणिरक्षसांभीमकर्मणाम् २६ चोदयामासरामस्यसमीपंवधकांक्षया॥ खरश्चत्रिशिराश्चैवदूषणश्चैवराक्षसः २७ सर्वेरामंययुःशीघ्रंनानाप्रहरणोद्यताः॥श्रुत्वाकोलाहलंतेषांरामःसौमित्रिमब्रवीत् २८।

और कौन मृत्युके मुख में आनेवालाहै जिसने तेरी यह दशाकी अर्थात्

नाककानसे हीनकिया और बता उसको जो कालके तुल्यभीहोय तौ क्षणमात्रमें मारताहौं २२ तब शूर्पणखा खरसे बोलतीहुई कि सीता लक्ष्मण युक्त राम दण्डकारण्य के निर्भय करने को गोदावरी नदी के तीर वास करते हैं २३ तिसकी आज्ञासे उस रामका भाई लक्ष्मण मेरी यह दशा करता हुआ इससे जो कुल में उत्पन्नहोय और वीरहोवै तौ दोनों मेरे बैरियों को मारु २४ और हे भ्रातःतिन दोनों शत्रुओंका रुधिर मैं पीवौंगी और तुम इनको भक्षण करौ और जो ऐसा न करौगे तौ मैं प्राण त्याग कर यमलोकको जावोंगी २५ यह शूर्पणखाके बचन सुनिकै क्रोधसे भराहुआ जो खरहै सो शीघ्रही युद्धकरने को जाताहुआ और बड़ा भयंकर युद्धरूप कर्म जिनका ऐसे चौदह हज़ार राक्षसोंको रामके बधके लिये रामके समीप भेजताहुआ २६ और खर और त्रिशिरा और दूषण ये तीनों नाना प्रकारके शस्त्रोंको लेके रामके सन्मुख जातेहुये २७ अब इनराक्षसोंकी सेना का बड़ाभारी शब्द सुनिकै रामचन्द्र लक्ष्मण से बोलतेहुये २८ ॥

श्रूयतेविपुलःशब्दोनूनमायान्तिराक्षसाः ॥ भविष्यतिमहद्युद्धं नूनमद्यमयासह २९ सीतांनीत्वागुहांगत्वातत्रातिष्ठमहाबल ॥ हन्तुमिच्छाम्यहंसर्वान्राक्षसान्घोररूपिणः ३० अत्रकिंचिन्नवक्तव्यंशापितोऽसिममोपरि ॥ तथेतिसीतामादायलक्ष्मणोगह्वरंययौ ३१ रामः परिकरंबध्वाधनुरादायनिष्ठुरम् ॥ तूणीरावक्षयशरौबध्वायत्तोऽभवत्प्रभुः ३२ ततआगत्यरक्षांसिरामस्योपरिचिक्षिपुः ॥ आयुधानिविचित्राणिपाषाणान्पादपानपि ३३ तानिचिच्छेदरामोऽपि लीलयातिलशःक्षणात् ॥ ततोबाणसहस्रेणहत्वातान्सर्वराक्षसान् ३४ खरंत्रिशिरसंचैवदूषणंचैवराक्षसम् ॥ जघानप्रहरार्द्धेनसर्वानेवरघूत्तमः ३५ ॥

कि हे लक्ष्मण बड़ा शब्द यह सुनाई देता है सो निश्चयकरके ये राक्षस आरहेहैं और इस समयमें निश्चय करके बड़ाभारी युद्धमेरे संग होगा २९ इससे हे महाबल लक्ष्मण तुम इस समयमें सीताको लेके पर्वतकी गुहा में जाके स्थितहोजाओ और संपूर्ण घोररूपी राक्षसोंको मैं अकेलेही मारनेकी इच्छा करताहौं ३० और इसमें कुछ जवाब न देना मैं अपनी शपथ दिवाता हौं तब लक्ष्मण तैसेही सीताको लेके पर्वतकी गुहापै जातेहुये ३१ श्रीराम तौ फेंट बांधके और बड़ा कठोर धनुषको लेके और कभी बाणोंसे खाली न होय ऐसे तरकस बांधके बड़े यत्नयुक्त सावधान स्थितहोते हुये ३२ तिसके अनंतर राक्षस सब आके रामके ऊपर अनेक शस्त्रछोड़तेहुये और पाषाण और वृक्ष

इनकी वृष्टि करतेहुये ३३ और राम तौ क्षण मात्रमें सब शस्त्रतिल तिलकाट के पृथ्वी में डालतेहुये फिर हज़ारों बाणोंकरके सब राक्षसोंको मारके ३४ खर और त्रिशिरा और दूषण इन तीनोंको मारतेहुये इस प्रकार आधेही पहरमें राम सब राक्षसोंका बध करतेहुये ३५ ॥

लक्ष्मणोऽपिगुहामध्यात्सीतामादायराघवे ॥ समर्प्यराक्षसान्दृष्ट्वा हतान्विस्मयमाययौ ३६ सीतारामंसमालिंग्यप्रसन्नमुखपंकजा । शस्त्रव्रणानिचांगेषुममार्जजनकात्मजा ३७ सापिदुद्रावदृष्ट्वातान्हतान् राक्षसपुंगवान् ॥ लंकांगत्वासभामध्येक्रोशन्तीपादसन्निधौ ३८ रावणस्यपपातोर्व्यांभगिनीतस्यरक्षसः ॥ दृष्ट्वातांरावणःप्राहभगिनींभयविह्वलाम् ३९ उत्तिष्ठोत्तिष्ठवत्सेत्वंविरूपकरणंतव ॥ कृतंशक्रेण वाभद्रेयमेनवरुणेनवा ४० कुबेरेणाथवाब्रूहिभस्मीकुर्यांक्षणेनतम् ॥ राक्षसीतमुवाचेदंत्वंप्रमत्तोविमूढधीः ४१ पानासक्तःस्त्रीविजितःषंढः सर्वत्रलक्ष्यसे ॥ चारचक्षुर्विहीनस्त्वंकथंराजाभविष्यसि ४२ ॥

फिर लक्ष्मण भी पर्वतकी गुहासे सीता को ग्रहणकर रामचन्द्रजीको सौंपिकै सब राक्षसों को मरा देखिके बिस्मय को प्राप्तहोतेहुये ३६ और प्रसन्नहै मुखरूप कमल जिनका ऐसी जो सीता सो रामचन्द्रको आलिंगन करके अंग में जो शस्त्रों के घाउ होगये थे तिन सबोंको अपने सत्यसंकल्पही से पूर्णकरदेतीहुई ३७ और वह शूर्पणखाभी मरेहुये खर आदि राक्षसों को देखकर लंका को जातीहुई फिर वहां जाकर सभाके मध्यमें घोर शब्द करती रावणके चरणों के समीप पड़तीहुई ३८ तब रावण अपनी भगिनीको भय बिह्वल रोवते हुये देखकर बोलताहुआ कि हेवत्से तू उठ और तेरा यह बिरूप इन्द्रने किया अथवा यमराजने किया अथवा बरुणनेकिया३९।४० अथवा कुबेरनेकियाअर्थात् तेरे नाककान इनमेंसे किसने काटे तिसको बतलाओ मैंक्षणमात्रमें उसको भस्म करदेऊं तब शूर्पणखा रावणसे कहतीहुई कि तू तौ मदिराका पान करे बेहोश मूढ़ बुद्धि ४१ स्त्रियोंके बशीभूत हिजड़ेकी तरह पड़ा रहताहै और न हलकारे लोगों के द्वारा राज्यकी ख़बरलेता क्योंकि राजोंके हलकारेही नेत्र होतेहैं तिन नेत्रोंसेहीन तू कैसे राजाहोसक्ताहै ४२ ॥

खरश्चनिहतःसंख्येदूषणस्त्रिशिरास्तथा ॥ चतुर्दशसहस्राणिराक्षसानांमहात्मनाम् ४३ निहतानिक्षणेनैवरामेणासुरशत्रुणा ॥ जनस्थानमशेषेणमुनीनांनिर्भयंकृतम् ॥ नजानासिविमूढस्त्वमतएवमयो

ष्यते ४४ रावणउवाच ॥ कोवारामःकिमर्थंवाकथंतेनासुराहताः ॥ सम्यक्कथयमेतेषांमूलघातंकरोम्यहम् ४५ शूर्पणखोवाच ॥ जनस्थानादहंयाताकदाचिद्गौतमीतटे ॥ तत्रपंचबटीनामपुरामुनिजनाश्रया ४६ तत्राश्रमेमयादृष्टोरामोराजीवलोचनः ॥ धनुर्बाणधरःश्रीमान् जटावल्कलमंडितः ४७ कनीयाननुजस्तस्यलक्ष्मणोऽपितथाविधः॥ तस्यभार्याविशालाक्षीरूपिणीश्रीरिवापरा ४८ देवगंधर्वनागानांमनुष्याणांतथाविधा ॥ नदृष्टानश्रुताराजन्द्योतयन्तीवनंशुभा ४९ ॥

संग्राममें खर और त्रिशिरा और दूषणये सबमारेगये और बड़े बलीचौदह हज़ार राक्षस मारेगये ४३ असुरोंका शत्रु जो रामहै तिसने क्षणमात्र में ये सबमारडाले और मुनियों का जनस्थान सब निर्भय करदिया और तू मूढ़ अभीतक नहीं जानताहै इससे मैंनेही यह सब हालकहा ४४ तब रावण शूर्पणखासे पूछताहुआ कि वह राम कौनहै और किसप्रयोजन से किसप्रकार करके खर आदि राक्षस तिस रामनेमारे सो सब कहु सो उन राम आदि शत्रुओं को मैं जड़ मूलसे नाशकरौं ४५ तब शूर्पणखा कहनेलगी हेराजन् एक समयमें मैं जनस्थानसे अर्थात् जहां खर आदि राक्षसों की फौजपड़ीथी उस स्थानसे गोदावरी नदीके तीर जातीहुई वहांएक पंचबटीनाम करके आश्रमहै जहां बहुतसे मुनि प्रथम रहतेथे ४६ फिर उस आश्रममें कमल तुल्यहैं बिशाल नेत्र जिनके औ धनुषबाण को धारण करे औ जटा और वल्कल बस्त्रको धारणकरे और बड़ी शोभायुक्त ऐसे रामको मैंने देखा ४७ और छोटा भाई उस रामकाहै तिसका लक्ष्मण नामहै वहभी वैसाही पराक्रमी और सुन्दरहै और रामकी भार्या बड़े बिशाल जिसके नेत्र हैं और दूसरी लक्ष्मीही मानों होय ऐसी रूपवती है ४८ और देवता और गंधर्व और नाग और मनुष्य इनकी भी ऐसी स्त्री न देखी न सुनी औ हे राजन् वह रामकी स्त्री अपनी कान्तिकरके बनको प्रकाश कररही शोभायमानहै ४९ ॥

आनेतुमहमुद्युक्तातांभार्यार्थंतवानघ ॥ लक्ष्मणोनामतद्भ्राताचिच्छेदममनासिकाम् ५० कर्णौचनोदितस्तेन रामेणसमहाबलः ॥ ततोऽहमतिदुःखेनरुदन्तीखरमन्वगाम् ५१ सोऽपिरामंसमासाद्ययुद्धंराक्षसयूथपैः ॥ ततःक्षणेनरामेणतेनैवबलशालिना ५२ सर्वेतेनविनष्टावैराक्षसाभीमविक्रमाः ॥ यदिरामोमनःकुर्यात्त्रैलोक्यंनिमिषार्द्धतः ५३ भस्मीकुर्यान्नसन्देहइतिभातिममप्रभो ॥ यदिसातवभार्या

स्यात्सफलंतवजीवितम् ५४ अतोयतस्वराजेन्द्रयथातेवल्लभाभवेत्॥सीताराजीवपत्राक्षीसर्वलोकैकसुन्दरी ५५ साक्षाद्रामस्यपुरतःस्थातुंत्वंनक्षमःप्रभो॥माययामोहयित्वातुप्राप्स्यसेतांरघूत्तमम् ५६॥

सो तुम्हारी भार्या करनेको उसके लानेका मैं यत्नकररही हौं और हे राजन् उस रामका बडाबली लक्ष्मण नाम जो भाई है सो उसकी आज्ञासे मेरी नाक कानोंको काटताहुआ ५० फिर मैं अति दुःखसे रोवतीहुई खरके समीप गई ५१ वह खर भी अपने राक्षसोंकी सेना सहित युद्धकरनेको रामको प्राप्त होके युद्ध करताहुआ ५२ फिर बड़े बलकरके युक्त जो अकेलाही राम तिसने क्षणमात्रमेंही सब खर आदि बड़े युद्धके करनेवाले राक्षस मार डाले ५३ सो मुझको ऐसा मालूम पड़ताहै कि जो राम मनकरैं तो आधेही क्षणमें तीनों लोकोंको भस्म करदेवैं इसमें कुछ संदेह नहीं है और हे राजन् उस रामकी स्त्री जो कदाचित् तुम्हारी भार्याहोय तौ तुम्हारा जीवन सफल होजावै ५४ इससे हे राजेन्द्र ऐसा यत्नकरिये जिससे सब लोकोंमें एकही सुन्दरी और कमलसरीखे जिसके नेत्र ऐसी सीता तुम्हारी प्यारी स्त्री होजाय ५५ और हे प्रभो साक्षात् तौ अर्थात् सामने तो रामके आगे खड़े होनेको भी तुम समर्थ नहीं हौ इससे माया करके रामको मोहित करके सीताको प्राप्तहोवोगे ५६ ॥

श्रुत्वातत्सूक्तवाक्यैश्चदानमानादिभिस्तथा॥आश्वास्यभगिनींराजाप्रविवेशस्वकंगृहम्॥तत्राचिंतापरोभूत्वानिद्रांरात्रौनलब्धवान् ५७ एकेनरामेणकथंमनुष्यमात्रेणनष्टःसबलःखरोमे॥भ्राताकथंमेबलवीर्यदर्पयुतोविनष्टोवतराघवेण ५८ यद्वानरामोमनुजःपरेशोमांहन्तुकामःसबलंबलौघैः॥ संप्रार्थितोऽयंद्रुहिणेनपूर्वमनुष्यरूपोऽद्यरघोःकुलेऽभूत् ५९ बध्योयदिस्यांपरमात्मनाऽहंवैकुण्ठराज्यंपरिपालयेऽहम्॥नोचेदिदंराक्षसराज्यमेवभोक्ष्येचिरंराममतोव्रजामि ६० इत्थंविचिन्त्याखिलराक्षसेंद्रो रामंविदित्वापरमेश्वरंहरिम् ॥ विरोधबुद्ध्यैवहरिंप्रयामिद्रुतंनभक्त्याभगवान्प्रसीदेत् ६१ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेआरण्यकांडे पञ्चमःसर्गः ५ ॥

अब रावण शूर्पणखाके ये वचन सुनिकै मधुर बचनों करके और दानकरके और बड़े सत्कारों करके उस शूर्पणखाके चित्तको सावधानकर अपने गृहमें प्रवेश करताहुआ उस गृहमें भी मारे चिन्ताके रात्रिमें निद्राको नहीं प्राप्त

हुआ अर्थात् नींदनहीं आई ५७ और यह बिचार करनेलगा कि अकेलेरामने सेना सहित मेरे भाई बड़ेबल गर्वयुक्त खरको कैसेमारा ५८ अथवा राममनुष्य नहीं हैं जो कि सबका ईश परमात्माहै सोई राक्षसों करके सहित मेरे मारने को ब्रह्माकरके प्रार्थना किया रघुकुलमें मनुष्यरूप हुआ है ५९ सो कदाचित् परमात्मा जो रामहैतिसके हाथसे जो मैं माराजाऊंगा तौ बैकुण्ठ राज्य को पालन करूंगा और जो न मारागया तौ राक्षसों के राज्यकोतो बहुत काल भोगूंगाही इससे रामके पासही जाऊंगा ६० इस प्रकार राक्षसोंका स्वामी रावण अपने मनमें बिचार करि रामको परमेश्वर हरि जानिके बिरोध बुद्धि ही करके मैं शीघ्र परमेश्वर को प्राप्त होसकाहों क्योंकि भक्ति करके शीघ्र परमेश्वर प्रसन्न नहीं होता इससे मैं बिरोध बुद्धिही से रामके पास जाऊंगा यह निश्चय करताहुआ ६१ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेआरण्यकाण्डेभाषाटीकायांपंचमःसर्गः ५ ॥

विचिन्त्यैवंनिशायांसः प्रभातेरथमास्थितः ॥ रावणोमनसाकार्यमेकंनिश्चित्यबुद्धिमान् १ ययौमारीचसदनंपरम्पारमुदन्वतः ॥ मारीचस्तत्रमुनिवज्जटावल्कलधारकः २ध्यायन्हृदिपरात्मानंनिर्गुणंगुणभासकम्॥समाधिविरमेपश्यद्रावणंगृहमागतम्३द्रुतमुत्थायचालिंग्यपूजयित्वायथाविधि॥कृतातिथ्यंसुखासीनंमारीचोवाक्यमब्रवीत्४ समागमनमेतत्तेरथेनैकेनरावण ॥ चिन्तापरइवाभासिहृदिकार्यंविचिन्तयन् ५ ब्रूहिमेनाहिगोप्यंचेत्करवाणितवाप्रियम् ॥ न्याय्यंचेत्ब्रूहि राजेन्द्रवृजिनंमांस्पृशेन्नहि ६ रावणउवाच ॥ अस्तिराजादशरथःसाकेताधिपतिःकिल ॥ रामनामासुतस्तस्यज्येष्ठःसत्यपराक्रमः ७ ॥

दो० छठें सर्गमारीच के आश्रम रावण जाइ ।
समुझायो मृगरूपधरिचलो रामशिरनाइ ॥

अब श्रीमहादेवजी पार्वतीसे कथा कहते हैं हेपार्वति अबरावण इसप्रकार रात्रिमें चिन्तनकर सीता हरणका निश्चयकर प्रातःकालरथकेऊपर चढ़िकै १ समुद्रके पार जो मारीचका स्थानहै तिसको जाताहुआ तहांजटा वल्कल धारणकरे मुनिकासा बेष धारण करके २ हृदयमें सब गुणोंका प्रकाश करनेवाला निर्गुण जो परमात्मा तिसका ध्यान करताहुआ जो मारीच सो समाधि की निवृत्तिमें अपने गृह आयाहुआ जो रावण तिसको देखताहुआ ३ फिर मारीच शीघ्रही उठकर रावणको भेंटकर विधिपूर्वक पूजनकरके सत्कार कियागया

सुखपूर्वक बैठेहुये रावणसे यह वचन बोलताहुआ ४ कि हे रावण इससमय में एक रथ करके तुम्हारे आगमनका क्याकारणहै और मुझको तो चिन्तामें परायण तुम अपने हृदयमें कुछ चिन्तन करते मालूम पड़ते हो ५ और जो मेरे करनेके लायक़ होय और गुप्त करने योग्य नहीं है सो कहिये मैं तुम्हारा प्रियकरौंगा औ हेराजेन्द्र जो कार्य्य धर्म युक्तहोगा तो करौंगा जिससे मुझको पाप न स्पर्शकरे ६ तब रावण बोला कि हेमारीच अयोध्यानगरी का पति एक राजा दशरथ होताहुआ उसका ज्येष्ठपुत्र सत्य और पराक्रम करके युक्त रामनाम करके है ७॥

विवासयामाससुतंवनंवनजनप्रियम्॥भार्य्ययासहितंभ्रात्रालक्ष्मणेनसमन्वितम् ८ सआस्तेविपिनेघोरेपञ्चवट्याश्रमेशुभे॥तस्यभार्य्याविशालाक्षीसीतालोकविमोहनी ९ रामोनिरपराधान्मेराक्षसान्भीमविक्रमान्॥ खरंचहत्वाविपिनेसुखमास्तेऽतिनिर्भयः १० भगिन्यामेशूर्पणख्यानिर्दोषायाश्चनासिकाम्॥ कर्णौचिच्छेददुष्टात्मावनेतिष्ठतिनिर्भयः ११अतस्त्वयासहायेनगत्वातत्प्राणवल्लभाम्॥आनयिष्यामिविपिनेरहितेराघवेणताम् १२त्वंतुमायामृगोभूत्वाह्याश्रमादपनेष्यसि॥ रामंलक्ष्मणंचैवतदासीतांहराम्यहम् १३त्वंतुतावत्सहायंमेकृत्वास्थास्यासिपूर्ववत्। इत्येवंभाषमाणंतंरावणंवीक्ष्यविस्मितः १४

उस रामको स्त्री करके सहित और लक्ष्मण भाई करके सहित राजादशरथ वनको निकालदेता हुआ ८ सो राम घोर वनमें पंचबटी के शुभलक्षण युक्त आश्रममें बासकररहाहै उस रामकी स्त्री लोकोंके मोहनेवाली और बड़े बिशाल नेत्र जिसके ऐसी सीता नाम करके है ९ तिसमें राम जो है सो अपराध रहित चौदह हज़ार बड़े पराक्रम युक्त राक्षसोंको और खरको मारिकै बनमें अतिनिर्भय सुख पूर्वक वास करताहै १० और अपराध रहित जो मेरी भगिनी शूर्पणखा तिसके भी नाक कान काटके भी सुखपूर्वक निर्भय स्थित होरहाहै अर्थात् मेराभी कुछ भयनहीं मानताहै ११ इससे हे मारीच तुम्हारे सहाय करके उस रामके आश्रममें जाकर जिससमय राम न होय ऐसे समय में उसकी प्राणप्रिया जो सीताभार्या है तिसको हरलावौंगा १२ औ हे मारीच तुम मायारूपी मृग होके जब आश्रमसे बाहर राम लक्ष्मणको निकालले जावोगे तौ मैं सीताको हरौंगा १३ और तुमतो मेरी सहाय करके पहिलेकी तरह फिर अपने आश्रममें स्थित हूजियो ऐसे वचन कहताहुआ जो रावण तिसको देखिकै मारीच आश्चर्य युक्त हुआ १४॥

केनेदमुपदिष्टंतेमूलघातकरंवचः ॥ सएवशत्रुर्बध्यश्चयस्त्वन्नाशं प्रतीक्षते १५ रामस्यपौरुषंस्मृत्वाचित्तमद्यापिरावण ॥ बालोपि मांकौशिकस्ययज्ञसंरक्षणायसः १६ आगतस्त्विषुणैकेनपातयामास सागरे ॥ योजनानांशतंरामस्तदादिभयविक्लवः १७ स्मृत्वास्मृत्वा तदैवाहंरामंपश्यामिसर्वतः १८ दंडकेऽपिपुनरप्यहंवनेपूर्ववैरमनुचि न्तयन्हृदे ॥ तीक्ष्णशृङ्गमृगरूपमेकदामादृशैर्बहुभिरावृतोऽभ्यया म् १९ राघवंजनकजासमन्वितं लक्ष्मणेनसहितंत्वरान्वितः ॥ आ गतोऽहमथहंतुमुद्यतोमांविलोक्यशरमेकमक्षिपत् २० तेनविद्धहृद योऽहमुद्भ्रमन्राक्षसेन्द्रपतितोऽस्मिसागरे ॥ तत्प्रभृत्यहमिदंश्रमा श्रितःस्थानमूर्जितमिदंभयार्दितः २१ ॥

और यहबोला कि हेरावण किसने तुम्हारे जड़मूलसे नाशकरने को ऐसी सलाह दीहै और वही तुम्हारा परमशत्रु है और मारने के योग्य है जो ऐसी खोटी सलाहसे नाशविचारैहै १५ औ हे रावण रामके पराक्रमको स्मरणकरके अभीतक मेराचित्त व्याकुल होरहाहै जोराम बाल्यअवस्थामेंभी विश्वामित्रके यज्ञकीरक्षाकोलिये आकर १६ एकहीबाणकरकेमुझको सौयोजनपैसमुद्रकेभी- तर फेंकदेता हुआ १७ हेरावण तबसेलेके भयकरके विह्वलजो मैं हौंसो रामके कर्मको स्मरणकरके सबजगहपर रामहीकोदेखताहूं १८ और फिरभी मैंपहिले वैर को यादकरके रामके मारनेको बड़ेपैनेहैं सींगजिसके ऐसो मृगरूप धारण कर और बहुतसे ऐसेही मृगरूपके राक्षसोंकोसंगलेके दण्डकवन में रामके संमुख जाताहुआ १९ तौ सीता लक्ष्मण सहित जोरामहैं तिनको मारनेको उद्यत अर्थात् यत्न करताहुआ बेगकरके मैंआया तौ राममुझकोदेखकेएक बा- ण छोड़तेहुये २० उसबाण करके ताडित हुआहै हृदयजिसका ऐसा जो मैं हौं सो हे रावण घूमताहुआ समुद्रमें आके गिरपड़ा तबसेलेके भयकरके पीडितमैं इस आश्रममें मुनिवेषकरिकै वासकरताहूं २१ ॥

राममेवसततंविभावयेभीतभीतइवभोगराशितः॥राजरत्नरमणीर थादिकंश्रोत्रयोर्यदिगतंभयंभवेत् २२ रामआगतइहेतिशंकयाबाह्य कार्यमपिसर्वमत्यजम् ॥ निद्रयापरिवृतोयदास्वपेराममेवमनसाऽनु चिंतयन् २३ स्वप्नदृष्टिगतराघवं तदाबोधितोविगतनिद्रआस्थि तः ॥ तद्भवानापिविमुच्यचाग्रहंराघवंप्रतिगृहंप्रयाहिभो २४ रक्षराक्ष सकुलंचिरागतंतत्स्मृतौसकलमेवनश्यति ॥ तवहितंवदतोममभाषि

तंपरिगृहाणपरात्मनिराघवे २५ त्यजविरोधमतिंभजभक्तितःपरम कारुणिकोरघुनन्दनः॥ अहमशेषमिदंमुनिवाक्यतोऽश्रणवमादियुगे परमेश्वरः२६ ब्रह्मणार्थितउवाचतंहरिःकिंतवेप्सितमहंकरवाणितत् ब्रह्मणोक्तमरविन्दलोचनत्वंप्रयाहिभुविमानुषंवपुः २७ दशरथात्मज भावमंजसाजहिरिपुंदशकंधरंहरे ॥ अतोनमानुषोरामःसाक्षान्नाराय णोऽव्ययः॥ मायामानुषवेषेणवनंयातोऽतिनिर्भयः २८॥

और जिनमें रकारहोवै ऐसे भोगके भी पदार्थ हैं तिन में भयभीत हुआ मैं रामहीका ध्यान करताहूं जैसेराज और रत्न रमणी और रथ इनको आदि लेके जो रकारादि नामके सुखदेने वालेभी पदार्थहैं परन्तु मेरेकानोंमें येशब्द सुनाई देतेहैं तौ भयही मेरेको होती है २२ और कहीं रामतोनहीं आतेहैं यह शंकाकरके बाहर के सबकर्मत्याग करके जबमैंसोवताहूंतौभी रामहीकास्मरण करते करते स्वप्नमें भी रामहीको देखताहूं २३ फिर जब जागताहौं तौभी मा-रेभयके स्वप्नकेदेखेहुये रामकीयाद नहीं भूलती इससेहेरावण जोअपना भला चाहोतौ आपभी रामकेप्रतियहपापरूप आग्रहकोत्यागकरअपनेघरलौटि जाओ २४ और हेरावण बहुतकालसे बढ़ाहुआ जोराक्षसोंका कुलहै तिसकी रक्षा करिये क्योंकि बिरोध करकेरामके स्मरणसे सबकुलका नाशहोजायगा इसका आशय यहहैकि सबका आत्माजो रामहै तिससे बिरोध करनेसे मानों अपने आत्माहीसे विरोध किया तौरामविरोधीका नाश युक्त सिद्धहीहै इससे हेरावण तुम्हाराहित करता हुआ जो मैंहौं तिसका वचनग्रहणकरौ और परमात्माजो रामहै तिसमें विरोधमति को त्यागदेवो २५ और रघुनन्दन परम दयालु हैं इससे भक्ति करके इनका भजन करिये और यह इतिहास मैंने सत्ययुग में नारदजी के मुखसे सुनाहै २६ एकसमयमें ब्रह्माकरके प्रार्थना कियागया परमेश्वर जो नारायण सो ब्रह्मासे यह कहताहुआ कि हे ब्रह्मन् मैं क्यातुम्हारा प्रियकरौं तौ ब्रह्माने कहाकि हे अरबिन्द लोचन हेहरे आपपृथिवी में मनुष्य शरीरको धारणकरि दशरथ के पुत्रभावकोप्राप्तहो दशकन्धर अर्थात् रावण जो देवतोंका शत्रुहै तिसको मारिये २७ इससेहेरावण राम मनुष्य नहीं हैं सा-क्षात् अविनाशी नारायणही मायाकर मनुष्य बेषकरके पृथिवी के भारके दूर करनेकोवनमेंप्राप्तहुये अतिनिर्भयहैं २८॥

भूभारहरणार्थयगच्छतातगृहंसुखम्॥ श्रुत्वामारीचवचनंरावणः प्रत्यभाषत२९ परमात्मायदारामःप्रार्थितोब्रह्मणाकिल॥ मांहन्तुंमानु षोभूत्वायत्नादिहसमागतः ३० करिष्यत्यचिरादेवसत्यसंकल्पई

श्वरः ॥ अतोऽहंयत्नतःसीतामानेष्याम्येवराघवात् ३१ बधेप्राप्तेरणे वीरप्राप्स्यामिपरमम्पदम् ॥ यद्वारामंरणेहत्वासीतांप्राप्स्यामिनिर्भयः ३२ अतोत्तिष्ठमहाभागविचित्रमृगरूपधृक् ॥ रामंलक्ष्मणंशीघ्रमाश्रमादतिदूरतः ३३ आकृष्यगच्छत्वंशीघ्रंसुखंतिष्ठयथापुरा॥अतः परंचेद्यत्किंचिद्भाषसेमद्विभीषणम् ३४ हनिष्याम्यसिनाऽनेनत्वामत्रैवनसंशयः ॥ मारीचस्तद्वचःश्रुत्वास्वात्मन्येवानुचिंतयत् ३५ ॥

इससे हेतात तुम घरको सुख पूर्वक जावो तब ये मारीचके वचन सुनिकै रावण बोलता हुआ २९ हे मारीच जो राम परमात्माहीब्रह्माकरिकै प्रार्थित मुझ को मारने को मानुष होके यत्न से यहां प्राप्त हुआ है ३० तो सत्य संकल्पजो रामहै सो अवश्य मेरावध करैगाही इससे मैं यत्नसे रामके समीप से सीताको ल्यावोंगा ३१ और हे बीर संग्राम में रामसे वधको प्राप्तहोनेसे मैं परमपदको प्राप्तहोऊंगा अथवा रामको रणमें मारिकै मैं निर्भयहो सीताको प्राप्तहोऊंगा ३२ इससे हे महाभाग मारीच तुमशीघ्रही चित्रविचित्र मृगकारूप धारण करके लक्ष्मणसहित रामको आश्रमसे अतिदूरलेजावो ३३ फिरलौट के आके पहिलेकी तरह अपनेआश्रमें सुखपूर्वक स्थितहोवो और इसकेउपरान्त कुछ और भयका बचन कहोगे तौ इसखड्गसे अभीतुझको मारडालौंगा ३४ इसमें कुछ संदेह नहीं है तब मारीच यह रावणका बचनसुनिकै आपमनहीं में विचार करता हुआ ३५ ॥

यदिमांराघवोहन्यात्तदामुक्तोभवार्णवात्॥मांहन्याद्यदिचेद्दुष्टस्तदामेनिरयोध्रुवम् ३६ इतिनिश्चित्यमरणंरामादुत्थायवेगतः ॥ अब्रवीद्रावणंराजन्करोम्याज्ञांतवप्रभो ३७ इत्युक्त्वारथमास्थायगतोरामाश्रमंप्रति ॥ शुद्धजांबूनदप्रख्योमृगोभूद्रौप्यबिन्दुकः ३८ रत्नशृङ्गोमणिखुरोनीलरत्नविलोचनः ॥ विद्युत्प्रभोविमुग्धास्योविचचारवनांतरे ३९ रामाश्रमपदस्यान्तेसीतादृष्टिपथेचरन् ४० क्षणंचधावत्यवतिष्ठतेक्षणंसमीपमागत्यपुनर्भयावृतः ॥ एवंसमायामृगवेषरूपधृक्चचारसीतांपरिमोहयन्खलः ४१ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेआरण्यकाण्डे षष्ठः सर्गः ६ ॥

कि जो कदाचित् श्रीरामचन्द्र अपनेहाथसे मुझको मारैंगे तो मैं संसारसागरसे छूटिजाऊंगा और जो कदाचित् यहदुष्ट रावण मारेगा तौ निश्चयकरके मुझको नरकहोगा ३६ इससेरामही से मरण श्रेष्ठहै ऐसा निश्चयकर शीघ्रही उठकर रावणसे बोलताहुआ कि हे राजन् तुम्हारी आज्ञा मैंकरूंगा ३७ यहवचन कहिकै रथपै चढ़िकै रावण और मारीच दोनों रामके आश्रमको जातेहुये तहां मारीच शुद्ध सुवर्णकीसी कान्ति जिसकी ऐसा मृगहोताहुआ ३८ और जिस सुवर्ण शरीर में चांदी के बिन्दु ठौरठौर शोभायमान होरहे हैं और रत्नोंके सींग जिसके और मणियों के खुर और रत्नों के नेत्र जिसके और बिजुलीकीसी कान्ति जिसकी और बड़ासुन्दरहै मुख जिसका ऐसे मृगका रूपधारणकर वनके बीच विचरताहुआ ३९ ऐसेबनमें विचरते वहमृग रामके आश्रमके समीप सीताजी की दृष्टिके मार्ग में विचरनेलगा ४० अबमृग क्षणमात्र तौ दौड़ताहै और क्षणमात्र फिर खड़ारहताहै फिर क्षणमें सीताके समीपआके भयभीत होताहै इसप्रकार मायाकरके मृगवेषको बनायेहुये खल मारीच राक्षस सीताको मोहकराता विचरताहुआ ४१ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेआरण्यकाण्डे भाषाटीकायांषष्ठःसर्गः ६ ॥

अथरामोऽपितत्सर्वंज्ञात्वारावणचेष्टितम् ॥ उवाचसीतामेकांते शृणुजानकिमेवचः १ रावणोभिक्षुरूपेणआगमिष्यतितेऽतिकम् ॥ त्वंतुच्छायांत्वदाकारांस्थापयित्वोटजेविश २ अग्नावदृश्यरूपेणवर्षं तिष्ठममाज्ञया ॥ रावणस्यवधांतेमांपूर्ववत्प्राप्स्यसेशुभे ३ श्रुत्वारामोदितंवाक्यंसाऽपितत्रतथाऽकरोत् ॥ मायासीतांबहिःस्थाप्यस्वयमन्तर्दधेऽनले ४ मायासीतायदापश्यन्मृगंमायाविनिर्म्मितम्॥हसन्ती राममभ्येत्यप्रोवाचाविनयान्विता ५ पश्यराममृगंचित्रंकानकंरत्नभूषितम् ॥ विचित्रविन्दुभिर्युक्तंचरन्तमकुतोभयम् ६ बध्वादेहिममक्रीडामृगोभवतुसुंदरः॥ तथेतिधनुरादायगच्छल्लँक्ष्मणमब्रवीत्७॥

दो० । सप्तमसर्ग सियाहरी रावण धरियतिरूप ॥
गीधमारि सियलैचलो नीचमीचकोरूप ॥ १ ॥

अब श्रीमहादेवजी पार्वतीजी से कथाकहते हैं हेपार्वति इसके उपरान्त श्रीरामचन्द्र रावणका कर्मजानके एकान्तदेशमें सीतासे कहतेहुये कि हे जानकि मेरे वचनकोसुनु १ रावण संन्यासी के रूपको धारणकरके तेरे समीप आवेगा इससे तू अपनी छायाकारूप अपनाहीसा करके इसपर्णशालामें प्रवेशकरु २

और मेरीआज्ञासे तू एकवर्षतक अदृश्यरूप करके अर्थात् किसीको दिखाई नहीं पड़े जैसे तैसे अग्नि में स्थितहो फिर रावणके बधके बाद मुझको पहिले की तरह प्राप्तहोगी ३ ऐसे रामकेबचन सुनिकै सीता तैसेही करती हुई सबके देखने में मायारूप बाहर स्थापनकर आप अग्निमें छिपजातीहुई ४ फिर वह मायारूपही सीता मायाकरके बनाहुआ जो मृगहै तिसको देखती और हँसती रामके सम्मुखआके नम्रतापूर्वक बोलतीहुई ५ हेराम क्यावह सुवर्णका चित्र विचित्र रत्नोंकरकेभूषित और चित्र बिचित्र विंदुओंकरकेयुक्त और निर्भयहो आश्रममें बिचरता मृगहै तिसको देखिये ६ औ इसको बांधिकै मुझको दीजिये यह बड़ासुन्दर मृगहै मेरी क्रीड़ाके लिये होगा तौ रामचन्द्रजी तैसेही सीतासे कहकेधनुषलैकै चलते हुये अरु लक्ष्मण से बोले ७ ॥

रक्षत्वमतियत्नेनसीतांमत्प्राणवल्लभाम् ॥ मायिनःसंतिविपिनेराक्षसाघोरदर्शनाः ८ अतोत्रावहितःसाध्वींरक्षसीतामनिन्दिताम् ॥ लक्ष्मणोराममाहेदंदेवायंमृगरूपधृक् ॥ मारीचोऽत्रनसन्देहएवंभूतो मृगःकुतः ९ ॥ श्रीरामउवाच ॥ यदिमारीचएवायंतदाहन्मिनसंशयः ॥ मृगश्चेदानयिष्यामिसीताविश्रामहेतवे १० गमिष्यामिमृगंबध्वाह्यानयिष्यामिसत्वरः ॥ त्वंप्रयत्नेनसंतिष्ठसीतासंरक्षणोद्यतः ११ इत्युक्त्वाप्रययौरामोमायामृगमनुद्रुतः ॥ मायायदाश्रयाल्लोकमोहिनी जगदाकृतिः १२ निर्विकारश्चिदात्माऽपिपूर्णोऽपिमृगमन्वगात् ॥ भक्तानुकम्पीभगवानितिसत्यंबचोहरिः १३ कर्तुंसीताप्रियार्थायजानन्नपिमृगंययौ ॥ अन्यथापूर्णकामस्यरामस्यविदितात्मनः १४ ॥

कि हे लक्ष्मण अत्यन्त यत्न करिकै मेरी प्राणवल्लभा जोसीताहै तिसकी रक्षाकरो क्योंकि बड़ेमायावी घोरदर्शन राक्षस इस बनमेंहैं ८ इससे सावधान होके इस बनमें निन्दा रहित पतिव्रता जोसीता तिसकी रक्षा कीजिये तब लक्ष्मण रामसे कहतेहुये कि हेदेव यहमारीच राक्षसही मृगकारूपधारण करके आया है इसमें कुछ संदेह नहींहै क्योंकि ऐसामृग कहीं है ही नहीं ९ तब राम कहतेहुये कि हे लक्ष्मण जो कदाचित् यह मारीचही है तौ इसको मारूंगा इसमेंकुछसंदेह नहीं है और जो कदाचित् मृगहोगा तो सीताकी क्रीड़ा के अर्थ लाऊंगा १० औमैं अब जाताहूं मृगकोबांधिकै शीघ्रही ले आताहूं और हे लक्ष्मण तुमसीताके रक्षणमें उद्यतहोकर यत्नसे स्थितरहौ ११ ऐसाकहिकै रामजातेहुये और उसमायारूप मृगके पीछेपीछे दौड़तेहुये और जगत्है रूप

जिसका और जगत्के मोहकरानेवाली ऐसी जो माया सो जिस रामके आ-श्रयहै अर्थात् मायाका आश्रयभी रामहीहैं १२ ऐसा जो निर्विकार और चि-दात्मा और सबजगह परिपूर्ण राम सो मृगकेपीछे दौड़ताहुआ क्योंकि भग-वान् भक्तानुकम्पीहै अर्थात् भक्तोंके ऊपर दयाकरनेवालाहै इसबचनके सत्य करनेको १३ सीताकी प्रीतिके अर्थ जानकरके भी मायारूपी जो मृग ति-सके पीछे २ जातेहुये और जो कदाचित् यह प्रयोजन होय तौ परिपूर्ण काम और सर्वज्ञ और परमात्मा ऐसा जो राम तिसको मृग करके क्या प्रयोजन था १४॥

मृगेणवास्त्रियावापिकिंकार्यंपरमात्मनः॥ कदाचिद्दृश्यतेभ्यासेक्ष णंधावतिलीयते १५ दृश्यतेचततोदूरादेवंराममपाहरत्॥ ततोरा मोऽपिविज्ञायराक्षसोऽयमितिस्फुटम् १६ विव्याधशरमादायराक्षसं मृगरूपिणम्॥ पपातरुधिराक्तास्योमारीचःपूर्वरूपधृक् १७ हाह तोऽस्मिमहाबाहोत्राहिलक्ष्मणमांद्रुतम्॥ इत्युक्त्वारामवद्वाचापपा तरुधिराशनः १८ यन्नामाज्ञोऽपिमरणेस्मृत्वातत्साम्यमाप्नुयात्॥ किमुताग्रेहरिंपश्यन्तेनैवनिहतोऽसुरः १९ तद्देहादुत्थितंतेजःसर्वलो कस्यपश्यतः॥राममेवाविशद्देवाविस्मयंपरमंययुः २० किंकर्मकृत्वाकिं प्राप्तःपातकीमुनिहिंसकः॥अथवाराघवस्यायंमहिमानात्रसंशयः२१

और सीता करके भी क्या प्रयोजन था और यहां भक्तानुकंपीभगवान् हैं यह कहने से यहभी सूचित हुआ कि मारीच औ रावण येभी रामके भक्त हैं इनकाउद्धारभी मृगके पिछाड़ी दौड़ने से सिद्ध होना है अब वह मृग कभी तौ राम के समीप दिखाई पड़ताहै कभी क्षणभर दौड़के छिप जाता है १५ फिर छिपकरके दूरदिखाईपड़ताहै इसप्रकार बहमृग रामको दूरलेजाताहुआ तिसके अनन्तर राम भी उसको राक्षस है यह जानके १६ बाणको धनुष में संधानकर मारतेहुये फिर रुधिर जिसकेमुखसे निकसरहाहै ऐसा जो मारीच सो पृथ्वी में गिरताहुआ मृगरूपकोत्याग पहिलेकी तरह राक्षसरूपही होजाता हुआ १७ और हे महाबाहो मैं मारागया और हे लक्ष्मण शीघ्रही मेरीरक्षाकरो यहबचन रामहीकी तरह कहिकै गिरपड़ताहुआ १८ अब महादेव पार्वती से कहते हैं कि हे पार्वति मूर्ख भी पुरुष मरणसमय में जिसरामके नामकोस्मरण करके रामके समानही रूपको प्राप्तहोताहै और मरते समय साक्षात् रामको देखताहुआ और रामही करके मारागया मारीच रामके रूपको प्राप्तहोय इस में क्याकहनाहै १९ अब उस मारीचके देहसे उठाहुआ जो तेज सो सबलोकके

देखतेही राममें प्रवेशकरताहुआ इसचरित्रको देखिके देवतालोग बड़ेआश्चर्य को प्राप्तहुये २० और यहकहनेलगे कि मुनियों का मारनेवाला बड़ापातकी मारीच क्या तो कर्मकरताहुआ और क्यादेखौ फलको प्राप्तहुआ अथवा राम हीकी यह महिमाहै इसमें कुछ संशय नहीं है २१ ॥

रामबाणेनसंविद्धःपूर्वराममनुस्मरन् ॥ भयात्सर्वंपरित्यज्यगृहवित्तादिकंचयत् २२ हृदिरामंसदाध्यात्वानिर्धूताशेषकल्मषः॥अंतेरामेणनिहतःपश्यन्राममवापसः २३ द्विजोवाराक्षसोवापि पापीवाधर्मकोऽपिवा । त्यजन्कलेवरंरामं स्मृत्वायाति परं पदम् २४ इति तेऽन्योन्यमाभाष्यततोदेवादिवंययुः ॥ रामस्तच्चिन्तयामासाम्रियमाणोऽसुराधमः २५ हालक्ष्मणेतिमद्वाक्यमनुकुर्वन्ममारकिम् ॥ श्रुत्वा मद्वाक्यसदृशंवाक्यंसीताऽपिकिंभवेत् २६ इतिचिन्तापरीतात्मारामोदूराद्न्यवर्त्तत ॥ सीतातद्भाषितंश्रुत्वामारीचस्यदुरात्मनः २७ भीताऽतिदुःखसंबिग्नालक्ष्मणंत्विदमब्रवीत् ॥ गच्छलक्ष्मणवेगेनभ्राताऽसुरपीडितः २८ ॥

जो मारीच रामकेबाणसे ताड़नको प्राप्तहो प्रथमसे रामही को स्मरणकरते करते भयसे घर और धन दारादिक सब त्यागकर २२ हृदय में सदा रामको ध्यानकरिकै सबपापों से छूटकर शुद्धहुआ अन्तमें रामही करिकै मारागया रामको देखते देखते शरीरत्यागकर रामहीको प्राप्तहोताहुआ २३इससे ब्राह्मण होय चाहे राक्षसहोय पापीहोय चाहे धर्मात्मा होय परंतु अंत समयमें रामको स्मरणकरिकै जो शरीर त्यागकरताहै सो परम पदहीको प्राप्तहोताहै यह निश्चितहुआ २४ इसप्रकार देवता लोग आपसमें संभाषणकर स्वर्गको जातेहुये अब राम यह चिन्ताकरते हुये कि मरताहुआ राक्षस हा लक्ष्मण ऐसे मेरी तरहकहिकै मरगया सो इसका क्या प्रयोजनहै २५ और यह मेरासरीखा वाक्य सुनिकै सीताजानै कौनदशाको प्राप्तहोगी २६ ऐसी चिन्तामें व्याकुल हो राम दूरसे लौटतेहुये अब सीता उस दुष्टात्मा मारीचका कहाहुआ शब्द सुनिकै २७ अति दुःखसे भयभीतहोके लक्ष्मणसे यह बचन बोलतीहुई कि हेलक्ष्मण शीघ्रही तुमजावो तुम्हारा भाई असुर करके पीड़ित होरहाहै २८ ॥

हालक्ष्मणेतिवचनंभ्रातुस्तेनश्रृणोषिकिम् ॥ तामाहलक्ष्मणोदेविरामवाक्यंनतद्भवेत् २९ यःकश्चिद्राक्षसोदेविम्रियमाणोऽब्रवीद्वचः ॥रामस्त्रैलोक्यमपियःक्रुद्धोनाशयतिक्षणात्३०सकथंदीनवचनं

भाषतेऽमरपूजितः॥क्रुद्धालक्ष्मणमालोक्यसीतावाष्पविलोचना ३१ प्राहलक्ष्मणदुर्बुद्धेभ्रातुर्व्यसनमिच्छसि ॥ प्रेषितोभरतेनैवरामना शाभिकांक्षिणा ३२ मान्नेतुमागतोऽसित्वंरामनाशउपस्थिते॥नाप्रा प्स्यसेत्वमामद्यपश्यप्राणांस्त्यजाम्यहम् ३३ नजानातीदृशंरामोत्वां भार्याहरणोद्यतम्॥ रामादन्यंनस्पृशामित्वांवाभरतमेववा ३४ इ त्युक्त्वाबध्यमानासास्वबाहुभ्यांरुरोदह ॥ तच्छ्रुत्वालक्ष्मणःकर्णौ पिधायातीवदुःखितः ३५॥

हा लक्ष्मण यह अपने भाईका वचन क्या तुमनहीं सुनतेहौ तब सीतासे लक्ष्मण कहतेहुये कि हेदेवि यह रामका वचन नहीं है २९ जो कोई राक्षस मरनेलगाहै वह यह बचन बोलताभयाहै जो राम क्रोधकरैं तो तीनोंलोकोंको क्षणमात्रमें नाशकरैं ३० सो देवतोंकरके पूजित राम हा लक्ष्मण ऐसा दीन बचन कैसे कहसक्ते हैं तब नेत्रों से आंसुओं को छोड़रही जो सीतासो क्रोध करके लक्ष्मण को देख बोलती हुई ३१ हेदुर्बुद्धे लक्ष्मण तूभाईके दुःखकी इच्छाकरतामालूमहोताहै कि रामके मारने की इच्छाकरते हुये भरतने तुझको भेजाहै ३२ सो तू रामके नाशहुये मुझको लेनेको आयाहै सो मुझको तू कैसेभी नहीं प्राप्तहोगा देख मैं अभी प्राणोंका त्याग करती हों ३३ स्त्री के हरनेमें उद्यत जो तूहै तिसको राम नहीं जानते हैं मैं तो रामके सिवाय और को नहीं स्पर्श करोंगी चाहे तू होय चाहे भरतहोय ३४ ऐसा वचन कहिकै अपने हाथोंसे शरीरको कूटती रोवतीहुई ये सीताके बचन सुनके अत्यन्तदुःख युक्त जो लक्ष्मण सो कानोंको मूंदिकै ३५॥

मामेवंभाषसेचंडिधिक्त्वांनाशमुपैष्यसि॥ इत्युक्त्वावनदेवीभ्यः समर्प्यजनकात्मजाम् ३६ ययौदुःखातिसंविग्नोराममेवशनैःशनैः॥ ततोऽन्तरंसमालोक्यरावणोभिक्षुवेषधृक् ३७ सीतासमीपमगमत्स्फु रद्दंडकमंडलुः॥ सीतातमवलोक्याशुनत्वासंपूज्यभक्तितः ३८ कंद मूलाफलादीनिदत्त्वास्वागतमब्रवीत् ॥ मुनेभुंक्ष्वफलादीनिविश्रम स्वयथासुखम् ३९ इदानीमेवभर्त्तामेह्यागमिष्यतितेप्रियम् ॥ कारि ष्यतिविशेषेणातिष्ठत्वंयदिरोचते ४० भिक्षुरुवाच ॥ कात्वंकमलप त्राक्षिकोवाभर्त्तातवानघे॥ किमर्थमत्रतेवासोवनेराक्षससेविते ॥ ब्रू हिभद्रेततःसर्वंस्ववृत्तांतंनिवेदये ४१ ॥ सीतोवाच ॥ अयोध्याधि

पतिःश्रीमान्राजादशरथोमहान् ॥ तस्यज्येष्ठःसुतोरामःसर्वलक्षण लक्षितः ४२ ॥

बोलताहुआ कि हे चण्डि धिक्कार तुझको है जो मुझसे ऐसा वचनकहती है और तू नाशको प्राप्तहोगी यहकहिकै और वनकी देवियोंको सीताको सौंपि के ३६ दुःखकरके भयभीत धीरेधीरे रामही के समीप जाताहुआ तब तिसके अनन्तर अन्तरको देखिकै रावण संन्यासी के रूपको धारणकर ३७ चमक रहे हैं दण्ड कमण्डलु जिसके ऐसाहो सीताके समीप जाताहुआ सीता तिस संन्यासीको देखके शीघ्रही नमस्कारकरके पूजनकरके ३८ भक्तिसे कन्दमूलफल देके तुम्हारा अच्छा आगमनहुआ ऐसाकुशलप्रश्न पूछतीहुई औरयहकहा कि हे मुने तुम फलआदि भोजनकरो और सुखपूर्वक विश्रामकरो ३९ और इसी समयमेंही मेरापति आताहोगा सो विशेष करके तुम्हारा प्रिय करेगा इससे जोतुम्हारी रुचिहोय तो ठहरिये ४० तब वह संन्यासी बोला कि हे कमलपत्राक्षि कमलके पत्रके समान विशाल नेत्रहैं जिसके ऐसी तुम कौनहो और हे अनघे दोषरहिते तेरापति कौनहै और यहराक्षस सेवित बनमें बास किस कारणसे है हेकल्याणि यहसबकहु फिरमैं अपना वृत्तान्त कहौंगा ४१तब सीता कहतीहुई जो अयोध्यानगरीका पति बड़ा लक्ष्मीमान् राजा दशरथरहा तिसका ज्येष्ठपुत्र संपूर्ण शुभलक्षणों करके युक्त राम है ४२ ॥

तस्याहंधर्म्मतःपत्नीसीताजनकनन्दिनी॥ तस्यभ्राताकनीयांश्चलक्ष्मणोभ्रातृवत्सलः ४३ पितुराज्ञांपुरस्कृत्यदंडकेवस्तुमागतः ॥ चतुर्दशसमास्त्वांतुज्ञातुमिच्छामिभेवद ४४ भिक्षुरुवाच ॥ पौलस्त्यतनयोऽहंतुरावणोराक्षसाधिपः ॥ त्वत्कामपरितप्तोऽहंत्वांनेतुंपुरमागतः ४५ मुनिवेषेणरामेणाकिंकरिष्यसिमांभज ॥ भुंक्ष्वभोगान्मयासार्द्धंत्यजदुःखंवनोद्भवम् ४६ श्रुत्वातद्वचनंसीताभीताकिंचिदुवाच तम् ॥ यद्येवंभाषसेमांत्वंनाशमेष्यसिराघवात् ४७ आगमिष्यतिरामोऽपिक्षणंतिष्ठसहानुजः॥ मांकोधर्षयितुंशक्तोहरेर्भार्यांशशोयथा४८ रामबाणैर्विभिन्नस्त्वंपतिष्यसिमहीतले॥ इतिसीतावचःश्रुत्वारावणःक्रोधमूर्च्छितः ४९ ॥

तिसकी मैं धर्मकरके पत्नीहों और राजाजनक की कन्याहों तिसकाछोटा भाई लक्ष्मणहै जो भाई को अत्यन्त प्रियहै ४३ सो राम पिता की आज्ञाको मानिकै चौदह वर्षभर वनमें वासकरनेकोप्राप्तहुयेहैं और अबमैं तुमको जाना

चाहतीहौं सोकहौ ४४ तब वह संन्यासी बोलताहुआ कि पौलस्त्यकापुत्ररा-
वणमैंहौं और राक्षसों का राजाहौं तेरे कारण से जो कामहै तिसकरके संतप्त
हुआ तुझको लंकापुरी को लेजाने को आयाहूं ४५ इससे मुनिका बेष जिस
का ऐसे रामकरके क्याकरैगी तूमेराभजनकर और मोकरके सहित भोगोंको
भोग और बनसे उत्पन्न हुआ जो दुःख तिसको त्यागदे ४६ अब सीता यह
रावणका बचन सुनके कुछभय युक्त होके बचन बोलतीहुई जोतू ऐसाबचन
मुझसे कहताहै इससे रामसे नाशको प्राप्त होगा ४७ छोटेभाई करके सहित
राम भी आते हैं तू क्षणमात्र स्थितहो रामके आगे मेरातिरस्कार करनेको कौ-
नसमर्थहै जैसे सिंहकी स्त्रीको खरगोश ४८ रामके बाणोंकरकेबिदीर्णहुआ तूपृ-
थिवीमें गिरपड़ैगा तब तौऐसीताके बचनसुनिकै क्रोधसोंभराहुआरावण४९॥

स्वरूपंदर्शयामासमहापर्वतसन्निभम्॥दशास्यंविंशतिभुजंकाल
मेघसमद्युतिम् ५० तद्दृष्ट्वावनदेव्यश्चभूतानिचवितत्रसुः॥ ततो
विदार्यधरणींनखैरुद्भृत्यबाहुभिः ५१ तोलयित्वारथेक्षिप्त्वाययौक्षि
प्रंविहायसा॥ हारामहालक्ष्मणेतिरुदन्तीजनकात्मजा ५२ भयोद्वि
ग्नमनादीनापश्यन्तीभुवमेवसा॥ श्रुत्वातत्क्रंदितंदीनंसीतायाःपक्षि
सत्तमः ५३ जटायुरुत्थितःशीघ्रंनगाग्रात्तीक्ष्णतुण्डकः॥ तिष्ठतिष्ठे
तितंप्राहकोगच्छतिममाग्रतः५४ मुषित्वालोकनाथस्यभार्यांशून्याद्ध
नालयात्।शुनकोमंत्रपूतंत्वांपुरोडाशमिवाध्वरे५५इत्युक्त्वातीक्ष्णतुं
डेनचूर्णयामासतद्रथम्॥बाहान्बिभेदपादाभ्यांचूर्णयामासतद्धनुः५६

अपनेस्वरूपको दिखाताहुआ जोस्वरूपपर्वतके तुल्यहै औरदशजिसमें मुख
हैं और बीसभुजाहैं और काले मेघके तुल्य जिसकीकान्तिहै ऐसा स्वरूपरावण
दिखाता हुआ ५० तिस रावण के रूप को देखिकै वनकी देवियां और सब
प्राणी त्रासको प्राप्तहुये और रावण नखोंसे पृथिवी को बिदारण करके जिससे
सीताके पैर पृथ्वी से अलग होजायँ क्योंकि जबतक उस पृथिवी से संबन्ध
सीताके चरणों का रहता तबतक रावण की शक्ति नथी जो सीता को उठा
सक्ता इससे पृथिवीको बिदारणकर और भुजाओंसे सीताको उठाकर ५१
तोलके अर्थात् बोझा अजमाके रथमें डालके आकाशमार्ग करके जाता हुआ
और उससमयमें सीता हाराम हालक्ष्मणऐसेकहिकहिकै रोदनकररहीहै ५२
और भय करके व्याकुलहै मन जिसका ऐसी दीन हुई सीता पृथिवीको देख
रही है तब उससमय में पक्षियों में श्रेष्ठ जो जटायु सो सीताका दीन शब्द-
युक्त रोवना सुनिकै ५३ बड़ी पैनी चोंच जिसकी सो शीघ्रही वृक्षपैसे उठक-

रके अरेखड़ाहो खड़ाहो कहां मेरे आगेसे जाताहै और तू कौनहै यह वचन बोलताहुआ ५४ और लोकनाथ जोराम हैं तिनकी स्त्रीको शून्यबनके आश्रमते चुराके जैसे कुत्ता यज्ञके भागको यज्ञमेंसे लेकेभागै तैसे कहांलिये जाताहै ५५ ऐसा वचन कहिकै अपनी पैनीचोंचसे और पंजोंसे रावणके रथको जटायु चूर्णचूर्ण करता हुआ और पंजोंसे घोड़ों को मारा और उसके धनुष को तोड़ता हुआ ५६ ॥

ततःसीतांपरित्यज्यरावणःखड्गमाददे ॥ चिच्छेदपक्षौसामर्षःपक्षिराजस्यधीमतः ५७ पपातकिंचिच्छेषेणप्राणेनभुविपक्षिराट् ॥ पुनरन्यरथेनाशुसीतामादायरावणः ५८ क्रोशन्तीरामरामेतित्रातारंनाधिगच्छती ॥ हारामहाजगन्नाथमांनपश्यसिदुःखिताम् ५९ रक्षसानीयमानांस्वांभार्यांमोचयराघव ॥ हालक्ष्मणमहाभागत्राहिमामपराधिनीम् ६० वाक्शरेणहतस्त्वंमेक्षन्तुमर्हसिदेवर ॥ इत्येवंक्रोशमानांतांरामागमनशंकया६१जगामवायुवेगेनसीतामादायसत्वरः॥ विहायसानीयमानासीतापश्यदधोमुखी ६२ पर्वताग्रस्थितान्पंचवानरान्वारिजानना ॥ उत्तरीयार्द्धखंडेनविमुच्याभरणादिकम् ६३ ॥

तबतौ रावण सीताको छोड़िके और खड्गलैकै क्रोधकर उस पक्षिराज जटायुके पंख काटताहुआ ५७ फिर वह जटायु प्राणही मात्र निकलने को रहे ऐसा होकै पृथ्वी में गिरपड़ताहुआ और रावण दूसरे रथके ऊपर चढ़िकै सीताको लैकै जाताहुआ ५८ और सीता उससमयमें रामराम ऐसा कहिकै बिलाप कररही किसी रक्षा करने वालेको नहीं प्राप्तहुई और यह कहतीहुई कि हा राम हा जगन्नाथ तुम इस समय दुःखित मुझको नहीं देखतेहौ ५९ और हे राघव राक्षस करके प्राप्तकरीजाती जो अपनी भार्या तिसको छुड़ाइये और हालक्ष्मण महाभाग अपराध करनेवाली जो मैंहूं तिसकी रक्षाकीजिये ६० और हेदेवरबाणी रूप बाण करके जो मैंने तुमको ताड़न कियारहा सो मेरा अपराध क्षमा करनेयोग्य हौ ऐसे बिलाप करती जो सीता तिसको राम के आनेकी शंकासे शीघ्रही रावण ग्रहण करि ६१ पवनकासा वेग जिसका ऐसे रथकरके लेजाताहुआ आकाश मार्ग करके हरीहुई जो सीता सो नीचे को मुख करके ६२ पर्वत के ऊपरबैठे जो पांचबानर थे तिनको देखती हुई और देखके किसी बस्त्रके टुकडे में कुछ आभूषण बांधिके बानरों के समीप डालदेती हुई ६३ ॥

बध्वाचिक्षेपरामायकथयंत्वितिपर्वते॥ ततःसमुद्रमुल्लंघ्यलंकांग त्वासरावणः ६४ स्वांतःपुरेरहस्येतामशोकविपिनेऽलपत् ॥ राक्षसी भिःपरिवृतां मातृबुद्ध्याऽनुपालयत् ६५ कृशाऽतिदीनापरिकर्मव र्जितादुःखेनशुष्यद्वदनाऽतिविह्वला॥ हारामरामेतिविलप्यमाना सी तास्थितराक्षसवृन्दमध्ये ६६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेआरण्यकाण्डे सप्तमःसर्गः ७॥

जिससे जब राम वहां आवें तौ वे वानर रामसे कहैं अब रावण समुद्र को उल्लंघन करि लंका में प्राप्तहोकै ६४ वहां अपने महलके भीतर जो अ-शोकबनिका है तहां एकांतदेशमें सीताको स्थापन करताहुआ उस अशोक वनिकामें राक्षसियों करके परिवेष्टित जो सीताहै तिसकी धर्महीं करके रक्षा कराताहुआ अर्थात् नलकूबरके शापकेभयसे सीताके संग बलात्कार करनेको समर्थ न रहा शापका कारण वाल्मीकीय रामायण में ऐसाकहा कि एकस-मय रावण दिग्विजयकी यात्रामें कैलास पर्वत पै रात्रिमें सेनाको लैके बास कररहाथा सो उजेली रात्रिमें एक अप्सरा शृंगारकरेहुये उसीरस्ते होके नल कूबर जो कुबेरका पुत्र तिसके पास जातीथी सो रावण कामतप्तहोकै जबर-दस्ती उसको पकड़ताहुआ उसनेबहुतेरा कहा मैंतुम्हारीपुत्रबधूहों मुझसे पाप नकरो रावणने बलात्कार से उससे भोगकियाही फिर वह वैसेही नलकूबर से जाके सब वृत्तान्त कहतीहुई तौ नलकूबरने शापदिया कि आजके दिनसे जो रावण बिनास्त्री की इच्छासे जबरदस्ती किसीपरस्त्री से भोगकरैगा तौ इसके शिरके सौ खण्डहोके पृथिवी में गिरपड़ेंगे सोयहभयसे सीताकी धर्महीं से रक्षाकरताहुआ ६५ अबसीता वहां कैसे बासकरतीहुई सोकहतेहैं अत्यन्त दीन और दुर्बल और शरीरके संस्कारकरके रहित और दुःखकरके जिसका मुख सूखरहाहै और अत्यन्त भयकरके बिह्वल औहाराम हाराम ऐसे विलाप करती राक्षसियोंके समूहके बीचमें सीता वासकरती हुई ६६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेआरण्य काण्डेभाषाटीकायांसप्तमःसर्गः ७॥

रामोमायाविनंहत्वाराक्षसंकामरूपिणम्॥ प्रतस्थेस्वाश्रमंगंतुंततो दूराद्ददर्शतम् १ आयांतंलक्ष्मणंदीनंमुखेनपरिशुष्यता ॥ राघव श्चिन्तयामासस्वात्मन्येवमहामतिः २ लक्ष्मणस्तन्नजानातिमायासी

तांमयाकृताम् ॥ ज्ञात्वाप्येनंवंचयित्वाशोचामिप्राकृतोयथा ३ यद्य हंविरतोभूत्वातूष्णींस्थास्यामिमंदिरे ॥ तदाराक्षसकोटीनांबधोपायः कथंभवेत् ४ यदिशोचामितांदुःखसंतप्तःकामुकोयथा ॥ तदाक्रमेणानु चिन्वन्सीतांयास्येऽसुरालयम् ॥ रावणंसकुलंहत्वासीतामग्नौस्थितां पुनः ५ मयैवस्थापितांनीत्वायाताऽयोध्यामतंद्रितः ॥ अहंमनुष्य भावेनजातोऽस्मिब्रह्मणाऽर्थितः ६ मनुष्यभावमापन्नःकिंचित्कालंव सामिकौ ॥ ततोमायामनुष्यस्यचरितंमेऽनुशृण्वताम् ७ ॥

दो० अष्टम सर्ग अरण्य के मिलि जटायु से राम ॥
उदकदेइ निजपाणिसों सोपठयो निजधाम १ ॥

अबश्री महादेवजी पार्वतीसे कथा कहतेहैं हेपार्वति अबश्रीराम इच्छारूप- धारी और मायावी मारीच राक्षस को मारि के अपने आश्रम को आते हुये मार्ग में दूरही से आतेहुये मुख जिसका सूखरहा ऐसेदीन लक्ष्मणको देखते हुये १ और बड़ी श्रेष्ठहै मति जिसकी ऐसे जोरामसो लक्ष्मणको देखके अ- पने मनही में यह विचार करतेहुये २ जो मैं मुख्य सीताको अग्निको सौंपिकै मायारूपिणी सीताको आश्रम में करिकै मृग मारनेको आयाहौं यह चरित्र लक्ष्मण तो जानताही नहीं है औ मैं जानके भी लक्ष्मण के ठगने को जैसे मनुष्य स्त्रीके वियोग में व्याकुल हो शोच करताहै तैसे मैंभी शोच करौंगा ३ और जो कदाचित् मैं शान्तचित्तहो आश्रममें मौनहोके स्थितरहौं तो कठोर राक्षसोंके मारनेका उपाय सिद्ध न होगा ४ और जोकामीके तरहदुःख संतप्त होके उससीताको शोचकरौंगा तोक्रमसे सीताको ढूंढताढूंढता लंकाको अना- यासही प्राप्तहोजाऊँगा फिरकुलसहित रावणको मारके अग्निमें स्थापनकीजो सीता तिसको ५ लैके अयोध्यानगरीको जाऊंगा और दूसराहेतु यहहै कि मैं ब्रह्माकरके प्रार्थना कियागया मनुष्यभाव करके प्रकटहुआहौं ६ तोब्रह्माकी प्रार्थना सत्यकरनेको मनुष्य भावही को प्राप्तहुआ कुछ काल पृथिवी में बास करौंगा फिर माया मनुष्य जोमैंहौं तिसके चरित्रको श्रवणकरने वाले ७ ॥

मुक्तिःस्यादप्रयासेनभक्तिमार्गानुवर्त्तिनाम् ॥ निश्चित्यैवन्तदा दृष्ट्वालक्ष्मणंवाक्यमब्रवीत् ८ किमर्थमागतोऽसित्वंसीतांत्यक्त्वामम प्रियाम् ॥ नीतावाभक्षितावाऽपिराक्षसैर्जनकात्मजा ९ लक्ष्मणःप्रां जलिःप्राहसीतायादुर्वचोरुदन् ॥ हालक्ष्मणेतिवचनंराक्षसोक्तंश्रुतं तया १० त्वद्वाक्यसदृशंश्रुत्वामांगच्छेतित्वराब्रवीत् ॥ रुदंतीसाम

याप्रोक्तादेविराक्षसभाषितम् ॥ नेदंरामस्यवचनंस्वस्थाभवशुचिस्मि
ते ११ इत्येवंसांत्वितासाध्वीमयाप्रोवाचमांपुनः॥यदुक्तंदुर्वचोरामन
वाच्यंपुरतस्तव१२ कर्णौपिधायनिर्गत्ययातोऽहंत्वांसमीक्षितुम्॥राम
स्तुलक्ष्मणंप्राहतथाऽप्यनुचितंकृतम्१३ त्वयास्त्रीभाषितंसत्यंकृत्वा
त्यक्त्वाशुभाननाम् ॥ नीतावाभक्षितावाऽपिराक्षसैर्नात्रसंशयः१४॥

भक्तिमार्गमें चलनेवाले मनुष्योंकी अनायास से मुक्तिसिद्धहोगी यह श्री
रामचन्द्र निश्चयकरि उससमयमें लक्ष्मणकोदेखके यहबोलतेहुये ८ कि हे ल-
क्ष्मणमेरी प्यारीसीताको छोड़के किसवास्तेआये और राक्षस लोगसीताको
कहींलेगयेहोंगे अथवाखालियाहोगा९तोलक्ष्मण हाथजोड़केरोवतेहुये सीताके
दुर्वचनोंको कहतेहुये किहालक्ष्मणऐसाराक्षसकाकहाहुआआपकेसरीखाबचन
जबसीतानेसुना१० तब मुझसे कहनेलगी कि हेलक्ष्मण तुम शीघ्रहीजावो तब
मैंने यहकहा कि यहकिसीराक्षसका कहाहुआ बचनहै रामकानहीं है इससे
अपने चित्तकोसावधान करिये ११ इसप्रकार मैंनेसमुझायाभी तौ भी हे राम
उससमयमें सीता मुझसे जोदुर्वचन कहतीहुईहै सोआपकेआगेकहनेको योग्य
नहींहै१२ फिर मैं कानमूंदिकै उसस्थान से निकसिकै आपके दर्शनकरने को
प्राप्तहुआ तब राम लक्ष्मणसे कहनेलगे कि हेलक्ष्मण तौभीतुमने अनुचितही
किया अर्थात् अच्छानहीं किया १३ क्योंकि जो तुम स्त्रीका वचनसत्यमानिकै
सीताको त्यागिकै यहां आये और निश्चय करिकै तौ सीताको राक्षस कोई
लेगयाहोगा अथवा भक्षणकरिलिया होगा इसमें कुछ संदेह नहीं १४ ॥

इतिचिन्तापरोरामःस्वाश्रमंत्वरितोययौ ॥ तत्राऽदृष्ट्वाजनकजांवि
ललापातिदुःखितः १५ हाप्रियेक्कगताऽसित्वंनासिपूर्ववदाश्रमे॥अ
थवामद्विमोहार्थंलीलयाक्वविलीयसे १६ इत्याचिन्वन्वनंसर्वंनाप
श्यज्जानकींतदा॥ वनदेव्यःकुतःसीतांब्रुवन्तुममवल्लभाम् १७ मृ
गाश्चपक्षिणोवृक्षादर्शयंतुममप्रियाम् ॥ इत्येवंविलपन्नेवरामःसीतां
नकुत्रचित् १८ सर्वज्ञःसर्वथाक्कापिनापश्यद्रघुनन्दनः ॥ आनंदोऽ
प्यन्वशोचत्तामचलोऽप्यनुधावति १९ निर्ममोनिरहंकारोऽप्यखंडा
नन्दरूपवान् ॥ ममजायेतिसीतेति विललापातिदुःखितः २० एवं
मायामनुचरन्नसक्तोऽपिरघूत्तमः ॥ आसक्तइवमूढानां भातितत्त्ववि
दान्नहि २१ ॥

इसप्रकार चिंतायुक्त जो राम सो शीघ्रही आश्रमको आतेहुये और वहांजा

के सीताको नहीं देखके अति दुःखितहोके विलापकरते हुये १५ और यह कहतेहुये हे प्रिये तू कहांगई क्योंकि पहिले की तरह आश्रममें नहीं दिखाई पड़ती अथवा मुझेमोहकरानेको कहींलीलाकरिकै छिपरही इससे नहीं दिखाई देती १६ इसप्रकार सबबनको ढूंढ़ते भी राम सीताको नहींदेखतेहुये तौ बनदेवियों से औ मृग आदिकों से पूछतेहुये कि हे बनदेवियो मेरीप्यारी जो सीता है तिसको वतलाओ कहांहै १७ औ हे मृगो हे पक्षियो हे वृक्षो तुमसब मेरी प्यारीको दिखलावो इसप्रकार बिलापकरतेहुये राम सीताको कहीं नहीं देखते हुये १८ और सर्वज्ञभी रामहैं और सबप्रकार से देखते भी और सीताको नहीं देखतेहुये और आनन्द स्वरूप और सर्वशक्तिमान् भी हैं और शोचकर रहे हैं और अचल भी हैं और बनमें सीताके देखनेको दौड़रहे हैं १९ और ममता और अहंकारकरके रहित और अखण्डानन्द स्वरूप भी हैं और मेरी स्त्री सीता कहांगई ऐसे अतिदुःखित विलाप भी कररहे हैं २० इसप्रकार मायाको अनुसारण करतेहुये आसक्ति रहित भी श्रीरामहैं परन्तु मूढ़ोंको आसक्त के नाईं अर्थात् जैसे संसारी पुरुष अपनी स्त्रीमें प्रीतियुक्त होरहा तिसकी तरह मालूम पड़ताहै और तत्ववेत्ताओं को तौ ऐसा नहीं प्रतीतहोता है २१ ॥

एवंविचिन्वन्सकलंवनंरामःसलक्ष्मणः ॥ भग्नंरथंछत्रचापंकूबरं पतितंभुवि २२ दृष्ट्वालक्ष्मणमाहेदंपश्यलक्ष्मणकेनचित् ॥ नीयमाना जनकजातंजित्वाऽन्योजहारताम् २३ ततःकंचिद्भुवोभागंगत्वापर्वत सन्निभम् ॥ रुधिराक्तवपुर्दृष्ट्वारामोवाक्यमथाब्रवीत् २४ एषवैभक्ष यित्वातांजानकींशुभदर्शनाम् ॥ शेतेविविक्तेऽतितृप्तःपश्यहन्मिनि शाचरम् २५ चापमानयशीघ्रम्मेबाणंचरघुनन्दन ॥ तच्छ्रुत्वारामब चनंजटायुःप्राहभीतवत् २६ मांनमारयभद्रन्तेम्रियमाणंस्वकर्मणा ॥ अहंजटायुस्तेभार्याहारिणंसमनुद्रुतः २७ रावणंतत्रयुद्धंमेबभूवारि विमर्दन ॥ तस्यवाहान्रथंचापंछित्त्वाऽहंतेनघातितः २८ ॥

ऐसे लक्ष्मण सहित जो राम सो सबबनको ढूंढ़तेहुये आगे टूटाहुआरथ और छत्र और धनुष और उसरथकी टूटीहुई जुअर देखतेहुये २२ सो देखिकै रामलक्ष्मणसे बोले हे लक्ष्मण देखौ कोईराक्षस सीताको लियेजाताथा उसको जीतिकै यहां और राक्षसने जानकी को हराहै २३ फिर तिसके अनन्तर श्रीरामजी कुछ चलिकै पर्वतकेतुल्य और रुधिर में डूबाहै शरीर जिसका ऐसे जटायुको पृथ्वीमें पड़ादेखके उसको राक्षसजानके लक्ष्मण से कहते हुये २४ हे लक्ष्मण यहराक्षस सीताको भोजनकर एकान्त देशमें तृप्तहोके पड़ाहै इस

से शीघ्रही मेरा धनुषबाण लावो तौ इसको मैं मारौं २५ तब ये राम के बचन सुनिकै भयभीत कीनाई जटायुगीध बोलताहुआ २६ कि हे राम तुम्हारा कल्याणहोय और मुझको न मारिये मैं तो अपने कर्मकरके आपही मराहुआ पड़ाहौं और जटायु मेरानामहै सो तुम्हारी भार्या के हरनेवाला जोरावणतिस के पीछे मैं दौड़ताहुआ २७ और तिसके साथ मेरा बड़ाभारीयुद्धहुआ तौ उस के घोड़े औ रथ औ धनुष इनको मैंने तोड़डाला तब उसरावणने मुझको मार के डालदिया २८ ॥

पतितोऽस्मिजगन्नाथप्राणांस्त्यक्ष्यामिपश्यमाम् ॥ तच्छ्रुत्वाराघवोदीनंकंठप्राणंददर्शह २९ हस्ताभ्यांसंस्पृशन्रामोदुःखाश्रुवृतलोचनः ३० जटायोब्रूहिमेभार्याकेननीताशुभानना ॥ मत्कार्यार्थंहतोऽसित्वमतोमेप्रियबांधवः ३१ जटायुःसन्नयावाचावक्त्राद्रक्तंसमुद्वमन् ॥ उवाचरावणोरामराक्षसोभीमविक्रमः ३२ आदायमैथिलींसीतांदक्षिणाभिमुखोययौ ॥ इतोवक्तुंनमेशक्तिःप्राणांस्त्यक्ष्यामितेऽग्रतः ३३ दिष्ट्याद्दष्टोऽसिरामत्वंम्रियमाणेनमेऽनघ ॥ परमात्माऽसिविष्णुस्त्वंमायामनुजरूपधृक् ३४ अंतकालेऽपिदृष्ट्वात्वांमुक्तोऽहंरघुसत्तम ॥ हस्ताभ्यांस्पृशमांरामपुनर्यास्यामितेपदम् ३५ ॥

सो हे जगतों के स्वामी अब मैं प्राणोंको छोड़ाचाहताहौं सो मुझकोदेखो यहबचन श्रीराम जटायुके सुनिकै कंठमें जिसके प्राण आगये हैं ऐसे दीनजटायुको देखतेहुये २९ फिर राम अपने हाथों से उसको स्पर्श कर नेत्रों से अश्रुपात करतेहुये ३० और यह बोले कि हे जटायुशुभहै मुखारबिन्द जिसका ऐसी जो मेरी स्त्री सो किसनेहरी उसको बताओ और तुम मेरे कार्यके अर्थ मारेगये इससे तुम मेरे बड़े प्रिय बान्धवहौ अर्थात् प्यारे नातेदारहौ ३१ तब जटायु मुख से रुधिर बमन करताहुआ बड़ी मंद वाणी से बोलताहुआ कि हे राम बड़ा भयंकर पराक्रम जिसका ऐसा रावण नाम राक्षस ३२ जनक की पुत्री जो सीता तिसको लैके दक्षिण दिशाके सन्मुख जाताहुआ और इससे आगे कहने की मेरी सामर्थ्य नहीं है और तुम्हारे आगे प्राणोंको त्याग करता हौं ३३ हे राम यह बड़ी कल्याणकी बार्त्ताहुई कि मरताहुआ जो मैं तिसने तुमको देखा तुम साक्षात् परमात्मा विष्णुहौ मायाही करके मनुष्यरूपको धारण करेहौ ३४ औ हे रघुकुलमें श्रेष्ठ अन्त समयमें भी तुमको देखिकै मैं मुक्तहोंगा और हे राम इस समयमें फिर अपने हाथसे मुझको स्पर्श करिये मैं तुम्हारे पदको जाताहूं ३५ ॥

तथेतिरामःपस्पर्शतदंगंपाणिनास्मयन् ॥ ततःप्राणान्परित्यज्य जटायुःपतितोभुवि ३६ रामस्तमनुशोचित्वाबन्धुवत्साश्रुलोचनः ॥ लक्ष्मणेनसमानाय्यकाष्ठानिप्रददाहतम् ३७ स्नात्वादुःखेनरामोऽपि लक्ष्मणेनसमन्वितः ॥ हत्वावनेमृगंतत्रमांसखंडान्समंततः ३८ शा ड्वलेप्राक्षिपद्रामःपृथक्पृथगनेकधा ॥ भक्षन्तुपक्षिणःसर्वेतृप्तोभवतु पक्षिराट् ३९ इत्युक्त्वाराघवःप्राहजटायोगच्छमत्पदम् ॥ मत्सारूप्यं भजस्वाद्यसर्वलोकस्यपश्यतः ४० ततोऽनन्तरमेवासौदिव्यरूपधरः शुभः ॥ विमानवरमारुह्यभास्वरंभानुसन्निभम् ४१ शंखचक्रगदापद्म किरीटवरभूषणैः ॥ द्योतयत्स्वप्रकाशेनपीताम्बरधरोऽमलः ४२ ॥

तब श्रीरामचन्द्रजी पक्षीको भी ऐसा ज्ञान है इस आश्चर्य से मन्द मुस- क्यान करतेहुये अपने हस्त कमलों से उस जटायुके अंगको स्पर्श करतेहुये तब जटायु प्राणोंको त्यागिकै पृथ्वीमें गिर पड़ताहुआ ३६ तब राम बन्धुकी तरह रोवतेहुये उसको शोच करके लक्ष्मणसे काष्ठ मंगाकर उसको दाहकरते हुये ३७ फिर लक्ष्मण करके सहित दुःखयुक्त श्रीरामचन्द्र स्नानकरके वनमें एक मृगको मारके उसके मांसके खण्ड चारों तरफसे हरीघासपै डालतेहुये अलग अलग अनेक प्रकारके और यह कहतेहुये हे पक्षियो तुम सब इसमांस को भोजनकरौ जिससे यह पक्षियोंका राजा जटायु तृप्तहोय ३८।३९ फिर यह कहिकै राम कहनेलगे हे जटायु इस समयमें सब लोकोंके देखतेही देखते तुम मेरा सा रूप धारणकर मेरेलोकको प्राप्तहोवो ४० फिर यह बचन राम के कहतेही जटायु दिव्यरूपको धारणकर और सूर्यके तुल्य प्रकाशमान विमान के ऊपर चढ़िकै शंख चक्र गदा पद्म इनको धारणकरे और किरीट आदि आ- भूषणोंकरके सब दिशाओंको प्रकाश करताहुआ और पीतबस्त्रोंको धारणकरे निर्मल स्वरूप ४१ । ४२ ॥

चतुर्भिःपार्षदैर्विष्णोस्तादृशैरभिपूजितः ॥ स्तूयमानोयोगिगणै राममाभाष्यसत्वरः ॥ कृतांजलिपुटोभूत्वातुष्टावरघुनन्दनम् ४३ ज टायुरुवाच ॥ अगणितगुणमप्रमेयमाद्यंसकलजगत्स्थितिसंयमादि हेतुम् ॥ उपरमपरमंपरात्मभूतंसततमहंप्रणतोऽस्मिरामचन्द्रम् ४४ निरवधिसुखमिन्दिराकटाक्षंक्षपितसुरेन्द्रचतुर्मुखादिदुःखम् ॥ नरवर मनिशंनतोऽस्मिरामंवरदमहंवरचापबाणहस्तम् ४५ त्रिभुवनकमनी यरूपमीड्यंरविशतभासुरमोहितप्रदानम् ॥ शरणदमनिशंसुरागमु

लेकृतनिलयंरघुनन्दनंप्रपद्ये ४६ भवविपिनिदवाग्निनामधेयंभवमुखदैवतदैवतंदयालुम् ॥ दनुजपतिसहस्रकोटिनाशंरवितनयासदृशंहरिंप्रपद्ये ४७ अविरतभवभवनातिदूरंभवविमुखैर्मुनिभिःसदैवदृश्यम् ॥ भवजलधिसुतारणांघ्रिपोतंशरणमहंरघुनन्दनंप्रपद्ये ४८ गिरिशगिरिसुतामनोनिवासंगिरिवरधारिणमीहिताभिरामम् ॥ सुरवरदनुजेन्द्रसेवितांघ्रिंसुरवरदंरघुनायकंप्रपद्ये ४९ ॥

और तैसेही स्वरूपके विष्णुके चारि पार्षदों करके सत्कार कियागया और योगियों करके स्तुति कियागया सो शीघ्रही रामको संबोधन करके अर्थात् हे राम ऐसा शब्द उच्चारण करिकै और हाथजोड करके रामकी स्तुति करता हुआ ४३ नहीं गिनने में आते हैं गुण जिनके और इसी देशमें और कालमें है और में नहीं है ऐसा जो देशकाल परिच्छेद तिस करके रहितहैं अर्थात् जो सब देशमें औ सबकालमें है और जो सब जगत्की उत्पत्ति औ पालन और संहार इनका कारणहै और शांतिही है शोभा जिनकी ऐसे जो परमात्मा रामचन्द्र तिनको मैं निरन्तर प्रणाम करोंहौं ४४ और जिनके सुखकी कुछ अवधिनहीं है अर्थात् सब कालमें सुखरूपही बनेरहते हैं और लक्ष्मीजी के कटाक्ष जिसमें पड़तेही रहतेहैं और जो ब्रह्मा इन्द्र आदि देवताओंके दुःखके नाशकरनेवालेहैं और जोपुरुषोत्तम रूपहैं और जो वरके देनेवालेहैं और जो श्रेष्ठ धनुष बाणको हाथमें धारण कियेहैं ऐसे जो राम तिनको मैं निरन्तर नमस्कार करताहौं ४५ और तीनों लोकों में एक सुन्दररूप जिनका अर्थात् तीनों लोकों की सुन्दरताई जिनके रूपमें बास करती है और जो स्तुति करने योग्यहैं और सैकड़ों सूर्य्योंकासा प्रकाश जिनका और जो भक्तों के अभीष्टके देनेवाले हैं और जो शरणागतकी रक्षा करनेवाले हैं और जो प्रेमी पुरुषों के चित्त में बासकरनेवाले हैं ऐसे जो रघुनन्दन तिनके मैं निरन्तर शरण प्राप्त होताहौं ४६ और संसाररूपी बनके भस्मकरने को दवाग्नि तुल्य है नाम जिनका और महादेव आदि देवों के भी जो देवहैं और जो अति दयालु हैं और जो करोड़ों दैत्य पतियों के नाश करनेवाले हैं और यमुनाके तुल्य जिनका वर्ण है ऐसे जो हरि हैं तिनके मैं शरण प्राप्तहौं ४७ और निरन्तर जिन पुरुषों का संसारमें चित्तहै तिन पुरुषों को जो अत्यन्त दूरहैं और जे संसारकी चिन्ता रहित विरक्त मुनि लोग हैं तिनको नित्य दर्शन देनेवाले हैं और संसाररूपी समुद्रसे पार लगानेवाली है चरण रूप नौका जिनकी ऐसे जो रघुनन्दन हैं तिनकी मैं शरण प्राप्तहौं ४८ और महादेव और पार्वती इनकेमनमें है निवास

जिनका और कृष्णरूप करकेजो गोबर्द्धन पर्वतकेधारण करने वालेहैं औरअप-
ने चरित्रों करके सबको प्रियहैं और देवता दैत्येन्द्रों करके सेवन कियागयाहै
चरण जिनका और देवतोंको वरके देनेवालेहैं ऐसेजो रघुओंमें श्रेष्ठराम तिन
के मैं शरण प्राप्तहौं ४९ ॥

परधनपरदारवर्जितानांपरगुणभूतिषुतुष्टमानसानाम् ॥ परहित
निरतात्मनांसुसेव्यंरघुवरमम्बुजलोचनंप्रपद्ये ५० स्मितरुचिरविका
सिताननाब्जमतिसुलभंसुरराजनीलनीलम् ॥ सितजलरुहचारुने
त्रशोभंरघुपतिमीशगुरोर्गुरुंप्रपद्ये ५१ हरिकमलजशम्भुरूपभेदा
त्त्वमिहविभासिगुणत्रयानुवृत्तः ॥ रविरिवजलपूरितोदपात्रेष्वमरप
तिस्तुतिपात्रमीशमीडे ५२ रतिपतिशतकोटिसुंदरांगंशतपथगोचर
भावनाविदूरम् ॥ यतिपतिहृदयेसदाविभातंरघुपतिमार्तिहरंप्रभुंप्रप
द्ये ५३ इत्येवंस्तुवतस्तस्यप्रसन्नोऽभूद्रघूत्तमः ॥ उवाचगच्छभद्रन्तेम
मविष्णोःपरम्पदम् ५४ शृणोतियइदंस्तोत्रंलिखेद्वानियतःपठेत् ॥ स
यातिममसारूप्यंमरणेमत्स्मृतिंलभेत् ५५ इतिराघवभाषितंतदाश्रु
तवान्हर्षसमाकुलोद्विजः ॥ रघुनंदनसाम्यमास्थितःप्रययौब्रह्मसुपू
जितंपदम् ५६ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादे
आरण्यकाण्डेअष्टमःसर्गः ८ ॥

और विरानाधन और बिरानी स्त्री इनमें नहीं है चित्त जिनका और औरके
गुणोंके ऐश्वर्य में प्रसन्न है मन जिनका और बिराने हित में प्रीतियुक्तहै मन
जिनका ऐसे पुरुषोंको जो सुख पूर्वक सेवन करिबे योग्य हैं और कमल स-
रीखेहैं विशाल नेत्र जिनके ऐसे जो रघुनन्दन तिनके मैं शरण प्राप्त हौं ५०
और मन्द मुसक्यान करके सुन्दर प्रफुल्लित है कमलरूपी मुख जिनका और
जो सबको सुलभहैं और इन्द्रनील माणि के तुल्य जो नील वर्णहै और सुपेद
कमल के तुल्य सुन्दर है नेत्रोंकी शोभा जिनकी ऐसे ब्रह्माके गुरु जो राम
हैं तिनके मैं शरण प्राप्त होताहौं ५१ और जैसे एकही सूर्य जलके भरेहुये घटों
में प्रतिबिम्ब परनेसे अनेकरूपका प्रतीयमान होय तैसेएकही तुम सत्त्व रज
तम इनतीनों मायाकेगुणोंके भेदसे विष्णु ब्रह्मा शिव आदिरूपभेद करके जो
प्रतीत होरहे हौ औ इन्द्रकी स्तुतिके जो पात्रहैं ऐसेजोहरि रूपतुम तिनकी
मैं स्तुति करताहौं ५२ और कामदेवसे सौ करोड़गुनाहै सुन्दर अंग जिनका
और यजुर्वेदके शतपथ ब्राह्मण भागमें कहा जो ध्यानमार्ग तिस करके जो प्राप्त

होनेकेयोग्य और इसीसे संन्यासियों के हृदयमें सदा प्रकाशमान ऐसेजो दुःख के हरने वाले रघुपति तिनके मैं शरणप्राप्त होताहौं ५३ ऐसीस्तुति करताहुआ जो जटायु तिसके ऊपर प्रसन्नहो श्रीराम बोलतेहुये कि तेरा कल्याण होय और तू मेरे परमपदको जाउ ५४ और जो कोई इसस्तोत्रको सुनैगा व पढ़ैगा अथवा लिखेगा सो मेरेसमान रूपको प्राप्तहोगा और मरणसमय में उसको मेरास्मरण होगा ५५ ऐसारामका कहाहुआ बचन उससमयमें जटायु सुनिकै परमआनन्द युक्तहो रघुनन्दनके समान रूपको प्राप्तहो ब्रह्मा करके पूजित जो लोक तिसको जाताहुआ ५६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेआरण्य
काण्डेभाषाटीकायामष्टमःसर्गः ८ ॥

ततोरामोलक्ष्मणेनजगामविपिनांतरम् ॥ पुनर्दुःखंसमाश्रित्यसीतान्वेषणतत्परः १ तत्राद्भुतसमाकारोराक्षसःप्रत्यदृश्यत ॥ वक्षस्येव महावक्त्रश्चक्षुरादिविवर्जितः २ बाहूयोजनमात्रेणव्याप्तौतस्यरक्षसः ॥ कबंधोनामदैत्येंद्रःसर्वसत्त्वविहिंसकः ३ तद्बाह्वोर्मध्यदेशेतौ चरंतौरामलक्ष्मणौ ॥ ददर्शतुर्महासत्त्वंतद्बाहुपरिवेष्टितौ४रामःप्रोवाचविहसन्पश्यलक्ष्मणराक्षसम् ॥ शिरःपादविहीनोऽयंयस्यवक्षासि चाननम् ५ बाहुभ्यांलभ्यतेयद्यत्तत्तद्भक्षन्स्थितोध्रुवम् ॥ आवामप्येतयोर्बाह्वोर्मध्येसंकलितोध्रुवम् ६ गंतुमभ्यत्रमार्गोनदृश्यतेरघुनंदन ॥ किंकर्त्तव्यमितोऽस्माभिरिदानींभक्षयेत्सनौ ७ ॥

दो० । नवमें सर्ग अरण्यके हति कबन्धको राम ॥
ताकीस्तुतिसुनिमुदितमनताहिदियोनिजधाम १ ॥

अब महादेवजी पार्वती से कहते हुये कि हे पार्वति तिसके उपरान्त राम लक्ष्मण करके सहित और बनको जातेहुये फिर दुःखकरके संतप्तहो सीताके ढूंढ़ने में तत्पर होतेहुये १ तिसवनमें अद्भुतहै रूप जिसका ऐसा राक्षस दिखाई देताहुआ छाती में तो जिसके बड़ाभारी मुखहै और नेत्र आदि करके रहितहै २ और तिस राक्षसकी चारकोसतक लम्बायमान भुजाहैं और कबन्ध जिसका नामहै और दैत्योंकाराजा और सब प्राणियों का मारनेवालाहै ३ उस राक्षस के दोनों भुजाओंके मध्य देशमें विचरते हुये जो राम औ लक्ष्मण ये दोनों उसके भुजाओं के लपेटे में फंसकरबड़ाभारी शरीर उसका देखतेहुये ४ तब राम हँसकरबोले हे लक्ष्मण इसराक्षसको देखो शिर औ पावों करके तो यह हीनहै और छाती में इसके मुखहै ५ भुजाओं करके जो जो प्राणी इसको

मिलते हैं उनको खैंचके भोजन करताहुआ एकजगहपर रहता है और हम दोनोंजने भी इसके भुजाओंके बीचमें आगये हैं ६ औ और जगहके जानेकी रास्ता कोई दिखलाई नहीं पड़ती है इससेहमको इससमयमें क्याकरना चाहिये क्योंकि यह अभी भक्षण करैगा हम दोनोंको भी ७ ॥

लक्ष्मणस्तमुवाचेदंकिंविचारेणराघव ॥ आवामेकैकमव्यग्रौछिंद्यांरक्षोभुजौध्रुवम् ८ तथेतिरामःखड्गेनभुजंदक्षिणमच्छिनत् ॥ यथैवलक्ष्मणोवामंचिच्छेदभुजमंजसा ९ ततोऽतिविस्मितोदैत्यःकौयुवांसुरपुंगवौ ॥ मद्बाहुच्छेदकौलोकेदिविदेवेषुवाकुतः १० ततोब्रवीद्धसन्नेवरामोराजीवलोचनः ॥ अयोध्याधिपतिःश्रीमान्राजादशरथोमहान् ११ रामोऽहंतस्यपुत्रोऽसौभ्रातामेलक्ष्मणःसुधीः ॥ ममभार्याजनकजासीतात्रैलोक्यसुन्दरी १२ आवांमृगययायातौतदाकेनापिरक्षसा ॥ नीतांसीतांविचिन्वंतौचागतौघोरकानने १३ बाहुभ्यांवेष्टितावत्रतवप्राणरिरक्षया॥छिन्नौतवभुजौत्वंचकोवाविकटरूपधृक्१४॥

तो लक्ष्मण कहतेहुये किहेराम बहुत विचारकरने से क्याहै अभीहमदोनों जने इसकी एकएकभुजा काटते हैं ८ फिर तैसेही राम तो उसराक्षसकी खड्गकरके दक्षिणभुजा काटते हुये और लक्ष्मण बांईं भुजाकाटते हुये ९ तबतो वह दैत्य बड़ाआश्चर्य युक्तहो पूछताहुआ कि मेरे भुजाओं के काटनेवाले तुम दोनों देवतों में श्रेष्ठ कौनहौ मनुष्यलोक में कोई हौ अथवा स्वर्गलोक में कोई हौ अर्थात् मनुष्यलोकमें और स्वर्ग में कोई ऐसाहै ही नहीं इससे कोई औरही होउगे तौ कौनहौ १० तौ कमलतुल्य विशाल नेत्र जो राम सो हँसकरके बोलते हुये कि अयोध्यानगरी का पति बड़ा लक्ष्मीयुक्तजो राजादशरथ ११ तिसकापुत्र रामनाम करके मैंहौं और यह लक्ष्मणनाम करके बड़ा बुद्धिमान् मेराभाई है और जनककी पुत्री तीनोंलोकमें सुन्दरी सीता सोमेरीभार्याहै १२ और हमदोनोंजने जब शिकारको गयेथे तब किसी राक्षसने उस सीताको हर लिया तौ सीताको ढूंढतेढूंढते इस घोरबनमें प्राप्तहुये १३ फिर इसबनमें भी तुम्हारी भुजाओं के बीचमें पड़गये तब अपने प्राणों की रक्षाके लिये तुम्हारी भुजा काटडाली सो तुम ऐसे भयंकररूपको धारणकरे कौनहौ १४ ॥

कबंधउवाच ॥ धन्योऽहंयदिरामस्त्वमागतोऽसिममांतिकम् ॥ पुरागंधर्वराजोऽहंरूपयौवनदर्पितः १५ विचरँल्लोकमखिलंवरनारीमनोहरः ॥ तपसाब्रह्मणोलब्धमवध्यत्वंरघूत्तम १६ अष्टावक्रंमुनिंदृष्ट्वा

कदाचिदहसंपुरा॥ क्रुद्धोसावाहदुष्टत्वंराक्षसोभवदुर्मते १७ अष्टाव क्रःपुनःप्राहवन्दितोमेदयापरः॥ शापस्यान्तंचमेप्राहतपसाद्योतितं प्रभः १८ त्रेतायुगेदाशरथिर्भूत्वानारायणःस्वयम्॥ आगमिष्यतिते बाहूच्छिद्येतेयोजनायतौ १९ तेनशापाद्विनिर्मुक्तोभविष्यसियथापुरा॥ इतिशप्तोऽहमद्राक्षंराक्षसींतनुमात्मनः २० कदाचिद्देवराजानमभ्य द्रवमहंरुषा॥ सोऽपिवज्रेणमांरामशिरोदेशेऽभ्यताडयत् २१॥

तबकबन्धबोलाजोतुम रामहो और मेरे समीप आके प्राप्तहुयेहो इससेमैं धन्यहों हेराम पहिलेरूप और यौवन अवस्थाके गर्वकरके युक्तगन्धर्व राजमैं था १५ सो श्रेष्ठस्त्रियोंके मनकाहरनेवाला मैं सबलोकमें विचराकरताथा और हेराम ब्रह्माके तपके प्रभाव से मुझको अवध्यत्व प्राप्तहुआ अर्थात् किसीसे मृत्युन होना १६ फिर एकसमय अष्टावक्रमुनि को देखके मैं हँसताहुआ तबवे मुनि क्रोध करके मुझसे बोले कि अरेदुष्ट तू राक्षसहोजा १७ तौ मैंने चरणों तरपडके प्रसन्न किया तो तपकरके प्रकाशमान और परमदयालु अष्टावक्रमुनि मेरेशाप का अन्तकहतेहुये १८ कित्रेतायुग में साक्षात् नारायण जब दशरथके पुत्र होके बनमें आवैंगे और उन राम करके योजनभर लम्बीतेरी भुजा काटी जावैंगी १९ तब तू शापसे छूटिकै पहिलेकेसे रूपको प्राप्त होगा हेराम इसप्रकार शाप को प्राप्तहुआ जो मैं सो अपने राक्षसके शरीरको देखताहुआ २० हेराम फिरकिसी समयमें मैं क्रोधकरके इन्द्रके सन्मुख दौड़ा तौ इन्द्र मेरे शिरके ऊपर वज्रकाप्रहार करते हुये २१॥

तदाशिरोगतंकुक्षिम्पादौचरघुनन्दन॥ ब्रह्मदत्तवरान्मृत्युर्नाभू न्मेवज्रताडनात् २२ मुखाभावेकथंजीवे दयामित्यमराधिपम्॥ ऊचु स्सर्वेदयाविष्टामांविलोक्यास्यवर्जितम् २३ ततोमांप्राहमघवाजठरे तेमुखम्भवेत्॥ बाहूतेयोजनायामौभविष्यतइतोव्रज २४ इत्युक्तो ऽत्रवसन्नित्यंबाहुभ्यांवनगोचरान्॥ भक्षयाम्यधुनाबाहू खण्डितौ मेत्वयाऽनघ २५ इतःपरम्मांश्वभ्रास्येनिक्षिप्याग्नींधनावृते॥ अ ग्निनादह्यमानोऽहंत्वयारघुकुलोत्तम२६ पूर्वरूपमनुप्राप्यभार्यामार्गं वदामिते॥ इत्युक्तेलक्ष्मणेनाशुश्वभ्रन्निर्मायतत्रतम् २७ निक्षिप्य प्रादहत्काष्ठैस्ततोदेहात्समुत्थितः॥ कन्दर्पसदृशाकारःसर्वाभरणभू षितः २८॥

तब हे रघुनन्दन मेराशिर औरदोनों पांव येकोंखमें सिमिटके मिलजातेहुये परन्तु ब्रह्माजीके वरदानके प्रभावसे वज्रके ताडनसे भी मेरीमृत्यु नहींहुई २२ फिर दयायुक्त सबदेवता मुखरहित मुझको देखके मुखके बिना यहकैसेजीवैगा यह इन्द्रसे कहतेहुये २३ तब इन्द्र मुझसेबोले कि हे राक्षस उदरमें तेरामुख होजायगा और चारकोसतक लंबीतेरी भुजा होवैंगी और पांवों के बिना भी घुटुओंसे सकिलाकरैगा २४ ऐसे इन्द्र करके कहाहुआ मैं नित्य इसबनमें बसताहुआ भुजाओं करके बनके जीवोंको खैंचकर भक्षण करनेलगा हेअनघ पापरहित सो भुजा आपने काटिकै खण्ड खण्ड करडालीं २५ और हे राम इसके उपरान्त अब एकगढ़हा खोदके उसके भीतर बहुतसा ईंधन और मेरा शरीर डालके उसमें अग्निदेदीजिये फिर जब अग्निकरके मैं भस्महोवोंगा २६ तब पहिलेके गन्धर्बरूपको प्राप्तहोके तुम्हारी भार्याको मार्गबतलावोंगा ऐसाबचन जब उसने कहा तो राम लक्ष्मण से बड़ाभारी गढ़हा खुदवाइ के फिर उसमें उसके शरीरको डालके २७ बहुतसी लकड़ी करके जलाते हुये फिर उसकी जलती देहमें से एकपुरुष निकलताहुआ कामदेवके समानहै रूप जिसका और संपूर्ण आभूषणों को धारणकरे है २८ ॥

रामंप्रदक्षिणंकृत्वासाष्टांगंप्रणिपत्यच ॥ कृतांजलिरुवाचेदंभक्तिगद्गदयागिरा २९ ॥ गन्धर्वउवाच ॥ स्तोतुमुत्सहतेमेऽद्यमनोरामातिसंभ्रमात् ॥ त्वामनन्तमनाद्यंतंमनोवाचामगोचरम् ३० सूक्ष्मंतेरूपमव्यक्तन्देहद्वयविलक्षणम् ॥ दृग्रूपमितरत्सर्वंदृश्यंजडमनात्मकम् ॥ तत्कथंत्वांविजानीयाद्व्यतिरिक्तंमनःप्रभो ३१ बुद्ध्यात्माभासयोरैक्यंजीवइत्यभिधीयते ॥ बुद्ध्यादिसाक्षीब्रह्मैवतास्मिन्निर्विषयेऽखिलम् ३२ आरोप्यतेऽज्ञानवशान्निर्विकारेऽखिलात्मनि ॥ हिरण्यगर्भस्तेसूक्ष्मंदेहंस्थूलंविराट्स्मृतम् ३३ भावनाविषयोरामसूक्ष्मंतेध्यातृमंगलम् ॥ भूतंभव्यंभविष्यच्चयत्रेदंदृश्यतेजगत् ३४ स्थूलेऽण्डकोशेदेहेतेमहदादिभिरावृते ॥ सप्तभिरुत्तरगुणैर्वैराजोधारणाश्रयः ३५

फिरवहपुरुष रामको प्रदक्षिणा करके औ साष्टांग दण्डवत् प्रणामकर हाथ जोड़के भक्तिसे गद्गदबाणी करके यहबचन बोलताहुआ २९ हेरामइससमय में आदिअन्तकरके रहित और मनबाणी के अगोचर और अनन्त ऐसेजोआप हैं तिनकी स्तुति करने को मेरामन अतिआदर से उत्साहकररहाहै ३० हे राम बिराट् हिरण्यगर्भरूप जो स्थूल सूक्ष्म जो दो देह तिनसे विलक्षणनाम और

तरहका ऐसा केवल ज्ञानरूप तुम्हारा सूक्ष्मरूपहै फिर वह कैसाहै जो अव्यक्त है योगियोंकोभी दुःखकरके जानिबेको अशक्य और संपूर्ण जगत् जड़है क्योंकि दृश्यहै इसकारण से और इसीसे अनात्महै अर्थात् आत्मासे भिन्नहै तो हेराम दृश्य और जड़ ऐसा जो मनहै सो साक्षिरूप जो आपहैं तिनको कैसे जानिसकै ३१ और चित्तमें जो आत्माका प्रतिबिम्ब तिसका जो चित्तके साथ ऐक्यअर्थात् कुछ भेदकरके न जानाजाय दोनोंमिलके एकही जानाजाय उसको जीव कहते हैं सो वह जीव वास्तवमें बुद्ध्यादिकोंका साक्षी है और ब्रह्महीहै जिसकारणसे निर्विषय अर्थात् बाणी और मन इनके अगोचर निर्विकारजो तुमहो तिनमें ३२ अज्ञानवशसे संपूर्ण जगत् आरोपितहै अर्थात् रज्जुमें सर्पकीनाईं झूठाही मानरक्खाहै और हे राम हिरण्यगर्भ आपकासूक्ष्म देहहै और विराट् आपकास्थूलदेहहै ॥ इसका आशय यहहै कि पहिले जो शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध और पांच ज्ञानेन्द्रिय और पांचकर्मेन्द्रिय और मन बुद्धि अहंकार यह अठारह तत्त्व का जो लिंगशरीर कहि आयेहैं उन सब जीवोंकेलिंगशरीरोंका जो समूहहै उसको हिरण्यगर्भ कहतेहैं ऐसेही सबके स्थूलशरीरोंके समूहको बिराट् कहते हैं ३३ और हेराम तिसमें जो आपका सूक्ष्मशरीरहै सो हृदयरूपकमलमें ध्यानकरिबेयोग्यहै और ध्यानकरने वालोंको मंगल कादेनेवालाहै और जिसके ध्यानकरनेसे भूत भविष्यत् वर्त्तमान तीनकालकेपदार्थ दिखाई पड़तेहैं ३४ और हे राम उत्तरोत्तरदशगुणित वृद्धि कोप्राप्तजो महदादि सात आवरण तिन्हों करके आवृत जो ब्रह्माण्ड वही हुआ आपका स्थूलशरीर तिसका अभिमानी जो वैराज पुरुष सो ध्यानकरिबे योग्यहै ॥ इसका आशय यहहै कि ब्रह्माण्ड केमध्यमें चौदह लोकोंका ब्रह्माका स्थूलशरीरहै सो ब्रह्माण्ड दशगुणी पृथिवी करके आवृतहै अर्थात् ढका हुआहै और वह पृथिवीभी अपनासे दशगुनेजल करके ढकी हुईहै और जल अपने से दशगुने तेजकरके ढकाहुआ है और तेज अपनासे दशगुने पवनकरके ढकाहै और पवन अपना से दशगुने आकाशकरके ढकाहै और आकाश अपनासे दशगुने अहंकारकरके ढकाहै और अहंकार अपने से दशगुने महत्तत्त्व करके ढकाहुआहै ३५ ॥

त्वमेवसर्वंकैवल्यंलोकास्तेऽवयवाःस्मृताः ॥ पातालंतेपादमूलंपार्ष्णिस्तवमहातलम् ३६ रसातलंतेगुल्फौतुतलातलासितीर्यते ॥ जानुनीसुतलंरामऊरूतेवितलंतथा ३७ अतलंचमहीरामजघनंनाभिगंनभः ॥ उरःस्थलंतेज्योतींषिग्रीवातेमहउच्यते ३८ वदनंजनलोकस्तेतपस्तेशंखदेशगम् ॥ सत्यलोकोरघुश्रेष्ठशीर्षण्यास्तेसदाप्रभो ३९

इंद्रादयो लोकपालाबाहवस्तेदिशःश्रुती ॥ अश्विनौनासिकेरामव क्त्रंतेग्निरुदाहृतः ४० चक्षुस्तेसवितारामगनश्चंद्रउदाहृतः ॥ भ्रूभंगएवकालस्तेबुद्धिस्तेवाक्पतिर्भवेत् ४१ रुद्रोऽहंकाररूपस्ते वाचश्छंदांसितेऽव्यय ॥ यमस्तेदंष्ट्रदेशस्थोनक्षत्राणिद्विजालयः ४२ ॥

और हेराम अन्तमें प्राप्तहोने योग्यएक परमार्थवस्तुसबके आपहीहौ और सब लोक आपके अंगहैं तिसमें पाताललोक जोहै सो आपके पांवोंकातरवा है और महातललोक आपकी एंड़ीहै ३६ और रसातललोक आपके पांवोंकी गांठी है और तलातललोक आपकी पिंडुरी है और सुतललोक आपके घुटने हैं और वितललोक आपके ऊरूहैं अर्थात् जंघा हैं ३७ और अतललोक जांघोंकेनीचेका भागहै और पृथिवी लोकजांघकाऊर्ध्वभागहै और अंतरिक्षलोक आपकी नाभि नामतोंदीहै और नक्षत्रलोक आपकी छातीहै और महर्लोक आपकी गर्दनहै ३८ और जनलोक आपकामुखहै और तपलोक आपकामस्तकहै और सत्यलोक आपकाशिरहै ३९ और इन्द्रआदि आठलोकपाल आपकी भुजा हैं और दिशा आपके कानहैं और हे राम अश्विनीकुमार आपकी नाकहैं और अग्नि आपका मुख है ४० और हे राम सूर्य आपके नेत्रहैं और चन्द्रमा आपका मनहै और काल आपकी भौंह है और बृहस्पति आपकी बुद्धिहैं ४१ और रुद्र आपका अहंकारहै और वेद आपकी वाणीहै और यमराज आपकी दाढ़हैं और नक्षत्र आपके दांत हैं ४२ ॥

हासोमोहकरीमायासृष्टिस्तेपांगमोक्षणम् ॥ धर्मःपुरस्तेऽधर्मश्च पृष्ठभागउदीरितः ४३ निमिषोन्मेषणेरात्रिर्दिवाचैवरघूत्तम ॥ समुद्राःसप्तकुक्षिर्नाड्योनद्यस्तवप्रभो ४४रोमाणिवृक्षौषधयोरेतोवृष्टिस्तवप्रभो ॥ महिमाज्ञानशक्तिस्तेएवंस्थूलंवपुस्तव ४५ यदस्मिंस्थूलरूपेतेमनःसंधार्यतेनरैः ॥ अनायासेनमुक्तिःस्यादतोन्यन्नहिकिंचन ४६ अतोहंरामरूपंतेस्थूलमेवानुभावये ॥ यस्मिन्ध्यातेप्रेमरसःसरोमपुलकोभवेत् ४७ तदेवमुक्तिःस्याद्रामयदातेस्थूलभावकः ॥ तदप्यास्तांतवैवाहमेतद्रूपंविचिंतये ४८ धनुर्बाणधरंश्यामंजटावल्कलभूषितम् ॥ अपीच्यवयसंसीतां विचिन्वंतंसलक्ष्मणम् ४९ ॥

और सब जीवोंको मोह करनेवाली जो माया सो आपकी हास्यहै और अनेक प्रकारकी जो सृष्टिहै सोई आपका कटाक्षमोक्षणहै अर्थात् देखनाहै और धर्मजो है सो आपका अगाड़ी का भागहै अर्थात् छाती है और अधर्म आपका

पिछाड़ीका भागहै अर्थात् पीठिहै ४३ औहे राम दिन औ रात्रि आपके नेत्रों का खोलना और मूंदनाहै और सातो समुद्र आपकी कोखिहैं और सब नदियां आपके शरीर के भीतर की नाड़ी हैं ४४ औरवृक्ष और ओषधि अर्थात् यवआदि ये सब आपके रोमहैं और हे प्रभो जलकी वृष्टिजो है सो आपका वीर्यहै औ ज्ञानशक्ति जो है सोई आपकी महिमाहै अर्थात् सबसे अधिक है जो आपमें ज्ञानशक्ति है सो कहीं नहीं है यहआपका स्थूलरूपहै ४५ जो इस आपके स्थूल रूपके मनुष्योंकरके मनधारण कियाजाताहै तौ अनायासही करके अर्थात् थोड़ेही परिश्रमसे मुक्तिसिद्धि होतीहै इससे अधिक और कुछनहीं है ४६ इसकारणसे हेराम मैं आपके स्थूलरूपही का ध्यान करताहूं जिसके ध्यानकरनेसे जिसमें रोमावली खड़ीहोतीहै ऐसा प्रेमरस उत्पन्न होताहै और प्रेम उसीको कहतेहैं जहां यह हमारे आगे सदाबनाहीरहैऔर कभी अलग न होय ऐसा भावहोय ४७ ऐसेप्रेम करके जब आपके स्थूल रूपका ध्यान करताहै तभीमुक्ति होतीहै अथवा हे राम जो कदाचित् यह आपके बिराट्रूप स्थूलरूपका ध्यान अशक्यहोय अर्थात् न होसकै तौ यहभीरहो मैंतौ यह प्रत्यक्ष नेत्रोंके आगे ४८ धनुर्बाण को धारण करे श्यामसुन्दर और जटाबल्कल करके भूषितऔ तरुण अवस्था करके युक्त और सीता को ढूंढ़रहा और लक्ष्मण करके युक्त ४९ ॥

इदमेवसदामेस्यान्मानसेरघुनन्दन ॥ सर्वज्ञःशंकरःसाक्षात्पार्वत्यासहितःसदा ५० त्वद्रूपमेवंसततंध्यायन्नास्तेरघूत्तम ॥ मुमूर्षूणां सदाकाश्यांतारकंब्रह्मवाचकम् ५१ रामरामेत्युपदिशन् सदासंतुष्टमानसः ॥ अतस्त्वंजानकीनाथपरमात्मासुनिश्चितः ५२ सर्वेतेमाययामूढास्त्वांनजानन्तितत्त्वतः॥नमस्तेरामभद्रायवेधसेपरमात्मने ५३ अयोध्याधिपतेतुभ्यंनमःसौमित्रिसेवित ॥ त्राहित्राहिजगन्नाथमांमायानावृणोतुते ५४ रामउवाच ॥ तुष्टोऽहंदेवगन्धर्वभक्त्यास्तुत्याचतेऽनघ ॥ याहिमेपरमंस्थानंयोगिगम्यंसनातनम् ५५ जपंतियेनित्यमनन्यबुद्ध्याभक्त्यात्वदुक्तंस्तवमागमोक्तम् ॥ तेऽज्ञानसंभूतभवंविहायमांयांतिनित्यानुभवानुमेयम् ५६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादे आरण्यकाण्डे नवमःसर्गः ९ ॥

हे रघुनन्दन यही रूप सदा मेरे मनमें रहै क्योंकि पार्वती करके सहित स-

र्वज्ञ जो साक्षात् महादेवजी सो भी सदा ५० हे राम इसी रूपको ध्यान करते रहतेहैं और काशीजीमें मरण समय में सदा तारक ब्रह्म का वाचक जो रामराम यह मन्त्र तिसका जीवोंको उपदेश करते हुये ५१ सदा संतुष्ट मन रहते हैं अर्थात् तारकमन्त्रके उपदेशही करके प्राणियोंके उद्धारका निश्चयकर निश्चिन्त रहतेहैं इससे हे जानकीनाथ आप निश्चय करके परमात्माहैं और जो मनुष्य होते तौ महादेवजी क्यों ध्यान करते और कैसे उपदेश करतेहैं ५२ और जे कोई आपकी मायाकरके मोहित हैं तेतत्त्वकरके आपको नहीं जानतेहैं और ऐसे सबके रचनेवाले परमात्मा रामभद्र नामकरके जो आपहैं तिनके अर्थ मेरा नमस्कारहै ५३ और हे अयोध्यानगरीके पति औ हे सुमित्राके पुत्र अर्थात् लक्ष्मणकरके सेवित तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै वास्तव में तौ व्याकरणकी रीतिसे युद्धकरनेको जोअशक्यहै अर्थात् जिसमें किसी शस्त्र अस्त्र काप्रहार न होसके उसको अयोध्याकहते हैं ऐसी कौनहुई माया तिसकेआप अधिपतिनाम स्वामीहैं और सुमित्रा जोब्रह्मविद्या तिसका जोपुत्रहोय अर्थात् दायभागी होय ऐसा कौनहुआ ज्ञानी तिसकरके सेवित जोआप परमात्मा तिनको नमस्कारहै और हे जगन्नाथ मेरी रक्षाकरिये जिससे आपकी माया मेरा आवरण नकरै अर्थात् न ढांकलेवे ५४ तब श्रीराम बोलतेहुये कि हे गन्धर्व मैं तेरी भक्तिकरके और स्तुति करके प्रसन्नहौं औ हे अनघ निष्पाप योगियोंको प्राप्तिहोनेके योग्य सनातन जोमेरा उत्कृष्टस्थान तिसको तुमप्राप्त होउ ५५ और यह जोसकल शास्त्र सम्मत तुम्हारा कियाहुआ स्तोत्रहै तिसको जोकोई पुरुष नित्यएकाग्र बुद्धिकरके पढ़ैंगे ते अज्ञानसे उत्पन्न हुआ जो संसार तिसको त्यागकरके नित्यज्ञानकरके जानिबे योग्य जो मैं हूं तिसको प्राप्त होंगे ५६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेआरण्यकाण्डे भाषाटीकायांनवमःसर्गः ९ ॥

लब्ध्वावरंसगन्धर्वःप्रयास्यन्राममब्रवीत् ॥ शबर्यास्तेपुरोभागे आश्रमेरघुनन्दन १ भक्त्यात्वत्पादकमलेभक्तिमार्गविशारदा ॥ तां प्रयाहिमहाभागसर्वंतेकथयिष्यति २ इत्युक्त्वाप्रययौसोऽपिविमाने नार्कवर्चसा ॥ विष्णोःपदंरामनामस्मरणेफलमीदृशम् ३ त्यक्त्वात द्विपिनंघोरंसिंहव्याघ्रादिदूषितम् ॥ शनैरथाश्रमपदंशबर्यारघुनन्दनः ४ शबरीराममालोक्यलक्ष्मणेनसमन्वितम् ॥ आयांतमाराद्धर्षेणप्र त्युत्थायाचिरेणसा ५ पतित्वापादयोरग्रेहर्षपूर्णाश्रुलोचना ॥ स्वाग

तेनाभिनंद्याथस्वासनेसन्न्यवेशयत् ६ रामलक्ष्मणयोःसम्यक्पादौ प्रक्षाल्यभक्तितः ॥ तज्जलेनाभिषिच्यांगमथार्घ्यादिभिराद्दता ७ ॥

दो०। दशमसर्ग लक्ष्मण सहित शबरी बन्दित राम ॥
खाइ मधुरफल भक्तिफल दैपठई निजधाम १

अब श्री महादेवजी पार्वती से कथा कहते हैं हे पार्वति इस प्रकार वह गंधर्व राम से बरको प्राप्तहो अपने स्थानको जाताहुआ रामसे बोला कि हेरघुनन्दन इहां से दिखाई पड़ता जो आश्रमहै तिसमें एक शबरी रहती है १ सो आप की भक्ति करके आपके चरण कमलके भक्तिमार्ग में बड़ी चतुरहै इससे हे महाभाग तिसके समीप आपजाइये वह सब सीताकी खबरि आपसे कहैगी २ ऐसा बचन कहिकै वह गन्धर्व सूर्यके तुल्य प्रकाशमान विमानके ऊपरचढ़िकै विष्णुपद जो स्वर्ग तिसको जाताहुआ ऐसा राम नामके स्मरणका फलहै ३ अब रामचन्द्र भी उस सिंह व्याघ्रादि युक्त घोर बनको छोड़के धीरेधीरे शबरी के आश्रमको जातेभये ४ अब शबरी भी लक्ष्मण सहित रामको दूरही से आवते देखके बड़े आनन्दके वेगसे शीघ्रही उठकर ५ और पांवोंके आगे गिर के आनन्द से भरीहुई औरनेत्रोंसे आनन्दके अश्रुपात करतीहुई अच्छा आपका आगमन हुआ यह पूंछके सुखपूर्वक आसनके ऊपर बैठालती हुई ६ फिर राम लक्ष्मणके चरणोंको बड़ी भक्तिसे अच्छीतरह धो करके उस जलसे अपने अंगको सींचकरके फिर अर्घआदि सामग्रियों करके ७ ॥

संपूज्यविधिवद्रामं ससौमित्रिंसपर्यया॥संगृहीतानिदिव्यानिरामार्थं शबरीमुदा ८ फलान्यमृतकल्पानिददौरामायभक्तितः॥ पादौसंपूज्यकुसुमैःसुगंधैःसानुलेपनैः ९ कृतातिथ्यंरघुश्रेष्ठमुपविष्टंसहानुजम् ॥ शबरीभक्तिसंपन्ना प्रांजलिर्वाक्यमब्रवीत् १० अत्राश्रमेरघुश्रेष्ठगुरवोमेमहर्षयः॥ स्थिताःशुश्रूषणंतेषांकुर्वतीसमुपस्थिता ११ बहुवर्षसहस्राणिगतास्तेब्रह्मणःपदम् ॥ गमिष्यंतोऽब्रुवन्मांत्वंवसात्रैवसमाहिता १२ रामोदाशरथिर्जातःपरमात्मासनातनः॥राक्षसानां बधार्थायऋषीणांरक्षणायच १३ आगामिष्यतिचैकाग्रध्याननिष्ठास्थिराभव ॥ इदानींचित्रकूटाद्रावाश्रमेवसतिप्रभुः १४ ॥

बड़े आदरसे राम और लक्ष्मण इनका पूजनकरके फिरबहुत दिनोंसे अमृतके तुल्य दिव्य मधुरफलजोशबरीने रामके अर्थसञ्चितकर रक्खेथे ८ तिन फलोंको रामको प्रेमसे देतीहुई और चन्दन सहित सुगंधित पुष्पों से चरणों

का पूजन करके ९ फिर करा सत्कार जिन्होंका ऐसे जो सुखपूर्वक आसन पै बैठे लक्ष्मण सहित राम तिनसे भक्तियुक्त शवरी हाथ जोड़कर बचन बोलती हुई १० हे राम इस आश्रममें महर्षि लोग मेरे गुरु बहुत हजार बर्षतक स्थित रहे और मैं भी उनकी शुश्रूषा करतीहुई उनके समीप स्थितरही ११ और इस समयमें जब वे ब्रह्मलोकको जानेलगे तौ मुझसे कहतेहुये कि तू एकाग्रचित्त होके अभी इस आश्रमही में स्थित रहु १२ क्योंकि जो सनातन परमात्माहैं सोई दशरथके पुत्र रामनाम करके हुये सो राक्षसोंके मारने को और ऋषियोंकी रक्षा करने को इस बनमें आवेंगे १३ इससे तू एकाग्रचित्त होके ध्यानमें परायण यहां स्थितरहु और इस समयमें तौ वे सबके स्वामी राम चित्रकूट पर्वतपै वासकरते हैं १४ ॥

यावदागमनंतस्य तावद्रक्षकलेवरम् ॥ दृष्ट्वैवराघवंदग्ध्वा देहंया स्यसितत्पदम् १५ तथैवाकरवंरामत्वद्ध्यानैकपरायणा ॥ प्रतीक्ष्यागमनंतेऽद्यसफलंगुरुभाषितम् १६ तवसंदर्शनंरामगुरूणामपिमेनहि ॥ योषिन्मूढाऽप्रमेयात्मन्हीनजातिसमुद्भवा १७ तवदासस्य दासानांशतसंख्योत्तरस्यवा ॥ दासीत्वेनाधिकारोऽस्तिकुतःसाक्षात्तवैवहि १८ कथंरामाद्यमेदृष्टस्त्वंमनोवागगोचरः ॥ स्तोतुंनजानेदेवेशकिंकरोमिप्रसीदमे १९ ॥ श्रीरामउवाच ॥ पुंस्त्वेस्त्रीत्वेविशेषोवाजातिनामाश्रमादयः ॥ नकारणंमद्भजनेभक्तिरेवहिकारणम् २० यज्ञदानतपोभिर्वावेदाध्ययनकर्मभिः ॥ नैवद्रष्टुमहंशक्योमद्भक्तिविमुखैःसदा २१ ॥

इससे जबतक रामका यहां आगमन न होवै तबतक अपने शरीरकी रक्षा कर फिर रामचन्द्रजीका दर्शनकरि अपने शरीरको अग्निमें भस्मकरके उनके लोकको प्राप्तहोगी १५ हेराम ऐसाकहके वेसब महर्षि ब्रह्मलोकको जाते हुये और मैं आपके आवनेकी राहनिहारतीहुई तुम्हारे ध्यानमें परायण होके जैसे गुरुओंने कहाथा तैसेही करतीहुई सोसब सफलहुआ १६ और हे राम जो आपका दर्शन मेरे गुरुओंको भी नहींहुआ और मैं तो स्त्री तिसपै भी मूढ़ और हीन जाति में उत्पन्नहुई १७ इससे आपके दासके दास का जो दास तिसका जो दास इसक्रमकरके जो सौतक गिनै तिसके अन्त में जो दासहोवै तिसकी दासी होने का भी मेरा अधिकार नहीं है और साक्षात् आपकीदासीहोऊं यह क्या कहनाहै १८ और जो तुममन और वाणी इनकेभी अगोचरसो मैंने कैसे देखे यह मैं नहींजानसक्ती और हेदेवतोंकेईश मैंआपकी

स्तुतिकरना भी नहीं जानती हौं इससे मेरेऊपर प्रसन्नहूजिये १९ तब श्रीरामचन्द्र कहतेभये कि हे शबरि पुरुष औ स्त्री औ और जाति और आश्रम ये मेरे भजन में कोई कारण नहीं हैं केवल भक्तिही कारणहै अर्थात् प्रेमही मेरेभजन में मुख्यकारणहै २० और सदा मेरी भक्तिसे बिमुखजे पुरुषहैं तिनको यज्ञ और दान और तप औ वेद का पढ़ना इनको आदि लेके कर्मोंकरके मैं देखने को शक्य नहीं हौं २१ ॥

तस्माद्भामिनिसंक्षेपाद्वक्ष्येऽहंभक्तिसाधनम् ॥ सतांसंगतिरेवात्र साधनंप्रथमंस्मृतम् २२ द्वितीयंमत्कथालापस्तृतीयंमद्गुणेरणम्॥ व्याख्यातृत्वंमद्वचसांचतुर्थंसाधनंभवेत् २३ आचार्योपासनंभद्रेमद्बुद्ध्यामाययासदा ॥ पञ्चमंपुण्यशीलत्वंयमादिनियमादिच २४ निष्ठामत्पूजनेनित्यंषष्ठंसाधनमीरितम् ॥ ममसन्त्रोपासकत्वंसांगंसप्तमसुच्यते २५ मद्भक्तेष्वाधिकापूजासर्वभूतेषुमन्मतिः ॥ बाह्यार्थेषु विरागित्वंशमादिसहितन्तथा २६ अष्टमंनवमन्तत्त्वविचारोममभामिनि ॥ एवंनवविधाभक्तिसाधनंयस्यकस्यवा २७ स्त्रियोवापुरुषस्यापितिर्यग्योनिगतस्यवा॥भक्तिःसञ्जायतेप्रेमलक्षणाशुभलक्षणे२८॥

तिससे हे भामिनि अपनी भक्तिका साधन संक्षेप से मैं तुम्हसे कहताहौं इस लोकमें सत्पुरुषों का संग होना यह मेरी भक्तिका पहिला साधनहै २२ और मेरी कथाका कहना वा सुनना यह दूसरा साधन हैं और मेरे गुणोंका कीर्तन तीसरा साधन है और मेरे स्वरूपके प्रतिपादन करनेवाले उपनिषद् आदि वाक्योंका व्याख्यान करना चौथा साधन है २३ औरहे भद्रे कल्याणस्वरूपे मेरी बुद्धिसे कपट को त्याग करके गुरुकी सेवा करना पांचवांसाधन है और पुण्यमें प्रीति करना और किसीकी हिंसानहीं करनी और न चोरी करनी औरसत्यवचन आदि यमका सेवन करना और शौच संतोष तप वेदाध्ययन परमेश्वर का ध्यान आदि नियम करना २४ और मेरे पूजन में तत्पर रहनायहछठां साधनहै और अंगसहित मेरे मन्त्रका जपकरना सातवांसाधन है २५ और मुझसेभी अधिक मेरे भक्तोंकी पूजा अर्थात् सत्कार करना और सबप्राणियोंमें मेरी बुद्धिकरना और संसारके भोगोंसे वैराग्य होना और मन आदि इन्द्रियोंका वशकरना यहआठवां साधनहै २६ और वेदान्तशास्त्रोक्त तत्त्वमस्यादि महावाक्यों करके तत्त्वपदार्थके एकताका बिचारकरना नववां साधनहै अर्थात् मैं ब्रह्महीहौं ऐसा बिचारकरना नववां साधनहै हे भामिनि इसप्रकार करके नवप्रकारकी भक्ति जिस किसीको होय २७ चाहे स्त्रीको

चाहै पुरुषको अथवा तिर्यग्योनि जोशूकरादिक तिसकोभी जोहोय तौ उसको प्रेमलक्षणा मेरी भक्ति उत्पन्नहोतीहै २८ ॥

भक्तौसंजातमात्रायांमत्तत्त्वानुभवस्तदा ॥ ममानुभवसिद्धस्यमुक्तिस्तत्रैवजन्मनि २९ स्यात्तस्मात्कारणंभक्तिर्मोक्षस्येतिसुनिश्चितम् ॥ प्रथमंसाधनंयस्यभवेत्तस्यक्रमेणतु ३० भवेत्सर्वंततोभक्तिर्मुक्तिरेवसुनिश्चितम् ॥ यस्मान्मद्भक्तियुक्तात्वंततोऽहंत्वामुपस्थितः ॥ ३१ इतोमद्दर्शनान्मुक्तिस्तवनास्त्यत्रसंशयः ॥ यदिजानासिमेब्रूहि सीताकमललोचना ३२ कुत्रास्तेकेनवानीताप्रियामेप्रियदर्शना ३३ शबर्य्युवाच ॥ देवजानासिसर्वज्ञसर्वंत्वंविश्वभावन ॥ तथाऽपिपृच्छसेयन्मांलोकाननुसृतःप्रभो ३४ ततोऽहमभिधास्यामिसीतायत्राधुनास्थिता ॥ रावणेनहृतासीतालंकायांवर्त्ततेधुना ३५ ॥

फिर प्रेम भक्तिके होनेके अनन्तर मेरे स्वरूपका ज्ञानहोताहै मेरे स्वरूपके साक्षात्कारके होने से तौ इसी जन्ममें मुक्तिहोती है २९ तिससे भक्तिही मोक्ष का कारण निश्चय करके है और जिसको पहिला साधन सत्संगहोता है उसको क्रम करके फिर सब साधन होते हैं ३० फिर प्रेम लक्षणा भक्ति होतीहै तिससे फिर मुक्ति होती है यह निश्चयहै और जिस कारणसे तू मेरी प्रेम लक्षणा भक्ति करके युक्तहै इससे मैं तेरे समीप प्राप्त हुआहौं ३१ अब इस मेरे दर्शन से तेरीमुक्ति होगी इसमें कुछ संदेह नहीं है और कमल तुल्य हैं नेत्र जिस के और प्रिय है दर्शन जिसका ऐसी जोमेरीप्यारी सीताहै ३२ तिसको तू जानतीहो तौ वह कहांहै और कौनलेगयाहै सो बतलाउ ३३ तब शवरी कहतीहुई कि हे देव हेसर्बज्ञ हेविश्वभावन विश्वकेरचनेवाले आपसब जानतेही हौ तौ भी हे प्रभो मनुष्यलोकके अनुसार से ३४ अर्थात् मर्यादासे मुझसे जोपूछतेहौ सोमैं सबकहतीहौं जहां इससमयमें सीता स्थितहै रावण ने सीताहरीहै और इससमयमें लंकामें है ३५ ॥

इतःसमीपेरामास्तेपंपानामसरोवरम् ॥ ऋष्यमूकगिरिर्नामतत्समीपेमहानगः ३६ चतुर्भिर्मंत्रिभिःसार्द्धंसुग्रीवोवानराधिपः ॥ भीतभीतःसदातत्रातिष्ठत्यतुलविक्रमः ३७ वालिनश्चभयाद्भ्रातुस्तदागम्यमृषेर्भयात् ॥ वालिनस्तत्रगच्छत्वंतेनसख्यंकुरुप्रभो ३८ सुग्रीवेणससर्वंतेकार्यंसम्पादयिष्यति ॥ अहमग्निंप्रवेक्ष्यामितवाग्रेरघुनन्दन३९मुहूर्तंतिष्ठराजेन्द्रयावद्दग्ध्वाकलेवरम् ॥ यास्यामिभगवन्

रामतवविष्णोःपरम्पदम् ४० इतिरामंसमामंत्र्यप्रविवेशहुताशनम् ॥ क्षणान्निर्द्धूयसकलमविद्याकृतबन्धनम् ४१ रामप्रसादाच्छबरीमोक्षंप्रापातिदुर्लभम् ॥ किंदुर्लभंजगन्नाथेश्रीरामेभक्तवत्सले ॥ प्रसन्नेऽधमजन्मापिशबरीमुक्तिमापसा ४२ ॥

और हेराम यहांसे समीपही पंपानाम करके एकसरोवरहै तिसके समीप एक ऋष्यमूक नाम करके बडापर्बतहै ३६ तिस पर्वतपै चारि मन्त्रियों करके सहित सुग्रीवनाम करके एक बानरोंका राजा बड़ाभारी पराक्रमी भी है परन्तु भीतसे भीत अर्थात् डरेहुये से भी अत्यन्त डराहुआ सदा बास करता है ३७ और बाली नाम करके जो अपना भाई है तिसके भयसे सुग्रीव उस पर्वतपै बासकरताहै और ऋषिके शापकी भयसे उस पर्वतपै बाली नहीं जासक्ताहै शापका कारण अगाड़ी कहाजायगा इससे हे प्रभो उस पर्वतपै आपजावैं और सुग्रीवके साथमित्रता करिये ३८ और वह सुग्रीव सब तुम्हारे कार्य्यको सिद्ध करैगा और हे रघुनन्दन मैं तुम्हारे आगे अग्निमें प्रवेश करतीहों ३९ इससे मुहूर्त्तभर आप स्थितहूजिये जबतक मैं शरीरको भस्म करके हे राम त्रिष्णु जो आप तिनके परमपदको प्राप्तहोवों ४० अब शवरी इस प्रकार राम से आज्ञालेकरके आप अग्निमें प्रवेश करतीहुई एक क्षणमें संपूर्ण अविद्याके किये हुये बन्धनको नाशकरके ४१ रामके प्रसादसे शबरी अति दुर्लभ मोक्षको प्राप्त होतीहुई अब महादेवजी कहते हैं जगत्के स्वामी और भक्त वत्सल जो श्री रामतिनके प्रसन्न होतेहुये ऐसा कौनसा पदार्थ है जो दुर्लभहोय अधम जन्म जोशबरी सोभी मुक्तिको प्राप्तहुई ४२ ॥

किम्पुनर्ब्राह्मणामुख्याःपुण्याःश्रीरामचिन्तकाः ॥ मुक्तिंयान्तीतितद्भक्तिर्मुक्तिरेवनसंशयः ४३ भक्तिर्मुक्तिविधायिनी भगवतःश्रीरामचंद्रस्यहेलोकाःकामदुघांघ्रिपद्मयुगलंसेवध्वमत्युत्सुकाः ॥ नानाज्ञानविशेषमंत्रवितातिंत्यक्त्वासुदूरेभृशंरामंश्यामतनुंस्मरारिहृदये भांतंभजध्वंबुधाः ४४ ॥

इत्यध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेआरण्यकांडे
दशमस्सर्गः १० ॥

और श्री रामके चिन्तक मुख्य ब्राह्मण सदा पुण्यरूप मुक्तिको प्राप्तहोव यह क्या कहनाहै तिससे रामकीभक्ति मुक्तिहीहै इसमें कुछ संशयनहींहै ४३॥

हे लोको जिस मंत्रसे भगवान् जो श्रीरामचन्द्र तिनकी जो भक्तिहै सो मुक्ति की करनेवाली है इससे संपूर्ण कामनाका देनेवाला जो रामका चरणकमल तिसको प्रीतिसे सेवनकरो और नानाप्रकारका जो अज्ञान बिशेष रूप समुदाय तिसको त्यागके महादेवजी के हृदयमें प्रकाशमान जो श्यामशरीर राम तिसका भजनकरो ४४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेआरण्य
काण्डेभाषाटीकायांदशमःसर्गः १० ॥

समाप्तश्चायमारण्यकाण्डः ३ ॥

श्रीगणेशायनमः

अथ अध्यात्मरामायण ॥

किष्किन्धाकाण्ड ॥

भाषाटीकासहित

श्रीमहादेवउवाच ॥ ततःसलक्ष्मणोरामःशनैःपंपासरस्तटम् ॥ आगत्यसरसांश्रेष्ठंदृष्ट्वाविस्मयमाययौ १ क्रोशमात्रंसुविस्तीर्णमगाधामलशम्बरम् ॥ उत्फुल्लांबुजकह्लारकुमुदोत्पलमण्डितम् २ हंसकारंडवाकीर्णंचक्रवाकादिशोभितम् ॥ जलकुक्कुटकोयष्टिक्रौंचनादोपनादितम् ३ नानापुष्पलताकीर्णंनानाफलसमावृतम् ॥ सतांमनःस्वच्छजलंपद्मकिंजल्कवासितम् ४ तत्रोपस्पृश्यसलिलंपीत्वाश्रमहरंविभुः ॥ सानुजःसरसस्तीरेशीतलेनपथाययौ ५ ऋष्यमूकगिरेःपार्श्वेगच्छंतौरामलक्ष्मणौ ॥ धनुर्बाणकरौदांतौजटावल्कलमंडितौ ॥ पश्यंतौविविधान्वृक्षान्गिरेःशोभां सुविक्रमौ ६ सुग्रीवस्तुगिरेर्मूर्ध्नि चतुर्भिःसहवानरैः ॥ स्थित्वाददर्शतौयांतौ आरुरोहगिरेःशिरः ७ ॥

दो० । प्रथमसर्गमहँ देखिशुचि पंपासर भगवान ॥
सखाकियो सुग्रीवको हनुमतकोकरिमान १

अब श्री महादेवजी पार्वती से कथा वर्णन करते हैं हे पार्वति अब तिसके अनन्तर लक्ष्मण सहित श्रीराम तड़ागों में श्रेष्ठ जो पंपासरहै तिसकेतीरआकरके उसको देखके आश्चर्यको प्राप्तहोतेहुये १ कैसा पंपासरहै कोसभर जिसका विस्तारहै और जिसकी थाह न होवै ऐसे निर्मल जलकरके परिपूर्ण है और प्रफुल्लित कह्लारकुमुद उत्पल आदि जातिके कमल तिनकरके शोभायमान होरहाहै २ और हंस कारंडव चक्रवाकआदि पक्षियों करके शोभित है और जल कुक्कुट और कोयष्टि और क्रौंचआदि पक्षी जिसमें शब्दकररहे हैं ३ और अनेक तरहके पुष्पों की लताओंकरके व्याप्तहोरहाहै और नानाप्रकारके फलोंकरकेसहित वृक्षोंकरके चारोंतरफसे ढँकरहाहै और महात्माओंका जैसा

मनहोताहै ऐसा निर्मलजल जिसका है और कमलोंकी केसरिकरके जिसका जल सुगन्धयुक्तहोरहाहै ४ तिस पंपासरोवर में लक्ष्मणसहित श्रीरामचन्द्रजी स्नानकरके और जलपीके उसके तीरतीर बड़ेठंढेमार्ग करके जातेहुये ५ अब ऋष्यमूकपर्वतके समीप श्रीराम लक्ष्मण चलरहे हैं और धनुर्बाण जिनकेहाथ में शोभितहोरहे हैं और जटा और वल्कलबस्त्रकरके शोभितहोरहेहैं६ और अनेक तरहके वृक्षोंको और पर्वतकी शोभाको देखतेहुये जारहेहैं और सुन्दर है चाल जिनकी अब चार वानरों करके सहित जो सुग्रीव सो पर्वतके शिखर के ऊपर खड़ेहोकरके जातेहुये जो रामलक्ष्मण तिनको देखकरके मारेभयके और ऊंचे शिखरपै चढ़जाताहुआ ७ ॥

भयादाहहनूमंतंकौतौवीरवरौसखे ॥ गच्छजानीहिभद्रंतेबटुर्भूत्वा द्विजाकृतिः ८ बालिनाप्रेषितौकिंवामांहंतुंसमुपागतौ ॥ ताभ्यांसंभाषणंकृत्वाजानीहिहृदयंतयोः ९ यदितौदुष्टहृदयौसंज्ञांकुरुकराग्रतः॥ विनयावनतोभूत्वाएवंजानीहि निश्चयम् १० तथेतिबटुरूपेणहनुमान्समुपागतः ॥ विनयावनतोभूत्वारामंनत्वेदमब्रवीत् ११ कौयुवां पुरुषव्याघ्रौयुवानौवीरसंमतौ ॥ द्योतयंतौदिशःसर्वाःप्रभयाभास्कराविव १२ युवांत्रैलोक्यकर्त्तारावितिभातिमनोमम॥ युवांप्रधानपुरुषौ जगद्धेतूजगन्मयौ १३ माययामानुषाकारौचरंताविवलीलया ॥ भूभारहरणार्थायभक्तानांपालनायच १४ ॥

और भयसे हनुमान् से बोला कि हेसखे तुमब्राह्मणके ब्रह्मचारी का रूप धारणकरके जावो और यहजानो कौन ये बीरों में श्रेष्ठ दोनों जनेहैं ८ अथवा मेरे मारनेको वाली ने तौ नहीं कहीं भेजाहोय जो ये समीप प्राप्तहुये हैं और हे हनुमन् इनदोनों से संभाषण करके इनकाहृदय पहिंचानो ९ जो कदाचित् इनका हृदय दोषयुक्तहोय तौ हाथका इशारा मेरीतरफ़ करिदेना जिससे मैं भागजावों और बड़े बिनयसे नम्रहोकरके इनकेमनका निश्चयजानो १० अब तैसेही हनुमान् ब्रह्मचारी का रूपधारणकर समीपजाके बिनयकरके नम्रहो रामको नमस्कारकरके यह वचन बोलतेहुये ११ पुरुषों में श्रेष्ठ तुमदोनों कौन हौ युवाअवस्थाको प्राप्तहौ और बीरों में श्रेष्ठहौ और सूर्यकेतुल्य अपनीकांति करके सब दिशाओंको प्रकाशितकरिरहेहौ १२ और मेरेमनमें तौ ऐसाफुरताहैकि आपदोनों तीनोंलोकोंके रचनेवाले नरनारायण हौ और जगत् के हेतुहौ औ जगत्स्वरूपहौ १३ औरमायाकरके मनुष्यकासा आकारकियेहौ और लीलाही करके और पृथिवीकेभारहरनेको और भक्तोंकीरक्षाकरनेकेलियेविचररहेहौ १४॥

अवतीर्णौविहपरौचरंतौक्षत्रियाकृती ॥ जगत्स्थितिलयोत्सर्गैली लयाकर्त्तुमुद्यतौ १५ स्वतंत्रौप्रेरकौसर्वहृदयस्थाविहेश्वरौ ॥ नरनाशयणौलोकेचरंतावितिमेमतिः १६ श्रीरामोलक्ष्मणंप्राहपश्यैनंबटुरूपिणम् ॥ शब्दशास्त्रमशेषेणश्रुतंनूनमनेकधा १७ अनेनभाषितंकृत्स्नंनकिंचिदपशब्दितम् ॥ ततःप्राहहनूमन्तंराघवोज्ञानविग्रहः १८ अहंदाशरथीरामस्त्वयंमेलक्ष्मणोनुजः ॥ सीतयाभार्ययासार्द्धंपितुर्वचनगौरवात् १९ आगतस्तत्रविपिने स्थितोहंदंडकेद्विज ॥ तत्रभार्याहृतासीतारक्षसाकेनचिन्मम २० तामन्वेष्टुमिहायातौत्वंकोवाकस्यवावद ॥ बटुरुवाच ॥ सुग्रीवोनामराजायो वानराणांमहामतिः ॥ चतुर्भिर्मंत्रिभिःसार्द्धंगिरिमूर्द्धनितिष्ठति २१ ॥

इसलोकमें अवतार धारणकियाहै और प्रकृतिसे परेहौ और क्षत्रिय कासा रूपकरके बिचररहेहौ और जगत्की स्थिति लयसृष्टि इनको लीलाही करके करने को उद्यत होरहेहौ अर्थात् राक्षसोंका लयकरने को और भक्तोंकी रक्षा करने और धर्मिष्ठोंकी सृष्टिकरनेको उद्यतहुयेहौ १५ और स्वतन्त्रहौ और अंतर्यामी रूपकरके सबके प्रेरकहौ इसीसे ईश्वर रूपहौ सबके हृदयमें स्थित होरहेहौ ऐसे तुमदोनों नरनारायण लोकमें बिचररहे हौ यह तौ मेरी मति में आवताहै १६ तब श्रीराम लक्ष्मणसे कहतेहुये कि हेलक्ष्मण यह ब्रह्मचारीका रूपकरे बोलरहा सो इसको देखो निश्चयकरके संपूर्ण व्याकरण शास्त्र इसने अनेकबार सुनाहै १७ इसने जो कहा तिसमें कहीं अशुद्ध उच्चारण नहीं किया तब ज्ञानस्वरूप जो श्रीरामचन्द्रहैं सो हनुमान् से बोलतेहुये १८ मैं तौ दशरथ का पुत्र रामहौं और यह मेराछोटाभाई है लक्ष्मण इसका नामहै सीताजो भार्या तिसकरके सहित पिताके बचनको मानके १९ मैं दण्डकबनमें आके स्थितहुआ हेद्विज वहां सीता जो मेरी स्त्रीहै सो किसी राक्षसने हरिली २० तिस सीताके ढूढ़नेको हम यहां प्राप्तहुये हैं और तुम कौनहौ और किसके पुत्रहौ सो सब अपना बृत्तान्तकहो तब वह ब्रह्मचारी कहताहुआ कि हेराम श्रेष्ठमति जिसकी ऐसा सुग्रीवनाम करके जो बानरों का राजा सो चार मन्त्रियों करके सहित ऋष्यमूक पर्वत के शिखर के ऊपर रहताहै २१ ॥

भ्राताकनीयान्सुग्रीवोबालिनःपापचेतसः ॥ तेननिष्काशितोभार्याहतातस्येहबालिना २२ तद्भयादृष्यमूकाख्यंगिरिमाश्रित्यसंस्थितः ॥ अहंसुग्रीवसचिवोवायुपुत्रोमहामते २३ हनूमान्नामविख्यातो

ह्यंजनीगर्भसंभवः ॥ तेनसख्यंत्वयायुक्तं सुग्रीवेणरघूत्तम २४ भार्यापहारिणंहंतुंसहायस्तेभविष्यति ॥इदानीमेवगच्छामआगच्छयदिरोचते २५ श्रीरामउवाच ॥ अहमप्यागतस्तेनसख्यं कर्तुंकपीश्वर ॥ सख्युस्तस्यापियत्कार्यंतत्करिष्याम्यसंशयम् २६ हनूमान्स्वस्वरूपेणास्थितोराममथाब्रवीत् ॥ आरोहतांममस्कंधौगच्छामःपर्वतोपरि २७ यत्रतिष्ठतिसुग्रीवोमंत्रिभिर्बालिनोभयात् ॥ तथेतितस्यारुरोहस्कंधंरामोथलक्ष्मणः २८ ॥

पाप में चित्त जिसका ऐसा जो बालीहै तिसका यह सुग्रीव छोटाभाई है तिस बालीने सुग्रीवको निकाल दिया और इसकी स्त्री छीनली है २२ उस बालीकी भयसे यह ऋष्यमूक पर्वतपै रहताहै और हेमहामते मैं सुग्रीव का मन्त्रीहौं और पवनका पुत्रहौं २३ और हनूमान्नाम करके मैं प्रसिद्धहौं और अंजनी के गर्भसे उत्पन्नहौं और हेरघूत्तम हेरघुवंशियों में श्रेष्ठ आपको उस सुग्रीवके साथ मित्रता करनी बहुत श्रेष्ठहै २४ क्योंकि तुम्हारी भार्या काहरने वाला जो रावणहै तिसके मारने में वह सहाय होगा और इसी समय जो आपको रुचै तो चलिये २५ तब श्रीराम कहतेहुये कि हेकपीश्वरमैं भी सुग्रीव से मित्रता करनेहीको आयाहौं और उससुग्रीव मित्रका जो कार्य्य होगा सो मैं निस्संदेह करौंगा २६ तबतौ हनुमान् जैसा अपना स्वरूपथा तैसे होकर राम से बोलतेहुये कि मेरेदोनों कंधोंके ऊपर दोनोंजने सवार हूजिये मैं अभी पर्वत के ऊपर चलता हौं २७ जहां बाली की भयकरके मन्त्रियों करके सहित सुग्रीव है वहां मैं आपको लिये चलताहौं तब राम और लक्ष्मण तैसेही हनुमान् के कंधेके ऊपर चढ़ते हुये २८ ॥

उत्पपातगिरेर्मूर्द्धिक्षणादेवमहाकपिः ॥ वृक्षच्छायांसमाश्रित्यस्थितौरामलक्ष्मणौ २९ हनूमानपिसुग्रीवमुपगम्यकृतांजलिः ॥ व्येतुतेभयमायातौराजन् श्रीरामलक्ष्मणौ ३० शीघ्रमुत्तिष्ठरामेणसख्यंतेयोजितंमया । अग्निंसाक्षिणमारोप्यतेनसख्यंद्रुतंकुरु ३१ ततोतिहर्षात्सुग्रीवःसमागम्यरघूत्तमम् ॥ वृक्षशाखांस्वयंछित्त्वाविष्टरायददौमुदा ३२ हनूमान्लक्ष्मणाया दात्सुग्रीवायचलक्ष्मणः ॥ हर्षेणमहताविष्टाःसर्वएवावतस्थिरे ३३ लक्ष्मणस्त्वब्रवीत्सर्वंरामवृत्तान्तमादितः ॥ वनवासाभिगमनंसीताहरणमेवच ३४ लक्ष्मणोक्तंवचःश्रुत्वा सुग्रीवोराममब्रवीत् ॥अहंकरिष्येराजेन्द्रसीतायाःपरिमार्गणम् ३५॥

तब बड़ाभारी जो हनुमान् सो क्षणमात्रही में पर्वत के शिखर के ऊपर कूदि कै पहुंचता हुआ वहां एक वृक्षकी छाया में राम लक्ष्मण स्थित होतें हुये २६ और हनुमान्‌भी सुग्रीव के समीप जाके हाथ जोड़के बोलतेहुये कि हेराजन् तुम्हारी भय सब दूरहोय श्रीराम और लक्ष्मण ये आके प्राप्त हुयेहैं इससे ३० और शीघ्रहीउठो रामके साथ तुम्हारी मित्रता मैं नियतकरचुका हौं अग्निको साक्षी करके राम के संग शीघ्रही मित्रता कीजिये ३१ तब तौ सुग्रीव बड़े आनन्दसे श्रीरामके समीप आकर और एक वृक्षकी शाखाकाटके श्रीरामके बैठने को देताहुआ ३१ और हनुमान् लक्ष्मण को शाखा देतेहुये और लक्ष्मण सुग्रीव को देतेहुये और सब बड़े आनन्द से वृक्षकी शाखा ओं कोबिछाकर बैठते हुये ३३ तब लक्ष्मण पहिले से जैसे कुछ वनवासके लिये आगमनहुआ और जैसे सीताकाहरणहुआ सोसबरामका वृत्तान्तकहतेहुये ३४ लक्ष्मण के कहेहुये बचन सुनिकै सुग्रीव रामसे कहताहुआ हेराजेन्द्रमैं सीता का ढूंढना सब अच्छी तरहसे करौंगा ३५॥

साहाय्यमपितेरामकरिष्येशत्रुघातिनः॥शृणुराममयादृष्टंकिंचित्ते कथयाम्यहम् ३६ एकदामंत्रिभिःसार्द्धंस्थितोहंगिरिमूर्धनि॥ बिहा यसानीयमानाकेनचित्प्रमदोत्तमा ३७ क्रोशंतीरामरामेति दृष्ट्वास्मा न्पर्वतोपरि॥ आमुच्याभरणान्याशुस्वोत्तरीयेणभामिनी ३८ निरी क्ष्याधःपरित्यज्यक्रोशंतीतेनरक्षसा॥नीताहंभूषणान्यांशुगुहायामक्षि पंप्रभो ३९ इदानीमपिपश्यत्वंजानीहितववानवा॥ इत्युक्त्वानीय रामायदर्शयामासवानरः ४० विमुच्यरामस्तद्दृष्ट्वाहासतीतिमुहुर्मु हुः॥ हृदिनिक्षिप्यतत्सर्वं रुरोदप्राकृतोयथा ४१ आश्वास्यराघवं भ्रातालक्ष्मणो वाक्यमब्रवीत्॥ अचिरेणैवतेरामप्राप्यतेजानकीशु भा॥ वानरेन्द्रसहायेनहत्वारावणमाहवे ४२॥

और जिस समयमें आपशत्रुके मारनेको उद्यत होउगे उससमय मैंसहाय करौंगा और हेराम जो कुछ मैंने देखाहै तिसको कहताहौं आपसुनिये ३६ एकसमय मन्त्रियोंकरके सहितमैं पर्वतके शिखरपै बैठाथा उससमयमें आका-श मार्ग करके कोई एक श्रेष्ठ स्त्रीको लियेजाताथा उसको मैं देखता हुआ३७ और वहस्त्री राम राम ऐसे शब्दको पुकार पुकार रोवतीहुई जातीथी सो हम सब वानरों को पर्वत के ऊपर बैठा देखकर अपने वस्त्र करके आभूषणों को बांधकरके नीचेको देखके डालदेतीहुई ३८ और उस विलाप करतीहुई को

राक्षस लेजाताहुआ फिर उन आभूषणों को मैं पर्वत की गुहा में रखदेताहु-आ ३९ और इस समय में आप उन आभूषणों को देखिये आपके हैं वानहीं यह वचन सुग्रीव कहिकै और उन आभूषणों को ल्याइ कै राम को दिखाता हुआ ४० तब राम खोल करके उनआभूषणों को देख करके और उनआभूष-णों को हृदयमें लगाकरहासीते हासीते ऐसाकहिकै जैसे कोई प्राकृत मनुष्य होय तैसे बारंबार रोतेहुये ४१ तब भाई जो लक्ष्मणसो रामचन्द्रके चित्त को सावधान कर बोलताहुआ कि हे राम यह बानरेन्द्र जो सुग्रीव तिसको सहा-य करके संग्राम में रावणको मारिकै थोड़ेही कालमें जानकी प्राप्तहोवैगी ४२ ॥

सुग्रीवोप्याहहेरामप्रतिज्ञांकरवाणिते ॥ समरेरावणंहत्वा तवदा स्यामिजानकीम् ४३ ततोहनूमान्प्रज्वाल्यतयोरग्निंसमीपतः ॥ ता वुभौरामसुग्रीवावग्नौसाक्षिणितिष्ठति ४४ बाहूप्रसार्यचालिंग्यपर स्परमकल्मषौ ॥ समीपेरघुनाथस्यसुग्रीवःसमुपाविशत् ४५ स्वोदंतं कथयामासप्रणयाद्रघुनायके ॥ सखेशृणुममोदंतंवालिनायत्कृतंपु रा ४६ मयपुत्रोथमायावीनाम्नापरमदुर्मदः ॥ किष्किंधांसमुपागत्य वालिनंसमुपाह्वयत् ४७ सिंहनादेनमहताबालीतुतदमर्षणः ॥ निर्य यौक्रोधताम्राक्षोजघानदृढमुष्टिना ४८ दुद्रावतेनसंविग्नोजगामस्व गुहांप्रति ॥ अनुदुद्रावतंवालीमायाविनमहंतथा ॥ ततःप्रविष्टमालो क्यगुहांमायाविनंरुषा ४९ ॥

और सुग्रीव भी बोलताहुआ कि हेराम मैं प्रतिज्ञाकरताहौं कि संग्राम में रावणको मारके मैं तुमको जानकी को देवोंगा ४३ तब हनुमान् राम और सुग्रीवइनके समीप अग्निको प्रज्वलित करके राम औसुग्रीव दोनोंसे कहता हुआ कि मित्रता कीजिये तब दोनों अग्निको साक्षी करके ४४ परस्पर शुद्ध हृदय से भुजाफैलाकरके आलिंगनकर हे सखे ऐसा वचन कहते हुये फिर रघुनाथ के समीप सुग्रीव वैठता हुआ ४५ और स्नेह से अपना वृत्तान्त श्री-रघुनाथजी से कहता हुआ कि हे सखे मेरा वृत्तान्त सुनिये जैसा कुछबालीने कियाहै सो मैं कहताहौं ४६ कि एकसमयमें मयदानवका पुत्र मायावीजिसका नाम और बड़ादुर्मद अर्थात् अहंकारी सो किष्किन्धा नगरी में आके बालीको बुलाताहुआ ४७ और सिंहनाद करके गर्जता हुआ उसके शब्दको नहीं सह-ताहुआ जो बाली सो युद्ध करनेको निकलता हुआ और बड़े क्रोध करके एक मुष्टिका का प्रहार करताहुआ अर्थात् घूंसा मारताहुआ ४८ तोवहदानव उस प्रहारकरके अत्यन्त भयभीतहो अपनीगुहाके जानेको भागता हुआ औरबाली

भी उसके पीछे२ दौड़ता हुआ और मैंभी बालीके संग जाता हुआ तब क्रोध युक्तबाली उस दानवको गुहामें प्रवेशकरते देखके ४९॥

बालीमामाहतिष्ठत्वंबहिर्गच्छाम्यहंगुहाम्॥ इत्युक्त्वाविश्यसगुहांमासमेकंननिर्ययौ ५०मासादूर्ध्वंगुहाद्वारान्निर्गतंरुधिरंबहु॥तद्दृष्ट्वापरितप्तांगोमृतोबालीतिदुःखितः ५१ गुहाद्वारिशिलामेकांनिधायगृहमागतः॥ ततोऽब्रुवंमृतोबालीगुहायांरक्षसाहतः ५२ तच्छ्रुत्वा दुःखिताःसर्वेमामनिच्छंतमप्यतु॥ राज्येभिषेचनंचक्रुःसर्वेवानरमंत्रिणः५३शिष्टन्तदाम्मयाराज्यंकिंचित्कालमरिन्दम॥ ततःसमागतोबालीमामाहपरुषंरुषा ५४ बहुधाभर्त्सयित्वामांनिजघानचमुष्टिभिः॥ ततोनिर्गत्यनगराद्धावंपर्याभिया ५५ लोकान्सर्वान्परिक्रम्यऋष्यमूकंसमाश्रितः॥ ऋषेःशापभयात्सोपिनायातीमंगिरिंप्रभो५६॥

मुझसे यह कहाकि तुम बाहरही खड़ेरहो मैं इस गुहाके भीतर जाताहौं यहकहिके बाली उस गुहा में प्रवेशकर एकमहीने तकनहीं निकलता हुआ५० फिर महीने भरके उपरान्त उसगुहा के द्वारसे बहुत रुधिर निकलता हुआ तिसको देखके मेरे शरीरमें बड़ा संतापहुआ और बालीमरिगया यह जानि दुःखित हो ५१ गुहाके द्वारको शिलासे मूंदिकै मैं घरआता हुआ और बाली राक्षस करके मारागया यह कहताहुआ ५२ तिसको सुनिकै सबदुःखितहो के मैं इच्छा नहीं भी करी तौ भी सब वानर और मन्त्री लोग राज्य के बिषे मेरा अभिषेक करते हुये ५३ हेराम, फिर कुछकाल मैंने राज्यकी रक्षाकी फिर बाली आके क्रोधकरके कठोर बचन बोलता हुआ ५४ फिर बहुत मेरा तिरस्कार करके मुझको मुष्टिकों करके मारताहुआ तब नगरसे निकलिकै मैं बड़ीभारी बाली के भय से पृथिवीभर दौड़ता फिरा ५५ सब लोकों की परिक्रमा करके इस ऋष्यमूक पर्वत को आश्रय करके स्थित हुआ और हे प्रभो मातंग ऋषि के शापकी भयसे इस पर्वतपै बाली नहीं आयसक्ता है ५६॥

तदादिममभार्यांसस्वयंभुंक्तेविमूढधीः॥ अतोदुःखेनसंतप्तोहृतदारोहृताश्रयः ५७ वसाम्यद्यभवत्पादसंस्पर्शात्सुखितोस्म्यहम्॥ मित्रदुःखेनसंतप्तोरामोराजीवलोचनः ५८ हनिष्यामितवद्वेष्यंशीघ्रम्भार्यापहारिणम्॥ इतिप्रतिज्ञामकरोत्सुग्रीवस्यपुरस्तदा ५९ सुग्रीवोप्याहराजेन्द्रबालीबलवतांबली॥ कथंहनिष्यतिभवान्देवैरपिदुरासदम् ६० शृणुतेकथयिष्यामितद्बलंबलिनांवर॥ कदाचिद्दुन्दु

भिर्नाममहाकायोमहाबलः ६१ किष्किन्धामगमद्रामममहामहिषरूप धृक् ॥ युद्धायबालिनंरात्रौसमाह्वयतभीषणः६२ तच्छ्रुत्वाऽसहमानो सौबालीपरमकोपनः ॥ महिषंशृङ्गयोर्धृत्वापातयामासभूतले ६३ ॥

तबसे लेके मेरी स्त्रीको वह विमूढबुद्धि बाली आपही भोगताहै इसकारण से हरीहै भार्या जिसकी और हरागयाहै स्थान जिसका ऐसा मैं अति दुःखसे संतप्तहोके ५७ इसपर्वतपै वास करताहों सो अब तुम्हारे चरणारविन्दके स्पर्शसे सुख युक्तहुआ हों तब कमलनेत्र जो राम हैं सो मित्रके दुःख करके संतप्त होके ५८ यह प्रतिज्ञा सुग्रीव के आगे करतेहुये कि तुम्हारी भार्याके हरने वाले बालीको मैं शीघ्रही मारोंगा ५९ तब सुग्रीव रामसे कहता हुआ कि हेराजेन्द्र बाली बलवानों में बड़ाबली है और देवतों को पासजाने को भी अशक्य है उसको कैसे आप मारेंगे ६० हे बलियोंमें श्रेष्ठ राम उस बालीके बलको मैं कहता हों आप सुनिये किसी समय में बड़ा जिसका शरीर और बड़ा बली ऐसा दुन्दुभी नाम राक्षसथा ६१ सो हेराम बड़े भारी भैंसेके रूपको धारणकर किष्किन्धा नगरीको आताहुआ सो वह भयंकर राक्षस युद्धकरनेके लिये रात्रि में बालीको पुकारता हुआ ६२ सो सुनिकै उसको नहीं सहता हुआ बालीसोक्रोधकरकेउसकेसींग दोनोंपकड़ के पृथिवीमेंपटकदेताहुआ ६३॥

पादेनैकेनतत्कायमाक्रम्यास्यशिरोमहत् ॥ हस्ताभ्यांभ्रामयंश्छित्वातोलयित्वाक्षिपद्भुवि ६४पपाततच्छिरोरामभातंगाश्रमसन्निधौ ॥ योजनात्पतितंतस्मान्मुनेराश्रममण्डले६५रक्तवृष्टिःपपातोच्चैर्दृष्ट्वातां क्रोधमूर्च्छितः ॥ मातंगोबालिनंप्राहयद्यागन्तासिमेगिरिम् ६६ इतः परंभग्नशिरामरिष्यसिनसंशयः ॥ एवंशप्तस्तदारभ्यऋष्यमूकंनयात्यसौ ६७एतज्ज्ञात्वाहमप्यत्रवसामिभयवर्जितः॥रामपश्यशिरस्तस्यदुन्दुभेःपर्वतोपमम् ६८ तत्क्षेपणेयदाशक्तःशक्तस्त्वंबालिनोवधे॥ इत्युक्त्वादर्शयामासशिरस्तद्गिरिसन्निभम् ६९ दृष्ट्वारामःस्मितं कृत्वापादांगुष्ठेनचाक्षिपत्॥ दशयोजनपर्यंतंतदद्भुतमिवाभवत्७०॥

और एकपांय से उसकेशरीरको दबाकर दोनों हाथों से उसका बड़ाभारी शिर घुमाकर काटि के अर्थात् देहसेअलगकर उसकाभार हाथों से अजमाकर पृथिवीमें फेंकताहुआ ६४ सो हे राम वहां से योजनभरे पै मातंग ऋषिके आश्रममें वह बालीका फेंकाहुआ राक्षसकाशिर गिरताहुआ ६५ सो मातंगऋषि बड़े ऊंचे से पड़ीहुई रुधिरकी वृष्टि देखकर क्रोधकरके बाली से कहते हुये कि

आज से लेके जो बाली इस ऋष्यमूक पै आवै तो ६६ उसका शिरकाटिकै गिरि पड़े और मरिजावै इसमें कुछ संशय नहीं है इसप्रकार शापको प्राप्त यहबाली ऋष्यमूकको कभी नहीं आताहै ६७ यहजानिकै मैं भी इसपर्वत पै भयरहित बसताहों हे राम उसदुन्दुभि राक्षसका पर्वतकेतुल्य शिर आपदेखिये ६८ उस के फेंकने में जोआप समर्थहोवैं तो जानाजाय कि वाली के मारनेमें भी समर्थ होउगे यहबचन सुग्रीव कहिकै पर्वतकेतुल्य जो उसराक्षसका शिर तिसको दिखाताहुआ ६९ तब राम उसको देखके औ मंद मुसक्यानकरके पांउकेअँगूठे करके दशयोजन पर्यंत फेंकदेतेहुये सो बड़ा अद्भुत चरित्र होताहुआ ७० ॥

साधुसाध्वितिसंप्राहसुग्रीवोमंत्रिभिःसह॥ पुनरप्याहसुग्रीवोरामम्भक्तपरायणम् ७१ एतेतालामहासाराःसप्तपश्यरघूत्तम॥ एकैकंचालयित्वासौनिःपत्रान्कुरुतेञ्जसा ७२यदित्वमेकबाणेन विध्वाछिद्रंकरोषिचेत् ॥ हतस्त्वयातदाबाली विश्वासोमेप्रजायते ॥ तथेतिधनुरादायसायकंतत्रसंदधे ७३ विभेदचतदारामःसप्ततालान्महाबलः ॥ तालान्सप्तविनिर्भिद्यगिरिम्भूमिंचसायकः ७४ पुनरागत्यरामस्यतूणीरेपूर्ववत्स्थितः ॥ ततोतिहर्षात्सुग्रीवोराममाहातिविस्मितः ७५ देवत्वंजगतांनाथःपरमात्मानसंशयः ॥ मत्पूर्वकृतपुण्यौघैः संगतोद्यमयासह ७६ त्वांभजन्तिमहात्मानः संसारविनिवृत्तये ॥ त्वांप्राप्यमोक्षसचिवंप्रार्थयेहंकथंभवम् ७७ ॥

और मन्त्रियोंकरके सहित सुग्रीव साधुसाधु ऐसाबचन अर्थात् अच्छाक्रिया आपने यहबचन कहताहुआ और फिर भी भक्तों के रक्षाकरनेवाले जो राम हैं तिनसे सुग्रीव कहताहुआ ७१ कि हे रघूत्तम ये सात तालों के वृक्ष बड़ेमजबूत हैं तिनको आप देखिये इनमें एकएक वृक्षको बाली अपने भुजाओं के बलसे जड़ समेत हिलाहिलाकर एक क्षणमात्रमें अपने पराक्रमसे पत्ते अलग कर इस प्रकार सातों ताल वृक्षों को करताहै ७२ जो तुम एकही बाणसे बेधन करके फोड़ करके भेदन करदेवो तो मैं जानों कि बालीको तुमने मारही लिया यह मुझको बिश्वास होजायगा ७३ तब श्रीरामचन्द्र तैसेही धनुष को लेके और उसमें बाणकासन्धान करके बड़ेबली जो रामजीसो एकही वारमें सातों तालवृक्षों का बेधन करते हुये फिर वहराम का बाण सातों तालके वृक्षों को फोड़के और पर्बतको फोड़के औ उसके नीचे पृथिवी कोभी बिदारण करके ७४ राम के तरकस मेंही आके प्रवेश करताहुआ तब तो बड़े हर्ष से अर्थात् खुशी-

से और आश्चर्य युक्त होके सुग्रीव रामसे बोलता हुआ ७५ कि हेदेव तुम जगत् के नाथ स्वामी परमात्माहौ इसमें कुछ संदेह नहीं है और मेरे किये हुये जो पहिले के पुण्य समूह तिनकरके मुझको मिलेहो ७६ और जे कोई महात्मा लोगहैं ते संसारके दुःखोंकी निवृत्ति के लिये तुमको भजतेहैं और अब मोक्षके देनेवाले जो आपहैं तिनको प्राप्तहोके फिर बन्धनरूप संसारहीके सुखकी कैसे प्रार्थनाकरौं ७७ ॥

दाराःपुत्राधनंराज्यंसर्वंत्वन्माययाकृतम् ॥ अतोहंदेवदेवेशनाकांक्षेन्यत्प्रसीदमे ७८ आनन्दानुभवंत्वाद्यप्राप्तोहंभाग्यगौरवात् ॥ मृदर्थंयतमानेननिधानमिवसत्पते ७९ अनाद्यविद्यासंसिद्धंबन्धनंछिन्नमद्यनः ॥यज्ञदानतपःकर्मपूर्त्तेष्टादिभिरप्यसौ ८० नजीर्य्यतेपुनर्दार्ढ्यंभजतेसंसृतिःप्रभो ॥त्वत्पाददर्शनात्सद्योनाशमेतिनसंशयः८१क्षणार्द्धमपियच्चित्तंत्वयितिष्ठत्यचंचलम् ॥ तस्यज्ञानमनर्थानांमूलंनश्यतितत्क्षणात् ८२तत्तिष्ठतुमनोरामत्वयिनान्यत्रमेसदा ८३ रामरामेतियद्वाणीमधुरंगायतिक्षणम्॥सब्रह्महासुरापोवामुच्यतेसर्वपापकैः८४।

हे राम जिससे दारा जो स्त्री और पुत्र और धन औ राज्य यहसब तुम्हारी मायाकरकै कियाहुआहै इससे हे देव देवेश मैं आपसे भिन्नपदार्थ कुछनहीं चाहताहौं इससे मेरेऊपर प्रसन्नहूजिये ७८ और अपने भाग्यके आधिक्यसे आनन्द चैतन्यरूप जो तुम तिसको प्राप्तहुआहौं और हे सत्पुरुषों के रक्षक जैसे मृत्तिकाके लिये पृथ्वी खोदै और निधिको प्राप्तहोजाय तैसे आप मिले७९और अनादि जो अविद्या तिसमें उत्पन्नजो विषय बासनारूप बंधन सो आज मेरा कटिगया और यज्ञ और दान और तप और अग्निहोत्रआदि जो इष्टकर्म और बापी कूप तडागादि जो पूर्त्तकर्म इनकरके यहसंसार जीर्ण नहींहोता ८० उलटा और दृढ़होताहै औ हे प्रभो आपके चरणों के दर्शन से तौ शीघ्रहीनाशको प्राप्तहोताहै इसमें कुछ संशयनहीं है ८१ और आधेक्षणभी जिसकाचित्त तुम्हारे विषे जो स्थिरहोय तौ सब अनर्थोंका मूल कारण जोअज्ञानहै सो उसी क्षण नाशको प्राप्तहोताहै ८२ हे राम सो मन मेरा सदा तुमहीं मैं बासकरै और जगह कहीं न जाय ८३ और जिस पुरुषकी बाणी रामराम यह मधुरअक्षर क्षण भर भी गानकरती है सो ब्रह्मघातीहोय वा मदिरा पान कियाहोय तौ भी उन पातकों से शीघ्रही छूटजाताहै ८४ ॥

नकांक्षेऽरिजयंरामनचदारसुखादिकम् ॥ भक्तिमेवसदाकांक्षेत्वयिबन्धविमोचनीम् ८५ त्वन्मायाकृतसंसारस्त्वदंशोहंरघूत्तम ॥ स्वपा

द्भक्तिमादिश्यत्राहिमांभवसंकटात् ८६ पूर्वंमित्राय्युदासीनास्त्वन्मायावृतचेतसः॥ आसन्मेद्यभवत्पाददर्शनादेवराघव ८७ सर्वब्रह्मैव मेभातिक्कमित्रंक्कचमेरिपुः॥यावत्त्वन्माययाबद्धस्तावद्गुण विशेषता ८८ सायावदस्तिनानात्वंतावद्भवतिनान्यथा॥ यावन्नानात्वमज्ञानात्तावत्कालकृतंभयम्८९ अतोऽविद्यामुपास्तेयःसोंधेतमसिमज्जति॥ मायामूलमिदंसर्वंपुत्रदारादिबंधनम्॥ अतोत्सारयमायांत्वंदासींतव रघूत्तम ९० त्वत्पादपद्मार्पितचित्तवृत्तिस्त्वन्नामसंगीतकथासुवाणी॥ त्वद्भक्तसेवानिरतौकरौमे त्वदङ्गसङ्गंलभतांमदङ्गम् ९१ ॥

इससे हे राम नतौ मैं विजयकी इच्छा करताहूं न स्त्री आदि सुखोंकीइच्छा करताहौं संसाररूपी बंधनके छोड़ानेवालीसदातुम्हारी भक्तिहीकोचाहताहौं ८५ और हे राम तुम्हारी माया करिकै प्राप्तहुआहै संसार जिसको ऐसातुम्हारा अंशभूत मैं हौं तिसको अपने चरणारविन्दकी भक्तिको उपदेशकरके संसाररूपी संकटसे मेरी रक्षा कीजिये ८६ और हे राम पहिले तो आपकी मायाकरकै आवृत ढँकाहुआहै चित्तजिसका ऐसा जोमैंहौं तिसके मित्र शत्रु उदासीन ये सब होतेहुये और इससमय में तौ आपके चरणारविन्दके दर्शनही से मुझको ८७ सब जगत् ब्रह्मरूपही प्रतीत होरहाहै तौ कौनमित्रहै औरकौनमेराशत्रुहै इसका आशययहहै कि जब मेरा चित्त अज्ञान से आच्छादित होरहाथा तौ बालीको शत्रुजानताथा और भार्यादिकों को मित्र जानताथा और अब तौ आपके दर्शनसे यथावत् स्वरूप ज्ञानसे कोईशत्रुमित्र आपसे जुदाकरिकै नहींभासता इससे केवल चरणारविन्द की भक्तिहीको चाहताहौं जिससे फिर न चित्तको अविद्या ढँकिलेवै और हे राम जबतक जीव तुम्हारी मायाकरके बँधाहुआ है तभीतक गुण बिशेषता प्रतीतहोतीहै अर्थात् सत्त्व रज तम येतीनोंमायाकेगुण प्रकाश हर्ष शोक आदि अपने कार्यको करते हैं ८८ और जबतक ये तीनों गुण अपने कार्यों करके इसका तिरस्कार करते हैं तबतक नानात्व अर्थात्भेद बुद्धि नहीं दूरहोती और जबतक अज्ञान से भेदबुद्धि रहती है तबतक कालकी भय भी बनी रहती है ८९ इससे जो अविद्याकी उपासना करताहै सो अंधतमनरककेतुल्य जोसंसार तिसमें डूबाही रहताहै औरमायाहीहै मूलकारण जिसमें ऐसा पुत्रदारादि बंधनहै इससेहे राम अपनी दासीजोमाया तिसको दूरकीजिये ९० औहेरामतुम्हारे चरणारविन्दमें अर्पणकरीहै चित्तवृत्ति जिसने ऐसा मैं होउँ अर्थात्मेराचित्ततुम्हारेचरणोंमेंरहै औरबाणीतुम्हारेनामकोकीर्त्तनकरैऔर तुम्हारेभक्तोंकी सेवामेंमेरेहाथरहैं औरमेराअंगआपके अंगसंगकोप्राप्तहोय ९१॥

त्वन्मूर्तिभक्तान्स्वगुरुंचचक्षुःपश्यत्वजस्रंसशृणोतुकर्णः ॥ त्व ज्जन्मकर्माणिचपादयुग्मंव्रजत्वजस्रंतवमन्दिराणि ९२ अङ्गानिते पादरजोविमिश्रतीर्थानि बिभ्रत्वाहिशत्रुकेतो ॥ शिरस्त्वदीयंभवपद्म जाद्यैर्जुष्टंपदंराममनमत्वजस्रम् ९३ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणे किष्किन्धाकाण्डेउमामहेश्वरसंवादे प्रथमःसर्गः १ ॥

और मेरेनेत्र आपकीमूर्त्तियोंको और आपके भक्तोंको और गुरुको देखाकरैं और मेरे कान आपके जन्म और कर्म इनकोसुनैं और मेरेपाउँ आपके मन्दिर औतीर्थ इनको जायाकरैं ९२ और मेराअंग आपके चरण रजकरके मिलेहुये जो गंगाआदि तीर्थोंके जल तिनको धारणकरै और हेगरुड़ध्वज मेरा जो शिर है सो शंकर ब्रह्माआदि देवों करके सेवित जो आपका चरण कमल तिसको निरन्तर नमनकरै ९३ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किन्धाकाण्डे भाषाटीकायांप्रथमःसर्गः १ ॥

इत्थंस्वात्मपरिष्वंगनिर्धूताशेषकल्मषम्॥रामःसुग्रीवमालोक्यस स्मितंवाक्यमब्रवीत् १ मायांमोहकरींतस्मिन्वितन्वन्कार्यसिद्धये ॥ सखेत्वदुक्तंयत्तन्मांसत्यमेवनसंशयः २ किंतुलोकावदिष्यंतिमामेवंर घुनन्दनः ॥ कृतवान्किंकपींद्रायसत्यंकृत्वाग्निसाक्षिकम् ३ इतिलो कापवादोमेभविष्यतिनसंशयः ॥ तस्मादाह्वयभद्रन्तेगत्वायुद्धायवा लिनम् ४ बाणेनैकेनतंहत्वाराज्येत्वामभिषिंचये॥तथेतिगत्वासुग्रीवः किष्किंधोपवनंद्रुतम् ५ कृत्वाशब्दंमहानादंतमाह्वयतबालिनम् ॥ तच्छ्रुत्वाभ्रातृनिनदंरोषताम्रविलोचनः ६ निर्जगामगृहाच्छीघ्रंसुग्री वोयत्रवानरः ॥ तमापतंतंसुग्रीवःशीघ्रंवक्षस्यताडयत् ७ ॥

दो० । सर्ग दूसरे मित्र हित हतो बालि शरएक ॥
पुनि तिहिको निजदरश देदीन्होंपद सुविवेक १

अब महादेवजी पार्वती से कहतेहुये कि हेपार्वति इसप्रकार अपने हृदय के आलिंगन कराने से दूरहुये हैं सब पाप जिसके ऐसा जो सुग्रीव तिसको राम दिव्यज्ञानको प्राप्तहुआ देखके मंदमुसक्यान करि बचन बोलतेहुये मन्द मुसक्यान का आशय यह कि भगवान्के हास्यमें मायावासकरती है और सु- ग्रीव से अभी कुछकार्यकरनाहै इससे उसके ऊपर माया बिस्तारने को हँसते

हुये १ अब श्रीराम सबको मोह करानेवाली जो अपनी माया तिसको कार्य सिद्धके अर्थ सुग्रीवके ऊपर बिस्तार करतेहुये यह बोले कि हेसखे जो तुमने बचनमेरे प्रतिकहा सो सत्यही है कुछ संशयनहीं है २ परंतु लोक सब मुझसे कहैगा कि देखौ रामचन्द्रने अग्निको साक्षीकरके सुग्रीवसे मित्रताकरके बाली के मारने की प्रतिज्ञाकी ३ और फिर नहीं मारातौ फिर मुझको बड़ाभारी लोकापबाद होगा इसमें कुछ संदेनहीं है तिससे हे सुग्रीव अब बाली के यहां जाके उसको युद्धके लिये बुलावो ४ और तुम्हारा कल्याण होगा फिर उस बाली को एकही बाणसे मारके तुमको राज्यका अभिषेककरौं तब सुग्रीव तैसे ही किष्किन्धामें जाकर ५ उसके बगीचे में बड़ाभारी शब्दकर युद्धकेलिये बाली को बुलाताहुआ तब बाली भाई के शब्दको सुनकर क्रोधकरके लालनेत्रकर ६ जहां सुग्रीवरहा तहांशीघ्रही घरसे निकलिकै आवताहुआ तब सम्मुख आवता हुआ जो बाली तिसको सुग्रीव शीघ्रही छाती में ताड़न करता हुआ ७॥

सुग्रीवमपिमुष्टिभ्यांजघानक्रोधमूर्च्छितः ॥ बालीतमपिसुग्रीवएवंक्रुद्धःपरस्परम् ८ अयुध्येतामेकरूपौदृष्ट्वारामोतिविस्मितः ॥ नमुमोचतदाबाणंसुग्रीववधशंकया ९ ततोदुद्रावसुग्रीवोवमन्रक्तम्भयाकुलः ॥ बालीस्वभवनंयातःसुग्रीवोराममब्रवीत् १० किंमांघातयसेरामशत्रुणाभ्रातृरूपिणा ॥ यदिमद्धननेवाञ्छात्वमेवजहिमांविभो ११ एवंमेप्रत्ययंकृत्वासत्यवादिन्रघूत्तम ॥ उपेक्षसेकिमर्थंमांशरणागतवत्सल १२ श्रुत्वासुग्रीववचनंरामः साश्रुविलोचनः ॥ आलिंग्यमास्मभैषीस्त्वंदृष्ट्वावामेकरूपिणौ १३ मित्रघातित्वमाशंक्यमुक्तवान्सायकंनहि ॥ इदानीमेवतेचिह्नंकरिष्येभ्रमशांतये १४ ॥

तब क्रोधकरके मोहित जो बाली है सो भी सुग्रीवको मूठियोंकरके मारता हुआ ८ और सुग्रीव बालीको मारताहुआ ऐसे परस्पर दोनों एकरूपके क्रोध करके युद्ध करतेहुये तिनको देखके परम विस्मित रामचन्द्र सुग्रीवके वधकी शंकासे बाणनहीं छोड़तेहुये ९ तबतौ भयकरके व्याकुल सुग्रीव मुखसे रुधिर का वमन करता भागताहुआ और बाली अपने घरको जाताहुआ तब सुग्रीव रामसों बोला १० कि हेराम भाई रूप जो शत्रुहै तिसके हाथसे मुझको क्यों मरवाये डालते हौ हेविभो जो आपको मेरे मारनेही की इच्छाहै तौ आपही मारिये ११ हेसत्यवादिन् हेरघूत्तमहेशरणागत वत्सल पहिले मुझकोविश्वास कराके अब किसवास्ते त्यागकरते हौ १२ येसुग्रीवके आर्त्त बचन सुनिकै नेत्रोंसे जिनके अश्रुपात होरहाहैं ऐसे जो राम सो सुग्रीवको हृदयसे आलिंगन करके

बोलतेहुए हे सुग्रीव तुम भय मतकरो तुम दोनों को एकरूपका देखकर १३ मित्रका न कहीं वधहोजाय यह शंकाकरके मैं बाणको नहीं छोड़ताहुआ अब भ्रमके निवारणके लिये इसी समयमें तुम्हारे चिह्नकरताहूं १४ ॥

गत्वाह्वयपुनःशत्रुं हतंद्रक्ष्यसिबालिनम् ॥ रामोहंत्वांशपेभ्रातर्हं निष्यामिरिपुंक्षणात् १५ इत्याश्वास्यससुग्रीवंरामोलक्ष्मणमब्रवीत् ॥ सुग्रीवस्यगलेपुष्पमालामामुच्यपुष्पिताम् १६ प्रेषयस्वमहाभागसु ग्रीवंबालिनंप्रति ॥ लक्ष्मणस्तुतदाबध्वागच्छगच्छेतिसादरम् १७ प्रेषयामाससुग्रीवंसोपिगत्वातथाकरोत् ॥ पुनरप्यद्भुतंशब्दंकृत्वाबा लिनमाह्वयत् १८ तच्छ्रुत्वाविस्मितोबालीक्रोधेनमहतावृतः ॥ ब ध्वापरिकरंसम्यक्गमनायोपचक्रमे १९ गच्छन्तंबालिनंतारागृही त्वानिषिषेधतम् ॥ नगन्तव्यन्त्वयेदानींशंकामेतीवजायते २० इदा नीमेवतेभग्नःपुनरायातिसत्वरः ॥ सहायोबलवां स्तस्यकश्चिन्नूनं समागतः २१ ॥

इससे फिरजाके शत्रुकोबुला औ तौमराही बालीको देखोगे और हे भ्रातः मैं रामहों अर्थात् मिथ्यावादी नहींहों और तुम्हारी शपथ करताहों एकक्षणही मात्रमें तुम्हारा शत्रु जो बाली तिसको मारोंगा १५ श्रीराम इस प्रकार सु- ग्रीवके चित्तको सावधान करके लक्ष्मणसे बचन बोलतेहुये कि हे लक्ष्मण सुग्रीवके गलेमें फूलेहुये पुष्पोंकी माला बांधिकै हेमहाभाग सुग्रीवको वाली के प्रतिभेजो १६ तौ लक्ष्मण भी तैसेही सुग्रीव के गलेमें माला को बांधिकै हे सुग्रीव तुम अभीजाओ ऐसे आदरसे भेजतेहुये अब यहांरामने सुग्रीव से जो कहा कितुम दोनों एकही रूपकेथे इस भ्रम से मित्र घातकी शंकासे मैंने बा- णनहीं चलाया और अब उस भ्रमके वारण करनेको तुम्हारी पहिंचानकेलिये चिह्न करताहों सो यहभ्रम व्यवहार दशामें भी राममें संभव नहीं होताक्यों कि रामके बाणहीको ऐसी सामर्थ्यहै कि बालीकानामलेके मंत्रपूर्वकबाणच- लाते तौ बालीहीका वधहोता और इसग्रंथमें रामकी सर्वज्ञताही वर्णनकीहै तौ जो भ्रमहुआ तौ प्रत्यक्ष सर्वज्ञता की हानिहुई और मनुष्यवत् आचरणभी यहां सुग्रीवके व्यवहारमें नहीं बनसका क्योंकि पहिले सुग्रीवहीसे कहिदिया है कि मेरे प्रति तुमने जो वचनकहा सो सत्यहीहै और मित्रके दुःख बढ़ानेसें मनुष्य नाटकता असंगतही सी प्रतीत होती है इससे इसका आशय यहहै कि राम ने अपने हृदय में यह विचार किया कि न मेरा कोई मित्रहै और न कोई शत्रुहै मैंतो सर्वत्रसमहों तौ विना अपराध शत्रुकी तरह बालीका मारना

अनुचितहै और शरणागत सुग्रीवकी रक्षाका नहींकरनाभी अनुचितहै येदोनों पक्षोंकी समान रूपता देखकर सुग्रीवसे कहा तुम दोनों समान रूपही हौ और जो रामनेकहा मित्रघातकी शंकासे बाण नहीं चलाया तिसका यह आशयहै कि यद्यपि मेरा कोई शत्रु मित्र नहीं है तौभी मुझको जो जिसभाव करके भजन करताहै उसको मैं भी कल्पवृक्षकी नाईं वैसेही भजन करताहूं तौ सुग्रीव तौ मित्रभावसे मेराभजन करताही है तौ मैंभी उसको मित्रभाव से भजनकरताहूं और बाली तौ अभी मेरेमें शत्रु मित्र कोई भाव नहीं करता है कदाचित् मित्रभावही करके जानै इससे उसके बधमें भी मित्रघात की शंकाहै और पहिंचान के वास्ते चिह्न करने को जो रामने कहा तिसका यह आशयहै कि यद्यपि मित्र सुग्रीव की रक्षाकात्याग और अपराध रहित बाली काबध ये दोनों अनुचित होनेसे समान रूपही हैं तौभी बिशेषता रूप चिह्न करने को इससमयमें ताराके हृदयमें प्रबिष्टहो के तिसकी द्वारा बालीको भी बोधकराना चाहिये फिर जब मेरा वृत्तान्त बालीसे कहैगी इतनेपै भी बाली नहीं समुझैगा तौ मेरेभक्त सुग्रीवका जो शत्रु है सो मेराभी शत्रु हुआ तौ उस के मारनेमें कुछदोष न होगा क्योंकि जब बाली मेरेसाथ सुग्रीवकी मित्रता को जानकरके भी सुग्रीव के बधमें प्रवृत्तहोगा तौ मेरी अवज्ञारूप विशेषताके चिह्न होनेसे पहिले की समानरूपतानहीं रहैगी और इसी आशयसे प्रत्यक्ष भी श्रीरामचन्द्र ने सुग्रीवके गलेमें लक्ष्मणकीद्वारा पुष्पोंकी माला बँधवाई जिससे अबभी मूढबाली यह जानै कि कोई बड़ाबली इसकासहायक जिस- ने पहिंचानकेलिये गलेमें माला बांधिके फिरभेजा है और लौकिक व्यवहार में पहिले बालीके नहींमारनेमें एकयहभी आशयहै कि रामचन्द्रजीने यह जाना कि ऐसी भाइयोंकी लड़ाई हुआई करती है जो हमअभी बालीको मारैं तौ कदाचित् सुग्रीवही न फिर हमको उलहना देवै इससे यही हमसे अत्यन्त कहै तब बालीको मारना चाहिये इससे दूसरे बार की लड़ाई में बध किया इनसब आशयों से राममें दयालुता और गम्भीरता और भक्तवत्सल- ता सूचितहोती है १७ अबसुग्रीव फिर जाय के गर्जताहुआ और बड़ेभारी शब्द करके बालीको युद्धकेलिये बुलाताहुआ १८ तिसशब्दको सुनिकै आ- श्चर्ययुक्त जोबाली सो बड़ाक्रोधकर फेटकोबांधिके चलनेलगा १९ जबबाली जानेलगा तौ तारा उसको पकड़के निषेध करतीहुई अर्थात् मना करतीहुई और यहबोली इस समयमें तुमको नहीं जानाचाहिये क्योंकि मेरेमनमें शंक होती है २० अभी तो सुग्रीव तुमसे हारके चलागयाथा और अभीही फिर शीघ्रही लौटिके युद्धकरने को बुलाताहै इससे निश्चयकरके इसकाकोई बल- वान् सहायकरनेवालाहै २१ ॥

बालीतामाहहेसुभ्रुशंकातेऽन्येतुतद्गता ॥ प्रियेकरंपरित्यज्यग च्छगच्छामितंरिपुम् २२ हत्वाशीघ्रंसमायास्येसहायस्तस्यकोभवे त् ॥ सहायीयदिसुग्रीवस्ततोहत्वोभयंक्षणात् २३ आयास्येमाशुचः शूरःकथंतिष्ठेद्गृहेरिपुम् ॥ ज्ञात्वाप्याहूयमानंहि हत्वायास्यामिसु न्दरि २४ तारोवाच ॥ मत्तोन्यच्छृणुराजेन्द्रश्रुत्वाकुरुयथोचितम् ॥ आहमामंगदःपुत्रोमृगयायांश्रुतंवचः २५ अयोध्याधिपतिःश्रीमान् रामोदाशरथिःकिल ॥ लक्ष्मणेनसहभ्रात्रासीतयाभार्ययासह २६ आगतोदण्डकारण्यंतत्रसीताहृताकिल ॥ रावणेनसहभ्रात्रामार्गमा णोथजानकीम् २७ आगतोऋष्यमूकाद्रिंसुग्रीवेणसमागतः ॥ चका रतेनसुग्रीवःसख्यंचानलसाक्षिकम् २८ ॥

तौ वाली तारा जो अपनी स्त्री तिससे बोलताहुआ कि हे सुभ्रु अर्थात् सुन्दरी हैं भौंहैं जिसकी ऐसी तू है सो सुग्रीवका कोई सहायहोगा इसशंका को त्यागदे और हे प्रिये मेरे हाथको छोड़के तूघरकोजा और मैं शत्रुके पासजाता हूं २२ उस सुग्रीवको मारिके शीघ्रही आताहूं और उसकासहाय कौन होसक्ता है और जो सुग्रीवका कोई सहायक भी होगा तौ उस सहायकको औ सुग्रीव को दोनोंकोमारिकै एकक्षणमात्र में आऊंगा २३ इससे तू शोच मतकर और मैं शूरहोके घरमें कैसे बैठसकाहूं बुलाते हुये बैरीको जानिकै इससे हे सुन्दरि उसको मारिकेही मैं लौटूंगा २४ तब फिर तारा बोलती हुई कि हेराजेन्द्रमैं फिर और कुछ बचन कहतीहौं तिनको सुनिकै जैसाउचित समुझिये तैसाकरिये अंगद मेरापुत्र शिकारखेलनेको गयाथा सो उसने वहां कुछसुना सो मुझ से कहताभया २५ कि अयोध्यानगरी के पति बड़े शोभायमान दशरथ के पुत्र श्रीराम जोकि इतिहासपुराणोंमें प्रसिद्धहैं सो लक्ष्मणनाम भाईकरके सहित और सीतानामकरके जो अपनी स्त्री तिसकरकेसहित २६ दण्डकबनको आते हुये तहां रावणने सीताकोहरा उस सीताको ढूंढ़ते ढूंढ़ते लक्ष्मणकरके सहित राम २७ ऋष्यमूक पर्वतपै आके सुग्रीवसे मिले फिर तिन राम के साथ सुग्रीव अग्निको साक्षीकरके मित्रता करता हुआ २८ ॥

प्रतिज्ञांकृतवान्रामःसुग्रीवायसलक्ष्मणः ॥ बालिनंसमरेहत्वारा जानंत्वांकरोम्यहम् २९ इतिनिश्चित्यतौयातौनिश्चितंशृणुमद्वचः ॥ इदानीमेवतेभग्नःकथंपुनरुपागतः ३० अतस्त्वंसर्वथावैरंत्यक्त्वा सग्रीवमानय ॥ यौवराज्येभिषिंचाशुरामंत्वंशरणंव्रज ३१ पाहिमामं

गदंराज्यंकुलंचहरिपुंगव॥इत्युक्त्वाश्रुमुखीतारापादयोःप्रणिपत्यतम् ३२ हस्ताभ्यांचरणौधृत्वारुरोदभयविक्लवा॥ तामालिंग्यतदावाली सस्नेहमिदमब्रवीत् ३३ स्त्रीस्वभावाद्बिभेषित्वंप्रियेनास्तिभयंमम॥ रामोयदिसमायातोलक्ष्मणेनसमंप्रभुः ३४ तदारामेणमेस्नेहोभविष्यतिनसंशयः॥ रामोनारायणःसाक्षादवतीर्णोखिलप्रभुः ३५॥

फिर लक्ष्मणसहित राम सुग्रीवके अर्थ यह प्रतिज्ञा करतेहुये कि संग्राममें बालीको मारके तुझको राजाकरूंगा २९ यह निश्चय करके दोनों अपनेरहने के स्थानको जातेहुये यह मेरा बचन निश्चयकर तुमजानो और जो ऐसा न होता तौ अभीहारके गया सुग्रीव अभी फिर आता ३० इससे तुम सबप्रकार से बैरको त्यागके सुग्रीवको लिवालावो फिर उस सुग्रीवको यौवराज्यमें अभिषेक करौ अर्थात् युवराज करो और शीघ्रही रामकी शरण जावो ३१ हे बानरों में श्रेष्ठ इस प्रकार करके मेरी रक्षा करो और अंगदकी रक्षाकरो और राज्य और कुल इनकीरक्षाकरो यह बचन कहिकै आंशुओंकी धारा जिसके चलिरही ऐसी जो तारा सो बालीके चरणोंमें गिरिकै ३२ और हाथोंसे पाँवों को पकड़कर अत्यन्तभयकरके बिह्वलहुई रोवतीहुई तब बाली उस ताराको आलिंगन कर स्नेहपूर्वक यह वचन बोलताहुआ ३३ कि हे प्रिये स्त्रीके स्वभावसे तू भय करतीहै और मुझको कुछ भय नहीं है और जो कदाचित् लक्ष्मण करके सहित सबके स्वामी राम आये हैं ३४ तो रामके साथ मेरा स्नेह होगा इसमें कुछ संदेह नहीं है क्योंकि राम साक्षात् नारायणही ने पृथिवीके भारदूर करने को अवतार धारण किया है ३५॥

भूभारहरणार्थायश्रुतंपूर्वंमयानघे॥स्वपक्षःपरपक्षोवानास्तितस्य परात्मनः ३६ आनेष्यामिगृहंसाध्विनत्वातच्चरणाम्बुजम्॥ भजतोनुभजत्येषभक्तिगम्यःसुरेश्वरः ३७ यदिस्वयंसमायातिसुग्रीवोहन्मितंक्षणात्॥ यदुक्तंयौवराज्यायसुग्रीवस्याभिषेचनम् ३८ कथमाहूयमानोहंयुद्धायरिपुणाप्रिये॥शूरोहंसर्वलोकानांसंमतःशुभलक्षणे ३९ भीतभीतमिदंवाक्यंकथंबालीवदेत्प्रिये॥ तस्माच्छोकम्परित्यज्यातिष्ठसुन्दरिवेश्मनि ४० एवमाश्वास्यतारांतांशोचंतीमश्रुलोचनाम्॥ गतोबालीसमुद्युक्तःसुग्रीवस्यवधायसः ४१ दृष्ट्वाबालिनमायांतंसुग्रीवोभीमविक्रमः॥ उत्पपातगलेबद्धपुष्पमालःपतंगवत् ४२॥

और परमात्मा जो राम तिनका न कोई मित्रहै और कोई शत्रु भी नहीं है

अर्थात् सम हैं ३६ हे पतिव्रते तिन राम के चरणारविन्द को नमस्कारकर के गृहको लिवा लाऊंगा और जो कोई उन को भजता है उसको वह भी सब देवताओंके स्वामी रामभजतेहैं ३७ और जो अकेला सुग्रीवही युद्ध करने को आवैगा तौ क्षणभर में उसको मारूंगा और जो सुग्रीव को युवराज करने को कहा ३८ तिसका उत्तर यह है कि हे प्रिये जो बैरी युद्धके लिये मुझको बुलावे तौ सबलोकों को सम्मत बाली नामकरके शूरमैं ३९ भीत भीतडरसे भी डरेहुयेके वचन कैसे कहौं अर्थात् भयसे राज्यदेने को कैसे कहौं तिससे हे सुन्दरि शोकको त्यागकरि घरमें बैठ ४० इस प्रकार बाली शोचती हुई और रोतीहुई ताराको समझाकर सुग्रीवके मारनेको उद्योगयुक्त होके जाताही हुआ ४१ सो बड़ा भयंकरहै पराक्रम जिसका और बंधीहुई पुष्पोंकी मालागले में जिसके ऐसा जो सुग्रीव सो बालीको आवते देखके युद्धके अर्थ उसके सम्मुखपक्षी के तुल्य वेगसे कूदताहुआ ४२ ॥

मुष्टिभ्यांताडयामासबालिनंसोपितंतथा॥ अहम्बालीचसुग्रीवंसुग्रीवोबालिनंतथा ४३ रामंविलोकयन्नेवसुग्रीवोयुयुधेयुधि ॥ इत्येवंयुद्ध्यमानौतौदृष्ट्वारामःप्रतापवान्४४बाणमादायतूणीरादैन्द्रन्धनुषिसंदधे॥ आकृष्यकर्णपर्यंतमदृश्योवृक्षखण्डगः ४५ निरीक्ष्यबालिनंसम्यग्लक्ष्येतद्धृदयंहरिः ॥ उत्ससर्जाशनिसमंमहाबेगंमहाबलः ४६ बिभेदसशरोवक्षोबालिनःकम्पयन्महीम्॥उत्पपातमहाशब्दंमुंचन्सनिपपातह ४७ तदामुहूर्तंनिःसंज्ञोभूत्वाचेतनमापसः ॥ ततोबालीददर्शाग्रेरामंराजीवलोचनम् ॥धनुरालंब्यवामेनहस्तेनान्येनसायकम् ४८ बिभ्राणंचीरवसनंजटामुकुटधारिणम् ॥ विशालवक्षसंभ्राजद्वनमालाविभूषितम् ४९ ॥

और दोनों मुट्ठी बांधिकै बाली के हृदयमें ताड़ना करताहुआ और बाली सुग्रीवको मारताहुआ फिर सुग्रीव बालीको ४३ इस प्रकार रामको दिखावता हुआ अर्थात् जल्दी इसको मारौ ऐसा इशारा करता हुआ सुग्रीव युद्ध करता हुआ ऐसे दोनोंको युद्ध करते हुये प्रताप युक्त जो श्रीराम सो देखकर ४४ तरकससे वाण निकाल कर अगस्त्यका दियाहुआ जोधनुष तिस में संधान करते हुये वृक्षों के समूह में स्थित नहीं दिखाई पड़े ऐसे जो राम सो कानतक धनुष खैंचिकै ४५ और बालीको अच्छी तरह देखके उस के हृदयका निशाना करके बड़े बलवान जो श्रीरामचन्द्र सो बज्रके तुल्य जो बड़ा वेगयुक्तबाण

तिसको छोड़तेहुये ४६ वहबाण बालीके हृदयको विदारण करताहुआ और बाली बड़ेभारी शब्दको छोड़ता और उछलिकै पृथिवी को कँपाताहुआ गिर पड़ा ४७ तिसके पीछेघड़ीभर बाली मूर्च्छित होके फिरकुछ होशको प्राप्त होताभया तब बाली अपने आगे कमलवत् विशाल नेत्र हैं जिनके और बायें हाथमें धनुष और दाहिने हाथमें बाण को धारण करके जो स्थितहैं ४८ और चीरवस्त्रको जो धारणकरे और जटा मुकुटको धारणकरे और विस्तृतहै वक्षःस्थल अर्थात्छाती जिनकी और कण्ठसेलेके जानुतक शोभायमान जोबनमाला तिस करके भूषित ४९ ॥

पीनचार्वायतभुजंनवदूर्वादलच्छविम् ॥ सुग्रीवलक्ष्मणाभ्यांचपश्र्वयोःपरिसेवितम् ५० विलोक्यशनकैःप्राहबालीरामंविगर्हयन् ॥ किंमयापकृतंरामतवयेनहतोस्म्यहम् ५१ राजधर्ममविज्ञायगर्हितंकर्मतेकृतम् ॥ वृक्षखण्डेतिरोभूत्वात्यजतांमयिसायकम् ५२ यशःकिंलप्स्यसेरामचोरवत्कृतसंगरः ॥ यदिक्षत्रियदायादोमनोवंशसमुद्भवः ५३ युद्धंकृत्वासमक्षंमेप्राप्स्यसेतत्फलंतदा ॥ सुग्रीवेणकृतंकिंतेमयावानकृतंकिमु ५४ रावणेनहृताभार्यातवराममहावने ॥ सुग्रीवंशरणंयातस्तदर्थमितिशुश्रुम ५५ बतरामनजानीषेमद्बलंलोकविश्रुतम् ॥ रावणंसकुलंबध्वाससीतंलंकयासह ५६ ॥

और पुष्ट और सुन्दर और लम्बायमानहैं भुजा जिनकी और दूर्वादलके तुल्यश्यामबर्णहै कांतिजिनकी और दोनों तरफ़से सुग्रीव और लक्ष्मण करके सेवितहैं ऐसे रामचन्द्रको देखता हुआ ५० इसप्रकार बाली रामचन्द्र को देखके निन्दा करताहुआ धीरेधीरे रामसे बोला हे राम मैंने तुम्हारा क्याअपराध कराथा जिससे मुझकोमारा ५१ और राजधर्मको बिना जाने बड़ा निन्दित कर्म तुमने किया जो वृक्षोंकी आड़ होके मेरे ऊपर बाणको छोड़ा ५२ और हेराम चोरकी तरह संग्राम करके कौन यशको प्राप्त होवोगे जो कदाचित् मनुके बंशमें उत्पन्न क्षत्रियके पुत्रहोते ५३ तौ प्रत्यक्ष युद्धकरके उसके फलको प्राप्तहोते अर्थात् यशको प्राप्तहोते अथवा मृत्यु को प्राप्तहोते और सुग्रीवने अभी तुम्हारे संग क्या किया और मैंने क्या नहीं किया ५४ और हेराम तुम्हारी स्त्री दण्डकबन में रावणने हरीथी तिसीके अर्थ तुम सुग्रीवके शरण प्राप्त हुये यहमैं सुनताभया हौं ५५ सो बड़े खेदकी बातहै जो लोकमें विख्यात मेरे बलको नहीं जानते थे हेराम जो मैं इच्छा करता तौ कुल सहित रावणको बांधिकै सीता सहित और लंका सहित रावणको ५६ ॥

आनयामिमुहूर्त्तार्द्धाद्यदिचेच्छामिराघव ॥ धार्मिष्ठंइतिलोकेस्मिन्कथ्यसेरघुनन्दन ५७ वानरंव्याधवद्धत्वाधर्मंकंलप्स्यसेवद ॥ अभक्ष्यंवानरंमांसंहत्वामांकिंकरिष्यसि ५८ इत्येवंबहुभाषन्तंबालिनंराघवोब्रवीत् ॥ धर्मस्यगोप्तालोकेस्मिंश्चरामिसशरासनः ५९ अधर्मकारिणंहत्वासद्धर्मंपालयाम्यहम्॥दुहिताभगिनीभ्रातुर्भार्याचैवतथास्नुषा ६० समायोरमतेतासामेकामपिविमूढधीः ॥ पातकीसतुविज्ञेयःसवध्योराजभिःसदा ६१ त्वंतुभ्रातुःकनिष्ठस्यभार्यायारमसेबलात् ॥ अतोमयाधर्मविदाहतोसिवनगोचर ६२ त्वंकपित्वान्नजानीषेमहान्तोविचरंतियत् ॥ लोकंपुनानाःसंचारैस्ततस्तन्नातिभाषयेत्६३॥

आधे मुहूर्त्त में अर्थात् घडीभरमें लै आवता और हे रघुनन्दन तुमलोकमें धर्मिष्ठ कहलाते हो सो ५७ बानरको व्याधकी तरह मारके कौनसे धर्मको प्राप्तहोउगे और अभक्ष्यहै मांस जिसका ऐसे बानरको मारके क्याकरोगे ५८ ऐसे बहुतसे अनर्गल वचन कहिरहा जो बाली है तिससे श्रीराम बोलतेहुये कि हेबानर धर्म्मका रक्षक जो मैं हौं सो इसलोकमें धनुषबाण लेकरके विचर रहाहौं ५९ अधर्मके करनेवाले को मारिकै सत्पुरुषों के धर्मकी रक्षा करताहौं कन्या और बहिन और छोटेभाईकी स्त्री और पुत्रकी स्त्रीये चारों बराबरहैं ६० जो मूढमति इनमें से एको मेंभी रमै सो पातकी जानिये और सदावह राजों को मारने योग्यहै ६१ और तूतौ छोटेभाईकी स्त्री में जबरदस्ती रमणकरताहै इससे हेबानर धर्मको जानकरकेही मैंने तेरा वधकिया ६२ ॥ इसका आशय यहहै कि तू कदाचित् यह जानता होय कि धर्मशास्त्रमें अधिकार मनुष्यों ही को है और तिर्यग्योनि जो शूकर आदि तिनको नहीं है तैसेही मैंभी बानरयोनि में हौं इससे मुझको अधर्मका कुछ दोषनहीं है सो तिसका उत्तर यहहै कि तिर्य्यगादि शूकरादिकों को जो शास्त्रमें अधिकार नहीं है तिसमें कारण केवल अज्ञानहीहै क्योंकि धर्म अधर्म को वे कुछनहीं जानतेहैं और तूतौ तैसा नहीं है क्योंकि बाल अवस्थाही से तुझको सब वेदोंका ज्ञानरहाहै जिससे तू इन्द्रके अंशसे उत्पन्नहै और इसीसे तू समुद्रके तीर संध्योपासन करने को जाताथा तब सूर्यको अंजलि देतेपै तेरे बगलमें से रावण छूटिगयाथा और देवतोंको भी अधर्मका दोषलगताहै जैसे इन्द्रको अहल्याके गमनमें और इसीसे ब्रह्मविद्या का अधिकार देवतोंको भी वेदमें प्रसिद्धहै इससेपुण्य पापका ज्ञान जिसकिसी को होय तिसके ऊपर शास्त्रकी आज्ञायुक्तही है तैसे तुझको भी अपनी कन्याके समान छोटेभाईकी स्त्रीमें जबरदस्ती गमनकरने में दोषहुआ और जीवोंकी

हिंसा करनेवाले व्याघ्र आदि दुष्टोंको छिपकरके मारना राजाओं का धर्महीहै इससे जिसप्रकारसे प्रजाकी रक्षा और धर्मकी रक्षाहोय तैसे तैसे अधर्मियोंके बधकरने में राजाको कुछ दोष नहीं है और हेवानर तूतौ बानर योनिकीचंचलतासे नहीं जानताहै कि महात्मालोग अपने गमनकरके लोकको पवित्रकरतेहुये विचरते हैं इससे उनकी निन्दा न करै अर्थात् ताराने तुझको मेराबोधभी कराया तौभी धर्मकी सूक्ष्मगति और मेरास्वभाव अपने बलके गर्वसेबानरजातिके स्वभाव वशहोकर नहीं जाना जो जानता तौ सुग्रीवसे मिलापकर मुझको खोजिलेता सो तौ किया नहीं और उलटी मेरी निन्दाकरके दोषभागी हुआ यह श्रीराम के कहनेका आशयहै ६३ ॥

तच्छ्रुत्वाभयसंत्रस्तोज्ञात्वारामंरमापतिम् ॥ बालीप्रणम्यरभसाद्रामंवचनमब्रवीत् ६४ रामराममहाभागजानेत्वांपरमेश्वरम् ॥ अजानतामयाकिंचिदुक्तन्तत्क्षन्तुमर्हसि ६५ साक्षात्त्वच्छरघातेनविशेषेणतवाग्रतः ॥ त्यजाम्यसून्महायोगिदुर्लभंतवदर्शनम् ६६ यन्नामविवशोगृह्णन्म्रियमाणःपरंपदम् ॥ यातिसाक्षात्सएवाद्यमुमूर्षोर्मेपुरःस्थितः ६७देवजानामिपुरुषंत्वांश्रियंजानकींशुभाम् ॥ रावणस्यवधार्थायजातंत्वांब्रह्मणार्थितम् ६८ अनुजानीहिमांरामयांतंत्वत्पदमुत्तमम् ॥ ममतुल्यबलेबालेअंगदेत्वंदयांकुरु ६९ विशल्यंकुरुमेरामहृदयंपाणिनास्पृशन् ॥ तथेतिबाणमुद्धृत्यरामःपस्पर्शपाणिना ॥ त्यक्त्वातद्वानरंदेहममरेंद्रोभवत्क्षणात् ७० ॥

अब बाली यहबचन रामके सुनिकै बड़ी भयसे त्रासयुक्तहोके और रामको साक्षात्लक्ष्मीका पति जानिकै प्रणाम करके यह शीघ्रही कहता हुआ ६४ कि हेराम हेराम हेमहाभाग मैं जानताहौं आप साक्षात् परमेश्वरहौ और जो मैंने तुम्हारी महिमा को बिना जाने कहाहै तिसको क्षमाकरने योग्यहौ ६५ साक्षात् तुम्हारे बाणके मारने से और विशेषकरके तुम्हारे आगे प्राणों का त्याग करताहौं क्योंकि तुम्हारा दर्शन योगियों को भी दुर्लभ है ६६ और बिबश होकर भी अर्थात् रोगादि ग्रस्त होकरके भी जो मरण समय में आपके नामको ग्रहण करताहुआ शरीर को त्याग करै तौ परमपद को प्राप्त होताहै सो साक्षात् आप इस समयमें मरने की इच्छा करता हुआ जो मैं तिसके नेत्रोंके आगे स्थितहोरहे हौ तौ मैं परमपदको प्राप्तहौं यह क्या कहना है ६७ और हे देव रावणके मारनेको ब्रह्मा करके प्रार्थना किये साक्षात् आप

नारायणहौ यह मैं जानताहौं और सीताको लक्ष्मी जानताहौं ६८ और हे राम सब से उत्तम जो तुम्हारा पद तिसको जाताहुआ जो मैं तिसको आज्ञा दीजिये और मेरे तुल्यबली जो बालक अंगद तिसके ऊपर दयाकीजिये ६९ और अपने हाथ से मुझको स्पर्श करते हुये हे राम मेरे हृदय से बाण निकाल लीजिये तौ राम तैसेही उसके हृदयसे बाण निकालिके उसको अपने हाथसे स्पर्श करते हुये तब वाली उस बानर देहको त्याग करके क्षणमात्रमें इन्द्र होजाताहुआ अर्थात् इन्द्र के अंश से उत्पन्न हुआथा सो अन्त में इन्द्रके शरीरमें लयको प्राप्तहुआ ७० ॥

वालीरघूत्तमशराभिहतोविमृष्टोरामेणशीतलकरेणसुखाकरेण ॥ सद्योविमुच्यकपिदेहमनन्वलभ्यंप्राप्तःपरंपरमहंसगणैर्दुरापम् ७१ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किन्धाकाण्डे द्वितीयःसर्गः २ ॥

रामके बाणकरके मारागया जो बाली सो सुख करनेवाले रामके शीतल हाथसे स्पर्श कियाहुआ शीघ्रही वानर देहको त्याग करि और को न मिलसकै और परमहंसोंको भी दुष्प्राप परमपदको प्राप्त होताहुआ अर्थात् इन्द्रके अधिकार के अन्तमें मुक्तिको प्राप्तहोगा इससे परमपद प्राप्तिकही ७१ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किन्धा काण्डेभाषाटीकायांद्वितीयःसर्गः २ ॥

निहतेबालिनिरणेरामेणपरमात्मना॥ दुद्रुवुर्वानराःसर्वेकिष्किन्धां भयविक्लवाः १ तारामूचुर्महाभागेहतोबालीरणाजिरे ॥ अंगदंपरिरक्षाद्यमन्त्रिणःपरिनोदय २ चतुर्द्वारकपाटादीन्बध्वारक्षामहेपुरीम् ॥ वानराणांतुराजानमंगदंकुरुभामिनि ३ निहतंबालिनंश्रुत्वाताराशोकविमूर्च्छिता ॥ अताडयत्स्वपाणिभ्यांशिरोवक्षश्चभूरिशः ४ किमंगदेनराज्येननगरेणधनेनवा ॥ इदानीमेवनिधनंयास्यामिपतिनासह ५ इत्युक्त्वात्वरितातत्ररुदन्तीमुक्तमूर्द्धजा ॥ ययौताराऽतिशोकार्त्ता यत्रभर्तृकलेवरम् ६ पतितंबालिनंदृष्ट्वारक्तैःपांशुभिरावृतम्॥ रुदती नाथनाथेतिपतितातस्यपादयोः ७ ॥

दोहा तीसर सर्ग विलाप सुनि तारा को रघुराज ॥
दिव्यज्ञानतिहिकोदियो दियोसुकण्ठहिराज १ ॥

अब महादेव जी पार्वतीसे कथा वर्णन करैहैं हे पार्वति जब संग्राम में राम

करके बाली मारागया तौ भयकरके विह्वल व्याकुल सबबानर किष्किन्धा नगरी को भाग के जातेहुये १ और तारासे कहतेहुये कि हे महाभागे संग्राममें बाली मारागया इस से अंगद की रक्षा कीजिये और नगर की रक्षा को मंत्रियों को आज्ञा कीजाय २ और सब वानर चारों दरवाजों के फाटक बन्दकरि नगरी की रक्षाकरते रहैं और हे भामिनि बानरों का राजा अंगदको करना चाहिये ३ तौ बाली को मराहुआ सुनिकै शोक करके मोहित जो तारा सो अपने हाथों से शिर और छाती कूटती हुई ४ और यह कहतीहुई कि मुझको क्यातो अंगदसे प्रयोजनहै और क्याराज्यसे और क्या नगरसे और क्या धनसे प्रयोजनहै मैंतो इसीसमयमें पतिकेसंगमृत्युको प्राप्तहोउँगी अर्थात् सतीहोजावोंगी ५ यह कहिकरके शीघ्रही रोवती हुई और केशोंको खोले और अतिशोककरके पीड़ित तारा जहां पतिका शरीर पड़ाथा तहां जातीहुई ६ रुधिरकरके और धूलिकरके लपटे हुये और पृथिवी में पड़ाहुआ बाली को देखके हेनाथ हेनाथ ऐसे कहिकै रोवती उसके चरणों के समीप तारा गिरपड़ती हुई ७ ॥

करुणंविलपंतीसाददर्शरघुनन्दनम्॥राममांजहिबाणेनयेनबाली हतस्त्वया ८ गच्छामिपतिसालोक्यंपतिर्मामभिकांक्षते ॥ स्वर्गेपिनसुखंतस्यमांविनारघुनन्दन ९ पत्नीवियोगजंदुःखमनुभूतंत्वयानघ ॥ बालिनेमांप्रयच्छाशुपत्नीदानफलंभवेत् १० सुग्रीवत्वंसुखंराज्यंदापितंबालिघातिना ॥ रामेणरुमयासार्द्धंभुंक्ष्वसापत्नवर्जितम् ११ इत्येवंविलपंतींतांतारांरामोमहामनाः ॥ सांत्वयामासदयया तत्त्वज्ञानोपदेशतः १२ किंभीरुशोचसिव्यर्थंशोकस्याविषयंपतिम्॥ पतिस्तवायंदेहोवाजीवोवावदतत्त्वतः १३ पंचात्मकोजड़ोदेहस्त्वङ्मांसरुधिरास्थिमान् ॥ कालकर्मगुणोत्पन्नःसोप्यास्तेद्यापितेपुरः १४॥

और करुणा जैसे उत्पन्न होवै तैसे बिलाप करतीहुई रामको देखती हुई कहनेलगी कि हे राम जिस बाणकरके तुमने बालीको माराहै उसी बाणकरके मुझको भी मारिये ८ मैं पतिके लोकको जावोंगी क्योंकि पति मेरी इच्छा करता होगा जिससे हे रघुनन्दन मेरे बिना स्वर्गमें भी सुख उसको नहींहै ९ और हे अनघ निष्पाप स्त्रीके बियोगका जो दुःखहै तिसको तुम जानतेहौ तौ बालीके अर्थ मुझको शीघ्रही दीजिये तौ तुमको स्त्रीदानका फलहोगा १० और हे सुग्रीव रामने बालीसे दिलायाहुआ जो राज्य और सुख तिसको तुम रुमा जो अपनी स्त्री तिस करके सहित निष्कंटक भोगकरौ ११ इस प्रकार बिलाप

करतीहुई जो तारा तिसको उदारमन जो श्रीराम सो दयाकरके तत्त्वज्ञानको उपदेश करके सावधान करतेहुये १२ कि हे भीरु डरनेवाली शोककेनहीं करने योग्य जो अपनापति है तिसको व्यर्थ शोच करती है औरतू बिचार करकेकहु कि देह तेरापति है अथवा जीवपति है १३ तिसमें जो कदाचित् देहकोपति मानतीहोय तौ सो पृथिवी और जल और तेज और पवन औ आकाश इनपांच महाभूतोंको मिल करके एक तरहका कोई रूप होजाना सो देह कहानेलगा इससेजड़हुआ और इसमें खाल और मांस और रुधिर और हाड़ और मल आदि पदार्थ भरेहुये हैं इससे निन्द्य है और काल और पुण्य पापादि कर्म सत्त्वादिकगुण इनसे उत्पन्न हुआ है इससे नाशवान् है अर्थात् देखते देखतेपानीकासा बलबूलाके तरह बिलाय जाताहै ऐसे नहीं प्रीतिके योग्य जो देह तिसमें क्यातेरे पतिकी बुद्धिहोरही है और तिसपै भी उसीको पति मानती होय तौ तेरे नेत्रों के आगे पड़ाही है फिर वृथा शोच करनाहै १४ ॥

मन्यसेजीवमात्मानंजीवस्तर्हिनिरामयः॥नजायते नम्रियतेनतिष्ठतिनगच्छति १५ नस्त्रीपुमान्वाषंढो वा जीवःसर्वगतोऽव्ययः॥एकएवाद्वितीयोयमाकाशवदलेपकः ॥ नित्योज्ञानमयःशुद्धःसकथंशोकमर्हति१६ तारोवाच॥ देहोऽचित्काष्ठवद्राम जीवोनित्यश्चिदात्मकः ॥ सुखदुःखादिसंबन्धःकस्यस्याद्राममेवद १७श्रीरामउवाच॥अहंकारादिसंबंधोयावद्देहेन्द्रियैःसह ॥ संसारस्तावदेवस्यादात्मनस्त्वविवेकिनः १८ मिथ्यारोपितसंसारोनस्वयं विनिवर्तते॥ विषयान्ध्यायमानस्यस्वप्नेमिथ्यागमोयथा १९ अनाद्यविद्यासंबंधात्तत्कार्याहंकृतेस्तथा॥ संसारोऽपार्थकोपिस्याद्रागद्वेषादिसंकुलः २० मनएवहिसंसारोबंधश्चैवमनःशुभे ॥ आत्मामनःसमानत्वमेत्यतद्गतबंधभाक् २१ ॥

अब कदाचित् जीवही को पतिमानती होय तौ जीव तौ नाशादिकरके र-हितहै और न वह उत्पन्न होय न मरै और न खड़ाहोय न चलै १५ और न स्त्री है न पुरुष है नपुंसकहै और सबमें है और अविनाशी है और एक है और अद्वितीयहै अर्थात् दूसराकोई उसके नहीं है और आकाशकी नाईं निर्लेप है और नित्यहै और ज्ञानस्वरूपहै और शुद्धहै सो कैसे शोचकरने के योग्यहो सकाहै १६ तब तारा पूछती हुई हे राम जो देह काष्ठकेतुल्य जड़है और जीव नित्य चितरूप है तौ हे राम सुख दुःखआदिका संबंध किसको होताहै सो क-हिये मुझसे १७ अब श्री राम इसका उत्तरदेते हैं कि जबतकदेह और इन्द्रिय इनके विषे अहंकारादिक का सम्बन्धहै तबतक विवेकरहित जोआत्मा तिसको

जन्म मरणादिरूप संसार होताही है इसका आशय यहहै जब बुद्धिमें आत्माका प्रतिबिम्बपड़ा और उसप्रतिबिम्बयुक्त बुद्धिका चक्षुरादि इन्द्रियोंसे सम्बन्धहुआ और उनइन्द्रियोंकाभी जब अपने योग्य विषयका सम्बन्ध होताहै तौमैं देखता हौंमैं सुनताहौं मैं सूंघताहौं ऐसी बहुततरहकी प्रतीति इस पुरुषको होतीहै तहां देखना सुनना इत्यादिक इन्द्रियों का धर्महै और देखने के योग्य घटादि विषय को जो नहीं जानता था उस अज्ञानकी निवृत्ति करिदेना बुद्धिकाधर्महुआ और यही घटहै ऐसा ज्ञानहोना आत्मधर्म है तौ यह मैं हौं यह मेराहै इसप्रकार अहं-कार रूप जो बुद्धिकी वृत्ति तिसकरके देखना सुनना इत्यादि इन्द्रियों के धर्म का आत्मा के बिषे आरोपणकरि मैं देखताहौं मैं सूंघताहौं मैं जाताहौं मैं खाता हौं ऐसा जो झूंठाही औरके धर्मको अविवेक करके मानताहै और ज्ञानानन्द अपने स्वरूपको भूलिकैमैं अज्ञहौंमैं दुःखीहौं ऐसा अन्तःकरण धर्मको जबजीव मानताहै तब संसारही को प्राप्तहोताहै इससे यह सिद्धहुआ कि सुखदुःखादि सम्बन्ध अविवेक करके मिलेहुये चित्त जड़में प्रतीतहोताहै विवेक करके देखा जावे तौ न केवल देहका धर्म है न केवल चेतनकाहै १८ हे तारे इसप्रकार और के अविवेकते आरोपण कियागया अत्यन्त झूँठाभी संसार है परन्तु आपही से नहीं निवृत्तहोता जैसे विषयोंका ध्यानकरता हुआ जो पुरुष तिसको स्वप्नमें झूंठे पदार्थ की प्राप्तिहोय सो बिनाजागे निवृत्ति नहीं होती ऐसे संसारभी बिना ज्ञानके निवृत्त नहीं होता १९ अनादि कालकी जो अविद्या तिसके संबन्धसे उसका कार्य जो अहंकार तिसकरिकै झूँठाभी संसार रागद्वेष आदि दोषोंको उत्पन्नकरताहै २० और हे कल्याणयुक्ते मनही संसारका कारणहै और बन्धन करनेवालाहै और यह जीव मनकी एकताको प्राप्तहोके अर्थात् मनमें हौं ऐसा मानिकै मनमें जो बन्धन है तिसको आपही प्राप्तहोताहै २१ ॥

यथाविशुद्धःस्फटिकोऽलक्तकादिसमीपगः ॥ तत्तद्वर्णयुगाभातिव स्तुतोनास्तिरंजनम् २२ बुद्धीन्द्रियादिसामीप्यादात्मनःसंसृतिर्बला त् ॥ आत्मास्वलिंगंतुमनःपरिगृह्यतदुद्भवान् २३ कामाञ्जुषन्गु णैर्बद्धःसंसारेवर्त्ततेवशः ॥ आदौमनोगुणान्सृष्ट्वाततःकर्माण्यनेक धा २४ शुक्ललोहितकृष्णानिगतयस्तत्समानतः ॥ एवंकर्मवशाज्जी वोभ्रमत्याभूतसंप्लवम् २५ सर्वोपसंहृतोजीवोवासनाभिःस्वकर्मभिः ॥ अनाद्यविद्यावशगस्तिष्ठत्यभिनिवेशतः २६ सृष्टिकालेपुनःपूर्ववासना मानसैःसह ॥ जायतेपुनरप्येवंघटीयंत्रमिवावशः २७ यदापुण्यविशेषे णलभतेसंगतिंसताम् ॥ मद्भक्तानांसुशांतानांतदामद्विषयामतिः २८

जैसे निर्मल जो स्फटिकमणि सो लाखके रंगकी समीपता को प्राप्त होके तैसेही वर्णका मालूम पड़ताहै और वास्तवमें तौरँगाहुआ नहीं है २२ ऐसे-ही संसारधर्म युक्त जो बुद्धि और इन्द्रियादि तिनके समीप होनेसे अवशहोके संसार प्राप्तहोताहै क्योंकि आत्मा अपनेजतानेवाला जो मनहै तिसको ग्रहण करिकै क्योंकि बिना आत्माके जड़ मनमेंज्ञान नहीं संभव होता इससे आत्मा के जतानेवाला मनहुआ तिसको ग्रहण करके अर्थात् अविवेक करके मैं ही यहहौं ऐसामानिकै तिसमनसे उत्पन्न हुये जो बिषय तिनको सेवन करताहु-आ २३ बिषय संबन्धी रागद्वेषादिकों करके बँधेकी तरह अवशहो संसार में रहताहै पहिले मन रागद्वेष आदि गुणोंको रचिकै फिर कर्मोंको रचताहैअनेक प्रकारके २४ तिसमें एकप्रकारके शुक्ल कर्महैं हिंसादि दोष रहित जप ध्यानादि और एकप्रकारके लोहित कर्म हैं हिंसासे मिलेहुये यागादि और एकप्रकारके कृष्ण कर्महैं अर्थात् काले पाप कर्म फिर तिन शुक्लादि कर्मोंके तुल्यही गतियों को मन रचताहै तिसमें शुक्ल कर्मकी गति ब्रह्मलोक प्राप्तिरूप और लाल कर्मकी गति स्वर्गादि और काल कर्मकी गति नरकादि इन गतियों में प्रलय काल पर्यंत जीव भ्रमाही करताहै २५ और प्रलयमें बासना और कर्म इन करके सहित अभिनिवेश करके अन्तःकरण आदिलिंग शरीर को अपनाही मानताहुआ जो जीव सो अन्तःकरणादि लिंगशरीरकी भी कारण भूत अनादि अविद्या तिसमें लीनहोके रहताहै २६ फिर जब सृष्टि समय होताहै तौ जीव पहिले की वासना और कर्म इनकरके सहित जो अन्तःकरण आदि लिंग शरीर तिसको अविद्या से खैंचकर उत्पन्न होता है अर्थात् पूर्व बासना के अनुसार से देवादि शरीर को धारण करताहै इसप्रकार घटीयंत्र जोरहटतिस में बँधेहुये जो घटते जैसे यंत्रके वेगके आधीनहुये जलको भराभी करतेहैं और छोड़तेभीहैं तैसे अविद्यारूप यंत्रमें बँधेहुये जे जीव ते पूर्ववासनाकर जन्मते और मरते रहते हैं २७ कदाचित् ताराकहै कि जब ऐसी व्यवस्थाहै तोमुक्ति काहेको कभी होनी है तिससे राम कहतेहैं किहे तारे जबकभी पुण्य विशेष करके यह जीव शांतहै चित्त जिनका ऐसे महात्मा मेरे भक्तों के संग को प्राप्त होताहै तौ ईश्वरही सबसे बड़ाहै ऐसी बुद्धि उत्पन्न होती है २८ ॥

मत्कथाश्रवणेश्रद्धादुर्लभाजायतेततः ॥ ततःस्वरूपविज्ञानमना यासेनजायते२९ तदाचार्यप्रसादेनवाक्यार्थज्ञानतःक्षणात् ॥ देहेंद्रि यमनःप्राणाहंकृतिभ्यःपृथक्स्थितम् ३० स्वात्मानुभावतःसत्यमान दात्मानमद्वयम् ॥ ज्ञात्वासद्योभवेन्मुक्तःसत्यमेवमयोदितम् ३१ एवं

मयोदितंसम्यगालोचयतियोनिशम् ॥ तस्यसंसारदुःखानिनस्पृशं तिकदाचन ३२ त्वमप्येतन्मयाप्रोक्तमालोचयविशुद्धधीः॥नस्पृश्य सेदुःखजालैःकर्मबंधाद्विमोक्ष्यसे ३३ पूर्वजन्मनितेसुभ्रुकृतामद्भक्ति रुत्तमा॥अतस्तवविमोक्षायरूपंमेदर्शितंशुभे३४ध्यात्वामद्रूपमनिश मालोचयमयोदितम् ॥ प्रवाहपतितंकार्यंकुर्वत्यपिनलिप्यसे ३५ ॥

फिर मेरे कथा श्रवणमें श्रद्धा उत्पन्न होती है अर्थात् वेदान्तादिश्रवण में सो श्रद्धा प्राकृत संसारी पुरुषोंको अति दुर्लभहै फिर मेरे स्वरूपका विज्ञान होताहै अर्थात् मेरा स्वरूप जिस करके जाना जावे ऐसा ज्ञान और वैराग्य आदि साधन सब बिनाही श्रम होतेहैं २९ फिर साधन संपत्ति के अनन्तर आचार्य जो गुरु तिनके प्रसाद से (तत्त्वमसि) इसको आदि लेके जो वेदान्त शास्त्रके महावाक्य तिनके यथार्थ ज्ञानसे हुआ जो आत्माका अनुभव अर्थात् ब्रह्मसे अभेद करके आपने स्वरूपका ज्ञान तिस करके देह इंद्रिय मन और प्राण और अहंकार इनसे पृथक् स्थित जो ३० सत्य आनंद और द्वैत रहित जो आत्मा तिसको जानिकै शीघ्रही मुक्तहोताहै यह मैंने सत्यही कहा है ३१ इस मेरे कहेहुये ज्ञानको जो अच्छीतरह निरन्तर बिचार करताहै उसको संसार के दुःखकभी स्पर्श नहीं करते हैं ३२ और हे तारे तूभी इस मेरे कहेहुये ज्ञान को निर्मल बुद्धिहोकर विचारकरु तो दुःखोंके समूहसे नहीं स्पर्श कीजावैगी और कर्म बन्धनसे छूटजावैगी ३३ और पूर्वजन्ममें मेरीतूने बड़ी उत्तम भक्ति कीहै इससे हे कल्याणरूपे मैंने तेरे मोक्षके लिये अपना रूप दिखलाया ३४ और यह मेरे स्वरूपको निरन्तर ध्यानकरके मेरेकहे हुये ज्ञानको विचारकरु तौ संसारके कार्यको करतीहुई भी लिप्तनहीं होगी ३५ ॥

श्रीरामेणोदितंसर्वंश्रुत्वातारातिविस्मिता ॥ देहाभिमानजंशोकं त्यक्त्वानत्वारघूत्तमम् ३६ आत्मानुभवसंतुष्टाजीवन्मुक्ताबभूवह ॥ क्षणसंगममात्रेणरामेणपरमात्मना ३७ अनादिबन्धंनिर्धूयमुक्तासा पिविकल्मषा ॥ सुग्रीवोऽपिचतच्छ्रुत्वारामवक्त्रात्समीरितम् ३८ ज हावज्ञानमखिलंस्वस्थचित्तोभवत्तदा ॥ ततःसुग्रीवमाहेदंरामोवानर पुंगवम् ३९ भ्रातुर्ज्येष्ठस्यपुत्रेणयद्युक्तंसांपरायिकम् ॥ कुरुसर्वंयथा न्यायंसंस्कारादिममाज्ञया ४० तथेतिवालिभिर्मुख्यैर्वानरैःपरिणीय तम्॥ वालिनंपुष्पकेक्षिप्त्वासर्वराजोपचारकैः ४१ भेरीदुंदुभिनिर्घो षैर्ब्राह्मणैर्मंत्रिभिःसह ॥ यूथपैर्वानरैःपौरैस्तारयाचांगदेनच ४२ ॥

तब अतिविस्मित जो तारासो रामका कहाहुआ सब सुनिकै देहके अभि-
मानसे उत्पन्न हुआ जो शोक तिसको त्यागिकै और श्रीराम को नमस्कार
करके ३६ आत्मज्ञान करके संतुष्टा जीवन्मुक्त होतीहुई परमात्मा जो राम
रूपी गुरूतिसके एकक्षणमात्रके संगकरके ३७ अनादि कालके बन्धनको नाश
करके सबपापों से शुद्धहुई ताराजीवन्मुक्त दशाको प्राप्तकीगई और सुग्रीव भी
रामचन्द्रके मुखसे कहेहुये ज्ञानको सुनिकै ३८ संपूर्ण अज्ञानको त्यागिकै स्वस्थ
चित्त होता हुआ तब श्रीराम बानरोंमें श्रेष्ठजो सुग्रीव तिससे यहबचन बोलते
हुये ३९ हेसुग्रीव तेरेज्येष्ठभाईका जोपरलोकमें हितसंस्कार औरदान श्रद्धादि
युक्तहै तिसकोमेरी आज्ञासेशास्त्रके विधिके साथइसके पुत्रके हाथसे करावो ४०
तब सुग्रीव तैसेही अंगीकार करके बड़े बड़ेबली जो मुख्य बानर हैं तिनकेद्वा-
रा बालीके शरीरको उठवाइके राजों के योग्य जो वस्त्र आभूषण पुष्पमाला-
दिक तिनकरके भूषितकर पुष्पक विमान के तुल्य विमान बनवाके उसपै
स्थापनकर ४१ भेरी और नगाड़ा आदि बाजोंको बजातेहुये ब्राह्मण और मंत्री
और सेनापति बानर और पुरबासी और तारा और अंगद इनकरकेसहित ४२॥

गत्वाचकारतत्सर्वंयथाशास्त्रंप्रयत्नतः ॥ स्नात्वाजगामरामस्यस
मीपंमंत्रिभिःसह ४३ नत्वारामस्यचरणौसुग्रीवःप्राहहृष्टधीः ॥ रा
ज्यंप्रशाधिराजेन्द्रवानराणांसमृद्धिमत् ४४ दासोहंतेपादपद्मंसेवेल
क्ष्मणवच्चिरम्॥ इत्युक्त्वाराघवःप्राहसुग्रीवंसस्मितंबचः ४५ त्वमेवा
हंनसंदेहःशीघ्रंगच्छममाज्ञया ॥ पुरराज्याधिपत्येत्वंस्वात्मानमभिषे
चय ४६ नगरंनप्रवेक्ष्यामिचतुर्दशसमाःसखे ॥ आगमिष्यतिमेभ्रा
तालक्ष्मणःपत्तनंतव ४७ अंगदंयौवराज्येत्वमभिषेचयसादरम् ॥
अहंसमीपेशिखरेपर्वतस्यसहानुजः ४८ वत्स्यामिवर्षदिवसान्तत
स्त्वंयत्नवान्भव ॥ किंचित्कालंपुरेस्थित्वासीतायाःपरिमार्गणे ४९॥

सुग्रीव श्मशान भूमिमें दाहादि शास्त्रके विधिसे यत्न करके फिर स्नान
करके शुद्धहो मन्त्रियों करके सहित रामके समीप जाताहुआ ४३ फिर सुग्रीव
प्रसन्नचित्तहो रामके चरणारविन्दों को प्रणामकरके बोलताहुआ कि हेराजेन्द्र
यह समृद्धि युक्त वानरों के राज्यको करिये ४४ और मैंतो दास तुम्हारा हौं
सो लक्ष्मणके तुल्य आपके चरणारविन्द को बहुतकाल सेवन करौंगा ऐसा
जब सुग्रीव ने वचनकहा तब श्रीरामचन्द्र मन्द मुसक्यानकरि बचन बोलते
हुये ४५ हे सुग्रीव जो तूहै सो मैंहीहौं इसमें कुछ संदेहनहीं है इससे तुम

शीघ्रही मेरी आज्ञाकरके जावो पुरराज्यके आधिपत्यमें अर्थात् उसके मालिक होने में अपना अभिषेक करावो ४६ और हेमित्र मैं चौदहवर्षतक नगरमें प्रवेश नहीं करोंगा परन्तु तेरे नगरमें मेराभाई लक्ष्मण आवैगा ४७ और अंगदको तुम यौवराज्य पदमें आदर पूर्वक अभिषेक करौ और मैं समीपही इसपर्वत के शिखरपै लक्ष्मण सहित बास करौंगा ४८ और तुम अभिषेक के अनन्तर कुछकाल अर्थात् वर्षाऋतु के महीने नगरमें बासकरि फिर सीताके ढूंढने में यत्नयुक्तहोउ ४९॥

साष्टांगंप्रणिपत्याहसुग्रीवोरामपादयोः॥ यदाज्ञापयसेदेवतत्तथैवकरोम्यहम् ५० अनुज्ञातस्तुरामेणसुग्रीवस्तुसलक्ष्मणः॥ गत्वा पुरंतथाचक्रेयथारामेणचोदितः ५१ सुग्रीवेणयथान्यायंपूजितोलक्ष्मणस्तथा॥ आगत्यराघवंशीघ्रंप्रणिपत्योपतस्थिवान् ५२ ततो रामोजगामाशुलक्ष्मणेनसमन्वितः॥ प्रवर्षणगिरेरूर्ध्वंशिखरंभूरिविस्तरम् ५३ तत्रैकंगह्वरंदृष्ट्वास्फाटिकंदीप्तिमच्छुभम्॥ वर्षवातातपसहंफलमूलसमीपगम्॥ वासायरोचयामासतत्ररामःसलक्ष्मणः५४ दिव्यमूलफलपुष्पसंयुतेमौक्तिकोपमजलौघपल्वले॥ चित्रवर्णमृगपक्षिशोभितेपर्वतेरघुकुलोत्तमोऽवसत् ५५॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किन्धाकाण्डे तृतीयःसर्गः ३॥

तब सुग्रीव रामचन्द्रके चरणों में साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करके बोलता हुआ कि हे देव आप जैसे आज्ञाकरतेहौ तैसे मैं करौंगा ५० अब रामकीआज्ञा को प्राप्त लक्ष्मण सहित जो सुग्रीव सो किष्किन्धानगरी में जाकर तैसेहीसब कृत्यकरताहुआ जैसे रामचन्द्रने कहाथा ५१ और उससमयमें शास्त्रकी विधि पूर्वक सुग्रीवकरके पूजित जो लक्ष्मण सो शीघ्रही रामचन्द्रके समीप आकर स्थितहोते हुये अर्थात् प्राप्तहोतेहुये५२ तब लक्ष्मणकरके सहित जो श्रीरामसो प्रवर्षण नाम पर्वतके ऊपर जो बड़ा विस्तृत एकशिखर तहां जातेहुये५३ तहांउस पर्वतकी स्फटिकमणियों की प्रकाशयुक्त बड़ीसुन्दर एकगुहा देखकर बासकरने को उसमें लक्ष्मणसहित राम रुचिकरते हुये कैसी वहगुहाहै कि जिसमें वर्षा और पवन और घाम ये कोई बाधा न करसके हैं और फल मूल आदि भोजन की सामग्री जिसके समीपहैं ५४ उसपर्वतकी गुहा में लक्ष्मण सहितजोराम हैं सो प्रीतिकरतेहुये अब दिव्यफल मूल पुष्पोंकरके संयुक्त और मोतियों के

के तुल्य है निर्मल जल के समूह जिनमें ऐसे हैं छोटे २ तालाब जिसमें और चित्र विचित्र मृग पक्षियों करके सेवित ऐसा जो पर्वतहै तिसपै श्रीरामचन्द्र वास करतेहुये ५५ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किन्धाकाण्डे
भाषाटीकायांतृतीयस्सर्गः ३ ॥

तत्रवार्षिकदिनानिराघवोलीलयामणिगुहासुसंचरन् ॥ पक्वमूलफलभोगतोषितोलक्ष्मणेनसहितोवसत्सुखम् १ वातनुन्नजलपूरितमेघानंतरस्तनितवैद्युतगर्भान् ॥ वीक्ष्यविस्मयमगाद् गजयूथान्यद्रदाहितसुकांचनकक्षान् २ नवघासंसमास्वाद्यहृष्टपुष्टमृगद्विजाः ॥ धावंतःपरितोरामंवीक्ष्यविस्फारितेक्षणाः ३ नचलंतिसदाध्याननिष्ठाइवमुनीश्वराः ॥ रामंमानुषरूपेणगिरिकाननभूमिषु ४ चरंतंपरमात्मानंज्ञात्वासिद्धगणाभुवि ॥ मृगपक्षिगणाभूत्वाराममेवानुसेविरे ५ सौमित्रिरेकदाराममेकान्तेध्यानतत्परम् ॥ समाधिविरमेभक्त्याप्रणयाद्विनयान्वितः ६ अब्रवीद्देवतेवाक्यात्पूर्वोक्ताद्विगतोमम॥ अनाद्यविद्यासंभूतःसंशयोहृदिसंस्थितः ७ ॥

दो० । तुर्य सर्ग में रामने निज पूजा विस्तार ॥
कह्योलषणसे पवनसुत पठये कपिमहिसार १ ॥

अब श्रीमहादेव जी पार्वती से कहते हैं हे पार्वति तिस प्रवर्षणनामपर्वतपै लक्ष्मण सहित जो श्रीरामचन्द्र सो मणि जिनमें प्रकाश करिरही हैं ऐसी गुहाओं में बिचरते हुये और पकेहुये जो कन्दमूलफल तिनको भोजनकरके बड़े संतुष्टहो सुखपूर्वक बासकरतेहुये जबतक बर्षाऋतु रही तबतक १ सोने की भूलैं पड़ी हैं जिनके ऊपर और गर्जते हुये ऐसे जो हाथियों के समूह तिनके समान पवन के वेगसे चलते हुये और जलसे भरेहुये और अनेक बिजुलियां जिनकेबीचमें शब्दकरती हुई शोभित होरहीं ऐसे काले काले मेघोंकोदेखकेरघुनाथजी विस्मयको प्राप्तहोते हुये २ अब उस बर्षाऋतु में नवीनघासको चरके वड़े प्रसन्न और पुष्टजो मृग और पक्षी ये चारोंतरफ़ से दौड़तेहुये नेत्रों को खोलके श्रीरामचन्द्र के स्वरूपका दर्शनकर ३ फिरकहीं नहींजाते हैं जैसेध्यान लगाये हुये मुनीश्वर एकजगह स्थितहो कहीं न जावैं और पर्वतकी भूमियोंमें विचरते हुये मनुष्यरूप करके रामको ४ परमात्मा जानिकै सिद्धलोग जो हैं तेही पृथिवी में मृग पक्षियोंका रूप धारणकर श्रीरामको सेवन करते हुये ५ अब एक समय एकान्त देशमें ध्यान करतेहुये जो राम सो जबध्यान

से बिरतहुये अर्थात् जब बोलने चालने लगे उससमय में लक्ष्मण नम्रहो बड़ीभक्तिसे रामसे पूछते हुये ६ कि हेदेव पहिले जो आपने वचन मुझसे कहे थे तिनकरके अनादि अविद्यासे उत्पन्नहुआ जोमेरे हृदयका संशयसोदूरहुआ७

इदानींश्रोतुमिच्छामिक्रियामार्गेणराघव॥ भवदाराधनंलोकेयथा कुर्वंतियोगिनः ८ इदमेवसदाप्राहुर्योगिनोमुक्तिसाधनम् ॥ नारदोपि तथाव्यासोब्रह्माकमलसंभवः ९ ब्रह्मक्षत्रादिवर्णानामाश्रमाणांचमो क्षदम् ॥ स्त्रीशूद्राणांचराजेन्द्रसुलभंमुक्तिसाधनम् ॥ तवभक्तायमे भ्रात्रेब्रूहिलोकोपकारकम् १० श्रीरामउवाच ॥मम्पूजाविधानस्यनां तोस्तिरघुनन्दन ॥ तथाऽपिवक्ष्येसंक्षेपाद्यथावदनुपूर्वशः ११ स्वगृ ह्योक्तप्रकारेण द्विजत्वंप्राप्यमानवः ॥ सकाशात्सद्गुरोर्मंत्रंलब्ध्वाम द्भक्तिसंयुतः १२ तेनसंदर्शितविधिर्मामेवाराधयेत्सुधीः ॥ हृदयेवान लेवार्चेत्प्रतिमादौविभावसौ १३ शालग्रामशिलायांवापूजयेन्मामतं द्रितः ॥ प्रातःस्नानंप्रकुर्वीतप्रथमंदेहशुद्धये १४ ॥

अब इससमय में कर्म मार्ग करके जैसे योगीजन आपका पूजन करते हैं उस विधानको सुना चाहताहौं ८ और इसी क्रियायोग करके आपके आराधनको मुक्तिका साधन योगीजन कहते हैं नारद और व्यास और ब्रह्माजी ९ और हे राम यह आपका पूजन ब्राह्मण क्षत्रिय आदि वर्णोंको और ब्रह्मचारी आदि आश्रमियों को मोक्षका देनेवालाहै अर्थात् मोक्षका साधनहै और स्त्री शूद्रोंको भी सुलभ है और मुक्तिका साधनहै सो हेराजेन्द्र यहजो सबलोकोंका उपकारक आपका पूजनहै तिसको तुम्हारा भक्त और भाई जो मैं हौं तिसके अर्थ कृपाकरके कहिये १० अब श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण से कहते हुये कि हेलक्ष्मण मेरी पूजाके बिधानका अन्त तौ है नहीं तौभी संक्षेपसे क्रमपूर्वक कहताहौं ११ अपने गृह्यसूत्रके प्रकारके अर्थात् जिसकी जो वेदकी शाखाहै उसके अनुसार कर्म करने को उस शाखाके पढ़ानेवाले ऋषिने अपने रचेहुये सूत्रोंमें जैसा कुछ गर्भाधानादि संस्कारोंका विधान कहाहै तिसरीति करके यज्ञोपवीत के संस्कार प्राप्तहोकर फिरभक्तियुक्त होके सद्गुरुसे मेरे मन्त्रको प्राप्त होके १२ उन गुरुके कहेहुये विधानसे मेरा पूजन करै तिसमें चाहे हृदयमें ध्यानकरके मानसीपूजन करै अथवा अग्निमें हवनादि करके मेरा पूजन करै अथवा प्रतिमा में आवाहनादि पूर्वक अर्घ्यादि करके पूजन करै अथवा सूर्य में वेदके उपस्थानादि मंत्रों करके पूजन करै १३ अथवा शालग्राम की शिलामें आलस्यरहित पूजन करै तहां प्रथम देहकी शुद्धिके लिये प्रातःकाल स्नान करै१४॥

वेदतंत्रोदितैर्मंत्रैर्मृल्लेपन विधानतः ॥ संध्यादिकर्मयन्नित्यंतत्कुर्याद्विधिनाबुधः १५ संकल्पमादौकुर्वीत सिद्ध्यर्थंकर्मणांसुधीः ॥ स्वगुरुंपूजयेद्भक्त्यामद्बुद्ध्यापूजकोमम १६ शिलायांस्नपनंकुर्यात्प्रतिमासुप्रमार्जनम् ॥ प्रसिद्धैर्गंधपुष्पाद्यैर्मत्पूजासिद्धिदायिका १७ अमायिकोऽनुवृत्त्यमांपूजयेन्नियतव्रतः ॥ प्रतिमादिष्वलंकारःप्रियोमेकुलनन्दन १८ अग्नौयजेतहविषाभास्करेस्थंडिलेयजेत् ॥ भक्तेनोपहृतंप्रीत्यैश्रद्धयाममवार्यपि १९ किंपुनर्भक्ष्यभोज्यादिगंधपुष्पाक्षतादिकम् ॥ पूजाद्रव्याणिसर्वाणिसंपाद्यैवंसमारभेत् २० चैलाजिनकुशैःसम्यगासनंपरिकल्पयेत् ॥ तत्रोपविश्यदेवस्यसम्मुखेशुद्धमानसः २१ ॥

वेदके मन्त्रों करके और तन्त्रशास्त्रके मन्त्रों करके पहिले शरीरमें मृत्तिका का लेपन करै तिस के उपरान्त स्नान करै फिर संध्योपासनादि नित्यकर्म करै १५ फिर जो कर्म किया चाहता है तिसकी सिद्धिके अर्थ संकल्प करै फिर मेरी बुद्धि करके अपने गुरुका पूजन करै और गुरु समीप न होवै तौ ध्यानकरके जल आदिकों में पूजनकरै १६ तिसमें शिलानिर्मित जो प्रतिमाहै तिसमें स्नानादिक सब अंग करके पूजन करै और चित्र प्रतिमाओं में तौ स्नान नहीं संभव होता इससे हाथ से पोंछके शृङ्गारादिक करै और जो जो गन्धपुष्प वैष्णव ग्रन्थोंमें कहे हैं तिन करके पूजा सिद्धि की देनेवाली होती है १७ और कपट दम्भ आदि दोषों से रहित होके गुरुने जो मार्ग बतलाया है तिस करके भक्ति श्रद्धा सहित नित्य मेरा पूजनकरै और हे लक्ष्मण प्रतिमाओं में पुष्प आदि अलंकारों करके पूजन मुझको अति प्रियहै १८ और अग्नि में घृतकरके मेरा पूजन करै और वेदी बनाके उसमें सूर्य कासा आकार बनाके इसप्रकार सूर्यमें मेरा पूजनकरै और भक्तियुक्त पुरुष प्रीति करके और श्रद्धाकरि जल भी मेरे अर्थ समर्पण करै तौ बहुत हो जाताहै १९ और भक्ष्य भोज्य आदि सामग्री प्रीतिकरके देवैतौ क्या कहना इससे भक्तिही मेरे परितोषमें मुख्य कारण है यह सूचित कियाहै और सब पूजा की सामग्री अपने पास रखिलेवै तौ मेरे पूजनका प्रारम्भकरै २० और सबसेनीचे कुशासन बिछावै तिसके ऊपरमृगचर्म फिर तिसके ऊपर वस्त्र बिछावै ऐसा आसन कल्पनाकर तिसके ऊपर शुद्धमन होकर प्रतिमाके सम्मुखबैठै २१ ॥

ततोन्यासंप्रकुर्वीतमातृकाबहिरांतरम् ॥ केशवादिततःकुर्यात्तत्त्वन्यासंततःपरम् २२ मन्मूर्त्तिपंजरंन्यासं मंत्रन्यासंततोन्यसेत्॥प्र

तिमादावपितथाकुर्य्यान्नित्यमतंद्रितः २३ कलशंस्वपुरोवामेक्षिपेत्पुष्पादिदक्षिणे ॥ अर्घ्यपाद्यप्रदानार्थमधुपर्कार्थमेवच २४ तथैवाचमनार्थंतुन्यसेत्पात्रचतुष्टयम् ॥ हृत्पद्मेभानुविमलेमत्कलांजीवसंज्ञिताम् २५ ध्यायेत्स्वदेहमखिलंतयाव्याप्तमरिंदम ॥ तामेवावाहयेन्नित्यंप्रतिमादिषुमत्कलाम् २६ पाद्यार्घ्याचमनीयाद्यैःस्नानवस्त्रविभूषणैः ॥ यावच्छक्त्योपचारैर्वात्वर्चयेन्मामममायया २७ विभवेसतिकर्पूरकुंकुमागरुचन्दनैः ॥ अर्चयेन्मंत्रवन्नित्यंसुगंधकुसुमैःशुभैः २८ ॥

फिरशरीरकी शुद्धिकेलिये और रक्षाकेअर्थ प्रथममातृका वर्णोंकरके अर्थात् ओनम में प्रसिद्ध जो अकारादि पचासअक्षरहैं तिनकरके मंत्रशास्त्रकीरीति से अपने सबअंगों में न्यासकरै फिर केशवआदि मेरेनामोंकरके न्यासकरके फिर तत्त्वन्यासकरके २२ फिर विष्णुपंजरस्तोत्र में जैसे न्यास और कवचकी विधि है तिसकोकरै फिर इष्टमंत्रकरके षडंगन्यासकरै इसीतरहसेप्रतिमा में भी सावधानहोके न्यासकरै २३ और अपने बायेंतरफ़ सम्मुख जल से भराहुआ कलश स्थापनकरै और अपने दहिने तरफ़ पुष्पआदि सामग्री रक्खै और अर्घ्य और पाद्य और मधुपर्क और आचमन इनकेलिये २४ चारिपात्र सम्मुखस्थापनकरै फिर अपने हृदयरूपी कमलमें सूर्य के सदृशप्रकाशमान जीव है नाम जिसका ऐसी मेरी कला का ध्यानकरै २५ फिर उस तेजकरके अपना सब देह व्याप्तहोरहा है ऐसा ध्यानकरके अर्थात् सर्वव्यापक मेरे स्वरूपका ध्यानकरै फिर उसी प्रकाशरूपका प्रतिमामें ध्यानकरके आवाहनकरै अर्थात् प्रतिमामें चेतनरूपहीका ध्यानकरके भावकरै जड़भाव न करै २६ फिर पाद्यअर्घ्य आचमनीयादि करके और स्नान वस्त्र विभूषणादिकरके जैसी अपनी शक्तिहोवै तैसे प्रकारोंकरके मेरापूजनकरै परन्तु कपटकरके पूजन न करै अर्थात् दंभकरकेपूजन न करै दंभ उसे कहते हैं जहां औरोंको दिखानेही को तौ पूजनकरै और भीतरसे कुछ श्रद्धा न होय २७ और जो ऐश्वर्यहोय तौ केसरि कर्पूर चन्दन क़स्तूरी और बड़े सुगन्धके पुष्पोंकरके पूजनकरै नित्य जैसा जिसका मन्त्र है तिस करके २८ ॥

दशावरणपूजांवैह्यागमोक्तांप्रकारयेत् ॥ नीराजनैर्धूपदीपैर्नैवेद्यैर्बहुविस्तरैः २९ श्रद्धयोपहरेन्नित्यंश्रद्धाभुगहमीश्वरः ॥ होमंकुर्यात्प्रयत्नेन विधिनामंत्रकोविदः ३० अगस्त्येनोक्तमार्गेणकुंडेनागमवित्तमः ॥जुहुयान्मूलमन्त्रेणपुंसूक्तेनाथवाबुधः ३१ अथवोपासनाग्नौवा

चरुणाहविषातथा॥तप्तजांबूनदप्रख्यंदिव्याभरणभूषितम् ३२ ध्यायेदनलमध्यस्थं होमकालेसदाबुधः ॥ पार्षदेभ्योबलिंदत्त्वाहोमशेषं समापयेत् ३३ ततोजपंप्रकुर्व्वीतध्यायन्मांयतवाक्स्मरन् ॥ मुखवासंचताम्बूलंदत्त्वाप्रीतिसमन्वितः ३४ मदर्थेनृत्यगीतादिस्तुतिपाठादि कारयेत् ॥ प्रणमेद्दण्डवद्भूमौ हृदयेमांनिधायच ३५ ॥

और जैसे अगस्त्य संहितामें दश आवरणोंकी पूजाकही है तिसकोकरै और धूपदीपनैवेद्य और नीराजनादि करके पूजनकरै तिसमें नीराजननाम पांच बत्ती की आरतीको कहते हैं २९ परन्तु जो वस्तु मेरे अर्थ समर्पणकरै उसको श्रद्धाहीकरकेकरै जिससे बिनाश्रद्धाका मैंग्रहण नहीं करताहौं फिर मन्त्रके जाननेमें प्रवीणपुरुष विधिपूर्वक होमकरै ३० अगस्त्यसंहितामें जैसे कुंडकीविधिकही है तिसरीतिके कुण्डमें मूल मन्त्रकरके अर्थात् गुरुने जो मन्त्रदियाहै तिसकरके अथवा पुरुष सूक्तके मन्त्रोंकरके हवनकरै ३१ अथवा अग्निहोत्रहीके कुंड की अग्निमें चरुकरके वा घृतकरके हवनकरै और जिससमयमें हवनकरै उस समयमें अग्निमें तचायाहुआ जो सुवर्ण तिसके तुल्यवर्ण जिसका और दिव्य आभूषणों करके भूषित ३२ ऐसा अग्निके मध्यमें स्थित जो मैं हौं तिसका सदाध्यानकरै अर्थात् भगवत्स्वरूप का ध्यानकरके आहुतीको डालै फिर हनुमान्को आदि लेके जो पार्षद तिनको बलिदेवै फिर जो होमरहाहै उसको समाप्तकरै ३३ तिसके उपरांत मेराध्यान करताहुआ मौनहोके जपकरै परन्तु मेरा स्मरण करतारहै फिर प्रीतियुक्तहोके इलायची लवंग इत्यादि सुगंध द्रव्य युक्त ताम्बूल मुझकोदेके ३४ मेरे अर्थ नृत्य गीत आदि करवाके स्तोत्रकापाठ करै फिर हृदय में मेरा ध्यान करताहुआ पृथिवीमें दण्डवत् प्रणाम करै ३५॥

शिरस्याधायमद्दत्तंप्रसादंभावनामयम् ॥ पाणिभ्यांमत्पदेमूर्ध्नि गृहीत्वाभक्तिसंयुतः ३६ रक्षमांघोरसंसारादित्युक्त्वाप्रणमेत्सुधीः ॥ उद्वासयेद्यथापूर्वंप्रत्यग्ज्योतिषिसंस्मरन् ३७ एवमुक्तप्रकारेणपूजयेद्विधिवद्यदि ॥ इहामुत्रचसंसिद्धिंप्राप्नोतिमदनुग्रहात् ३८ मद्भक्तोयदिमामेवंपूजांचैवदिनेदिने ॥ करोतिममसारूप्यंप्राप्नोत्येवनसंशयः ३९ इदंरहस्यंपरमंचपावनंमयैवसाक्षात्कथितंसनातनम् ॥ पठत्यजस्रंयदिवाशृणोतियःससर्वपूजाफलभाङ्नसंशयः ४० एवंपरात्माश्रीरामःक्रियायोगमनुत्तमम् ॥ पृष्टःप्राहस्वभक्तायशेषांशायमहात्म

ने ४१ पुनःप्राकृतवद्रामोमायामालंब्यदुःखितः ॥ हासीतेतिवदन्नैव निद्रांलेभेकथंचन ४२ ॥

फिर ध्यान मार्ग करके मैंने दिया जो प्रसादहै तिसको शिरके ऊपर धारण करके फिर भक्तिसंयुक्त पुरुष अपने हाथोंकरके मेरे चरणों को शिरपै धारण करै ३६ हेभगवन् इस घोर संसारसे मेरी रक्षाकरिये यह कहिकै प्रणामकरै फिर जिस हृदयस्थ ज्योतिस्स्वरूपसे प्रतिमामें मेरेस्वरूपका आवाहन किया था उसी हृदयमें स्थित जो रूप तिसमें प्रतिमाकी ज्योति मिलगई ऐसा ध्यानकरै इसीको विसर्जन कहते हैं ३७ इस पूर्वोक्त प्रकार करके जो विधिपूर्वक पूजनकरै तौ मेरी अनुग्रहसे इस लोककी और परलोककी सिद्धि को प्राप्तहोताहै ३८ इस प्रकार दिनदिन जो मेराभक्त पूजन करताहै सो मेरेही समान रूपको प्राप्तहोताहै इसमें कुछ संशय नहींहै ३९ यह मैंने साक्षात् कहा परमपवित्र और सनातन और अतिरहस्य जो पूजनका विधान तिसको निरन्तर जो पढ़ताहै व सुनताहै सोभी संपूर्ण पूजनके फलका भागी होता है इसमें कुछ संशय नहींहै ४० इस प्रकार करके परमात्माजो श्रीरामचन्द्र सो परम श्रेष्ठ लक्ष्मणने पूछाजो क्रियायोग तिसको अपने भक्तमहात्मा लक्ष्मण के अर्थ कहतेहुये ४१ फिरप्राकृत मनुष्य के तुल्य श्रीरामचन्द्र मायाको आश्रयण कर दुःखित हो हासीते हासीते ऐसे कहतेहुये कैसेई निद्राको न प्राप्त होतेहुये ४२ ॥

एतस्मिन्नन्तरेतत्रकिष्किंधायांसुबुद्धिमान् ॥ हनूमान्प्राहसुग्रीवमेकान्तेकपिनायकम् ४३ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामितवैवहितमुत्तमम् ॥ रामेणतेकृतःपूर्वमुपकारोह्यनुत्तमः ४४ कृतघ्नवत्त्वयानूनंविस्मृतःप्रतिभातिमे ॥ त्वत्कृतेनिहतोबालीवीरस्त्रैलोक्यसम्मतः ४५ राज्ये प्रतिष्ठितोसित्वंतारांप्राप्तोसिदुर्लभाम्॥ सरामःपर्वतस्याग्रेभ्रात्रासह वसन्सुधीः ४६ त्वदागमनमेकाग्रमीक्षतेकार्यगौरवात्॥त्वंतुवानरभावेनस्त्रीसक्तोनावबुद्ध्यसे ४७ करोमीतिप्रतिज्ञायसीतायाःपरिमार्गणम् ॥ नकरोषिकृतघ्नस्त्वंहन्यसेबालिवद्द्रुतम् ४८ हनूमद्वचनंश्रुत्वासुग्रीवोभयविक्लवः॥ प्रत्युवाचहनूमंतंसत्यमेवत्वयोदितम् ४९ ॥

अब उसीसमय किष्किन्धा नगरीमें बड़े बुद्धिमान् जो हनुमान् सो एकांत देशमें स्थित जो बानरोंके राजा सुग्रीव तिससे यह कहतेहुये ४३ कि हेराजन् तुम्हारा परमहित मैं कहताहौं तिसको सुनिये श्रीरामने बड़ा श्रेष्ठ उपकार तुम्हारा पहिलेही कियाहै ४४ सो कृतघ्नकी तरह उपकारको तुम भूलिगये

ऐसा मुझको मालूम पड़ताहै देखिये तुम्हारे अर्थ तीनोंलोक में प्रसिद्ध बड़ा वीर वाली रामने मारा ४५ और तुम राज्यमें स्थितहुये और जिस रामकी कृपासे अति दुर्लभ ताराको प्राप्तहुये सोरामभाई करके सहित पर्वतके शिखर पै वासकरतेहुये ४६ अपने कार्यकी गुरुतासे अर्थात् सीताकी खबरिके कारण से तुम्हारे आगमनकी इच्छाकर रहे हैं और तुम तो वानर जातिके स्वभाव से स्त्री में आसक्त होके कुछ नहीं जानते हौ ४७ रामचन्द्रके आगे सीताको मैं ढूंढ़देवोंगा यह प्रतिज्ञा करके और अब कृतघ्नकी तरह उसकार्य को नहीं करते इससे वाली की तरह निश्चयकरके तुम मारे जावोगे ४८ तब यहहनुमान् का वचन सुनिकै अति भय करके बिह्वल अर्थात् व्याकुल जो सुग्रीव सो हनुमान् से कहता हुआ कि हे हनुमन् जो तुमने कहा सो ऐसेही है इसमें कुछ मिथ्या नहीं ४९ ॥

शीघ्रंकुरुमदाज्ञांत्वंवानराणांतरस्विनाम् ॥ सहस्राणिदशेदानीं प्रेषयाशुदिशोदश ५० सप्तद्वीपगतान्सर्वान्वानरानानयंतुते ॥ पक्ष मध्येसमायांतुसर्वेवानरपुंगवाः५१ येपक्षमतिवर्तंते बध्यामेनतुसंश यः ॥ इत्याज्ञाप्यहनूमंतंसुग्रीवोगृहमाविशत् ५२ सुग्रीवाज्ञांपुरस्कृ त्यहनूमान्मंत्रिसत्तमः॥तत्क्षणेप्रेषयामासहरीन्दशदिशःसुधीः५३ अ गणितगुणसत्वान्वायुवेगप्रचारान् वनचरगणमुख्यान्पर्वताकाररू पान् ॥ पवनहितकुमारःप्रेषयामासदूतानतिरभसतरात्मादानमाना दितृप्तान् ५४ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादे किष्किन्धाकाण्डे चतुर्थःसर्गः ४ ॥

अब तुम शीघ्रही मेरी आज्ञाको करो बड़े वेगयुक्त दशहजार वानरोंको दश दिशाओं में शीघ्रही इसी समय में भेजो ५० वेसब सातों द्वीपों में जहां जहां वानरहैं तिन सबोंको ल्यावैं और एक पक्षके भीतर सब वानर आवैं ५१ और जे पक्षके भीतर अर्थात् पन्द्रह दिनके भीतर लौटिकै नहीं आवैं तिनको मैं मरवाइडालोंगा इसमें कुछ संशय नहीं है ऐसी हनुमान् को आज्ञा करके सुग्रीव गृहमें प्रवेश करता हुआ ५२ अब मन्त्रियों में श्रेष्ठ जो हनुमान् सो सुग्रीव की आज्ञाकोमानके उसीसमय में दशों दिशाओं में वानरोंको भेजताहुआ जिससे बड़ा बुद्धिमान् रहा ५३ अगणित अर्थात् नहीं गिनती में आसके ऐसे गुण और पराक्रम जिनके और पवनके वेगके तुल्यहै गति जिनकी और पर्वत के आकार स्वरूप जिनका और दानमानकरके तृप्तहुये अर्थात् अति प्रसन्नहो

रहे हैं ऐसे जो वानरों के समूहमें मुख्यदूत तिनकोपवनका अतिप्रियपुत्र और राम के कार्य में शीघ्रता जिसको ऐसा हनुमान् भेजताहुआ ५४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किन्धाकाण्डेभाषाटीकायांचतुर्थःसर्गः ४ ॥

रामस्तुपर्वतस्याग्रेमणिसानौनिशामुखे ॥ सीताविरहजंशोकमसह्निदमब्रवीत् १ पश्यलक्ष्मणमेसीताराक्षसेनहृताबलात् ॥ मृतामृतावानिश्चेतुंनजानेद्यापिभामिनीम् २जीवतीतिममब्रूयात्कश्चिद्वाप्रियकृत्समे ॥ यदिजानामितांसाध्वींजीवंतींयत्रकुत्रवा ३ हठादेवाहरिष्यामिसुधामिवपयोनिधेः ॥ प्रतिज्ञांशृणुमेभ्रातर्येनमेजनकात्मजा ४ नीतात्वंभस्मसात्कुर्यांसपुत्रबलवाहनम् ॥हेसीतेचंद्रवदनेवसंतीराक्षसालये ५ दुःखार्त्तामामपश्यन्तीकथंप्राणान्धरिष्यसि ॥ चंद्रोपिभानुवद्भातिममचंद्राननांविना ६ चंद्रत्वंजानकींस्पृष्ट्वाकरैर्मांस्पृशशीतलैः सुग्रीवोऽपिदयाहीनोदुःखितंमांनपश्यति ७ ॥

दो० । क्रोधयुक्त लखि लषणको सर्ग पांचवें माहिं ॥
बहुसुग्रीव प्रबोधकरि आयो रघुबर पाहिं १

अब श्रीमहादेवजी पार्वती जीसे कथा वर्णनकरै हैं हे पार्वति अबरामचन्द्र जो तौ मणियों करके प्रकाशित उस प्रवर्षणनाम पर्वत के शिखर पै सन्ध्या समय में सीताके विरहसे उत्पन्नहुआ जो शोक तिसको नहीं सहते हुये यह वचन लक्ष्मण से बोलते हुये १ कि हे लक्ष्मण देखौ मेरी सीता राक्षसने जबरदस्ती हरिली सो इस समयमें मरगई वा जीवती है यह मैं निश्चय करने को अभीतक नहीं समर्थ हों २ जो कोई सीताको जीवती कहै सो मोको अत्यन्त प्रियहै और हे लक्ष्मण जो कदाचित् उस पतिव्रता सीताको मैं जीवती हुई जहां कहीं जानौं ३ तो जैसे समुद्र से अमृत निकाला गयाहै तैसे सीताको भी बलसे मैं ल्यावोंगा और हे भाई मेरी प्रतिज्ञा को तुम सुनो ४ जिसने मेरी सीताहरीहै उसको मैं पुत्र औ सेना और हाथी घोड़े इन करके सहित भस्मकरौंगा ऐसा कहिकै विलाप करते हुये हा सीते हा चन्द्रवदने तू राक्षस के मन्दिरमें बसती हुई ५ और मुझको नहीं देखती इसीसे बड़े दुःख करके पीड़ित कैसे प्राणोंको धारण करैगी और चन्द्रमाके तुल्यहै मुखजिसका ऐसी जो तू है तिसके बिना चन्द्रमाभी मुझको सूर्य के तुल्य सन्ताप इससमय करताहै ६ और हेचन्द्र तुम अपनी शीतलकिरणोंकरके सीताको स्पर्शकरके मुझको स्पर्शकरौ और इससमयमें दयाहीन सुग्रीवभी दुःखित मुझको नहींदेखता ७

राज्यंनिष्कण्टकंप्राप्यस्त्रीभिःपरिवृतोरहः ॥ कृतघ्नोदृश्यतेव्यक्तं पानासक्तोऽतिकामुकः ८ नायातिशरदंपश्यन्नपिमार्गयितुंप्रियाम् ॥ पूर्वोपकारिणंदुष्टःकृतघ्नोविस्मृतोहिमाम् ९ हन्मिसुग्रीवमप्येवंसपुरं सहबांधवम् ॥ वालीयथाहतोमेऽद्यसुग्रीवोपितथाभवेत् १० इतिरु ष्टंसमालोक्यराघवंलक्ष्मणोब्रवीत् ॥ इदानीमेवगत्वाहंसुग्रीवंदुष्टमान सम् ११ मामाज्ञापयहत्वातमायास्येरामतेंतिकम् ॥ इत्युक्त्वाधनुरा दायखड्गंतूणीरमेवच १२ गन्तुमभ्युद्यतंवीक्ष्यरामोलक्ष्मणमब्रवी त् ॥ नहन्तव्यस्त्वयावत्ससुग्रीवोमेप्रियःसखा १३ किन्तुभीषयसुग्रीवं वालिवन्नहनिष्यसे॥इत्युक्त्वाशीघ्रमादायसुग्रीवप्रतिभाषितम् १४॥

और सुग्रीव निष्कण्टक राज्यको प्राप्तहोके स्त्रियों करके सहित मदिराका पान करके रमण कररहाहै और इससमय में दुःखित मुझको नहीं देखता इससे वह कृतघ्नकी नाईं दिखाई पडताहै ८ सो सुग्रीव शरदृऋतु को प्राप्त देख करके भी सीताके ढूंढनेको नहीं आताहै इससे वह दुष्ट कृतघ्न सुग्रीव पहिले उपकार करने वाला जो मैं हौं तिसको निश्चयकर भूलिगया ९ और हे लक्ष्मण नगर और बांधव करके सहित सुग्रीव को मैं मारौंगा जो कदाचित् सही सही भूलिगया होगा तो वाली जैसे मेरे बाणसे मारागयाहै तैसे सुग्रीव भी होजायगा १० अब लक्ष्मण ऐसे क्रोधयुक्त राम को देखके बोलते हुये कि हे राम इसी समयमें मैं जाकर दुष्टात्मा सुग्रीव को मारके आपके सम्मीप प्राप्त करताहौं मुझको आप आज्ञाकरिये ११ ऐसा कहिकै धनुष औ खड्ग और तरकस लैकै जाने को उद्यत अर्थात् तैयार जो लक्ष्मण तिस को देखिकै राम बोलतेहुये १२ कि हे लक्ष्मण जिस कारण से सुग्रीव मेरा प्रिय सखाहै इससे तुमको नहीं मारना चाहिये १३ क्या तो वालीकीतरह तूभी माराजायगा ऐसे वचन कहिकै केवल भय उत्पन्नकरावो अर्थात् डरपाना चा- हिये और हे लक्ष्मण इसप्रकार मेरा बचन सुग्रीव से कहिकै सुग्रीव जो कहै तिस सन्देशे को मेरेपास प्राप्तकरो १४ ॥

आगत्यपश्चाद्यत्कार्यंतत्करिष्याम्यसंशयम् ॥ तथेतिलक्ष्मणोग च्छत्त्वरितोभीमविक्रमः १५ किष्किन्धांप्रतिकोपेनर्निर्दहन्निववानरा न् ॥सर्वज्ञोनित्यलक्ष्मीकोविज्ञानात्मापिराघवः १६सीतामनुशुशोचा र्तःप्राकृतःप्राकृतामिव॥बुद्ध्यादिसाक्षिणस्तस्यमायाकार्यातिवर्तिनः १७ रागादिरहितस्यास्यतत्कार्यंकथमुद्भवेत् ॥ ब्रह्मणोक्तस्मृतंकर्त्तुरा

ज्ञोदशरथस्यहि १८ तपसःफलदानायजातोमानुषवेषधृक् ॥ माय यामोहितास्सर्वेजनाअज्ञानसंयुताः१९ कथमेषांभवेन्मोक्षइतिविष्णु र्विचिंतयन्॥कथांप्रथयितुंलोकेसर्वलोकमलापहाम् २०रामायणाभि धांरामोभूत्वामानुषचेष्टकः॥क्रोधंमोहंचकामंचव्यवहारार्थसिद्धये२१

तिसके उपरान्त जो कुछ मुझको करना होगा सो मैं करौंगा अब तैसेही लक्ष्मण रामकी आज्ञा से शीघ्रही किष्किन्धानगरी को जातेहुये १५ बड़े बल युक्त जोलक्ष्मण सो कोपकरिके मानों सब वानरों को भस्म करि देवेंगे ऐसे रूप करके जाते हुये अब पार्वती प्रश्न करती हैं कि नित्य लक्ष्मी करके युक्त और सर्वज्ञ और विज्ञान स्वरूप भी रामहैं सो प्राकृत अर्थात् संसारी पुरुष जैसे संसारकी स्त्रीको शोचें तैसे दुःख करके पीड़ितहोके शोचतेहुये१६ और जो बुद्धि आदिकों का साक्षी और मायाकार्य का उल्लंघन करने वाला १७ अर्थात् बुद्धि आदि वृत्तियों करके नहीं स्पर्श किया गया इसीसे रागद्वेषादि दोषों करके रहित जो श्रीराम तिसको मायाकार्य शोकआदिकों से सम्बन्ध कैसेहुआ तिसकासमाधान महादेवजी कहते हैं कि हे पार्वति ब्रह्माके बचनको सत्य करनेको और राजादशरथके तपका फल देनेके लिये १८ श्रीराम मनुष्य रूपको धारण करतेहुये प्रकटहुये सो विष्णुभगवान् यह बिचार करते हुये कि सबमनुष्य अज्ञानयुक्त मेरी मायाकरके मोहित होरहेहैं १९ इनसबोंका मोक्षकैसेहोय ऐसा विचार करते हुये और सब मनुष्यों के पाप नाशकरनेवाली जो अपनी कथा रामायण तिसको लोक में विस्तार करनेको मनुष्य बेषको धारण किये रामहोके व्यवहार की सिद्धिके अर्थ तौन तौन कालमें उचित जो कामक्रोध मोह तिसको ग्रहण करते हुये २० । २१ ॥

तत्तत्कालोचितंगृह्णन्मोहयत्यवशाःप्रजाः॥ अनुरक्तइवाशेषगुणेषुगुणवर्जितः२२ विज्ञानमूर्तिर्विज्ञानशक्तिःसाक्ष्यगुणान्वितः॥ अतःकामादिभिर्नित्यमविलिप्तोयथानभः२३ विंदंतिमुनयःकेचिज्जानंतिसनकादयः॥ तद्भक्तानिर्मलात्मानःसम्यक्जानंतिनित्यदा२४भक्तचित्तानुसारेणजायतेभगवानजः॥लक्ष्मणोऽपितदागत्वाकिष्किन्धानगरान्तिकम्२५ज्याघोषमकरोत्तीव्रम्भीषयन्सर्ववानरान् ॥ तंदृष्ट्वाप्राकृतास्तत्रवानरावप्रमूर्द्धनि २६ चक्रुःकिलकिलाशब्दंधृतपाषाणपादपाः॥ तान्दृष्ट्वाक्रोधताम्राक्षोवानराँल्लक्ष्मणस्तदा२७निर्मूलान्कर्त्तुमुद्युक्तोधनुरानम्यवीर्यवान्॥ततःशीघ्रंसमापत्यज्ञात्वालक्ष्मणमागतं २८

और गुणोंके आधीन जो प्रजाहैं तिनको मोहयुक्त करते हुये गुणों करके रहितभी आपही हैं परन्तु मायाके गुणों में प्रीति युक्त की तरह प्रतीतहो रहे हैं २२ और विज्ञानही है मूर्त्ति जिसकी और विज्ञानही शक्ति है जिसकी और जिस कारणसे साक्षीहै और निर्गुणहै इससे कामादिकों करके कभी राम लिप्तनहीं होते जैसे आकाश मेघादिकों करके लिप्त न होवै तैसे २३ और कोई मुनीश्वर इसप्रकार रामको श्रुतियों करके जानतेहैं और सनकादिक साक्षात् समाधि करके देखते हैं और निर्मल अन्तःकरण जिनका ऐसे जो राम भक्तहैं तेनित्यही रामको जानतेहैं २४ और भक्तोंके चित्तके अनुसारसे भगवान् तैसा तैसा होताहै अर्थात् भक्तलोग जैसाजैसापरमात्माकाध्यानकरतेहैं तैसातैसाहीवहहो जाताहै अब लक्ष्मणभी किष्किन्धानगरीकेसमीपजाकर २५ सबवानरोंकोभय युक्तकरतेहुये बड़ा कठोर धनुषके प्रत्यंचाका अर्थात् रोदेका शब्दकरतेहुये तिन लक्ष्मणको आतेदेख करके शहर पनाहके ऊपर खड़ेहुये २६ जे हज़ारों वानरते बड़ी बड़ी शिलाओंको हाथ में उठाकर अपनी जातिका घोरशब्द करते हुये उससमय में उन वानरोंको देख के लाल हैं नेत्र क्रोध करके जिन के ऐसे जोबड़े पराक्रम युक्त लक्ष्मणजी २७ सोवानरोंके नाशकरने को धनुष खैंचके स्थित होतेहुये उसी समयमें वानरोंमें श्रेष्ठ जो अंगद सो लक्ष्मण जी को प्राप्त जानिकै २८ ॥

निर्वार्यवानरान्सर्वानंगदोमंत्रिसत्तमः ॥ गत्वालक्ष्मणसामीप्यं प्रणनामसदंडवत् २९ ततोंगदंपरिष्वज्यलक्ष्मणःप्रियवर्द्धनः ॥उवाच वत्सगच्छत्वंपितृव्यायनिवेदय ३० मामागतंराघवेणचोदितंरौद्रमूर्तिना ॥ तथेतित्वरितंगत्वासुग्रीवायन्यवेदयत् ३१ लक्ष्मणःक्रोधताम्राक्षःपुरद्वारिबहिःस्थितः ॥ तच्छ्रुत्वातीवसंत्रस्तःसुग्रीवोवानरेश्वरः ३२ आहूयमंत्रिणांश्रेष्ठंहनूमंतमथाऽब्रवीत् ॥ गच्छत्वमंगदेनाशुलक्ष्मणंविनयान्वितः ३३ सांत्वयन्कोपितंवीरंशनैरानयमंदिरम् ॥ प्रेषयित्वाहनूमंतंतारामाहकपीश्वरः ३४ त्वंगच्छसांत्वयंतीतंलक्ष्मणंमृदुभाषितैः ॥ शांतमन्तःपुरंनीत्वापश्चाद्दर्शयमेनघे ३५ ॥

अपने वानरोंको वारणकरके लक्ष्मण के समीपजाके दण्डवत्प्रणामकरता हुआ २९ तिसके उपरान्त भक्तों के ऐश्वर्य्य बढ़ानेवाले जो लक्ष्मण सो अंगद को हृदय से लगाकर बोलतेहुये कि हे अंगद तुम अभी सुग्रीवसे खबरिकरौ३० कि क्रोधयुक्त भयंकर मूर्त्ति जो राम तिनके भेजे लक्ष्मण आये हैं तब तैसेही

जाकर अंगद सुग्रीवसे कहताहुआ ३१ कि हे राजन् क्रोधकरके लालहैं नेत्र जिनके ऐसे जो लक्ष्मण सो पुरके दरवाजे पै बाहर स्थितहोरहेहैं यह अंगदके बचन सुनिकै वानरोंका राजा जो सुग्रीव सो अत्यन्त त्रास को प्राप्तहोताहुआ ३२ और मन्त्रियों में श्रेष्ठ जो हनुमान् तिसको बुलाके यह कहताहुआ कि हे हनुमन् तुम शीघ्रही अंगदको साथलैके नम्रता पूर्वक लक्ष्मणके समीपजाओ ३३ और कोपयुक्त जो वीर लक्ष्मण तिनको धीर धीरे समुझाते हुए अर्थात् सावधान चित्त करतेहुये मन्दिरको लेआवो इसप्रकार सुग्रीव हनुमान्को भेजिकै फिर तारासे बोलताहुआ ३४ कि हे तारे तुमजाके कोमलबचनों करके लक्ष्मण के चित्तको सावधानकरो और जब जानो लक्ष्मणका चित्तशान्त हुआ तो महलके भीतर प्राप्त करके पीछे मुझको दिखलावो ३५ ॥

भवत्वितिततस्तारामध्यकक्षंसमाविशत् ॥ हनूमानंगदेनैवसहितोलक्ष्मणांतिकम् ३६ गत्वाननामशिरसाभक्त्यास्वागतमब्रवीत् ॥ एहिवीरमहाभागभवद्गृहमशंकितम् ३७ प्रविश्यराजदारादीन्दृष्ट्वासुग्रीवमेवच ॥ यदाज्ञापयसेपश्चात्तत्सर्वंकरवाणिभो ३८ इत्युक्त्वालक्ष्मणंभक्त्याकरेगृह्यसमारुतिः ॥ आनयामासनगरमध्याद्राजगृहंप्रति ३९ पश्यंस्तत्रमहासौधान्यूथपानांसमंततः ॥ जगामभवनंराज्ञःसुरेन्द्रभवनोपमम् ४० मध्यकक्षेगतातत्रताराताराधिपानना ॥ सर्वाभरणसम्पन्नामदरक्तांतलोचना ४१ उवाचलक्ष्मणंनत्वास्मितपूर्वाभिभाषिणी ॥ पाहिदेवरभद्रन्तेसाधुस्त्वंभक्तवत्सलः ४२

तिसके उपरान्त ऐसेही होगा यह कहिकै तारा बीचकी डेउढी पै स्थित होती हुई जहां लक्ष्मणसे सम्भाषण करने की योग्यता थी और हनुमान् अंगदकरके सहित लक्ष्मणजी के समीपजाके ३६ शिरसे प्रणाम करके तुम्हारा अच्छा आगमनहुआ यह कहिकै पूछते हुये कि हे महाभाग आपही का गृह है इससे शंकारहित आइये ३७ और राजभवनमें प्रवेशकरके राजाकी स्त्री आदिकोंको और सुग्रीवको देखिकै जो आप आज्ञा करोगे सो मैं सब करोंगा ३८ हनुमान् यह कहिकै लक्ष्मणजीका हाथपकड़के नगरके बीचके मार्गहोके राजा के मन्दिरको लिवालातेहुये ३९ तहां लक्ष्मणजी यूथपति वानरों के महलोंको देखते हुये इन्द्रके भवनके तुल्य जो राजा सुग्रीवका महल है तिसको जाते हुये ४० तिस मंदिरके बीचके चौकमें चन्द्रके तुल्यहै मुख जिसका और संपूर्ण आभूषणों करके भूषित और मदकरके लालहै नेत्रोंका भाग जिसका ऐसी जो तारा ४१ सो लक्ष्मणको नमस्कार करके और मन्द मुसक्यानकरतीहुई

बोली कि हे देवर मेरी रक्षाकरिये और आपका कल्याण होय और आप साधु हो अर्थात् महात्माहौ और भक्तही प्रिय जिनको ऐसेहो ४२ ॥

किमर्थंकोपमाकार्षीर्भक्तेभृत्येकपीश्वरे ॥ बहुकालमनाश्वासंदुःखमेवानुभूतवान् ४३ इदानींबहुदुःखौघाद्भवाद्भिरभिरक्षितः ॥ भवत्प्रसादात्सुग्रीवःप्राप्तसौख्योमहामतिः ४४ कामासक्तोरघुपतेःसेवार्थंनागतोहरिः ॥ आगमिष्यन्तिहरयोनानादेशगताःप्रभो ४५ प्रेषिता दशसाहस्राहरयोरघुसत्तम ॥ आनेतुंवानरान्दिग्भ्योमहापर्वतसन्निभान् ४६ सुग्रीवःस्वयमागत्यसर्ववानरयूथपैः ॥ बधयिष्यतिदैत्यौघान्रावणंचहनिष्यति ४७ त्वयैवसहितोऽद्यैवगन्तावानरपुंगवः ॥ पश्यान्तर्भवनंतत्रपुत्रदारसुहृत्कुलम् ४८ दृष्ट्वासुग्रीवमभयंदत्वानयसहैवते ॥ तारायावचनंश्रुत्वाकृशक्रोधोऽथलक्ष्मणः ४९ ॥

सो ऐसेआपहोके किसवास्तें अपनेभक्त और सेवक सुग्रीव के ऊपर कोप करतेहुये और सुग्रीव बहुतकाल निरन्तर दुःखको भोगता हुआ ४३ और इस समयमें बड़े दुःखके समूहसे आप करके रक्षा कियागया आपही के प्रसाद से सुग्रीव राज्य के सुखको प्राप्तहुआ ४४ सो विषय भोगमें आसक्त होके श्री रामचन्द्रजी की सेवाके अर्थ नहीं प्राप्तहुआ है ऐसा आप न जानैं क्योंकि प्रत्यक्षजाके यद्यपि सुग्रीवने रामकी सेवा नहीं की तौभी कार्य के द्वारा तौ सेवा करताहीरहा इसी से सुग्रीवके बुलाये नानादेशोंसे वानरोंके समूहआवैंगे ४५ और हे रघुवंशियोंमें श्रेष्ठ दशहजार वानर दिशाओंसे वानरोंके बुलानेकेलिये भेजेहैं कैसे वानर आवैंगे जिनके पर्वताकार शरीरहैं ४६ और सुग्रीवसेनापति वानरों करके सहित दैत्योंको और रावणको मारैगा ४७ और हे लक्ष्मण वानरोंमें श्रेष्ठ जो सुग्रीव सो अभी तुम्हारे संगजायगा और सुग्रीवकेरहनेका जो महल अर्थात् रानियोंके रहनेका जो स्थान तिसको देखिये ४८ और उसमहलमें पुत्र और रानियोंकरके सहित सुग्रीवको देखिकै और उसको अभयदान देकै अपने साथही लिवायजाइये ये ताराके वचन सुनिकै कमहुआ क्रोध जिसका ऐसे जो लक्ष्मण सो ४९ ॥

जगामांतःपुरंयत्रसुग्रीवोवानरेश्वरः ॥ रुमामालिंग्यसुग्रीवःपर्यङ्कपर्यवस्थितः ५० दृष्ट्वालक्ष्मणमत्यर्थंउत्पपातातिभीतवत् ॥ तंदृष्ट्वा लक्ष्मणःक्रुद्धोमदविह्वलितेक्षणम् ५१ सुग्रीवंप्राहदुर्वृत्तविस्मृतोसि रघूत्तमम् ॥ वालीयेनहतोवीरःसत्राणोऽद्यप्रतीक्षते ५२ त्वमेवबालि

नोमार्गंगमिष्यसिमयाहतः ॥ एवमत्यंतपरुषंवदन्तंलक्ष्मणंतदा५३ उवाचहनुमान्वीरःकथमेवंप्रभाषसे ॥ त्वत्तोधिकतरोरामेभक्तोयंवानराधिपः ५४ रामकार्यार्थमनिशंजागर्त्तिनतुविस्मृतः ॥ आगताः परितःपश्यवानराःकोटिशःप्रभो ५५ गमिष्यंत्यचिरेणैवसीतायाःपरिमार्गणम् ॥ साधयिष्यतिसुग्रीवोरामकार्यमशेषतः ५६ ॥

रनिवास में जाते हुए जहांवानरोंका राजा सुग्रीव रुमाहै नाम जिसकाऐसी अपनी स्त्रीको आलिंगनकरके पलंगकेऊपरस्थितरहा५०तब सुग्रीव लक्ष्मणको आवते देखके अत्यन्त भयभीतकी नाईं पलँगपै से उतरताहुआ और मदकरके लालहैं नेत्र जिनके ऐसे सुग्रीवको लक्ष्मण देखके बोलते हुये ५१ कि हेदुर्वृत्त अर्थात् जो अपने संग उपकारकरै और आप उसकी खबरभी न लेवे ऐसाहै दुष्ट आचरण जिसका ऐसा जो तू है सो रामको भूलिगयाहै इससे जिसबाणकरके बाली मारागयाहै वहबाण तेरी भी प्रतीक्षा अर्थात् यादगारी कररहाहै ५२और उसी बाली के मार्गको मेरे बाणसे माराहुआ तू प्राप्तहोगा इसप्रकारके बहुतसे कठोर बचन कहतेहुये जो लक्ष्मण तिनसे बीर जो हनुमान् सो बोलतेहुये५३ कि हे लक्ष्मण कैसे आप सुग्रीवसे ऐसाबचन कहते हौ क्योंकि तुमसे अधिक यह सुग्रीव रामका भक्तहै ५४ राम के कार्यके अर्थ यह सुग्रीव निरन्तरजागि रहाहै कुछ भूलिनहींगयाहै और कड़ोर वानर चारोंतरफ़ से आरहे हैं आप देखियेगा ५५ और वे सब वानर शीघ्रही सीताके ढूंढनेको जावैंगे और सुग्रीव संपूर्ण रामके कार्यको सिद्ध करैगा ५६ ॥

श्रुत्वाहनुमतोवाक्यंसौमित्रिर्लज्जितोभवत् ॥ सुग्रीवोप्यर्घ्यपाद्याद्यैर्लक्ष्मणंसंप्रपूजयत् ५७ आलिंग्यप्राहरामस्यदासोहंतेनरक्षितः॥ रामःस्वतेजसालोकान्क्षणार्द्धेनैवजेष्यति ५८ सहायमात्रमेवाहंवानरैःसहितःप्रभो ॥ सौमित्रिरपिसुग्रीवंप्राहकिंचिन्मयोदितम् ५९ तत्क्षमस्वमहाभागप्रणयाद्भाषितंमया ॥ गच्छामोद्यैवसुग्रीवरामास्तिष्ठतिकानने ६० एकएवातिदुःखार्तोजानकीविरहात्प्रभुः ॥ तथेतिरथमारुह्यलक्ष्मणेनसमन्वितः ६१ वानरैःसहितोराजाराममेवान्वपद्यत ६२ भेरीमृदंगैर्बहुऋक्षवानरैःश्वेतातपत्रैर्व्यजनैश्चशोभितः ॥ नीलांगदाद्यैर्हनुमत्प्रधानैःसमावृतोराघवमभ्यगाद्धरिः ६३ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेपञ्चमःसर्गः ५ ॥

यहवचन हनुमान्‌के सुनिकै लक्ष्मणलज्जाको प्राप्तहोतेहुये औरसुग्रीवभी अर्घ्यपाद्यआदि पूजनकी सामग्री करके लक्ष्मणका पूजन करताहुआ५७और लक्ष्मणको हृदयसे आलिंगनकरके कहताहुआ कि हे लक्ष्मण मैं रामकादासहौं और रामही करके रक्षाकियागयाहौं और राम अपने तेजकरके सब लोकोंको आधेही क्षणकरके जीतसक्ते हैं ५८ और मैं तो सबवानरों करके सहित केवल सहायमात्रहौं तब ये वचन सुग्रीवके सुनिकै लक्ष्मणजी कहते हुये कि हे महा-भाग जो कुछ मैंने कठोर बचनकहाहै तिसको ५९ क्षमाकरिये क्योंकि जोकहा सो स्नेहवशसे कहा और हे सुग्रीव अभी हम जावैंगे जिससे राम अकेलेबनमें सीताके विरहसे दुःखकरकेपीड़ित होरहे हैं ६० तब सुग्रीव लक्ष्मण करके स-हित उसीसमय में रथके ऊपर चढ़कर वानरोंको संगले रामके समीप जाता हुआ ६१ । ६२ अब उससमय में भेरी मृदंग आदि बहुतसे बाजाबजरहेहैं और बहुतसे रीछ वानरों करके शोभायमान और सुपेद छत्र औ चमर तिनकरके शोभित और नील अङ्गद हनुमान् आदि मुख्य मुख्य वानरों करके युक्त जो सुग्रीव सो रामके सम्मुख जाता हुआ ६३ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किन्धाकाण्डे भाषाटीकायांपञ्चमःसर्गः ५ ॥

दृष्ट्वारामंसमासीनंगुहाद्वारिशिलातले ॥ चैलाजिनधरंश्यामंज टामौलिविराजितम् १ विशालनयनंशान्तंस्मितचारुमुखाम्बुजम् ॥ सीताविरहसंतप्तंपश्यन्तंमृगपक्षिणः २ रथाद्दूरात्समुत्पत्यवेगात्सुग्री वलक्ष्मणौ ॥ रामस्यपादयोरग्रेपेततुर्भक्तिसंयुतौ ३ रामःसुग्रीवमा लिंग्यपृष्ट्वानामयमंतिके ॥ स्थापयित्वायथान्यायंपूजयामासधर्मवि त् ४ ततोऽब्रवीद्रघुश्रेष्ठंसुग्रीवोभक्तिनम्रधीः ॥ देवपश्यसमायांतींवा नराणांमहाचमूम् ५ कुलाचलाद्रिसंभूतामेरुमन्दरसन्निभाः ॥ ना नाद्वीपसरिच्छैलवासिनःपर्वतोपमाः ६ असंख्याताःसमायांतिहरयः कामरूपिणः ॥ सर्वेदेवांशसंभूताःसर्वेयुद्धविशारदाः ७ ॥

दो० । छठेसर्गसुग्रीवकपि जनकसुतासुधिहेतु ॥
पठयेवानरयूथपति तियतारारघुकेतु १

अब महादेवजी पार्वतीसे कहै हैं हे पार्वति अब सुग्रीव और लक्ष्मण ये दोनों पर्वतकी गुहाके द्वारपै शिलाके ऊपर बैठेहुये रामको दूरहीसे देखके बड़े वेगसे जाकर रामके चरणोंके आगे भक्ति युक्तहोके पड़तेहुये कैसे राम हैं मृग चर्म को धारण करे हैं और श्यामवर्ण हैं और जटा मुकुट करके शोभितहैं १

और विशाल जिनके नेत्रहैं और शान्तहैं और मन्द मुसक्यान करके सुन्दरहै मुखारविन्द जिनका और सीताके विरहकरके संतप्त होरहेहैं और मृग और पक्षी इनको देखरहेहैं २ ऐसे रामको देखिकै सुग्रीव लक्ष्मण चरणोंमें प्रणाम करतेहुये ३ अब धर्मके जाननेवाले जो श्रीराम सो सुग्रीवको हृदयसे आलिंगन करके और अपने समीप बैठाकर कुशल पूंछिकै जैसे शास्त्रकी विधि है तैसे पूजन करतेहुये ४ तिसके उपरान्त भक्तिकरके नम्रहैबुद्धि जिसकी ऐसा जो सुग्रीव सो श्रीराम से बोलताहुआ कि हे देव हिमालय आदि पर्वतों से प्रकट हुई जो बानरोंकी बड़ी भारी सेना तिसको देखिये ५ औरहिमालय आदि पर्वतोंमें उत्पन्नहुये और मेरु पर्वत औ मन्दराचलके तुल्य औरअनेक द्वीप औरनदी और पर्वतइनमें रहनेवाले और पर्वतके तुल्यहैस्वरूप जिनका ६ ऐसे असंख्य इच्छारूप धारी बानर आरहे हैं और सब ये देवताओं के अंशोंसे उत्पन्न हुये हैं इसीसे सब युद्धमें कुशलहैं ७ ॥

अत्रकेचिद्गजबलाःकेचिद्दशगजोपमाः ॥ गजायुतबलाःकेचिदन्येऽमितबलाःप्रभो ८ केचिदंजनकूटाभाःकेचित्कनकसन्निभाः ॥ केचिद्रक्तांतवदनादीर्घबालास्तथापरे ९ शुद्धस्फटिकसंकाशाःकेचिद्राक्षससन्निभाः ॥ गर्जंतःपरितोयांतिवानरायुद्धकांक्षिणः १० त्वदाज्ञाकारिणःसर्वेफलमूलाशनाःप्रभो ॥ ऋक्षाणामधिपोवीरोजाम्बवान्नामबुद्धिमान् ११एषमेमंत्रिणांश्रेष्ठःकोटिभल्लूकवृन्दपः॥हनुमानेषविख्यातोमहासत्वपराक्रमः १२वायुपुत्रोऽतितेजस्वीमंत्रीबुद्धिमतांवरः ॥ नलोनीलश्चगवयोगवाक्षोगंधमादनः १३ शरभोमैंदश्चैव गजःपनसएवच ॥ बलीमुखोदधिमुखःसुषेणस्तारएवच १४॥

और इनमें कोई तौ ऐसे हैं जिनमें एकहाथीके बराबर बलहै और कितने दश हाथियोंके तुल्यबलमेंहैं और कोई दशहजारहाथियोंके तुल्य बलमेंहैं और किसी के बलका कुछ प्रमाणही नहीं है जैसे हनुमदादि ८ और कोई अंजनके पर्वतके तुल्य हैं और कोई सुवर्ण के पर्वतके तुल्य हैं और कोई लाल हैं मुख जिनके ऐसे हैं और किसीकेबाल बड़ेबड़ेहैं ९ और कोई स्फटिकमणिके तुल्य सपेदहैं और कितनेराक्षसोंकासास्वरूपहै जिनका ऐसे युद्धकरनेको गर्जतेहुये चलेआते हैं १० और हे राम ये सब बानर आपकी आज्ञाकरनेवालेहैं और फल मूलके भोजनकरने वाले हैं और ऋक्षोंका स्वामी जाम्बवान् नाम जो बड़ा बीरहै ११ सो यह मेरे मंत्रियोंमें श्रेष्ठहै और कड़ोर ऋक्षोंके समूहका स्वामी है और यह हनुमान् नाम करके प्रसिद्धबड़े बलपराक्रम करके युक्तहै १२ और

यह पवनका पुत्रहै और बड़ा तेजस्वी है और यह हनुमान् बुद्धिमानों में श्रेष्ठ मेरा मन्त्री है और नल और नील और गवय और गवाक्ष और गन्धमादन १३ और शरभ और मैन्द और गज और पनस और बलीमुख और दधिमुख और सुषेण और तार १४ ॥

केसरीचमहासत्वःपिताहनुमतोबली ॥ एतेमेयूथपारामप्राधान्येनमयोदिताः १५ महात्मानोमहावीर्याःशक्रतुल्यपराक्रमाः ॥ एते प्रत्येकतःकोटिकोटिवानरयूथपाः १६ तवाज्ञाकारिणःसर्वे सर्वेदेवांशसंभवाः ॥ एषबालिसुतःश्रीमानंगदोनामविश्रुतः १७ बालितुल्यबलोवीरोराक्षसानांबलान्तकः ॥ एतेचान्येचबहवस्त्वदर्थेत्यक्तजीविताः १८ योद्धारःपर्वताग्रैश्चनिपुणाःशत्रुघातने ॥ आज्ञापयरघुश्रेष्ठसर्वेतेवशवर्त्तिनः १९ रामःसुग्रीवमालिंग्यहर्षपूर्णाश्रुलोचनः ॥ प्राहसुग्रीवजानासिसर्वंत्वंकार्यगौरवम् २० मार्गणार्थंहिजानक्यानियुंक्ष्वयदिरोचते॥ श्रुत्वारामस्यवचनंसुग्रीवःप्रीतमानसः २१॥

और बड़ावली केसरी जो कि हनुमान्का पिताहै हे राम ये मेरे सेनापतिहैं और मैंने ये मुख्यमुख्य आप से कहे हैं १५ और ये सब महात्मा हैं और बड़े पराक्रमी हैं और इंद्रके तुल्यहै पराक्रम जिनका ऐसेहैं और इनमें एकएककड़ोर कड़ोर वानरों के यूथोंका पतिहै अर्थात् जैसे जाम्बवान् कड़ोर यूथोंका पतिहै ऐसे ही हनुमान् आदिभी कड़ोरकड़ोरयूथोंके पतिहैं १६ और हेरामये सबतुम्हारी आज्ञा करनेवालेहैं और सब देवतोंके अंशों से उत्पन्नहुये हैं और यहवाली कापुत्र जो अंगदहै १७ सो बलमें बालीके तुल्यहै और राक्षसोंकी सेनाकाकालके समाननाश करने वालाहै और जे मैंने गिनवायेहैं ते और इन से सिवाय और भी बहुत से हैं परंतु तुम्हारे अर्थ त्यागदियाहै जीवन जिन्होंने ऐसे सब वीरहैं १८ औ पर्वतों करके युद्ध करनेवालेहैं और सब शत्रुओंके मारनेमें निपुणहैं इससे हे राम इनको आज्ञा करिये ये सब आपके बशहैं १९ तब श्रीरामचन्द्र सुग्रीव को आलिंगन कर और नेत्रों से आनन्द के आंशुओं को छोड़तेहुये बोले कि हे सुग्रीव तुम सब कार्योंकी गुरुता को जानतेहौ २० अर्थात् जो कार्य जरूरीहै तिसको जानतेहौ इससे सीताके ढूंढ़ने को जिसको जहां उचित भेजना जानो उसको भेजिये जो तुमको यहबात रुचै तबये रामके वचन सुनिकै प्रीति युक्तहै मनजिसका ऐसा जो सुग्रीव २१ ॥

प्रेषयामासबलिनोवानरान्वानरर्षभः ॥ दिक्षुसर्वासुबिविधान्वानरान्प्रेषयन्वरम् २२ दक्षिणांदिशमत्यर्थंप्रयत्नेनमहाबलान् ॥ युव

राजंजाम्बवंतंहनूमंतंमहाबलम् २३ नलंसुषेणंशरभंमैंदंद्विविदमेव च॥प्रेषयामाससुग्रीवोवचनंचेदमब्रवीत् २४विचिन्वंतुप्रयत्नेनभवंतो जानकींशुभाम् ॥ मासादर्वाङ्निवर्तध्वंमच्छासनपुरःसराः २५ सीता मदृष्ट्वायदिवोमासादूर्ध्वंदिनंभवेत् ॥ तदाप्राणांतिकंदंडंमत्तःप्राप्स्यथ वानराः २६ इतिप्रस्थाप्यसुग्रीवोवानरान्भीमविक्रमान् ॥ रामस्य पार्श्वेश्रीरामंनत्वाचोपविवेशसः २७ गच्छंतंमारुतिंदृष्ट्वारामोवचन मब्रवीत् ॥ अभिज्ञानार्थमेतन्मेह्यंगुलीयकमुत्तमम् २८ ॥

सो बड़े बलवान् जो वानर तिनको भेजताहुआ इसप्रकार सबदिशाओं में अनेक प्रकारके वानरों को भेजिकै २२ दक्षिण दिशामें बड़ेयत्नसे बड़ेबलयुक्त वानरों को भेजताहुआ प्रथम तौ युवराज अंगद है फिर जाम्बवान् और महाबली हनुमान् २३ और नल और सुषेण और शरभ और मैन्द और द्विविद इनको आदि लेकै वानरों को दक्षिण दिशामें सुग्रीव भेजता हुआ और यहबचन कहता हुआ २४ कि तुम सब सीता को यत्नकरिकै ढूंढ़ौ और मेरी आज्ञा को मानि महीने भरके भीतर लौटिकै आवो २५ और हे वानरो सीताके विनादेखे जिस किसीके आनेमें महीने भरके उपरान्त एकदिनभी होजावेगा उसको प्राणान्तकदण्ड मिलैगा अर्थात् उसको मैं मरवाडालौंगा २६ ऐसा वचन कहिकै सुग्रीव बड़े पराक्रम युक्त वानरोंको भेजिकै श्रीरामचन्द्रको नमस्कार करके रामके समीप बैठताहुआ २७ अब राम हनुमान्को जाते देखके वचन बोले कि हे हनुमन् पहिंचान के लिये अपने नामके अक्षरों करके युक्त अपनी मुन्दरी तुमको देताहौं २८ ॥

मन्नामाक्षरसंयुक्तंसीतायैदीयतांरहः ॥ अस्मिन्कार्येप्रमाणंहि त्वमेवकपिसत्तम ॥ जानामिसत्वंतेसर्वंगच्छपंथाःशुभस्तव २९ एवंकपीनांराज्ञातेविसृष्टाःपरिमार्गणे ॥ सीतायाअंगदमुखाबभ्रमुस्त त्रतत्रह ३० भ्रमंतुविन्ध्यगहनेददृशुःपर्वतोपमम् ॥ राक्षसंभीषणा कारंभक्षयन्तंमृगान्गजान् ३१ रावणोयमितिज्ञात्वाकेचिद्वानरपुंगवाः ॥ जघ्नुःकिलकिलाशब्दंमुंचन्तोमुष्टिभिःक्षणात् ३२ नायंरा वणइत्युक्त्वाययुरन्यन्महद्वनम् ॥ तृषार्त्ताःसलिलंतत्रनाविंदन्हरि पुंगवाः ३३ विभ्रमंतोमहारण्येशुष्ककंठोष्ठतालुकाः॥ददृशुर्गह्वरंत त्रतृणगुल्मावृतंमहत् ३४ आर्द्रपक्षान्क्रौंचहंसान्निःसृतान्ददृशुस्त तः ॥ अत्रास्तेसलिलंनूनंप्रविशामोमहागुहाम् ३५ ॥

तिसको एकान्तमें सीताको देना औ हे वानरों में श्रेष्ठ हनुमन् इसकार्यके करने में तुमहीं समर्थहो और तुम्हारा बल और बुद्धि मैं सब जानताहौं और तुमजावो और तुम्हारा कल्याण युक्त मार्गहोय २९ इसप्रकार सुग्रीव करके भेजे हुये जे वानर हैं ते तहां तहां सीताको ढूंढते हुये विचरने लगे ३० अब भ्रमतेहुये जे अंगदादि वानर ते विन्ध्यपर्वतकी गुहा में मृग और हाथियों को खाताहुआ जो बड़ा भयंकर राक्षस पर्वत के तुल्य तिसेदेखते हुये ३१ फिर यह रावणहै ऐसे कोई वानर जानिकै गर्जतेहुये और घूंसोंकरके क्षणमात्र में मारतेहुये ३२ फिर यह रावण नहीं है ऐसा निश्चय करि और बड़ेभारीवनमें जातेहुये फिर वहां प्यासकरके बड़े पीड़ित भी हुये परन्तु जलको वहां न प्राप्त हुये ३३ और मारेप्यास के जिनका कंठ और ओठ और तालूसूखरहाहै ऐसे सब वानर भ्रमते हुये घास और वृक्षोंकी लताओं करके आच्छादित अर्थात ढकीहुई एकपर्वतकी गुहाको देखते हुये ३४ फिर वहां जलसे भीगे हैं पंख जिनके ऐसे हंस और क्रौंचनाम पक्षियों को गुहाके द्वारसे निकलते देखतेहुये फिर ऐसा देखके सब वानरोंने यह निश्चय किया कि इसमें अवश्यजलहोगा इससे इस गुहा में हम प्रवेशकरैं ३५ ॥

इत्युक्त्वाहनुमानग्रेप्रविवेशतमन्वयुः। सर्वेपरस्परंधृत्वाबाहून्बाहुभिरुत्सुकाः ३६ अंधकारेमहद्दूरंगत्वाऽपश्यन्कपीश्वराः ॥ जलाशयान्मणिनिभतोयान्कल्पद्रुमोपमान् ३७ वृक्षान्पक्कफलैर्नम्रान्मधुद्रोणसमन्वितान् ॥ गृहान्सर्वगुणोपेतान्मणिवस्त्रादिपूरितान् ३८ दिव्यभक्षान्नसहितान्मानुषैःपरिवर्जितान् ॥ विस्मितास्तत्रभवनेदिव्येकनकविष्टरे ३९ प्रभयादीप्यमानांतुददृशुःस्त्रियमेकलाम् ॥ ध्यायंतींचीरवसनांयोगिनींयोगमास्थिताम् ४० प्रणेमुस्तांमहाभागांभक्त्याभीत्याचवानराः ॥ दृष्ट्वातान्वानरान्देवीप्राहयूयंकिमागताः ४१ कुतोवाकस्यदूतावामत्स्थानंकिंप्रधर्षथ ॥ तच्छ्रुत्वाहनुमानाहशृणुवक्ष्यामिदेविते ४२ ॥

ऐसा कहिकै आगेआगे तो हनुमान् चलतेहुये और बानर पीछे पीछेपरस्पर हाथ पकडके उस अन्धकारयुक्त गुहामें चलते हुये ३६ फिर उस अन्धकारमें बड़ीदूर जाके वे वानर निर्मल जलसे भरेहुए तालावको देखतेहुये ३७ और पकेहुये फलों करके युक्त और भार करके जिनकी शाखा लचि रही हैं और सहतके वोभ्कसेभी लचरहे हैं और कल्पवृक्षों के समानहैं ऐसे वृक्षोंको देखते हुये और सम्पूर्ण गुणोंकरके युक्त और मणिवस्त्र आदि सामग्रियों से भरेहुये

३८ और देवतोंके योग्य भोजन करनेके अन्नादिकों से पूर्ण होरहे हैं और मनुष्यों करके रहित हैं ऐसे गृहको देखके सब बानर आश्चर्य युक्त होते हुये ३९ फिर उस भवनमें सोनेके आसनके ऊपर अकेली बैठीहुई और अपनी कान्ति करके प्रकाशमान ऐसीस्त्री को देखतेहुये फिर वह कैसीस्त्री है ध्यानकर रहीहै और चीर बस्त्रोंको धारणकरे है और योग के जाननेवाली है और योगाभ्यास में स्थितहै ४० तब वे वानर उसमहाभागा स्त्री को भक्ति करके और भय करके भी प्रणाम करतेहुये फिर वह देवी वानरोंको देखके बोली कि तुम किस कारण से यहां आयेहो ४१ और कहां से आयेहौ और किसके दूतहौ और मेरे स्थानको किसवास्ते व्याकुल कररहे हौ तब हनुमान् बोले हे देवि मैं सब कारण कहता हौं तिसको सुनिये ४२॥

अयोध्याधिपतिःश्रीमान्राजादशरथःप्रभुः॥ तस्यपुत्रोमहाभागोज्येष्ठोरामइतिश्रुतः४३पितुराज्ञांपुरस्कृत्यसभार्यःसानुजोवनम्॥ गतस्तत्रहृताभार्यातस्यसाध्वीदुरात्मना ४४ रावणेनततोरामःसुग्रीवंसानुजोययौ॥ सुग्रीवोमित्रभावेनरामस्यप्रियवल्लभाम् ४५ मृगयध्वमितिप्राहततोवयमुपागताः॥ ततोवनंविचिन्वंतोजानकींजलकांक्षिणः ४६ प्रविष्टागह्वरंघोरंदैवादत्रसमागताः॥ त्वंवाकिमर्थमत्रासिकावात्वंवदनःशुभे ४७ योगिनीचतथादृष्ट्वावानरान्प्राहहृष्टधीः॥ यथेष्टंफलमूलानिजग्ध्वापीत्वामृतंपयः ४८ आगच्छततोवक्ष्येममवृत्तांतमादितः॥ तथेतिभुक्त्वापीत्वाचहृष्टास्तेसर्ववानराः ४९॥

अयोध्यानगरी का पति बड़ा लक्ष्मीवान् राजा दशरथ होताहुआ तिसका ज्येष्ठ पुत्र बड़ा भाग्यशाली राम नाम करके विख्यातहै ४३ सो पिता की आज्ञाको मानिके भार्या करके सहित और छोटे भाई करके सहित बनको प्राप्त हुआहै तिस रामकी स्त्री बड़ी पतिव्रता दुरात्मा रावणने हरली ४४ तब भाई करके सहित राम सुग्रीवको प्राप्त हुआ और सुग्रीव मित्रभावकरके राम की प्यारी जो स्त्री है तिसको तुम सब ढूंढो ऐसा हम सब वानरों से कहता हुआ ४५ तब हम सब सीताको ढूंढतेढूंढते बड़ी प्यास करके पीड़ित हो जल की इच्छा करतेहुये ४६ फिर जलकी इच्छासे इस घोर गुहामें प्रवेशकर दैव योगसे यहां प्राप्तहुये सो हे कल्याण रूपे तुम कौनहो और कैसे यहां प्राप्त हौ यह वृत्तान्त अपना कहिये ४७ तब वह योगिनी भूखे प्यासे वानरोंको देखके प्रसन्नचित्तहो बोलतीहुई कि तुमसब यथेष्टफल मूल भोजनकरके और अमृत तुल्य जलकोपीके ४८ आवो तो मैं अपना वृत्तान्त आदि से लैके सब कहौंगी

तबसब वानर तैसेही जाकर फलमूल भोजनकर और जलपीके प्रसन्नहुये ४९॥

देव्याःसमीपंगत्वातेबद्धांजलिपुटाःस्थिताः ॥ ततःप्राहहनूमन्तं योगिनीदिव्यदर्शना ५० हेमानामपुरादिव्यरूपिणीविश्वकर्मणः ॥ पुत्रीमहेशंनृत्येनतोषयामासभामिनी ५१ तुष्टोमहेशःप्रददाविदंदिव्यपुरंमहत् ॥ अत्रास्थितासासुदतीवर्षाणामयुतायुतम् ५२ तस्या अहंसखीविष्णुतत्परामोक्षकांक्षिणी ॥ नाम्नास्वयंप्रभादिव्यगंधर्वतनयापुरा ५३ गच्छंतीब्रह्मलोकंसामामाहेदंतपश्चर ॥ अत्रैवनिवसंतीत्वंसर्वप्राणिविवर्जिते ५४ त्रेतायुगेदाशरथिर्भूत्वानारायणोव्ययः॥ भूभारहरणार्थायविचरिष्यतिकानने५५मार्गंतोवानरास्तस्यभार्यामायांतितेगुहाम्॥ पूजयित्वाथतान्गत्वारामंस्तुत्वाप्रयत्नतः५६॥

उस देवी के समीप जाकर हाथ जोडके स्थित होतेहुये तब वह योगिनी हनुमान्से बोलती हुई ५० कि हे हनुमन् पहिले समयमेंदिव्यहै रूप जिसका ऐसी हेमा नाम करके विश्वकर्मा की पुत्री होती हुई सो नृत्य करके महादेवको प्रसन्न करती हुई ५१ तौ महादेवजी प्रसन्नहोके यह जो बड़ादिव्य पुर है तिसको देते हुये इस स्थान पै सुन्दर दन्त जिसके, ऐसी जो हेमा सो कड़ोरवर्ष स्थित होतीहुई ५२ तिस हेमाकी मैं सखी हौं और विष्णुकीभक्तहौं और मोक्षकी इच्छा करिरही हौं और स्वयंप्रभा मेरा नाम है और दिव्यनाम गन्धर्व की कन्याहौं ५३ और ब्रह्मलोकको जब हेमा जानेलगी तब मुझसे यह कहती हुई कि तू सब प्राणियों करके रहित इसी स्थानमें बसती हुई तप करु ५४ जब त्रेतायुग में अविनाशी नारायण दशरथके पुत्र होकर पृथिवी के भार हरने के अर्थ वनमें विचरैंगे ५५ तब तिस रामकी भार्य्याको ढूंढते हुये वानर इस गुहामें आवैंगे तिन वानरोंको पूजनकरके और रामके पासजाके रामकी स्तुति करके ५६ ॥

यातासिभवनंविष्णोर्योगिगम्यंसनातनम् ॥ इतोहंगन्तुमिच्छामिरामंद्रष्टुंत्वरान्विता ५७ यूयंपिदध्वमक्षीणिगमिष्यथबहिर्गुहाम् ॥ तथैवचक्रुस्तेवेगाद्गताःपूर्वस्थितंवनम् ५८ सापित्यक्त्वागुहांशीघ्रंययौराघवसन्निधिम् ॥ तत्ररामंससुग्रीवंलक्ष्मणंचददर्शह ५९ कृत्वा प्रदक्षिणंरामंप्रणम्यबहुशःसुधीः ॥ आहगद्गदयावाचारोमांचिततनूरुहा ६० दासीतवाहंराजेन्द्रदर्शनार्थमिहागता ॥ बहुवर्षसहस्राणि तप्तंमेदुश्चरन्तपः ६१ गुहायांदर्शनार्थंतेफलितंमेद्यतत्तपः ॥ अद्य

हित्वांनमस्यामिमायायाःपरतःस्थितम् ६२ सर्वभूतेषुचालक्ष्यंबहिरं तरवस्थितम् ॥ योगमायाजवनिकाच्छन्नोमानुषविग्रहः ६३ ॥

योगियों करके प्राप्त होनेके योग्य सनातन जो विष्णुलोक तिसको प्राप्त होगी हेवानरो इसकारणसे रामके देखनेको मैं शीघ्रही जाया चाहतीहौं ५७ और तुम सब अपनेअपने नेत्रोंको मूंदि लेवो फिर गुहा के बाहरही प्राप्त होउगे फिर तिसके उपरान्त ते वानर तैसेही नेत्रोंको मूंदते हुये फिर वेगसे पहिले की नाईं सब बानर गुहाके बाहर बनमें प्राप्त होजाते हुये ५८ और वह स्वयंप्रभा गन्धर्वा भी गुहाकोत्यागके रामके समीप जातीहुई तहां जाके सुग्रीव सहित जो राम तिनको और लक्ष्मणको देखती हुई ५९ फिर रामकी प्रदक्षिणा करके और बहुत प्रणाम करके निर्मल बुद्धि जिसकी और खड़ीहुई है रोमावली जिसकी ऐसी जो स्वयंप्रभा सोगद्गदवाणी करके राम से बोलती हुई ६० हे राजेन्द्र मैं तुम्हारी दासी हौं और तुम्हारे दर्शन के अर्थ यहां प्राप्त हुईहौं बहुत हज़ार वर्ष भर मैंने दुश्चर तप किया है अर्थात् जो किसी से न होसकै ऐसा तप किया ६१ सो केवल आपके दर्शनके अर्थ किया सो इससमय में सफल हुआ जो आपके दर्शन हुये और इस समयमें मैं तुमको नमस्कार करतीहौं जो तुम माया से परेस्थित हो ६२ और तुम सब भूतोंमें बाहर भीतर स्थित भी हो परन्तु नहीं जाने जातेहो और अपनी योगमाया रूप कनात में छिपकर मनुष्यरूपको धारण किये जो आपहो ६३ ॥

नलक्षसेज्ञानदृशांशैलूषइवरूपधृक् ॥ महाभागवतानांत्वंभक्तियोगविधित्सया ६४ अवतीर्णोसिभगवन्कथंजानामितामसी ॥ लोकेजानातुयःकश्चित्तवतत्त्वंरघूत्तम ६५ ममैतदेवरूपंतेसदाभातुहृदालये ॥ रामतेपादयुगलंदर्शितंमोक्षदर्शनम् ६६ अदर्शनंभवार्णानांसन्मार्गपरिदर्शनम् ॥ धनपुत्रकलत्रादिविभूतिपरिदर्पितः ६७ आकिंचनधनंत्वाद्यनाभिधातुंजनोर्हति ॥ निवृत्तगुणमार्गायनिष्किंचनधनायते ६८ नमःस्वात्माभिरामायनिर्गुणायगुणात्मने ॥ कालरूपिणमीशानमादिमध्यांतवर्जितम् ६९ समंचरंतंसर्वत्रमन्येत्वांपुरुषंपरम् ॥ देवतेचेष्टितंकश्चिन्नवेदनृविडंबनम् ७० ॥

अज्ञानियों करके नहीं जानेजाते हो जैसे नटको कोई न जानै तैसे इसका आशय यह है कि जैसे कोई नटकनातमें छिपके अपने वास्तव रूपको छिपाके और रूप बनाके बाहर निकलिके दिखलाता है तौ तमाशा देखने वाले मूर्ख पुरुष उस नटके व्याघ्रादि रूपको सत्यही मानते हैं और यह नहीं

जानते कि वही नट और रूप धारण करके आयाहै ऐसेही अज्ञानकरके जिन का ज्ञानरूपी नेत्र ढकाहुआहै वे मूर्खसंसारी पुरुष आपका सत्यरूप नहीं जानते यही जानते हैं जैसे और मनुष्य हैं तैसे दशरथके पुत्र राम भी हैं और वे मूढ़ उलटी कुतर्क भी करते हैं कि जो देशकाल वस्तुपरिच्छेद रहित सर्वव्यापक परमात्माहै वह दशरथका पुत्र कैसे होसक्ताहै जो होय तौ थोड़े देशकाल में आजानेसे वह परिच्छिन्न हुआ तौ सर्वव्यापकता कहां बनसक्तीहै इसकुतर्क का उत्तर यहहै कि उन कुतर्क करनेवाले पुरुषों से पूछाजावै आप लोगसर्व व्यापकका अर्थ जानते हैं कि नहीं जो जानते हौ तो राममें संदेह न करते क्योंकि जो दिखलाई पड़ताहै सारा प्रपञ्च सो सब सर्व शब्द का अर्थहै सो प्रपञ्च मायाका कार्य है वह माया उसीकी शक्ति होनेसे रामके आधीनहै तो जब सबका कारण जो माया उसीको रामने अपनी सत्तासे व्याप्त किया तो उसमायाके कार्यके व्याप्त करने में कौन सन्देह रहा और जो दशरथका पुत्र मानिके रामको परिच्छिन्न देखते हौ सो सब तुम्हारीही दृष्टिका दोषहै राम में कुछ दोष नहीं है इसीसे रामने काकभुशुण्डको अपने उदरहीमें सब प्रपंच दिखलाया और कौशल्याको भी दिखलाया और जिससमयमें बिभीषण शरण आयाहै उस समयमें मन्त्रियोंने कहा यह रावणका भाई है इसका विश्वास न करना चाहिये तो रामने कहा मैं शरणागत बिभीषण का त्याग न करूंगा और मुझको भय नहीं है क्योंकि मैं इच्छाकरौं तो अंगुलीके अग्रभागही करके सब लोकोंका नाश करिदेवों यह सब वाल्मीकीयमें प्रसिद्धहै इससे जो रामको सर्व व्यापकता नहीं हो तो यह सब कैसे सम्भव होसक्ताहै ऐसेही श्री कृष्ण भगवान्ने अर्जुनको विश्वरूप दिखाके अपनी सर्वव्यापकता सूचन की और कृष्ण रामका अभेद युद्धकाण्डमें ब्रह्माजीनेही कहाहै और यह भी विचार करके देखना चाहिये जैसे सूर्य एकदेश में स्थित होके सबका प्रकाश करते हैं ऐसे रामभी एक देशमें स्थितहोके प्रकाश करते हैं और वास्तव में तो सब की बुद्धिरूप गुहामें स्थित होके राम सब इन्द्रियादिकों के प्रकाशक हैं और नट जैसे अपनी मायाकरके औरोंको मोह कराताहै और आप नहीं मोहितहोता ऐसे रामभी हैं और हेराम परमेश्वरकी भक्तिकी इच्छाकरतेहुये जे पुरुष तिनको इस रामरूपमें भक्ति योगके विधान करने की इच्छाकरके आपने अवतार धारण कियाहै ६४ और हे भगवन् लोकमें जो कोई तुम्हारे सच्चिदानन्द घनस्वरूपको जानताहै सोजानै मैं स्त्रीजातिकैसे जानसकौं ६५ और मेरे हृदयमें तो सदा यही आपकारूप प्रकाशकरै और हे राम मोक्षके दिखाने वाला जो आपका चरणारविन्द तिसको आपने मुझको दिखलाया ६६ और आपकाचरण भवसागरकी निवृत्ति करनेवालाहै और सन्मार्गका दिखानेवाला

है और धन पुत्र स्त्री आदि ऐश्वर्य के गर्वकरके युक्त पुरुषहैं सो आपके नाम के लेनेके योग्य नहीं हैं ६७ स्तुति करनेकी तो वार्त्ताही क्या है और जिनकी किसी में प्रीति नहीं है सिवाय तुम्हारे तिनको तो तुम लोभीके धनकी तरह प्रियहौ फिर वे ऐश्वर्य में फँसेहुये पुरुष आपका कैसे भजन करसक्ते हैं और निवृत्तहुआहै संसार जिससे और जिनके कुछ नहीं है तिनकेधन ऐसे जो तुम हौ तिनको मेरा नमस्कारहै ६८ और अपने सच्चिदानन्द रूपही में है रमण क्रीड़ा जिसकी इसीसे निर्गुणस्वरूप हौ और सबके उपादान कारण होने से सगुण रूपभी आपहौ तिनके अर्थ मेरा नमस्कारहै और कालरूप करकेसबके संहार करनेवाले और ईश रूप करके सबके रचनेवाले और पालन करने वाले और इसीसे आदिमध्य अन्त करके हीन ६९ और अन्तर्यामी रूपकरके सब जगह समान गमन करनेवाले सबसे परे पुरुषरूप जो आपहैं तिनकोमैं जानतीहौं और हे देव मनुष्य जातिका अनुकरण करनेवाला अर्थात् नकल करनेवाला जो आपका चरित्र तिसको कोई नहीं जानता है ७० ॥

नतेस्तिकश्चिद्दयितोद्वेष्योवापरएवच ॥ त्वन्मायापिहितात्मानस्त्वांपश्यंतितथाविधम् ७१ अजस्याकर्तुरीशस्यदेवतिर्यङ्नरादिषु जन्मकर्मादिकंयद्यत्तदत्यंतविडंबनम् ७२ त्वामाहुरक्षरंजातंकथाश्रवणासिद्धये ॥ केचित्कोशलराजस्यतपसःफलसिद्धये ७३ कौशल्यया प्रार्थमानंजातमाहुःपरेजनाः ॥ दुष्टराक्षसभूभारहरणायार्थितोविभुः ७४ ब्रह्मणानररूपेणजातोऽयमितिकेचन ॥ शृण्वंतिगायंतिचयेकथास्तेरघुनन्दन ७५ पश्यंतितवपादाब्जंभवार्णवसुतारणम् ॥ त्वन्मायागुणबद्धाहंव्यतिरिक्तंगुणाश्रयम् ७६ कथंत्वांदेवजानीयांस्तोतुंवाविषयंविभुम्॥ नमस्यामिरघुश्रेष्ठंबाणासनशरान्वितम्॥लक्ष्मणेनसहभ्रात्रासुग्रीवादिभिरन्वितम् ७७ ॥

और आपके न कोई मित्रहै और न कोई शत्रुहै और न कोई उदासीनहै तो भी तुम्हारी मायाकरके ढकीहुई दृष्टि जिन्होंकी ऐसे पुरुष तुमको शत्रु मित्र उदासीन रूप करकेदेखते हैं ७१ और जन्मरहित और कर्म रहित ईश्वर जो आप हैं तिनका देवतों में वासनादि रूप कर और तिर्यग्योनि में मत्स्य आदि रूप करके और मनुष्यों में रामादि रूप करके जो जन्म कर्मसो अत्यन्त विडम्बनहै अर्थात् केवल देवादि जातिके प्राणियोंकी नकल मात्रहै ७२ अपने निर्मल गुणोंकी कथाके श्रवण से सिद्धि की प्राप्ति के लिये साक्षात् ब्रह्म आप प्रकटहुये हैं ऐसा कोई आपके अवतार का प्रयोजन कहते हैं ७३ और कोई ऐसा कहते

हैं कि पूर्व जन्म में कौशल्या ने परमेश्वर की बड़ी प्रार्थनाकी थी तिससे प्रकट हुये और कोई ऐसा कहतेहैं कि दुष्ट राक्षस रूप जो पृथिवीका भार तिसके दूर करने को ब्रह्माजीने जब प्रार्थना की तब मनुष्य रूप करके आप प्रकट हुये ७४ इसमें मुख्य प्रयोजन तो यहहै कि हे रघुनन्दन जे कोई आपकी कथाको सुनते वा कहतेहैं ७५ ते भवसागरके तारने वाले आपके चरणारविन्दको देखतेहैं कैसे हैं चरण कि आपकी मायाके गुणोंसे बंधेहुये जे अहंकार विशिष्टपुरुष तिन्होंकर के रहित और अच्छे गुणों के आश्रयहैं ७६ और मन औरबाणी इनके अगोचर और व्यापक जो तुमहो तिनको स्तुति करने कोभी मैं कैसे जानसकौं इसरे हे रघुश्रेष्ठ धनुर्बाण को धारणकिये और लक्ष्मण सुग्रीवा दिकों करके सहितजो आप तिनको केवल नमस्कार करती हों ७७ ॥

एवंस्तुतोरघुश्रेष्ठःप्रसन्नःप्रणतार्घहृत् ॥ उवाचयोगिनींभक्तांकिंतेमनसिकांक्षितम् ७८ साप्राहराघवंभक्त्याभक्तिन्तेभक्तवत्सल ॥ यत्रकुत्रापिजातायानिश्चलांदेहिमेप्रभो ७९ त्वद्भक्तेषुसदासंगोभूयान्मेप्राकृतेषुन ॥ जिह्वामेरामरामेतिभक्त्यावदतुसर्वदा ८० मानसंश्यामलंरूपं सीतालक्ष्मणसंयुतम् ॥ धनुर्बाणधरम्पीतवाससंमुकुटोज्ज्वलम् ८१ अंगदैर्नूपुरैर्मुक्ताहारैःकौस्तुभकुण्डलैः ॥ भांतंस्मरतुमेरामवरंनान्यंवृणेप्रभो ८२ श्रीरामउवाच ॥ भवत्वेवंमहाभागेगच्छत्वंवदरीवनम् ॥ तत्रैवमांस्मरंतीत्वंत्यक्त्वेवंभूतपंचकम् ८३ मामेवपरमात्मानमचिरात्प्रतिपद्यसे ॥ श्रुत्वारघूत्तमवचोमृतसारकल्पं गत्वातदैववदरीतरुखण्डजुष्टम् ॥ तीर्थंतदारघुपतिंमनसास्मरन्तित्यक्त्वाकलेवरमवापपरंपदंसा ८४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किन्धाकांडे षष्ठःसर्गः ६ ॥

इस प्रकार स्तुति कियेगये जो भक्तों के पाप नाश करनेवाले श्रीराम सो प्रसन्न होके अपनी भक्त जो योगिनी तिससे बोलते हुये कि क्यातेरे मनकी अभिलाषाहै ७८ तौ वह योगिनी भक्ति करके रामसे बोलतीहुई कि हे भक्त वत्सल जहां कहीं मैं उत्पन्नहों तहां अपनी निश्चल भक्ति कृपा करके मुझको दीजिये ७९ और तुम्हारे भक्तोंकासंग मुझ को सदाहोय और संसारी पुरुषोंका न होय और मेरी जीभभक्ति करके सदारामराम इसकोकहै ८० और सीता लक्ष्मण करके सहित और धनुर्बाण को धारणकरे और पीताम्बरधारणकरे और

मुकुट करके प्रकाशित ८१ और अंगद जो बहूंटा और नूपुर(घुंघुरू)और मोतियोंके हार और कौस्तुभ मणि और कुण्डल इन्हों करके प्रकाशमान जो श्याम सुन्दर तुम्हारा रूप तिसको मेरामन सदा स्मरण करे हेप्रभो इसीवरको मैं मांगतीहौं और वरको नहीं चाहती हौं ८२ तब श्रीराम कहते हुये कि हे महाभागे ऐसेही होगा और तू बदरीबन को जा तहां मेरा स्मरण करतीहुई इस पंचमहाभूतके रचे हुये शरीर को त्याग कर मैंहीं जो परमात्मा तिनको शीघ्र ही प्राप्त होवैगी ८३ अब वह योगिनी अमृत तुल्य श्रीरामके वचन सुनि और उसी समय में बेरियों के वृक्षोंके समूह करके युक्त जो वदरिकाश्रम तीर्थ तिस को जाके तहां श्रीरामको मनकरके स्मरण करती हुई शरीर को त्यागकर परम पदको प्राप्त होतीहुई ८४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे किष्किन्धाकाण्डे भाषाटीकायांषष्ठस्सर्गः ६ ॥

अथतत्रसमासीनावृक्षखंडेषुवानराः ॥ चिंतयंतोविमुह्यन्तःसीतामार्गणकर्शिताः १ तत्रोवाचांगदःकांश्चिद्वानरान्वानरर्षभः ॥ भ्रमतां गह्वरेऽस्माकंमासोनूनंगतोऽभवत् २ सीतानाधिगतास्माभिर्नकृतंराजशासनम् ॥ यदिगच्छामकिष्किंधांसुग्रीवोस्मान्हनिष्यति ३ विशेषतःशत्रुसुतंमांमिषान्निहनिष्यति ॥ मयितस्यकुतःप्रीतिरहंरामेणरक्षितः ४ इदानींरामकार्यंमे नकृतन्तन्मिषंभवेत् ॥ तस्यमद्धनने नूनंसुग्रीवस्यदुरात्मनः ५ मातृकल्पांभ्रातृभार्यां पापात्मानुभवत्यसौ ॥ नगच्छेयमतःपार्श्वंतस्यवानरपुंगवाः ६ त्यक्ष्यामिजीवितंचात्र येनकेनापिमृत्युना ॥ इत्यश्रुनयनंकेचिद्दृष्ट्वावानरपुंगवाः ७ ॥

दो० सप्तमसर्ग विषादयुत सबै कपिनको बृन्द ॥
मिलिसम्पातिभयो सुखी जिमिसींचेबनवृन्द १

अब श्रीमहादेवजी पार्वतीसे कथा वर्णनकरैहैंकि हे पार्वति अब उसगुहा से निकलिकै बनमेंवृक्षोंके तले बैठेहुये अंगदादि बानरसीताजीके ढूंढने में बडे क्लेशकोप्राप्तहो बडी चिन्ता करतेहुये १ तहां बानरोंमें श्रेष्ठजोअंगद सो कितनेही बानरोंसे यहवचन बोलताहुआ कि इसपर्वतकी गुहामें भ्रमते हम सबको एक महीना पूराव्यतीत होगया२और न सीता मिलीं और न राजा सुग्रीवकी आज्ञाकी अर्थात् महीनेके भीतरराजाके पासनहीं पहुंचे सो जोकदाचित् अब किष्किन्धा नगरीकोजावें तौसुग्रीव हमसबको अवश्य मारैगा३और विशेष करके तौउसके वैरीकापुत्र मैं हूं तिसको इस छलसे मारेहीगा मेरेमें उसकी

प्रीति कैसेहूभी नहीं है मैं तोकेवल रामकरके रक्षाकियागयाहौं ४ और इस समयमें मैंने रामका कार्य तौ किया नहीं है सोई दुष्टात्मा सुग्रीवको मेरेमारने में निश्चयकरके बहानाहोगा ५ क्योंकि जो पापात्मा सुग्रीवमाताके तुल्यजो ज्येष्ठ भाईकी स्त्री तिसमें रमण करिरहाहै इससे हे वानरो उससुग्रीवके समीपतो हमनहींजावेंगे ६ जिसकिसी उपायसे यहां भलेही प्राणोंको त्याग देऊंगा ऐसाकहिकेरोवताहुआजोअंगदतिसकोदेखकेउनवानरोंमेंश्रेष्ठजेवानर ७

व्यथिताःसाश्रुनयनायुवराजमथाब्रुवन् ८ किमर्थंतवशोकोत्रवयंतेप्राणरक्षकाः ॥ भवामोनिवसामोऽत्रगुहायांभयवर्जिताः ९ सर्वसौभाग्यसहितंपुरंदेवपुरोपमम् ॥ शनैःपरस्परंवाक्यंवदतांमारुतात्मजः १० श्रुत्वांगदंसमालिंग्यप्रोवाचनयकोविदः ॥ विचार्यतेकिमर्थंतेदुर्विचारोनयुज्यते ११ राज्ञोऽत्यंतप्रियस्त्वंहितारापुत्रोतिवल्लभः ॥ रामस्यलक्ष्मणात्प्रीतिस्त्वयिनित्यंप्रवर्धते १२ अतोनराघवाद्भीतिस्तवराज्ञोविशेषतः ॥ अहंतवहितेशक्तोवत्सनान्यंविचारय १३ गुहावासश्चनिर्भेद्यइत्युक्तंवानरैस्तुयत् ॥ तदेतद्रामबाणानामभेद्यंकिंजगत्त्रये १४ ॥

तेवड़ी व्यथाको प्राप्तहोके और रोतेहुये अंगदसे बोलतेहुये कि ८ किस वास्ते तुमशोच करतेहो हमसब तुम्हारे प्राणोंकी रक्षाकरैंगे और भयरहित इसीगुहा में वासकरैंगे ९ और संपूर्ण सौभाग्य करके सहित देवपुरके तुल्य इसमें पुरहै इसप्रकार धीरेधीरे वचनकहते हुये वानरोंका वचन हनुमान्सुनके १० और अंगदको आलिंगनकरके नीतिशास्त्रमें बड़ाप्रवीण जो हनुमान् सोवोलताहुआ कि हे अंगद यह दुष्ट विचार वानरोंके संग किसवास्ते किया जाताहै ऐसाविचार तुम्हारे वास्ते योग्य नहीं है ॥ इसका आशययह है कि हनुमानने अपने मनमें यहविचार किया कि इनवानरोंने इसपर्वतकी गुहाके रहनेकी सलाहअंगद कोदी सो बड़ी दुष्टताकी क्योंकि ऐसे होनेमें सुग्रीव से अंगदकाभेद सिद्धहुआ और भेदहोनेमें सुग्रीवके वास्ते बड़ीबुराई है जिससे अंगद युवराज होनेसे राज्यका अधिकारी है तोइसकेजुदे रहनेमें सुग्रीवकोभय सदाबनीही रहैगी इसवास्ते इससमयमें ऐसा यत्नकरना चाहिये जिसमें अंगदको भयकी प्रतीतिभीहोय और सुग्रीवमें प्रीति होके एकताभी होय यह सब आशय हनुमान् हृदयमेंकर अबअंगदसे कहताहै ११ कि हे अंगद तुमराजा सुग्रीवको अत्यन्त प्रियहो क्योंकि जिसकारजसे ताराके पुत्रहो अर्थात् तारा में सुग्रीवकी अपनी स्त्रीसेभी अधिक प्रीतिहै और तिसताराके तुमपुत्रहुये

इसकारणसे सुग्रीवको तुमअति प्रियहौ और रामकी लक्ष्मण सेभी अधिक तुम्हारेमें प्रीतिहो रहीहै १२ इसकारणसे नतोरामसे तुमको भयहै और राजा से तोताराके कारणसे विशेषकरके भयनहींहै और हे वत्स मैंभी तुम्हारे हित करनेको समर्थहौं इससे औरकुछ मनमें विचारनकरौ १३ और जोइनवानरों ने तुमको सलाहदी कि गुहामेंबास करनेसे कुछ भयनहीं है सोसब मिथ्याहै क्योंकि राम विरोधीकी भयकहीं निवृत्तनहीं होती और प्रत्यक्ष मैंभी राम लक्ष्मण के बाणोंकरके जिसकाभेदन न होय ऐसा तीन लोक में कौनसा स्थानहै १४ ॥

येत्वांदुर्बोधयंत्येते वानरावानरर्षभ ॥ पुत्रदारादिकंत्यक्त्वाकथं स्थास्यंतितेत्वया १५ अन्यद्गुह्यतमंवक्ष्ये रहस्यंशृणुमेसुत ॥ रामो नमानुषोदेवःसाक्षान्नारायणोऽव्ययः १६ सीताभगवतीमायाजनसं मोहकारिणी ॥ लक्ष्मणोभुवनाधारःसाक्षाच्छेषःफणीश्वरः १७ ब्रह्म णाप्रार्थिताःसर्वैरक्षोगणविनाशने ॥ मायामानुषभावेनजातालोकैक रक्षकाः १८ वयंचपार्षदाःसर्वेविष्णोर्वैकुण्ठवासिनः ॥ मनुष्यभाव मापन्नेस्वेच्छयापरमात्मनि १९ वयंवानररूपेणजातास्तस्यैवमायया ॥ वयंतुतपसापूर्वमाराध्यजगतांपतिम् २० तेनैवानुगृहीताःस्मःपार्षद त्वमुपागताः ॥ इदानीमपितस्यैवसेवांकृत्वैवमायया २१ ॥

और वानरोंमें श्रेष्ठ हे अंगद जेवानर तुमको दुष्टसलाहदे रहेहैं तेसब अपने पुत्रदारादिकोंको त्यागकरके तुम्हारा संगकैसे करैंगे १५ और हे पुत्र और एक गुप्तरहस्य मैं तुझसे कहताहूं तिसको सुनु राम मनुष्यनहींहैं किन्तु साक्षात् अविनाशी नारायणदेवहैं १६ और मनुष्योंको मोह करानेवाली जोभगवती माया सोई सीताहैं और सबलोकके आधार जोनागोंके ईश्वर शेषजी सोई साक्षात् लक्ष्मणहैं १७ तेराक्षसोंके समूहके नाशके लिये ब्रह्मा करके प्रार्थना कियेगये मायाकरके मनुष्यभावसे प्रकटहुये हैं औ रहैं तो सब लोकोंके एक रक्षक १८ और हमसंपूर्ण बैकुण्ठवासी जोविष्णु भगवान् तिनके पार्षदहैं सो जबपरमात्मा अपनी इच्छाकरके मनुष्य भावको प्राप्तहुआ १९ तबहम सबपा- र्षद उसीकी मायाकरके वानररूपकरके प्रकटहुयेहैं और हमसब पहिले तपकरके नारायणका आराधनकरके २० उसीकी अनुग्रहसे पार्षद पदवीको प्राप्तहोतेहुये और इस वानर योनि में भी निष्कपट करके तिसी की सेवा करके २१ ॥

पुनर्वैकुण्ठमासाद्यसुखंस्थास्यामहेवयम् ॥ इत्यंगदमथाश्वास्यग

तांविंध्यंमहाचलम् २२ विचिन्वंतोथशनकैर्जानकींदक्षिणांबुधेः ॥ तीरेमहेंद्राख्यगिरेःपवित्रंपादमाययुः २३ दृष्ट्वासमुद्रंदुःपारमगाधंभयवर्द्धनम् ॥ वानराभयसंत्रस्ताःकिंकुर्मइतिवादिनः २४ निषेदुरुदधेस्तीरेसर्वेचिंतासमन्विताः ॥ मंत्रयामासुरन्योन्यमंगदाद्यामहाबलाः २५ भ्रमतामेवनोमासोगतोत्रैवगुहांतरे ॥नदृष्टोरावणोवाद्यसीतावाजनकात्मजा २६ सुग्रीवस्तीक्ष्णदंडोस्मान्निहंतेवनसंशयः॥ सुग्रीववधतोऽस्माकंश्रेयःप्रायोपवेशनम् २७इतिनिश्चित्यतत्रैवदर्भानास्तीर्यसर्वतः ॥ उपाविवेशुस्तेसर्वेमरणेकृतनिश्चयाः २८ ॥

फिर वैकुण्ठको प्राप्तहोके सुखपूर्वक स्थितहोवैंगे इसप्रकार अंगदको समझाकर सबवानर विन्ध्याचलको जातेहुये २२ अब इसके उपरान्त सबवानरधीरे धीरे जानकी को ढूंढतेहुये दक्षिण समुद्रके तीर और महेंद्र पर्वतके पास एक पवित्र पर्वतरहा वहां सबवानर आतेहुये २३ तहां जिसकी कुछ थाहनहीं और दुःख करके भी पारजानेको अशक्य और भयका बढ़ानेवाला ऐसे समुद्र को देखके भयकरके त्रासको प्राप्त जे वानर ते सब यह कहते हुये कि इससमयमें हमको क्याकरना चाहिये २४ सबवानर चिन्ताकरके युक्त समुद्रके तीर बैठते हुये और अंगदको आदि लेके बड़े बलवान् जे वानर ते परस्पर अर्थात् आपस में सलाह करतेहुये २५ पर्वतकी गुहामें भ्रमतेभ्रमते हमको एकमहीना व्यतीत होगया तहां न तौ रावण कहीं देखा और न सीता देखी २६ और तीक्ष्ण है दण्ड जिसका ऐसा जो सुग्रीव सो हम सबको मारडालैगा इसमें कुछ संदेह नहीं है इससे सुग्रीवके बधसे तो हमको अपनेआप अन्नजल छोड़केमरजाना अच्छाहै २७ ऐसा निश्चयकरके उससमुद्रके तीर सबवानर कुशोंको बिछाकर मरणका निश्चयकरि उन कुशोंके ऊपर सब बैठतेहुये २८ ॥

एतस्मिन्नंतरेतत्रमहेंद्राद्रिगुहांतरात् ॥निर्गत्यशनकैरागाद्गृध्रःपर्वतसन्निभः २९ दृष्ट्वाप्रायोपवेशेनस्थितान्वानरपुंगवान् ॥ उवाचशनकैर्गृध्रःप्राप्तोभक्षोद्यमेबहुः ३० एकैकशःक्रमात्सर्वान्भक्षयामिदिनेदिने॥श्रुत्वातद्गृध्रवचनंवानराभीतमानसाः ३१ भक्षयिष्यतिनःसर्वानसौगृध्रोनसंशयः ॥ रामकार्यंचनास्माभिःकृतंकिंचिद्धरीश्वराः ३२ सुग्रीवस्यापिचहितंनकृतंस्वात्मनामपि ॥ वृथानेनवधंप्राप्तागच्छामोयमसादनम् ३३ अहोजटायुर्धर्मात्मारामस्यार्थेमृतःसुधीः ॥

मोक्षंप्रापदुरावापंयोगिनामप्यरिन्दमः ३४ संपातिस्तुतदावाक्यंश्रुत्वावानरभाषितम् ॥ केवायूयंममभ्रातुःकर्णपीयूषसंनिभम् ३५ ॥

उसीसमयमें एकमहेन्द्र पर्वतकी गुहासे पर्वतके तुल्य गीध निकलिकै धीरे धीरे वानरों के समीप आताहुआ २९ मरणका निश्चयकरि बैठेहुये जो वानर तिनको देखिकै धीरेसे वह गीध बोला कि आजु तौ मुझको बहुतसा भोजन मिला ३० एकएक वानर को रोज़रोज़ क्रमसे भोजन किया करूंगा यह गृद्ध का बचन सुनिकै भययुक्त है मन जिन्हों का ऐसे वानर होतेहुये ३१ और यहवचन बोले कि यह गीध निश्चयकरके हम सबको भोजनकरैगा इसमेंसंदेह नहीं परन्तु हे वानरो हमने कुछ रामका कार्य न किया ३२ औरनकुछसुग्रीवहीका हित किया और न कुछ अपनाही हितकिया बृथाही इसगीधसे बध को प्राप्तहो यमलोकको जावैंगे ३३ और जटायु बड़ाधर्मात्मारहा जोबड़ाबुद्धिमान् जटायु रामके अर्थ प्राणोंको देकै योगियोंको भी दुष्प्राप्य प्राप्तहोने को अशक्य मोक्षको प्राप्तहोता हुआ ३४ अब वह सम्पाति नाम जो गृध्र सो वानरों के कहेहुये वचन सुनिकै बोला कि तुम सब कौनहौ जे मेरे भाई जटायुका मेरे कानों को अमृत तुल्य नाम परस्पर कहिरहेहो ३५ ॥

जटायुरितिनामाद्यव्याहरंतःपरस्परम् ॥ उच्यतांवोभयंमाभून्मत्तःप्लवगसत्तमाः ३६ तमुवाचांगदःश्रीमानुत्थितोगृध्रसन्निधौ ॥ रामोदाशरथिःश्रीमान्लक्ष्मणेनसमन्वितः ३७ सीतयाभार्ययासार्द्धंविचचारमहावने ॥ तस्यसीताहृतासाध्वीरावणेनदुरात्मना ३८ मृगयांनिर्गतेरामेलक्ष्मणेचहृताबलात् ॥ रामरामेतिक्रोशंतीश्रुत्वागृध्रःप्रतापवान् ३९ जटायुर्नामपक्षींद्रोयुद्धंकृत्वासुदारुणम् ॥ रावणेनहतोवीरोराघवार्थंमहाबलः ४० रामेणदग्धोरामस्यसायुज्यमगमत्क्षणात् ॥रामःसुग्रीवमासाद्यसख्यंकृत्वाग्निसाक्षिकम् ४१सुग्रीवचोदितोहत्वाबालिनंसुदुरासदम् ॥राज्यंददौवानराणांसुग्रीवायमहाबलः४२

सो अब मेरेभाईका सबवृत्तांत मुझसे कहौ और हे वानरो अबतुमको मेरेसे कुछभयनहीं है इससे निर्भयहोके कहौ३६तबउन्होंमें शोभायुक्त जो अंगद सो गृद्धके समीपजाके कहनेलगा कि दशरथके पुत्र बड़े लक्ष्मीवान् जो श्रीरामसो लक्ष्मणकरके सहित ३७ और सीता जो अपनी भार्या तिनकरके सहितवनमें विचरते हुये जो राम तिन रामकी पतिव्रतास्त्री सीता दुष्टात्मा रावणने हरली ३८ जिस समयमें लक्ष्मण सहित रामतौ शिकार खेलनेगयेथे उससमय में शून्य आश्रम देखके जबरदस्ती सीताको हरा और वह सीता रामराम ऐसाव-

चन ऊंचे स्वरसे कहिरहीथी तिसवचनको सुनिकै ३९ उसीसमय में बड़ाप्रतापी जो पक्षियोंका इन्द्र जटायु सो बड़ा भयंकर रावणके संग युद्धकरकेराम के अर्थ वीर जटायु रावणसे मृत्युको प्राप्तहोताहुआ ४० फिर रामने अपने हाथसे उसको दग्ध किया फिर क्षणमात्र में रामही के रूपको प्राप्तहोताहुआ फिर राम सुग्रीवको प्राप्तहोके अग्निको साक्षीकरके तिस सुग्रीवसे मैत्रीकरके ४१ सुग्रीवकी प्रेरणा से बलवान् बाली को मारिकै वानरों के राज्यको सुग्रीव के अर्थ महाबली राम देतेहुये ४२ ॥

सुग्रीवःप्रेषयामाससीतायाःपरिमार्गणे ॥ अस्मान्वानरवृन्दान्वै महासत्वान्महाबलः ४३ मासादर्वाङ्निवर्तध्वंनोचेत्प्राणान्हरामिवः इत्याज्ञयाभ्रमंतोस्मिन्वनेगह्वरमध्यगाः ४४ गतोमासोनजानीमः सीतांवारावणंचवा॥सतुस्प्रायोपविष्टाःस्मस्तीरेलवणवारिधेः ४५ यदिजानासिहेपक्षिन्सीतांकथयनःशुभाम् ॥ अंगदस्यवचःश्रुत्वासंपातिर्हृष्टमानसः ४६ उवाचमत्प्रियोभ्राताजटायुःप्लवगेश्वराः ॥ बहुवर्षसहस्रांतेभ्रातृवार्ताश्रुतामया ४७ वाक्सहायंकरिष्येहंभवतांप्लवगेश्वराः ॥ भ्रातुःसलिलदानायनयध्वंमांजलांतिकम् ४८ पश्चात्सर्वंशुभंवक्ष्येभवतांकार्यसिद्धये ॥ तथेतिनिन्युस्तेतीरं समुद्रस्यविहंगमम् ॥ सोपितत्सलिलेस्नात्वाभ्रातुर्दत्वाजलांजलिम् ४९ ॥

तब सुग्रीव सीताके ढूंढ़ने को हमसब वानरोंको भेजताहुआ ४३ और सुग्रीवने यहकहा कि महीने भरके भीतर तुमसब लौटिआवो और जोमहीनेभर के भीतर न आवैगा तिसके प्राणहरे जावैंगे यह सुग्रीव की आज्ञाकरके भ्रमते हुये जो हम ४४ तिनको पर्वतकी गुहाही में मास व्यतीतहोगया औरनसीता को हमने देखा न रावणको इससे मरने की इच्छाकरके इससमय समुद्र के तीर बैठेथे ४५ सो हे पक्षिन् जो तुम शुभलक्षणयुक्त जो सीता तिसकोजानते होउ तौ बताओ यह अंगदके वचन सुनिकै हर्षयुक्त है मन जिसका ऐसा जो संपाति सो बोला ४६ कि हे वानरो जटायु मेरा प्यारा भाई है और बहुत हज़ारवर्षों के बाद आज मैंने भाई की वार्त्तासुनी है ४७ और हे वानरों के ईश्वर वाणी करके सहाय में तुम्हारा करौंगा और भाईको जल देने के अर्थ मुझको जल के समीप लेचलौ तिसके अनन्तर तुम्हारे कार्यकी सिद्धिके अर्थ मैं शुभ वचन कहौंगा ४८ तब वे सबवानर तैसेही उसपक्षीको समुद्रके तीर प्राप्तकरते हुये और वह संपातिभी जलमें स्नानकरके भाई के अर्थ जलांजलीदैके ४९ ॥

पुनःस्वस्थानमासाद्यास्थितोनीतोहरीश्वरैः ॥संपातिःकथयामास वानरान्परिहर्षयन् ५० लंकानामनगर्यास्तेत्रिकूटगिरिमूर्द्धनि॥तत्रा शोकवनेसीताराक्षसीभिःसुरक्षिता ५१ समुद्रमध्येसालंकाशतयोज नदूरतः ॥ दृश्यतेमेनसन्देहःसीताचपरिदृश्यते ५२ गृध्रत्वाद्दूरदृष्टिर्मे नात्रसंशयितुंक्षमम् ॥ शतयोजनविस्तीर्णंसमुद्रंयस्तुलंघयेत् ५३ सएवजानकींदृष्ट्वापुनरायास्यतिध्रुवम् ॥ अहमेवदुरात्मानंरावणंहंतु मुत्सहे ५४ भ्रातृहंतारमेकाकीकिन्तुपक्षविवर्जितः ॥ यतध्वमितिय त्नेनलंघितुंसरितांपतिम् ॥ ततोहंतारघुश्रेष्ठोरावणंराक्षसाधिपम्५५ उल्लंघ्यसिंधुंशतयोजनायतंलंकांप्रविश्याथविदेहकन्यकाम् ॥ दृष्ट्वा समाभाष्यचवारिधिंपुनस्तर्त्तुंसमर्थःकतमोविचार्यताम् ५६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किंधाकांडे सप्तमःसर्गः ७॥

फिर वानरोंकरके प्राप्तकियागया अपने स्थानको प्राप्तहोके वानरोंको वचनसे आनन्दयुक्त करताहुआ कहनेलगा ५० कि त्रिकूट पर्वतके ऊपरएक लंकानाम करकेपुरीहै तिसपुरीके अशोकबनमें राक्षसियों करकेयत्नसे रक्षाकी गई सीतावास कररहीहै ५१ यहांसे सौयोजनदूर समुद्रके मध्यमें लंकाहै और मुझको यहांसे दिखाईदेतीहै और सीताभी दिखलाई देतीहै इसमें कुछ सन्देह नहीं है ५२ और गृध्रहोनेसे मुझको दूरदृष्टिहै इसमें तुमसंशय करने के योग्यनहींहो और सौयोजनहै विस्तार जिसका ऐसे समुद्रको जो उल्लंघन करै ५३ सोई जानकीको देखके फिर निश्चयकरके लौटिके आवैगा और मैं हीं अकेला भाईके मारनेवाले रावणके मारनेको उत्साह करताहौं ५४ परन्तु क्याकरौं पंख मेरेनहीं हैं इससे समुद्रके उल्लंघनकरने को तुमसब यत्नकरो तिसके उपरान्त रामचन्द्र राक्षसोंका अधिपति जो रावण तिसको मारेंगे५५ और जोसौयोजन समुद्रको उल्लंघनकरके और लंकामें प्रवेशकरके फिर वहांसीताको देखके और उससे वार्त्तालाप करके फिर समुद्रके पारहोनेको जोसमर्थहो ऐसा तुमसबवानरोंके बीचमें कौनसाहै यहबिचार तुमसबको करनाचाहिये५६॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किन्धाकाण्डे भाषाटीकायांसप्तमस्सर्गः ७ ॥

अथतेकौतुकाविष्टाःसम्पातिंसर्ववानराः ॥ पप्रच्छुर्भगवन्ब्रूहि स्वमुदन्तंत्वमादितः १ संपातिःकथयामासस्ववृत्तांतंपुराकृतम्॥ अ

हंपुराजटायुश्चभ्रातरौरूढयौवनौ २ बलेनदर्पितावावांबलजिज्ञासयाखगौ ॥ सूर्यमण्डलपर्य्यंतंगंतुमुत्पतितौमदात् ३ बहुयोजनसाहस्रंगतस्तत्रप्रतापितः ॥ जटायुस्तंपरित्रातुंपक्षैराच्छाद्यमोहतः ४ स्थितोऽहंरश्मिभिर्दग्धपक्षोऽस्मिन्विन्ध्यमूर्द्धनि ॥ पतितोदूरपतनान्मूर्च्छितोऽहंकपीश्वराः ५ दिनत्रयात्पुनःप्राणसहितोदग्धपक्षकः ॥ देशंवागिरिकूटान्वानजानेभ्रांतमानसः ६ शनैरुन्मील्यनयनेदृष्ट्वा तत्राश्रमंशुभम् ॥ शनैःशनैराश्रमस्यसमीपंगतवानहम् ७ ॥

दो० सर्गआठमें चन्द्रमा मुनि उपदेशोज्ञान ॥
गीधवानरनसेकह्यो अंगदादिकरिमान १

अब श्रीमहादेवजी पार्वतीसे कथा वर्णन करैहैं हे पार्वति अबबड़े आश्चर्ययुक्त जे सबवानर ते उससम्पातिसे पूंछतेहुये कि हे भगवन् अबअपना वृत्तांत सबआदिसे कहिये १ तबसंपातिगीध अपना कियाहुआ पहिलेका वृत्तांतकहताहुआ कि हे वानरो मैं और जटायुदोनोंभाई युवावस्थाको प्राप्तहुये २ जब बड़े बलकरके गर्वयुक्त हमदोनों भाई आकाश मार्गकर उड़तेहुये तबसूर्यमंडल पर्यंत अपने गर्वसे पहुँचिगये ३ फिर बहुत हजारयोजन जबप्राप्तहुये तब तौ जटायु सूर्यकेतेज करके तप्तहोताहुआ तब मोहसे ४ भाईकेस्नेह से पंखों से ढांककर स्थितहुआ तबसूर्यकी किरणोंकरके भस्महोगये पंख जिसके ऐसाजो मैं सोविन्ध्यपर्वतके शिखरपै गिरपड़ताहुआ सोदूरके गिरनेसे मूर्च्छितहोगया ५ फिर तीनदिनकेबाद मेरी मूर्च्छाजगी तोजलिगयेहैं पंख जिसके ऐसा जो मैं हौं सोउससमयमें देश और पर्वतके शिखर ये कुछनहीं जानताहुआ क्यों कि भ्रमयुक्तहै मन जिसका ऐसारहा ६ फिर धीरेधीरे नेत्रोंको खोलकर एक बड़े अच्छे आश्रमको देखके फिर धीरे धीरे उस आश्रम के समीप प्राप्त होताहुआ ७ ॥

चंद्रमानाममुनिराट्दृष्ट्वामांविस्मितोऽवदत् ॥ संपातेकिमिदंतेद्यविरूपंकेनवाकृतम् ८ जानामित्वामहंपूर्वमत्यंतंबलवानसि ॥ दग्धौकिमर्थंतेपक्षौकथ्यतांयदिमन्यसे ९ ततःस्वचेष्टितंसर्वंकथयित्वातिदुःखितः ॥ अब्रुवंमुनिशार्दूलंदग्धोऽहंदावबह्निना १० कथंधारयितुंशक्तोविपक्षोजीवितंप्रभो ॥ इत्युक्तोथमुनिर्वीक्ष्यमांदयार्द्रविलोचनः ११ शृणुवत्सवचोमेऽद्यश्रुत्वाकुरुयथेप्सितम् ॥ देहमूलमिदंदुःखंदेहःकर्मसमुद्भवः १२ कर्मप्रवर्त्ततदेहेऽहंबुद्ध्यापुरुषस्यहि ॥ अहं

कारस्त्वनादिःस्यादविद्यासंभवोजडः १३ चिच्छाययासदायुक्तस्त
सायःपिण्डवत्सदा॥तेनदेहस्यतादात्म्याद्देहश्चेतनवान्भवेत् १४॥

तब उस आश्रममें चन्द्रमा नामकरके जो मुनीश्वर सो मुझको देखकेबड़े आश्चर्ययुक्त होतेहुये और यह कहतेहुये कि हे संपाते यह तुम्हारा विरूप किसने किया ८ और यह मैं जानताहौं तुम पहिले बहुत बलवान्रहे औरकिस हेतुसे तुम्हारे पंखजलिगये सो कहो ९ तब अपना कियाहुआ सबकर्म कहिकै अतिदुःखितहो मुनिसे बोलताहुआ कि हे मुने अग्निके सन्तापकर मैं भीतर से भस्महोरहाहौं १० और पंखों के विना मैं कैसे जीवनेको समर्थ होसक्ताहौं ऐसे जब मैंने बचनकहा तो दयाकरके नेत्रजिनके भरिआये हैं ऐसे जो मुनिसो मुझको देखके बोले ११ कि हे वत्स इससमय में तू मेरा बचनसुन और सुन करके फिर तेरी जैसी इच्छाहोय तैसाकर और हे पक्षिन् जितना दुःखहै तिस में देहही मूल कारणहै अर्थात् देहाभिमानही सबदुःखोंका कारणहै सोदेहकर्म से उत्पन्न हुआहै १२ और कर्म पुरुषकी अहंकार बुद्धिसेउत्पन्नहै औरअहंकार तो अविद्यासे उत्पन्न हुआहै इससे जड़है और अनादिहै अर्थात् कबसे उत्पन्न हुआ यह नहीं जानाजाताहै १३ सो अहंकार तचायेहुये लोहपिंडकीनाईं सदा चिदाभास करकेयुक्त रहताहै अर्थात् जैसे अग्निमें तचाहुआरक्तवर्ण लोहपिंड अग्निसे अलगकरनेको अशक्यहै तैसे चैतन्यसे अहंकारभी अलगनहीं होसक्ता उस अहंकार करके देहके तादात्म्य संबन्धसे देहभी चेतनयुक्तकी तरह जाना जाताहै जिसमें मिलना औ अलग रहना दोनों प्रतीतहोवें उसको तादात्म्य संबन्ध कहते हैं १४ ॥

देहोऽहमितिबुद्धिःस्यादात्मनोऽहंकृतेर्बलात् ॥ तन्मूलएषसंसारः सुखदुःखादिसाधकः १५ आत्मनोनिर्विकारस्यमिथ्यातादात्म्यतः सदा ॥ देहोऽहंकर्मकर्त्ताहमितिसंकल्प्यसर्वदा १६ जीवःकरोतिक र्माणितत्फलैर्बध्यतेवशः ॥ ऊर्ध्वाधोभ्रमतेनित्यंपापपुण्यात्मकःस्वय म् १७ कृतंमयाधिकंपुण्यंयज्ञदानादिनिश्चितम् ॥ स्वर्गंगत्वासुखं भोक्ष्येइतिसङ्कल्पवान्भवेत् १८ तथैवाध्यासतस्तत्रचिरंभुक्त्वासुखं महत् ॥ क्षीणपुण्यःपतत्यर्वागनिच्छंकर्मचोदितः १९ पतित्वा मण्डलेचेंदोस्ततोनीहारसंयुतः ॥ भूमौपतित्वाव्रीह्यादौतत्रास्थित्वा चिरंपुनः २० भूत्वाचतुर्विधंभोज्यंपुरुषैर्भुज्यतेततः ॥ रेतोभूत्वापुन स्तेनऋतौस्त्रीयोनिसिंचितः २१ ॥

इसप्रकार चेतन आत्माको अहंकार के वलसे मैं देहहौं ऐसी मिथ्या बुद्धि होती है वहीबुद्धिहै कारण जिसमें ऐसा संसारहै सो कर्म द्वारासुख और दुःख इनको उत्पन्न करताहै १५ ऐसे निर्विकार भी आत्माहै तिसकोअहंकारादिकों के साथ झूठेही तादात्म्य सम्बन्ध से अहंनाममैं कर्मका करनेवाला हौं यहसंकल्पते मैं देहहौं ऐसी बुद्धिहोती है अथवा निर्विकार आत्माको अहंकारादिकों के तादात्म्यसे मैं देहहौं और कर्म करनेवालाहौं यह दोनों तरहकी बुद्धिहोती है तिसमें किसीको पुण्य विशेषसे मैं देहहौं यह बुद्धि दूरभी होती है परन्तु मैं कर्म करनेवाला हौं यह बुद्धि विनाज्ञानके निवृत्त नहीं होती १६ इससे पुण्य पापादि कर्म जीव करताहै फिर तिनकर्मों के फल जो सुख दुःखादिक तिन करके अवशहोके बन्धनको प्राप्तहोताहै फिर पुण्य पापात्मक जो जीव सो ऊपर नीचे लोकों में भ्रमताहै १७ और मैंने यज्ञ दानादिक अधिक पुण्य किया है इससे निश्चयकरके स्वर्गकोजाकर सुख भोगकरौंगा ऐसा संकल्पयुक्त होता है १८ फिर मैं पुण्य करनेवालाहौं इसअभिमानसे बहुतकाल स्वर्ग सुख भोग के फिर जब पुण्य क्षीणहोजाताहै तौ नहीं वो इच्छा करताहुआ कर्मका प्रेरा स्वर्ग से नीचे गिरताहै १९ फिर सूक्ष्मशरीर जीव चन्द्रमण्डल में प्राप्तहोताहै फिर चन्द्रमा की किरणद्वारा कुहिरा में आताहै फिर कुहिरासे पृथिवी में आता है फिर पृथिवी से यव गेहूं धान इत्यादि अन्नमें आताहै २० फिर अन्नमें बहुत काल स्थितहो जब उसअन्नको भोज्यादि चारप्रकारका कर कोई भोजन करताहै तौ उसके वीर्यरूपहोताहै फिर वह पुरुष ऋतुकालमें स्त्री प्रसंग करता है तो स्त्री की योनिमें सिंचन कियाजाता है २१ ॥

योनिरक्तेनसंयुक्तंजरायुपरिवेष्टितम् ॥ दिनेनैकेनकललंभूत्वारूढत्वमाप्नुयात् २२ तत्पुनःपंचरात्रेणबुद्बुदाकारतामियात् ॥ सप्तरात्रेणतदपिमांसपेशित्वमाप्नुयात् २३ पक्षमात्रेणसापेशीरुधिरेणपरिप्लुता ॥ तस्याएवांकुरोत्पत्तिःपञ्चविंशतिरात्रिषु २४ ग्रीवाशिरश्चस्कन्धश्च पृष्ठवंशस्तथोदरम् ॥ पञ्चधांगानिचैकैकंजायन्तेमासतःक्रमात् २५ पाणिपादौतथापार्श्वःकटिर्जानुस्तथैवच ॥ मासद्वयात्प्रजायन्तेक्रमेणैवनचान्यथा २६ त्रिभिर्मासैःप्रजायन्तेअंगानांसंधयःक्रमात् ॥ सर्वांगुल्यःप्रजायंतेक्रमान्मासचतुष्टये २७ नासाकर्णौचनेत्रेचजायन्तेपंचमासतः ॥ दन्तपंक्तिर्नखागुह्यंपंचमेजायतेतथा २८ ॥

फिर वहां स्त्री के रुधिर में मिल सूक्ष्म जाले से लपिटा हुआ एक दिन में मिलकर कुछदृढ होताहै २२ फिर वहपांच रात्रिमें बुलबुलेके तुल्यहोताहै

फिर सातरात्रिमें मांसकी थैली सा होताहै २३ फिर पन्द्रह दिनमें वहकठिन मांस रुधिरमें डूबारहताहै फिर पचीसरात्रिमें उसमें अंकुरोंकी उत्पत्ति होती है २४ फिर उसमें गरदन और शिर और कन्धा और पीठकी रीढ़और पेटये पांचअंगक्रमसे महीनेभरमें होते हैं २५ फिरहाथ औ पांव और पसुरी और कमर औ घोटुवे ये दूसरे महीनेमें क्रमसेहोतेहैं २६ फिर तीसरे महीनेमें सब अंगोंकी संधि अर्थात् जोड़सब और सबअँगुली ये अंगचौथेमहीने में होतेहैं २७ औरनाक औरकान और नेत्रये सबपांचवें महीनेमें होते हैं और मसूढे और नख और लिंग अर्थात् मूत्रस्थानयेभी पांचवें महीने में उत्पन्नहोतेहैं २८।

अर्वाक्षण्मासतश्छिद्रंकर्णयोर्भवतिस्फुटम्॥ पायुर्मेढ्रमुपस्थंचनाभिश्चापिभवेन्नृणाम् २९ सप्तमेमासिरोमाणिशिरःकेशास्तथैवच॥ विभक्तावयवत्त्वंचसर्वंसंपद्यतेऽष्टमे ३० जठरेवर्द्धतेगर्भःस्त्रियाएवंविहंगम॥ नवमेमासिचैतन्यंजीवःप्राप्नोतिसर्वशः ३१ नाभिसूत्रालपरंध्रेणमातृभुक्तान्नसारतः॥ वर्द्धतेगर्भगःपिंडोनम्रियेतस्वकर्मतः ३२ स्मृत्वासर्वाणिजन्मानिपूर्वकर्माणिसर्वशः॥ जठरानलतप्तोऽयमिदंवचनमब्रवीत् ३३ नानायोनिसहस्रेषुजायमानोऽनुभूतवान्॥ पुत्रदारादिसंबंधंकोटिशःपशुबांधवान् ३४ कुटुम्बभरणाशक्त्यान्यायान्यायैर्धनार्जनम्॥ कृतंनाकारवंविष्णुचिन्तांस्वप्नेपिदुर्भगः ३५॥

और छःमहीनेके मध्यमें कानोंके छेद और मलत्याग करनेका स्थानगुदा और मूत्रकरनेका स्थानमेढ्र व योनि और नाभिये सबप्रकट करके स्थानछठे महीनेमें होतेहुये २९ और सातवेंमहीनेमें सबरोम और शिरकेबालये होतेहैं और सबअंग न्यारेन्यारे आठवेंमहीनेमें होतेहैं ३० और हे शृङ्गइसप्रकार स्त्री के उदरमें गर्भ वृद्धिको प्राप्तहोताहै और नवेंमहीनेमें जीव सबइन्द्रियोंके ज्ञानको प्राप्तहोताहै ३१ और बालककीनाभिमें लपटाहुआ जोनाल तिसमें बड़ा महीन छिद्र होताहै तिसके द्वारामाता के भोजनके रसकरके पुष्टहोतारहता है और कर्मके बलसे नहीं मरता है ३२ जब नवयें महीने में उसगर्भ में स्थित प्राणीको ज्ञानहुआ तौ अनेक जन्म और अनेक जन्मों के कर्मों को स्मरणकरके माताके उदरकी अग्निकरके सन्तप्त जो बालक सो यह बचन बोलताहुआ ३३ कि नानाप्रकार की हजारों योनियों में उत्पन्नहुआ जो मैं सो करोड़ों पुत्र दारादि सम्बन्धों को और करोड़ोंहाथी घोड़े भाई बन्धुओंको जानताहौं अर्थात् इन्हींसे उत्पन्नहुये सुख दुःखादिकोंको जानताहुआहौं ३४ और कुटुम्ब के पालनमें प्रीतिकरके न्याय और अन्यायकरके मैंने धनका उपार्जन

तौ किया और अतिदुर्लभ विष्णुका स्मरण स्वप्नमें भी नहीं करताहुआ३५॥

इदानींतत्फलंभुंजेगर्भेदुःखम्महत्तरम् ॥ अशाश्वतेशाश्वतवद्देहेतृष्णासमन्वितः ३६ अकार्य्याण्येवकृतवान्नकृतंहितमात्मनः ॥ इत्येवंबहुधादुःखमनुभूयस्वकर्मतः ३७ कदानिष्क्रमणंमेस्याद्गर्भान्निरयसन्निभात् ॥ इतऊर्ध्वंनित्यमहंविष्णुमेवानुपूजये ३८ इत्यादिचिन्तयन्जीवोयोनियंत्रप्रपीड़ितः ॥ जायमानोऽतिदुःखेननरकात्पातकीयथा ३९ पूतिव्रणान्निपतितःक्रिमिरेषइवापरः ॥ ततोबाल्यादिदुःखानिसर्वाण्येवंविभुंजते ४० त्वयाचैवानुभूतानिसर्वत्राविदितानिच ॥ नवर्णितानिमेगृध्रयौवनादिषुसर्वतः४१ एवंदेहोऽहमित्यस्माद्भ्यासान्निरयादिकम्॥गर्भवासादिदुःखानिभवंत्यभिनिवेशतः४२॥

औरइस समयमें उसी कर्मका फल बड़ाभारी गर्भ के दुःखको भोगरहाहौं और अनित्य जो देहहै तिसमें नित्यकेतुल्य तृष्णाकरके युक्त होरहाहौं ३६ और नहीं करने के योग्य जो कर्म हैं तिनको करताहुआ और अपना हित कभी न करा इसप्रकार अपने कर्म से हुआ जो बहुत तरहकादुःख तिसकोजानके ३७ यह विचार करताहुआ कि इसनरक तुल्य गर्भ से कब मेरा निकासहोगा अब की किसी तरहदुःखसे उद्धारहोउँ तौ नित्यही विष्णुकापूजन कियाकरौंगा ३८ इसको आदि लेके अनेक बार्त्ताको यादिकरताहुआ जो जीव सो तबतक योनि यंत्रकरके पीड़ित होताहुआ अर्थात् जब पैदाहोनेको हुआ तौ उदरसे माता की योनिमें होके निकलने लगा तौ पहिले से भी अधिक दुःखकरके पीड़ित हुआ फिर अतिदुःखकरके उत्पन्न होताहुआ जैसे नरकसे पातकी निकलै३९ अथवा पीवसे भराहुआ जो फोड़ा तिसमें से वहांका कीड़ा जैसे बाहर निकल पृथिवी में पलोटै तैसे चेष्टा करताहुआ तिसके उपरान्तजो कुछ बाल्य अवस्था में पराधीनतासे दुःख होतेहैं तिनको भोगताहुआ ४० और हे गृध्र यौवनादिक अवस्थाओं में ये दुःख होते हैं तिनको तुम जानतेही हौ औ सब जगह प्रसिद्ध भी हैं इससे मैंने नहीं वर्णन किये ४१ इसप्रकार करके मैं देहहौं यह अभ्यासते और मैं करनेवालाहौं इस आग्रहते निरय गर्भ वासादि दुःख होते हैं ४२ ॥

तस्माद्देहद्वयादन्यमात्मानंप्रकृतेःपरम् ॥ ज्ञात्वादेहादिममतांत्यक्त्वात्मज्ञानवान्भवेत् ४३ जाग्रदादिविनिर्मुक्तंसत्यज्ञानादिलक्षणम् ॥ शुद्धम्बुद्धंसदाशांतमात्मानमवधारयेत् ४४ चिदात्मनिपरिज्ञा

तेनष्टेमोहेऽज्ञसंभवे ॥ देहःपततुप्रारब्धकर्मवेगेनतिष्ठतु ४५ योगिनो नहिदुःखंवासुखंवाज्ञानसंभवम् ॥ तस्माद्देहेनसहितोयावत्प्रारब्धसंक्षयः ४६ तावत्तिष्ठसुखेनत्वंधृतकंचुकसर्पवत् ॥ अन्यद्वक्ष्यामितेपक्षिन्शृणुमेपरमंहितम् ४७ त्रेतायुगेदाशरथिर्भूत्वानारायणोऽव्ययः रावणस्यवधार्थायदंडकानागमिष्यति ४८ सीतयाभार्ययासार्द्धं लक्ष्मणेनसमन्वितः ॥ तत्राश्रमेजनकजांभ्रातृभ्यांरहितेवने ४९ ॥

तिससे स्थूल सूक्ष्मदोनों देहोंसे न्यारा और प्रकृति से पर अपना स्वरूप आत्माको जान करके देहादिकों में ममताको त्यागिकै आत्मज्ञानयुक्त पुरुष होय ४३ और जाग्रदादि अवस्थासे रहित और सत्यज्ञानादिहै स्वरूप जिसका और शुद्ध और बुद्धनाम निर्मलज्ञानस्वरूप और सदाशान्त ऐसे आत्मा का सदा ध्यानकरे ४४ और चिदात्मस्वरूप जाने सन्ते और अविद्यासे उत्पन्न हुआ जो अहंममतारूप मोहतिसके नाशहुये पीछे प्रारब्ध कर्मके वेगकरके देह चाहे गिरपड़ै अर्थात् छूट जावे चाहे स्थित रहे ४५ क्योंकि ज्ञानी को शरीर के त्यागमें दुःखनहीं और रहनेमें भी न दुःख न सुख जिससे सुखदुःख ये दोनों अज्ञानसे उत्पन्न हुयेहैं तिसकारणसे जबतक प्रारब्ध कर्मका क्षय नहीं होताहै तबतक देह करके सहित ज्ञानी सुखपूर्वकस्थित रहताहै इसका आशय यह है कि जैसे जबतक सर्प्प को अपनी कञ्चुली के त्यागका समय नहीं आवता है तबतक धारणहीकिरे रहताहै और जब त्याग का समय होताहै तब त्यागभी देताहै परन्तु सर्पको कंचुकके रहनेमें और त्यागदेने में कुछ हर्षशोक नहींहोता तैसे ज्ञानीको भी शरीरका रहना और छूटजाना बराबरही है ४६ तिससे हे गीध जबतक तेरा प्रारब्ध कर्म है तबतक तू भी धारणकरी है कंचुली जिसने ऐसे सर्प के तुल्य स्थितरहु और हे पक्षिन् और भी तुम्हारा हित वर्णन करता हौं तिसको श्रवणकरो ४७ त्रेतायुगमें विनाशरहित नारायण दशरथके पुत्रहोके दण्डकबनमें सीता जो अपनी भार्यातिस करके सहित और लक्ष्मण करके सहित रावणकेबधके लिये आवैंगे ४८ तहां रामलक्ष्मण करके रहित आश्रम में सीताको रावणचोरकी तरह हरके लंकापुरी में स्थापन करैगा ४९ ॥

रावणश्चोरवन्नीत्वालंकायांस्थापयिष्यति ॥ तस्याःसुग्रीवनिर्देशाद्वानराःपरिमार्गणे ५० आगमिष्यंतिजलधेस्तीरंतत्रसमागमः ॥ त्वयातैःकारणवशाद्भविष्यतिनसंशयः ५१ तदासीतास्थितिन्तेभ्यः कथयस्वयथार्थतः ॥ तदैवतवपक्षौद्वावुत्पत्स्येतेपुनर्नवौ ५२ संपातिरुवाच ॥ बोधयामासमांचंद्रनामामुनिकुलेश्वरः ॥ पश्यंतुपक्षौमेजा

तौनूतनावतिकोमलौ ५३ स्वस्तिवास्तुगमिष्यामिसीतांद्रक्ष्यथनिश्चयम् ॥ यत्नंकुरुध्वंदुर्लंघ्यसमुद्रस्यविलंघने ५४ यन्नामस्मृतिमात्रतोऽपरिमितंसंसारवारांनिधिंतीर्त्वागच्छतिदुर्जनोऽपिपरमंविष्णोःपदंशाश्वतम् ॥ तस्यैवस्थितिकारिणस्त्रिजगतांरामस्यभक्ताःप्रियाः यूयंकिंनसमुद्रमात्रतरणे शक्ताःकथं वानराः ५५ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किंधाकाण्डेऽष्टमस्सर्गः ८ ॥

फिर सुग्रीवकी आज्ञासे तिससीताके ढूंढनेको वानरआवैंगे ५० फिरकिसी कारण वशसे समुद्रके तीर तिन वानरोंका तुम्हारे साथ मिलाप होगा इसमें कुछ संशय नहीं है ५१ तब उन वानरोंसे सीताजहां स्थितहै सो सब वृत्तान्त जैसा कुछ है तैसा यथार्थ कहना फिर उसीसमयमें तुम्हारे दोनोंपंख नवीन अति कोमल उत्पन्न होजावेंगे ५२ तब सम्पाति वानरोंसे कहि रहाहै कि हे कपीश्वरो चन्द्र नाम करके मुनि मुखसे सब वृत्तान्त इसप्रकार कहते हुये सो तुमसबदेखौ कि सीताकी खबर तुमको सुनातेही मेरे दोनों पंख नवीन और अति कोमल निकलि आयेहैं ५३ इससे हेवानरो तुम्हारा कल्याण होय और मैं अब जाताहौं और तुम निश्चय करके सीताको देखौगे परन्तुदुःख करके उल्लंघन करनेके योग्य जो समुद्र तिसके पार जानेको यत्नकरिये ५४ जिस राम नामके स्मरण मात्र करके दुर्जन पुरुष भी जिसका कुछ प्रमाणही नहीं ऐसे संसाररूप समुद्रको पारहो सनातन विष्णुलोकको प्राप्त होताहै तिसतीनों लोककी उत्पत्ति पालन संहार करनेवाले रामकेप्यारे भक्त जे वानर तुमसबसे प्रत्यक्ष लघु समुद्रके पार होनेको क्यासमर्थ नहींहौ अर्थात् समर्थही हौ ५५ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किन्धाकाण्डेभाषाटीकायामष्टमःसर्गः ८ ॥

गतेविहायसागृध्रराजेवानरपुंगवाः ॥ हर्षेणमहताविष्टाःसीतादर्शनलालसाः १ ऊचुःसमुद्रंपश्यन्तोनक्रचक्रभयंकरम् ॥ तरंगादिभिरुन्नद्धमाकाशमिवदुर्ग्रहम् २ परस्परमवोचन्वैकथमेनंतरामहे ॥ उवाचचांगदस्तत्रशृणुध्वंवानरोत्तमाः ३ भवन्तोत्यन्तबलिनःशूराश्चकृतविक्रमाः ॥ कोवाऽत्रवारिधिंतीर्त्वाराजकार्य्यंकरिष्यति ४ एतेषांवानराणांसःप्राणदातानसंशयः ॥ अतोत्तिष्ठतुमेशीघ्रं पुरतोयोमहाबलः ५ वानराणांचसर्वेषांरामसुग्रीवयोरपि ॥ सएवपालकोभूयान्ना

अकार्याविचारणा ६ इत्युक्तेयुवराजेनतूष्णींवानरसैनिकाः ॥ आसन्नो चुःकिंचिदपिपरस्परविलोकिनः ७ ॥

दो० । जाम्बवान के वचनसुनि वेगिपवनसुत वीर ॥
नवमसर्ग बहुरूपधरि गयोजलधि के तीर १

अब महादेवजी पार्वतीसे कथा वर्णनकरै हैं हे पार्वति जब आकाशमार्ग करके गीधोंका राजा सम्पाति चलागया तब सब वानर श्रेष्ठ सीताके दर्शनकी लालसाकरके बडे हर्षकरके युक्त होतेहुये १ अब नक्रको आदि लेके जलचरों के समूहकरके भयंकर और तरंगोंकरके ऊपरको बढ़ताहुआ और जैसे आकाश कोई न पकड़सके ऐसे पारजानेको अशक्य २ ऐसे समुद्रको सबवानर देखके परस्पर वचन बोलतेहुये कि इससमुद्रको कैसे हम तरेंगे तब अंगद बोलतेहुये कि हे वानरों में श्रेष्ठ वानरो तुम मेरे वचन सुनो ३ तुम सब अत्यन्त बलवान् हो और शूरहो और पराक्रम भी तुमने बहुत किये हैं तुम सबोंमें से कौनसा समुद्रकेपारजाके राजाका कार्य करैगा ४ इनसब वानरोंका वही प्राणोंकादेने वाला होगा इसमें कुछ सन्देह नहीं है इससे भाई जो महाबली होय सो मेरे आगे उठे ५ सब वानरोंका और राम सुग्रीवका भी वही रक्षाकरनेवालाहोगा इसमें कुछ विचारकरना नहीं ६ ऐसे जब अंगदने वचनकहे तब जितने वानर थे तेसब मौनहो परस्पर देखतेहुये कुछ नहीं बोलतेहुये ७ ॥

अंगदउवाच ॥ उच्यतांवैबलंसर्वैःप्रत्येकंकार्यसिद्धये ॥ केनवा साध्यतेकार्यंजानीमस्तदनन्तरम् ८ अंगदस्यवचःश्रुत्वाप्रोचुर्वीराः बलंपृथक् ॥ योजनानांदशारभ्यदशोत्तरगुणंजगुः ९ शतादर्वाग्जा म्बवांस्तुप्राहमध्येवनौकसाम् ॥ पुरात्रिविक्रमेदेवेपादम्भूमानलक्षण म् १० त्रिःसप्तकृत्वोऽहमगांप्रदक्षिणविधानतः ॥ इदानींवार्द्धकग्र स्तोनशक्नोमिविलंघितुम् ११ अंगदोऽप्याहमेगंतुंशक्यंपारंमहोद धेः ॥ पुनर्लंघनसामर्थ्यंनजानाम्यस्तिवानवा १२ तमाहजाम्बवान्वी रस्त्वंराजानोनियामकः॥नयुक्तन्त्वांनियोक्तुंमेत्वंसमर्थोऽसियद्यपि १३ अंगदउवाच ॥ एवंचेत्पूर्ववत्सर्वेस्वप्स्यामोदर्भविष्टरे ॥ केनाऽपिन कृतंकार्यंजीवितुंचनशक्यते १४ ॥

तब फिर अंगद कहताहुआ कि इसकार्यकी सिद्धिकेलिये एकएक अपना अपना बलकहो फिर तिसके अनन्तर यह जानाजायगा कि किसकरके यह कार्य सिद्ध होनाहै ८ अब यह अंगदका वचन सुनिकै वीर अपना अपना न्यारा

न्यारा बल दशयोजनसेलेके दशदश अधिक संख्यामें कहतेहुये ९ अर्थात् किसी वानरनेकहा में दशयोजन जासक्ताहौं फिर दूसरेनेकहा मैं बीसयोजन जासक्ता हौं इसप्रकार सौयोजन के भीतरही सबनेकहा जाम्बवान्ने तौ कहा मैं नब्बे योजन जासक्ताहौं और वानर जाम्बवान् की संख्याको भी नहीं पहुँचे और जाम्बवान् यह कहताहुआ कि पहिले वामनजीके अवतारमें जब वामनजीने एक पैगसे सब पृथिवी नापी तब मैं वामनजी के चरणकी प्रदक्षिणा करने चला १० तौ इक्कीस प्रदक्षिणा मैंनेकी अर्थात् सबपृथिवी की इक्कीस प्रदक्षिणा की और इससमय में तौ वृद्धावस्थासे ग्रस्त होरहाहौं इससे समुद्रकेपार सौ योजन जानेको नहीं समर्थहौं ११ तब अंगदनेकहा कि समुद्र के पारजानेकी तौ मेरी सामर्थ्य है फिर लौटिआनेको सामर्थ्य है किंवा नहीं है यह मैं नहीं जानताहौं १२ तब जाम्बवान् वीर अंगदसेबोला कि तुम हमारे राजाहौ हम को आज्ञाकरनेवालेहौ इससे यद्यपि तुम समर्थ भी हौ परन्तु हम तुमको नहीं भेजसक्ते हैं १३ तब अंगद कहताहुआ कि जब ऐसाहै तब हम सब पहिले की तरह कुशा बिछाके उनके ऊपर शयनकरैंगे अर्थात् अनशन व्रतकरके मरिजावैंगे जब किसीने कार्य न किया तौ कैसे जीवने को समर्थ होसके हैं १४ ॥

तामाहजाम्बवान्वीरोदर्शयिष्यामितेसुत ॥ येनास्माकंकार्यसिद्धिर्भविष्यत्यचिरेणच १५ इत्युक्त्वाजाम्बवान्प्राहहनूमंतमवस्थितम् ॥ हनूमन्किंरहस्तूष्णींस्थीयतेकार्यगौरवे १६ प्राप्तेज्ञैनेवसामर्थ्यंदर्शयाद्यमहाबल ॥ त्वंसाक्षाद्वायुतनयोवायुतुल्यपराक्रमः १७ रामकार्यार्थमेवत्वंजनितोसिमहात्मना॥जातमात्रेणतेपूर्वंदृष्ट्वोद्यंतंविभावसुम् १८ पक्वंफलंजिघृक्षामीत्युत्प्लुतंबालचेष्टया ॥ योजनानांपंचशतंपतितोसिततोभुवि १९ अतस्त्वद्बलमाहात्म्यंकोवाशक्नोतिवर्णितुम् ॥ उत्तिष्ठकुरुरामस्यकार्यंनःपाहिसुव्रत २० श्रुत्वाजाम्बवतोवाक्यंहनूमानतिहर्षितः ॥ चकारनादंसिंहस्यब्रह्माण्डंस्फोटयन्निव २१ ॥

तब फिर जाम्बवान् अंगद से बोले कि हे पुत्र उसको अब तुमको दिखलावता हौं जिसकरके हमारे सबके कार्यकी सिद्धि शीघ्रही होगी १५ ऐसा अंगदसे कहिकै जाम्बवान् एकान्तमें बैठे जो हनुमान् तिनसे बोलतेहुये कि हे हनुमन् ऐसे बड़ेभारी कार्य में तुम कैसे एकान्तमें मौनहुये बैठेहौ १६ हे महाबल इससमयमें अपनी सामर्थ्य दिखाइये तुम साक्षात् वायुके पुत्रहौ अर्थात् पवनके पुत्रहौ और पवनके तुल्यहै पराक्रम जिसका ऐसे तुमहौ १७ और राम के कार्यकी सिद्धि के अर्थ महात्मा जो पवन तिसने तुमको उत्पन्न कियाहै औ

जब तुम उत्पन्न हुयेथे तभी सूर्यको उदयहोते देखके १८ यह पकाहुआ फल है मैं ग्रहणकरूं ऐसी बुद्धि करके पांचसै योजन ऊपर कूदकर गमन करतेहुये फिर पृथिवीमें गिरपड़े १९ इससे तुम्हारे बलके माहात्म्यको कौन वर्णन करनेको समर्थ है इससे सुव्रत शोभन है ब्रह्मचर्य्य व्रत जिसका ऐसे तुमहौ सो उठौ और रामके कार्यको करौ और हम सबकी रक्षाकरौ २० यह जाम्बवान् के वचन सुनिकै हनुमान् अत्यन्त प्रसन्नहो ब्रह्माण्ड मानों फोड़ते सिंहवत् गर्जते हुये २१ ॥

बभूवपर्वताकारस्त्रिविक्रमइवापरः ॥ लंघयित्वाजलनिधिंकृत्वालंकांचभस्मसात् २२ रावणंसकुलंहत्वाऽऽनेष्येजनकनंदिनीम् ॥ यद्वाबध्वागलेरज्ज्वारावणंवामपाणिना २३ लंकांसपर्वतांधृत्वारामस्याग्रेक्षिपाम्यहम् ॥ यद्वादृष्ट्वैवयास्यामिजानकींशुभलक्षणाम् २४ श्रुत्वाहनूमतोवाक्यंजाम्बवानिदमब्रवीत् ॥ दृष्ट्वैवागच्छभद्रन्तेजीवंतींजानकींशुभा २५ पश्चाद्रामेणसहितोदर्शयिष्यसिपौरुषम् ॥ कल्याणंभवताद्भद्रगच्छतस्तेविहायसा २६ गच्छन्तंरामकार्यार्थंवायुस्त्वामनुगच्छतु ॥ इत्याशीर्भिःसमामंत्र्यविसृष्टःप्लवगाधिपैः २७ महेंद्राद्रिशिरोगत्वाबभूवाद्भुतदर्शनः २८ महानगेन्द्रप्रतिमोमहात्मासुवर्णवर्णोऽरुणचारुवक्त्रः ॥ महाफणीन्द्राभसुदीर्घबाहुर्वातात्मजोऽदृश्यत सर्वभूतैः २९ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किन्धाकाण्डे नवमःसर्गः ९ ॥

पर्वतके आकार होतेहुये जैसे बामनजीने अपना स्वरूप बढ़ाया होयऐसे प्रतीयमान होतेहुये अर्थात् सबने जाना और यह कहतेहुये कि समुद्रको उल्लंघन करके और लंकाको भस्म करके २२ और कुल सहित रावणको मारिकै सीताको लै आवोंगा अथवा रावणको रस्ससे गले में बांधके और बायेंहाथसे २३ पर्वतके सहित लंकाको धारण करके रामके आगे स्थापन करोंगा अथवा सीताके ले आनेकी रामकी आज्ञानहीं इससे शुभहै लक्षण चिह्न व स्वरूप जिसका ऐसी सीताको देखके आवौंगा २४ यह हनुमान् का वचन सुनिकै जाम्बवान् यह वचन बोलतेहुये हे हनुमन् जीवती हुई सीताको केवल देखही करके आजावो २५ तिसकेपीछे रामकरके सहित अपना पराक्रम दिखाओगे और हे कल्याणरूप जिस समयमें आकाशमार्ग करके तुम गमन करौ उस स-

मयमें तुम्हारा कल्याणहोय २६ और रामकार्य करनेको जातेहुये तुम्हारे पीछे पवन चलै ऐसे आशीर्वाद करके हनुमान् को युक्त करके वानरों के स्वामियों करके आज्ञाको प्राप्त जो हनुमान् २७ सो महेन्द्र पर्वतके शिखर पै जाकर अद्भुत दर्शन जिसका ऐसा होताहुआ २८ बड़ेभारी पर्वतके तुल्य और सुवर्ण कासा है गौरवर्ण जिसका और लालहै सुन्दरमुख जिसका और शेष तुल्यहै लम्बी- भुजा जिसकी ऐसा जो पवनकापुत्र महात्मा सो सब भूतोंकरके देखागया २९ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किन्धाकाण्डे भाषाटीकायांनवमस्सर्गः ९ ॥

समाप्तोऽयंकिष्किन्धाकाण्डः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ अध्यात्मरामायण ॥

सुन्दरकाण्ड ॥

भाषा टीकासहित ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ शतयोजनविस्तीर्णंसमुद्रंमकरालयम् ॥ लिलंघयिषुरानंदसंदोहोमारुतात्मजः १ ध्यात्वारामंपरात्मानमिदंवचनमब्रवीत् ॥ पश्यंतुवानराःसर्वेंगच्छंतंमांविहायसा २ अमोघंरामनिर्मुक्तंमहाबाणमिवाखिलाः ॥ पश्याम्यद्यैवरामस्यपत्नींजनकनंदिनीम् ३ कृतार्थोऽहंकृतार्थोऽहंपुनःपश्यामिराघवम् ॥ प्राणप्रयाणसमयेयस्यनामसकृत्स्मरन् ४ नरस्तीर्त्वाभवांभोधिमपारंयातितत्पदम् ॥ किंपुनस्तस्यदूतोऽहंतदंगांगुलिमुद्रिकः ५ तमेवहृदयेध्यात्वालंघयाम्यल्पवारिधिम् ॥ इत्युक्त्वाहनुमान्बाहूप्रसार्य्यायतबालधिः ६ ऋजुग्रीवोर्ध्वदृष्टिःसन्नाकुंचितपदद्वयः ॥ दक्षिणाभिमुखस्तूर्णंपुप्लुवेऽनिलविक्रमः ७ ॥

दो० । सुरसाजीति समुद्र के पारगये हनुमान ॥
पुनि लंकाजीती पुरी प्रथमसर्गकरिमान १

अब श्रीमहादेवजी पार्वती से कथा वर्णन करते हैं हे पार्वति आनन्द का समूह जिसके हृदय में भराहुआहै और सौ योजन समुद्रकेपारहोनेकी इच्छा जिसको ऐसा जो हनुमान् १ सो परमात्मा जो राम तिनका ध्यानकरिकै यह कहताहुआ कि आकाशमार्गकरिकै चलताहुआ जो मैंहौं तिसको सबवानर २ जैसे रामका अमोघ बाण जाता होय तैसे देखैं और मैं अभी रामकी पत्नी जो सीता तिसको देखौंगा ३ फिर जगत् की माताके दर्शनकरिकै कृतार्थ जो मैं सो रामको देखौंगा मरणसमयमें जिस रामके नामको एकबार भी स्मरण करिकै ४ अपार जो संसाररूपी समुद्र तिसको पारहोके उसके लोकको मनुष्य प्राप्त होता है तिन रामकादूत और तिनकी मुद्रिका को लियेहुये ५ और ति-

न्ही रामको हृदयमें ध्यानकरिकै इस छोटेसे समुद्रको नांघि जाऊँगा यह क्या कहनाहै यह कहिकै बड़ी है पूँछ जिसकी ऐसा जो हनुमान सो अपनीभुजाओं को फैलाकै ६ और सीधी है ग्रीवा गर्दन जिसकी और ऊपरहै नेत्रों की दृष्टि जिसकी और समेटिलिये हैं दोनों पांव जिसने और पवन के तुल्य है गति जिसकी ऐसा जो हनुमान सो दक्षिण दिशा के सम्मुख होकै शीघ्रही उस पर्वत से कूदता हुआ ७ ॥

आकाशात्त्वरितंदेवैर्वीक्ष्यमाणोजगामसः ॥ दृष्ट्वाऽनिलसुतंदेवागच्छंतंवायुवेगतः ८ परीक्षणार्थंसत्वस्यवानरस्येदमब्रुवन् ॥ गच्छत्येपमहासत्वोवानरोवायुविक्रमः ९ लंकांप्रवेष्टुंशक्तोवानवाजानीमहेवलम् ॥ एवंविचार्यनागानांमातरंसुरसाभिधाम् १० अब्रवीद्देवतावृन्दःकौतूहलसमन्वितः ॥ गच्छत्वंवानरेंद्रस्यकिंचिद्विघ्नंसमाचर ११ ज्ञात्वातस्यवलंबुद्धिःपुनरेहित्वरान्विता ॥ इत्युक्तासाययौशीघ्रंहनुमद्विघ्नकारणात् १२ आवृत्यमार्गंपुरतःस्थित्वावानरमब्रवीत् ॥ एहिमेवदनंशीघ्रंप्रविशस्वमहामते १३ देवैस्त्वंकल्पितोभक्षःक्षुधासंपीडितात्मनः ॥ तामाहहनूमान्मातरहंरामस्यशासनात् १४ ॥

अब आकाश में स्थित होकै देवताओं करिकै देखागया जो हनुमान सो जारहाहै और पवन के वेगकरिकै जाताहुआ जो हनुमान् तिसको देवतालोग देखिकरिकै ८ हनुमान् के वलकी परीक्षा के अर्थ यह वचन बोलतेहुये कि वड़ा है वल जिसमें और पवनकीसी जिसकी गतिहै ऐसा जो वानर जारहा है ९ सो लंकामें प्रवेश करनेको समर्थ है अथवा नहीं है यह जाननेको इसका वल हम जानैंगे ऐसे देवतालोग विचारकरिकै सुरसा है नाम जिसका ऐसी जो नागोंकी माता तिससे १० आश्चर्य युक्तहो कहतेहुये कि हे सुरसे तुम जावो और इस हनुमान्का कुछ विघ्न करो ११ तिसका वल और बुद्धि जानिके फिर शीघ्रही आवो ऐसे देवताओंकरिकै भेजीहुई जो वह सुरसा सो हनुमान्के विघ्नके कारण से शीघ्र जातीहुई १२ हनुमान् के आगे मार्गको रोंक खड़ी होकै यह कहतीहुई कि हे वानर हे श्रेष्ठमते तुम आके मेरे मुखमें प्रवेश करो १३ क्योंकि मैं भूखकरिकै वड़ी पीड़ित होरहीहौं सो आजु तुम्हीं मेरा भोजन होउगे यह देवतों ने रचरक्खा है १४ ॥

गच्छामिजानकींद्रष्टुंपुनरागस्यसत्वरः ॥ रामायकुशलंतस्याःकथयित्वात्वदाननम् १५ निवेक्ष्येदेहिमेमार्गंसुरसायैनमोऽस्तुते ॥

इत्युक्त्वापुनरेवाहसुरसाक्षुधितास्म्यहम् १६ प्रविश्यगच्छमेवक्त्रंनो चेत्त्वांभक्षयाम्यहम् ॥ इत्युक्तोहनुमानाहमुखंशीघ्रंविदारय १७ प्रविश्यवदनंतेऽद्यगच्छामित्वरयान्वितः ॥ इत्युक्त्वायोजनायामदेहोभूत्वा पुरःस्थितः १८ दृष्ट्वाहनूमतोरूपंसुरसापंचयोजनम् ॥ मुखंचकारहनुमान्द्विगुणंरूपमादधत् १९ ततश्चकारसुरसायोजनानांचविंशतिम् ॥ वक्त्रंचकारहनुमांस्त्रिंशद्योजनसम्मितम् २० ततश्चकारसुरसापंचाशद्योजनायतम् ॥ वक्त्रंतदाहनूमांस्तुबभूवांगुष्ठसन्निभः २१॥

तब हनुमान् उससे बोलतेहुये कि हेमातः मैं रामकी आज्ञासे सीताकेदेखनेको जाताहौं सीताको देखिकै फिर शीघ्रही लौटिकै सीताकी खबरि रामसे कहिकै तेरे मुखमें प्रवेशकरौंगा १५ इससे मुझको मार्ग दे और सुरसानामहै जिसका तिसके अर्थ नमस्कार है ऐसा जब हनुमान्ने कहा तौ सुरसाबोली कि मैं भूखीहौं १६ इससे मेरे मुखमें प्रवेश करके तुम जावो नहीं तौ मैं तुझको भक्षण करतीहौं तब हनुमान् ने कहा कि अपनामुख फैलाओ १७ तेरे मुखमें प्रवेशकरके फिर शीघ्रही मैं जाऊंगा ऐसा कहिकै हनुमान् योजन भरे का लंबा शरीर धारण कर अगाड़ी खड़ेहोतेहुये १८ तब सुरसा हनुमान् के रूपको देखके पांचयोजनका मुख करतीहुई तौ हनुमान् दशयोजन रूपकरतेहुये १९ तब सुरसा बीस योजनका मुखकरती हुई तब हनुमान् तीस योजनका रूप धारण करते हुये २० तब सुरसा पचास योजनका मुखकरती हुई तब तौ हनुमान् अंगूठेके तुल्यलघुरूपहोकर २१ ॥

प्रविश्यवदनंतस्याःपुनरेत्यपुरःस्थितः ॥ प्रविष्टोनिर्गतोऽहंतेवदनंदेवितेनमः २२ एवंवदंतंदृष्ट्वासाहनूमंतमथाऽब्रवीत् ॥ गच्छसाधयरामस्यकार्यंबुद्धिमतांवर २३ देवैःसंप्रेषिताहंतेबलंजिज्ञासुभिःकपे ॥ दृष्ट्वासीतांपुनर्गत्वारामंद्रक्ष्यसिगच्छभो २४ इत्युक्त्वासाययौ देवलोकंवायुसुतःपुनः ॥ जगामवायुमार्गेणगरुत्मानिवपक्षिराट् २५ समुद्रोऽप्याहमैनाकंमणिकांचनपर्वतम् ॥ गच्छत्येषमहासत्त्वोहनूमान्मारुतात्मजः २६ रामस्यकार्य्यसिध्यर्थंतस्यत्वंसाचिवोभव ॥ सगरैर्वर्द्धितोयस्मात्पुराहंसागरोभवम् २७ तस्यान्वयेवभूवासौरामोदाशरथिःप्रभुः ॥ तस्यकार्यार्थसिध्यर्थंगच्छत्येषमहाकपिः २८ ॥

सुरसाके मुखमें प्रवेशकरिकै फिर उसके अगाड़ीस्थित होतेहुये और यह कहा कि हे देवि तेरे मुख में प्रविष्ट हुआ मैं और फिर बाहर भी निकलिआया

और तेरे अर्थ नमस्कार है २२ ऐसे कहता हुआ जो हनुमान् तिसको सुरसा देखके वचन बोलतीहुई कि हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ तुम जाओ और रामके कार्य को सिद्ध करिये २३ और हे वानर तुम्हारे बलकी परीक्षा करतेहुये जो देवता तिन करके भेजी हुई मैं प्राप्त हुई अर्थात् अपनी इच्छासे नहीं आई हौं और तुम सीताको देखके फिर रामको देखोगे इससे अबजाओ २४ यह कहिकै वह सुरसा देवलोक को जाती हुई और पवनके पुत्र हनुमान् फिर पवन के वेग करके गरुड़ के समान जाते हुये २५ अब समुद्र भी मणि और सुवर्ण इनके शृंगहैं जिसके अर्थात् मणि सुवर्ण केहैं शिखर जिसके ऐसा जो मैनाक पर्वत तिससे कहताहुआ कि यह महाबली पवनका पुत्र हनुमान् जारहाहै २६ राम के कार्य के सिद्धिके अर्थ तिस हनुमान् के विश्राम को देके सहाय करनेवाले होउ क्योंकि पहिले सगरके पुत्रों करके बढ़ायाहुआ जो मैं सो सागर नाम करके होता हुआ २७ तिस सगरके वंशही में दशरथ के पुत्रराम होतेहुये तिस रामके कार्य की सिद्धिके अर्थ यह वानरजाताहै इससे इसका सहाय करना चाहिये २८ ॥

त्वमुत्तिष्ठजलात्तूर्णंत्वयिविश्राम्यगच्छतु ॥ सतथेतिप्रादुरभूज्जलमध्यान्महोन्नतः २९ नानामणिमयैश्शृंगैस्तस्योपरिनराकृतिः ॥ प्राहयांतंहनूमंतंमैनाकोऽहंमहाकपे ३० समुद्रेणसमादिष्टस्त्वद्विश्रामायमारुते ॥ आगच्छामृतकल्पानिजग्ध्वापक्कफलानिमे ३१ विश्राम्यात्रक्षणंपश्चाद्गमिष्यसियथासुखम् ॥ एवमुक्तोऽथतंप्राहहनुमान्मारुतात्मजः ३२ गच्छतोरामकार्यार्थंभक्षणंमेकथंभवेत् ॥ विश्रामोवाकथंमेस्याद्गंतव्यंत्वरितंमया ३३ इत्युक्त्वास्पृष्टशिखरःकराग्रेणययौकपिः ॥ किंचिद्दूरंगतस्यास्यछायांछायाग्रहोऽग्रहीत् ३४ सिंहिकानामसाघोराजलमध्येस्थितासदा ॥ आकाशगामिनांछायामाक्रम्याकृष्यभक्षयेत् ३५ ॥

सो जल से शीघ्रही तुम उठौ और तुम्हारे ऊपर हनुमान् विश्राम करके जायँ ऐसे समुद्रके कहतेही जल के मध्यसे बड़ा ऊंचा मैनाक पर्वत प्रकट होता हुआ २९ और नानाप्रकार की मणियों के शृंगोंकरके बड़ा ऊँचा जो मैनाक पर्वत तिसके ऊपर मनुष्यकारूप धारणकरे वह मैनाक पर्वतही जाते हुये हनुमान् से बोला कि हे हनुमन् मैं मैनाक पर्वतहौं ३० और तुम्हारे विश्राम के लिये समुद्रकरके आज्ञा कियागया हौं इससे तुम आओ और अमृत केतुल्य पके फलोंको मेरे ऊपर भोजन करके ३१ और क्षणमात्र विश्राम

करके फिर सुखपूर्वक जाओगे ऐसा जब मैनाक पर्वतने वचनकहा तौ हनुमान् कहताहुआ कि ३२ रामके कार्य के अर्थ जाताहुआ जो मैंहौं तिसको भोजन और विश्रामका अवसर कहां है क्योंकि मुझको शीघ्रही जानाहै ३३ यहकहिकै और अपने हाथसे उसके शिखरको स्पर्शकरके हनुमान् जातेहुये जब कुछ दूर हनुमान् गये तब सिंहिका नाम जो राक्षसी सो हनुमान् की छाया को पकड़लेतीहुई ३४ क्योंकि वह सिंहिकानाम घोर राक्षसी सदा जलमें रहती थी और जेकोई आकाशमें जानेवाले पक्षी आदि प्राणी उसमार्गकरके जातेथे उनकी छायाको पकड़के और उनपक्षियोंको खैंचिकै भक्षण करलेतीथी ३५॥

तयागृहीतोहनुमांश्चिंतयामासवीर्यवान्॥ केनेदंमेकृतंवेगरोधनं विघ्नकारिणा ३६ दृश्यतेनैवकोऽप्यत्रविस्मयोमेप्रजायते ॥ एवंवि चिंत्यहनुमानधोदृष्टिंप्रसारयत् ३७ तत्रदृष्ट्वामहाकायांसिंहिकांघोररू पिणीम्॥ पपातसलिलेतूर्णंपद्भ्यामेवाहनद्रुषा ३८ पुनरुत्प्लुत्यहनु मान्दक्षिणाभिमुखोययौ॥ततोदक्षिणमासाद्यकूलंनानाफलद्रुमम् ३९ नानापक्षिमृगाकीर्णंनानापुष्पलतावृतम्॥ ततोददर्शनगरंत्रिकूटाच लमूर्द्धनि ४० प्रकारैर्बहुभिर्युक्तंपरिखाभिश्चसर्वतः ॥ प्रवेक्ष्यामिक थंलंकामितिचिंतापरोभवत् ४१ रात्रौवेक्ष्यामिसूक्ष्मोऽहंलंकांरावण पालिताम्॥ एवंविचिंत्यतत्रैवस्थित्वालंकांजगामसः ४२॥

तब उस राक्षसी करके छायाकेद्वारा पकड़ाहुआ जो बड़ाबली हनुमान् सो विचार करताहुआ कि किस विघ्नकारीने मेरीगति रोंकिली ३६ और पकड़ने वाला कोइ दिखलाई देता नहीं यह मुझको बड़ा आश्चर्य होरहाहै ऐसे हनु- मान् विचारकरके नीचेको निगाह करताहुआ ३७ तहां बड़ाहै स्वरूप जिसका ऐसी भयंकर रूपवाली सिंहिका राक्षसीको देखके जलके भीतर हनुमान् जाके क्रोधकरके पांवोंसेही उसको मारतेहुये ३८ फिर आकाशमार्ग में उछलकरके हनुमान् दक्षिणदिशाके सम्मुखहोके जातेहुये तिसके अनन्तर हनुमान् अनेक प्रकार के फलोंकरकेयुक्त वृक्षोंकरके शोभित ३९ और अनेकप्रकारके पक्षियों के समूहकरके व्याप्त और अनेक प्रकार के पुष्पोंकी लताओंकरके वेष्टित स- मुद्रके दक्षिण तटको प्राप्तहोके त्रिकूट पर्वतके शिखरपै नगरको देखतेहुये ४० अब इसके उपरान्त त्रिकूट पर्वत के ऊपर जिस लंकापुरीको हनुमान् देखते हुये सो लंका कैसी है बहुत से शहरपनाहोंकरके युक्त है अर्थात् लंकापुरी में बहुत किले हैं तिनकी दीवारोंकरके वेष्टित है और बहुतसी खाइयों करके युक्त है ऐसी लंकाको देखिकै इसलंकापुरी में मैं कैसे प्रवेशकरौं ऐसा विचारकरते

हुये ४१ तब हनुमान् यह निश्चयकरतेहुये कि लघुरूप धारणकर रावणकरके रक्षाकीहुई जो लंका तिसमें रात्रिको प्रवेश करौंगा ऐसा चिन्तन करके दिन तौ नगरके बाहरही व्यतीत हुआ ४२ ॥

धृत्वासूक्ष्मंवपुर्द्वारंप्रविवेशप्रतापवान् ॥ तत्रलंकापुरीसाक्षाद्राक्षसीवेषधारिणी ४३ प्रविशंतंहनूमंतंदृष्ट्वालंकाव्यतर्ज्जयत् ॥ कस्त्वंवानररूपेणमामनादृत्यलंकिनीम् ४४ प्रविश्यचोरवद्रात्रौकिम्भवान्कर्तुमिच्छति ॥ इत्युक्त्वारोषताम्राक्षीपादेनाभिजघानतम् ४५ हनुमानपितांवाममुष्टिनावज्ञयाहनत् ॥ तदैवपतिताभूमौरक्तमुद्वमतीभृशम् ४६ उत्थायप्राहसालंकाहनूमंतंमहाबलम् ॥ हनूमन्गच्छभद्रंतेजितालंकात्वयानघ ४७ पुराहंब्रह्मणाप्रोक्ताह्यष्टाविंशतिपर्य्यये ॥ त्रेतायुगेदाशरथीरामोनारायणोऽव्ययः ४८ जनिष्यतेयोगमायासीताजनकवेश्मनि ॥ भूभारहरणार्थायप्रार्थितोयंमयाक्वचित् ४९ ॥

और जब रात्रिहुई तौ हनुमान् छोटासारूप अर्थात् बिल्ली के समानरूप धारणकरके लंकाके द्वारमें प्रवेश करतेभये तहां साक्षात् लंकापुरीही अर्थात् उस नगरी की देवी राक्षसीकारूप धारणकरके ४३ प्रवेश करता हुआ जो हनुमान् तिसका तिरस्कार करतीहुई और यह बोली कि तुम कौनहौ जो वानर का रूप धारणकर लंकिनी नाम करके जो मैं हूँ तिसका अनादर करके जाते हो ४४ और चोरकी तरह रात्रिमें प्रवेश करके क्या कियाचाहते हो ऐसा कहिकै क्रोध करके लाल हुयेहैं नेत्र जिसके ऐसी जो राक्षसी सो पांव करके हनुमान् को ताड़न करती हुई और हनुमान् भी उसको बायें हाथके घूँसे करके मारते हुये ४५ उसी समय में वह राक्षसी मुखसे रुधिरका का वमन करती हुई पृथिवी में गिरपड़ती भई ४६ तब वह लङ्का उठकरके महाबली जो हनुमान् तिससे बोलती हुई कि हे हनुमन् तुम्हारा कल्याण होय और तुम जावो और तुमने लंका जीती ४७ और पहिले मुझसे ब्रह्माजीने यह कहा कि अट्ठाईसवां त्रेतायुग जब आवैगा तौ अविनाशी नारायणही दशरथका पुत्र राम रूपकरके प्रकटहोगा ४८ और उसकी योगमाया जनकके गृहमेंसीता नाम करके होगी सो पृथिवीके भारके हरण के अर्थ मुझ करके प्रार्थना किया गया जो राम ४९ ॥

सभार्य्योराघवोभ्रात्रागमिष्यतिमहावनम् ॥ तत्रसीतांमहामायांरावणोपहरिष्यति ५० पश्चाद्रामेणसाचिव्यंसुग्रीवस्यभविष्यति ॥ सुग्रीवोजानकींद्रष्टुंवानरान्प्रेषयिष्यति ५१ तत्रैकोवानरोरात्रावागमि

ष्यतितेंऽतिकम् ॥ त्वयाचभर्त्सितःसोऽपित्वांहनिष्यतिमुष्टिना ५२ तेनाहतात्वंव्यथिताभविष्यसियदानघे ॥ तदैवरावणस्यान्तोभविष्यतिनसंशयः५३ तस्मात्त्वयाजितालंकाजितंसर्वंत्वयानघ॥ रावणान्तःपुरवरेक्रीड़ाकाननमुत्तमम् ५४ तन्मध्येऽशोकवनिकादिव्यपादपसंकुला॥अस्तितस्यांमहावृक्षःशिंशपानाममध्यगः५५ तत्रास्तेजानकीघोरराक्षसीभिःसुरक्षिता ॥ दृष्ट्वैवगच्छत्वरितंराघवायनिवेदय ५६ ॥

सो कभी सीता और लक्ष्मण करके सहित बनको जावेंगे फिर वहां तिनकी स्त्री जो सीता तिनको रावण हरैगा ५० तिसके पीछे रामके साथ सुग्रीवकी मित्रताहोगी तब सुग्रीव सीताके देखनेको बानरोंको भेजैगा ५१ तिनमें एक बानर रात्रिमें तेरे समीप आवैगा फिर तुझ करके तिरस्कारको प्राप्त वह वानर तुझको घूंसे से मारैगा ५२ फिर तिस करके ताड़नाकीगई तू जब अत्यन्त व्यथाको प्राप्तहोगी तभी रावणका नाशहोगा इसमें कुछ सन्देह नहीं है ५३ तिससे हे हनुमन् अब तुमने लंका जो मैंहूं तिसको जीतनेसे सबहीको जीतलिया और रावणके पुरमें एक क्रीड़ावनहै ५४ तिसके मध्यमें दिव्य वृक्षों करके संयुक्त अशोक बनिकाहै उस अशोक बनिकाके बीचमें भी एक शिंशपाका वृक्षहै अर्थात् सीसमका वृक्षहै ५५ उस वृक्षके नीचे घोर राक्षसियों करके रक्षाकीगई सीता रहती हैं तिनको देखके शीघ्रही आवो और फिर रामचन्द्रको खबर सुनावो ५६ ॥

धन्याहमप्यद्यचिरायराघवस्मृतिर्ममासीद्भवपाशमोचनी ॥ तद्भक्तसंगोऽप्यतिदुर्लभोममप्रसीदतांदाशरथिःसदाहृदि ५७ उल्लंघितेऽब्धौपवनात्मजेनधरासुतायाश्चदशाननस्य ॥ पुस्फोरवामाक्षिभुजश्चत्रीब्रंरामस्यदक्षांगमतीन्द्रियस्य ५८ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेसुन्दरकाण्डे प्रथमःसर्गः १ ॥

और इस समयमें मैं भी धन्यहौं जिससे बहुत कालमें अब मुझको रामका स्मरण होताहुआ और अति दुर्लभ रामके भक्तका संग भी मुझको हुआ इससे अब श्रीराम मेरे हृदयमें स्थितहो सदा प्रसन्नहोइँ ५७ जिस समयमें हनुमान् समुद्रके पारहुये उस समयमें सीता और रावण इनका तो वामा नेत्र और बाईं भुजा फरकती हुई और रामका दक्षिण नेत्र और दक्षिण भुजा फरकतीहुई और यद्यपि इन्द्रियों के शुभाशुभ फलोंसे राम परहैं तौ भी

देवतों के शुभके कहने वाले रामका दक्षिण अंग फरकता हुआ ५८ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेसुन्दरकांडे
भाषाटीकायांप्रथमस्सर्गः १ ॥

ततोजगामहनुमान्लंकांपरमशोभनाम्॥रात्रौसूक्ष्मतनुर्भूत्वाबभ्रा मपरितःपुरीम् १ सीतान्वेषणकार्यार्थीप्रविवेशनृपालयम् ॥ तत्रसर्वप्रदेशेषुविविच्यहनुमान्कपिः २ नापश्यज्जानकींस्मृत्वाततोलंकाभिभाषितम् ॥ जगामहनुमाञ्छीघ्रमशोकवनिकांशुभाम् ३ सुरपादपसंबाधांरत्नसोपानवापिकाम् ॥ नानापक्षिमृगाकीर्णांस्वर्णप्रासादशोभिताम् ४ फलैरानम्रशाखाग्रपादपैःपरिवारिताम् ॥ विचिन्वन्जानकींतत्रप्रतिवृक्षंमरुत्सुतः ५ ददर्शाभ्रलिहंतत्रचैत्यप्रासादमुत्तमम् ॥ दृष्ट्वाविस्मयमापन्नोमणिस्तम्भशतान्वितम् ६ समतीत्यपुनर्गत्वाकिंचिद्दूरंसमारुतिः ॥ ददर्शशिंशपावृक्षमत्यंतनिबिडच्छदम् ७ ॥

दो० । सर्ग दूसरे पवनसुत सीता खोजत बीर ॥
देखिराक्षसीवृन्दमेंछिपोलताजिमिकीर १

अब श्रीमहादेवजी पार्वतीजी से कथा वर्णन करते हैं कि हेपार्वति तिसके अनन्तर हनुमान् परमशोभन जो लंका तिसमें जातेभये और छोटासा शरीर धारणकर चारोंतरफसे लंकामें घूमते भये १ फिर सीताके ढूंढनेके अर्थ रावण के गृह में प्रवेश करतेहुये तहां सब जगह हनुमान् सीताको ढूंढ़ करके २ भी कहीं नहीं जब सीताको देखा तब जो लंकापुरी ने अशोकवनिका में सीता को बतलाया था उस बातको स्मरणकर हनुमान् शीघ्रही अशोक वनिका को जातेहुये ३ अशोकवनिका उसे कहते हैं जिस बगीचे में केवल स्त्रीजन ही विहारकरें और मनुष्य जहां कोई भी न जानेपावें कैसी वह अशोकवनिकाहै जहांअनेक कल्पवृक्षोंके समूहहैं और रत्नोंकी सीढ़ी जिन्होंमें होवें ऐसी जहांबावली हैं और नानाप्रकारके पक्षी और मृग जिसमें बास कररहे हैं और चारों तरफ से सुवर्ण की दीवार करके शोभित है ४ और फलों करके लचे हैं शाखाओं के अग्रभाग जिन्हों के ऐसे वृक्षों करके आच्छादित है उस अशोकवनिका में एकएक वृक्ष के नीचे सीताको हनुमान् ढूंढ़ते हुये ५ फिर उसी अशोकवनिका में बड़ाऊंचा एक किसी देवताका मन्दिर देखतेहुये जो कि सैकड़ों मणियों के खंभाओं करके युक्तहै तिसको देखके हनुमान् आश्चर्य युक्त हुये ६ फिर उसको उल्लंघन करके कुछ दूर हनुमान् जाके अत्यन्त सघन जिसके पत्ते हैं ऐसे एक शिंशपाके वृक्षको देखतेहुये ७ ॥

अदृष्टातपमाकीर्णस्वर्णवर्णविहंगमम् ॥ तन्मूलेराक्षसीमध्येस्थितांजनकनंदिनीम् ८ ददर्शहनुमान्वीरोदेवतामिवभूतले ॥ एकवेणींकृशांदीनांमलिनाम्बरधारिणीम् ९ भूमौशयानांशोचंतींरामरामेतिभाषिणीम् ॥ त्रातारंनाधिगच्छंतीमुपवासकृशांशुभाम् १० शाखांतच्छदमध्यस्थोददर्शकपिकुंजरः ॥ कृतार्थोऽहंकृतार्थोऽहंदृष्ट्वाजनकनंदिनीम् ११ मयैवसाधितंकार्यंरामस्यपरमात्मनः ॥ ततःकिलकिलाशब्दोबभूवांतःपुराद्बहिः १२ किमेतदितिसंलीनोवृक्षपत्रेषुमारुतिः ॥ आयांतंरावणंतत्रस्त्रीजनैःपरिवारितम् १३ दशास्यंविंशतिभुजंनीलांजनचयोपमम् ॥ दृष्ट्वाविस्मयमापन्नोपत्रखण्डेष्वलीयत् १४ ॥

और जिस वृक्षकेनीचे कहीं घामनहीं दिखाई पड़ताहै और सुवर्ण कासा वर्ण जिन्होंका ऐसे पक्षियों करके व्याप्तहै उस वृक्षके जड़के समीप राक्षसियों के बीचमें बैठी ८ हुई जैसे कोई स्वर्ग से आके पृथिवीमें देवता स्थित हो तैसे हनुमान् सीताको देखतेहुये कैसी सीताहैं जिनके बालोंकी एकजटा सी बँध रही है ऐसे एक जूड़ेको धारण करे हैं और अति दुर्बल और दुःख संयुक्तहैं और मैले वस्त्रोंको धारण करे हैं ९ और पृथिवी में शयन कररही हैं और शोच रही हैं और राम राम यह शब्दको कहिरही हैं और किसी रक्षा करनेवाले को नहीं प्राप्त होती हैं और उपवास करने से अतिदूबर होरही हैं और अपने दर्शन से कल्याण के देनेवाली हैं १० ऐसीसीताको वृक्षके पत्तोंमें छिपा हुआ हनुमान् देखताहुआ और सीताको देखिके मैं कृतार्थ हुआ यह कहता हुआ ११ और परमात्मा जो राम तिनका मैंनेही कार्य सिद्ध किया ऐसा मानता हुआ तिसके उपरान्त बड़ाभारी शब्द रावणके महलसे प्रकट होता हुआ १२ तब हनुमान्ने कहा यह हौरा कहांसे होरहाहै इसको जानना चाहिये इस हेतुसे और भी पत्तों में लुकाय रहा तबतक स्त्रियाओंकरके सहित रावणको आते देखता हुआ १३ दश तौ जिस रावणके मुखहैं और बीस भुजाहैं और नील अंजनका जैसा पर्वत हो तैसाहै तिसकोदेखके बड़े आश्चर्य युक्त हनुमान् उस वृक्षके पत्तों के समूह में छिपताहुआ १४ ॥

रावणोराघवेणाशुमरणंमेकथंभवेत् ॥ सीतार्थमपिनायातिरामः किंकारणंभवेत् १५ इत्येवंचिंतयन्नित्यंराममेवसदाहृदि ॥ तस्मिन्दिनेपररात्रौरावणोराक्षसाधिपः १६ स्वप्नेरामेणसंदिष्टःकश्चिदागत्यवानरः ॥ कामरूपधरःसूक्ष्मोवृक्षाग्रस्थोऽनुपश्यति १७ इतिदृ

ह्यद्भुतंस्वप्नंस्वात्मन्येवानुचिंत्यसः ॥ स्वप्नःकदाचित्सत्यःस्यादेवं तत्रकरोम्यहम् १८ जानकींवाक्शरैर्विध्वादुःखितांनितरामहम् ॥ करोमिदृष्ट्वारामायनिवेदयतुवानरः १९ इत्येवंचिंतयन्सीतासमीपमगमद्द्रुतम् ॥ नूपुराणांकिंकिणीनांश्रुत्वाशिंजितमंगना २० सीताभीतालीयमानास्वात्मन्येवसुमध्यमा ॥ अधोमुख्यश्रुनयनास्थिता रामार्पितांतरा २१ ॥

अब रावण यह विचार करताहुआ कि रामके हाथसे मेरी मृत्यु कैसेहोय देखो सीताके अर्थभी रामनहीं आते इसमें क्या कारणहै १५ इसप्रकार सदा हृदय में रामहीका चिन्तन कररहाहै उसीदिन भुरही राति में रावणस्वप्न देखताहुआ १६ कि रामका भेजाहुआ एक बानर आके सूक्ष्म रूप धारण कर वृक्षमें छिपाहुआ देखरहाहै १७ ऐसा अद्भुतस्वप्न रावण देखके अपने मनमें विचार करताहुआ कदाचित् स्वप्न सत्यही होय अर्थात् कोई वानर आके उस वृक्षमें छिपा हुआ देखताही होय तो यह करौंगा १८ कि सीताको वचनरूपी बाणोंकरकेताडन करके अतिदुःखित करौंगा जिससे वह वानर देखिके रामसे कहै १९ यह चिन्तन करके सीताके समीप शीघ्रही जाताहुआ तब रावण के संग बहुतसी स्त्रियां जो रहीं तिनके पांवों के आभूषण जो बिछुवे पायजेब आदि और कमरका जो बजना आभूषण इन्होंके शब्द को २० सीता सुनिकै भयभीतहो अपने शरीरही में समिटरही है और नीचेको मुखकररोदन कर रही है और भीतरसे रामहीका ध्यान करतीहुई स्थितहोतीभई २१ ॥

रावणोऽपितदासीतामालोक्याहसुमध्यमे ॥ मान्दृष्ट्वाकिंवृथासुक्षुस्वात्मन्येवविलीयसे २२ रामोवनचराणांहि मध्येतिष्ठतिसानुजः ॥ कदाचिद्दृश्यतेकैश्चित्कदाचिन्नैवदृश्यते २३ मयातुबहुधालोकाः प्रेषितास्तस्यदर्शने ॥ नपश्यन्तिप्रयत्नेन वीक्ष्यमाणाःसमन्ततः २४ किंकरिष्यसिरामेण निस्पृहेणसदात्वयि ॥ त्वयासदालिङ्गितोऽपि समीपस्थोऽपिसर्वदा २५ हृदयेस्यनचस्नेहस्त्वयिरामस्यजायते ॥ त्वत्कृतान्सर्वभोगांश्चत्वद्गुणानपिराघवः २६ भुंजानोऽपिनजानाति कृतघ्नोनिर्गुणोऽधमः ॥ त्वमानीतामयासाध्वी दुःखशोकसमाकुला २७ इदानीमपिनायाति भक्तिहीनःकथंव्रजेत् ॥ निःसत्वोनिर्ममोमानी मूढःपण्डितमानवान् २८ ॥

तब रावण भी सीताको देखके बोला कि हे सीते मुझको देखके किस वा-

स्ते अपने शरीरहीमें छिप रही है वृथा २२ और लक्ष्मण सहितराम तो वन-वासियों के मध्य में स्थितहोरहा है सो कभी किसी को दिखलाई देताहै कभी नहीं २३ और मैंने तो बहुत से दूत रामके देखने को भेजे सो किसी को नहीं दिखाई दिया इससे नहीं मालूम पड़ता कि राम है कि नहीं २४ और जो कहीं हो भी तो कभी तेरी खबर भी नहीं लेता ऐसे प्रीतिरहित रामके संग क्याकरैगी और जब तेरे समीप रामरहा तो तूने आलिंगन भी किया सब काल तौ भी २५ राम के हृदय में तेरा स्नेह कुछ भी नहीं है और तेरे कारण से हुये जो भोग हैं और तेरे गुण तिनको २६ भोगताभी है परन्तु नहीं जानताहै ऐसा राम कृतघ्नहै और निर्गुण है और अधम है और पतिव्रता और दुःख शोककरके युक्त ऐसी जो तूहै तिसको मैं लेभी आया २७ और राम देखो अभी नहीं आता क्योंकि जो भक्ति हीन है सो कैसे आवे अर्थात् जो रामकी तेरे में प्रीति होती तो अवश्य आवता और पराक्रम करके हीन और तेरे में ममताभी जिसकी नहीं है और बड़ा गर्वयुक्त है और है तो मूढ़ परन्तु अपना को बड़ा पंडित मान रहाहै २८ ॥

नराधमन्त्वद्विमुखंकिंकरिष्यसिभामिनि ॥ त्वय्यतीवसमासक्तंमां भजस्वासुरोत्तमम् २९ देवगन्धर्वनागानांयक्षकिन्नरयोषिताम् ॥ भविष्यसिनियोक्त्रीत्वंयदिमाम्प्रतिपद्यसे३०रावणस्यवचःश्रुत्वासीता मर्षसमन्विता ॥ उवाचाधोमुखीभूत्वानिधायतृणमन्तरे ३१ राघवाद्विभ्यतानूनम्भिक्षुरूपन्त्वयाधृतम् ॥ रहितेराघवाभ्यान्त्वंशुनीवहविरध्वरे ३२ हृतवानसिमान्नीचतत्फलम्प्राप्स्यसेऽचिरात् ॥ यदाराम शराघातविदारितवपुर्भवान्३३ज्ञास्यसेमानुषंरामंगमिष्यसियमांतिकम् ॥ समुद्रंशोषयित्वावाशरैर्बध्वाथवारिधिम् ३४ हंतुंत्वांसमरेरामो लक्ष्मणेनसमन्वितः॥आगमिष्यत्यसन्देहोद्रक्ष्यसेराक्षसाधम ३५ ॥

और हे भामिनि मनुष्यों में अधम और तुझसे विमुख अर्थात् तेरेमें प्रीति-रहित ऐसे रामको प्राप्तहोके क्या करैगी इससे तेरे बिषे अत्यन्त प्रीतियुक्त और असुरों में श्रेष्ठ ऐसा जो मैंहौं तिसका तू सेवन करु २९ और जो तू मुझको प्राप्तहोगी तौ देवता और गन्धर्व और यक्ष और किन्नर इनके स्त्रियोंकी सबकी आज्ञा करने वाली होगी अर्थात् तू इन सबोंकी मालिक होगी ३० अब यहां साढे छःश्लोकों करके रावणने रामकी निन्दा भी की है परन्तु इन्हीं श्लोकोंका और गुप्त दूसरे अर्थ करके सरस्वती वास्तवमें स्तुतिही करती है

तब तो इन श्लोकोंका यह आशय युक्त अर्थहै कि रावणने जो यह कहा कि राम वनवासियों के संग रहाकरता है और कभी दिखाई देताहै कभी नहीं तिसका यह आशय है वनवासी लोग संन्यासी अथवा योगी हुये जिनका कुछ ग्रामसे और संसारी मनुष्योंसे कुछ प्रयोजनही नहीं है ऐसे वनवासियों के संग राम जो परमात्मा सो रहताहै यद्यपि सब प्राणियोंके हृदयमें स्थितहोनेसे सबहीके संग परमेश्वर रहताहै तौ भी मूढ़ पुरुषोंको अविद्याके कारणसे दरिद्र पुरुषकी निधिकी तरह समीप नहीं जाना जाता इससे उनकी दृष्टिमें जैसे कोई कड़ोरोंकोस दूरहोय तैसे होरहाहै इसीसे उनकी अनृतभाषणादि पापोंसे निवृत्ति नहीं होती और जैसे दरिद्री पुरुषके घरही में खजाना गड़ा है और वह उसको नहीं जानता है तौ अन्न वस्त्रसे व्याकुलहो घरघर मारामारा फिरता है तो वह धन उसके समीपभीहै परन्तु बिनाजाने दूर सरीखाहोरहाहै ऐसे राम सबके पासही है और बिनाजाने दूरसरीखा होरहाहै इससे सब के संगहै भी और नहीं सरीखा होरहाहै और ज्ञानीलोग तौ सदा और सब जगह रामको छोड़िके और वस्तुको सत्यकरके देखतेही नहीं केवल रामहीको देखतेहैं इस आशयसे कहा राम वनवासियोंकेसंग रहताहै औ योगियोंको भी कभी समाधिमें प्रतीतहोता है कभी नहीं इसीसे नारदजीकोदासी पुत्रावस्था में समाधिमें एकबार रूपदिखाके फिर नहीं दिखाया यह कथा श्रीमद्भागवत के प्रथमस्कन्धमें प्रसिद्ध है इस आशयसे कहा राम कभी नहीं दिखाई देते हैं और जो रावणने कहा कि मैंने अपनेदूत बहुतसे रामके देखनेको भेजे उन्होंने कहा रामको नहीं देखा उसका आशय यहहै कि लोक शब्द करके यहां इन्द्रिय और इन्द्रियोंके देवताग्रहण कियेजाते हैं क्योंकि जिसकरके देखै अथवा जिसकरके जानाजाय वहभी व्याकरण की रीतिसे लोकशब्दका अर्थहोता है तब रावण यह कहता है कि मैंने अपने देवतोंकरके सहित मन बुद्धि इन्द्रियों को रामजो परमात्मा तिसके देखने में बहुतेरा प्रवृत्त किया और इन सबोंने यत्नभी किया परन्तु ये कोई नहीं रामको देखसके क्योंकि राम बुद्धिसे भी परे हैं उसको रजोगुण युक्त मेरी इन्द्रियां कैसे देखसकें और रावणने सीतासे यह कहा कि तेरीइच्छा नहीं करता हुआ ऐसा जो राम तिस करके तू क्या करैगी तिसका आशय यह है कि राम तो आत्मारामहै सिवाय अपने आत्मासे और पदार्थ में उसकी स्वभावहीसे रति नहीं और सीताहै प्रकृतिरूपिणी फिर उस में उसकी प्रीति कैसे होसक्ती है और जो रावणने कहा कि तुझ करके आलिंगन भी किया गयाहै और तेरे समीप भी स्थितहै तौभी तेरे में रामका स्नेह नहीं होता इसका भी आशय जो कहि आये हैं वोही है क्योंकि शक्ति और श-

क्तिमान्के अभेदसे सदा परमात्मा शक्तिकरके आलिंगितकी तरह भी और समीप भी स्थितहै परन्तु आत्मारामहोनेसे आप्त कामहै इससे बाह्य पदार्थों में उसका स्नेह नहीं और शक्तिकी प्रतीति तौ कार्य द्वाराही होती है और परमेश्वरकी शक्तिका कार्यहुआ सारा जगत् तौ जो परमेश्वरका जगत्में स्नेह होय तौ प्रकृतिरूप शक्तिमें भी स्नेहजानाजाय सो कभी जीवकी तरह परमेश्वरका होताही नहीं इससे रावणने कहा कि तुझमें रामका स्नेह नहींहोता है और जो रावणने कहा कि तेरे कियेहुये जो सब भोग और तेरे गुणातिनको राम भोगता भी है और नहीं जानताहै कि मैंने कोई भोगा इसीसे कृतघ्नहै और निर्गुणहै और अधमहै इसका आशययहहै कि जितने भोगकरने के योग्य बिषयहैं ते सब बुद्धिकी वृत्तियों करके समीप प्राप्त कियेगये हैं इससे मायिकहैं तिन विषयोंको और सुख दुःखादि संकल्प जे बुद्धिके गुणहैं तिनकोभोगताहैतौ भी राममें भोग करनेवाला हौं ऐसा नहीं मानता अभिमान नहीं है इसकारण से इसीसे कियेहुये कर्मोंका नाश करनेवालाहै इससेकृतघ्न नामहै अथवाभक्तों के कियेहुये जो कर्म हैं तिनको ज्ञानरूपी अग्निको प्रकटकरके भस्म करनेवाला है इससे कृतघ्नकहते हैं कुछ किसीके कियेहुये उपकारको न मानै इससे परमेश्वरका नाम कृतघ्ननहीं है और राम निर्गुणहैं सच्चिदानन्द स्वरूप होने से और जब मायाही की शक्ति उसके आगे स्थितहोनेकी नहीं है तौ उसके गुणों के सम्बन्धकी क्यावार्त्ता है और धर्मजोशब्द है तिसकरके प्रतिपादनकरनेको अशक्यहै बाणीके अगोचर होनेसे इससे राम अधमहै कुछ नीचहोनेसे अधम लोकमें कोईहोताहै तैसानहीं है और जोरावणने कहा कि पतिव्रता और दुःख शोककर युक्त जो तू तिसको मैं लेभीआया तौभीतेरी रक्षाकरनेको अभीतक नहीं आवता क्योंकि तेरे में प्रीतिहीनहै कैसेआवै और रामपराक्रमकरके हीन और ममत्वहीन है और गर्वयुक्तहै औरहै तौ मूढ़ और अपनाकोपण्डित मान रहाहै इसका यह आशयहै कि रावणने तपसे ब्रह्माको प्रसन्नकरके ब्रह्माके प्रसाद से सब लोक वशमें किये यह बात प्रसिद्धहै तहां ब्रह्मा सब प्रकृतिकार्य जगत् का स्वामी है औरसीता प्रकृतिरूपिणीहै औरपरमेश्वरजो रामतिसकी शक्तिहै और सदारामहीके आधीनरहतीहैं और सबदेव उसके आधीनहैं औरसब जगत् सीताका स्वरूप है तब ब्रह्मा के वरसे रावणने जगत् को वशकियायही सीताका कार्य द्वाराले आनाहुआ और रावण के अन्याय से सबलोग दुःखित रहे यही सीताका दुःख शोकयुक्त होनाहुआ और परमेश्वर आप्तकाम होने से किसी संसार के विषयमें प्रीति नहीं करताहै यही सीतामें स्नेहरहित होना हुआ और व्यापक परमात्माका आनाजाना नहीं संभव होताहै इससे राम न-

आया यह कहनाभी ठीकहीहै परंतुयहां इतनी तौ रावणकी मूढ़ताहैजोसीता को अपनेसुखसे पतिव्रता कहिकै फिर कहताहै कि राम तेरीरक्षाकरनेकोअभी नहीं आवता क्योंकि सब जगत्का कारण ब्रह्मादि देवतों की अधीश्वरी और परमेश्वरकी शक्तिरूप जब सीताजीने लंकामें प्रवेश किया तब क्या रामको आवना बाकीरहा जब क्या शक्ति और शक्तिमान्का अभेदसर्वसंमतहै तौराम सीतासेअलगनहीं रहसके और सीतारामसे जुदीनहीं रहसकी इसीसे सीता हनुमान्के द्वारालंकाकोभस्म करैगी और सबराक्षसोंका पराजय औरजो राम और सीताअलगदिखाई पड़तेहैंसोकथा भागकी संगतिके लिये वास्तवमेंकुछ भेद नहीं है और यद्यपिरामका प्रकृतिकार्य जो शब्दादिक विषय तिनमें स्नेह नहींहै तौभी सीताका राममेंअनन्य प्रेमहै और रामके भावसे रामरूपही सीता होरही है तौ ऐसी सीतामें रामकाभी प्रेम होनेमें कुछ रामकी आत्मारामता का भंग नहीं होसक्ता और निःसत्त्वशब्दका अर्थ पराक्रम हीन नहीं है उसका अर्थ यह है कि सब प्राणियों के भावसे जो ईश्वर होने से न्याराहोय सो निःसत्त्व कहिये ऐसा रामहै और इसीसे किसी में उसकी ममता नहीं है अर्थात् नित्य मुक्त स्वरूप है और भक्तोंका सम्मान सत्कार करने वालाहै इससे उसका नाम मानी है कुछ गर्वयुक्तका यहां अर्थ नहीं है और ऐसा भी है तौभी मूढ़ जो बालक तिसके तुल्य निरभिमानहै और पण्डित लोगोंका किया जो सत्कार तिसके सेवन करनेवालाहै और जो रावण ने कहा कि राम नराधम है और तुझसे विमुखहै तिस करके तू क्याकरैगी तिसका अर्थ यह है कि मनुष्यहै अधम जिससे सो कहिये नराधम अर्थात् सब मनुष्योंमें उत्तमहै और सुन्दरताई में तेरेसेभी विशिष्टश्रेष्ठ मुखारविन्द जिसका ऐसा जो राम है तिसके संग कौनसी अपनी श्रेष्ठताको प्रकट करैगी अब इस प्रकारसे रावण के कहे हुये निन्दाके वचनों करके भी दूसरे अर्थ करके सरस्वती रामकी स्तुति ही करती हुई सो आशय यथामति वर्णन कियागया ३० + और प्रसिद्धतामें तौ रावणके वचन कठोरही हैं तिनको सुनिकै सीता क्रोध युक्तहोके और नीचेको मुखकरके और तृणको बीचमें करके रावणसे वचन बोलतीहुई पतिव्रता स्त्री साक्षात् पर पुरुषसे वार्त्ता नहीं करती है इसभावसे तृणको मध्यमें किया अथवा रावण रामके आगे तृणके समानहै यह सूचन करने को तृणको आगे किया ३१ अरे नीच रामसे डरानेहुये तूने संन्यासीका रूप धारण किया फिर जब राम और लक्ष्मण कोई न थे ऐसे शून्यस्थानमें जैसे कुत्ता यज्ञके भागको लैके भागे ३२ ऐसे मुझको जो हरताहुआ तिसके फल को शीघ्रही प्राप्तहोगा जब रामके बाणोंकरके तेराशरीर विदारण किया जायेगा ३३ तब

रामको जानैगा कि ऐसे मनुष्य हैं और यमराजके समीप भी जायगा और राम बाणों करके समुद्र को सुखायकर अथवा समुद्रका सेतुबँधवाकर ३४ हे राक्षसोंमें अधम लक्ष्मण करके युक्त रामतेरे मारने को आवैंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं और तू देखैगा ३५ ॥

त्वांसपुत्रंसहबलं हत्वानेष्यतिमांपुरम् ॥ श्रुत्वारक्षःपतिःक्रुद्धोजानक्याःपरुषाक्षरम् ३६ वाक्यंक्रोधसमाविष्टःखड्गमुद्यम्यसत्वरः ॥ हन्तुञ्जनकराजस्यतनयान्ताम्रलोचनः ३७ मन्दोदरीनिवार्याहपतिंपतिहितेरता ॥ त्यजैनांमानुषींदीनांदुःखितांकृपणांकृशाम् ३८ देवगन्धर्वनागानांबह्व्यःसन्तिवरांगनाः ॥ त्वामेववरयंत्युच्चैर्मदमत्तविलोचनाः ३९ ततोऽब्रवीद्दशग्रीवोराक्षसीर्विकृताननाः ॥ यथामेवशगासीताभविष्यतिसकामना ॥ यथायतध्वंत्वरितंतर्जनादरणादिभिः ४० द्विमासाभ्यन्तरेसीतायदिमेवशगाभवेत् ॥ तदासर्वसुखोपेताराज्यंभोक्ष्यतिसामया ४१ यदिमासद्वयादूर्ध्वमच्छय्यांनाभिनन्दति ॥ तदामेप्रातराशायहत्वाकुरुतमानुषीम् ४२ ॥

और पुत्र और सेनाकरके सहित तुझको राम संग्राममें मारकर मुझको अपने नगरको ले जावैंगे ३६ अब रावण सीताके ऐसे कठोर बचन सुनिकै बडा क्रोध करताहुआ और शीघ्रही सीताके मारने को खड्ग निकालताहुआ और क्रोध करके जिसके लालनेत्र होरहे हैं ३७ तब रावणके हितमें तत्पर मन्दोदरी जो रावणकी स्त्री सो रावण को निवारण करके बोलती हुई कि हे स्वामिन् बड़ी दुःखित और दीन और दुर्बल ऐसी जो मानुषी सीता तिसको त्यागदेवो ३८ और कामदेवके मद करके घूमरहेहैं नेत्र जिन्होंके ऐसी बहुत सी देव और गंधर्व और नागोंकी कन्या तुम्हाराही सबप्रकारसे स्वीकार करतीहैं तौ तुम्हारी नहीं इच्छा करतीहुई जो मानुषी सीता तिससे तुम्हारा क्या प्रयोजन है ३९ तब भयंकर है मुख जिनका ऐसी जो राक्षसी तिनसे रावण कहता हुआ कि जैसे मेरेमें कामना युक्त होकै सीता मेरे वशहोय तैसे तुम सब राक्षसी भय दिखाकर और अनेक प्रकारके सत्कार करके भी यत्नकरो ४० और इस प्रकार तुम्हारे यत्न करनेसे जो दो महीनेके भीतर सीता मेरेवशीभूत होगी ४१ तौ सब सुखों करके युक्तहोके मेरे संग राज्यको भोगैगी और जो दो महीने के अनन्तर मेरी शय्यापै नहीं आवै तौ मेरे प्रातःकाल के भोजनके लिये मारके इसके मांसका पाककरो ४२ ॥

इत्युक्त्वाप्रययौस्त्रीभीरावणोन्तःपुरालयम् ॥ राक्षस्योजानकीमेत्य

भीषयन्त्यःस्वतर्जनैः ४३ तत्रैकाजानकीमाहयौवनंतेवृथागतम् ॥ रावणेनसमासाद्यसफलन्तुभविष्यति ४४ अपराचाहकोपेनकिंविलंवेनजानकीम् ॥ इदानींछिद्यतामंगंविभज्यचपृथक्पृथक्४५ अन्यातुखड्गमुद्यम्यजानकींहन्तुमुद्यता ॥ अन्याकरालवदनाविदार्यास्यमभीषयत् ४६ एवंतांभीषयंतीस्ताराक्षसीर्विकृताननाः ॥ निवार्यत्रिजटावृद्धाराक्षसीवाक्यमब्रवीत् ४७ शृणुध्वंदुष्टराक्षस्योमद्वाक्यंवोहितम्भवेत् ४८ नभीषयध्वंरुदतींनमस्कुरुतजानकीम् ॥ इदानीमेवमेस्वप्नेरामःकमललोचनः ४९ ॥

यह कहिकै स्त्रियों करके सहित रावण अपने महलों को जाताहुआ जब रावण अपने गृहको चलागया तौ राक्षसी सीताके पास जाके अनेकयत्नों करके सीताको डरपातीहुई ४३ तिनमें एक राक्षसी सीतासे बोली कि तेरा यौवन योंहीं जाताहै इससे रावण से संग होय तौ सफल होजाय ४४ तब दूसरी राक्षसी क्रोध करके बोली कि अब देर करने से क्या प्रयोजनहै ४५ अभी इससीता को काटिकै और इसका अंग अलग अलग बांटिकै पकाना चाहिये और राक्षसी तौ तलवारि निकालिकै सीताको मारनेही को उद्यत हुई ४६ और भयंकरहै मुख जिसका ऐसी एक और राक्षसी तौ मुखको बा करके सीताको डरपाती हुई इसप्रकार सीताको डरपाती हुई जो भयंकर मुख की राक्षसीं तिनको त्रिजटा नाम राक्षसी निवारण करकेबोलती हुई ४७ कि हे दुष्ट राक्षसियो तुम सब मेरा बचनसुनो जिसमें तुम्हाराहित होवै ४८ रोवतीहुई सीताको मत भय उत्पन्न करो अर्थात् न डरपावो और इसको नमस्कार करो और मैंने इसीसमयमें स्वप्नदेखा है कि कमलके तुल्यविशाल हैं नेत्र जिन्होंके ऐसे जो लक्ष्मण सहित राम ४९ ॥

आरुह्यैरावतंशुभ्रंलक्ष्मणेनसमागतः ॥ दग्ध्वालङ्कांपुरींसर्वांहत्वारावणमाहवे ५० आरोप्यजानकींस्वांकेस्थितोहष्टोऽगमूर्द्धनि ॥ रावणोगोमयह्रदेतैलाभ्यक्तोदिगम्बरः ५१ आगाहत्पुत्रपौत्रैश्चकृत्वावदनमालिकाम् ॥ विभीषणस्तुरामस्यसन्निधौहृष्टमानसः ५२ सेवांकरोतिरामस्यपादयोर्भक्तिसंयुतः ॥ सर्वथारावणंरामोहत्वासकुलमंजसा ५३ विभीषणायाधिपत्यंदत्त्वासीतांशुभाननाम् ॥ अंकेनिधायस्वपुरींगमिष्यतिनसंशयः ५४ त्रिजटायावचःश्रुत्वाभीतास्ताराक्षसस्त्रियः ॥ तूष्णीमासंस्तत्रतत्रनिद्रावशमुपागताः ५५ तर्जिताराक्षसीभिःसासी

ताभीताऽतिविक्लवा ॥ त्रातारंनाधिगच्छन्तीदुःखेनपरिमूर्च्छिता५६॥
सो श्वेत वर्ण ऐरावत हाथी के ऊपर चढ़िकै आये हैं और सब लंकापुरी को भस्मकरके और पुत्र पौत्रादि सहित रावणको संग्राम में मारके ५० और सीताको अपनी गोद में बिठाकर पर्वतके ऊपर स्थितहोरहे हैं और रावणतैलको लगायेहुये और नग्न अपने मुण्डोंकी माला हाथमें लिये ५१ पुत्र पौत्र करके सहित गोबरके कुण्ड में गोता लगारहा है और धर्मात्मा जो विभीषण सो बड़े आनन्दयुक्त होके रामके समीप स्थित अर्थात् बैठाहुआ ५२ भक्तियुक्तहो रामके चरणारविन्दोंकी सेवा कररहाहै यह मेरे स्वप्नके देखनेसे सब प्रकारसे राम सकुल रावणको मारके ५३ और बिभीषणके अर्थ लंकाकाराज्य देकै सुन्दरहै मुख जिसका ऐसी सीताको लेकै अपनी नगरीको जावैंगे इसमें कुछ संशय नहीं है ५४ ये त्रिजटा के वचन सुनिकै भयभीतहुई सब राक्षसी मौन होजातीहुई और निद्राके आधीनहोतीहुई अर्थात् सो जातीहुई ५५ अब इस प्रकार राक्षसियों करके डरपाईहुई जो सीता सो भयकरके विह्वलहो किसी रक्षा करने वालेको नहीं देखती हुई दुःखकरके मूर्च्छितहोजातीहुई५६॥

अश्रुभिःपूर्णनयनाचिन्तयन्तीदमब्रवीत् ॥ प्रभातेभक्षयिष्यन्ति राक्षस्योमांनसंशयः । इदानीमेवमरणंकेनोपायेनमेभवेत् ५७ एवंसुदुःखेनपरिप्लुतासाविमुक्तकण्ठंरुदतीचिराय ॥ आलम्ब्यशाखांकृतनिश्चयामृतौनजानतीकञ्चिदुपायमंगना ५८ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेसुन्दरकाण्डे द्वितीयस्सर्गः २ ॥

और फिर आंसुओं करके पूर्णनेत्र जिसके ऐसी जो सीता सो चिन्तनकरतीहुई यह बचन बोली कि प्रातःकाल राक्षसी मुझको खालेवैंगी इसमें कुछ संशय नहीं ५७ और ऐसा कौन उपायहै जिससे इसीसमय में मेरामरणहोय इसप्रकार दुःखसे भरीहुई जो सीता सो कण्ठको खोलके बहुतकाल रोती हुई और वृक्षकी शाखा पकड़के स्थित जो सीता सो मरनेको निश्चयकर भी चुकी है परन्तु उससमयमें कोई उपाय नहीं जानती हुई ५८ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेसुन्दरकाण्डे भाषाटीकायांद्वितीयस्सर्गः २ ॥

उद्बन्धनेनवामोक्ष्येशरीरंराघवंविना ॥ जीवितेनफलंकिंस्यान्मम रक्षोधिमध्यतः १ दीर्घावेणीममात्यर्थमुद्बन्धायभविष्यति ॥ एवंनिश्चितबुद्धिंतांमरणायाथजानकीम् २ विलोक्यहनुमान्किञ्चिद्विचार्यै

तद्भाषत ॥ शनैःशनैःसूक्ष्मरूपोजानक्याःश्रोत्रगंवचः ३ इक्ष्वाकु वंशसंभूतोराजादशरथोमहान् ॥ अयोध्याधिपतिस्तस्यचत्वारोलो कविश्रुताः ४ पुत्रादेवसमास्सर्वेलक्षणैरुपलक्षिताः ॥ रामश्चलक्ष्म णश्चैवभरतश्चैवशत्रुहा ५ ज्येष्ठोरामःपितुर्वाक्याद्दण्डकारण्यमाग तः ॥ लक्ष्मणेनसहभ्रात्रासीतयाभार्ययासह ६ उवासगौतमीतीरेप ञ्चवट्याम्महात्मनाः ॥ तत्रनीतामहाभागासीताजनकनन्दिनी ७ ॥

दो० । सगतीलरे विकल अति सियकोलखिहनुमान् ॥
रामसन्देश सुनायतिहि मारे भट बलवान् १

अब श्रीमहादेव पार्वती से कथा कहते हैं कि हे पार्वति सीता उससमयमें यह विचारतीहुई कि रामके विना राक्षसियोंके बीचमें जीवन करके क्या होना इससे फांसी दे करके शरीरको छोंड़ देउंगी १ और मेरा जूड़ा बड़ा लम्बा है उस करके गलेका बन्धनभी होजायगा इसप्रकार मरनेको कियाहै निश्चय जिसने ऐसी सीताजीको २ हनुमान् देखके कुछ काल विचार करके सूक्ष्म है अर्थात् छोटाहै रूप जिसका ऐसा जो हनुमान् सो सीताके कानों में धीरे धीरे जैसे सुनाई देवे ऐसावचन बोलताहुआ ३ कि इक्ष्वाकुवंश में उत्पन्न अयोध्यानगरी का पति दशरथनामकरके बड़ा श्रेष्ठ एकराजा होताहुआ तिस राजादशरथ के लोकमें विख्यात ४ और शुभ लक्षणों करके युक्त और देवतों के समान चारिपुत्रहोतेहुये राम और लक्ष्मण और भरत और शत्रुघ्नहैं नाम जिन्हों के ५ तिनमें ज्येष्ठपुत्र जो राम सो पिताके वचनसे लक्ष्मणकरके और सीताकरके सहित दण्डकवनको आवतेहुये ६ तहां फिर गोदावरी नदी के तीर पंचवटी में उदारहै मनजिनका ऐसे जो राम सो वासकरते हुये ७ ॥

रहितेरामचन्द्रेणरात्रणेनदुरात्मना ॥ ततोरामोतिदुःखार्तोमार्ग माणोऽथजानकीम् ८ जटायुषम्पक्षिराजमपश्यत्पतितम्भुवि ॥ त स्मैदत्त्वादिवंशीघ्रंऋष्यमूकमुपागमम् ९ सुग्रीवेणकृतामैत्रीरामस्य विदितात्मनः ॥ तद्भार्याहारिणंहत्वाबालिनंरघुनन्दनः १० राज्येभि षेच्यसुग्रीवम्मित्रकार्यंचकारसः।सुग्रीवस्तुसमानाय्यवानरान्वानरप्र भुः ११ प्रेषयामासपरितोवानरान्परिमार्गणे ॥ सीतायास्तत्रचैकोऽ हंसुग्रीवसचिवोहरिः १२सम्पातिवचनाच्छीघ्रमुल्लंघ्यशतयोजनम्। समुद्रंनगरींलंकांविचिन्वन्जानकींशुभाम् १३ शनैरशोकवनिकांवि चिन्वन्शिंशपातरुम्॥अद्राक्षंजानकीमत्रशोचंतींदुःखसंप्लुताम् १४

तहां राम करके रहित पंचवटी में महाभाग जो सीता सो दुष्टात्मा जो रावण तिसने हरली तिसके उपरान्त अतिदुःख करके पीडित जो राम सो सीताको ढूंढतेहुये ८ पृथ्वी में गिरेहुये पक्षियों का राजाजो जटायु तिसको देखतेहुये फिर तिसको स्वर्गदेके शीघ्रही ऋष्यमूक पर्वतपै आतेहुये ९ फिर वहां रामकी सुग्रीवके साथ मित्रताहुई फिर श्रीराम सुग्रीवकी भार्य्याकाहरने वाला जो बालि तिसको मारिकै १० सुग्रीवको राज्यका अभिषेककरके मित्र के कार्य को करतेहुये फिर वानरोंका राजा सुग्रीव देशदेशते वानरोंको बुलाकर ११ तिनकोसीताके ढूंढनेकोभेजताहुआ तिन वानरोंमें एकसुग्रीवकामन्त्री हनुमान् १२ जोमैंहों सो संपातिके वचनसे सौयोजन समुद्रकोनांघकरके लंका नगरीमें शुभ लक्षणयुक्त सीताकोढूंढताहुआ १३ फिरधीरेधीरे अशोकवनिकामें ढूंढता हुआ सीसम के वृक्ष के नीचे दुःखित और शोचकरती हुई १४ ॥

रामस्यमहिषीन्देवींकृतकृत्योहमागतः ॥ इत्युक्तोपररामाथमारुतिर्बुद्धिमत्तरः १५ सीताक्रमेणतत्सर्वंश्रुत्वाविस्मयमाययौ ॥ किमिदम्मेश्रुतंव्योम्निवायुनासमुदीरितम् १६ स्वप्नोवामेमनोभ्रान्तिर्यदिवासत्यमेवतत् ॥ निद्रामेनास्तिदुःखेनजानाम्येतत्कुतोभ्रमः १७ येनमेकर्णपीयूषंवचनंसमुदीरितम् ॥ सदृश्यताम्महाभागःप्रियवादीममाग्रतः १८श्रुत्वातज्जानकीवाक्यंहनुमान्पत्रखंडतः ॥ अवतीर्यशनैःसीतापुरतःसमवस्थितः १९ कलविंकप्रमाणांगोरक्तास्यःपीतवानरः ॥ ननामशनकैःसीतांप्रांजलिःपुरतःस्थितः २० दृष्ट्वातञ्जानकीभीता रावणोऽयमुपागतः ॥ मांमोहयितुमायातोमाययावानराकृतिः २१ ॥

रामकी रानी जो सीता देवी तिसको देखताहुआ फिर देखके कृतकृत्यहोगया इतना वचन कहिकरिकै बड़ा बुद्धिमानजो हनुमान् सो चुपहोगया १५ अब सीता क्रमकरके सब हनुमान्का वचन सुनिकै बड़े आश्चर्यको प्राप्तहोती हुई और यह मनमें कहती हुई कि यह मैंने आकाशमें पवनका कहाहुआ वचनसुना १६ अथवा मुझको स्वप्नहुआ अथवा मेरे मनकी भ्रान्ति है अथवा सत्यही है तिसमें दुःखकरके जब मुझको निद्राही नहीं आउती तौ स्वप्न कैसे संभव होताहै और जैसे कोई स्वप्नावस्था में जानै तैसे मैं भी जानती हों इससे भ्रमभी नहीं है १७ अर्थात् सत्यहै यह निश्चयकरके सीता कहती है कि जिसने मेरे कानों को अमृत के तुल्य वचन कहा है वह प्रिय वचन बोलने वाला महाभाग मेरे आगे आकै दिखलाई देवै १८ ऐसे सीता के वचन सुनिकै हनुमान् पत्तों में से निकल धीरेधीरे वृक्षपै से उतरके सीताके आगे खड़ा

होताहुआ १९ और गरगौटे के तुल्य है अंग जिसका और लाल है मुख जिस का और पीलाहै जिसका वर्ण ऐसा जो वानर सो धीरेसे सीताके आगे जाके स्थित होके प्रणाम करताहुआ २० तब उसको देखके यह माया करके रावण ही वानरके रूपको धारणकर मुझको मोह कराताहै यह शंकाकरके सीता भय भीत होजाती हुई २१ ॥

इत्येवंचिन्तयित्वासातूष्णीमासीदधोमुखी ॥ पुनरप्याहतांसीतां देवियस्त्वंविशंकसे २२नाहन्तथाविधोमातस्त्यजशंकांमयिस्थिताम्॥ दासोऽहंकोशलेन्द्रस्यरामस्यपरमात्मनः २३ सचिवोऽहंहरीन्द्रस्य सुग्रीवस्यशुभप्रदे ॥ वायोःपुत्रोऽहमखिलप्राणभूतस्यशोभने २४ तच्छ्रुत्वाजानकीप्राहहनूमन्तंकृताञ्जलिम् ॥ वानराणाम्मनुष्याणां संगतिर्घटतेकथम् २५ यथात्वंरामचन्द्रस्यदासोऽहमितिभाषसे ॥ तामाहमारुतिःप्रीतोजानकींपुरतःस्थितः २६ ऋष्यमूकमगाद्रामः शबर्यानोदितःसुधीः ॥सुग्रीवोऋष्यमूकस्थोदृष्टवान्रामलक्ष्मणौ२७ भीतोमाम्प्रेषयामास ज्ञातुंरामस्यहृद्गतम् ॥ ब्रह्मचारिवपुर्धृत्वागतो ऽहंरामसन्निधिम् २८ ॥

और रावण है यह चिन्ताकर नीचेको मुखकर मौन होगई तब हनुमान् फिर सीतासे बोलेकि हेदेवि हेमातः जो तू शंकाकरती है सो मैं नहींहौं अर्थात् मैं रावण नहींहौं २२ इससे मेरे में शंकाको त्यागदे मैं तो कोशलेंद्र जो पर-मात्मा राम तिनका दासहौं २३ और हे कल्याणकी देनेवाली मैं वानरों के राजा सुग्रीवका मंत्रीहौं और जगत्का प्राण जो पवन तिसका मैं पुत्रहौं २४ यहवचन सुनके हाथ जोडे आगे खडाहुआ जो हनुमान् तिससे सीताबोलती हुई कि वानरोंका और मनुष्योंका परस्पर मिलापकैसे संभव होसक्ताहै २५ और जो तुम कहतेहौ कि मैं रामका दासहौं इससे विदित होताहै कि मिलाप हुआ अर्थात् जो रामका संगम न होता तौ दासहोना कैसे बनसक्ताहै इससे कैसे वानरों में मिलापहुआ सो सब प्रसंग कहौ तब प्रसन्नहोके हनुमान् सीता से कहनेलगा कि २६ बड़े बुद्धिमान जो राम सो शबरी के कहनेसे ऋष्यमूक पर्वतके समीप जातेहुये तहां ऋष्यमूक पर्वतपै स्थित जो सुग्रीव सो राम लक्ष्मणको देखता हुआ २७ फिर सुग्रीव भयभीत होके रामके हृदयकी बात जाननेको मुझको भेजता हुआ तब ब्रह्मचारी का रूप धारणकरके मैं राम के समीप गया २८ ॥

ज्ञात्वारामस्यसद्भावंस्कन्धोपरिनिधायतौ ॥ नीत्वासुग्रीवसामीप्यंसख्यञ्चाकरवन्तयोः २९ सुग्रीवस्यहृताभार्याबालिनातंरघूत्तमः॥ जघानैकेनबाणेनततोराज्येभ्यषेचयत् ३० सुग्रीवंवानराणांसःप्रेषयामासवानरान् ३१ दिग्भ्योमहाबलान्वीरान्भवत्याःपरिमार्गणे ॥ गच्छन्तंराघवोदृष्ट्वामामभाषतसादरम् ३२ त्वयिकार्यमशेषम्मेस्थितं मारुतनन्दन ॥ ब्रूहिमेकुशलंसर्वंसीतायैलक्ष्मणस्यच ३३ अंगुलीयकमेतन्मेपरिज्ञानार्थमुत्तमम् ॥ सीतायैदीयतांसाधुमन्नामाक्षरमुद्रितम् ३४ इत्युक्त्वाप्रददौमह्यंकराग्रादंगुलीयकम् ॥ प्रयत्नेनमयानीतं देविपश्यांगुलीयकम् ३५ ॥

और जाके रामके हृदय का आशय जानके अपने कन्धेके ऊपर दोनों को अर्थात् राम लक्ष्मणको चढ़ाकर सुग्रीवके समीप प्राप्त करके फिर रामसुग्रीव की मित्रताको कराता हुआ २९ और सुग्रीव की स्त्री उसके भाई बालीनेहर लीथी तौ राम उस बालीको एकही बाणसे मारके वानरों के राज्य में सुग्रीव का अभिषेक करतेहुये अर्थात् सुग्रीवको राज्य देतेहुये ३० फिर सुग्रीव बड़े बड़े बलवान् वानरोंको तुम्हारे ढूंढ़ने को सब दिशाओं में भेजता हुआ ३१ जब मैं चलनेलगा तो राम मुझको देखके आदरपूर्वक बोले ३२ कि हे पवन-पुत्रतेरे बिषे मेरासबकार्य स्थितहै इससे सीतासे जाके मेरीकुशल और लक्ष्मणकी कुशल कहु३३और यह मेरे नामके अक्षरों करके चिह्नित जो मेरी मुंदरी है तिसको सीता के पहिंचानके लिये देना ३४ हे देवि इसप्रकार राम मुझसे कहिके अपने हाथ से मुन्दरीको उतारके मुझको देतेहुये सो बड़े यत्न से मैंने यहां प्राप्तकी है तिसको तुम देखो ३५ ॥

इत्युक्त्वाप्रददौदेव्यैमुद्रिकांमारुतात्मजः ॥ नमस्कृत्वास्थितोदूराद्बद्धांजलिपुटोहरिः ३६दृष्ट्वासीताप्रमुदितारामनामांकितातदा ॥ मुद्रिकांशिरसाधृत्वास्रवदानन्दनेत्रजा ३७ कपेमेप्राणदातात्वंबुद्धिमानसिराघवे ॥ भक्तोऽसिप्रियकारीत्वंविश्वासोऽस्तितवैवहि ३८ नोचेन्मत्सन्निधिंचान्यंपुरुषंप्रेषयेत्कथम् ॥ हनूमन्दृष्टमखिलंममदुःखादिकंत्वया ३९ सर्वंकथयरामाययथामेजायतेदया ॥ मासद्वयावधिप्राणाःस्थास्यंतिममसत्तम ४० नागमिष्यतिचेद्रामोभक्षयिष्यति मांखलः ॥ अतःशीघ्रंकपीन्द्रेणसुग्रीवेणसमन्वितः ४१ वानरानीकपैःसार्द्धंहत्वारावणमाहवे ॥ सपुत्रंसबलंरामोयदिमांमोचयेत्प्रभुः ४२ ॥

यह कहिके हनुमान् वहमुंदरी सीतादेवीको देताहुआ और आप हाथजोड़के नमस्कारकर दूर खड़ा होताहुआ ३६ अब सीता रामनामकरके चिह्नितउस मुंदरी को देखके बड़ीआनन्दयुक्तहो उसमुंदरी को शिरपै धारणकर नेत्रोंसे आनन्दके आंशुओं को छोड़ती हुई ३७ और यह कहती हुई कि हे वानर तू मेरे प्राणों का देनेवालाहै और बड़ा बुद्धिमान्है और रामचन्द्र के विषे भक्तियुक्त है और रामको प्रिय करनेवाला है इसीसे सबवानरों के मध्यमें तेराही रामको विश्वास है ३८ और जो ऐसा न होता तौ विश्वासरहित और प्राकृत पुरुष को मेरे समीप कैसे भेजते और हे हनुमन् मेरा दुःखादिक तुमने सबदेखा ३६ इससे यहसब रामसे इसप्रकार कहौ जैसे मेरे में रामकी दयाहोय और हे हनुमन् दो महीनेतक तौ मेरेप्राण शरीरमें स्थितरहैंगे ४० और जो दो महीने के भीतर राम नहींआवैंगे तौ दुष्टरावण मुझको भोजनकरिलेगा इसीसे शीघ्रही वानरोंका राजा जो सुग्रीव तिसकरके सहित ४१ और वानरोंकी सेना और सेनापतियों करके सहित आके राम जो संग्राममें पुत्रपौत्र सेनासहित रावण को मारके मुझको इसकष्टसे छोड़ावैंगे ४२ ॥

तत्तस्यसदृशंवीर्यंवीरवर्णयवर्णितम् ॥ यथामांतारयेद्रामोहत्वाशीघ्रंदशाननम् ४३ तथायतस्वहनुमन्वाचाधर्ममवाप्नुहि ॥ हनुमानपितामाहदेविदृष्टोयथामया ४४ रामःसलक्ष्मणःशीघ्रमागमिष्यतिसायुधः ॥ सुग्रीवेणससैन्येनहत्वादशमुखम्बलात् ४५ समानेष्यतिदेवित्वामयोध्यांनात्रसंशयः ॥ तमाहजानकीरामःकथंवारिधिमाततम् ४६ तीर्त्वायास्यत्यमेयात्मावानरानीकपैःसह ॥ हनूमानाहमेस्कन्धावारुह्यपुरुषर्षभौ ४७ आयास्यतःससैन्यश्चसुग्रीवोवानरेश्वरः ॥ विहायसाक्षणेनैवतीर्त्वावारिधिमाततम् ४८ निर्दहिष्यतिरक्षौघांस्त्वत्कृतेनात्रसंशयः ॥ अनुज्ञांदेहिमेदेविगच्छामित्वरयान्वितः ४९ ॥

तो वह पराक्रम रामके सदृशहोगा अर्थात् लायकहोगा और हे हनुमन् उस ऋषियों करके वर्णन कियेहुये पराक्रमको तुम वर्णनकरवाओ और बहुत कहना क्याहै जैसे राम मेरा उद्धारकरैं शीघ्रही इस दुष्टरावणको मारके ४३ हे हनुमन् तैसे शीघ्रही यत्नकरौ और वचनहीकरके तुम धर्मको प्राप्तहोउ अर्थात् तुम्हारे वचन से जो मेरी रक्षाहोगी तौ तुम रक्षाकरनेवालेही के धर्मको प्राप्त होवोगे तो हनुमान् सीतासे कहतेहुये कि हे देवि जैसे उद्योगयुक्त मैंनेरामको देखाहै ४४ तैसेही लक्ष्मण और सुग्रीव और सेना इनकरके सहितआके और धनुषबाणलेके बलसे रावणको मारके ४५ हे देवि तुझको राम अयोध्यामें

प्राप्तकरैंगे इसमें कुछ संशयनहीं तब सीता फिर हनुमान्से कहतीहुई कि राम बड़े विस्तारयुक्त समुद्रको ४६ पारउतरके कैसे वानरों की सेना करके सहित आवैंगे तौ हनुमान् बोला कि मेरे कन्धे के ऊपर दोनों राम लक्ष्मण चढ़करके ४७आवैंगे और सेना सहित जो सुग्रीव सो आकाशमार्ग करके क्षणभर में बड़े विस्तृत समुद्रको भी उतरिकै४८तेरे अर्थ राक्षसोंके समूहकोभस्मकरैंगे इसमें कुछसंशयनहींहै और हेदेवि मुझको आज्ञादीजिये जिससेमैं शीघ्रहीजाउँ ४९॥

द्रष्टुंरामंसहभ्रात्रात्वरयामितवांतिकम् ॥ देविकिंचिदभिज्ञानंदेहिमेयेनराघवः ५० विश्वसेन्माम्प्रयत्नेनततोगंतासमुत्सुकः ॥ ततःकिंचिद्विचार्याथसीताकमललोचना ५१ विमुच्यकेशपाशांतेस्थितंचूडामणिंददौ ॥ अनेनविश्वसेद्रामस्त्वांकपींद्रसलक्ष्मणः ५२ अभिज्ञानार्थमन्यच्चवदामितवसुव्रत ॥ चित्रकूटगिरौपूर्वमेकदारहसिस्थितः ॥ मदंकेशिरआधायनिद्रातिरघुनंदनः ५३ ऐंद्रःकाकस्तदागत्यनखैस्तुण्डेनचासकृत् ॥ मत्पादांगुष्ठमारक्तंविददारामिषाशया ५४ ततोरामःप्रबुद्ध्याथदृष्ट्वापादंकृतव्रणम् ॥ केनभद्रेकृतञ्चैतद्विप्रियम्मे दुरात्मना ५५ इत्युक्त्वापुरतोपश्यद्वायसम्मास्पुनःपुनः ॥ अभिद्रवंतंरक्तास्यन्नखतुण्डञ्चुकोपह ५६ ॥

और भाई करके सहित जो रामहैं तिनको देखनेको मैं शीघ्रताकरिरहाहौं फिर उनके पासहोके तुम्हारेपास आनेकी मुझको शीघ्रताहै इससे आज्ञादीजिये और हे देवि कुछ पहिंचान की बस्तु मुझको देवो जिस करके राम मुझसे विश्वास करैं ५० कि यह वहां गयाथा तिसके उपरान्त तुम्हारा दियाहुआ जो चिह्नहै तिसको यत्नसे रक्षा करताहुआ उत्कंठा युक्त मैं राम के समीप जाऊंगा तब कमल के तुल्यहैं विशाल नेत्र जिसके ऐसी जो सीता सो कुछ विचार करके ५१ जूड़ामें बँधीहुई जो मणि तिसको खोलकरके देती हुई और यह कहती हुई कि हे हनुमन् इसमणि करके लक्ष्मण सहित जो राम सो तेरे में विश्वास करैंगे ५२ और एक पहिंचानके लिये मैं तुम से गुप्त वृत्तान्त कहती हौं तिसको सुनो एक समय चित्रकूट पर्वतपै एकान्त देशमें स्थित जो रघुनन्दन सो मेरी गोदमें शिरको रखिकै निद्रा को प्राप्तहुये ५३ उसी समयमें इन्द्रका पुत्र जयन्त काकका रूपधारणकरके मांसकी आशा करके नखों करके और चोंच से रक्तवर्ण जो मेरे पांवका अँगूठा तिसको विदारण करता हुआ अर्थात् उसमें घाउ करता हुआ ५४ तिसके उपरान्त राम जाग करके घाउ हुआ है जिसमें ऐसे मेरे पांउको देख करके हे भद्रे किसदुष्टा

रमाने यह मेरा अप्रिय किया है ५५ ऐसा मुझसे कहिकै फिर अपने आगे लालहै मुख और नख और चोंच जिसकी और मेरे सामने वारम्बार आरहा है ऐसे काकको देखिकै क्रोध करतेहुये ५६ ॥

तृणमेकमुपादायदिव्यास्त्रेणाभ्ययोजयत् ॥ चिक्षेपलीलयारामो वायसोपरितज्ज्वलत्५७अभ्यद्रवद्वायसश्चभीतोलोकान्भ्रमत्पुनः ॥ इन्द्रब्रह्मादिभिश्चापिनशक्योरक्षितुंतदा ५८ रामस्यपादयोरग्रेऽप तद्भीत्यादयानिधेः ॥ शरणागतमालोक्यरामस्तमिदमब्रवीत् ५९ अमोघमेतदस्त्रम्मेदत्त्वैकाक्षमितोव्रज॥ सव्यंदत्त्वाततःकाकएवंपौरुषवानपि६०उपेक्षतेकिमर्थंमामिदानींसोपिराघवः ॥ हनूमानपितामाह श्रुत्वासीतानुभाषितम्६१देवित्वांयदिजानातिस्थितामत्ररघूत्तमः॥ करिष्यतिक्षणाद्भस्मलंकांराक्षसमण्डिताम् ६२ जानकीप्राहतंवत्स कथंत्वंयोत्स्यसेऽसुरैः॥अतिसूक्ष्मवपुःसर्वेवानराश्चभवादृशाः ६३ ॥

और एक तृणको उठाकर उसको दिव्यास्त्रमन्त्र करके अभिमन्त्रित करके उस काकके ऊपर छोड़ देते हुये फिर वह तृण चारोंतरफ़से अग्निकी तरह प्रकाश करताहुआ ५७ और वह तृणकाकके सम्मुख दौड़ता हुआ फिर काकभी उसके तेजकरके जवजलनेलगा तो भयभीत हुआ सबलोकों में भ्रमताहुआ और उन लोकों के स्वामी ब्रह्मादिकों करके भी जबवह काकरक्षाको प्राप्त न हुआ ५८ तो परम दयालु जो श्रीराम तिनके चरणों के समीपभय करके गिर पड़ताहुआ तो राम शरणागत काकको देखके यह वचन बोलते हुये ५९ कि हे काक यह अमोघ अस्त्र मेराहै अर्थात् यह अस्त्र कभी निष्फल होनेवाला नहीं है इससे एकनेत्र अपना देके तू यहां से जा तिसके उपरान्त वह काक वामनेत्र अपना देके वहांसे जाताहुआ ऐसे पराक्रम करके युक्त भी ६० राम कौन कारणसे इससमयमें मेरी उपेक्षा कररहे हैं अर्थात् मेरीतरफ दृष्टिनहीं करते तबयह सीताका वचन सुनिकै हनुमान्भी वचनबोलताहुआ ६१ कि हे देवि राम जो यहां स्थित तुझको जानेंगे तो क्षणमात्रमें राक्षसों करके भूषित जो लंकाहै तिसको भस्मकर देवेंगे ६२ तब सीता हनुमान् से कहती हुई कि हे वत्स अत्यन्त तुम्हारा छोटा शरीर है और सब वानर भी तुम्हारेही सरीखे होंगे फिर तुम कैसे राक्षसों के संग युद्धकरौगे ६३ ॥

श्रुत्वातद्वचनंदेव्यैपूर्वरूपमदर्शयत् ॥ मेरुमंदरसंकाशंरक्षोगणविभीषणम् ६४ दृष्ट्वासीताहनूमंतंमहापर्वतसन्निभम् ॥ हर्षेणमहता

विष्टाप्राहतंकपिकुंजरम् ६५ समर्थोऽसिमहासत्वद्रक्ष्यन्तित्वांमहा बलम्॥राक्षस्यस्तेशुभःपंथागच्छरामांतिकंद्रुतम् ६६बुभुक्षितःकपिः प्राहदर्शनात्पारणंमम॥भविष्यतिफलैःसर्वैस्तवदृष्टिस्थितैर्हिमे ६७ तथेत्युक्तःसजानक्याभक्षयित्वाफलंकपिः ॥ ततःप्रस्थापितोऽगच्छ ज्जानकींप्रणिपत्यसः ॥ किंचिद्दूरमथोगत्वास्वात्मन्येवानुचिन्तयत् ६८कार्यार्थमागतोदूतःस्वामिकार्याविरोधतः॥ अन्यत्किंचिदसंपाद्य गच्छत्यधमएवसः ६९ अतोऽहंकिंचिदन्यच्चकृत्वादृष्ट्वाथरावणम्॥ संभाष्यचततोरामदर्शनार्थंव्रजाम्यहम् ७०॥

यहबचन सीताका सुनके हनुमान् पहिला अपनारूप सीताको दिखातेहुये जो रूप सुमेरुपर्वत और मन्दराचलके तुल्य है और राक्षसोंके समूहको भय का देनेवाला है ६४ तबसीता बड़ेभारी पर्वतके तुल्य हनुमान् को देखके बड़े आनन्द करके युक्तहो तिस हनुमान् से बोली ६५ कि हे हनुमन् मैंने जाना तुम समर्थहो परन्तु राक्षसी अब तुम्हारे इस रूपको देखैंगी और देखके फिर रावणसे कहैंगी इससे अभी तुमराम के समीपजाओ और तुम्हारा मार्गकल्याणयुक्तहोवे ६६ तबभूखा जोहनुमान्सो सीतासे कहताहुआ कि हे देवि तेरे दर्शनकरनेके बाद मुझको भोजन करनाउचितहै इससे तुम्हारे सामने ये फल लगे हैंतिनको मैंखाऊं जोआज्ञाहोय तो६७यह कहि सीताकी आज्ञासे हनुमान्फलों को खाके फिर सीताको प्रणामकरके उसका भेजाहुआ चला तबचलनेकेसमय मार्ग में हनुमान् यह बिचार करतेहुये ६८ कि कार्य के अर्थ आया जो दूत सो स्वामी के कहेहुये कार्य को बनाके फिर उसका बिरोध जिसमें न पाया जावै ऐसे दूसरे कार्यको बिना सिद्धकरे जो जाय वह अधम दूत कहाता है ६९ इससे मैं कुछ और भी कार्य को करके और रावणको भी देखके और उससे वार्त्तालाप करके तब राम के दर्शन करनेको जाऊंगा ७० ॥

इतिनिश्चित्यमनसावृक्षखण्डान्महाबलः॥उत्पाट्याशोकवनिकां निर्वृक्षामकरोत्क्षणात् ७१ सीताश्रयनगंत्यक्त्वावनंशून्यंचकारसः॥ उत्पाटयंतंविपिनंदृष्ट्वाराक्षसयोषितः ७२ अपृच्छन्जानकींकोसौवा नराकृतिरुद्भटः ७३ जानक्युवाच ॥ भवत्यएवजानंतिमायांराक्षस निर्मिताम् ॥ नाहमेनंविजानामिदुःखशोकसमाकुला ७४ इत्युक्ता स्त्वरितंगत्वाराक्षस्योभयपीडिताः॥हनूमताकृतंसर्वंरावणायन्यवेदय न् ७५ देवकश्चिन्महासत्वोवानराकृतिदेहभृत् ॥ सीतयासहसं

भाग्यत्वशोकवनिकांक्षणात् ॥ उत्पाट्यचैत्यप्रासादंबभंजामितविक्रमः ७६ प्रासादरक्षिणःसर्वान्हत्वातत्रैवतस्थिवान् ॥ तच्छ्रुत्वातूर्णमुत्थायवनभंगंमहाप्रियम् ७७ ॥

ऐसा मनमें निश्चय करके बड़ा बलवान् जो हनुमान् सो वृक्षोंको उखाड़ के क्षणभरे में अशोक वनिका को वृक्ष रहित कर देताहुआ ७१ एक सीताकी जगह छोड़के और सब वनशून्य करदिया तब वे राक्षसियां वृक्षोंको उखाड़ते हनुमान् को देखके ७२ सीतासे पूंछतीहुईं कि कौन यह वानरके स्वरूप में बड़ाभारी योद्धाहै ७३ तब सीता कहती हुई कि तुमहीं सब राक्षसोंकी रची हुई माया को जानतीहो दुःख शोक करके युक्त मैं इस वानरको नहींजानती हों ७४ इसप्रकार सीता करके कहीहुई भयकरके पीड़ित जे राक्षसीते शीघ्रही जाकर हनुमान् का कियाहुआ जो कर्मतिसको रावणसे कहतीहुईं ७५ कि हे देव कोई बड़ापराक्रमी वानरके रूपको धारणकरे सीतासे सम्भाषणकरके अशोक वनिकाको क्षणमात्रमें उखाड़करके फिर बड़ा ऊंचा जो देवमन्दिर तिसको तोड़ करके डालदेता हुआ ७६ और उस मन्दिरके रक्षा करनेवाले सब राक्षसोंको मारके वहांहीं स्थित होरहाहै तब राक्षसोंका स्वामी रावण वह महा अप्रिय वनको भंग सुनिकै शीघ्रही उठकर ७७ ॥

किंकरान्प्रेषयामासनियुतंराक्षसाधिपः ॥ निर्भग्नचैत्यप्रासादप्रथमांतरसंस्थितः ७८ हनुमान्पर्वताकारोलोहस्तंभकृतायुधः ॥ किंचिल्लांगूलचलनोरक्तास्योभीषणाकृतिः ७९ आपतंतंमहासंघंराक्षसानांददर्शसः ॥ चकारसिंहनादंचश्रुत्वातेसुमुहुर्भृशम् ८० हनूमंतमथोदृष्ट्वाराक्षसाभीषणाकृतिम् ॥ निजघ्नुर्विविधास्त्रौघैःसर्वराक्षसघातिनम् ८१ ततउत्थायहनुमान्मुद्गरेणसमंततः ॥ निष्पिपेषक्षणादेवमशकानिवयूथपः ८२ निहतान्किंकरान्श्रुत्वारावणःक्रोधमूर्च्छितः ॥ पंचसेनापतींस्तत्रप्रेषयामासदुर्मदान् ८३ हनूमानपितान्सर्वान्लोहस्तंभेनचाहनत् ॥ ततःक्रुद्धोमंत्रिसुतान्प्रेषयामाससप्तसः ८४ ॥

दश कड़ोरकिंकर नाम करकेजे राक्षस तिनको भेजता हुआ तब टूटा हुआ जो प्रासाद अर्थात् देवमन्दिर तिसकेनीचेके दर्जेमें बैठा ७८ और पर्वतकासा आकार जिसका और लोहका जो खंभा तिसीको करिलिया है शस्त्र जिसने अर्थात् उसको ग्रहण किये है और अपनी पूंछको कुछ चला रहाहै और लाल जिसका मुखहै और बड़ा भयंकर जिसका स्वरूपहै ७९ ऐसा जो हनुमान् सो

आवताहुआ जो राक्षसोंका समूह तिसको देखताहुआ फिर सिंहवत् हनुमान् गर्जताहुआ तिस शब्दको सुनके राक्षस मोहको प्राप्त होतेहुये ८० अर्थात् मूर्च्छितहोजातेहुये और फिर वे राक्षस बड़े भयंकर हनुमान् के रूपको देखिके सब राक्षसों के मारनेवाले हनुमान्को अनेक अस्त्रों के समूह करके मारते हुये ८१ तिसके उपरान्त हनुमान् उठके उस लोहके खंभ करके उन राक्षसों को चूर्ण चूर्णकर डालताहुआ जैसे हाथी अपने पांवसे मच्छड़ोंको पीसडाले ८२ तब मरेहुये राक्षसोंको सुनकरके बड़ेक्रोधमें भराहुआ रावण बड़ा दुष्ट है मद जिनका ऐसे पांच सेनापतियों को भेजताहुआ ८३ तौ हनुमान् भी उन सबोंको उसी लोहदण्ड करके मारडालता हुआ तब तो क्रोधकरके रावणसात मन्त्रियों के पुत्रोंको भेजताहुआ ८४ ॥

आगतानपितान्सर्वान्पूर्ववद्वानरेश्वरः॥ क्षणान्निःशेषतोहत्वालोहस्तंभेनमारुतिः ८५ पूर्वस्थानमुपाश्रित्यप्रतीक्षन्राक्षसान्स्थितः॥ ततोजगामबलवान्कुमारोक्षःप्रतापवान् ८६ तमुत्पपातहनुमान्दृष्ट्वाकाशेसमुद्गरः॥ गगनात्त्वरितोमूर्ध्निमुद्गरेणव्यताडयत् ८७ हत्वातमक्षंनिःशेषबलंसर्वंचकारसः ८८ ततःश्रुत्वाकुमारस्यबधंराक्षसपुंगवः॥ क्रोधेनमहताविष्टइंद्रजेतारमब्रवीत् ८९ पुत्रगच्छाम्यहंतत्र यत्रास्तेपुत्रहारिपुः॥ हत्वातमथवाबध्वाआनयिष्यामितेऽतिकम् ९० इन्द्रजित्पितरम्प्राहत्यजशोकंमहामते ॥ मयिस्थितेकिमर्थंत्वंभाषसे दुःखितंवचः ९१ ॥

तौ उनको आवते देखकरकेहनुमान् पहिलेकी तरह उसीलोहके खंभेकरके एकक्षणमात्र में सबोंकोमारके ८५ पहिलेई स्थानपै और राक्षसोंकी राहको निहारता स्थित हुआ तिसके उपरान्त बड़ाबलवान और बड़े प्रताप करके युक्त अक्षकुमारनाम करके प्रसिद्ध रावणका पुत्र युद्धकरनेको जाता हुआ ८६ तब उसको आवते देखके पहिले तौ हनुमान् आकाशको जाके पीछे आकाश से उस अक्षकुमारके शिरके ऊपर गिरके उसी लोहके खम्भे करके उसकोभी मारताहुआ ८७ और उस अक्षकुमारको मारके फिर उसकी सब सेनाको भी मारताहुआ ८८ तिसके उपरान्त रावण अपने कुमारका वधसुनके बड़े क्रोध करके युक्त होकर इन्द्रजित् नामहै जिसका ऐसे पुत्र से बोलता हुआ ८९ कि हे पुत्र जहां मेरे पुत्रका मारने वाला रिपु अर्थात् वैरी है वहां मैं जाताहौं फिर उसको मारिकै अथवा बांधिकै तेरे समीपले आऊंगा ९० तब इन्द्रजित् पुत्र रावण से कहता हुआ कि हे महामते आप शोकको त्याग

दीजिये और मेरे होते ऐसे दुःखके वचन किसवास्ते कहते हो ६१ ॥

बध्वानेष्येद्रुतंतातवानरंब्रह्मपाशतः ॥ इत्युक्त्वारथमारुह्यराक्षसैर्बहुभिर्वृतः ६२ जगामवायुपुत्रस्यसमीपंवीरविक्रमः ॥ ततोऽतिगर्जितंश्रुत्वास्तंभमुद्यम्यवीर्यवान् ६३ उत्पातनभोदेशंगरुत्मानिवमारुतिः ॥ ततोभ्रमंतंनभसिहनूमन्तंशिलीमुखैः ६४ विध्वातस्याशिरोभागमिषुभिश्चाष्टभिःपुनः ॥ हृदयंपादयुगलंषड्भिरेकेनबालधिम् ६५ भेदयित्वाततोघोरंसिंहनादमथाकरोत् ॥ ततोऽतिहर्षाद्धनुमांस्तंभमुद्यम्यवीर्यवान् ६६ जघानसारथिंसाश्वंरथंचाचूर्णयत्क्षणात् ॥ ततोऽन्यंरथमादायमेघनादोमहाबलः ६७ शीघ्रंब्रह्मास्त्रमादायबध्वावानरपुंगवम् ॥ निनायनिकटंराज्ञोरावणस्यमहाबलः ६८ ॥

हे तात ब्रह्मपाश से उस वानरको बांधिकै जल्द ले आताहौं ऐसा मेघनाद कहिकै और रथके ऊपर चढ़िकै और बहुत से राक्षसोंको संग लिये ६२ बड़ा वीर मेघनाद हनुमान् के समीप जाता हुआ तिसके उपरान्त मेघनादके शब्द को सुनके बड़ा पराक्रम युक्त जो हनुमान् सो लोहे के खम्भेको ले करके ६३ गरुड़ की तरह आकाशमें उछलके जाता हुआ फिर आकाशमें भ्रमणकररहा जो हनुमान् तिसके ९४ शिरको बाणों से ताड़न करके फिर मेघनाद आठ बाणकरके हनुमान् के हृदय को भेदनकर और छः बाण करके दोनों पावोंको विदारणकर और एक बाणसे पूंछको बेधके ९५ सिंहवत् गर्जताहुआ तब अत्यन्त हर्ष से बड़ावली जो हनुमान् सो उस लोह के खम्भे को उठाकर ९६ उस करके मेघनाद के सारथी को और घोड़ों सहित रथको एक क्षण भरे में चूर्ण चूर्ण कर डालता हुआ तो महाबली जो मेघनाद सो और रथके ऊपर चढ़ करके ९७ शीघ्रही ब्रह्मास्त्रकरके हनुमान्को बांधिकै रावणके समीप लेजाताहुआ ९८ ॥

यस्यनामसततंजपंतियेऽज्ञानकर्मकृतबंधनंक्षणात् ॥ सद्यएवपरिमुच्यतत्पदंयांतिकोटिरविभासुरंशिवम् ९९ तस्यैवरामस्यपदांबुजंसदाहृत्पद्ममध्येसुनिधायमारुतिः ॥ सदैवनिर्मुक्तसमस्तबंधनःकिंतस्यपाशैरितरैश्चबंधनैः १०० ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादे
सुन्दरकाण्डेतृतीयःसर्गः ३ ॥

जिस रामचन्द्र के नामको जे निरन्तर जपते हैं ते अज्ञान से उत्पन्न हुआ

जो कर्म बन्धन तिससेछूट करके करोड़ों सूर्यों का जिसमें प्रकाश ऐसे कल्याण रूप रामपदको प्राप्त होते हैं ९९ और तिसी राम के चरणारविन्द को जो हनुमान् सदा अपने हृदय कमल में स्थापन कर सदा सब बन्धनों से मुक्त हो रहाहै तिस हनुमान् को देखने में आनेवाले जो स्थूल पाशबन्धन तिनकरके क्या होनाहै १०० ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेसुन्दरकाण्डे भाषाटीकायांतृतीयस्सर्गः ३ ॥

यान्तंकपीन्द्रंधृतपाशबन्धनंविलोकयन्तंनगरंविभीतवत्॥ अताडयन्मुष्टितलैःसुकोपनाःपौराःसमंतादनुयांतईक्षितुम् १ ब्रह्मास्त्रमेनंक्षणमात्रसंगमंकृत्वागतंब्रह्मवरेणसत्वरम् ॥ ज्ञात्वाहनूमानपिफल्गुरज्जुभिर्धृतोययौकार्यविशेषगौरवात् २ सभांतरस्थस्यचरावणस्यतंपुरोनिधायाहबलारिजित्तदा॥ बद्धोमयाब्रह्मवरेणवानरःसमागतोऽनेनहतामहासुराः ३ यद्युक्तमत्रार्यविचार्यमंत्रिभिर्विधीयतामेषनलौकिकोहरिः॥ ततोविलोक्याहसराक्षसेश्वरःप्रहस्तमग्रेस्थितमंजनाद्रिभम् ४ प्रहस्तपृच्छैनमसौकिमागतःकिमत्रकार्यंकुतएववानरः ॥ वनंकिमर्थंसकलंविनाशितंहताःकिमर्थंममराक्षसाबलात् ५ ततःप्रहस्तोहनुमंतमादरात्पप्रच्छकेनप्रहितोऽसिवानर ॥ भयंचतेमास्तुविमोक्ष्यसेमयासत्यंवदस्वाखिलराजसन्निधौ ६ ततोऽतिहर्षात्पवनात्मजोरिपुंनिरीक्ष्यलोकत्रयकंटकासुरम् ॥ वक्तुंप्रचक्रेरघुनाथसत्कथाक्रमेणरामंमनसास्मरन्मुहुः ७ ॥

दो० चौथे सर्ग सुरेश जित पाशबँधे हनुमान ॥
मिलिदशकंठहिलंकको छारकियोबलवान १

अब श्रीमहादेजी पार्वती से कथा वर्णन करते हैं कि हे पार्वति अब धारण कियाहै अपनेही आप ब्रह्मपाशका बन्धन जिसने और भयभीतकी नाईं नगर को देखरहाहै इस प्रकार गमन कररहा जो हनुमान् तिसको देखनेको आये जे पुरबासी राक्षस ते क्रोध करके पीछेसे हनुमान्को मूठियों से मारतेहुये १ अब ब्रह्मास्त्र ब्रह्मा के वरदान करके इस हनुमान् से क्षणमात्र मिलाप करके चलाजाताहुआ और तुच्छ रस्सियों से बँधाहुआ हनुमान् मैं ब्रह्मपाश से छूट गयाहों यह जानके भी रावणसे वार्त्तालाप करनाहै इस हेतुसे जाताहीहुआ इसका आशय यहहै कि जब बाहरसे रस्सीआदि बन्धन से कोई बांधै तौ मंत्र

कावंधन छूटजाताहै यह प्रसिद्ध है तौ जब मेघनाद ब्रह्मास्त्र के मंत्र करके हनु-मान्को बांधिके ले चला तौ मूर्ख राक्षसों ने यह जाना कि यह वानर बिना बँधा मेघनादके संग चलाजाताहै कहीं भाग न जावै और यह न जाना कि यह मन्त्रसे बँधाहै फिर उन मूढ़ोंने हनुमान् को रस्सियों से भी बांधा तब उसी समय ब्रह्मपाश का बन्धन छूट गया यह जानिकै मेघनादको बड़ा खेदहुआ और यह कहा कि इन मूर्खोंने बुरा किया जो और बन्धन से बांधा और यह वानर भी नहीं जानता है इससे चला जाताहै और जो कदाचित् इसभेदको जानता होता तौ यह वानर ऐसा बलीहै कि इनसब रस्सियोंके बन्धनको तो-ड़के इनसब राक्षसोंको मारडालता और हनुमान् तौ यह विचार करताहुआ कि ब्रह्मपाशके बन्धनेसे तो मैं छूटगया हौं सो कदाचित् इन राक्षसोंको मारने लगों तौ रावणसे इससमयमें वार्त्तालाप करनेमें विघ्न होजायगा इससे अ-भी अज्ञबनने हीमें कार्यबनताहै और स्वामी के कार्य के लिये इन तुच्छ राक्ष-सोंका ताड़नादि तिरस्कारको भी सहोंगा तौ कुछ बुराई नहीं है इससे जैसे बनेतैसे रावणके पास जानाहीचाहिये यहयहांके प्रसंगका आशयहै २ तब मेघ-नाद सभाके मध्यमें स्थित जो रावण तिसके आगे हनुमान् को स्थापन करिकै बोलताहुआ कि ब्रह्माके बरदान के प्रभाव से बांधिकै यह बानर मैंने तुम्हारे समीप प्राप्त किया और इसीने बड़ेबड़े असुर मारे हैं ३ और हे आर्य जो उक्त होय सो मन्त्रियों के संग विचार करके विधान करिये परन्तु जैसे और वानर होते हैं तैसा यह नहीं है तौ रावण हनुमान् को देखके अगाड़ी खड़ा जो प्रह-स्तराक्षस तिससे बोलताहुआ ४ कि हे प्रहस्त तुम इस बानरसे पूंछो यह कि-सवास्ते यहां आया और क्या इसका कार्य है और कहांसे आया और सबबन किसवास्ते नाशकरदिया और किस कारण बड़े बली मेरे राक्षस इसने अपने बलसे मारे ५ तब प्रहस्त मन्त्री आदर पूर्वक हनुमान् से पूंछताहुआ कि हे वानर किसने तुमको भेजाहै और भयतुमको कुछ नहींहै इससे राजाके समीप सत्यकहौगे तौ छुड़ादिये जावोगे ६ तब हनुमान् अतिहर्ष से तीनोंलोकों का कंटक और असुर ऐसे वैरीको देखके रघुनाथजीका बारंबार स्मरण करतेहुये श्रीरघुनाथ की जो सुन्दरिकथातिसको क्रमकरके कहनेको प्रारम्भ करतेहुये७॥

शृणुस्फुटंदेवगणाद्यमित्रहेरामस्यदूतोऽहमशेषहृत्स्थितेः॥ यस्याखिलेशस्यहृताधुनात्वयाभार्यास्वनाशायशुनेवसद्धविः ८ सराघवोभ्येत्यमतंगपर्वतंसुग्रीवमैत्रीमनलस्यसन्निधौ॥ कृत्वैकबाणेननिहत्यवालिनंसुग्रीवमेवाधिपतिंचकारतम् ९ सवानराणामधिपोमहाबलीमहाबलैर्वानरयूथकोटिभिः॥ रामेणसार्द्धंसहलक्ष्मणेनभोप्रवर्षणेऽम

पर्युतोऽवतिष्ठते १० संचोदितास्तेनमहाहरीश्वराधरासुतांमार्गयितुंदिशोदश ॥ तत्राहमेकःपवनात्मजःकपिःसीतांविचिन्वन्शनकैःससागतः ११ दृष्टामयापद्मपलाशलोचनासीताकपित्वाद्विपिनंविनाशितम् ॥ दृष्टाततोऽहंरभसासमागतान्मांहंतुकामान्धृतचापसायकान् १२ मयाहतास्तेपरिरक्षितुंवपुःप्रियोहिदेहोऽखिलदेहिनांप्रभो ॥ ब्रह्मास्त्रपाशेननिबध्यमांततःसमागमन्मेघनिनादनामकः १३ स्पृष्ट्वैव मांब्रह्मवरप्रभावतस्त्यक्त्वागतंसर्वममैमिरावण ॥ तथाप्यहंबद्धइवागतोहितंप्रवक्तुकामःकरुणारसार्द्रधीः १४ ॥

हे देवगणों के शत्रु तुममेरे वचन सुनो मैं सबके हृदयमें स्थित जो राम तिनका दूतहौं जिस सबके स्वामी रामकी स्त्री अपने नाशकेलिये जैसे कुत्ता यज्ञमें से हविर्द्रव्यको हरै तैसे तुमने इससमयमें हरी है ८ सो राम ऋष्यमूक पर्वतपै प्राप्त होके अग्निको साक्षी करके सुग्रीवसे मित्रता करके एक बाणसे बालिको मारके सुग्रीवको सब बानरोंका राज्यदैके सबका स्वामी करताहुआ ९ सो महाबली बानरोंका स्वामी सुग्रीव बड़ेबड़े बलयुक्त कड़ोरोंयूथपति बानरों करके सहित और रामलक्ष्मण करके सहित प्रवर्षण नामपर्वतपै क्रोधयुक्तहो स्थित होरहा १० तिस सुग्रीवने सीताके ढूंढ़नेको दशोंदिशों में बड़ेबड़े बलवान् वानर भेजे हैं तिनमेंका एक मैं पवनकापुत्र वानर सीताको ढूंढ़ते ढूंढ़ते धीरेधीरे यहां प्राप्तहुआ ११ सो कमलवत् हैं नेत्रजिसके ऐसीजो सीता सो मैंने देखी और वानरजातिके स्वभावसे बनकानाश किया तिसके उपरांत धनुषबाण लैके मेरे मारनेको वेग करिकै आयेजे राक्षस १२ तिनको देखके मैंने भी अपने शरीरकी रक्षाकरने को उनको मारा क्योंकि सब प्राणियों को अपनी देहप्रिय होती है तिसपै मेघनाद तुम्हारापुत्र ब्रह्मपाशसे मुझको बांधिकै लेआताहुआ १३ सो वह ब्रह्मपाश मेरे शरीरको स्पर्श करतेही ब्रह्माजीने जो मुझको वरदेरक्खा है तिसके प्रभावसे मुझको त्यागि चलागया यह मैं जानता भीथा तौ तुम्हारे ऊपर दयाकी दृष्टिकरिकै तुम्हारे संग वार्त्तालाप करने को बँधेकी तरह प्राप्तहुआ यहसब तुमजानो १४ ॥

विचार्यलोकस्यविवेकतोगतिंनराक्षसींबुद्धिमुपैहिरावण ॥ दैवींगतिंसंसृतिमोक्षहेतुकींसमाश्रयात्यंतहितायदेहिनः १५ त्वंब्राह्मणोह्युत्तमवंशसंभवःपौलस्त्यपुत्रोऽसिकुबेरबांधवः ॥ देहात्मबुद्ध्यापिचपश्यराक्षसोनास्यात्मबुद्ध्याकिमुराक्षसोनहि १६ शरीरबुद्धींद्रिय

दुःखसन्ततिर्नतेनचत्वंतवनिर्विकारतः ॥ अज्ञानहेतोश्चतथैवसंततेर्नसत्यमस्याःस्वपतोहिदृश्यवत् १७ इदंतुसत्यंतवनास्तिविक्रियाविकारहेतुर्नचतेऽद्वयत्वतः ॥ यथानभःसर्वगतंनलिप्यते तथाभवान्देहगतोऽपिसूक्ष्मकः॥ देहेन्द्रियप्राणशरीरसंगतस्त्वात्मेतिबुद्ध्वाखिलबन्धमाप्स्यसे१८ चिन्मात्रमेवाहमजोहमक्षरोह्यानन्दभावोहमितिप्रमुच्यते ॥ देहोऽप्यनात्मापृथिवीविकारजोनप्राणआत्मानिलएषएवसः १९ मनोप्यहंकारविकारएवनोनचापिबुद्धिःप्रकृतेर्विकारजा ॥ आत्माचिदानन्दमयोऽविकारवान्देहादिसंघाद्व्यतिरिक्तईश्वरः २० निरंजनोमुक्तउपाधितःसदाज्ञात्वैवमात्मानमितोविमुच्यते ॥ अतोहमात्यंतिकमोक्षसाधनंवक्ष्येशृणुष्वावहितोमहामते २१ ॥

इससे हे रावण विवेक करके लोकगतिको विचार करके आसुरी राक्षसी संपत्तिकी बुद्धिको न प्राप्तहो अर्थात् त्यागदेवो और संसार के मोक्षमें कारण जो दैवी संपत्तिकी बुद्धि तिसको अपना हितमानिकै ग्रहणकरौ १५ और तुम ब्राह्मण जातिमें उत्पन्न तिसपै भी पुलस्त्य ऋषिके पौत्रहौ इसीसे उत्तमकुल में तुम्हारा जन्म और कुवेरके तुमभाई सो कदाचित् देहात्म बुद्धिकरिकै देखो तौभी राक्षस नहींहौ और आत्म विचार करके राक्षस नहीं हौ यह कहनाही क्याहै १६ और स्थूलशरीर और बुद्धिप्रधान जो लिंग शरीर और सब इन्द्रिय इनसे उत्पन्न जो दुःखोंका समूह सो तुमको नहीं है और न वह दुःखके तुम आश्रयहौ अर्थात् दुःख तुममें नहीं रहि सकाहै क्योंकि तुम निर्विकारहौ इस से और जो वास्तव दुःखका संबन्ध आत्मामें होय तौ निर्विकारता नहीं बन सक्ती है और जो सैं दुःख युक्तहौं इसको आदि लैके प्रतीतिहै तिसका तौ अज्ञान कारणहै इससे स्वप्नके तुल्य मिथ्याही है ऐसेही संसार भी मिथ्याहै क्योंकि सभीदृश्य पदार्थमें अज्ञान कारण और स्वप्नदृष्टान्त तुल्यहीहै १७ और तुम्हारा स्वरूप भूत जो आत्माहै सोतो सत्यहै तिससे उसमें कोई विकार नहीं है और विकार में हेतु जो अज्ञान सो मिथ्याहै क्योंकि वेदने अद्वैत आत्मा कहाहै इस कारणसे और चित्त संबन्ध से भी आत्मामें दुःखादिक नहीं संभव होते क्योंकि जैसे सब जगह व्याप्त भी आकाशहै परन्तु पृथिव्यादि विकारोंसे लिप्तनहीं होता ऐसे देहमें स्थितभी आत्माहै तौभी अतिसूक्ष्म होनेसे देहधर्मों करके नहीं लिप्तहोताहै ऐसा निश्चित सिद्धान्तहै तौ अविवेक करकेदेह और इन्द्रिय और प्राण इनके संगसे यही मेरास्वरूपहै ऐसी मिथ्या बुद्धिकरकेदेहादिकोंसे उत्पन्न जो सुखदुःखादिक तिनको भोगताही है १८ औरविवेककरके

जबऐसा अपनाको देखताहै कि मैं चैतन्यमात्र हौं और मैं जन्मरहितहौं और मैं नाश रहित हौं और मैं आनन्दस्वरूपहौं तौ तौ मोक्षको प्राप्तहोता है और देहतौ इन धर्मों से विपरीत है क्योंकि पृथिवी का विकार जो अन्न है तिससे उत्पन्नहै इससे आत्मा नहीं होसक्ता और प्राणभी आत्मा नहीं है जिससे बाहिर का दृश्य पवन है सोई प्राणहै तौ दृश्य और जड़होने से आत्मा उसको नहीं कहिसक्ते १९ और मनभी आत्मा नहीं है जिससे वह मन अहंकार का विकारहै और अहंकारभी आत्मा नहीं जिससे अहंकार प्रकृतिका विकार जो महतत्त्व से उत्पन्न हुआ है इससे जो चिदानन्दमय है और विकाररहित है और जो देहादि संगसे रहित है सो आत्माहै और वही ईश्वरहै २० और वह निरञ्जनहै निर्मलहै जिससे उपाधिरूप मलसे छूटाहै ऐसे आत्मा को जानि कै पुरुष मुक्तिको प्राप्तहोताहै तिससे हे श्रेष्ठमति रावण इस मुक्तिका अत्यन्त उत्तम साधन मैं कहता हौं तिसको एकाग्रचित्तहो श्रवणकरौ २१ ॥

विष्णोर्हिभक्तिःसुविशोधनंधियस्ततोभवेज्ज्ञानमतीवनिर्मलम् ॥ विशुद्धतत्त्वानुभवोभवेत्ततःसम्यग्विदित्वापरमंपदंव्रजेत् २२ अतो भजस्वाद्यहरिंरमापतिंरामंपुराणंप्रकृतेःपरंविभुम् ॥ विसृज्यमौर्ख्यंहृदिशत्रुभावनांभजस्वरामंशरणागतप्रियम्॥ सीतांपुरस्कृत्यसपुत्रबांधवोरामंनमस्कृत्यविमुच्यसेभयात् २३ रामंपरात्मानमभावयन्जनो भक्त्याहृदिस्थंसुखरूपमद्वयम् ॥ कथंपरंतीरमवाप्नुयाज्जनोभवांबुधेर्दुःखतरंगमालिनः २४ नोचेत्त्वमज्ञानमयेनवह्निनाज्वलंतमात्मानमरक्षितारिवत्॥नयस्यधोधःस्वकृतैश्चपातकैर्विमोक्षशंकानचतेभविष्यति २५ श्रुत्वामृतास्वादसमानभाषितंतद्वायुसूनोर्दशकन्धरोऽसुरः॥ अमृष्यमाणोऽतिरुषाकपीश्वरंजगादरक्तांतविलोचनोज्वलम् २६ कथंममाग्रेविलपस्यभीतवत्प्लवंगमानामधमोऽसिदुष्टधीः॥ कएषरामः कतमोवनेचरोनिहन्मिसुग्रीवयुतंनराधमम् २७ त्वांचाद्यहत्वाजनकात्मजांततोनिहन्मिरामंसहलक्ष्मणंततः ॥ सुग्रीवमग्रेबलिनंकपीश्वरंसवानरैर्हन्म्यचिरेणवानर ॥ श्रुत्वादशग्रीववचःसमारुतिर्विवृद्धकोपेनदहन्निवासुरम् २८ ॥

विष्णुकी जो भक्तिहै सोई चित्तके शोधनकरनेका परमउपायहै और तिस भक्तिही से अतिनिर्मल ज्ञान होताहै और तिसज्ञानसे फिर आत्म साक्षात्कार होताहै फिर आत्म स्वरूपको जानके परमपदको प्राप्तहोता है अर्थात् ब्रह्मरूप

होजाताहै २२ इसकारणसे लक्ष्मीकापति और प्रकृतिसे परे और व्यापक और पुराण पुरुष ऐसा जो राम तिसका इससमयमें भजनकरो और अपनी मूर्खताको और राममें शत्रुभावको त्यागकर शरणागतहै प्रिय जिसको ऐसे रामका भजनकरो २३ और सीताको अगाड़ीकर पुत्र बांधव सहित रामको नमस्कार कर भयसे छूट जावोगे और हृदयमें स्थित और सदा सुखरूप और द्वैतभाव करके रहित ऐसे जो परमात्मा राम तिनको हृदय में जानिकै नहीं भावना करे तौ मनुष्य दुःख रूप तरंगोंका है समूह जिसमें ऐसे संसार रूपी समुद्रके पार कैसे प्राप्त होसक्ताहै २४ और जो तुम मेरा कहा न मानोगे और अज्ञान रूपी अग्नि करके जलता हुआ जो आत्मा अपना अन्तःकरण तिसकी नहीं रक्षाकरोगे और अपने कियेहुये जे परस्त्रीहरण ऋषि मारणादि पातक तिन करके अपनाको नीचे नीचे लोकमें प्राप्त करोगे तो कभी न छूटोगे २५ अब रावण अमृत कासास्वादु जिसमें ऐसा हनुमान् का वचन सुनिकै भी नहीं सहताहुआ और क्रोध करके लालहुये हैं नेत्रजिसके सो अग्निकीतरह प्रज्वलितहुआ हनुमान् से बोला २६ कि कैसे मेरे आगे निर्भयकी तरह बोलरहा है इससे वानरों के बीचमें अधम और तू दुष्ट बुद्धिहै और कौन रामहै जिसकी प्रशंसा कररहाहै और बनेचर सुग्रीव किनमें श्रेष्ठहैं इससे सुग्रीव युक्त जो नरों में अधम राम तिसको मारोंगा २७ और इससमय तुझको मारके फिर सीता को मारोंगा तिसके अनन्तर लक्ष्मण सहित रामको मारोंगा और हे वानर तिसके उपरान्त वानरोंकरके सहितवानरों के राजाबली सुग्रीवको मारोंगा अब पवनकापुत्र जो हनुमान् सो रावणके वचनसे बढ़ाहुआ जो क्रोधतिस करकेरावणको भस्म करताहुआ बोला २८ ॥

नमेसमारावणकोटयोऽधमारामस्यदासोऽहमपारविक्रमः ॥ श्रुत्वातिकोपेनहनूमतोवचोदशाननोराक्षसमेकमब्रवीत् २९ पार्श्वेस्थितस्मारयखण्डशःकपिंपश्यन्तुसर्वेऽसुरमित्रबांधवाः ॥ निवारयामासततोविभीषणोमहासुरंसायुधमुद्यतंवधे ३० राजन्वधार्होनभवेत्कथंचनप्रतापयुक्तैःपरराजवानरः ॥ हतेस्मिन्वानरेदूतेवार्ताकोवानिवेदयेत्॥ रामायत्वंयमुद्दिश्यवधायससुपस्थितः ३१ अतोवधसमंकिंचिदन्यच्चिंतयवानरे ॥ सचिह्नोगच्छतुहरिर्यंदृष्ट्वायास्यतिद्रुतम् ३२ रामःसुग्रीवसहितस्ततोयुद्धम्भवेत्तव ॥ विभीषणवचःश्रुत्वारावणोप्येतदब्रवीत् ३३ वानराणांहिलांगूलेमहामानोभवेत्किल ॥ अतोवस्त्रादिभिःपुच्छंवेष्टयित्वाप्रयत्नतः ३४

कि कठोरों अधमरावण मेरेसमान नहीं हैं और अपार है विक्रम पराक्रम जिसका ऐसा मैं रामकादूतहौं २९ तब रावणहनुमान्का बचनसुनिकै अतिक्रोधयुक्तहो अपनेसमीपस्थितजोराक्षस तिससेबोलाकि टुकड़ेटुकड़ेकरके इसबानरकोमार डालजिसमेंमेरेभाईबन्धुराक्षससबदेखैं तबबिभीषण उससमयमेंमारनेकोउद्यत हुआजोवहशस्त्रयुक्त राक्षस तिसको निवारणकर रावणसेबोला ३० कि हेराजन् प्रतापयुक्त जोराजाहैं तिनको शत्रुकी राज्यका यहबानरमारने के योग्य नहीं है क्योंकि दूतकामारनानीति बिरुद्धहै और मुख्य अभिप्रायतौ यहहैकि प्रतापयुक्त भी तुम इंन्द्रजित् आदि लेकेहौ परन्तु किसीकी सामर्थ्य इस बानरके मारने की नहीं है और दूसराकारण यह है कि यहदूत वानर माराजायगा तो राम से खबर कौन करैगा जिस रामके मारनेको तुम उद्यत होरहेहौ ३१ इससे बधके समान और कुछ दंड इसवानरको विचार कियाजावै और इसबानरके अंगमें कोई चिह्न होजाय तौ चिह्नयुक्त वानर यह जाय तौ सुग्रीवसहित रामशीघ्रही आवैं ३२ तौ तुम्हारा युद्ध होय यह बिभीषणके वचनसुनिकै रावण यह कहताहुआ ३३ कि वानरोंकी पूंछमें बड़ी प्रीति और ममता होती है इससे बड़े यत्नसे पूंछको बहुतसे बस्त्रोंसे लपेटकरके ३४ ॥

वह्निनायोजयित्वैवभ्रामयित्वापुरेऽभितः॥विसर्जयतपश्यंतुसर्वेवानरयूथपाः ३५ तथेतिशणपट्टैश्चवस्त्रैरन्यैरनेकशः॥तैलाक्तैर्वेष्टयामासुलांगूलमारुतेर्दृढम् ३६ पुच्छाग्रेकिंचिदनलंदीपयित्वाथराक्षसाः॥सुदृढंबध्वाधृत्वातंबलिनोऽसुराः ३७समंताद्भ्रामयामासुश्चोरोयमितिरज्जुभिः तिवादिनः॥तूर्यघोषैर्घोषयंतस्ताडयंतोमुहुर्मुहुः ३८हनूमतापितत्सर्वंसोढंकिंचिच्चिकीर्षुणा॥गत्वातुपश्चिमद्वारसमीपंतत्रमारुतिः ३९ सूक्ष्मोबभूवबंधेभ्योनिःसृतःपुनरप्यसौ ॥ बभूवपर्वताकारस्तत उत्प्लुत्यगोपुरम् ४० तत्रैकस्तंभमादायहत्वातान्रक्षिणःक्षणात् ॥विचार्य्यकार्य्यशेषंसःप्रासादाग्राद्गृहाद्गृहम् ४१ ॥

फिर इसकी पूंछमें आगलगाकर और लंकापुरी में चारोंतरफ घुमाकर छोड़देउ तौ सब वानरों के यूथपती इसको विना पूंछकादेखैं ३५ फिर तैसेही रावणकी आज्ञासे सनके वस्त्र और बहुतसेरुईके वस्त्रों करके और तेलसे डूबे हुये अनेक वस्त्रों करके राक्षस हनुमान्की पूंछको दृढ़ करके लपेटतेहुये ३६ फिर वे बली राक्षस उस वानर की पूंछमें अग्नि जलाकरऔर रस्सियों से बहुत दृढ़ बांधि के नगरके चारोंतरफ उस बानरको घुमातेहुये ३७ और यह चोर है ऐसा कहतेहुये और बाजेबजाते हुये वारम्बार उस वानरको ताड़न

करतेहुये ३८ तौ हनुमान् भी कुछ कार्यके करनेकी इच्छा करके वह सब तिरस्कार सहते हुये फिर हनुमान् लंकाके पश्चिम द्वारपै पहुँचके ३९ सूक्ष्म होजातेहुये अर्थात् शरीरको पतलाकर देतेहुये फिर जब वे रस्सीके बन्धनढीले हुये तो उनसे निकल जातेहुये फिर पर्वताकार हो एक लंकाके द्वारपर कूद के चढ़के ४० उसका एक खम्भा उखाड़के उस करके जितने रक्षाकरनेवाले राक्षस थे तिनको क्षणमात्र में मारके और जो कुछ कार्य करनेको बाकी रहा है तिसको विचार करके महल से महल के ऊपर ४१ ॥

उत्प्लुत्योत्प्लुत्यसंदीप्तपुच्छेनमहताकपिः॥ददाहलंकामखिलांसाट्टप्रासादतोरणाम् ४२ हातातपुत्रनाथेतिक्रंदमानाःसमंततः॥व्याप्ताःप्रासादशिखरेप्यारूढादैत्ययोषितः ४३ देवताइवदृश्यंतेपतंत्यःपावकेऽखिलाः॥ विभीषणगृहंत्यक्त्वासर्वंभस्मीकृतंपुरम् ४४ ततउत्प्लुत्यजलधौ हनूमान्मारुतात्मजः॥लांगूलंमज्जयित्वांतःस्वस्थचित्तोबभूवसः४५ वायोःप्रियसखित्वाच्चसीतयाप्रार्थितोऽनलः ॥ नददाहहरेःपुच्छंबभूवात्यंतशीतलः ४६ यन्नामसंस्मरणधूतसमस्तपापास्तापत्रयानलमपीहतरंतिसद्यः ॥ तस्यैवकिंरघुवरस्यविशिष्टदूतःसन्तप्यतेकथमसौप्रकृतानलेन ४७ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादे सुन्दरकाण्डेचतुर्थस्सर्गः ४ ॥

और घरसेघरकेऊपर कूदकूदके बलतीहुई जो पूंछ तिसकरके अटारी और महलऔरद्वार इनकरके सहित सारी लंकापुरीको हनुमान् भस्म करताहुआ अब महलों की अटारियों के ऊपर चढ़ीहुई जो राक्षसोंकी स्त्रियां ते हा तात हा पुत्र हानाथ ऐसे वचन उच्चारण करती हुईं चारों तरफ से अग्नि के दाह करके चिंचिया चिंचियाके रोवतीहुई४२।४३ बलतीहुई अग्निमें गिरती हुईं जैसे आकाशसे देवता गिरैं तैसे दिखाई पड़रहीहैं इसप्रकार हनुमान् एक विभीषणके गृहको त्यागकर सब लंकापुरी को भस्म करता हुआ ४४ तब पवन कापुत्र हनुमान् कूदके समुद्रमें पूंछकोबुझाके स्वस्थचित्तहोताहुआ ४५ पवन का प्रिय सखाहै इससे और पतिव्रता सीता करके प्रार्थना किया गया ऐसा जो अग्नि सो हनुमान् की पूंछको नहीं जलाता हुआ और अत्यन्त शीतल होगया ४६ जिस रामनामके स्मरणसे नष्ट होगये हैं संपूर्णपाप जिन्हों के ते अध्यात्म अधिदैव अधिभूत यह तीन प्रकारके अग्निके पार शीघ्रही प्राप्तहोते

हैं तिसही रामका प्रियदूत जो हनुमान् सो प्राकृत अग्नि करके कैसे संतप्त होय ४७ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेसुन्दरकाण्डे भाषाटीकायांचतुर्थस्सर्गः ४ ॥

ततःसीतांनमस्कृत्यहनूमानब्रवीद्वचः ॥ आज्ञापयतुमांदेविभवतीरामसन्निधिम् १ गच्छामिरामस्त्वांद्रष्टुमागमिष्यतिसानुजः ॥ इत्युक्त्वात्रिःपरिक्रम्यजानकींमारुतात्मजः २ प्रणम्यप्रस्थितोगंतुमिदंवचनमब्रवीत् ॥ देविगच्छामिभद्रंतेतूर्णंद्रक्ष्यसिराघवम् ३ लक्ष्मणंचससुग्रीवंवानरायुतकोटिभिः ॥ ततःप्राहहनूमंतंजानकीदुःखकर्शिता ४ त्वांदृष्ट्वाविस्मृतंदुःखमिदानींत्वंगमिष्यसि ॥ इतःपरंकथंवर्तेरामवार्ताश्रुतिंविना ५ ॥ मारुतिरुवाच ॥ यद्येवंदेविमेस्कंधमारोहक्षणमात्रतः ॥ रामेणयोजयिष्यामिमन्यसेयदिजानकि ६ ॥ सीतोवाच ॥ रामःसागरमाशोष्यबध्वावाशरपंजरैः ॥ आगत्यवानरैःसार्द्धं हत्वारावणमाहवे ७ ॥

दो० । पंचम सर्ग विदेहजा करि प्रणाम हनुमान ॥
पुनिसीताकी रामसों कहीकुशल बलवान १

अब श्री महादेवजी पार्वती से कथा वर्णन करते हैं कि हे पार्वति तिसके उपरान्त हनुमान् सीताको नमस्कार करके बचन बोला कि हे देवि मुझको रामके समीप जाने को आज्ञा दीजिये १ और लक्ष्मण सहित राम तुमको देखनेको शीघ्रही आवैंगे यह कहिके हनुमान् सीताकी तीनबार परिक्रमा करके २ और प्रणाम करके यात्रा करने को उद्यतहुआ यह वचन बोला कि हे देवि मैं जाताहूं और तेराकल्याण होय और तुम शीघ्रही ३ कड़ोरों वानरों करके सहित और सुग्रीव करके सहित रामको देखोगी और लक्ष्मणको देखोगी तव दुःख करके दुर्बल जो सीता सो हनुमान् से बोलतीहुई ४ कि हे हनुमन् तुमको देखके मुझको दुःख विस्मृत होगया रहा और अब तुम जातेहो तो इसके उपरान्त कैसे रहौंगी बिना रामकी बार्त्ता सुने ५ तौ हनुमान् कहता हुआ कि देवि जो ऐसा वियोग तुमसे नहीं सहाजाता है तौ मेरे कंधेपै सवार हूजिये अभी क्षणमात्रमें मैं रामसे तुम्हैं मिलाताहौं हे जानकि जो ऐसा मानौतौ ६ तब सीता कहतीहुई कि हे हनुमन् जोराम बाणोंकरके समुद्रकोसुखाके अथवा बाणोंहीके समूहसे पुल बांधिकै वानरों करके सहित आके और संग्राममें रावणको मारिकै ७ ॥

मानयेद्यदिरामस्यकीर्तिर्भवतिशाश्वती ॥ अतोगच्छकथंचापि प्राणान्संधारयाम्यहम् ८ इतिप्रस्थापितोवीरःसीतयाप्रणिपत्यताम् ॥ जगामपर्वतस्याग्रेगंतुंपारंमहोदधेः ९ तत्रगत्वामहासत्वःपादाभ्यांपीडयन्गिरिम् ॥ जगामवायुवेगेनपर्वतश्चमहीतलम् १० ततोमहीसमानत्वंत्रिंशद्योजनमुच्छ्रितः ॥ मारुतिर्गगनांतस्थोमहाशब्दंचकारसः ११ तंश्रुत्वावानराःसर्वेज्ञात्वामारुतिमागतम् ॥ हर्षेणमहताविष्टःशब्दंचक्रुर्महास्वनम् १२ शब्देनैवविजानीमःकृतकार्यःसमागतः ॥ हनूमानेवपश्यध्वंवानरावानरर्षभम् १३ एवंब्रुवत्सु वीरेषुवानरेषुसमारुतिः॥अवतीर्यगिरेर्मूर्ध्निवानरानिदमब्रवीत् १४ ॥

जो मुझको लेजायँ तौ रामकी बहुत कालतक कीर्ति होगी इससे तुम जावो मैं कैसेही तबतक प्राणोंको धारण करौंगी ८ इस प्रकार सीता करके भेजा गया जो वीर हनुमान् सो सीताको प्रणाम करके समुद्रके पार जाने को पर्वतके ऊपर चढ़ताहुआ ९ तब बड़ा बलवान् हनुमान् उस पर्वतपै जाके और पांवों से पर्वतको दवाके पवनके वेग करके चलताहुआ और पर्वत भी पृथिवीमें धसता हुआ १० तब तीस योजन ऊंचापर्वत हनुमान् के दबाने से पृथिवी के बराबर होगया और हनुमान् आकाश मार्ग में स्थितहो घोर शब्द करताहुआ ११ उस शब्दको सुनिकै सब वानर आवते हुये हनुमान् को जानिकै बड़े आनन्द युक्तहो बड़े शब्दसे गर्जतेहुये १२ और सब वानर परस्पर कहतेहुये कि शब्दहीकरके हम जानते हैं कि यह हनुमान् कार्यको सिद्धकरके आयाहै और हे वानरो यह वानरोंमें श्रेष्ठ जो हनुमान् तिसको देखौ १३ इस प्रकार सबवीर वानरलोग वार्तालाप करतेथे तबतक हनुमान् पर्वतके शिखर के ऊपर आकाश से उतरके यह वचन बोलता हुआ १४ ॥

दृष्टासीतामयालंकाधर्षिताचसकानना ॥ सम्भाषितोदशग्रीवस्ततोऽहंपुनरागतः १५ इदानीमेवगच्छामोरामसुग्रीवसन्निधिम् ॥ इत्युक्तावानराःसर्वेहर्षेणालिंग्यमारुतिम् १६ केचिच्चुचुंबुर्लांगूलंनन्तुः केचिदुत्सुकाः ॥ हनूमतासमेतास्तेजग्मुःप्रस्रवणंगिरिम् १७ गच्छंतोददृशुर्वीरावनंसुग्रीवरक्षितम् ॥ मधुसंज्ञंतदाप्राहुरंगदंवानरर्षभाः १८ क्षुधिताःस्मोवयंवीरदेह्यनुज्ञांमहामते ॥ भक्षयामःफलान्यद्यपिवामोऽमृतवन्मधु १९ सन्तुष्टाराघवंद्रष्टुंगच्छामोऽद्यैवसानुजम् २० ॥

अङ्गदउवाच ॥ हनूमान्कृतकार्योयंपिवतैतत्प्रसादतः ॥ जक्षध्वंफल मूलानित्वरितंहरिसत्तमाः २१ ॥

कि मैंने सीता देखी और लंकापुरी बनकरके सहित तिरस्कृत की अर्थात् उसको जीता और रावणसे बार्तालाप भी किया तिसके उपरान्त फिर मैं यहां प्राप्त हुआ १५ और इसीसमय में हम सब राम और सुग्रीव इनके समीप चलैंगे इसप्रकार हनुमान् ने कहा तौ सबवानर बड़े आनन्द से हनुमान् को आलिंगनकरके १६ कोई तौ हनुमान् की पूँछको चूमतेहुये और कोई बड़ी प्रीतिसे नाचतेहुये फिर हनुमान्करके सहित सबवानर प्रवर्षणनाम पर्वत पै जातेहुये जहां राम औ सुग्रीव स्थित हैं १७ अब मार्ग जातेहुये वानर सुग्रीव करके रक्षा कियागया एक मधुबन तिसको देखतेहुये और अंगद से यह कहते हुये १८ कि हे वीर हम सबोंको भूंख लगरही है इससे आज्ञाकरौ तौ इसबन में फलोंको खावैं और अमृत के तुल्य जो मधु है अर्थात् ताड़ी आदि मद्य हैं तिनको पीवैं १९ फिर खा पीके जब सन्तुष्ट होजावैंगे तब लक्ष्मण सहित रामके देखने को चलैंगे २० तब अंगद बोला कि यह हनुमान् कार्यकोकरि आयाहै इससे इसकेप्रसादसे तुम सब इसबनमें फलमूल भोजनकरौ २१ ॥

ततःप्रविश्यहरयःपातुमारेभिरेमधु ॥ रक्षिणस्ताननादृत्यदधिव क्त्रेणनोदितान् २२ पिवतस्ताडयामासुर्वानरान्वानरर्षभाः ॥ तत स्तान्मुष्टिभिःपादैश्चूर्णयित्वापपुर्मधु २३ ततोदधिमुखःक्रुद्धःसुग्रीव स्यसमातुलः ॥ जगामरक्षिभिःसार्द्धंयत्रराजाकपीश्वरः २४ गत्वात मब्रवीद्देवचिरकालाभिरक्षितम् ॥नष्टंमधुवनंतेद्यकुमारेणहनूमता २५ श्रुत्वादधिमुखेनोक्तंसुग्रीवोहृष्टमानसः ॥ दृष्टागतोनसंदेहःसीतांपव ननंदनः २६ नोचेन्मधुवनंद्रष्टुंसमर्थःकोभवेन्मम ॥ तत्रापिवायुपुत्रे णकृतंकार्यंनसंशयः २७ श्रुत्वासुग्रीववचनंहृष्टोरामस्तमब्रवीत् ॥ किमुच्यतेत्वयाराजन्वचःसीताकथान्वितम् २८ ॥

तबतौ सब वानर अंगदकी आज्ञाकरके उस बनमें प्रवेशकरके वनके रख-वारों का अनादरकरके मधुके पानकरनेको प्रारम्भ करतेहुये २२ और उसी समय में उस बनका मालिक सुग्रीव की तरफ से दधिमुखनाम वानर जो कि सुग्रीवका मामा था उसकी आज्ञासे उस बनके रक्षक जे वानर थे ते सब आकर उन वानरों को मनाकरतेहुये और जब उन्होंने नहीं माना तौ वे रखवारे वानर उन्होंको ताड़न करतेहुये तबतौ फिर अंगदकी आज्ञासे वे वा-नर रक्षाकरनेवाले वानरों को घूँसों और लातोंसे खूब मारतेहुये और अंगद

ने दधिमुखको उठाके देमारा और खूब लातों व घूँसोंसे मारा और उस बनमें जो उत्तमफल और मधुर रहे तिनकरके अपने हनुमान् आदि वानरों को खूब तृप्त किया २३ तबतौ दधिमुखनाम वानर अपने बनके रक्षाकरनेवाले सब वानरोंको संगलेके सुग्रीवकेपास जाताहुआ २४ और जाकरके यह कहा कि हे राजन् आपका बहुत कालका रक्षा कियागया मधुवन आज अंगद और हनुमान् ने नाश करवादिया और हम सबको मारा २५ तब यह दधिमुख वानर के वचन सुनिकै सुग्रीव बड़ा प्रसन्नहुआ और यह कहनेलगा कि यह निश्चयहै कि हनुमान् सीताको देखके आयाहै २६ और जो ऐसा नहोता तौ मेरे रक्षाकियेहुये मधुवन के देखनेको भी कौन समर्थ है तिसमें भी यह कार्य हनुमान्नेही कियाहै इसमें कुछ सन्देह नहीं २७ तब ये सुग्रीवके वचनसुनिकै राम प्रसन्नहोके सुग्रीव से बोले कि हे राजन् सीताकी कथा करके युक्त क्या वचन तुमने कहा २८॥

सुग्रीवस्त्वब्रवीद्वाक्यंदेवदृष्टावनीसुता ॥ हनूमत्प्रमुखाःसर्वेप्रविष्टामधुकाननम् २९ भक्षयंतिस्मसकलंताडयंतिस्मरक्षिणः ॥ अकृत्वादेवकार्यंतेद्रष्टुंमधुवनंमम ३० नसमर्थास्ततोदेवीदृष्टासीतेतिनिश्चितम् ॥ रक्षिणोवोभयंमास्तुगत्वाब्रूतममाज्ञया ३१ वानरानंगदमुखानानयध्वंममांतिकम् ॥श्रुत्वासुग्रीववचनंगत्वातेवायुवेगतः ३२ हनुमत्प्रमुखानूचुर्गच्छतेश्वरशासनात् ॥ द्रष्टुमिच्छतिसुग्रीवःसरामोलक्ष्मणाऽन्वितः ३३ युष्मानतीवहृष्टास्तेत्वरयंतिमहाबलाः ॥ तथेत्यम्बरमासाद्यययुस्तेवानरोत्तमाः ३४ हनूमंतंपुरस्कृत्ययुवराजंतथांगदम् ॥ रामसुग्रीवयोरग्रेनिपेतुर्भुविसत्वरम् ३५ ॥

तब सुग्रीव वचनबोला कि हे देव सीता हनुमान्ने देखी क्योंकि हनुमान् को आदिलेकै वानर मधुवनमें प्रवेशकर फलोंको खारहे हैं २९ और उस बन के रक्षा करनेवालोंको ताडन कररहे हैं और हे राम बिना तुम्हारे कार्यकोकरे मेरे मधुवनके देखनेको कोई वानर समर्थ नहीं है ३० तिस कारणसे सीता देवीको देखके आये यह निश्चयहै अब वानरों से सुग्रीव बोला कि हे बनके रक्षा करनेवाले वानरो तुमको अब भय नहीं है और तुम मेरी आज्ञा करके जाके उन वानरों से कहो ३१ और अंगदको आदिलेके वानरोंको मेरे समीप शीघ्रही प्राप्तकरौ तब सुग्रीवके वचन सुनिकै पवनके वेग करके वे सब वानर जाके ३२ हनुमान् को आदि लेके जे वानरहैं तिनसेकहतेहुये कि तुम शीघ्रही जाओ राजाकी आज्ञासे और राम लक्ष्मण सहित सुग्रीव तुम सबको देखना

चाहते हैं ३३ और हे महा बलयुक्त वानरो रामलक्ष्मण और सुग्रीव ये अत्यन्त प्रसन्न हुये तुम्हारे देखनेको शीघ्रता कररहेहैं तब यह सुनिकै शीघ्रही हनुमान् आदि वानर आकाश मार्ग करके जाते हुये ३४ अब सब वानर हनुमान् को और अंगदको आगेकरके रामसुग्रीवके आगे दण्डवत् प्रणाम करते पृथिवी में पड़तेहुये ३५॥

हनूमान्राघवंप्राहदृष्टासीतानिरामया ॥ साष्टांगंप्रणिपत्याग्रेरामंपश्चाद्धरीश्वरम् ३६ कुशलंप्राहराजेंद्रजानकीत्वांशुचाऽन्विता ॥ अशोकवनिकामध्येशिंशपामूलमाश्रिता ३७ राक्षसीभिःपरिवृतानिराहाराकृशाप्रभो ॥हारामरामरामेतिशोचंतीमलिनाम्बरा ३८ एकवेणीमयादृष्टाशनैराश्वासिताशुभा ॥ वृक्षशाखांतरेस्थित्वासूक्ष्मरूपेणतेकथाम् ३९ जन्मारभ्यतवात्यर्थंदण्डकागमनंतथा॥दशाननेनहरणंजानक्यारहितेत्वयि ४० सुग्रीवेणयथामैत्रीकृत्वाबालिनिबर्हणम्॥ मार्गणार्थंचवैदेह्याःसुग्रीवेणविसर्जिताः ४१ महाबलामहासत्वाहरयोजितकाशिनः ॥ गताःसर्वत्रसर्वेवैतत्रैकोऽहमिहागतः ४२ ॥

तब हनुमान् रामको प्रथम दण्डवत् प्रणामकर फिर सुग्रीवको प्रणाम करके बोला कि दोष रहित सीता मैंने देखी ३६ और हे राजेन्द्र शोक करके युक्त जो सीताहै सो आपकी कुशलपूंछती हुई और अशोक बनिकाके मध्यमें शिशम वृक्षके जड़के समीप बैठी ३७ और राक्षसियों करके वेष्टित और आहार जिसने त्याग करदिया है इसीसे शरीर जिसका दुर्बल होरहाहै और हा राम हा राम हा राम ऐसा कहि कहिकै शोच करतीहुई और मलिन बस्त्रको धारणकरे ३८ और एक बेणी धारण करे ऐसी सीता मैंने देखी और फिर धीरे धीरे उसके चित्तको मैंने सावधान किया सूक्ष्म रूप धारण करके वृक्षकी शाखाके ऊपर स्थित हो जन्मसे लेकै आपकी कथा मैंने कही ३९ फिर दण्डकवनको जैसे आना हुआ फिर शून्यस्थानमेंसे जैसे रावणने सीताको हरा४० फिर सुग्रीव के साथ मित्रता करके जैसे आपने बालीका बध किया फिर सीताके ढूंढ़नेको जैसे सुग्रीवने सब दिशाओं में बड़े बड़े बली वानर भेजे ४१ तिनवानरोंमें एक मैं यहां आके प्राप्तहुआ हौं ४२ ॥

अहंसुग्रीवसचिवोदासोऽहंराघवस्यहि ॥ दृष्टायज्जानकीभाग्यात्प्रयासःफलितोद्यमे ४३ इत्युदीरितमाकर्ण्यसीताविस्फारितेक्षणा॥ केनवाकर्णपीयूषंश्रावितंमेशुभाक्षरम् ४४ यदिसत्यंतदायातुमद्दर्शन

पथंतुसः ॥ ततोऽहंवानराकारःसूक्ष्मरूपेणजानकीम् ४५ प्रणम्यप्रां जलिर्भूत्वादूरादेवस्थितःप्रभो ॥ पृष्टोऽहंसीतयाकस्त्वमित्यादिबहु विस्तरम् ४६ मयासर्वंक्रमेणैवविज्ञापितमरिंदम ॥ पश्चान्मयार्पितं देव्यैभवद्दत्तांगुलीयकम् ४७तेनमामतिविश्वस्तावचनंचेदमब्रवीत्॥ यथाहष्टास्मिहनुमन्पीड्यमानादिवानिशम् ४८ राक्षसीनांतर्जनैस्त त्सर्वंकथयराघवे ॥ मयोक्तन्देविरामोपित्वच्चिन्तापरिनिष्ठितः ४९ ॥

और मैं सुग्रीव का मन्त्री हौं और रामका दास हौं और जो भाग्य वशसे सीता मैंने देखी इससे मेरा प्रयास अर्थात् यत्न सफल हुआ ४३ यह मेरा कहा हुआ वचन सुनिकै सीता आंख खोलके यह कहतीहुई कि किसने मेरे कानोंको अमृत तुल्य यह वचन सुनाया ४४ जो सुनानेवाला कोई सत्यही होय तौ मेरे नेत्रोंके आगे आवै तौ मैं सूक्ष्म वानर के रूप करके सीता को प्रणाम करके ४५ और हाथ जोड़ के दूरही स्थित होता हुआ फिर सीता ने मुझसे विस्तार पूर्वक पूँछा तुम कौनहो ४६ अर्थात् मुझमें रावणकी शंकासे भय करती रही तब हे राम मैंने क्रमकरके सब अपना वृत्तान्त जताया पिछाड़ी से आपकी मुद्रिका मैंने सीताके अर्थ दी ४७ तिसकरके मेरमें विश्वास करके यह वचन बोलतीहुई कि हे हनुमन् जैसे मैं रात्रि दिवस राक्षसियोंके तर्जन अर्थात् डरपाना और ताड़नादिक करके पीड़ाको प्राप्त होरही हौं ४८ तैसे सब रघुनन्दनसे कहना तौ मैंने यह कहा कि हे देवि राम भी तुम्हारी चिन्तामें मग्नरहते हैं ४९ ॥

परिशोचत्यहोरात्रंत्वद्वार्तांनाधिगम्यसः ॥ इदानीमेवगत्वाहंस्थितिंरामायतेब्रुवे ५० रामः श्रवणमात्रेणसुग्रीवेणसलक्ष्मणः ॥ वानरानीकपैःसार्द्धमागमिष्यतितेन्तिकम् ५१ रावणंसकुलंहत्वानेष्यति त्वांस्वकंपुरम् ॥ अभिज्ञांदेहिमेदेवियथामांविश्वसेद्विभुः ५२ इत्युक्तासाशिरोरत्नंचूडापाशेस्थितंप्रियम् ॥ दत्वाकाकेनयद्वृत्तंचित्रकूट गिरौपुरा ५३ तदप्याहाश्रुपूर्णाक्षीकुशलंब्रूहिराघवम् । लक्ष्मणंब्रूहि मेकिंचिद्दुरुक्तंभाषितंपुरा ५४ तत्क्षमस्वाज्ञभावेनभाषितंकुलनंदन॥ तारयेन्मांयथारामस्तथाकुरुकृपान्वितः ५५ इत्युक्त्वारुदतीसीतादुःखेनमहताद्रुतः ॥ मयाप्याश्वासितारामवदतासर्वमेवते ५६ ॥

और रात दिन शोच किया करते हैं और तुम्हारी वार्ताको अभी अच्छीतरह नहीं जानते हैं जिससमयमें मैं रामसे तुम्हारा वृत्तान्त सबसुनाऊँगा ५० तब

सुनतेही सुग्रीव और लक्ष्मणकरके सहित रामचन्द्र वानरों के सेनापतियों करके सहित तुम्हारे समीप आवेंगे ५१ और कुल सहित रावणको मारके तुमको अपने नगरको लेजावेंगे और हे देवि ऐसी कुछ पहिंचान की वस्तुदेवो जिससे राम मेरे में विश्वासकरें ५२ ऐसे जब मैंने सीतासे कहा तो अपने केशोंमें स्थित जो चूड़ामणि तिसको मुझको देके फिर चित्रकूट पै जयन्तकाक का जो पहिले वृत्तान्त आपका हुआथा तिसको कहतीहुई ५३ और नेत्रों से जिसके आंशुओंकी धारा चलरही ऐसी सीता कहतीहुई कि रामसे मेरी कुशल कहना और लक्ष्मण से यह कहना कि हे कुलनन्दन जो मैंने तुमसे दुष्ट वचन कहे हैं ५४ तिनको क्षमा करने योग्यहौ कि मैंने अज्ञातासे कहा इससे अब इस विपत्ति से जिसप्रकार करके राम मेरा उद्धार करैं तैसे कृपायुक्त होके करौगे ५५ यह कहिके रोवती हुई जो सीता सो बड़े दुःखमें मग्न होगई तो हे राम मैंने आप के चरित्र सुनाके उनका चित्त सावधान किया ५६ ॥

ततःप्रस्थापितोरामत्वत्समीपमिहागतः ॥ तदागमनवेलायामशोकवनिकांप्रियाम् ५७ उत्पाट्यराक्षसांस्तत्रबहून्हत्वाक्षणादहम्॥ रावणस्यसुतंहत्वारावणेनाभिभाष्यच ५८ लंकामशेषतोदग्ध्वापुनरप्यगमंक्षणात् ॥ श्रुत्वाहनूमतोवाक्यंरामोत्यंतप्रहृष्टधीः ५९ हनूमंस्तेकृतंकार्यंदेवैरपिसुदुष्करम् ॥उपकारंनपश्यामितवप्रत्युपकारिणः ६० इदानींतेप्रयच्छामिसर्वस्वंममारुते ॥ इत्यालिंग्यसमाकृष्य गाढंवानरपुंगवम् ६१ सार्द्रनेत्रोरघुश्रेष्ठःपरांप्रीतिमवापसः ॥ हनूमंतमुवाचेदंराघवोभक्तवत्सलः ६२ परिरंभोहिमेलोकेदुर्लभःपरमात्मनः ॥ अतस्त्वंममभक्तोसिप्रियोसिहरिपुंगव ६३ यत्पादपद्मयुगलंतुलसीदलाद्यैःसंपूज्यविष्णुपदवीमतुलांप्रयांति ॥ तेनैवकिंपुनरसौपरिरब्धमूर्ती रामेणवायुतनयःकृतपुण्यपुंजः ६४ सुन्दरकाण्डेसर्गाःपञ्चैवाध्यात्मिकशब्दिते ॥ प्रोक्तास्त्रीणिशतानिश्लोकास्त्रिभुवनपापहराः ॥

इत्यध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेसुन्दरकाण्डेपञ्चमस्सर्गः ५ ॥

हे राम तिसके उपरान्त सीताका भेजाहुआ मैं आपके समीप आया जब चलने लगा तब तो रावणकी बड़ी प्रिय जो अशोकवनिका तिसको उखाड़ के ५७ फिर रावणके भेजेहुये बहुत राक्षसों को क्षणमात्र में मार करिकै फिर रावणकापुत्र जो अक्षकुमार तिसको मारके और रावणसे सम्भाषणकरके ५८

और सबलंकाको भस्मकरके फिर क्षणमात्रमें यहां आपके समीप प्राप्त हुआ हों तब ये हनुमान् के वचनसुनिकै अत्यन्त प्रसन्न जो श्रीराम सो हनुमान् से बोले ५९ किहेहनुमन् देवतोंसेभी जो कार्य दुःख करके भी न होसकै सो तुम ने किया इससे तुम्हारे उपकार के तुल्य ऐसी कोई वस्तुनहीं देखता जिसको देके मैं उद्धारहोउँ ६० इससे हे हनुमन् अपना सर्वस्वभूत जो आलिंगन तिस को मैं देताहों इसका आशययहहै कि ब्रह्मानन्दमें सब आनन्द अन्तर्गतहैं सो आनन्दराशि ब्रह्मरूपरामने अपने हृदयमेंलगाके अपनेबराबर करलियातौ क्या आनन्द बाकीरहा इस हेतुसे श्रीरामचन्द्र हनुमान्को अपने हाथसे उठाके दृढ़ करके आलिंगन करतेहुये६१नेत्रोंसे जिनके अश्रुपात होरहाहै ऐसे जो रामसो उस समयमें परमप्रीतिसे आनन्दको प्राप्तहुये और भक्तहैं प्रिय जिनको ऐसे जो राम सो हनुमान् से बोले ६२ कि हे हनुमन् परमात्मा जो मैंहौं तिसका आलिंगन लोकमें दुर्लभहै और हे बानरोंमें श्रेष्ठ तू मेरा प्रियभक्तहै इसकारण से अपना आलिंगन मैंने तुझको दिया ६३ जिस परमेश्वरके चरणारविन्द को तुलसी दलादिक करके भी पूजनकरकै अतुल जो विष्णुपदवी विष्णुके मिलने का मार्ग तिसको प्राप्तहोताहै और तिसीरामकरके आलिंगन कियाहै अंग जिसका ऐसा जो हनुमान् सो उत्तमपदको प्राप्तहोय यह क्या कहनाहै६४

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेसुन्दरकाण्डे भाषाटीकायांपंचमस्सर्गः ५ ॥

समाप्तश्चायंसुन्दरकाण्डः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ अध्यात्मरामायण ॥

युद्धकाण्ड ॥

भाषा टीकासहित ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ यथावद्भाषितंवाक्यंश्रुत्वारामोहनूमतः ॥ उवाचानंतरंवाक्यंहर्षेणमहताद्वतः १ कार्यंकृतंहनुमतादेवैरपिसुदुष्करम् ॥ मनसापियदन्येनस्मर्त्तुंशक्यंनभूतले २ शतयोजनविस्तीर्णं लंघयेत्कःपयोनिधिम् ॥ लंकांचराक्षसैर्गुप्तांकोवाधर्षयितुंक्षमः ३ भृत्यकार्यंहनुमताकृतंसर्वमशेषतः ॥ सुग्रीवस्येदृशोलोकेनभूतोनभविष्यति ४ अहंचरघुवंशश्चलक्ष्मणश्चकपीश्वरः ॥ जानक्यादर्शनेनाद्यरक्षिताःस्मोहनूमता५ सर्वथासुकृतंकार्यंजानक्याःपरिमार्गणम् ॥ समुद्रंमनसास्मृत्वासीदतीवमनोमम ६ कथंनक्रझषाकीर्णंसमुद्रंशतयोजनम् ॥ लंघयित्वारिपुंहन्यांकथंद्रक्ष्यामिजानकीम् ७ ॥

दो० । प्रथमसर्गमें युद्धके युद्धहेतुरघुबीर ॥
बानरसेनसमेतचलिपहुंचेबारिधितीर १

अब श्री महादेव पार्वतीसे कथा वर्णन करते हैं कि हे पार्वति अबश्रीरामचन्द्रजी हनुमान्का बचन सुनिकै बड़े आनन्द युक्तहो वचन बोलते हुये १ कि देवताओंसे भी जो नहोसकै ऐसा दुष्कर कर्म हनूमान्ने किया जो और करके मनसे स्मरण करने को भी पृथिवीमें अशक्य है करने की तो बातही क्याहै २ क्योंकि सौ योजन चौड़े समुद्रको कौन नांघिसकै और राक्षसों करके रक्षित जो लंका तिसका नाश करने को सिवाय हनुमान् के कौन समर्थ है ३ जो भृत्यको करना चाहिये सो सब हनुमान् ने किया और सुग्रीव का हितकारी मंत्री ऐसा न कोई हुआ है औ न होगा ४ और रघुवंश में और लक्ष्मण और सुग्रीव इतने हम सब एक सीताकी खबरिके लानेसे हनुमान्ने रक्षा किये ५ और सब प्रकारसे सीताका ढूंढ़ना हनुमानने अच्छीतरह किया परन्तु इसके

अनन्तर जो करना चाहिये तिसमें समुद्रका जब मैं स्मरण करताहौं तौ मेरा मन दुःखित होताहै ६ और कैसे नाक और मकर आदि जलकेजीवों करके व्याप्त जो सौ योजन समुद्र तिसको पारहोके रावणको मारूंगा और फिर सीताको देखूंगा ७ ॥

श्रुत्वातुरामवचनंसुग्रीवःप्राहराघवम् ॥ समुद्रंलंघयिष्यामोमहानक्रझषाकुलम् ८ लंकांचविधमिष्यामोहनिष्यामोद्यरावणम् ॥ चिंतांत्यजरघुश्रेष्ठचिंताकार्यविनाशिनी ९ एतान्पश्यमहासत्वान्शूरान्वानरपुंगवान् ॥ त्वत्प्रियार्थंसमुद्युक्तान्प्रवेष्टुमपिपावकम् १० समुद्रतरणेबुद्धिंकुरुष्वप्रथमन्ततः ॥ दृष्टालंकांदशग्रीवोहतइत्येवमन्महे ११ नहिपश्याम्यहंकंचित्त्रिषुलोकेषुराघव ॥ गृहीतधनुषोयस्तेतिष्ठेदभिमुखोरणे १२ सर्वथानोजयोरामोभविष्यतिनसंशयः ॥ निमित्तानिचपश्यामितथाभूतानिसर्वशः १३ सुग्रीववचनंश्रुत्वाभक्तिवीर्यसमन्वितम् ॥ अंगीकृत्याब्रवीद्रामोहनूमत्पुरतःस्थितम् १४ ॥

तब ये रामके वचन सुनिकै सुग्रीव राम से कहताहुआ कि बड़े बड़े मकरादि युक्त समुद्रको हम सब वानर नांघिजावेंगे ८ और लंकापुरीका नाशकरैंगे और अभी जाके रावणको मारैंगे और हे रघुश्रेष्ठ चिन्ताको त्यागिये जिससे चिन्ता कार्यके नाशकरने वाली है ९ और हे रामजे बड़े शूर वानरोंमें श्रेष्ठ जे महाभाग वानर तिनको देखिये ये आपकी प्रीतिकरके अग्निमें भी प्रवेशकरने को उद्यतहैं १० इससे प्रथमतौ समुद्रके पारहोनेकी बुद्धि करनीचाहिये फिर लंकापुरी जहां देखी तहां रावण मराही हुआहै यह हमजानतेहैं ११ और हेराम तीनोंलोकमें हम ऐसा किसीको नहीं देखते जोजिस समयमें आप धनुष हाथ में लेवैं उस समयरणमें आपके आगे खड़ारहै १२ और राम सब प्रकारसे संग्राममें हमारा जय होगा क्योंकि ऐसे ऐसे शकुनआदि निमित्त हम देखते हैं १३ तब श्रीरामभक्ति और पराक्रम करके युक्त ये सुग्रीवके वचन सुनिकै अगाड़ी बैठाहुआ जो हनुमान् तिससे कहतेहुये १४ ॥

येनकेनप्रकारेणलंघयामोमहार्णवम् ॥ लंकास्वरूपम्मेब्रूहिदुःसाध्यंदेवदानवैः १५ ज्ञात्वातस्यप्रतीकारं करिष्यामिकपीश्वर ॥ श्रुत्वारामस्यवचनं हनूमान्विनयान्वितः १६ उवाचप्राञ्जलिर्देव यथादृष्टंब्रवीमिते ॥ लंकादिव्यापुरीदेवत्रिकूटशिखरेस्थिता १७ स्वर्णप्राकारसहितास्वर्णाट्टालकसंयुता ॥ परिखाभिःपरिवृतापूर्णाभिर्निर्मलो

दकैः १८ नानोपवनशोभाढ्यादिव्यवापीभिरावृता ॥ गृहैर्विचित्रशोभाढ्यैर्मणिस्तम्भमयैःशुभैः १९ पश्चिमद्वारमासाद्यगजवाहाःसहस्रशः ॥ उत्तरेद्वारितिष्ठन्तिसाश्ववाहाःसपत्तयः २० तिष्ठन्त्यर्बुदसंख्याकाःप्राच्यामपितथैवच॥रक्षिणोराक्षसावीराद्वारन्दक्षिणमाश्रिताः २१

कि हे हनुमन् जिस किसी प्रकार करके समुद्रके तौ पार होवैंगे अब लंकापुरी का स्वरूप हमसे कहौ जो देव दानवों करके भी प्रवेश करनेको नहीं शक्यहै १५ हे हनुमन् तिसको जानिकै फिर हम उसका यत्नकरैंगे तब ये रामके बचन सुनिके बिनयकरके युक्त जो हनुमान् सो हाथ जोड़के बोला १६ कि हे देव जैसे मैंने देखाहै तैसा सब आपसे कहताहूं हे राम लंका जो है सो दिव्यपुरी है अर्थात् देवतोंकी रची हुई है कुछ मनुष्योंकी रचीनहीं है और चित्रकूट पर्वतके शिखरके ऊपर स्थितहै १७ और सोनेकी दीवाल चारों तरफ उसके हैं और सोनेहीकी अटारी जिसमें हैं और निर्मल जलों करके परिपूर्ण जो खाई तिनकरिकै परिवेष्ठित होरही है १८ और नानाप्रकारके जे बगीचे हैं तिनकी शोभाकरिकै युक्त है और देवताओं की रचीहुई जो बावली तिन करके युक्तहै और चित्र विचित्र शोभायुक्त और मणियोंके जिनमें खम्भेहैं ऐसे जे बड़े सुन्दरगृह तिनकरके शोभितहै १९ और ऐसी जो लंका तिसके पश्चिम के द्वारपै हजारों हाथियोंपै चढ़ेहुये योधा स्थितहो रहेहैं और लंकाके उत्तरद्वार पै हजारों घोड़ेके सवार और प्यादे हैं २० और लंकाके पूर्वके द्वारपै दश करोड़ योधा स्थित रहते हैं और तैसेही बड़ेबीर राक्षस लंकाके दक्षिण द्वारपै रक्षा कररहे हैं २१ ॥

मध्यकक्षेप्यसंख्यातागजाश्वरथपत्तयः ॥ रक्षयन्तिसदालंकांनानास्त्रकुशलाःप्रभो २२ संक्रमैर्विविधैर्लंकाशतघ्नीभिश्चसंयुता ॥ एवंस्थितेपिदेवेशशृणुमेतत्रचेष्टितम् २३ दशाननबलौघस्यचतुर्थांशोमयाहतः ॥ दग्ध्वालंकांपुरींस्वर्णप्रासादोधर्षितोमया २४ शतघ्न्यःसंक्रमाश्चैवनाशितामेरघूत्तम॥देवत्वद्दर्शनादेवलंकाभस्मीकृता भवेत् २५ प्रस्थानंकुरुदेवेशगच्छामोलवणांबुधेः ॥ तीरंसहमहावीरैर्वानरौघैःसमन्ततः २६ श्रुत्वाहनूमतोवाक्यमुवाचरघुनन्दनः ॥ सुग्रीवसैनिकान्सर्वान्प्रस्थानायाभिनोदय २७ इदानीमेवविजयोमुहूर्त्तःपरिवर्त्तते ॥ अस्मिन्मुहूर्तेगत्वाहंलंकांराक्षससंकुलाम् २८ ॥

और हे राम लंकाकी बीचकी ड्योढ़ी पै तौ जिनकी कुछ गिनतीही नहीं

होतकी इतने हाथी और घोड़े और रथ इनपै चढ़नेवाले शस्त्र अस्त्रमें कुशल वीर और प्यादे असंख्य सदास्थित रहते हैं २२ और जहां तहां पहरे खड़ेहुयेहैं ऐसे निकसने के जिसमेंमार्ग हैं तिन करके और जहां तहां चढ़ीहुई जो तोपैं हैं तिनकरके लंकायुक्तहै अर्थात् ऐसाकोई लंकामें मार्ग नहीं जहां अपनी इच्छासे कोई जासके हे देवेश ऐसी यद्यपि लंकापुरी है तौ भी उसलंकामें मैंने जैसे अपना चरित्र कियाहै तिसको सुनिये २३ रावणकी जितनी सेना है तिसका चौथाभाग मैंने नाशकर दिया और लंकापुरीको भस्म करके जो सुवर्णका बड़ाभारी मन्दिर अशोकवनिकामें रहा सोभी मैंने तोड़ डाला २४ और हे रघूत्तम जहां जहां तोपैंचढ़ीथीं वेभी मैंने तोड़डालीं और प्रथम लंकामें संक्रमरहे अर्थात् सिवाय दरवाजेकी राहकोई और मार्ग करके प्रवेश नहींकरने पावताथा सो अब मैंने लंकाके परकोटेकी दीवारको जहांतहां तोड़के औखाइयोंको भी पाषाणादिकों करके बराबरकर बहुत जगहसे वानरों के जाने को मार्ग करदिया और हे देव अब जो लंका दिखाई पड़ती है सो सब आपको देखतेही नाशको प्राप्तहोगी २५ और हे देवेश अब यात्राकरिये और बड़ेवीर जे वानरोंके समूहहैं तिनकरिकै सहित हमसब समुद्रके तीरजावैंगे २६ तब ये वचन हनुमान् के सुनिकै श्रीराम बोलतेहुये कि हे सुग्रीव सब सेनाओंको यात्राके अर्थ आज्ञा करिये २७ और इससमयमें विजयनाम है मुहूर्त्त इसमुहूर्त्त में मैं जाके राक्षसों करके सहित २८ ॥

सप्राकारांसुदुर्धर्षांनाशयामिसरावणाम् ॥ आनेष्यामिचसीतांमे दक्षिणाक्षिस्फुरत्यधः २९ प्रयातुवाहिनीसर्वावानराणांतरस्विनाम् ॥ रक्षन्तुयूथपाःसेनामग्रेपृष्ठेचपार्श्वयोः ३० हनूमन्तमथारुह्यगच्छाम्यग्रेंगदन्ततः ॥ आरुह्यलक्ष्मणोयातुसुग्रीवत्वम्मयासह ३१ गजोगवाक्षोगवयोमैंदोद्विविदएवच ॥नलोनीलःसुषेणश्चजांबवांश्चतथापरे ३२ सर्वेगच्छन्तुसर्वत्रसेनपाःशत्रुघातिनः॥इत्याज्ञाप्यहरीन्रामः प्रतस्थेसहलक्ष्मणः ३३ सुग्रीवसहितोहर्षात्सेनामध्यगतोविभुः ॥ वारणेन्द्रनिभाःसर्वेवानराःकामरूपिणः ३४ क्ष्वेलन्तःपरिगर्जन्तोजग्मुस्तेदक्षिणांदिशम् ॥ भक्षयंतोययुःसर्वेफलानिचमधूनिच ३५ ॥

और प्राकार जो परकोटा तिसकरके युक्त और किसीको प्रवेशकरनेको अशक्य और रावणसहित ऐसीजोलंका तिसका नाशकरोंगा और सीताको लेआऊंगा और मेरा दक्षिणनेत्रभी इससमयमें नीचेसे फरकता है २९ और बड़े बलवान जे वानर हैं तिनकीसेनाचलै और सेनापति जे वानरहैं ते सेनाओंकी

अगाड़ी पिछाड़ी और दोनों बाजुओं पररक्षाकरतेहुये चलें ३० और हनुमान्के ऊपर सवार होके आगे २ तो मैं चलताहूं तिसकेपीछे अंगदपै सवार होकै लक्ष्मणचलें और हेसुग्रीव तुममेरे साथ साथचलो ३१ और गज और गवाक्ष और गवय और मैन्द और द्विविद और नल और नील और सुषेण और जाम्बवान् इनको आदि लैके ३२ शत्रुओं के नाश करनेवाले जे सेनापति हैं ते अपनी अपनी सेनाकी रक्षा करतेहुये चलें इसप्रकार राम सब वानरोंको आज्ञा देके लक्ष्मण सहित आप यात्राकरतेहुये ३३ अब सेनाकेमध्यमें सुग्रीव सहित सबके स्वामी जो श्रीरामचन्द्र सो आनन्दयुक्त चलरहे हैं और गजराजों के तुल्य हैं स्वरूप जिनके और इच्छाही करकेचाहे जो रूपधारणकरलें ऐसे जेवानर हैं ३४ तेपैंतरा बदलतेहुये और गर्जतेहुये दक्षिणदिशाको जारहे हैं और मार्ग में फल और मधु इनका भोजन करते जातेहुये ३५ ॥

ब्रुवन्तोराघवस्याग्रेहनिष्यामोद्यरावणम् ॥ एवन्तेवानरश्रेष्ठागच्छन्त्यतुलविक्रमाः ३६ हरिभ्यामुह्यमानौतौशुशुभातेरघूत्तमौ ॥ नक्षत्रैःसेवितौयद्वच्चन्द्रसूर्य्याविवांबरे ३७ आवृत्त्यपृथिवींकृत्स्नांजगाममहतीचमूः ॥ प्रस्फोटयन्तःपुच्छाग्रानुद्वहंतश्चपादपान् ३८ शैलानारोहयन्तश्चजग्मुर्मारुतवेगतः ॥ असंख्याताश्चसर्वत्रवानराः परिपूरिताः ३९ हृष्टास्तेजग्मुरत्यर्थंरामेणपरिपालिताः ॥ गताचमूर्दिवारात्रंक्वचिन्नासज्जतक्षणम् ४० काननानिविचित्राणि पश्यन्मलयसह्ययोः॥तेसह्यसमतिक्रम्यमलयंचतथागिरिम् ४१ आययुश्चानुपूर्व्वेणसमुद्रंभीमनिःस्वनम्॥अवतीर्यहनूमन्तंरामःसुग्रीवसंयुतः४२

और रामचन्द्रके आगे सब वानर यह कहिरहे हैं कि आजही जाके रावणको हम मारेंगे इसप्रकार अतुल पराक्रम जिन्हों के ऐसे जे वानरश्रेष्ठ हैं ते जा रहेहैं ३६ अब हनुमान् और अंगद करके अपने कंधेपै प्राप्त करेहुए जो राम लक्ष्मणते अत्यन्त शोभाको प्राप्त होरहे हैं जैसे नक्षत्रों करके सेवित चन्द्रमा और सूर्य आकाश में शोभित होवें ३७ संपूर्ण पृथिवी को आच्छादन करके वानरोंकी बड़ी भारी जो सेनाहै सो चलती हुई और अपने पूंछके अग्रभागा को पृथिवी में पटकते हुये और युद्धके लिये वृक्षोंको उखाड़ उखाड़कर धारण किये ३८ और पर्वतोंपै चढ़तेहुये पवनके तुल्य वेगकरके वानरजाते हुए और असंख्य वानर सब जगह परिपूर्णही मालूम पड़रहे हैं ३९ और राम करके रक्षा कियेगये वानर अति प्रीति करके जातेहुए और दिन रात्रि चलती हुई सेना क्षणमात्र कहीं नहीं ठहरती हुई ४० और मलय पर्वत और सह्य पर्वत

के समीप के जे वनहैं तिनको देखते हुए ते सब मलय और सह्य पर्वतको उल्लंघन करके ४१ क्रम करके भयंकर शब्द जिसका ऐसे समुद्रके तटपै आते हुए फिर श्रीराम हनुमान् से उतर के सुग्रीव को संग लेके ४२ ॥

सलिलाभ्याससासाद्यरामोवचनमब्रवीत् ॥ आगताःस्मोवयंसर्वेसमुद्रंमकरालयम् ४३ इतोगंतुमशक्यंनोनिरूपायेनवानराः ॥ अत्रसेनानिवेशोस्तुमंत्रयामोऽस्यतारणे ४४ श्रुत्वारामस्यवचनंसुग्रीवःसागरांतिके ॥ सेनान्यवेशयत्क्षिप्रंरक्षितांकपिकुंजरैः ४५ तेपश्यंतोविषेदुस्तंसागरंभीमदर्शनम् ॥ महोन्नततरंगाढ्यं भीमनक्रभयंकरम् ४६ अगाधंगगनाकारंसागरंवीक्ष्यदुःखिताः ॥ तरिष्यामःकथंघोरं सागरंवरुणालयम् ४७ हंतव्योस्माभिरद्यैव रावणोराक्षसाधमः ॥ इतिचिन्ताकुलाःसर्वेरामपार्श्वेव्यवस्थिताः ४८ रामःसीतामनुस्मृत्य दुःखेनमहतावृतः ॥ विलप्यजानकींसीतांबहुधाकार्यमानुषः ४९ ॥

समुद्रके जलके समीपजाके वचनबोलतेहुये कि हम सब मकरालय समुद्र के तटपै आगये हैं ४३ और हे वानरो इससे अगाड़ी विना उपायके जानेको सामर्थ्य नहीं है इससे यहांहीं सेना का बिश्राम होय और इस समुद्रके तरने की यहां सलाह करेंगे ४४ तब सुग्रीव यह राम का वचन सुनिके वानरश्रेष्ठों करके रक्षा की हुई सेनाको समुद्रके तटपै वास करताहुआ ४५ भयंकरहै दर्शन जिसका ऐसे समुद्रको देखते हुए जे वानर ते परम विषादको प्राप्त होते हुए अर्थात् सबके मनका उत्साह भंग होगया कैसा समुद्रहै बड़ी ऊंची जे तरंगें हैं तिन्हों करके युक्तहै और बड़े भय करने वाले नाके आदिजीवों करके भयंकरहै ४६ और अथाहहै और आकाशके तुल्यहै ऐसे समुद्रको देखके अत्यन्त दुःखितहुए और यह कहते हुए कि वरुण को आलय अर्थात् स्थान ऐसे घोर समुद्रको हम कैसे पारहोवेंगे ४७ और राक्षसों में अधम जो रावणहै सो हम को इसीसमयमें मारने योग्य है इसीप्रकार चिन्ताकरके व्याकुलहो सब वानर रामके समीप स्थित होतेहुए ४८ और रावण बधादि कार्यके अर्थ जिनने मनुष्यरूपको धारण कियाहै ऐसे जो राम सो उससमयमें सीताको यादि करके बहुत प्रकार का विलाप करके बड़े भारी दुःखकरके व्याप्त होतेहुये ४९ ॥

अद्वितीयश्चिदात्मैकःपरमात्मासनातनः ॥ यस्तुजानातिरामस्यस्वरूपंतत्त्वतोजनः ५० तन्नस्पृशतिदुःखादिकिमुतानंदमव्ययम् ॥ दुःखहर्षभयक्रोधलोभमोहमदादयः ५१ अज्ञानलिंगान्येतानिकुत

स्सांतिचिदात्मनि ॥ देहाभिमानिनोदुःखंनादेहस्यचिदात्मनः ५२ सं प्रसादेद्वयाभावात्सुखमात्रंहिदृश्यते ॥ बुद्ध्याद्यभावात्संशुद्धेदुःखंतत्र नदृश्यते ॥ अतोदुःखादिकंसर्वंबुद्धेरेवनसंशयः ५३ रामःपरात्मापुरुषःपुराणोनित्योदितोनित्यसुखोनिरीहः ॥ तथापिमायागुणसंगतोऽसौसुखीवदुःखीवविभाव्यतेबुधैः ५४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डेप्रथमस्सर्गः १ ॥

और वास्तव में तो राम अद्वितीयहैं अर्थात् जिसका दूसरहिा कोई नहीं है और चैतन्यरूपहैं और एकहैं और परमात्माहैं और सनातन हैं अर्थात् नित्य हैं और जो मनुष्य यथार्थ ऐसे रामके स्वरूपको जानताहै ५० उस पुरुषको कोई दुःखादिक स्पर्श नहीं करते हैं और अविनाशी आनन्दरूप जो राम तिनको दुःखादि होवें यह क्याकहना है क्योंकि दुःख और हर्ष और भय और क्रोध लोभ मोह मदादिक ५१ ये सब अज्ञान के चिह्नहैं ते चित्रूप राम में कैसे संभवहोसक्तेहैं और जितना दुःखहै सो सब देहाभिमानीही को होताहै और देहाभिमान रहित जो चित्रूप आत्मा तिसको नहीं स्पर्श करता ५२ जैसे सुषुप्ति अवस्था में दूसरे के नहीं प्रतीत होनेसे सुखमात्रही दिखाई पड़ता है क्योंकि बुद्ध्यादिकों के नहीं प्रतीत होने से दुःखादिक भी शुद्ध आत्मा में नहीं प्रतीत होताहै इससे जानागया कि दुःखादिक बुद्धिही के धर्म हैं आत्माके नहीं हैं ५३ और राम तो प्रकृतिसे परे आत्माहैं और पुराणपुरुष हैं सबके अन्तर्यामी हैं और नित्यही उदयको प्राप्तहैं अर्थात् नाशरहितहैं नित्य सुखरूप हैं और क्रिया रहितहैं और तौ भी अज्ञानियोंने मायाके गुणोंके संग करके ये राम भी सुखी हैं और दुःखी हैं और इस प्रकार कल्पना किये गये प्रतीत होरहे हैं ५४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डे भाषाटीकायांप्रथमःसर्गः १

लंकायांरावणोदृष्ट्वाकृतंकर्महनूमता ॥ दुष्करन्दैवतैर्वापिह्रियाकिञ्चिदवाङ्मुखः १ आहूयमन्त्रिणःसर्वानिदंवचनमब्रवीत् ॥ हनूमता कृतङ्कर्मभवद्भिर्दृष्टमेवतत् २ प्रविश्यलंकांदुर्धर्षांदृष्ट्वासीतादुरासदाम् ॥ हत्वाचराक्षसान्वीरानक्षंमन्दोदरीसुतम् ३ दग्ध्वालंकामशेषेण लंघयित्वाचसागरम् ॥ युष्मान्सर्वानतिक्रम्यस्वस्थोगात्पुनरेव

४ किंकर्तव्यमितोऽस्माभिर्यूयम्मन्त्रविशारदाः ॥ मन्त्रयध्वंप्रयत्नेन यत्कृतम्मेहितम्भवेत् ५ रावणस्यवचःश्रुत्वाराक्षसास्तमथाब्रुवन् ॥ देवशंकाकुतोरामात्तवलोकजितोरणे ६ इन्द्रस्तुवध्वानिक्षिप्तः पुत्रेण तवपत्तने ॥ जित्वाकुवेरमानीयपुष्पकम्भुज्यतेत्वया ७ ॥

दो० सर्गदूसरे सभामहँ लखि रावण अपमान ॥
त्यागि विभीषण रामकी शरणगयोगतमान १

अब श्रीमहादेवजी पार्वतीसे कथा वर्णन करते हैं कि हे पार्वति अब रावण लंकामें देवतों से भी जो कर्म न होसकै ऐसा हनुमान्का किया कर्म देखके कुछ लज्जाकरके नीचेको मुख करताहुआ १ और सब मन्त्रियोंको बुलाके यह बोला कि हे मन्त्रियो हनुमान् ने जो कर्म किया तिसको तुम सबोंने देखा ही है २ जो हनुमान् कोई जिसमें न प्रवेश करसकै ऐसी लंकामें प्रवेश कर और कोई जिसके पास न जासकै ऐसी सीताको देखके और बड़ेबीर राक्षसों को मारके और मंदोदरीका पुत्र जो अक्षकुमार तिसको मारके ३ और संपूर्ण लंकाको भस्म करके और फिर समुद्रको नांघके और तुम सबोंका तिरस्कार करके सावधान कोई घाउतक जिसके नहीं ऐसा फिर चलागया ४ इससे इसके उपरान्त अब हमको क्या करना चाहिये सो कहौ क्योंकि आपसब सलाहमें बड़े कुशलहौ और यत्नकरके तुमसब लोग सलाह करौ जिसमें मेरा हितहोवै ५ तब ये रावणके वचन सुनके राक्षस लोग कहतेहुये कि हे देव सब लोकोंके जीतनेवाले जो आप तिनको संग्राममेंरामसे क्या शंकाहै ६ और तुम्हारे पुत्रने इन्द्रको बांधिकै लंकापुरीमें लाके ढाल दिया और कुबेरको जीतके उनका पुष्पक बिमान छीनके तुम करके भोगाजाताहै ७ ॥

यमोजितःकालदण्डाद्भयन्नामूत्तवप्रभो ॥ वरुणोहुंकृतेनैवजितः सर्वेपिराक्षसाः ८ मयोमहासुरोभीत्याकन्यान्दत्वास्वयन्तव ॥ त्वद्वशे वर्ततेद्यापिकिमुतान्येमहासुराः ९ हनूमद्धर्षणंयत्तुतदवज्ञाकृतंचनः ॥ वानरोयंकिमस्माकमस्मिन्पौरुषदर्शने १० इत्युपेक्षितमस्माभिर्धर्ष णंतेनकिंभवेत् ॥ वयंप्रमत्ताःकिंतेनवञ्चिताःस्मोहनूमता ११ जानी मोयदितंसर्वेकथंजीवन्गमिष्यति ॥ आज्ञापयजगत्कृत्स्नमवानरम मानुषम् १२ कृत्वायास्यामहेसर्वेप्रत्येकंवानियोजय ॥ कुम्भकर्णस्त दाप्राहरावणंराक्षसेश्वरम् १३ आरब्धंयत्त्वयाकर्मस्वात्मनाशायकेव लम् ॥ नदृष्टोसितदाभाग्यात्त्वंरामेणमहात्मना १४ ॥

और हे प्रभो यमराजको तुमने जीतलिया उनके कालदण्डसे कुछ भी भय तुमको नहीं हुआ और वरुणको तो अपने हुंकारही शब्द करके तुमने जीता और सब राक्षस भी जीतलिये ८ और महाअसुर जो मयदानव सो आपही भय करके अपनी कन्या तुमको देकै आज तक तुम्हारे वश होरहाहै रहे और असुर तिनकी तौ वार्त्ताही क्याहै ९ और जो हनुमान्‌ने हमारा तिरस्कारकिया सो तो हमींने हनुमान्‌का तिरस्कार किया तिससे हुआ क्योंकि हम लोग यह जानतेरहे कि यह बानरहै इसमें पराक्रम दिखाने से क्या हमारी बड़ाई होगी १० इसप्रकार जब हमने उपेक्षाकरदी तब तिरस्कार भी हुआ तौ तिस करके क्याहै और हमलोग भूलमें रहेतो हनुमान्‌ने हमको ठगलिया तोइससे हमाराहुआही क्या ११ जो हमजानते कि हनुमान् ऐसा है तो हमारे आगेसे जीवते कैसे भी नहीं जानेपाता और हमको अब आज्ञा करिये तो हम सबजगत् को बानर रहित और मनुष्य रहितकरदेवैं १२ और फिर लौट भी आवेंअथवा एक एकको आज्ञा करिये तब उस समयमें कुंभकर्ण रावणसे कहताहुआ १३ हे रावण जो तुमने सीताहरणरूप कर्मकिया सो केवल अपने नाशहीके लिये किया और कोई भाग्यसे महात्मा जो राम तिसने तुमको नहीं देखा १४॥

यदिपश्यतिरामस्त्वां जीवन्नायासिरावण ॥ रामोनमानुषोदेवः साक्षान्नारायणोऽव्ययः १५ सीताभगवतीलक्ष्मीरामपत्नीयशस्विनी ॥ राक्षसानांविनाशायत्वयानीतासुमध्यमा १६ विषपिंडमिवागीर्यमहामीनोयथातथा ॥ आनीताजानकीपश्चात्त्वयाकिंवाभविष्यति १७ यद्यप्यनुचितंकर्मत्वयाकृतमजानता ॥ सर्वंसमंकरिष्यामिस्वस्थचित्तोभवप्रभो १८ कुम्भकर्णवचःश्रुत्वावाक्यमिन्द्रजिदब्रवीत्॥ देहिदेवममानुज्ञांहत्वारामंसलक्ष्मणम् १९ सुग्रीवंवानरांश्चैवपुनर्यास्यामितेन्तिकम् ॥ तत्रागतोभागवतप्रधानोबिभीषणोबुद्धिमतांवरिष्ठः ॥ श्रीरामपादद्वयएकतानःप्रणम्यदेवारिमुपोपविष्टः २० विलोक्यकुंभश्रवणादिदैत्यान्मत्तप्रमत्तानातिविस्मयेन ॥ विलोक्यकामातुरमत्त मत्तोदशाननंप्राहविशुद्धबुद्धिः २१ ॥

और जो राम तुमको देखतेतौ हेरावण जीवते तुम लौटिकै नहीं आवते और राम मनुष्य नहीं हैं किन्तुसाक्षात् अविनाशी नारायणहैं १५ और राम की स्त्री जो सीता सो साक्षात् भगवती लक्ष्मी हैं सो सीता राक्षसोंके नाशके अर्थ तुमने लंकापुरी में प्राप्त करी है १६ और हे रावण जैसे कोई बड़ा मत्स्य

विषयुक्त पिण्डको अपने नाशके लिये निगलजाय तैसेही अपने नाशके अर्थ तुमने सीता प्राप्त करी है सो नहीं जानाजाता अब क्याहोगा १७ यद्यपि विना जाने तुमने बड़ा अनुचित भी कर्म किया है तौ भी अपने पराक्रम करके मैं तुम्हारी भूलको सम्हारदेवोंगा अब तुम स्वस्थचित्तहोउ १८ तब कुम्भकर्णका वचन सुनिकै इन्द्रजित् नाम जो रावणका पुत्रहै सो बोला कि हे देव मुझको आज्ञा दीजिये मैं अभी लक्ष्मण सहित रामको और सुग्रीव को और वानरों को मारके फिर तुम्हारे समीप आऊं १९ तब उस समयमें भगवद्भक्तोंमें प्रधान और बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ और रामके चरणारविन्दोंमें है एक चित्तकी वृत्ति जिसकी ऐसा जो विभीषण सो आवताहुआ और रावणको प्रणाम करके समीप बैठा २० फिर वहां बिभीषण मतवालेसे भी अधिक मतवाले जेकुम्भकर्णादिक तिनको देख और अति कामातुर रावण को देखके निर्मल है बुद्धि जिसकी और सावधान ऐसा जो विभीषण सो रावणसे बोला २१ ॥

नकुंभकर्णेन्द्रजितौचराजन्तथामहापार्श्वमहोदरौतौ ॥ निकुंभकुंभौचतथातिकायःस्थातुंनशक्ताययुधिराघवस्य २२ सीताभिधानेनमहाग्रहेणग्रस्तोसिराजन्नचतेविमोक्षः ॥ तामेवसत्कृत्यमहाधनेनदत्त्वाभिरामायसुखीभवत्वम् २३ यावन्नरामस्यशिताःशिलीमुखाल्लंकामभिव्याप्यशिरांसिरक्षसाम् ॥ छिंदंतितावद्रघुनायकस्यभोताञ्जानकींत्वंप्रतिदातुमर्हसि २४यावन्नगाभाःकपयोमहाबलाहरीन्द्रतुल्यानखदंष्ट्रयोधिनः ॥ लंकांसमाक्रम्यविनाशयंतितेतावद्द्रुतंदेहिरघूत्तमायताम् २५ जीवन्नरामेणविमोक्ष्यसेत्वंगुप्तःसुरेन्द्रैरपिशंकरेण नदेवराजांकगतोनमृत्योःपाताललोकानपिसंप्रविष्टः २६ शुभंहितंपवित्रंचविभीषणवचःखलः ॥ प्रतिजग्राहनैवासौम्रियमाणइवौषधम् २७ कालेननोदितोदैत्योविभीषणमथाऽब्रवीत् ॥ मद्दत्तभोगैःपुष्टांगोमत्समीपेवसन्नपि २८ ॥

कि हे राजन् कुम्भकर्ण और इन्द्रजित् और महापार्श्व और महोदर और निकुम्भ और कुंभ और अतिकाय ये सब युद्धमें रामके आगे स्थित होनेको समर्थ नहीं हैं २२ और हे राजन् सीतारूपी जो बड़ा भारी ग्राहहै तिसने तुमको ग्रस लियाहै अब उससे छूटना मुश्किलहै इससे बहुतसेरत्न और मणियों करके सहित उस सीताको रामके अर्थ देकै तुम सुखीहोउ २३ और जबतक रामके पैनेबाण लंकाको व्यापकरके राक्षसों के शिरोंको न काटैं तबतक भयभीत जो

सीता तिसको रामके अर्थ देनेको योग्यहै २४ और जबतक पर्वतके तुल्य हैं शरीर जिनके और बड़े बली और नख और दांतोंसे युद्ध करनेवाले और सिंहोंकासाहै पराक्रम जिन्होंका ऐसे बानर लंकापुरीमें प्रवेशकर राक्षसोंका नाश न करैं तबतक रामचन्द्रको सीता देदेवो २५ और तुमचाहो सब देवतों करके रक्षित होवो अथवा चाहे महादेव तुम्हारी रक्षाकरैं अथवा इन्द्रके गोदमें भी तुम बैठौ अथवा यमराजकी शरणभी तुमहोवो अथवा पाताललोकोंमें जाके चाहेरहो परन्तु राम से तुम जीवते नहीं छूटोगे २६ अब इस प्रकारधर्म युक्त और हितकरनेवाले और पवित्र ऐसे जो बिभीषणके बचन तिनको खल जो रावण सो नहीं ग्रहणकरता हुआ जैसे मरनेवाला औषधको न ग्रहणकरै २७ फिर कालका प्रेराहुआ जो रावण सो यह बचन बोला कि मेरे दिये भोगों करके पुष्टहुआ है अंग जिसका और मेरेही समीप वासकरताहुआ २८ ॥

प्रतीपमाचरत्येषममैवहितकारिणः ॥ मित्रभावेनशत्रुर्मेजातोनास्त्यत्रसंशयः २९ अनार्येणकृतघ्नेनसंगतिर्मेनयुज्यते ॥ विनाशमभिकांक्षंतिज्ञातीनांज्ञातयस्सदा ३० योन्यस्त्वेवंविधंब्रूयाद्वाक्यमेकंनिशाचरः ॥ हन्मितस्मिन्क्षणेएवधिक्त्वांरक्षःकुलाधमम् ३१ रावणेनैवमुक्तःसन्परुषंसविभीषणः ॥ उत्पपातसभामध्यात्गदापाणिर्महाबलः ३२ चतुर्भिर्मंत्रिभिःसार्द्धंगगनस्थोब्रवीद्वचः ॥ क्रोधेनमहताविष्टोरावणंदशकंधरम् ॥ माविनाशमुपोहित्वंप्रियवादिनमेवमाम् ३३ धिक्करोषितथापित्वंज्येष्ठोभ्रातापितुःसमः ॥ कालोराघवरूपेणजातोदशरथालये ३४ कालीसीताभिधानेनजाताजनकनंदिनी ॥ तावुभावागतावत्रभूमेर्भारापनुतये ३५ ॥

मैं जो हितकारी हौं तिसीका प्रतिकूल आचरण करताहै इससे मित्रभाव करके यह शत्रुही मेरा उत्पन्नहुआहै इसमें कुछ संशय नहीं है २९ और कृतघ्न ऐसा जो बिभीषण तिसकासंग मेरा युक्त नहीं है और कुटुम्बीही लोग अपने कुटुम्बी के नाशकी सदा इच्छाकरते हैं ३० जो और राक्षस ऐसा वचनकहता तौ उसीसमय उसको मारडालता और तू भाईहै इससे तुझको क्यामारौं परन्तु राक्षसों के कुल में अधम जो तू है तिसको धिक्कारहै ३१ इसप्रकार रावणके कठोरबचनसे संभाषण कियागया जो महाबली बिभीषण सो गदाको हाथ में लेके चार मन्त्रियोंकरके सहित सभाके मध्यसे ऊपर आकाशमें जाताहुआ ३२ और आकाश में स्थितहोके बडेक्रोधसे भरा रावणसे यहवचन

बोला कि हे रावण मेरे बिना भय तुम सुखकरौ और प्रियवादी जो मैं हूं तिस को ३३ जो धिक्कारकरते हौ तौ भी तुम ज्येष्ठभ्राताहौ इससे पिता के समान हो इससे मैं हितही करताहों दशरथके गृहमें रामरूपकरके तुम्हाराकाल उत्पन्नहुआहै ३४ और सीताके नामकरके संहारकरनेवाली परमात्माकी शक्ति काली जनककी पुत्री हुईहै ते दोनों राम औ सीता यहां पृथिवीके भारदूरकरने के लिये प्राप्तहुये हैं ३५ ॥

तेनैवप्रेरितस्त्वंतुनशृणोषिहितंमम ॥ श्रीरामःप्रकृतेःसाक्षात्परस्तात्सर्वदास्थितः ३६ बहिरंतश्चभूतानांसमःसर्वत्रसंस्थितः ॥ नामरूपादिभेदेनतत्तन्मयइवामलः ३७ ॥ यथानानाप्रकारेषुवृक्षेष्वेकोमहानलः॥तत्तदाकृतिभेदेनभिद्यतेज्ञानचक्षुषाम् ३८ पंचकोशादिभेदेनतत्तन्मयइवाबभौ ॥ नीलपीतादियोगेनानिर्मलःस्फटिकोयथा ३९ सएवनित्यमुक्तोपि स्वमायागुणबिम्बितः ॥ कालःप्रधानंपुरुषोऽव्यक्तंचेतिचतुर्विधः ४०प्रधानपुरुषाभ्यांस जगत्कृत्स्नंसृजत्यजः ॥ कालरूपेणकलनां जगतःकुरुतेऽव्ययः ४१ कालरूपीसभगवान् रामरूपेणमायया ४२ ॥

और तिसी रामकरके प्रेरित तुम मेरे हित वचन नहीं सुनते और श्रीराम सर्वदा साक्षात् प्रकृतिसेपरे स्थित रहते हैं ३६ और सब भूतों के बाहर और भीतर सबजगह समरूपकरके राम स्थितहैं और नामरूपके भेदकरके तौन तौन रूपभी रामही हैं ३७ जैसे नानाप्रकारके वृक्षों में एकही अग्नि छोटे बड़ेकाष्ठ के भेदसे न्यारा न्यारा अज्ञानियोंको दिखाई पड़ताहै ३८ तैसेही परमात्मा जो रामहैं सो भी अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनन्दमय ये पंच कोशके भेदकरके तैसा २ जाना जाताहै और जैसे निर्मल जो स्फटिक मणि सो नील पीतादि पुष्पों के समीप होने से तौन तौन रंगका प्रतीयमान होता है ३९ तैसेही नित्यमुक्त भी रामहैं परन्तु मायाके गुणों में प्रतिबिम्बित होके काल और प्रधान और पुरुष और अव्यक्त इन भेदोंकरके चारप्रकार के जाने जाते हैं ४० तहां प्रधान पुरुष रूपकरके वह सबजगत् को रचताहै और काल रूप करके वही परमात्मा सबजगत्का संहार करताहै ४१ तहांवहकालरूपी भगवान् मायासे राम रूपकरके ४२ ॥

ब्रह्मणाप्रार्थितोदेवस्त्वद्वधार्थमिहागतः ॥ तदन्यथाकथंकुर्यात्सत्यसंकल्पईश्वरः ४३ हनिष्यतित्वांरामस्तुसपुत्रबलवाहनम् ॥ हन्य

मानंनशक्नोमिद्रष्टुंरामेणरावण ४४ त्वांराक्षसकुलंकृत्स्नंततोगच्छामिराघवम् ॥ मयियातेसुखीभूत्वारमस्वभवनेचिरम् ४५ विभीषणोरावणवाक्यतःक्षणाद्विसृज्यसर्वंसपरिच्छदंगृहम् ॥ जगामरामस्यपदारविंदयोःसेवाभिकांक्षीपरिपूर्णमानसः ४६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डेद्वितीयस्सर्गः २॥

ब्रह्माकी प्रार्थना से तुम्हारे मारने को यहां आये हैं सो वह सत्यसंकल्प ईश्वर अपनी बातको अन्यथा कैसे करेंगे ४३ और पुत्र सेना वाहन इनकरके सहित तुमको राम अवश्य मारेंगे इसमें कुछ संदेह नहीं है इससे मूर्ख जो तू है तिसमें मैं स्वामीकी बुद्धिरक्खौं और राक्षसों में अपने कुटुम्बियों की बुद्धि रक्खूंगा तौ मरते हुये जो तुम सबहौ तिनको देख के मुझको भी बड़ा भारी दुःख होगा इससे अब से लेके राम में स्वामिबुद्धि करने को और वानरों में अपने ज्ञाति की बुद्धि करने को रामहीके समीप जाऊंगा ४४ इस आशय से बिभीषण कहताहै कि हे रावण तुझको और सब राक्षसों को अपने सामने मरते मैंनहीं देखा चाहताहौं इससे रामके समीप जाताहौं और मेरेगये पीछे तुम सुखपूर्वक अपने गृहमें बहुतकाल रमणकरौ ४५ अबयह कह के बिभीषण रावण के कठोर वाक्य से एक क्षणमात्रही में अपने धन पुत्र दारादि युक्त समृद्ध गृहको त्यागकरके श्रीरामके चरणारबिंदोंकी सेवामेंहै पूर्ण इच्छा जिसकी ऐसापरिपूर्ण मनोरथहो रामहीके समीप जाताहुआ ४६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डेभाषाटीकायांद्वितीयःसर्गः २॥

विभीषणोमहाभागश्चतुर्भिर्मंत्रिभिःसह ॥ आगत्यगगनेरामसंमुखेसमवस्थितः १उच्चैरुवाचभोस्वामिन्रामराजीवलोचन ॥ रावणस्यानुजोऽहंतेदारहर्तुर्विभीषणः २ नाम्नाभ्रात्रानिरस्तोहंत्वामेवशरणंगतः ॥ हितमुक्तम्मयादेवतस्यचाविदितात्मनः ३ सीतांरामायवैदेहींप्रेषयेतिपुनःपुनः ॥ उक्तोपिनशृणोत्येषःकालपाशवशंगतः ४ हंतुंमांखड्गमादायप्राद्रवद्राक्षसाधमः ॥ ततोचिरेणसचिवैश्चतुर्भिःसहितोभयात् ५ त्वामेवभवमोक्षायमुमुक्षुःशरणंगतः ॥ विभीषणवचःश्रुत्वासुग्रीवोवाक्यमब्रवीत् ६ विश्वासार्होनतेरामममायावीराक्षसाधमः॥ सीताहर्तुर्विशेषेणरावणस्यानुजोबली ७॥

दो० । सर्ग तीसरे बन्धुकी त्यागि विभीषण चाह ॥
शरणगयो रघुवीरकी तिन राखी गहिबांह १
स्तुतिकीन्हेगुणगाथतिहि बरदीन्होंरघुनाथ ॥
पुनि शर खैंचत रामके बारिधनायो माथ २

अथ श्रीमहादेव जी पार्वती से कथा वर्णन करतेहैं कि हेपार्वति अब महा भाग्य युक्त जो विभीषण सो चारि मन्त्रियों करके सहित आकरके आकाशमें रामके सम्मुख स्थित होताहुआ १ और उच्चस्वर करके बोला कि हे स्वामिन् हे कमल लोचन राम मैं आपकी भार्या हरनेवाला जो रावण तिसका छोटा भाईहों और विभीषण मेरा नाम है २ भाई करके तिरस्कार कियागया आप की शरण आयाहौं और हे देव आपके स्वरूपको नहीं जानता हुआ जोरावण तिससे मैंने हित वचनकहा ३ कि सीता जो जनकनन्दिनी तिसको रामके अर्थ भेजदेवो ऐसा बारम्बार मैंने कहा तौ भी रावण कालपाशके वश होगया है इससे मेरे वचन नहीं सुनता ४ और वह राक्षसों में अधम रावण मेरे मारनेको खड्ग लेकै दौड़ा तौ मैं शीघ्रही चार मन्त्रियों करके सहित भय ते मोक्षकी इच्छा करता हुआ ५ संसाररूपी बन्धनसे मोक्षके अर्थ आपही की शरण प्राप्तहुआ तब यह विभीषणका वचन सुनके सुग्रीवबोला ६ कि हेराम यह राक्षसों में अधम मायावी विभीषण आपके विश्वास योग्य नहीं है और सीताका हरनेवाला जो रावण तिसका छोटाभाई है और बड़ा बलीहै इससे विशेष करके विश्वासके योग्य नहीं है ७ ॥

मंत्रिभिःसायुधैरस्मान्विवरेनिहनिष्यति ८ तदाज्ञापयमेदेववानरैर्हन्यतामयम् ॥ ममैवंभातितेरामबुद्ध्याकिंनिश्चितंवद॥श्रुत्वासुग्रीववचनंरामःसस्मितमब्रवीत् ९ यदीच्छामिकपिश्रेष्ठलोकान्सर्वान्सहेश्वरान् ॥ निमिषार्द्धेनसंहन्यांसृजामिनिमिषार्द्धतः १० अतोमयाभयंदत्तंशीघ्रमानयराक्षसम् ११ सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिचयाचते ॥ अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतंमम १२ रामस्यवचनंश्रुत्वासुग्रीवोहृष्टमानसः ॥ विभीषणमथानाय्यदर्शयामासराघवम् १३ विभीषणस्तुसाष्टांगंप्रणिपत्यरघूत्तमम् ॥ हर्षगद्गदयावाचाभक्त्याचपरयान्वितः १४ ॥

और यह छिद्रपाइकै शस्त्रोंकरके सहित जे मन्त्रीहैं तिनके द्वाराह मैंसबों को मारैगा इससे हे देव मुझको आप आज्ञाकरैं तौ वानरोंसे इसको मरवा डालो ८ और हेराम मेरे समुझमें तौ ऐसाआता है और अपनी बुद्धिकरके

क्था निश्चयकियाहै सो कहिये तबयह सुग्रीवका बचन सुनिकै श्रीराम मन्द मुसुकानि करके बोलतेहुये मन्दमुसुकानिका आशय यहहै कि मेरेमें स्नेह वशते सुग्रीव मेरे प्रभावको नहीं जानता और बिभीषणकीभी निष्कपटता इसने नहींजानी इससे यह केवल बालबुद्धिहै ९ अब श्रीराम सुग्रीवसे कहते हैं कि हेवानरोंमें श्रेष्ठ सुग्रीव जो मैं इच्छाकरौंतौ आधेक्षणमें इन्द्रादिलोकपाल सहित सबलोकोंका संहारकरडालों और फिर अधेई क्षणकरके जैसेकेतैसे रचि देवों १० इससे मैंने इसबिभीषणको अभयदानदिया शीघ्रही बिभीषणको समीप ल्यावो ११ कदाचित् कोईकहै शत्रुपक्षियोंको अभयदानउचित नहीं है तिसको खंडनकरते हुये श्रीराम सुग्रीवसे अपनाव्रत अर्थात् प्रणकहते हैं कि हेसुग्रीव जो प्राणी तुम्हारा मैंहों ऐसे एकबारभी मेरे शरण प्राप्तहोताहै और अभय मुझ से मांगताहै तौकोईप्राणिहोय अर्थात् नीचिसेभीनीचहोय तौभीउसकोअभयमैं देताहों यह मेराव्रत है अर्थात् यह मैंने प्रणकर रक्खाहै तौ इससमय में जो बिभीषण की रक्षा न करौं तो मेराप्रण छूटाजाता है अर्थात् प्रतिज्ञाका भंगहोता है और जिसकी प्रतिज्ञा झूठीहुई तौ ब्यर्थ उसका जीवनहै उससे बिभी-षण को ल्यानाही चाहिये और इहां परमात्मा जोराम तिसके अभयदान की प्रतिज्ञा से यह सूचित होताहै कि परमेश्वरके शरणआये मनुष्यको सकल संसारभयकी निवृत्ति होती है अर्थात् मुक्तिहोती है और मुक्ति बिनाज्ञान के नहीं होतीहै और परमेश्वरका कथनभी झूठा कैसेहोय इससे बिदितहुआ कि परमेश्वर अपने शरणागत मनुष्यकी बुद्धि में प्रबिष्टहो ऐसाज्ञान प्रकटकरता है जिससे वह संसार बंधनसे छूटिकै परमानन्दको प्राप्तहोता है १२ अब यह रामका बचन सुनिकै प्रसन्न है मन जिसका ऐसा जो सुग्रीव सो बिभीषणको ल्या करके रामको दिखाताहुआ १३ और बिभीषण तो रामचन्द्रको साष्टांग प्रणाम करिकै और परमभक्ति करिकै युक्तहो हर्ष करिकै गद्गद जोबाणी तिस करिकैं रामकी स्तुति करनेको प्रारम्भ करताहुआ १४ ॥

रामंश्यामंविशालाक्षंप्रसन्नमुखपंकजम् ॥ धनुर्बाणधरंशांतंलक्ष्मणेनसमन्वितम् १५ कृतांजलिपुटोभूत्वास्तोतुंसमुपचक्रमे १६ विभीषणउवाच ॥ नमस्तेरामराजेन्द्रनमःसीतामनोरम ॥ नमस्तेचण्डकोदंडनमस्तेभक्तवत्सल १७ नमोऽनंतायशांतायरामायामिततेजसे ॥ सुग्रीवमित्रायचतेरघूणांपतयेनमः १८ जगदुत्पत्तिनाशानांकारणायमहात्मने ॥ त्रैलोक्यगुरवेऽनादिगृहस्थायनमोनमः १९ त्वमादिर्जगतांरामत्वमेवस्थितिकारणम् ॥ त्वमंतेनिधनस्थानंस्वेच्छा

चारस्त्वमेवहि २० चराचराणांभूतानांबहिरन्तश्चराघव ॥ व्याप्यव्यापकरूपेणभवान्भातिजगन्मयः २१ ॥

कैसे राम हैं श्याम है वर्ण जिनका और विशालहैं नेत्र जिनके और प्रसन्न है मुखरूप कमल जिनका और धनुषबाणको धारणकरेहैं और शांतहै स्वभाव जिनका और लक्ष्मण करके युक्तहैं १५ ऐसे जे राम तिनको हाथजोडके बिभीषण स्तुति करताहुआ १६ कि हे राम हे राजेन्द्र हे सीताकेमनके रमण करानेवाले तुम्हारे अर्थ मेरा नमस्कारहै और बडा प्रचण्ड है धनुष जिनका ऐसे जे आप तिनके अर्थ नमस्कारहै और भक्तहैं प्रियजिनको ऐसे जो आप हैं तिनके अर्थ नमस्कार है १७ और नहींहै अन्त जिसका और शांतहै स्वरूप जिसका और अमित है तेज जिसका ऐसे जोरामहैं तिनकेअर्थ नमस्कारहै और सुग्रीव के मित्र और रघुवंशियोंके पति जो आप हैं तिनके अर्थ नमस्कार है १८ और जगत्की उत्पत्ति और पालन और नाश इनके कारण रूप जो महात्मा आप तिन के अर्थ नमस्कार है और अन्तर्यामिरूप करके तीनोंलोकके हित के उपदेश करनेवाले और मायाही है गृहिणी जिसकी ऐसे सबसे प्रथम गृहस्थ रूप जो आप तिनकेअर्थ नमस्कार है १९ और हे राम जगत्के उत्पत्ति कारण तुम्हीं हो औरस्थिति कारणभी तुम्हीहो और सबजगत्का लय स्थानभीतुम्हीहो और स्वेच्छाचार परम स्वतन्त्र तुम्हींहो २० और सब चर अचर भूतों के बाहिर और भीतर व्याप्यव्यापकरूप करके हे राम सब जगत्रूप आपही प्रकाशित होरहेहो जैसे बड़े मत्स्यका छोटा मत्स्यव्याप्य होताहै तैसेव्याप्यरूप आपहो और व्यापकरूपभी आपहीहो २१ ॥

त्वन्माययाहृतज्ञानानष्टात्मानोविचेतसः ॥ गतागतंप्रपद्यंतेपापपुण्यवशात्सदा २२ तावत्सत्यंजगद्भातिशुक्तिकारजतंयथा ॥ यावन्नज्ञायतेज्ञानचेतसानान्यगामिना २३ त्वदज्ञानात्सदायुक्ताःपुत्रदारगृहादिषु ॥ रमंतेविषयान्सर्वानंतेदुःखप्रदान्विभो २४ त्वमिंद्रोग्निर्यमोरक्षोवरुणश्चतथानिलः ॥ कुबेरश्चतथारुद्रस्त्वमेवपुरुषोत्तम २५ त्वमणोरप्यणीयांश्चस्थूलात्स्थूलतरःप्रभो ॥ त्वंपितासर्वलोकानांमाताधातात्वमेवहि २६ आदिमध्यांतरहितःपरिपूर्णोच्युतोऽव्ययः ॥ त्वंपाणिपादरहितश्चक्षुःश्रोत्रविवर्जितः २७ श्रोताद्रष्टाग्रहीताचजवनस्त्वंखरांतकः ॥ कोशेभ्योव्यतिरिक्तस्त्वंनिर्गुणोनिरुपाश्रयः २८॥

और जिन पुरुषोंका तुम्हारी माया करके ज्ञान हरागयाहै अर्थात् सबजगत्

तुम्हारारूप है ऐसा नहीं जानतेहैं और इसीसे वे नष्टात्माहैं अर्थात् जैसे कंठ में मणिकोई पहिरेहोय और उसको भूलिकै फिर बाहर ढूंढता फिरे तैसेही जे अपने स्वरूपही को भूलिगये हैं और विरुद्ध जो प्रवृत्ति मार्ग तिस में हो रहाहै चित्त जिन्हों का ऐसे पुरुष पाप पुण्य बशते जन्म मरण रूप संसार को प्राप्त होते हैं २२ जबतक ज्ञान स्वरूप जो तुम तिसी में रहनेवाला और विषय में नहीं जानेवाला जो एकाग्रचित्त तिस करके आप नहीं जानेजाते हो तबतक सब जगत् सत्य दिखाई पड़ता है और तुम्हारे जाने पीछे तौ सब जगह आपहीका रूप दिखाई पड़ताहै और तुमसे न्यारा जगत् मिथ्या भासमान होता है जैसे जबतक सिप्पी का रूप यथावत् नहीं जाना तबतक उस में चांदी सत्य मालूम पड़ती है और सिप्पी के जाने पीछे तौ उस में चांदी झूठही जानीजाती है तैसे इहां भी जानना २३ और हे राम पुत्रदार गृहादिकों में आसक्त अर्थात् प्रीतियुक्त ऐसे जे पुरुष हैं ते आप के नहीं जानने से अन्त्यमें दुःखदेनेवाले जे बिषय तिन्हों में सत्वबुद्धि करके रमण करतेहैं २४ और हे राम इन्द्र तुम्हींहौ और अग्नि तुम्हीं हौ और यमराज तुम्हींहौ और राक्षसरूप तुम्हींहौ और बरुण तुम्हींहौ और पवन तुम्हींहौ और कुबेर तुम्हीं हौ और पुरुषोत्तम रुद्रभी तुम्हींहौ २५ और हे राम सूक्ष्म से भी सूक्ष्म तुम हौ नहीं जाने जातेहौ इससे और स्थूलसे भी अत्यन्त स्थूल तुमहौ व्यापक होने से और सबलोकों के पिता तुम्हींहौ और माता तुम्हींहौ और सबलोकों के पालन पोषण करनेवालेभी तुम्हींहौ २६ और हे राम तुम आदिमध्य अन्तकरके रहितहौ और सर्वत्र परिपूर्ण हौ और तुम अच्युतहौ अर्थात् किसीशक्ति करके रहित नहीं हौ सर्वशक्तिमान्हौ और अव्ययहौ वृद्धि और क्षय इन करके हीनहौ और हे राम तुम हाथपांव और नेत्र और कान इनकरके रहित भी हौ २७ और सुननेवाले और देखनेवाले और ग्रहण करनेवाले और चलनेवाले और खर राक्षस के नाशकरनेवाले हौ अर्थात् सब संसार बन्धनका मूल भूतजो खर राक्षस तुल्य अहंकार तिसके नाशकरनेवाले हौ और अन्नमयादिक जे पांच कोश तिनके दोषोंकरके नहीं स्पर्श करेगयेहौ तहांअन्नमय १ प्राणमय २ मनोमय ३ बिज्ञानमय ४ आनंदमय ५ ये पंचकोश हैं तिन में अन्नमय कोशस्थूल शरीरहै और प्राणमयादिककोश भीतर के चार सूक्ष्म शरीर हैं और हे राम आप अपने आपतौ निर्गुणहौ और माया के सम्बन्ध से सगुणकी तरह प्रतीयमान होरहेहौ और आप सबके आश्रयहौ और आपका आश्रय अर्थात् आधार कोई नहीं है इससे निरुपाश्रय हौ २८ ॥

निर्विकल्पोनिर्विकारोनिराकारोनिरीश्वरः ॥ षड्भावरहितोनादिः

पुरुषःप्रकृतेःपरः २९ माययागृह्यमाणस्त्वंमनुष्यइवभाव्यसे ॥ ज्ञा त्वात्वांनिर्गुणमजंवैष्णवामोक्षगामिनः ३० अहंत्वत्पादसद्भक्तिनि श्रेणींप्राप्यराघव ॥ इच्छामिज्ञानयोगाख्यंसौधमारोढुमीश्वर ३१ नमःसीतापतेरामनमःकारुणिकोत्तम ॥ रावणारेनमस्तुभ्यंत्राहिमां भवसागरात् ३२ ततःप्रसन्नःप्रोवाचश्रीरामोभक्तवत्सलः ॥ वरंवृ णीष्वभद्रंतेवाञ्छितंवरदोस्म्यहम् ३३ विभीषणउवाच॥धन्योऽस्मि कृतकृत्योऽस्मिकृतकार्योऽस्मिराघव॥त्वत्पाददर्शनादेवविमुक्तोऽस्मि नसंशयः ३४ नास्तिमत्सदृशोधन्योनास्तिमत्सदृशःशुचिः ॥ नास्ति मत्सदृशोलोकेरामत्वन्मूर्तिदर्शनात् ३५ ॥

और विकल्प जो भेद तिसकरके रहितहौ और बिकाररहितहौ और आ- कार रहितहौ और कोई तुमको पूजनीय ईश्वर नहीं है इससे निरीश्वर हौ और छः जो भाव विकार हैं तिन करके रहितहौ तहां भाव बिकार जायते १ अस्ति २ विपरिणमते ३ वर्द्धते ४ अपक्षीयते ५ नश्यति ६ ये वेदान्त शास्त्र में कहे हैं तिनका अर्थ यह है कि उत्पन्नहोना यह पहिला विकारहै जैसे देह उत्पन्न होतीहै इससे विकारवान् है तैसे आप नहीं उत्पन्नहोते इससे निर्वि- कारहौ और उत्पन्नहोके होना यह दूसराविकारहै जैसे देह में उत्पन्नहोके होनेकी प्रतीतिहोती है कुछ पहिले से नहीं है और आप तो पहिले से विद्य- मानहौ इससेअस्तिरूप दूसराविकारभी आप में नहीं है और दूसरारूप बदल जाना यह तीसरा विकारहै जैसे दूधकादही होजानाऔर देहभीप्रथम और तरह की थी फिर और तरहकी होजाती हैं इससे विकारवान् है तैसे आपका और रूप नहींहोता इससेआपमें परिणामरूप तीसराविकार नहीं है और बढ़िजाना यह चौथाविकारहै जैसे देह दिनदिन बढ़तीहै तैसे एकरस होनेसे आपनहीं ब- ढ़ते इससे वृद्धिरूप विकारभी आपमेंनहीं है और दिनपैदिन क्षीणहोना पांचवां विकारहै जैसे रोगीकीदेह दिनादिन क्षीणहोती है तौ वह विकारीहै और आपका कभी क्षयनहींहोता इससेनिर्विकारहौ और नाशहोना छठाविकार है जैसे देह नष्टहोजाती है ऐसे आपका कभी नाशनहीं इससे आप निर्विकार हौ और आपका कोई कारणनहीं इससे आप अनादिहौ और आपप्रकृतिके प्रेरकभीहौ परन्तु प्रकृतिसेपरेहौ अर्थात् प्रकृतिकेदोषोंसे न्यारेहौ २९ कदाचित् राम कहैं कि जो मैं प्रकृतिसे परेहौं तौ नेत्रों से कैसेदिखाई देताहौं इसआशय से बिभी- षण कहताहै कि हे राम मायाकरके तुम मनुष्यकी तरह दिखाई पड़ते हुये प्रतीयमान होरहेहौ और जे आपके भक्तहैं ते निर्गुण और जन्मादि विकार

रहितही आपको जानके मोक्षको प्राप्तहोतेहैं ३० अब यह दिखाई पड़ता जो श्यामसुन्दर तुम्हारारूप तिसमें भक्तिके बिना निर्गुणरूपका ज्ञाननहीं होता है इस आशयसे विभीषण कहताहै कि हेराम मैं तो तुम्हारे चरणारबिन्दोंकी सद्भक्तिरूप जो सीढ़ी है तिसको प्राप्तहोके ज्ञान योगरूप जो महल है तिसके ऊपर चढ़नेकी इच्छा करताहौं ३१ और हेदयालुओंमें श्रेष्ठ और हे सीतापते और हेराम तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै और हेरावणकेशत्रु अर्थात् हेगर्वरूपरावण के शत्रुरूप तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै और संसाररूपी समुद्रसे मेरी रक्षाकरिये ३२ तब तौ भक्तवत्सल जो श्रीरामचन्द्र सो प्रसन्नहोके विभीषणसे कहतेहुये कि हे बिभीषण तेरी जैसी इच्छाहोय तैसा वरमांग मैं प्रसन्नहो वरदेने को उपस्थितहौं ३३ तब बिभीषण बोलताहुआ कि हेराम अब मैं कृतकृत्य हुआ अर्थात् सब धर्मकृत्य करचुका क्योंकि जितने मनुष्य धर्म करतेहैं उनकायही मुख्यफल है जो परमेश्वर प्रसन्न होयसो आप प्रसन्नहुये इससे मैंसबधर्मका कृत्य करचुका और इसीसे धन्यहौं और सब पुण्य फलभी आजुमेरेको प्राप्त हुये और हेराम आपके चरणारबिन्दके दर्शनसे बिमुक्तभी हुआ इसमें कुछ संशय नहींहै ३४ और हेराम मेरे समान धन्य कोई नहींहै और न मेरे समान कोई पवित्र और इसलोकमें आपके स्वरूपके देखने से न मेरे समान कोई भाग्यशाली है ३५॥

कर्मबंधविनाशायत्वज्ज्ञानंभक्तिलक्षणम्॥ त्वद्ध्यानंपरमार्थंचदेहिमेरघुनन्दन ३६ नयाचेरामराजेंद्रसुखंविषयसम्भवम्॥ त्वत्पादकमलेसक्ताभक्तिरेवसदास्तुमे ३७ ओमित्युक्त्वापुनःप्रीतोरामःप्रोवाचराक्षसम्॥ शृणुवक्ष्यामितेभद्रंरहस्यंममनिश्चितम् ३८ मद्भक्तानांप्रशांतानांयोगिनांवीतरागिणाम्॥ हृदयेसीतयानित्यंवसाम्यत्रनसंशयः ३९ तस्मात्त्वंसर्वदाशांतःसर्वकल्मषवर्जितः॥ मांध्यात्वामोक्ष्यसेनित्यंघोरसंसारसागरात् ४० स्तोत्रमेतत्पठेद्यस्तुलिखेद्यःशृणुयादपि॥ मत्प्रीतयेममाभीष्टंसारूप्यंसमवाप्नुयात् ४१ इत्युक्त्वालक्ष्मणंप्राहश्रीरामोभक्तभक्तिमान्॥ पश्यत्विदानीमेवैषममसंदर्शनेफलम् ४२॥

और हे रघुनन्दन संपूर्ण कर्म बन्धोंके बिनाश के अर्थ आपकी भक्तिही साधन जिसका ऐसा जो अपना ज्ञान तिसको दीजिये और परमार्थ जो अपना ध्यानहै तिसको दीजिये ३६ और हे राम हे राजेन्द्र विषयोंसे उत्पन्न हुआ जो सुख तिसको मैं नहीं याचना करताहौं केवल आपके चरणारविन्द

के विषे भक्तिही मुझको होय ३७ तब श्रीराम ऐसेही होगा यह कहके फिर प्रसन्न होके विभीषणसे कहते हुये कि हे विभीषण अपना निश्चयकियाहुआ रहस्य तुझसे कहता हौं तिसको सुनु ३८ कि शान्तहै चित्त जिन्होंका और दूर हुआ विषयोंको राग जिन्होंका ऐसे जो योगीजन तिनके हृदयमें सीता करके सहित मैं वास करताहौं इसमें कुछ संशयनहीं है ३९ तिससे तुम सब कालमें शान्तहो और संपूर्ण पापों करके रहित नित्य मेरा ध्यानकरके घोरसंसार सागरसे छूट जावागे ४० और इस स्तोत्रको नित्य जो कोई पढ़ैगा मेरी प्रीतिके अर्थ और जो कोई लिखैगा और जो कोई मेरे प्रिय स्तोत्रको सुनैगा सो मेरे समान रूपको प्राप्तहोगा ४१ अबभक्त जो विभीषण तिसमें प्रीतियुक्त जो श्रीराम सो यह वचन विभीषणसे कहिकै लक्ष्मणसे बोले कि हे लक्ष्मण यह विभीषण मेरे दर्शनका फल अभी देखै ४२ ॥

लंकाराज्येभिषेक्ष्यामिजलमानयसागरात् ॥ यावच्चंद्रश्चसूर्यश्चयावत्तिष्ठतिमेदिनी ४३ यावन्ममकथालोकेतावद्राज्यंकरोत्वसौ॥ इत्युक्त्वालक्ष्मणेनांबुह्यानाय्यकलशेनतम् ४४ लंकाराज्याधिपत्यार्थमभिषेकंरमापतिः ॥ कारयामाससचिवैर्लक्ष्मणेनविशेषतः ४५ साधुसाध्वितितेसर्वेवानरास्तुष्टुवुर्भृशम् ॥ सुग्रीवोऽपिपरिष्वज्यविभीषणमथाब्रवीत् ४६ विभीषणवयंसर्वेरामस्यपरमात्मनः॥ किंकरास्तत्रमुख्यस्त्वंभक्त्यारामपरिग्रहात् ४७ रावणस्यविनाशेत्वंसाहाय्यंकर्तुमर्हसि॥ विभीषणउवाच॥ अहंकियान्सहायत्वेरामस्यपरमात्मनः किंतुदास्यंकरिष्येहंभक्त्याशक्त्यात्वमायया ४८ दशग्रीवेणसंदिष्टः शुकोनाममहासुरः ॥ संस्थितोह्यम्बरेवाक्यंसुग्रीवमिदमब्रवीत्४९॥

इससे तुम समुद्रसे जल ल्यावो मैं लंकाके राज्यमें अभिषेक इस विभीषणका अभी करताहौं और जबतक चन्द्र सूर्य प्रकाशकरैं और जबतक पृथिवी है ४३ और जबतक लोकमें मेरी कथा रहै तबतक यह विभीषण लंकाका राज्यकरै यह कहकरके श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण से कलश में जल मंगवाइके ४४ उस जल करके लक्ष्मी के पति श्री रामचन्द्र उस विभीषण को लंकाके राज्यके स्वामित्वके अर्थ मंत्रियों के द्वारा और विशेष करके लक्ष्मण के हाथसे अभिषेक करातेहुये ४५ और वे सब वानर अच्छा किया यह कहिकै स्तुति करतेहुये और सुग्रीव भी विभीषणको हृदयसे आलिंगन करके बोलता हुआ ४६ कि हे विभीषण हम सब परमात्मा जो राम तिसके किंकरहैं अर्थात् सेवकहैं तिन सबोंमें तुम भक्तिकरके और श्री रामके स्वीकार ते श्रेष्ठ हौ ४७

इससे रावणके मारने में तुम सहाय करने के योग्यहौ तब विभीषण बोलता हुआ कि हे सुग्रीव सर्व शक्तिमान् जो राम हैं तिनकी सहायतामें हम और तुम क्या कर सक्तेहैं हां भक्ति करके और जहांतक बनै तहांतक अपनी शक्ति करके और कपटको त्यागकरके केवल सेवकाई करेंगे ४८-अब उसी समयमें रावणका भेजाहुआ एक शुकनाम महाअसुर आकाशमें स्थितहो सुवाका रूप धारणकिये सुग्रीवसे वचन बोलताहुआ ४९ ॥

त्वामाहरावणोराजाभ्रातरंराक्षसाधिपः॥ महाकुलप्रसूतस्त्वंराजासिवनचारिणाम् ५० ममभ्रातृसमानस्त्वंतवनास्त्यर्थविप्लवः ॥ अहंयदहरंभार्यांराजपुत्रस्यकिंतव ५१ किष्किन्धांयाहिहरिभिर्लंकाशक्यानदैवतैः ॥ प्राप्तुंकिमानवैरल्पसत्त्वैर्वानरयूथपैः ५२ तंप्रापयंतंवचनंतूर्णमुत्प्लुत्यवानराः। प्रापद्यंततदाक्षिप्रंनिहंतुंदृढमुष्टिभिः ५३ वानरैर्हन्यमानस्तुशुकोराममथाब्रवीत् ॥ नदूतान्घ्नंतिराजेंद्रवानरान्वारयप्रभो ५४ रामःश्रुत्वातदावाक्यंशुकस्यपरिदेवितम् ॥ मावधिष्टेतिरामस्तान्वारयामासवानरान् ५५ पुनरम्बरमासाद्यशुकःसुग्रीवमब्रवीत् ॥ ब्रूहिराजन्दशग्रीवंकिंवक्ष्यामिव्रजाम्यहम् ५६ ॥

कि हे सुग्रीव राक्षसोंका स्वामी जो रावण सो तुमको भाई जानके यह वचन कहताहुआहै तिसको सुनिये कि हे सुग्रीव तुम बड़े उत्तमकुलमें उत्पन्न हुये हो और वानरोंके राजाहौ ५० और तुम मेरे भाई के समानहौ अर्थात् वालीके संग मेरी मित्रताथी इससे वह मेरा भाई रहा तिसके भाई तुमहौ तौ मेरे भाईहुये तुम्हारी द्रव्यका भी नाश मैंने नहीं किया और जो मैं राजपुत्र जो राम तिसकी भार्याको हरताहुआ तिसमें तुम्हारा क्या अपराधकिया ५१ इससे अपने वानरोंको संगलेकै किष्किन्धा नगरीको जावो और लंकापुरी देवतोंको भी प्राप्त होने को समर्थ नहीं है और थोड़ाहै पराक्रम जिनमें ऐसे मनुष्योंकरके और बानरोंकरके कैसे प्राप्तहोसक्तीहै ५२ ऐसावचन सुनताहुआ जो वह शुकनाम राक्षस तिसको वानर कूद करके उसको पकड़के घूंसों करके मारनेको उद्यत होतेहुये ५३ जब बानरों करके मारा गयातौ बड़ा दुःखितहोके रामसे वह राक्षस बोला कि हे राजेन्द्र दूतोंको कोई नहीं मारताहै इससे इन बानरोंको निवारण कीजिये ५४ तब राम शुक राक्षसके विलापका बचनसुनिकै बानरोंकोवारण करतेहुये और यह कहतेहुये इसको मतमारौ ५५ तब बानरोंने जब छोड़दिया तौ फिर आकाशमें स्थितहोके सुग्रीवसे बोला कि हे राजन् अब मैं जाताहौं और रावणसे क्याकहौं सो कहिये ५६ ॥

सुग्रीवउवाच ॥ यथावालीममभ्रातातथात्वंराक्षसाधम ॥ हंत व्यस्त्वंमयायत्नात्सपुत्रवलवाहनः ५७ ब्रूहिमेरामचन्द्रस्यभार्यांहृत्वाक्वयास्यसि ॥ ततोरामाज्ञयाधृत्वाशुकंबध्वान्वरक्षयत् ५८ शार्दूलोपिततःपूर्वं दृष्ट्वाकपिवलंमहत् ॥ यथावत्कथयामासरावणायसराक्षसः५९ दीर्घचिंतापरोभूत्वानिःश्वासन्नासमंदिरे ॥ ततःसमुद्रमावेक्ष्यरामोरक्तांतलोचनः ६० पश्यलक्ष्मणदुष्टोसौवारिधिर्मामुपागतम् ॥ नाभिनंदतिदुष्टात्मादर्शनार्थममानघ ६१ जानातिमानुषोऽयंमेकिंकरिष्यतिवानरैः ॥ अद्यपश्यमहाबाहो शोषयिष्यामिवारिधिम् ६२ पादेनैवगमिष्यंतिवानराविगतज्वराः ॥ इत्युक्त्वाक्रोधताम्राक्ष आरोपितधनुर्धरः ६३ ॥

और सुग्रीव उस राक्षस से यह कहताहुआ कि हे शुक यह रावणसे कहना कि हे राक्षसाधम जैसे वाली मेरा भाई रहा तैसे तू भी पुत्र और सेना सहित मुझको मारने योग्यहै ५७ और यह कहो कि मेरे स्वामी जो रामचन्द्र तिनकी भार्या हरके कहां जायगा तिसके उपरान्त उस शुक राक्षसको रामचन्द्र की आज्ञासे बांधिकै सुग्रीव बानरों से रक्षा कराताहुआ अर्थात् जबतक फिर रामकी आज्ञा छोड़ने की न होय तबतक बानरों के पहरेमें उसको रखता हुआ इसका आशय यह है कि रामचन्द्र ने यह विचार किया कि जो कदाचित् अभी इस शुकको जाने देवैं तौ रावण इसके मुखसे यह जानैगा कि सुग्रीव का भेद मैंने कराया भी और नहीं हुआ क्योंकि सुग्रीवकी प्रीति राम में बहुत है यह जानिकै बानरोंके मारने में और कोई उपायरचैगा और बानर विना समुद्र के पार हुये लंकामें राक्षसोंका नाश अभी करनहींसक्तेहैं इससे समुद्रके पार सब सेना पहुंचलेवै तब इसको छोड़नाचाहिये फिर इस दूतके जाते युद्धका प्रारम्भ भी होगा तौ हमारी क्षति नहीं है ५८ अब शुकके पहिले शार्दूल राक्षस रावणने भेजाथा सो दूरहीसे सब बानरोंकी सेना देखके रावण से कहताहुआ ५९ तब रावण बानरोंकी बड़ीभारी सेना सुनिकै बड़ी-भारी चिन्तामें मग्नहो गहिरे श्वास छोड़ताहुआ अपने मंदिरमें उसदिन पड़ा रहा अर्थात् बाहर नहीं निकला तिसके उपरान्त रामचन्द्र समुद्रको देखके क्रोध करके लाल नेत्र करते हुये लक्ष्मणसेबोले ६० कि हे लक्ष्मण देखो यह समुद्र ऐसा दुष्टात्मा है जो मुझको अपने तटपै प्राप्त जानकेभी नहीं प्रसन्नहोता जो अभी मेरे दर्शनको नहीं आया ६१ और यहसमुद्र अपनेमनमें यह जानता होगा कि राम मनुष्यहैं यह बानरों करके मेरा क्याकरैगा सो हेलक्ष्मण

तुम देखौ अभी मैं बाणोंकरके समुद्रको सुखाताहौं ६२ अब पांवों करकेही सब बानर सन्ताप रहित इसके पार जावैंगे यह कहिकै श्रीरामचन्द्र क्रोधसे रक्तनेत्र करके धनुषको चढ़ालेतेहुये ६३ ॥

तूणीराद्बाणमादायकालाग्निसदृशप्रभम् ॥ संधायचापमाकृष्य रामोवाक्यमथाब्रवीत् ६४ पश्यंतुसर्वभूतानिरामस्यशरविक्रमम् । इदानींभस्मसात्कुर्य्यांसमुद्रंसरितांपतिम् ६५ एवंब्रुवतिरामेतुसशैलवनकानना ॥ चचालवसुधाद्यौश्चदिशश्चतमसावृताः ६६ चुक्षुभेसागरोवेलांभयाद्योजनमत्यगात् ॥ तिमिनक्रझषामीनाःप्रतप्ताः परितत्रसुः ६७ एतस्मिन्नंतरेसाक्षात्सागरोदिव्यरूपधृक् ॥ दिव्याभरणसंपन्नःस्वभासाभासयन्दिशः ६८ स्वांतस्थदिव्यरत्नानिकराभ्यांपरिगृह्यसः ॥ पादयोःपुरतःक्षिप्त्वारामस्योपायनंबहु ६९ दंडवत्प्रणिपत्याहरामंरक्तांतलोचनम् ॥ त्राहित्राहिजगन्नाथरामत्रैलोक्यरक्षक ७० ॥

और प्रलय कालके अग्निके तुल्य है कान्ति जिसकी ऐसे वाणको तरकस से निकासिकै धनुषमें संधान करके और धनुषको खैंचके श्रीराम यहबचन बोलतेहुये ६४ कि सबभूत अर्थात् सब देव दानव गन्धर्वादिक प्राणी रामके बाणका पराक्रम देखैं इसी समयमें नदियोंका पति जो समुद्र तिसको भस्म करताहौं ६५ ऐसे जब बचन रामने कहा तौ पर्वत और नद नदी बन सहित सारी पृथिवी चलायमान होतिहुई और आकाश औ दिशा ये अन्धकारकरके आच्छादित होती हुई ६६ और समुद्र क्षोभ को प्राप्त होताहुआ और भयते एक योजनभर छोड़के हट जाता हुआ और नक्र और मत्स्य और शतयोजन तक के मत्स्य ये सब संतप्त होके त्रासको प्राप्त होतेहुये ६७ अब उसीसमय में साक्षात् समुद्र दिव्यरूप को धारण कर और दिव्य आभूषणों को धारण करे हुये और अपनी कान्ति करके सब दिशा ओंको प्रकाश करता हुआ ६८ और अपने भीतर रहनेवाले जे रत्न तिनको अपने हाथोंसे ग्रहणकरके श्रीराम के चरणों के समीप अगाड़ी बहुत सी भेंट स्थापन करके ६९ और दण्डवत् प्रणाम करके रक्तहैं नेत्रजिनके ऐसे जो रामचन्द्र तिनसे बोलताहुआ कि हे जगन्नाथ हे त्रैलोक्य के रक्षा करने वाले राम मेरी रक्षा करौ रक्षाकरौ ७० ॥

जडोहंरामतेसृष्टःसृजतानिखिलंजगत् ॥ स्वभावमन्यथाकर्त्तुंकःशक्तोदेवनिर्मितम् ७१ स्थूलानिपंचभूतानिजडान्येवस्वभावतः ॥

सृष्टानिभवतेतानित्वदाज्ञांलंघयंतिन ७२ तामसादहमोरामभूता निप्रभवंतिहि ॥ कारणानुगमात्तेषांजडत्वंतामसंस्वतः ७३ निर्गुण स्त्वंनिराकारोयदामायागुणान्प्रभो ॥ लीलयांगीकरोषित्वंतदावैराज नामवान् ७४ गुणात्मनोविराजश्चसत्त्वाद्देवाबभूविरे ॥ रजोगुणात्प्र जेशाद्यामन्योर्भूतपतिस्तव ७५ त्वामहंमाययाच्छन्नंलीलयामानुषा कृतिम् ७६ जडबुद्धिर्जडोमूर्खःकथंजानामिनिर्गुणम् ॥ दंडएवाहिमू र्खाणांसन्मार्गप्रापकःप्रभो ७७ ॥

और हे राम जिस समयमें तुमने जगत् रचा उसी समयमें मुझको जड़ स्वभावरचा तो आपके रचेहुये स्वभावको अन्यथा करनेको कौन समर्थहै ७१ क्योंकि स्थूल जे महाभूतहैं ते स्वभावही करके जड़हैं और आपहीने ऐसे रचे हैं इससे आपकी आज्ञा कोई उल्लंघन नहीं करते हैं ७२ और हे रामतामस जो अहंकार तिससे आकाशादि पंच महाभूत उत्पन्न होते हैं और कारणका गुण कार्यमें स्वभावसे आया करताहै तब जब तामस अहंकार जो हमारा कारण वही जड़स्वभावहै तौ हम पंचमहाभूत स्वभावसेही जड़हुयेही चाहैं ७३ न कहौ निर्गुण जो मैंहौं तिससे तामस अहंकारही कैसे उत्पन्नहुआ इस आशयसे समुद्र कहताहै कि निराकार निर्गुण जो तुमहौ सो जब लीलाही करके माया के गुणोंको अंगीकार करतेहौ तौ तुम वैराजनाम करके युक्तहोते हौ ७४ तिसमें गुणात्मा सगुण स्वरूप वैराज जो आपहौ तिनसे सत्त्वगुण से सनकादि देवगण होतेहुये और रजोगुणसे प्रजेश जे मन्वादिक और इन्द्रादिक ते होतेहुये और तुम्हारे क्रोधसे रुद्र उत्पन्न होतेहुये ७५ और माया करके ढकेहुये और लीलाही करके मनुष्य कासा स्वरूप जिसका ऐसे जो निर्गुण गुणों के प्रेरक ईश्वररूप तुमहौ तिसको ७६ जड़बुद्धि और स्वरूप करकेभी जड़ ऐसा जो मूर्ख मैं सो कैसे जानसकौं इससे हे स्वामिन् मूर्खोंके वास्ते दण्डहीसन्मार्ग में प्रवृत्त करानेवाला है ७७॥

भूतानाममरश्रेष्ठपशूनांलगुडोयथा ॥ शरणंतेव्रजामीशशरण्यंभ क्तवत्सल ॥ अभयंदेहिमेरामलंकामार्गददामिते ७८ ॥रामउवाच॥ अमोघोऽयंमहाबाणःकस्मिन्देशेनिपात्यताम् ॥ लक्ष्यंदर्शयमेशीघ्र म्बाणस्यामोघपातिनः ७९ रामस्यवचनंश्रुत्वाकरेदृष्ट्वामहाशरम् ॥ महोदधिर्महातेजाराघवंवाक्यमब्रवीत् ८० रामोत्तरप्रदेशेतुद्रुमकु ल्यइतिश्रुतः ॥ प्रदेशस्तत्रबहवःपापात्मानोदिवानिशम् ८१ बाधंते

मांरघुश्रेष्ठतत्रतेपात्यतांशरः ॥ रामेणसृष्टोबाणस्तुक्षणादाभीरमंडलम् ८२ हत्वापुनःसमागत्यतूणीरेपूर्ववत्स्थितः ॥ ततोब्रवीद्रघुश्रेष्ठंसागरोविनयान्वितः ८३ नलःसेतुंकरोत्वस्मिन्जलेमेविश्वकर्मणः ॥ सुतोधीमान्समर्थोऽस्मिन्कार्येलब्धवरोहरिः ८४ ॥

और हे देवतों में श्रेष्ठ जैसे पशुओंको लाठीही अच्छे मार्गमें प्रवृत्तकराती है तैसे अज्ञपुरुषों को ईश्वरका दण्डभी सन्मार्ग प्रवर्त्तक है और हे ईश भक्त हैं प्रिय जिसको और शरणागतके रक्षामेंतत्पर ऐसे जो तुमहौ तिसके मैं शरण प्राप्त होता हौं और हे राम मुझको अभय दीजिये और मैं आपको लंका का मार्ग देता हौं ७८ तो राम बोले कि हे समुद्र अमोघ जो यह मेरा बाण है सो किस स्थान पै छोड़ाजावै क्योंकि इस बाणका गिरना कहीं निष्फल नहीं होता है अर्थात् जिस स्थानपै यह गिरता है वहां बिना संहारकरे नहीं रहता इससे इसका निशाना शीघ्रही दिखावो ७९ तब समुद्र राम के हाथमें उस घोर बाणको देखके और रामके बचन सुनिकै रामसे यहबोला कि हे राम ८० मेरे उत्तरके भागमें एकद्रुमकुल्य नाम करके स्थानहै तहां बहुतसे पापीलोग बास करतेहैं ८१ वो मुझको रातिदिन बाधतेही रहतेहैं उस स्थानपै इसबाण को गिराइये तो यह समुद्रका बचन सुनिकै रामने छोड़ा जो बाण ८२ सो वह बहुत से शूद्रोंके समूहको एक क्षणमात्रही में नाश करके पहिले की तरह फिर रामके तरकसमें स्थित होताहुआ तब तो बड़ी नम्रता करके युक्तसमुद्र रामसे बोला ८३ कि हे राम इस मेरे जल में बिश्वकर्मा का पुत्र बड़ा बुद्धि मान् जो नलनाम बानर है सो सेतुको करे अर्थात् पुल बनावै क्योंकि उस को इसकार्य करनेको ब्रह्मासे वर प्राप्तहुआहै इससे वहनल समुद्रके सेतुकर ने में समर्थहै ८४ ॥

कीर्त्तिंजानंतुतेलोकाःसर्वलोकमलापहाम् ॥ इत्युक्त्वाराघवंनत्वाययौसिंधुरदृश्यताम् ८५ ततोरामस्तुसुग्रीवलक्ष्मणाभ्यांसमन्वितः ॥ नलमाज्ञापयच्छीघ्रंवानरैःसेतुबंधने ८६ ततोतिहृष्टःप्लवगेंद्रयूथपैर्महानगेंद्रप्रतिमैर्युतोनलः ॥ बबंधसेतुंशतयोजनायतंसुविस्तृतंपर्वतपादपैर्दृढम् ८७ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेतृतीयःसर्गः३

और सब लोकोंके पापों के दूरकरने वाली सेतु बंधन सेतुहुई जो आपकी कीर्तिहै तिसको सब लोकजानैं यह बचन कहिकै और रामको प्रणाम करके समुद्र अपने मनुष्य रूपको छिपालेता हुआ तब सुग्रीव और लक्ष्मण करके

युक्त जो राम सो शीघ्रही सेतुके बांधने में वानरों करके सहित नलको आज्ञा देतेहुये ८६ तिस के उपरान्त पर्वत के तुल्य है शरीर जिनका ऐसे जो बड़े बड़े यूथपति वानर तिन करके सहित जो नल सो बड़ा प्रसन्नहोके पर्वत और वृक्षोंकरके दृढ़ सौ योजनके विस्तारसेतुको करताहुआ ८७ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डे
भाषाटीकायांतृतीयःसर्गः३ ॥

सेतुमारभमाणस्तुतत्ररामेश्वरंशिवम् ॥ संस्थाप्यपूजयित्वाहरामोलोकहितायच १ प्रणमेत्सेतुबंधंयोदृष्ट्वारामेश्वरंशिवम् ॥ ब्रह्महत्यादिपापेभ्योमुच्यतेमदनुग्रहात् २ सेतुबंधेनरःस्नात्वादृष्ट्वारामेश्वरंहरम् ॥ संकल्पनियतोभूत्वागत्वावाराणसींनरः ३ आनीयगंगासलिलंरामेशमभिषिंच्यच ॥ समुद्रेक्षिप्ततद्भारोब्रह्मप्राप्नोत्यसंशयम् ४ कृतानिप्रथमेनाह्नायोजनानिचतुर्दश ॥ द्वितीयेनतथाचाह्नायोजनानितुविंशतिः ५ तृतीयेनतथाचाह्नायोजनान्येकविंशतिः ॥ चतुर्थेनतथाचाह्नाद्वाविंशतिरितिश्रुतम् ६ पंचमेनत्रयोविंशद्योजनानिसमंततः ॥ बबंधसागरेसेतुंनलोवानरसत्तमः ७ ॥

दो० । तुर्य सर्ग महँ शंभुको स्थापनकरि भगवान ॥
सेतुबँधायो रावणहि शुक उपदेशो ज्ञान १

अब महादेवजी पार्वती से कथा वर्णन करैहैं हेपार्वति अब सेतुकेबांधने का प्रारम्भ करते हुये जो श्रीराम सो रामेश्वर नाम करके शिवहैं तिनकी वेदकी विधिसे स्थापना और पूजा करके सबलोकों के हित के अर्थ यह बचन कहते हुये १ कि जो पुरुष रामेश्वर शिवका दर्शनकरके मेरे कियेहुये सेतुको प्रणाम करेगासो मेरी अनुग्रहसे ब्रह्महत्यादि पापोंसे छूटजायगा २ और सेतुबन्धन स्थानपै मनुष्य स्नानकरके और रामेश्वरकादर्शन करके फिरसंकल्पकरके बीच में कुछकार्य नहीं करताहुआ वाराणसी पुरीकोजाके ३ वहांसे गंगाजललाके रामेश्वर महादेवको स्नानकराके फिर जिन में जल भरिलायाहै उनपात्रादिकों को समुद्रमें डालकरके ब्रह्मको प्राप्तहोता है इसमें कुछ संशयनहीं है ४ अब सेतुबांधनेकाक्रम कहतेहैं पहिले दिन तौ चौदह योजन सेतु बांधते हुये और दूसरेदिन बीसयोजन सेतुबांधागया ५ और तीसरेदिन इक्कीस योजन बांधा गया और चौथेदिन बाईसयोजन बांधागया ६ और पांचवेंदिन तेईसयोजन बांधागया इसप्रकार करके समुद्रमें नलनामवानर श्रेष्ठ सेतुको बांधताहुआ७॥

तेनैवजग्मुःकपयोयोजनानांशतंद्रुतम् ॥ असंख्याताःसुवेलाद्रिं रुरुधुःप्लवगोत्तमाः ८ आरुह्यमारुतिंरामोलक्ष्मणोप्यंगदंतथा ॥ दिदृक्षूराघवोलंकामारुरोहाचलंमहत् ९ दृष्ट्वालंकांसुविस्तीर्णांनानाचित्रध्वजाकुलाम् ॥ चित्रप्रासादसंबाधांस्वर्णप्राकारतोरणाम् १० परिखाभिःशतघ्नीभिःसंक्रमैश्चविराजिताम् ॥ प्रासादोपरिविस्तीर्णप्रदेशेदशकंधरः ११ मंत्रिभिःसहितोवीरैःकिरीटदशकोज्ज्वलः ॥ नीलाद्रिशिखराकारःकालमेघसमप्रभः १२ रत्नदंडैःसितच्छत्रैरनेकैःपरिशोभितः ॥ एतस्मिन्नंतरेबद्धोमुक्तोरामेणवैशुकः १३ वानरैस्ताडितःसम्यक्दशाननमुपागतः ॥ प्रहसन्रावणप्राहपीडितःकिंपरैःशुक १४ ॥

अब उसीसेतुके मार्गकरके वानर सौयोजन समुद्रकेपार जातेहुये तिसके अनन्तर असंख्य वानर समुद्रके पारजाके सुवेलनामपर्वत को रोंक लेतेहुये ८ तब श्रीराम हनुमान्के ऊपरचढ़के और लक्ष्मण अंगदके ऊपरचढ़के दोनोंजनलंकाके देखनेको उस सुवेलपर्वतके ऊपर जातेहुये ९ अब उसपर्वतके ऊपर चढ़े हुये रामलक्ष्मण बड़े विस्तार युक्त जो लंका है तिसको देखते हुये कैसी लंकाहै नानाप्रकारकी चित्रविचित्र ध्वजा जिसमें फहरारही हैं और अनेक प्रकारके महलोंका जिसमें समूहहै और सुवर्णकी दीवालका जिसमें परकोटाहै १० और खायिआं और तोपैं और फाटकबन्दी इनकरके शोभित है और उसलंकामें एक बड़ाभारी महल तिसके ऊपर वीरमन्त्रियों करके सहितबैठा हुआ जो रावण तिसको ११ राम लक्ष्मण देखतेहुये कैसारावण है दशमुकुटों करके प्रकाश कर रहाहै औ नील पर्वतके शिखरके तुल्यहै रूप जिसका और काले मेघकीसीहै कांतिजिसकी १२ औररत्नोंके दण्ड जिनमें ऐसे अनेक सुपेद छत्रोंकरके शोभित होरहाहै अब इसप्रकार राम रावणको देखके उसी समय में वह बँधाहुआ जो शुकराक्षसथा उसकोछुड़वादेते हुये १३ तौवानरों करके बहुत ताड़न कराहुआ जो वह शुक राक्षस सो छूटके रावणके समीप जाता हुआ तौ हँस करके रावण बोला कि हे शुक क्यातू शत्रुओं करके पीड़ितहुआहै १४ ॥

रावणस्यवचःश्रुत्वाशुकोवचनमब्रवीत् ॥ सागरस्योत्तरेतीरेऽब्रुवंतेवचनंयथा ॥ ततउत्प्लुत्यकपयोगृहीत्वामांक्षणात्ततः १५ मुष्टिभिर्नखदंतैश्चहंतुंलोप्तुंप्रचक्रमुः ॥ ततोमांरामरक्षेतिक्रोशंतंरघुपुंगवः १६

विसृज्यतामितिप्राहविसृष्टोहंकपीश्वरैः ॥ ततोहमागतोभीत्याह ष्ट्वातद्वानरस्वलम् १७ राक्षसानांबलौघस्यवानरेंद्रबलस्यच ॥ नैतयोर्विद्यतेसंधिर्देवदानवयोरिव १८ पुरप्राकारमायातिक्षिप्रमेकतरंकुरु ॥ सीतांवास्मैप्रयच्छाशुयुद्धंवादीयतांप्रभो १९ मामाहरामस्त्वंब्रूहिरावणंमद्वचःशुक ॥ यद्बलंचसमाश्रित्यसीतांमेहतवानसि २० तद्दर्शयतथाकामंससैन्यःसहबांधवः ॥ श्वःकालेनगरींलंकांसप्राकारांसतोरणाम् २१ ॥

तो रावणके वचन सुनिकै शुक वचनबोला कि हेराजन् समुद्रके उत्तरतटपै जाके मैंतुम्हारेकहेहुये वचन सुनाताहुआ तौबानर क्षणभरमेंही कूदके मुझको पकड़ के १५ फिरघूंसों से और नखोंसे और दांतोंसे मुझको मारनेको नोचने खसोटनेलगे जब उन्होंने बहुत मारा मुझको तौ मैंने पुकारके राम से कहा कि हेरघुनन्दन मेरी रक्षाकरिये १६ तौ रघुओंमें श्रेष्ठ जो रामहैं सो इस को छोड़देवो यह बानरोंसे कहतेहुये फिर बानरोंकरके छोड़ाहुआ मैं उन बानरोंकी सेनाको देखके डराहुआ यहां आके प्राप्तहुआ १७ सो हे रावण राक्षसोंकी सेनाके समूहका और बानरोंकी सेनाके समूहका मिलाप कभी होनाही नहीं है जैसे देवदानवोंका नहोवै १८ और लंकाके परकोटके ऊपर बानर आयाही तौ चाहतेहैं इससे दो बातमें एक करना चाहिये कितौ राम के अर्थ सीता को दीजिये शीघ्र अथवा युद्धही दीजिये १९ और राम मुझसे यह कहते हुये कि हे शुक तू मेरा वचन रावणसे यह कहु कि जिस बलके भरोसे मेरी सीताको तू हरताहुआहै २० उसबलको सेना औ भाई बन्धुओंकरके सहित दिखलाउ और कल्ह शहरपनाह और नगरके द्वारों करके सहितलंकाको २१ ॥

राक्षसंचबलंपश्यशरैर्विध्वंसितंमया ॥ घोररोषमहंमोक्ष्येबलंधारयरावण २२ इत्युक्त्वोपररामाथरामःकमललोचनः ॥ एकस्थानगतायत्रचत्वारःपुरुषर्षभाः२३ श्रीरामोलक्ष्मणश्चैवसुग्रीवश्चविभीषणः ॥ एतएवसमर्थास्तेलंकांनाशयितुंप्रभो २४ उत्पाट्यभस्मीकरणे सर्वेतिष्ठंतुवानराः॥ तस्ययादृग्बलंदृष्टंरूपंप्रहरणानिच २५ बधिष्यतिपुरंसर्वंएकस्तिष्ठंतुतेत्रयः ॥ पश्यवानरसेनांतामसंख्यातांप्रपूरितम् २६ गर्जंतिवानरास्तत्रपश्यपर्वतसन्निभाः ॥ नशक्यास्तेगणयितुं प्राधान्येनब्रवीमिते २७ एषयोभिमुखोलंकांनदन्तिष्ठतिवानरः । यूथपानांसहस्राणांशतेनपरिवारितः २८ ॥

और सब राक्षसोंकी सेना को मेरे बाणों करके नाशको प्राप्त देखैगा घोर जो अपना क्रोधहै तिसको मैं छोड़ताहों और हे रावण अपने बलको धारण कर २२ यह वचन कहिकै कमल लोचन जो रामहैं सो मौन होतेहुये औरहे रावण यहां ये चार जने एक स्थान पै स्थित होवैं २३ एक तौ श्रीराम और दूसरे लक्ष्मण और तीसरा सुग्रीव और चौथा बिभीषण तौ ये चारही जने लंकाको उखाड़िकै भस्म करने में और नाश करने में समर्थ हैं २४ वानर सब बैठेही रहैं और तिस राम का बल और रूप और शस्त्र जैसे मैंने देखे हैं २५ तिससे यह निश्चय होता है कि वे तीनों जनेभी बैठे रहैं अकेले रामही सब राक्षसोंके नाश करनेको समर्थ हैं और हेरावण सर्वत्र परिपूर्ण और गिनने में न आसकें ऐसी जो वानरोंकी सेना तिसको देखिये २६ और जिस सेना में पर्वतके तुल्य वानर गर्जरहेहैं ते वानर गिनने को अशक्यहैं प्राधान्य करके मैं कहताहौं २७ जो यह वानर लंकाके सम्मुख गर्जता हुआ स्थित है और जो सौ हजारयूथपति वानरों करके वेष्टित हैं २८ ॥

सुग्रीवसेनाधिपतिर्नीलोनामाग्निनंदनः॥ एषपर्वतशृङ्गाभःपद्मकिंजल्कसन्निभः २९ स्फोटयत्यभिसंरब्धोलांगूलंचपुनःपुनः ॥ युवराजोंगदोनाम बालिपुत्रोऽतिवीर्यवान् ३० येनदृष्टाजनकजा रामस्यातीवल्लभा। हनुमानेषविख्यातोहतोयेनतवात्मजः ३१ श्वेतोरजतसंकाशोमहाबुद्धिपराक्रमः॥ तूर्णंसुग्रीवमागम्यपुनर्गच्छतिवानरः ३२ यस्त्वेषसिंहसंकाशः पश्यत्यतुलविक्रमः ॥ रंभोनाममहासत्वोलंकांनाशयितुंक्षमः ३३ एषपश्यतिवैलंकांदिधक्षन्निववानरः ॥ शरभोनामराजेन्द्रकोटियूथपनायकः ३४ पनसश्चमहावीर्यो मैंदश्चद्विविदस्तथा ॥ नलश्चसेतुकर्त्तासौविश्वकर्मसुतोबली ३५ ॥

यह सुग्रीव केसेनाका स्वामी नीलनाम करके अग्निका पुत्र वानर है और यहपर्वतके शृंगके तुल्य और कमलके केसरके तुल्य जिसकी कान्ति है २९ और बारम्बार क्रोध करके पूंछको पटकि रहाहै सो यह युवराजहै और अंगद इसका नामहै और यह बालीका पुत्रहै और बड़े पराक्रम करके युक्त है ३० और जिसने रामकी प्रिया सीता देखी और तुम्हारे पुत्रका जिसने बध किया है यहहनुमान् नाम करके वानरहै ३१ और जिसकी रजतके तुल्यकांति है औ बड़ी बुद्धि और बड़ा पराक्रम जिसकाहै औ जो शीघ्रही सुग्रीवके पास आके फिर लौटि जाताहै यह श्वेतनाम करके वानर सुग्रीवका सेनापति है ३२

और जो वानर सिंह के तुल्यहै और अतुलहै पराक्रम जिसका ऐसा जो देख रहाहै सो रंभ इसकानामहै और वड़ा पराक्रमीहै और लंका के नाश करने को यह समर्थहै ३३ और जो यह वानर लंकाको ऐसे देखता है कि मानों भस्म करदेवेगा सो हे राजेन्द्र इसका शरभनामहै औ कड़ोर यूथपति वानरों का जो मालिकहै ३४ और वड़ा पराक्रमी पनस नाम करके वानर है और तैसेही मैन्द और द्विविद नाम करके वानर हैं और जो नल नाम करके वानरहै सो बिश्व कर्माकापुत्र है और समुद्रका सेतु इसी ने बांधा है ३५ ॥

वानराणांवर्णनेवासंख्यानेवाकईश्वरः ॥ शूराःसर्वेमहाकायाःसर्वे युद्धाभिकांक्षिणः ३६ शक्ताःसर्वेचूर्णयितुंलंकांरक्षोगणैःसह ॥ एतेषां वलसंख्यानं प्रत्येकंवच्मितेशृणु ३७ एषांकोटिसहस्राणि नवपंचच सप्तच ॥ तथाशंखसहस्राणितथार्वुदशतानिच ३८ सुग्रीवसाचिवानां तेवलमेतत्प्रकीर्तितम् ॥ अन्येषांतुवलंनाहंवक्तुंशक्तोऽस्मिरावण ३९ रामोनमानुषः साक्षादादिनारायणःपरः ॥ सीतासाक्षाज्जगद्धेतुश्चि च्छक्तिर्जगदात्मिका ४० ताभ्यामेवसमुत्पन्नं जगत्स्थावरजंगमम् ॥ तस्माद्रामश्चसीताचजगतस्तस्थुषश्चतौ ४१ पितरौपृथिवीपालत योर्वैरीकथंभवेत् ॥ अजानतात्वयानीताजगन्मातैवजानकी ४२ ॥

और वानरोंके वर्णनकरनेको अथवा गिननेकोकौनसमर्थहै ये वानरसव शूरहैं और वड़े वड़े जिनके शरीरहैं और सवयुद्धकी इच्छाकररहेहैं ३६ और राक्षसोंके गणों करके सहित लंकाको चूर्ण करनेको सब समर्थ हैं इनकी सेनाकी संख्या एक एक सेनापतिकी मैं कहताहौं तिसको सुनिये ३७ इक्कीस हजार कड़ोर और हजारशंख और सौ अर्वुद ३८ इतनासेनाका प्रमाण तौ सुग्रीवके दशौ मन्त्री जे नलनील हनुमान् अंगद श्वेत रंभ शरभ पनसमैन्द द्विविद इनकी सेनाका है और हेरावण और जे केशरीजाम्बवान् गज गवाक्ष गवय सुषेणादिक वानरोंकी सेनाओंके अधिपतिहैं तिनकी सेनाका प्रमाण तौ मैं कहनेको समर्थही नहीं हौं ३९ और राम मनुष्यनहीं हैं किंतु सवसे परे आदि नारायण साक्षातहैं और सीता साक्षात् जगत्काहेतु और जगत्स्वरूप चिच्छक्तिहै ४० और इन्हींदोनोंसे स्थावर जंगम सव जगत् उत्पन्न हुआ है तिससे हे राजन् राम और सीता ये दोनों स्थावरजंगमके ४१ माता पिताहैं फिर तिनदोनोंका वैरीहो के कोई कैसे रहिसके और तुमने तौ विनाजानेही जगत् कीमाता जानकीहरिके लंकामें प्राप्तकी ४२ ॥

क्षणनाशिनिसंसारेशरीरेक्षणभंगुरे ॥ पंचभूतात्मकेराजन्चतुर्विंशतितत्त्वके ४३ मलमांसास्थिदुर्गंधभूयिष्ठेऽहंकृतालये ॥ कैवास्थाव्यतिरिक्तस्यकायेतवजड़ात्मके ४४ यत्कृतेब्रह्महत्यादिपातकानिकृतानिते ॥ भोगभोक्तातुयोदेहःसदेहोत्रपतिष्यति ४५ पुण्यपापेसमायातोजीवेनसुखदुःखयोः ॥ कारणेदेहयोगादिनात्मनःकुरुतोनिशम् ४६ यावद्देहोस्मिकर्त्तास्मीत्यात्माहंकुरुतेवशः ॥ अध्यासात्तावदेवस्याज्जन्मनाशादिसंभवः ४७ तस्मात्त्वंत्यजदेहादावभिमानंमहामते ॥ आत्मातिनिर्मलःशुद्धोविज्ञानात्माचलोऽव्ययः ४८ स्वाज्ञानवशतोबंधंप्रतिपद्यविमुह्यति ॥ तस्मात्त्वंशुद्धभावेनज्ञात्वात्मानंसदास्मर ४९ ॥

और हे राजन् क्षणभरमें नाशहोने का स्वभाव जिसका ऐसा जो संसार तिसमें क्षणभंगुर जो शरीर और फिर पंचभूतों करके रचाहुआ और चौबीस तत्त्वोंका ४३ और मल मांस अस्थि दुर्गन्ध येई इसमें बहुत भरेहुये हैं और अहंकारका आलयस्थान ऐसे जड़रूपशरीरमें इससे न्यारे चेतनरूप जो तुम तिसको क्या विश्वाकरने योग्यहै ४४ जिस देहके लिये अनेक ब्रह्महत्यादिक पाप तुमने किये सो सुखोंके भोगनेवाला जो देह सो यहांहीं नाश को प्राप्त होगा ४५ और सुख दुःखके कारण भूत जे पुण्य पापते जीवके संगही जातेहैं और तेपुण्यपाप देहसंयोगादि करकेही सुखदुःखोंको निरन्तर उत्पन्न करतेहैं और देहसंबन्धरहित केवल चिद्रूपआत्माको सुख दुःखादिक नहीं करसक्ते हैं ४६ और जबतक बुद्धिसंगसे आत्मामैं देहहौं और मैंकर्त्ताहौं ऐसा अहंकार प्रकृतिके वशहोके करताहै तबतक अध्यासके कारणा से अर्थात् जड़ और चेतन इनमें परस्पर मिथ्या एकाकार बुद्धि करनेसे जन्म नाशादिकों को प्राप्त होताहै इससे यह सूचनाकिया कि सुख दुःखादिककी प्राप्तिमें देहसंबन्ध मात्र मुख्य कारण नहीं है किंतु अध्यासही मुख्य कारणहै इसीसे ज्ञानीको प्रारब्धवशते देहसंबंध बना भी रहताहै परंतु सुख दुःखादिक नहीं होते हैं अध्यास दूरहोगयाहै इसकारण से ४७ तिससे हे श्रेष्ठ मति रावण तुम देहादिकके विषे अभिमान को त्यागदेवो जिससे तुम्हारा आत्मा अति निर्मलहै और शुद्ध विज्ञानस्वरूपहै और अचलहै और अविनाशीहै ४८ और ऐसे अपने स्वरूपके नहीं जाननेके कारणसे पुरुषबंधनको प्राप्तहोके मोह को प्राप्तहोता है अर्थात् बारंबारकर्ममें प्रवृत्तहोताहै तिससे तुमशुद्धबुद्ध मुक्त स्वभाव आत्माको जानके स्मरण करौ ४९ ॥

विरतिं भज सर्वत्र पुत्रदारगृहादिषु॥ निरयेष्वपि भोगः स्याच्छ्वसूकरतनावपि ५० देहं लब्ध्वा विवेकाढ्यं द्विजत्वं च विशेषतः॥ तत्रापि भारते वर्षे कर्मभूमौ सुदुर्लभम् ५१ को विद्वानात्मसात्कृत्वा देहं भोगाननुगो भवेत्॥ अतस्त्वं ब्राह्मणो भूत्वा पौलस्त्यतनयश्च सन् ५२ अज्ञानीव सदा भोगाननुधावसि किं सुधा॥ इतः परं वा त्यक्त्वा त्वं सर्वसंगं समाश्रय ५३ राममेव परात्मानं भक्तिभावेन सर्वदा॥ सीतां समर्प्य रामाय तत्पादानुचरो भव ५४ विमुक्तः सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं प्रयास्यसि॥ नो चेद्गमिष्यसे घोऽधः पुनरावृत्तिवर्ज्जितः॥ अंगीकुरुष्व मद्वाक्यं हितमेव वदामि ते ५५ सत्संगतिं कुरु भजस्व हरिं शरण्यं श्रीराघवं मरकतोपलकांतिकांतम्॥ सीतासमेतमनिशं धृतचापबाणं सुग्रीवलक्ष्मणविभीषणसेवितांघ्रिम् ५६॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे युद्धकांडे चतुर्थः सर्गः ४॥

और सबजगह पुत्रदार गृहादिकों में वैराग्यको करो और भोगतौ नरकमेंभी होताहै औरकूकरशूकर देहादिकोंमें भी होताहै ५० औरविवेक योग्य इसमनुष्यदेहको प्राप्तहोकेतिसपै भी ब्राह्मणशरीरको प्राप्तहोके और तिसपै भी कर्मभूमि जो भारतवर्ष तहां दुर्लभ जन्म को प्राप्तहोके ५१ ऐसा कौन विद्वानहै जो देहको अपनेआधीनमानके देहकेभोगोंका दासकीतरह सेवनकरै इससेतुम ब्राह्मणहोके तिसपैभी पौलस्त्यके पुत्र होके ५२ अज्ञानीकी तरह क्या झूठे भोगोंके पिछाड़ी दौररहेहो अब इसकेउपरांत सबसंग को त्यागके परमात्मा जो रामहैं तिन्हींका भक्तिभावकरके सदासेवनकरो ५३ औरसीता को रामके अर्थ समर्पण करके रामके चरणसेवक होउ इसप्रकार करोगे तौ सबपापोंसे छूटिके विष्णुलोकको प्राप्तहोउगे ५४ औरजो ऐसा न करोगे तौ उत्तम लोकसे वर्जितहोके नीचे नीचे लोकोंको प्राप्तहोवोगे और मैं तुम्हारा हितहीकहताहों इससे मेरे वचनको अंगीकारकरो ५५ और हेरावण तुम सत्पुरुषोंका संगकरो और मरकतमणिसेभी अत्यन्त कमनीय औरसीता करके सहित और धनुर्बाण हाथमें धारणकरे और सुग्रीव लक्ष्मण विभीषण इन करकेसेवितहैं चरणारविन्द जिनके और शरणागतकी रक्षामें तत्पर ऐसे जो श्रीरामरूप हरिहैं तिनका निरन्तर भजनकरो ५६॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडे भाषाटीकायांचतुर्थस्सर्गः ४॥

श्रुत्वाशुकमुखोद्गीतंवाक्यमज्ञाननाशनम् ॥ रावणःक्रोधताम्राक्षोदहन्निवतमब्रवीत् १ अनुजीव्यसुदुर्बुद्धेगुरुवन्मांषसेकथम् ॥ शासिताहंत्रिजगतांत्वंमांशिक्षन्नलज्जसे २ इदानीमेवहन्मित्वांकिंतुपूर्वकृतंतव ॥ स्मरामितेनरक्षामित्वांयद्यपिवधोचितम् ३ इतोगच्छविमूढत्वमेवंश्रोतुंनमेक्षमम् ॥ महाप्रसादइत्युक्त्वावेपमानोगृहंययौ ४ शुकोपिब्राह्मणःपूर्वंब्रह्मिष्ठोब्रह्मवित्तमः ॥ वानप्रस्थविधानेनवनेतिष्ठन्स्वकर्मकृत् ५ देवानामभिवृद्ध्यर्थंविनाशायसुरद्विषाम् ॥ चकारयज्ञविततिमविच्छिन्नांमहामतिः ६ राक्षसानांविरोधोभूच्छुकोदेवहितोद्यतः ॥ वज्रदंष्ट्रइतिख्यातस्तत्रैकोराक्षसोमहान् ७ ॥

दो० ॥ सर्गपांचवेशुकअसुर त्यागिगयो निजधाम ॥
माल्यवान कोनिदरिहित कीन्हींखलसांग्रम १

अब महादेवजी पार्वतीजीसे कथावर्णनकरतेहैं कि हेपार्वति अब रावणशुकका कहाहुआ अज्ञानके नाशकरनेवाला वचनसुनिकै क्रोध करके लालहैं नेत्र जिसके ऐसा जो रावण सो मानों दृष्टिकरके भस्मकरदेवेगा ऐसे उसशुकसों बचनबोलताहुआ १ कि हे दुर्बुद्धे मेरा तू सेवक होके मुझीको गुरूकी तरह कैसे शिक्षाकरताहै और तीनलोकका शिक्षाकरनेवाला जो मैं तिसको शिक्षा करताहुआ तू लज्जाको प्राप्तनहींहोता २ और तुझको मारतौ अभी डालता परन्तुपहिले तूने मेरेबड़ेकामाकियेहैं तिनको स्मरण करके मारनेके योग्य भी तूहै तिसको नहींमारताहौं ३ और हेमूढ तू यहांसे चलाजा क्योंकि तेरेबचन मुझसे नहींसुनेजाते तब वह शुकराक्षस आपका मेरेऊपर बड़ा अनुग्रहहुआ यह कहिकै कम्पितहो अपने गृहको जाताहुआ अर्थात् राक्षसभावको त्यागके शुद्धब्राह्मणहो अपने पहिले वानप्रस्थ आश्रमका जो तपकरनेके योग्य गृहथा तिसकोजाताहुआ ४ क्योंकि वह शुक पहिले ब्रह्मवेत्ताओंमें श्रेष्ठ ब्रह्मविचार में तत्पर ब्राह्मणरहा और वानप्रस्थके आश्रममें जैसा कुछ वेदमें विधान कहाहै तिस करके वनमें स्थितहो अपने कर्मको करताहुआ ५ फिरवहशुक ब्राह्मण देवताओं की वृद्धिके अर्थ और राक्षसोंके नाशके अर्थ निरंतर यज्ञों को करताहुआ ६ तबदेवतोंके हितमें उद्योगकरताहुआ जो वहशुक ब्राह्मण तिसके संग राक्षसोंकाबड़ाभारी विरोध होताहुआ तहां वज्रदंष्ट्र नाम करके एक बड़ाभारी राक्षस ७ ॥

अन्तरंप्रेप्सुरातिष्ठच्छुकापकरणोद्यतः ॥ कदाचिदागतोगस्त्य

स्तस्याश्रमपदंमुनेः ८ तेनसंपूजितोगस्त्योभोजनार्थंनिमंत्रितः ॥ गतेस्नातुंमुनौकुम्भसंभवेप्राप्यचांतरम् ९ अगस्त्यरूपधृक्सोपिराक्षसः शुकमब्रवीत् ॥ यदिदास्यसिमेब्रह्मन्भोजनंदेहिसामिषम् १० हुकालंवनभुक्तंमेमांसंछागांगसंभवम् ॥ तथेतिकारयामासमांसभुज्यंसविस्तरम् ११ उपविष्टेमुनौभोक्तुंराक्षसोतीवसुन्दरम् ॥ शुकभार्यावपुर्धृत्वातांचांतर्मोहयन्खलः १२ नरमांसंददौतस्मैसुपक्वंबहुविस्तरम् ॥ दत्त्वैवांतर्दधेरक्षस्ततोदृष्ट्वाचुकोपसः १३ अमेध्यंमानुषंमांसमगस्त्यःशुकमब्रवीत्॥ अभक्ष्यंमानुषंमांसंदत्तवानसिदुर्मते १४

उस शुक ब्राह्मणके तिरस्कार में छिद्रदेखनेमें तत्पर रहताहुआ अब किसी समयमें उन शुक ऋषि के आश्रम में अगस्त्यजी आतेहुये ८ तब उस शुक ब्राह्मणने अगस्त्यका पूजन किया और भोजनके अर्थ निमन्त्रणभी किया तब अगस्त्यजी महाराजतो स्नानकरनेकोगये और उसी अन्तरको देखके वह बज्रदंष्ट्र नाम करके राक्षस ९ अगस्त्य ऋषिका रूपधारण करके उन शुकऋषिसे बचन बोला कि हे ब्रह्मन् जो तुम भोजन हमको दिया चाहतेहो तो मांस सहित भोजन दीजिये १० क्योंकि बहुत कालसे बकरेका मांस हमने भोजन नहीं किया तब वह शुक ब्राह्मण तैसेही भोजनके योग्य विस्तार पूर्वक मांस कराताहुआ ११ तब जब अगस्त्यमुनि भोजन करनेको बैठे उसी समय में वह दुष्ट वज्रदंष्ट्र राक्षस शुककी स्त्रीकासा बड़ा सुंदररूप धारण करके औरशुककी स्त्रीको ऐसा मोहकरादिया कि जिससे वह अगस्त्य ऋषिके सामने परोसनेको न निकलिसके १२ इसप्रकार मायाकरके वह बज्रदंष्ट्र राक्षस शुककीस्त्रीके रूपसे अगस्त्यजीके आगे बहुत प्रकारका पकाहुआ मनुष्यका मांस परोस के आप अन्तर्द्धान होजाताहुआ अर्थात् छिपजाताहुआ तब अगस्त्य ऋषि अपवित्र मनुष्यके मांस देखके क्रोध करके शुक ऋषिसे बचन बोलतेहुये १३ कि हे दुष्टमते जिसकारणसे अभक्ष्य मनुष्य मांसको मेरे अर्थदेताहुआहै १४ ॥

महत्यन्त्वंराक्षसोभूत्वा तिष्ठत्वंमानुषाशनः ॥ इतिशप्तःपुरोभीत्या प्राहागस्त्यंमुनेत्वया १५ इदानींभाषितंमेद्यमांसंदेहीतिविस्तरम् ॥ तथैवदत्तम्मेदेवकिंमेशापंप्रदास्यसि १६ श्रुत्वाशुकस्यवचनंमुहूर्तंध्यानमास्थितः ॥ ज्ञात्वारक्षःकृतंसर्वंततःप्राहशुकंसुधीः १७ तवापकारिणासर्वंराक्षसेनकृतंत्विदम् ॥ अविचार्यैवमेदत्तःशापस्तेमुनिसत्तम १८ तथापिमेवचोमोघमेवमेवभविष्यति ॥ राक्षसंवपुरास्थाय

रावणस्यसहायकृत् १९ तिष्ठतावद्यदारामोदशाननबधायहि ॥ आगमिष्यतिलंकायाःसमीपंवानरैःसह २० प्रेषितोरावणेनत्वंचारोभूत्वारघूत्तमम् ॥ दृष्ट्वाशापाद्विनिर्मुक्तोबोधयित्वाचरावणम् २१ ॥

तिस कारणसेतूराक्षसहोकै मनुष्यके मांसको भोजन करताहुआ स्थित होउ अब इसप्रकार अगस्त्य करके शापको प्राप्त जो शुकऋषि सो भयकरके अगस्त्यऋषिके आगेस्थित होकै बोले १५ किहेमुने इस समयमें तो आपही ने मुझसे कहाथा कि बहुतप्रकारका मांस विस्तारपूर्वक हमको देवो और हे देव तैसेही आपकी आज्ञासे मैंने मांसदिया फिर किसवास्ते मुझकोआपशाप देतेहुये १६ तब यह शुकका बचन सुनिकै अगस्त्यऋषि दोघड़ीतक ध्यानमें स्थितहोतेहुये फिर वह सब कृत्यराक्षसका किया जानिकै शुकऋषि से कहते हुये १७ कि हे मुनिसत्तम तुम्हारा तिरस्कार करनेवाला जो राक्षसतिसका कियाहुआ यह सब अपराधहै और बिनाही बिचारे मैंने तुमको शाप दिया १८ तौभी मेरा बचन अमोघ है इससे मिथ्या कभी नहीं होगा अर्थात् सत्यही होगा और तुम राक्षस शरीरको धारण करके रावणका सहायकरौगे १९ और तबतक तुम राक्षस शरीर को धारण करो जबतक राम रावण के मारने को वानरों करके सहित लंकाके समीप आवैंगे २० तौ रावण के भेजेहुये तुम हलकारा होके रामको देखके शापसे छूटिकै फिर रावणको तत्त्व ज्ञान का उपदेश करके २१ ॥

तत्त्वज्ञानंततोमुक्तःपरंपदमवाप्स्यसि ॥ इत्युक्तोगस्त्यमुनिनाशुकोब्राह्मणसत्तमः २२ बभूवराक्षसःसद्योरावणंप्राप्यसंस्थितः ॥ इदानींचाररूपेणदृष्ट्वारामंसहानुजम् २३ रावणंतत्त्वविज्ञानंबोधयित्वा पुनर्द्रुतम् ॥ पूर्ववद्ब्राह्मणोभूत्वास्थितोवैखानसैःसह २४ ततःसमागमद्वृद्धोमाल्यवान्राक्षसोमहान् ॥ बुद्धिमान्नीतिनिपुणोराज्ञोमातुःप्रियःपिता २५ प्राहतंराक्षसंवीरंप्रशांतेनांतरात्मना ॥ शृणुराजन्वचोमेद्यश्रुत्वाकुरुयथेप्सितम् २६ यदाप्रविष्टानगरींजानकीरामवल्लभा ॥ तदादिपुर्य्यांदृश्यंतेनिमित्तानिदशानन २७ घोराणिनाशहेतूनितानिमेवदतःशृणु ॥ खरस्तनितनिर्घोषामेघाअतिभयंकराः २८ ॥

मुक्त होके परमपदको प्राप्तहोउगे इस प्रकार अगस्त्य मुनि करके कहा हुआ जो वह ब्राह्मणों में श्रेष्ठ शुक २२ सोशीघ्रही राक्षस होजाता हुआ और रावण को प्राप्त होके तिसके समीप स्थित होता हुआ और इस समय में

चार रूप करके लक्ष्मण सहित रामको देखके २३ और रावण को तत्त्वज्ञान का उपदेश करके शीघ्रही पहिले के तरह ब्राह्मण होके वानप्रस्थ जो ब्राह्मण हैं तिसकरके सहित फिर तपमें स्थित होता हुआ २४ अब तिसके उपरान्त बड़ा बुद्धिमान् और नीतिमें निपुण और रावण की माताका पिता और रावण का प्रिय और बड़ा वृद्ध ऐसा माल्यवान् नामकरके राक्षस रावणके समीप प्राप्तहोताहुआ २५ और वहमाल्यवान् बड़े प्रशान्त चित्तसे रावणसे बोलाकि हे राजन् तुम मेरे वचन सुनो और सुनिकै फिर जैसी इच्छाहोय तैसाकरियेगा २६ हे रावण जवसे रामकी प्रिया सीता लंका में प्रविष्ट हुई अर्थात् लंका में आती हुई तव से राक्षसों के नाश करने वाले बड़े घोर निमित्त दिखाई पड़तेहैं २७ तिनको सुनिये मैं कहता हौं कठोरगर्जतेहुये और बिजुलियां जिन्होंसे गिररही हैं ऐसे अत्यतभयंकर मेघ २८ ॥

शोणितेनाभिवर्षंतिलंकामुष्णेनसर्वदा ॥ रुदंतिदेवलिंगानिस्विद्यन्तिप्रचलंतिच २९ कालिकापांडुरैर्दन्तैःप्रहसन्त्यग्रतस्थिता॥खरागोषुप्रजायंतेमूषकानकुलैःसह ३० मार्जारेणतुयुद्ध्यन्तिपन्नगागरुडेन तु ॥ करालोविकटोमुंडःपुरुषःकृष्णपिंगलः ३१ कालोगृहाणिसर्वेषांकालेकालेत्ववेक्षते ॥एतान्यन्यानिदृश्यंतेनिमित्तान्युद्भवंतिच ३२ अतःकुलस्यरक्षार्थंशांतिंकुरुदशानन ॥ सीतांसत्कृत्यसधनांरामायाशुप्रयच्छभो ३३ रामंनारायणंविद्धिविद्वेषंत्यजराघवे ॥ यत्पादपोतमाश्रित्यज्ञानिनोभवसागरम् ३४ तरंतिभक्तिपूतांतास्ततोरामोनमानुषः ॥ भजस्वभक्तिभावेनरामंसर्वहृदालयम् ३५ ॥

गरम रुधिरकी लंकामें वृष्टि करतेहैं और सबकालमें देवतों की प्रतिमा रोवतीहैं और पसीना उनमें वारंवार आवताहै और कहीं स्थापन कीगयी हैं और कहीं दिखलाई देतीहैं २९ और कालाहै वर्ण जिस का ऐसी कोई अपूर्व स्त्री का रूप धारण करे देवी सफ़ेद दांतों को निकालि कै राक्षसों के आगे हँसती है अर्थात् तुम सब राक्षसों को मैं भक्षण करौंगी इस आशय ते हँसती है और गर्दभ गौओंमें उत्पन्न होते हैं और निउलों करके सहित ३० चूहे बिल्लियों से युद्ध करते हैं इसका आशय यह है कि जब बिल्लियों के खाये चूहे बिल्लियों को मारनेलगे तौ राक्षसोंका भोजनरूप मानुषवानर भी राक्षसोंको अवश्य मारेंगे ऐसेही सर्प भी गरुड़से युद्ध करते हैं और बड़ा भयंकर और मुड़ाहुआ जिसका शिर और काला और पीला जिसकावर्णऐसा पुरुष वेष धारण करे ३१ काल सब राक्षसों को घर घर दिखाई देता है समय २ में

सो हे राजन् ये औ और भी इसी तरह के निमित्त दिखाई देते हैं और हो भी रहेहैं ३२ इससे हे रावणइसराक्षस कुलकी रक्षाके अर्थशांतिको करिये सो शान्ति यहीहै कि सीताको सत्कार करके धनसहित श्रीराम को शीघ्रही दीजिये ३३ और राम को तुम नारायण जानौ इसीसे रामके संगद्वेष को त्याग दीजिये और जिस रामके चरण कमलरूप पोतको अर्थात् स्वल्प नौका को आश्रयण करके भक्ति करके पवित्र हुआहै अन्तःकरण जिन्हों का ऐसे ज्ञानी लोग भवसागरके पार होते हैं ३४ तिससे राम मनुष्य नहीं है इससे सबका हृदय है स्थान जिसका ऐसातो सबका अन्तर्यामी रामतिनको भक्तिभाव करके सेवन करो ३५ ॥

यद्यपित्वंदुराचारोभक्त्यापूतोभविष्यसि ॥ मद्वाक्यंकुरुराजेंद्रकुलकौशलहेतवे ३६ तत्तुमाल्यवतोवाक्यहितमुक्तंदशाननः॥ नमर्षयतिदुष्टात्माकालस्यवशमागतः ३७ मानवंकृपणंरामंएकंशाखामृगाश्रयम् ॥ समर्थंमन्यसेकेनहीनंपित्रामुनिप्रियम् ३८ रामेणप्रेषितोनूनंभाषसेत्वमनर्गलम् ॥ गच्छवृद्धोसिबंधुस्त्वंसोढंसर्वंत्वयोदितम् ३९ इतोमत्कर्णपदवींदहत्येतद्वचस्तव ॥ इत्युक्त्वासर्वसचिवैःसहितःप्रस्थितस्तदा ४० प्रासादाग्रेसमासीनःपश्यन्वानरसैनिकान्॥ युद्धायायोजयत्सर्वराक्षसान्समुपस्थितान् ४१ रामोपिधनुरादाय लक्ष्मणोनसमाहतम् ॥ दृष्ट्वारावणमासीनंकोपेनकलुषीकृतः ४२ ॥

और यद्यपि तुम दुराचार हौ तौभी भक्ति करके पवित्र होजावोगे इस से हे राजेन्द्र इस कुलके कल्याणके लिये मेरे बचनको करिये ३६ अब रावण तिस हितकारी माल्यवान्के बचनको नहीं ग्रहणकरता हुआ जिससेदुष्टात्मा है और कालकी फांसीसे बधाहुआहै ३७ और रावणयह कहता हुआ कि हे राक्षस जो राम मनुष्यहै और दुःखी और अकेला और वानरोंका जिसने आश्रय कियाहै और पिताने जिसको निकालदियाहै और मुनिलोगहैं प्रिय जिसको ऐसे रामको कौन कारणसेतुम समर्थ मानतेहौ ३८ औरमालूम परता है कि रामके भेजेहुये तुम अनर्गल बचन कहतेहौ इससे तुम जावो बूढ़ेहो और नातेमेंभी नाना लगतेहो इससे क्या कहौं जो कुछु कहासो मैंनेसहा ३९ इसीसे तुम्हारे मुखसे निकला हुआ बचन मेरे कानोंको भस्म करताहै ऐसा कहिकै रावण मन्त्रियोंकरके सहित वहां से अन्यत्रचलाजाता हुआ ४० अब रावण महलके ऊपर चढ़िकै बानरोंकी सेनाको देखताहुआ और देखके फिर समीप स्थितजे राक्षस तिनकोयुद्धकरनेको आज्ञादेता हुआ ४१

और रामचन्द्रभी लक्ष्मणने ल्याइकै दिया जोधनुष तिसकोग्रहण करके सिं-हासनके ऊपरबैठे और मन्त्रियों करके सहित और मुकुटको धारण किये जो रावण तिसकोदेखके बडेक्रोध युक्तहोके ४२ ॥

किरीटिनंसमासीनंसंत्रिभिःपरिवेष्टितम् ॥ शशांकार्द्धनिभेनैवबाणेनैकेनराघवः ४३ श्वेतछत्रसहस्राणिकिरीटदशकंतथा ॥ चिच्छेद निमिषार्द्धेनतदद्भुतमिवाभवत् ४४ लज्जितोरावणस्तूर्णंविवेशभवनंस्वकम् ॥ आहूयराक्षसान्सर्वान्प्रहस्तप्रमुखान्खलः ४५ वानरैःसहयुद्धायनोदयामाससत्वरः ॥ ततोभेरीमृदंगाद्यैःपणवानकगोमुखैः ४६ महिषोष्ट्रैःखरैःसिंहैर्द्वीपिभिःकृतवाहनाः ॥ खड्गशूलधनुःपाशयष्टितोमरशक्तिभिः ४७ लक्षिताःसर्वतोलंकांप्रतिद्वारमुपाययुः ॥ तत्पूर्वमेवरामेणनोदितावानरर्षभाः ४८ उद्यम्यगिरिशृङ्गाणिशिखराणि महांतिच ॥ तरूंश्चोत्पाट्यविविधान्युद्धायहरियूथपाः ४९ ॥

अर्द्धचन्द्राकार बाणकरके रावणके हज़ारोंसफ़ेद छत्र और दशमुकुट इनको आधेही छणमें काटिकै भूमिमें डालदेतेहुये यहबडा अद्भुत चरित्र होताहुआ ४३।४४ तबरावण लज्जितहोके शीघ्रही अपने मन्दिरमें प्रवेशकरताहुआ फिर वह खलरावण प्रहस्तको आदिलैके मन्त्रियोंको बुलाकर ४५ वानरोंकेसंग युद्ध करनेको शीघ्रही भेजताहुआ तिसके उपरान्त भेरी और मृदंग और पणव और गोमुख इनको आदि लैके जे बाजे ४६ तिनको बजातेहुये और भैंसा और ऊंट और गदहा और सिंह और चीता इनके ऊपरसवार होके खड्ग और शूल और धनुष और फांसी और लाठी और तोमर और सांग इनको आदि लैके शस्त्रोंकरके युक्त ४७ जे राक्षस ते चारोंतरफसे लंकाके सबद्वारोंपै अर्थात् दर-वाजोंपै जातेहुये और तिसके पहिलेही रामनेभेजे जे श्रेष्ठवानर ते ४८ बड़े भारी पर्वतोंके शिखरोंको हाथमें लियेहुये और वृक्षोंको उखाड़ २ के हाथोंमें लियेहुये युद्धके अनेक यूथपति वानर स्थित होतेहुये ४९ ॥

प्रेक्षमाणारावणस्यतान्यनीकानिभागशः ॥ राघवप्रियकामार्थं लंकामारुरुहुस्तदा ५० तेद्रुमैःपर्वताग्रैश्चमुष्टिभिश्चप्लवंगमाः ॥ ततःसहस्रयूथाश्चकोटियूथाश्चयूथपाः ५१ कोटीशतयुताश्चान्येरुरुधुर्नगरंभृशम् ॥ आप्लवन्तःप्लवन्तश्चगर्जन्तश्चप्लवंगमाः ५२ रामोजयत्यतिबलोलक्ष्मणश्चमहाबलः ॥ राजाजयतिसुग्रीवोराघवेणानुपालितः ५३ इत्येवंघोषयंतश्चसमंयुयुधिरेऽरिभिः ॥ हनूमानं

गदश्चैवकुमुदोनीलएवच ५४ नलश्चशरभश्चैवमैन्दोद्विविदएवच॥ जाम्बवान्दधिवक्त्रश्चकेशरीतारएवच ५५ अन्येचबलिनःसर्वेयूथपाश्चप्लवंगमाः॥ द्वाराण्युत्प्लुत्यलंकायाःसर्वतोरुरुधुभृशम्॥ तदावृक्षैर्महाकायाःपर्वताग्रैश्चवानराः ५६॥

और वेसब वानर रावणके सेनाकीराह देखरहेहैं और अपने अपने भाग करके सबदरवाजोंपै वानर पहुंचगयेहैं और रामकी प्रीतिके अर्थ लंकाके ऊपर चढ़िरहेहैं ५० ते वानर वृक्षोंकरके और बड़ीभारी शिलाओं करके और घूसों करके राक्षसोंके मारनेको उद्यत होरहेहैं और कोई दरवाजे पै हजार यूथवानर हैं और किसी दरवाजेपर कड़ोर यूथवानरहैं ५१ और कहीं अनेक कड़ोर यूथ वानरहैं इसप्रकार कड़ोरों यूथपति बानर चारोंतरफसे लंकाको रोंकलेतेहुये अर्थात् ऐसी कहीं जगह नहींरक्खी जहांकोई राक्षस निकलजाय और कोई वानर ऊपरकूदतेहैं कोई नीचेको आतेहैं कोई गर्जरहेहैं ५२ और यहबचन कहिरहेहैं कि अतिबल जोरामहै सोजयको प्राप्तहोय और महाबल जोलक्ष्मण सो जयको प्राप्तहोवै और रामकरके रक्षित जो राजा सुग्रीव सो जयको प्राप्त होय ५३ इसप्रकार शब्दकरते हुये वानर वैरियोंके संग युद्ध करते हुये अबहनुमान् और अंगद और कुमुद और नील ५४ और नल और शरभ औमैन्द और द्विविद और जांबवान् और दधिवक्र और केसरी और तार ५५ और इनको आदिलेके और भी जे यूथपति वानरते लंकाके दरवाजों पै कूदकरके चारों तरफसे लंकाको रोकतेहुये ५६॥

निजघ्नुस्तानिरक्षांसिनखैर्दन्तैश्चवेगिताः॥ राक्षसाश्चतदाभीमाद्वारेभ्यःसर्वतोरुषा ५७ निर्गत्यभिंदिपालैश्चखड्गैःशूलैःपरश्वधैः॥ निजघ्नुर्वानरानीकंमहाकायामहाबलाः ५८ राक्षसांश्चतथाजघ्नुर्वानराजितकाशिनः॥ तथाबभूवसमरोमांसशोणितकर्दमः ५९ रक्षसांवानराणांचसंबभूवाद्भुतोपमः॥ तेहयैश्चगजैश्चैवरथैःकांचनसन्निभैः ६० रक्षोव्याघ्रायुयुधिरेनादयंतोदिशोदश॥ राक्षसाश्चकपींद्राश्चपरस्परजयैषिणः ६१ राक्षसान्वानराजघ्नुर्वानरांश्चैवराक्षसाः॥ रामेणविष्णुनादृष्टाहरयोदिविजांशजाः ६२ बभूवुर्बलिनोहृष्टास्तदापीतास्मृताइव॥ सीताभिमर्षपापेनरावणेनाभिपालितान् ६३॥

और बड़े बड़े हैं शरीर जिनके ऐसे जे बानर ते वृक्षों करके और पर्वतों करके औरनखों करके औरदांतोंकरके राक्षसोंको बड़ेवेगसे मारतेहुये औरबड़ेभयं-

कर और बड़ेबलवान् औरबड़े जिनके शरीर ऐसेजेराक्षसहैं तेसब द्वारोंसे निक-लके ५७ तलवारों करके और शूलों करके औरफरसों करके और भिन्दिपालों करके वानरोंको मारतेहुये ५८ और जय करके शोभित जेवानरहैं तेराक्षसोंको मारतेहुये और उस समयमें मांस और रुधिर इनकी है कीचड़ जिसमें ऐसा घोर संग्राम होताहुआ ५९ और वानरोंका और राक्षसोंका बड़ी अद्भुतहै उपमा जिसकी ऐसा संग्राम होताहुआ अब तेराक्षस घोड़ोंकरके और हाथियों करके और सुवर्णकासाहै प्रकाश जिनमें ऐसे रथों करके ६० दशोंदिशाओंको शब्द युक्तकरतेहुये और राक्षस और वानर ये परस्पर जयकी इच्छाकरतेहुये ६१ राक्षसोंको तो वानर मारतेहुये और वानरोंको राक्षस मारतेहुये और देवतोंके अंशसे उत्पन्नहुये जे वानर ते विष्णुरूप रामके देखनेसे ६२ जैसे अमृत पान किया होय तैसे बलवान् और प्रसन्न होके सीताके स्पर्शसे पापी जो रावण तिस करके रक्षित और नष्टहोगई है लक्ष्मी जिनकी और नष्टहुआ है बल जि-नका ऐसे जे राक्षस तिनको ६३ ॥

हतश्रीकान्हतबलान्राक्षसाञ्जघ्नुरोजसा ॥ चतुर्थांशावशेषेण निहतंराक्षसंबलम् ६४ स्वसैन्यंनिहतंदृष्ट्वामेघनादोथदुष्टधीः ॥ ब्रह्मदत्तवरःश्रीमानंतर्द्धानंगतोसुरः ६५ सर्वास्त्रकुशलोव्योम्निब्रह्मास्त्रेणसमंततः ॥ नानाविधानिशस्त्राणिवानरानीकमर्दयन् ६६ ववर्ष शरजालानितदद्भुतमिवाभवत् ॥ रामोऽपिमानयन्ब्राह्ममस्त्रमस्त्रविदांवरः ६७ क्षणंतूष्णीमुवासाथददर्शपतितंबलम् ॥ वानराणांरघुश्रेष्ठश्चुकोपानलसन्निभः ६८ चापमानयसौमित्रेब्रह्मास्त्रेणासुरंक्षणात् ॥ भस्मीकरोमिमेपश्यबलमद्यरघूत्तम ६९ मेघनादोपितच्छ्रुत्वारामवाक्यमतंद्रितः ॥ तूर्णंजगामनगरंमाययामायिकोऽसुरः ७० ॥

बड़े बलसे मारतेहुये इस प्रकार चौथाई तो राक्षसोंकी सेना बाकीरही और सब वानरोंने नाशको प्राप्तकरदी ६४ अब अपनी सेनाको मरीहुई देखके दुष्टहै बुद्धि जिसकी और ब्रह्मासे जिसको वर प्राप्तहुआहै ऐसा जो लक्ष्मी युक्त मेघनाद सो अन्तर्द्धानको प्राप्त होताहुआ ६५ और सब अस्त्र विद्यामें कुशल जो मेघनाद सो आकाशमें छिपके ब्रह्मास्त्रके प्रभाव करके वानरोंकी सेनाको पीड़ित करताहुआ अनेक अस्त्र शस्त्रोंकी आकाशसे वृष्टि करताहुआ ६६ और बाणोंके समूहको वर्षाताहुआ सोबड़ा अद्भुतचरित्रहुआ और अस्त्र विद्या के जानने वालोंमें श्रेष्ठ जोराम सोभी ब्रह्मास्त्रकामान करतेहुये क्षणमात्रमौन स्थित होतेहुये ६७ अबइसके उपरान्त श्रीरामचन्द्र ब्रह्मास्त्रके प्रभाव करके

वानरोंकी सेनाको गिरीहुई देखतेहुये और फिर देखके अग्निके तुल्य जोराम सो क्रोध करते हुये ६८ और लक्ष्मणसे यहकहते हुये कि हे लक्ष्मण मेरा धनुषल्लावोमैं ब्रह्मास्त्र करके क्षण मात्रमें सबअसुरोंको भस्म करताहौं अब मेरे बलको तुमदेखो ६९ अब मेघनादभी यहरामका बचन सुनिकै सावधानहो शीघ्रही मायाकरके अपने नगरको जाताहुआ और वहबड़ा मायावीहै ७० ॥

पतितंवानरानीकंदृष्ट्वारामोऽतिदुःखितः ॥ उवाचमारुतिंशीघ्रं गत्वाक्षीरमहोदधिम् ७१ तत्रद्रोणगिरिर्नाम दिव्यौषधिसमुद्भवः ॥ तमानयद्रुतंगत्वा संजीवयमहामते ७२ वानरौघान्महासत्वान्कीर्तिस्तेसुस्थिराभवेत् ॥ आज्ञाप्रमाणमित्युक्त्वाजगामानिलनंदनः७३ आनीयचगिरिंसर्वान्वानरान्वानरर्षभः जीवयित्वापुनस्तत्रस्थापयित्वाययौद्रुतम् ७४ पूर्ववद्धैरवंनादंवानराणांबलौघतः ॥ श्रुत्वा विस्मयमापन्नो रावणोवाक्यमब्रवीत् ७५ राघवोमेमहाञ्छत्रुः प्राप्तोदेवविनिर्मितः ॥ हंतुंतंसमरेशीघ्रंगच्छंतुममयूथपाः ७६ मंत्रिणो बांधवाः शूरायेचमत्प्रियकांक्षिणः ॥ सर्वेगच्छन्तुयुद्धाय त्वरितंमम शासनात् ७७ ॥

अबश्रीराम पृथिवीमें पड़ीहुई अपनी वानरोंकी सेनाको देखके बड़ेदुःखित हो हनुमान्से बोले कि हे हनुमन् तुम शीघ्रही क्षीरसागर समुद्रकोजाके ७१ तहां दिव्य ओषधियोंका उत्पत्ति करनेवाला एकद्रोण नामकरके पर्वतहै तिसको ल्याइकै शीघ्रही इसवानरोंकी सेनाको जिवाइये ७२ तो हे श्रेष्ठमति हनुमन् तुम्हारी बड़ी संसारमें कीर्तिहोगी तबपवनका पुत्र हनुमान् आपकी आज्ञा मुझको अवश्यकरना चाहिये ऐसा रामसे कहिकै जाताहुआ ७३ फिर वानरोंमें में श्रेष्ठ जो हनुमान् सो द्रोणाचल पर्वतको ल्याइकरके सब बानरोंको जिवाकर और फिर उस पर्वतको उसी स्थानपै स्थापन करके शीघ्रही आताहुआ ७४ अब पहिलेकी तरह बानरोंकी सेनाका घोरशब्द सुनिकै बड़े आश्चर्यको प्राप्तहो रावण यह वचन बोलताहुआ ७५ कि देवतों करके रचा हुआ राममेरा बड़ाभारी शत्रु प्राप्तहुआहै इससे तिस रामके मारनेको संग्राममें शीघ्रही मेरे सेनापति जावैं ७६ और जे कोई मन्त्री लोगहैं और जे कोई भाई बन्धुओंमें मेरी प्रीति करनेवाले शूरहैं ते सब शीघ्रही मेरी आज्ञासे युद्धकरनेको जायँ ७७ ॥

येनगच्छन्तियुद्धायभीरवःप्राणविह्वलात् ॥ तानहनिष्याम्यहंसर्वा

न्मच्छासनपराङ्मुखान् ७८ तच्छ्रुत्वाभयसंत्रस्तानिर्जग्मूरणकोवि दाः ॥ अतिकायःप्रहस्तश्चमहानादमहोदरौ ७९ देवशत्रुर्निकुंभश्च देवांतकनरांतकौ ॥ अपरेबलिनःसर्वेययुर्युद्धायवानरैः ८० एतेचा न्येचवहवःशूराःशतसहस्रशः ॥ प्रविश्यवानरंसैन्यंममंथुर्बलदर्पि ताः ८१ भुशुंडीभिंदिपालैश्चबाणैःखड्गैःपरश्वधैः ॥ अन्यैश्चविवि धैरस्त्रैर्निजघ्नुर्हरियूथपान् ८२ तेपादपैःपर्वताग्रैर्नखदंष्ट्रैश्चमुष्टिभिः ॥ प्राणैर्विमोचयामासुःसर्वराक्षसयूथपान् ८३ रामेणनिहताःकेचित्सु ग्रीवेणतथापरे ॥ हनूमताचांगदेनलक्ष्मणेनमहात्मना ८४ ॥

और जे कोई प्राणों के नाशके भयसे संग्रामसे डरेहुये युद्ध करनेको नहीं जावेंगे तिन सबोंको मैं मार डालोंगा क्योंकि वे मेरी आज्ञाके उल्लंघन करने वाले हैं ७८ अबयह रावणका बचन सुनिके रावणकी भयसे बड़े त्रासको प्राप्तहोके युद्धकरने में बड़े बड़े चतुर जे वीरथे ते निकलते हुये इसका आशय यहहै कि उन राक्षसोंने यह विचार किया कि मृत्युसे तौ बचिनहीं सक्के तिस में रावणके हाथ मरने में तो यशकी हानि और नरककी प्राप्तिहै इससे राम हीके हाथ मरना श्रेष्ठहै क्योंकि उसमें यश और सद्गति दोनों प्राप्तहोवेंगे अब जे राक्षस जाते हुये हैं तिनका नाम कहते हैं अतिकाय और प्रहस्त और महानाद और महोदर ७९ और देवशत्रु और निकुंभ और देवान्तक और न- रान्तक और इनको आदिलेके और भी जेबली राक्षसहैं ते सब बानरोंके संग युद्ध करनेको जातेहुये ८० और जे इनके सिवाय बहुतसे हजारोंशूर बल क- रके गर्वित हुये वानरोंकी सेनामें प्रवेश करके बानरोंको दहीके तरह बिलोवते हुये ८१ और वे सब राक्षस भुशुण्डी औ भिन्दिपाल और बाण और फरसा इन शस्त्रों करके वानरोंको मारते हुये ८२ और वे बानर भी वृक्ष और शिला और नख और डाढ़ और घूंसे इन करके सब राक्षसोंके सेना पतियोंको प्राणों से वियोग करादेते हुये अर्थात् मारते हुये ८३ तिसमें कितने राक्षस तौ राम ने मारे और कितनेही सुग्रीवने मारे और कितनेही हनुमान् और अंगदने मारे और कितने महात्मा जो लक्ष्मण तिसने मारे और बाकी राक्षस रहे ते बानरों के सेनापतियों करके मारेगये ८४ ॥

यूथपैर्वानराणांतेनिहताःसर्वराक्षसाः ॥ रामतेजःसमाविश्यवान राबलिनोभवन् ॥ रामशक्तिविहीनानामेवंशक्तिःकुतोभवेत् ८५

सर्वेश्वरःसर्वमयोविधातामायामनुष्यत्वविडंबनेन ॥ सदाचिदानन्दमयोऽपिरामोयुद्धादिलीलांवितनोतिमायाम् ८६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेपंचमःसर्गः ५ ॥

क्योंकि रामके तेजको प्राप्तहोके बानर बलवान् होजाते हुये और बानरोंके शत्रु जो राक्षस तिनको राम शक्तिसे हीन होनेसे कैसे शक्ति होसक्ती है ८५ और सबका ईश्वर और सर्वस्वरूप और सबके रचनेवाला और सब कालमें चिदानन्दमय ऐसा जो राम सो मनुष्य भावकी नकल करके युद्धादिलीलारूप जो अपनी मायाहै तिसको विस्तार कररहाहै ८६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डेभाषाटीकायांपञ्चमःसर्गः ५ ॥

श्रुत्वायुद्धेबलंनष्टमतिकायमुखंमहत् ॥ रावणोदुःखसंतप्तःक्रोधेनमहतावृतः १ निधायेंद्रजितंलंकारक्षणार्थंमहाद्युतिः ॥ स्वयंजगामयुद्धायरामेणसहराक्षसः २ दिव्यंस्यंदनमारुह्यसर्वशस्त्रास्त्रसंयुतम् ॥ राममेवाभिदुद्रावराक्षसेन्द्रोमहाबलः ३ वानरान्बहुशोहत्वाबाणैराशीविषोपमैः ॥ पातयामाससुग्रीवप्रमुखान्यूथनायकान् ४ गदापाणिंमहासत्वंतत्रदृष्ट्वाविभीषणम् ॥ उत्सर्ज्यमहाशक्तिंमयदत्तांविभीषणे ५ तामापतंतीमालोक्यविभीषणविघातिनीम् ॥ दत्ताभयोयंरामेणबधार्होनायमासुरः ६ इत्युक्त्वालक्ष्मणोभीमंचापमादायवीर्यवान् ॥ विभीषणस्यपुरतःस्थितोकंपइवाचलः ७ ॥

दो० ॥ छठे सर्गमें लषणके असुर शक्तिप्रण कीन्ह ॥
तबरघुनन्दनविरथकर तासुतुरतफलदीन्ह १ ॥

अब श्रीमहादेवजी पार्वती से कथा वर्णन करैहैं हे पार्वति तिसके उपरान्त रावण अतिकाय आदि सेनापतियों करके रक्षित सेनाओं का वध सुनिकै बड़ा दुःखितहो और क्रोधयुक्तहोके १ इन्द्रजित् पुत्रको लंकाकी रक्षा के अर्थ स्थापनकर आपही रामकेसाथ युद्धकरने को जाता हुआ २ अबबड़ी कान्तियुक्त और बड़ा बलवान् जो रावण सो सब शस्त्र अस्त्रोंकरके युक्तदिव्य रथके ऊपर चढ़ करके रामके सम्मुख दौड़ताहुआ ३ औरसर्पके तालुके मध्य मेंजो दन्त होताहै उसका नाम आशी है तिसके विषके समान जे अपने बाण तिन करके रावण बहुत से वानरों को मारके और सुग्रीव आदिसेनापतियों को

संग्राम में गिरा देताहुआ ४ अव उस जगह गदाको हाथमें लिये और बड़ा वलवान् ऐसे विभीषण को रावण देखके उसके मारनेको मयनामदानव की दी हुई जो अमोघ शक्तितिसको छोड़ताहुआ ५ अव विभीषणके नाश करने वाली आतीहुई जो वह शक्ति अर्थात् सांग तिसको बड़े वलवान् जो लक्ष्मण जी सो देखके यह विचार करते हुयेकि रामने इसको अभय दे रक्खाहै इस सेयह विभीषणवधके योग्यनहींहै ६ ऐसाकहिकै धनुष लैकै विभीषणके आगे आपही लक्ष्मण पर्वतकी नाईंस्थित होतेहुये ७ ॥

साशक्तिर्लक्ष्मणतनुंविवेशामोघशक्तितः ॥ यावंत्यःशक्तयोलोकेमायायाःसंभवंतिहि ८ तासामाधारभूतस्यलक्ष्मणस्यमहात्मनः ॥ मायाशक्त्याभवेत्किंवाशेषांशस्यहरेस्तनोः ९ तथापिमानुषंभावमापन्नस्तदनुव्रतः॥ मूर्च्छितःपतितोभूमौतमादातुंदशाननः १०हस्तैस्तोलयितुंशक्तोनवभूवातिविस्मितः॥ सर्वस्यजगतःसारंविराजंपरमेश्वरम् ११ कथंलोकाश्रयंविष्णुंतोलयेल्लघुराक्षसः॥ ग्रहीतुकामंसौमित्रिंरावणंवीक्ष्यमारुतिः १२ आजघानोरसिक्रुद्धोवज्रकल्पेनमुष्टिना॥ तेनमुष्टिप्रहारेणजानुभ्यामपतद्भुवि १३ आस्यैश्चनेत्रश्रवणैरुद्वमन्रुधिरंवहु ॥ विघूर्णमाननयनोरथोपस्थउपाविशत् १४ ॥

अव वहरावणकी चलाई हुईशक्ति अमोघथी इसकारणसेलक्ष्मणजीकीछाती को विदारण करकेशरीरमें प्रवेशकरती हुई है और लोकमेंजितनी शक्तियांहैं वे सव मायाहीसे प्रकट हुआ करती हैं ८ तिन सव शक्तियोंका आधार और शेषका अवतार ऐसा जोनारायणका तनु महात्मा लक्ष्मण तिसका माया रूप शक्ति करके क्या होनाहै ९ अर्थात् सव मायाओंका प्रेरणकरने वाले ईश्वरको माया कुछ नहीं करसक्ती है तौभी मनुष्यभावको मानतेहुये जो लक्ष्मणहैं सो मूर्च्छित होके पृथिवीमें गिरपड़ते हुये तिन लक्ष्मणको रावण अपनी वीस भुजाओंसे वहुतेरा उठावतारहा १० परन्तुनहीं उठासका इससे अत्यन्त विस्मित होताहुआ और सव जगत्का सारभूत विराटरूप जो विष्णु तिसको ११ लघु राक्षस कैसे उठासके अव लक्ष्मणको उठानेलगा जो रावण तिसको हनुमान् देखके १२ क्रोध करके उस रावणकी छातीमें वज्र तुल्य मुष्टिका करके प्रहार करता हुआ तिस मुष्टिकाके प्रहार करके रावण घोटुओं को टेक करके पृथिवीमें गिरतापड़ता हुआ १३ फिर वहांसे उठकर दशमुखों से और नेत्रोंसे वहुतसे रुधिरको वमन करताहुआ और नेत्रोंको चलाताहुआ रथमें गिरपड़ताहुआ १४ ॥

अथलक्ष्मणमादायहनूमान्रावणार्दितम् ॥ आनयद्रामसामीप्यं बाहुभ्याम्परिगृह्यतम् १५ हनूमतःसुहृत्त्वेनभक्त्याचपरमेश्वरः ॥ लघुत्वमगमद्देवोगुरूणांगुरुरप्यजः १६साशक्तिरपितंत्यक्त्वाज्ञात्वानारायणांशजम्॥रावणस्यरथंप्रागाद्रावणोपिशनैस्ततः १७ संज्ञामवाप्य जग्राहबाणासनमथोरुषा॥ राममेवाभिदुद्रावदृष्ट्वारामोऽपितंक्रुधा १८ आरुह्यजगतांनाथोहनूमंतंमहाबलम् ॥ रथस्थंरावणंदृष्ट्वाअभिदुद्रावराघवः १९ ज्याशब्दमकरोत्तीव्रंवज्रनिष्पेषनिष्ठुरम्॥रामोगंभीरयावाचाराक्षसेंद्रमुवाचह२० राक्षसाधमतिष्ठाद्यक्कगमिष्यासिमेपुरः॥ कृत्वापराधमेवंमेसर्वत्रसमदर्शिनः २१ ॥

अब इसके उपरांत रावणकरके पीड़ित जो लक्ष्मण तिनको हनुमान् अपनी भुजाओं करके उठाकर रामके समीप प्राप्त करताहुआ १५ हनुमान् को तो सुहृद् भावसे और भक्ति करके त्रैलोक्यभार रूपभी परमेश्वर है परन्तु हलका होजाताहुआ १६ और जो वह लक्ष्मणके शक्ति लगीथी सोभी लक्ष्मणको नारायणके अंशसे उत्पन्न जानिकै लक्ष्मणको त्यागके फिररावणके रथहीमें जाके प्राप्त हुई १७ और रावणभी धीरे धीरे सचेत होके धनुषबाण लैके और क्रोध करके रामके सन्मुख दौड़ताहुआ और जगत्के स्वामी जो रामहैं सोभी क्रोध करके रथके ऊपर स्थित जो रावण तिसको देखके १८ महाबली जो हनुमान् तिसके ऊपरचढ़के रावणके सम्मुख दौड़तेहुये १९ और बिजुली के गिरने में जैसा शब्द होवै तैसा शब्द धनुषके प्रत्यंचाका करतेहुये और फिर गंभीर वाणीकरके श्रीराम रावणसे बोलतेहुये २० कि हे राक्षसोंमें अधम रावण सर्वत्र समदर्शी जो मैंहौं तिसका इतना बड़ाभारी अपराध करके तू कहां भागके जावेगा इससे मेरे आगे स्थितही रहना चाहिये अर्थात् ऐसाकोई स्थान नहीं है जहां तू जाय और मैं वहां न होऔं और यथोचित दण्डदेनाही मेरी समदर्शिताहै २१ ॥

येनबाणेननिहता राक्षसास्तेजनालये ॥ तेनैवत्वांहनिष्यामितिष्ठाद्यममगोचरे २२ श्रीरामस्यवचःश्रुत्वा रावणोमारुतात्मजम् ॥ बहंतंराघवंसंख्येशरैस्तीक्ष्णैरताडयत् २३ हतस्यापिशरैस्तीक्ष्णैर्वायुसूनोःस्वतेजसा ॥ व्यवर्द्धतपुनस्तेजो ननर्दचमहाकपिः २४ ततो दृष्ट्वाहनूमंतंसव्रणंरघुसत्तमः ॥ क्रोधमाहारयामास कालरुद्रइवापरः २५ साश्वंरथंध्वजंसूतंशस्त्रौघंधनुरंजसा ॥ छत्रंपताकांतरसाच्छि

च्छेदसितशायकैः २६ ततोमहाशरेणाशु रावणंरघुसत्तमः ॥ विव्या धवज्रकल्पेनपाकारिरिवपर्वतम् २७ रामबाणहतोवीरश्चचालचमु मोहच ॥ हस्तात्क्षिपतितश्चापस्तंसमीक्ष्यरघूत्तमः २८ ॥

और पंचवटी स्थानमें जिस बाण करके मैंने राक्षस मारेहैं उसीबाणकरके तुझकोभी मारूंगा अर्थात् विषके बुझेहुये बाणसे नहीं मारूंगा इससे तू संग्राम में मेरे आगे खड़ा रहु २२ अब रावण यह श्रीरामका बचन सुनिकै संग्राम में श्रीराम को लै चलनेवाला जो हनुमान् तिसको बड़े पैने बाणों करके ताड़न करताहुआ २३ अब रावणके पैने बाणोंकरके ताड़न कियाहुआ भी जो हनुमान् तिसका तेज अपने असाधारण रुद्रतेज करिकै और अधिक बढ़ताहुआ और हनुमान् गर्जताहुआ २४ तब श्रीरामचन्द्र हनुमान्को घायल देखकर प्रलयकालके रुद्रके तुल्य बड़ाभारी क्रोध उत्पन्नकरतेहुये २५ फिर घोड़ों करके सहित रावणके रथको और ध्वजाको और सारथी और शस्त्रों के समूहको और धनुषको और रावणके छत्रको और पताकाओंको एकहीकाल में श्रीराम अपने पैने बाणों करिकै काटिडालतेहुये २६ तिसके उपरान्त वज्र के तुल्य एक बड़ेभारी बाणकरिकै श्रीराम रावणको ताड़न करतेहुये जैसे इन्द्रवज्र करिकै पर्वतको भेदनकरै २७ अब रामके बाण करिकै बिदारण किया हुआ जो रावण सो यद्यपि बीरहै तौभी चलायमान होताहुआ और मूर्च्छाको प्राप्तहोताहुआ और रावणके हाथसे धनुष भी छूटगया अब श्रीरामचन्द्र ऐसी दशा रावणकी देखकर २८ ॥

अर्द्धचन्द्रेणचिच्छेदतत्किरीटंरविप्रभम् ॥ अनुजानामिगच्छत्व मिदानींबाणपीडितः २९ प्रविश्यलंकामाश्वास्य श्वःपश्यसिबलंमम ॥ रामबाणेनसंविद्धो हतदर्पोथरावणः ३० महत्यालज्जयायुक्तो लंकांप्राविशदातुरः ॥ रामोऽपिलक्ष्मणंदृष्ट्वामूर्च्छितंपतितंभुवि ३१ मानुषत्वमुपाश्रित्य लीलयानुशुशोचह ॥ ततःप्राहहनूमंतंवत्सजी वय लक्ष्मणम् ३२ महौषधीःसमानीय पूर्ववद्वानरानपि ॥ तथेतिरा घवेणोक्तोजगामाशुमहाकपिः ३३ हनूमान्वायुवेगेन क्षणात्तीर्त्वा महोदधिम् ॥ एतस्मिन्नंतरेचारा रावणायन्यवेदयन् ३४ रामेण प्रेषितोदेव हनूमान्क्षीरसागरम् ॥ गतोनेतुंलक्ष्मणस्यजीवनार्थं महौषधीः ३५ ॥

प्राण हरनेवाले बाणको नहीं चलातेहुये क्या तो एकअर्द्ध चन्द्राकार बाण

करिकै सूर्यके तुल्य जो उसका मुकुटहै तिसको काटके और यह कहते हुये कि इससमय में तू बाणसे पीड़ितहै इससे तुझको मैं आज्ञादेता हौं कि यहां से चलाजा २९ और लंकामें प्रवेश करके और अपने मित्रजनोंके चित्त को सावधानकरके प्रातःकाल आके मेरे बलको देखैगा अब राम बाण करिकै ताड़ित इसीसे नष्ट होगयाहै गर्व जिसका ऐसा जो रावण ३० सोबड़ीभारी लज्जाकरिकै युक्त और व्याकुलहो लंकामें प्रवेश करताहुआ और श्रीरामचंद्र भी मूर्च्छित और पृथिवीमेंपड़ाहुआ लक्ष्मणकोदेखके ३१ मनुष्यभावकोप्राप्तहो लीलाही करिकै शोचकरते हुये तिसके उपरान्त हनुमान्से यह बचन बोले कि हे वत्स लक्ष्मणको जियाओ ३२ और दिव्य औषधियोंको ल्याकै पहिले की तरह बानरोंको भी जियाओ अब तैसेई रामकरिकै आज्ञाको प्राप्त हनुमान् शीघ्रही जाताहुआ ३३ और यह प्रतिज्ञा करताहुआ कि मैं पवनके वेग करिकै क्षण भरेमें समुद्रके पारहोकै औषधियोंको ल्याताहौं अबउसीसमयमें रावणके दूत जाके रावणसे खबरिकरतेहुये ३४ कि हेदेव रामका भेजाहुआ जोहनुमान् सोलक्ष्मणके जिवानेको औषधियोंके लेनेकोक्षीरसागर समुद्रकोगयाहै ३५॥

श्रुत्वातच्चारवचनंराजाचिंतापरोभवत् ॥ जगामरात्रावेकाकीका लनेमिगृहंक्षणात् ३६ गृहागतंसमालोक्य रावणंविस्मयान्वितः ॥ कालनेमिरुवाचेदं प्रांजलिर्भयविह्वलः ॥ अर्घ्यादिकंततःकृत्वा रा वणस्याग्रतःस्थितः ३७ किंतेकरोमिराजेंद्र किमागमनकारणम् ॥ कालनेमिमुवाचेदंरावणोदुःखपीडितः ३८ ममापिकालवशतःकष्टमे तदुपस्थितम् ॥ मयाशक्त्याहतोवीरोलक्ष्मणःपतितोभुवि ३९ तं जीवयितुमानेतुमोषधीर्हनुमान्गतः॥ यथातस्यभवेद्विघ्नंतथाकुरुम हामते ४० मायथामुनिवेषेणमोहयस्वमहाकपिम् ॥ कालात्ययोय थाभूयात्तथाकृत्वैहिमन्दिरे ४१ रावणस्यवचःश्रुत्वाकालनेमिरुवाच तम् ॥ रावणेशवचोमेद्यश्रृणुधारयतत्त्वतः ४२ ॥

फिर येदूतोंके वचन सुनिकै रावण बड़ीचिन्तायुक्त होताहुआऔर रात्रिमें अकेला कालनेमि दैत्यके गृहको जाताहुआ ३६ अब अपनेघरआयेहुये रावण को कालनेमि देखिकै बड़े आश्चर्य युक्त हुआ और रावणको अर्घपाद्यादिकों करिकै पूजन कर भयकरके बिह्वलहो हाथ जोड़के रावणके आगे खड़ेहोकै यहवचन बोलता हुआ ३७कि हेराजेन्द्र क्या मैं तुम्हारा कार्य करों सोकहिये और क्या तुम्हारे आनेका कारणहै तब दुःख करके पीड़ित रावण कालनेमि

से बोला ३८ किहेमित्रसुभकोभी कालवशसे बड़ाकष्ट उपस्थितहुआहै अर्थात् प्राप्तहुआकि मैंनेशक्तिकरके लक्ष्मण वीरकोमारा सो पृथिवीमें पड़ाहै३९ तिसके जिवानेको हनुमान् औषधी लेनेकोगयाहै सो हेश्रेष्ठमते जैसे उसहनुमान्को विघ्नहोवे तैसा उपाय तुमकरो ४० सोतुममाया करके मुनिके स्वरूपको धारणकर हनुमान्को मोहकरावो जिसमें रात्रि व्यतीतहोके प्रातःकाल हो जाय तैसा उपाय रचिकै फिर अपने मन्दिरमें प्राप्तहोउ ४१ अवयह रावणका वचनसुनिकै कालनेमि बोला कि हे ईश हेरावण इससमयमें मेरे बचन तुम सुनो और फिरउसका यथार्थमानिकै धारणकरो ४२ ॥

प्रियंतेकरवाण्येवनप्राणान्धारयाम्यहम् ॥ मारीचस्ययथारण्ये पुराभून्मृगरूपिणः ४३ तथैवमेनसंदेहोभविष्यतिदशानन ॥ हताः पुत्राश्चपौत्राश्चबांधवाराक्षसाश्चते ४४ घातयित्वासुरकुलंजीविते नापिकिंतव ॥ राज्येनवासीतयावाकिंदेहेनजडात्मना ४५ सीतांप्रय च्छरामायराज्यंदेहिविभीषणे ॥ वनंयाहिमहाबाहोरम्यंमुनिगणाश्र यम् ४६ स्नात्वाप्रातःशुभजलेकृत्वासंध्यादिकाःक्रियाः ॥ ततएका न्तमाश्रित्यसुखासनपरिग्रहः ४७ विसृज्यसर्वतःसंगमितरान्विषया न्बहिर्बहिःप्रवृत्ताक्षगणंशनैःप्रत्यक्प्रवाहय ४८ प्रकृतेर्भिन्नमात्मानं विचारयसदानघ ॥ चराचरंजगत्कृत्स्नंदेहबुद्धींद्रियादिकम् ४९ ॥

और मैंतो तुम्हारा प्रिय करोंगा और प्राणोंको धारण नहीं करोंगा अर्थात अपने प्राणों करकेभी तुम्हारा प्रिय करोंगा और जैसे पहिले वन में मृगरूप को धारणकरे मारीचकी दशाहुई तैसेमेरीभी होगी ४३ हेरावण इस में कुछ मुझको संदेह नहींहै परन्तुमैं तुमसे यह कहताहौं किजव तुम्हारे पुत्रभीसव मरिगये और पौत्रभी मरिगये और भाई वन्धु राक्षसभी सव मारेगये ४४ तवसव असुरकुलको मरवाके अपने जीवनकरके क्याकरोगे और राज्यकरके और सीता करके और जड़रूप देह करकेभी तुम का क्याफल होना है ४५ इससे सीताको तो रामके अर्थ दीजिये और राज्य विभीषण को देवो और मुनिगण जिसमें वास करतेहैं ऐसे रमणीय वनको तुमजावो ४६ और फिर तिस वनमें प्रातःकाल तीर्थजलमें स्नान करके संध्योपासनादिक जो नित्य क्रियाहैं तिन्हों करके फिर एकांत स्थानमें सुख जनक जो आसन है तिसके ऊपर बैठिकै ४७ फिर सब जगहसे संगको अर्थात् आसक्ति को त्याग करके और बाहरके विषयजे वासना रूप करके हृदय में प्रविष्ट होरहे हैं तिनको

बाहर निकालिकै और बाहरके बिषयोंमें प्रवृत्त होरहा जो इन्द्रियों का समूह तिसको धीरेधीरे आत्मामें लगावो अर्थात् मनके अधीन सबइन्द्रियहैं इससे मनहीको सबजगहसे खैंचिकै आत्मध्यान परायण करौ तबसब चक्षुरादि इन्द्रिय आपही आत्म विषयहोजावैंगी ४८ और हे अनघ आत्मरूप प्रकृति से भिन्न जुदाजोआत्माहै तिसका तुमसदा विचारकरौ और सम्पूर्ण चरअचरजो जगत्है और देहबुद्धि इन्द्रियादिक ४९॥

आब्रह्मस्तम्बपर्यंतंदृश्यतेश्रूयतेचयत्॥ सैषाप्रकृतिरित्युक्तासैव मायेतिकीर्तिता ५० सर्गस्थितिविनाशानांजगद्वृक्षस्यकारणम्॥ लोहितश्वेतकृष्णादिप्रजाःसृजतिसर्वदा ५१ कामक्रोधादिपुत्राद्यान् हिंसातृष्णादिकन्यकाः॥ मोहयत्यनिशंदेवमात्मानंस्वैर्गुणैर्विभुम् ५२ कर्तृत्वभोक्तृत्वमुखान्स्वगुणानात्मनीश्वरे॥ आरोप्यस्ववशंकृत्वा तेनक्रीडतिसर्वदा ५३ शुद्धोप्यात्मामाययायुक्तोपश्यतीवसदाबहिः॥ विस्मृत्यचस्वमात्मानंमायागुणविमोहितः ५४ यदासद्गुरुणायुक्तो बोध्यतेबोधरूपिणा॥ निवृत्तदृष्टिरात्मानंपश्यत्येवसदास्फुटम् ५५ जीवन्मुक्तःसदादेहीमुच्यतेप्राकृतैर्गुणैः। त्वमप्येवंसदात्मानंविचार्यनियतेन्द्रियः ५६॥

ब्रह्मासे लेके तृण पर्यंत जो कुछ देखने में आता है और सुननेमें आताहै उसको प्रकृति कहतेहैं और उसीको मायाभी कहते हैं ५० सो यह प्रकृति संसार रूपी जो वृक्षहै तिसकी उत्पत्ति और स्थिति और नाश इनका कारण है और लाल और सपेद और काला इसभेद करके तीन प्रकारकी जोप्रजा है तिसको सदा रचतीहै अर्थात् सात्विक राजस तामस भेदसे तीन प्रकारकी प्रजाको प्रकृति रचतीहै तहां श्वेतसत्त्वगुणहै और रक्तरजोगुणहै और काला तमोगुण जानना ५१ फिर वह प्रकृति कामक्रोधादिक जे पुत्रहैं तिनको रचरहीहै और हिंसा तृष्णादिक जो कन्याहैं तिनको रचतीहै और अपनेगुणोंकरके सर्वत्र व्यापक प्रकाश रूप जो आत्मा तिसको निरन्तर मोहकरारहीहै अर्थात् अपने रचेहुये जे पदार्थहैं तिनमें अहंमम यहमैंहौं यहमेराहै ऐसी बुद्धिकरकेयुक्त आत्मा को करतीहै ५२ और कर्तृत्व भोक्तृत्वादिक जे अपने गुणहैं तिनको आत्माजो ईश्वर तिसके बिषे आरोपणकरके और आत्माको अपने आधीनकरके तिसके साथ प्रकृति सदा क्रीड़ा करती है इसका आशय यह है कि जबतक जीव अविवेक करके मैं करनेवालाहौं और मैं भोगनेवालाहौं ऐसा अपनाको मानता है तबतक प्रकृतिके आधीनहो जन्ममरणहीको प्राप्तहोताहै यही प्रकृतिका क्रीड़ा

करताहुआ ५३ और शुद्ध भी यह आत्माहै सो जब माया करके युक्त होताहै तब मायाके गुणों करके विमोहितहो अपने स्वरूपको भूलिकै बाहरके जे बिषयहैं तिनको देखताहोय ऐसा प्रतीत होताहै ५४ और जब ज्ञानी और परम दयालु सद्गुरु करके बोधको प्राप्त होताहै तब विषयोंसे दृष्टिको निवृत्तकर स्पष्ट अपने आत्मस्वरूपको देखताहै ५५ फिर उस गुरूकी कृपासे आत्मध्यान करताहुआ जीवन्मुक्तहो प्रकृतिके गुणोंसे छूटिजाताहै और हे रावण ऐसे तुम भी आत्माको विचारकर जितेंद्रिय होवो ५६ ॥

प्रकृतेरन्यमात्मानंज्ञात्वामुक्तोभविष्यसि ॥ ध्यातुंयद्यसमर्थोसिस गुणंदेवमाश्रय ५७ हृत्पद्मकर्णिकेस्वर्णपीठेमणिगणान्विते ॥ मृदुश्लक्ष्णतरेतत्रजानक्यासहसंस्थितम् ५८ वीरासनंविशालाक्षंविद्युत्पुंजनिभांबरम् ॥ किरीटहारकेयूरकौस्तुभादिभिरन्वितम् ५९ नूपुरैःकटकैर्भांतंतथैववनमालया ॥ लक्ष्मणेनधनुर्द्वंद्वकरेणपरिसेवितम् ६० एवंध्यात्वासदात्मानंरामंसर्वहृदिस्थितम् ॥ भक्त्यापरमयायुक्तोमुच्यतेनात्रसंशयः ६१ शृणुवैचरितंतस्यभक्तैर्नित्यमनन्यधीः ॥ एवंचेत्तत्कृतपूर्वाणिपापानिचमहांत्यपि ॥ क्षणादेवविनश्यंतियथाऽग्नेस्तूलराशयः ६२ भजस्वरामंपरिपूर्णमेकंविहायवैरंनिजभक्तियुक्तः ॥ हृदासदाभावितभावरूपमनामरूपंपुरुषंपुराणम् ६३ ॥
इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेषष्ठःसर्गः ६ ॥

और प्रकृतिसे भिन्न आत्माको जानिकै तुम मुक्तहोजावोगे और मेरे कहे हुये प्रकार करके ध्यानकरनेको जो असमर्थ होउ तौ सगुण वेदका आश्रयण करि सगुण स्वरूपका ध्यानकरौ ५७ इस प्रकार करके हृदय रूप कमल की कर्णिकाके मध्यमें मणिगणों करके युक्त और कोमल और चिकना ऐसा जो सुवर्णका सिंहासन तिसके ऊपर स्थित सीता करके सहित ५८ श्रीराम का ध्यानकरो कैसे हैं श्रीराम वीर आसनकरके स्थितहैं और विशाल जिनके नेत्र हैं और बिजुलियोंके समूहके तुल्य जिसकी कांति ऐसा पीताम्बर धारणकरे हैं और किरीट औरहार औरकेयूर वहुंटा औरकौस्तुभमणि आदि आभूषणोंकरके अलंकृतहैं ५९ औरनूपुर अर्थात् पवटे और कड़े इन्हों करके प्रकाशमान और वनमाला करके शोभित और धनुषको स्पर्श कररहेहैं दोहाथ जिनके ऐसे लक्ष्मण करके सेवितहैं ६० इसप्रकार सबकालमें सबके हृदयमें स्थित परमात्मा जो राम तिनका ध्यान करके परमभक्ति करके युक्त जो पुरुष सो मुक्त

होताहै इसमें कुछ संशय नहीं है ६१ फिर तिसके उपरान्त भक्तोंकरके वर्णन कियाहुआ जो श्रीरामचरित्र तिसको हे रावण तुमएकाग्रचितहोके श्रवणकरो इसप्रकार करनेसे संपूर्ण पूर्वजन्मके कियेहुये जे पापहैं ते रुई के समूहकी तरह नाशको प्राप्तहोजावेंगे इसमें कुछ संशय नहीं है ६२ इससे हे रावण तुम बैर भावकोत्यागकरके और भक्तियुक्तहो सदाहृदयमें ध्यानकराहुआ नामरूप रहित एकअद्वितीय सबजगहपरिपूर्ण पुराणपुरुषजो श्रीराम तिनकाभजनकरौ६३॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डे भाषाटीकायांषष्ठस्सर्गः ६ ॥

कालनेमिवचःश्रुत्वारावणोऽमृतसन्निभम् ॥ जज्वालक्रोधताम्राक्षःसर्पिरद्भिरिवाग्निमत् १ निहन्मित्वांदुरात्मानंमच्छासनपराङ्मुखम् ॥ परैःकिंचित्गृहीत्वात्वंभाषसेरामकिंकरः २ कालनेमिरुवाचेदंरावणंदेवकिंक्रुधा ॥ नरोचतेमेवचनंयदिगत्वाकरोमितत् ३ इत्युक्त्वाप्रययौशीघ्रंकालनेमिर्महासुरः ॥ नोदितोरावणेनैवहनूमद्विघ्नकारणात् ४ सगत्वाहिमवत्पार्श्वंतपोवनमकल्पयत् ॥ तत्रशिष्यैःपरिवृतोमुनिवेषधरःखलः ५ गच्छतोमार्गमासाद्यवायुसूनोर्महात्मनः ॥ ततोगत्वाददर्शाथहनूमानाश्रमंशुभम् ६ चिंतयामासमनसाश्रीमान्पवननन्दनः ॥ पुरानदृष्टमेतन्मेमुनिमंडलमुत्तमम् ७ ॥

दो० । सर्ग सातवें पवन सुत असुर हन्यो मुनिकोह ॥
लषण जिवायो पुनिउठो कुंभकर्ण गतमोह १ ।

अब श्रीमहादेवजी पार्वतीसे कथावर्णन करैहैं हेपार्वति अब रावण कालनेमिके अमृततुल्य वचनसुनिके क्रोधकरके लालहैं नेत्र जिसके ऐसाहो जैसे अग्निमेंसंतप्त घृतजलकेविन्दु डारनेसे बरनेलगै ऐसा क्रोधाग्निकरके प्रज्वलितहोताहुआ १ और यह बचनबोला कि मेरी आज्ञासे विमुखदुष्टात्मा जो तूहै तिसको मैं मारताहौं जो तू शत्रुओंसे धनादिकलेके रामका किंकरहुआवचन बोलरहाहै २ तब कालनेमि रावणसे यह वचनबोलताहुआ कि हे देव क्रोध करके क्या प्रयोजनहै जो कदाचित् मेरावचन आपको नहीं रुचताहै तो मैं जाकर आपकीआज्ञाकोकरताहौं ३ यह वचनकहिके महाअसुर जो कालनेमि सो रावणकरके हनुमान् के विघ्नकरनेमें प्रेराहुआ शीघ्रही जाताहुआ ४ सोकालनेमि हिमालयपर्वतके समीपजाकर तपोवनकोरचताहुआ तिस तपोवनमें शिष्योंकरकेयुक्तमुनिवेषको धारणकरे दुष्टकालनेमि ५ गमनकरताहुआ जोमहात्मा हनुमान् तिसकेमार्गमें स्थितहोताहुआ तिसके अनन्तर हनुमान्

उस शुभआश्रमको देखताहुआ ६ और पवनकापुत्र हनुमान् उससमयमेंयह विचारकरताहुआ कि पहिले मैंने यहां इस ऋषिकेआश्रमको नहींदेखाथा ७ ॥

मार्गोविभ्रंशितोवामेभ्रमोवाचित्तसंभवः ॥ यद्वाऽविश्याश्रमपदंद्दष्ट्वामुनिमशेषतः ८ पीत्वाजलंततोयामिद्रोणाचलमनुत्तमम् ॥ इत्युक्त्वाप्रविवेशाथसर्वतोयोजनायतम् ९ आश्रमंकदलीशालखर्जूरपनसादिभिः ॥ समावृतंपक्वफलैर्नम्रशाखैश्चपादपैः १० वैरभावविनिर्मुक्तंशुद्धंनिर्मललक्षणम् ॥ तस्मिन्महाश्रमेरम्येकालनेमिःसराक्षसः ११ इन्द्रयोगंसमास्थायचकारशिवपूजनम् ॥ हनूमानभिवाद्याह गौरवेणमहासुरम् १२ भगवन्रामदूतोऽहंहनूमान्नामनामतः ॥ रामकार्येणमहताक्षीराब्धिंगन्तुमुद्यतः १३ तृषामांबाधतेब्रह्मनुदकंकुत्रविद्यते ॥ यथेच्छंपातुमिच्छामिकथ्यतांमेमुनीश्वर १४ ॥

सो क्या मेरेको वह मार्ग छूटि गया अथवा मेरे चित्तका भ्रम है अथवा इस विचार करके क्याहै अब मैं इस आश्रममें प्रवेशकरके औरसुनिकादर्शन करके ८ और जलपीके तब द्रोणाचलको जाउंगा यह कहिके चारों तरफ से योजनभरेकाहै विस्तारजिसका ९ और पके हुयेहैं फल जिनके और झुकरहीहैं डालियां जिन्होंकी ऐसे जे केलेके वृक्ष और शाल के वृक्ष और कटहर औरखजूर आदि वृक्षोंकरके वेष्टित होरहाहै १० और वैरभाव करके रहितहै और शुद्ध निर्मलहै स्वरूपजिसका ऐसा जो आश्रमतिसमें हनुमान् प्रवेश करताहुआ उसबड़े शोभायमान आश्रममेंवह महाअसुर कालनेमि ११ कपट योगकरके शिवपूजन करताहुआ तब हनूमान् उस महाअसुरको मुनिजानिके बड़ीगुरुतासे प्रणामकरकेबोलतेहुये १२ कि हे भगवन् मैं रामकादूतहों और हनुमान् मेरानामहै सो रामकार्यके अर्थ क्षीरसगरको जायाचाहताहौं १३ और हे ब्रह्मन् प्यासमुझको बाधा करिरहीहै सो कहीं जलहोय तौ यथेष्ट में पानकरों सो कृपाकरके बताइये १४ ॥

तच्छ्रुत्वामारुतेर्वाक्यंकालनेमिस्तमब्रवीत् ॥ कमंडलुगतंतोयंमत्वंपातुमर्हसि १५ भुंक्ष्वचेमानिपक्वानिफलानितदनंतरम् ॥ निवसस्वसुखेनात्रनिद्रांसेहित्वरास्तुसा १६ भूतंभव्यंभविष्यंचजानामितपसास्वयम् ॥ उत्थितोलक्ष्मणःसर्वेवानराराममवीक्षिताः १७ तच्छ्रुत्वाहनुमानाहकमंडलुजलेनमे ॥ नशाम्यत्यधिकातृष्णाततोदर्शयमेजलम् १८ तथेत्याज्ञापयामासवटुंमायाविकल्पितम् ॥ वटोदर्शय

विस्तीर्णवायुसूनोर्जलाशयम् १९ निमील्यचाक्षिणीतोयंपीत्वागच्छ ममांतिकम्॥ उपदेक्ष्यामितेमंत्रंयेनद्रक्ष्यसिचौषधीः २० तथेतिद र्शितंशीघ्रंवटुनाशलिलाशयम् ॥ प्रविश्यहनुमान्तोयमपिवन्मी लितेक्षणः २१॥

यह हनुमान्के बचन सुनिकै कालनेमि बोला कि मेरे कमंडलुमें जो जल है तिसकोपीवो १५ तिसके अनन्तरपकेहुये जेफलहैं तिनका भोजनकरो और सुखपूर्वक यहां वासकरो और निद्राको प्राप्तहोवो और शीघ्रता मतकरो १६ क्योंकि अपने तपके प्रभावसे भूत अर्थात् जो होचुका है और भव्य अर्थात् जो होरहाहै और भविष्य जो होनेवाला है इस प्रकार तीनोंकालकी बातको मैं जानताहौं और रामके देखनेईसे लक्ष्मण और सब बानर उठतेहुये हैं १७ तौ हनुमान् बोले इस कमण्डलुके जलसे मेरी प्यास शांत न होगी इससे कहीं बहुतसा जल दिखलाइये १८ तब तौ वह कालनेमि अपनी माया कर के एक ब्रह्मचारीको रचिकै उसको आज्ञाकी कि तुम इसहनुमान्को बड़ाभारी जलाशय अर्थात् तालाब दिखादेवो १९ और हनुमान्से यह कहताहुआ कि हे हनुमन् तुम नेत्रोंको मूंदिकै जलपीके शीघ्रही मेरे समीप आवो फिर मैं तुमको ऐसे मन्त्रका उपदेशकरोंगा जिस मन्त्रके प्रभावसे शीघ्रही औषधियोंको देखोगे २० फिर तैसेई उसब्रह्मचारीने दिखलाया जो जलाशय अर्थात् तालाब तिस में हनुमान् शीघ्रही प्रवेशकरके नेत्रमूंदिके जलपीवताहुआ २१॥

ततश्चागत्यमकरीमहामायामहाकपिम्॥ अग्रसत्तंमहावेगान्मा रुतिंघोररूपिणी२२ततोददर्शहनुमान्ग्रसंतींमकरींरुषा॥ दारयामा सहस्ताभ्यांवदनंसाममारह२३ततोंतरिक्षेददृशेदिव्यरूपधरांगना॥ धान्यमालीतिविख्याताहनूमंतमथाब्रवीत् २४ त्वत्प्रसादादहंशापा द्विमुक्तास्मिकपीश्वर॥ शप्ताहंमुनिनापूर्वमप्सराकारणांतरे२५आश्र मेयस्तुतेदृष्टःकालनेमिर्महासुरः॥ रावणप्रहितोमार्गेविघ्नंकर्तुंतवान घ २६ मुनिवेषधरोनासौमुनिर्विप्रविहिंसकः॥ जहिदुष्टंगच्छशीघ्रंद्रो णाचलमनुत्तमम् २७ गच्छाम्यहंब्रह्मलोकंत्वत्स्पर्शाद्धूतकल्मषा॥ इत्युक्त्वासाययौस्वर्गंहनूमानप्यथाश्रमम् २८॥

फिर मगरकाहै रूप जिसका ऐसा एक भयंकर जलका जीव हनुमान्को निगलनेलगा २२ तौ हनुमान् निगलती हुई उस मगरकी स्त्री को देखके क्रोध करके अपने दोनों हाथोंसे उसके मुखको फाड़डालतेहुये फिर वह मरगई २३

फिर वह आकाशमें दिव्यरूप धारण करके धान्यमाली नामकरके विख्यात प्रसिद्ध अप्सरा दिखलाइ देतीहुई और हनुमान्सों यह बचन कहतीहुई २४ कि हे हनुमन् तुम्हारे प्रसादसे मैं शापसे छूटगई जो मैं अप्सरा पहिले किसी कारणसे मुनिके शापको प्राप्तहुईथी २५ और जो आश्रममें तुमने देखाहै सो महाअसुर कालनेमि है तुम्हारे विघ्न करनेको रावणका भेजा है २६ और यह मुनिनहींहै यह तौ मुनिके वेषको बनाये हुये ब्राह्मणोंका मारनेवाला राक्षस है इससे इसदुष्टका शीघ्रही मारो औ फिर द्रोणाचलको जावो २७ और तुम्हारे स्पर्शसे दूरहोगये हैं पाप जिसके ऐसी जो मैं हूं सो ब्रह्मलोक को जाती हूं यह कहके वह अप्सरा स्वर्गको जाती हुई और हनुमान्जी आश्रम को आतेहुये २८ ॥

आगतंतंसमालोक्यकालनेमिरभाषत॥किंविलम्बेनमहतातववानरसत्तम २९ गृहाणमत्तोमंत्रांस्त्वंदेहिमेगुरुदक्षिणाम् ॥ इत्युक्तोहनुमान्मुष्टिंदृढंबध्वाहराक्षसम् ३० गृहाणदक्षिणामेतामित्युक्त्वानिजघानतम् ॥ विसृज्यमुनिवेषंसःकालनेमिर्महासुरः ३१ युयुधेवायुपुत्रेणनानामायाविधानतः॥महामायिकदूतोसौहनूमान्मायिनांरिपुः३२ जघानमुष्टिनाशीर्षिणभग्नमूर्द्धाममारसः ॥ ततःक्षीरनिधिंगत्वादृष्ट्वाद्रोणंमहागिरिम् ३३ अदृष्ट्वाचौषधीस्तत्रगिरिमुत्पाट्यसत्वरः॥ गृहीत्वावायुवेगेनगत्वारामस्यसन्निधिम् ३४ उवाचहनुमान्राममानीतोऽयंमहागिरिः ॥ यद्युक्तंकुरुदेवेशविलम्बोनात्रयुज्यते ३५ ॥

तब आतेहुये हनुमान्को देखके कालनेमि बोला कि हे बानरश्रेष्ठ बहुत देर करके क्याहै २९ अब तुम मुझ से मन्त्रोंको ग्रहण करो और गुरुदक्षिणा देवो ऐसे जब उस कालनेमिने कहा तौ हनुमान् अपनी मुष्टीको बहुत अच्छी तरह बांधिकै उस राक्षस से बोले ३० कि पहिले गुरु दक्षिणा लै लीजिये पछारी से मंत्रदेना यह कहिकै हनुमान् उस कपट मुनिके एक घूसामारतेहुये फिर वहभी मुनिके वेषको त्यागिकै महा असुररूप होगया ३१ फिर अनेक मायाओं करिकै हनुमान्के संग युद्ध करता हुआ फिर बड़ी माया करने वाले राम का दूत औ मायावी राक्षसों का वैरी जो हनुमान् ३२ सो उस राक्षस के शिर में ऐसा एक घूंसा मारता हुआ जिससे उसका शिर फटगया और वह कालनेमि असुर मरभी गया तिसके उपरान्त हनुमान् क्षीर सागरमें जाकर वहां द्रोणाचलको देखिके ३३ परंतु उसपै औषधियोंको विनादेखे उस पर्वत ही को शीघ्र उखाड़ कर और उठाकै पवनके वेग करिकै रामके समीप प्राप्त

होकै ३४ श्री रामजीसे बोलते हुये कि हे राम यह पर्वत मैं लेआयाहूं हे देवेश इस समय में जो उचित समुझिये सो करिये विलम्बका यह समय नहीं हैं ३५॥

श्रुत्वाहनूमतोवाक्यंरामःसंतुष्टमानसः॥ गृहीत्वाचौषधीःशीघ्रंसुषेणेनमहामतिः ३६ चिकित्सांकारयामासलक्ष्मणायमहात्मने॥ ततःसुप्तोत्थितइवबुद्ध्वाप्रोवाचलक्ष्मणः ३७ तिष्ठतिष्ठक्कगंतासिहन्मीदानींदशानन॥ इतिब्रुवन्तमालोक्यमूर्ध्न्यवघ्रायराघवः ३८ मारुतिम्प्राहवत्साद्यत्वत्प्रसादान्महाकपे॥ निरामयंप्रपश्यामिलक्ष्मणंभ्रातरंमम ३९ इत्युक्त्वावानरैःसार्द्धंसुग्रीवेणसमान्वितः॥ विभीषणमतेनैवयुद्धायसमवस्थितः ४० पाषाणैःपादपैश्चैवपर्वताग्रैश्चवानराः॥युद्धायाभिमुखाभूत्वाययुःसर्वेयुयुत्सवः ४१ रावणोविव्यथेरामबाणैर्विद्धोमहासुरः॥ मातंगइवसिंहेनगरुडेनेवपन्नगः ४२॥

तब श्रीरामचन्द्र यह हनुमान्का बचन सुनिकै बड़े प्रसन्नहोकै उसपर्वतपै से सब औषधी लैके सुषेण वैद्यसे ३६ लक्ष्मणजीकी चिकित्सा अर्थात् उपाय करातेहुये तब तो जैसे कोई सो करके जागे ऐसे लक्ष्मणजी उठ करके बोलतेहुये ३७ कि हे रावण खड़ाहो खड़ाहो कहांजाताहै मैं मारताहौं तुझको ऐसा बचन कहतेहुये जो लक्ष्मण तिनको श्रीरामचन्द्रदेखकै और शिरमें सूंघकै हनुमान्से बोले ३८ कि हे वत्स हे हनुमन् आजु तुम्हारे प्रसादसे रोग रहित लक्ष्मण भाईको मैं देखताहौं ३९ अब विभीषणके मतमें स्थित जो श्रीराम सो हनुमान्से यह पूर्वोक्त प्रीति बचन कहि बानरों करिकै सहित और सुग्रीव करिकै सहित युद्धहीके अर्थ लंकामें आतेहुये ४० और सब बानर पाषाणों करिकै और वृक्षों करिकै और पर्वतों करिकै राक्षसोंके ऊपर प्रहारकरनेकी इच्छा करिकै युद्धकरनेको सम्मुख जातेहुये ४१ अब रामके बाणोंकरिकै घायलहुआ जो महाअसुर रावण सो सिंह करिकै हाथी जैसे व्याकुलहोय और गरुड़के प्रहारकरिकै सर्प जैसे व्यथाको प्राप्तहोवे ४२॥

अभिभूतोऽगमद्राजाराघवेणमहात्मना॥ सिंहासनेसमाविश्यराक्षसानिदमब्रवीत् ४३ मानुषेणैवमेमृत्युमाहपूर्वंपितामहः॥ मानुषोहिनमांहंतुंशक्तोस्तिभुविकश्चन ४४ ततोनारायणःसाक्षात्मानुषोभून्नसंशयः॥ रामोदाशरथिर्भूत्वामांहंतुंसमुपस्थितः ४५ अनरण्येनयत्पूर्वंशप्तोहंराक्षसेश्वराः॥ उत्पत्स्यतेचमद्वंशेपरमात्मासनात

नः४६तेनत्वंपुत्रपौत्रैश्चबान्धवैश्चसमन्वितः॥हनिष्यसेनसंदेहइत्युक्त्वादिवंगतः ४७ सएवरामःसंजातोमदर्थेमांहनिष्यति ॥ कुंभकर्णस्तुमूढात्मासदानिद्रावशंगतः ४८तंविबोध्यमहासत्त्वमानयंतुममांतिकम्॥ इत्युक्तास्तेमहाकायास्तूर्णंगत्वातुयत्नतः ४९॥

तैसी दशाको राम करिकै प्राप्तहो और अपने मनमें हारि मानिकै लंकामें प्रवेश करताहुआ और यहां सिंहासनके ऊपर बैठिकै राक्षसों से यहकहताहुआ ४३ कि मनुष्यहीकरके मेरी मृत्युको पहिले ब्रह्मा कहतेहुये हैं और मनुष्य कोई ऐसा पृथिवी पै नहीं है जो मुझको मारनेको समर्थहोइ ४४ तिससे साक्षात् नारायणही मनुष्य होताहुआहै इसमें कुछ संदेहनहीं और सोईनारायण दशरथका पुत्रहोके मेरे मारनेको उपस्थितहुआहै अर्थात् मेरेसमीप प्राप्तहुआ है ४५ और हे राक्षस श्रेष्ठो पहिले एक अयोध्याका राजा अनरण्यनाम करके हुआ उसने मुझको शापदिया है कि मेरे वंशमें सनातन जो परमात्मा है सो उत्पन्नहोगा ४६ हे रावण उसकरके तू पुत्र पौत्र और भाई बन्धुओंकरके सहित मृत्युको प्राप्तहोगा इसमें संशय नहीं है यह कहिकै वहराजा स्वर्गकोजाताहुआ ४७ सोई राम मेरे अर्थ प्रकटहुआहै सो अवश्य मुझको मारेगा और मूढकुंभकर्ण तो सदा निद्राके वशरहताहै ४८ अर्थात् सोयाही करताहै इससे तिसको शीघ्रही जगाके मेरे समीपलाओ ऐसे रावणकी आज्ञाको प्राप्तहुये जे राक्षस ते शीघ्रही बड़े यत्नकरके ४९ ॥

विबोध्यकुंभश्रवणंनिन्यूरावणसन्निधिम् ॥ नमस्कृत्यसराजानमासनोपरिसंस्थितः ५० तमाहरावणोराजाभ्रातरंदीनयागिरा ॥ कुंभकर्णनिबोधत्वंमहत्कष्टमुपस्थितम् ५१ रामेणनिहताःशूराःपुत्राःपौत्राश्चबांधवाः ॥ किंकर्तव्यमिदानीमेमृत्युकालउपस्थिते ५२ एषदाशरथीरामःसुग्रीवसहितोबली॥ समुद्रंसबलस्तीर्त्वामूलंनःपरिकृंतति ५३येराक्षसामुख्यतमास्तेहतावानरैर्युधि ॥ वानराणांक्षयंयुद्धेनपश्यामिकदाचन ५४ नाशयस्वमहाबाहोयदर्थंपरिबोधितः ॥ भ्रातुरर्थेमहासत्वकुरुकर्मसुदुष्करम् ५५ श्रुत्वातद्रावणेंद्रस्यवचनंपरिदेवितम् ॥ कुंभकर्णोजहासोच्चैर्वचनंचेदमब्रवीत् ५६

कुंभकर्णको जगाकर रावणके समीप प्राप्तकरतेहुये और वह कुंभकर्ण रावणको नमस्कारकरके आसनके ऊपर बैठताहुआ ५० अब तिस कुम्भकर्ण भाईसे रावण जो राजा सो दीनवाणीकरके बोलताहुआ कि हे कुम्भकर्ण बड़ाभारीकष्ट

उपस्थितहुआ है यहतुम जानो ५१ क्योंकि रामने बड़ेबड़े शूर मेरे पुत्र और पौत्र और भाई बन्धु मारडाले अब मेरा मृत्युकाल प्राप्तहुआहै मैं क्याकरसक्ता हौं ५२ यह जो सुग्रीवकरके सहित दशरथका पुत्र बड़ाबली राम सो सेना सहित समुद्रको उतरके हमसब राक्षसोंको काटिरहाहै ५३ और जे मुख्यमुख्य राक्षसथे ते तौ वानरोंने संग्राममें सब मारडाले और युद्धमें वानरोंकाक्षयकभी देखतानहींहौं ५४ इससे हे वीर रामकी सेना का तुम नाशकरो जिसके लिये मैंने तुम्हें जगायाहै और हे महाबल युक्तभाई के अर्थ जो किसीने न कराहोय ऐसा कर्मकरौ ५५ अब कुम्भकर्ण यह रावण का विलापयुक्त वचनसुनिकै बड़े उच्चस्वरकरके हंसताहुआ और यहवचनबोला ५६ ॥

पुरामंत्रविचारेतेगदितंयन्मयानृप॥तदद्यत्वामुगपतंफलंपापस्य कर्मणः ५७ पूर्वमेवमयाप्रोक्तोरामोनारायणःपरः॥ सीताचयोगमाये तिबोधितोऽपिनबुध्यसे५८एकदाहंवनेसानौविशालायांस्थितोनिशि। दृष्टोमयामुनिःसाक्षान्नारदोदिव्यदर्शनः ५९ तमब्रुवंमहाभागकुतोगं तासिमेवद ॥ इत्युक्तोनारदःप्राहदेवानांमंत्रणेस्थितः ६० तत्रोत्पन्न मुदंतंतेवक्ष्यामिश्रृणुतत्त्वतः ॥ युवाभ्यांपीडितादेवाःसर्वेविष्णुमुपाग ताः ६१ ऊचुस्तेदेवदेवेशंस्तुत्वाभक्त्यासमाहिताः ॥ जहिरावणम क्षोभ्यंदेवत्रैलोक्यकंटकम् ६२ मानुषेणमृतिस्तस्यकल्पिताब्रह्मणापु रा ॥ अतस्त्वंमानुषोभूत्वाजहिरावणकंटकम् ६३ ॥

कि हे राजन् पहिले सलाह विचारके समय सभामें जो वचन मैंने कहाथा सोई पाप कर्म का फलतुमको प्राप्तहुआ ५७ और मैंने पहिले ही कहाथा राम साक्षात् परमात्मा नारायणहैं और सीता उनकी योगमाया शक्ति हैं इस प्रकार मैंने तुमको बहुतेरा बोधभी कराया परन्तु तुमको बोध न हुआ तिसी का यह फल है ५८ एकसमय विशाला नाम नगरी में पर्वतके शिखर के ऊपर रात्रि में दिव्य है दर्शन जिनका ऐसे जो नारद हैं सो मैंने देखे ५९ तिन नारदजीसे मैंनेपूंछा आप कहांगयेथे सो कहिये तब देवताओंकी सलाह में स्थित जो नारद सो मुझसे कहते हुये ६० कि हे कुम्भकर्ण देवताओं की सभा का वृत्तांत मैं तुमसे यथार्थ कहताहूं तिसको सुनौ तुम दोनों भाइयों करिकै पीडित जे देवता ते विष्णुके समीप जाते हुये ६१ और वहां जाके एकाग्र चित्तहो भक्तिकरिकै सब देवोंके स्वामी जो विष्णु तिनकी स्तुतिकरके बोलते हुये कि हे देव किसी करिकै नहीं चलायमान ऐसा जो तीनोंलोकका कण्टक रावण तिसको मारिये६२और पहिले ब्रह्माजीके मनुष्यकेहाथसे उस

की मृत्युरचीहै इससेआप मनुष्यहोकै उसलोक कण्टक रावणकोमारिये६३ ॥

तथेत्याहमहाविष्णुःसत्यसंकल्पईश्वरः ॥ जातोरघुकुलेदेवोराम इत्यभिविश्रुतः ६४ सहनिष्यतिवःसर्वानित्युक्त्वाप्रययौमुनिः ॥ अतो जानीहिरामंत्वंपरंब्रह्मसनातनम् ६५ त्यजवैरंभजस्वाद्यमायामानुष विग्रहम् ॥ भजतोभक्तिभावेनप्रसीदतिरघूत्तमः ६६ भक्तिर्जनित्री ज्ञानस्यभक्तिर्मोक्षप्रदायिनी ॥ भक्तिहीनेनयत्किंचित्कृतंसर्वमसत्सम म् ६७ अवताराःसुबहवोविष्णोर्लीलानुकारिणः ॥ तेषांसहस्रसदृशो रामोज्ञानमयःशिवः ६८ रामंभजंतिनिपुणामनसावचसानिशम् ॥ अनायासेनसंसारंतीर्त्वायांतिहरेःपदम् ६९ येराममेवसततंभुविशु द्धसत्वाध्यायंतितस्यचरितानिपठंतिसंतः॥ मुक्तास्तएवभवभोगमहा हिपाशैःसीतापतेःपदमनंतसुखंप्रयांति७० ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेसप्तमःसर्गः७

तब सत्यसंकल्प ईश्वर जो विष्णुसो देवतों से तैसेही प्रतिज्ञाकर रघुबंशमें रामनाम करकै विख्यात प्रकटहुआहै ६४ सो राम तुम सब राक्षसोंकोमारैगा यह कहिकै नारदमुनि चलेजातेहुये इससे हे रावण रामको तुम सनातन प-रब्रह्मजानो ६५ और अबभी वैरको छोड़देवो और मायाही करिकै है मनुष्य रूपजिसका ऐसा जो राम तिसका भजनकरो और जोकोई भक्तिकरिकै भजन करताहै तिसके ऊपर राम प्रसन्नहोतेहैं ६६ और रामकी भक्ति ज्ञानके उत्पन्न करनेवालीहै और मोक्षदेनेवाली है और भक्तिहीन पुरुष जो कुछ करताहै सो सब निष्फल होता है ६७ और तौ न जो प्राणियों के चरित्रकी नकलकरता हुआ विष्णु तिसके बहुत से अवतार हैं परंतु तिन हजारों अवतारों को एक जगह करै और एकजगह परमात्मा रामकोकरै तौ चाहै तुल्यहोय अर्थात् राम अवतारी है ६८ इससे जे जोई बुद्धिमान् पुरुष रामको मन करिकै और वचन करिकै और कर्म करिकै भजन करतेहैं वे अनायासही संसारके पार हो कै उसके पदको प्राप्त होते हैं ६९ और शुद्ध है अन्तःकरण जिनका ऐसे जे पुरुष निरन्तर रामहीका ध्यानकरते हैं और नित्यरामहीके चरित्रों को पढते हैं ते संसार रूपी बड़ेभारी सर्पों के बन्धनोंसे छूटिकै अनन्तसुख जो रामपद तिसको प्राप्त होतेहैं ७० ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डेभाषा टीकायांसप्तमस्सर्गः ७ ॥

कुंभकर्णवचःश्रुत्वाभृकुटीविकटाननः ॥ दशग्रीवोजगादेदमास नादुत्पतन्निव १ त्वमानीतोनमेज्ञानबोधनायसुबुद्धिमान् ॥ मयाकृतं समीकृत्ययुध्यस्वयदिरोचते २ नोचेद्गच्छसुषुप्त्यर्थंनिद्रात्वांबाधतेधु ना ॥ रावणस्यवचःश्रुत्वाकुम्भकर्णोमहाबलः ३ रुष्टोयमितिविज्ञाय तूर्णंयुद्धायनिर्ययौ ॥ सलंघयित्वाप्राकारंमहापर्वतसन्निभः ४ निर्ययौ नगरात्तूर्णंभीषयन्हरिसैनिकान् ॥ सननादमहानादंसमुद्रमभिनाद यन् ५ वानरान्कालयामासबाहुभ्यांभक्षयन्रुषा ॥ कुंभकर्णंतदादृ ष्ट्वासपक्षमिवपर्वतम् ६ दुद्रुवुर्वानराःसर्वेकालांतकमिवाखिलाः ॥ भ्रमंतंहरिवाहिन्यांमुद्गरेणमहाबलम् ७ ॥

दो॰ मारोअष्टमसर्गमें कुम्भकरणरघुबीर ॥
मेघनादकेनाशकोकियोमन्त्रसबबीर १

अब श्री महादेवजी पार्वतीजी से कथा बर्णन करे हैं हे पार्वति कुंभकर्णका वचन सुनिकै भौंहीं करिकै भयंकर मुख जिसका ऐसा जो रावण सो आसन से उछल करिकै कुम्भकर्ण से बोला १ कि हे कुम्भकर्ण कुछ ज्ञान के उपदेश के लिये बड़े बुद्धिमान् जो तुमहौ सो नहीं बुलवायेगयेहौ यातौ जो कुछ मैंने कियाहै तिसको अपनाही कियाजानिकै जो तुमकोरुचै तो युद्ध कीजिये २ और जो न इच्छाहोय तौ फिर सोने के लिये जाइये क्योंकि नींद तुमको इससमयमें बहुत बाधाकररही है ३ तौ महाबली जो कुम्भकर्ण है सो रावणकावचनसुनि कै रावणको क्रोधयुक्तजानिकै युद्धही के अर्थ जाताहुआ और बड़ाभारी पर्वतके समानजो कुम्भकर्ण सो लंकाकी छालदिवाली उलांघकै ४ वानरोंकी सेनाको डरपाताहुआ शीघ्रही जाताहुआ और समुद्रको भी शब्दयुक्त करताहुआ घोर शब्द करिकै गर्जताहुआ ५ अब कुम्भकर्ण दोनों भुजाओं से बानरोंको उठाकर भक्षण करताहुआ पीड़नकरता हुआ अथवा भगादेताहुआ जैसे पंखों करिकै युक्त पर्वतआवै तैसे क्रोधकरिकै आताहुआ जो कुम्भकर्ण तिसको आतेहुये देख करिकै ६ सब वानर भागतेहुये जैसे काल और मृत्यु इनको देखिकै सबप्रजा भयकरिकै भागै तैसेबानरभागतेहुये अबबानरोंकीसेनामेंमुद्गरलैकैघूमिरहा७॥

कालयंतंहरीन्वेगाद्भक्षयंतंसमंततः ॥ चूर्णयंतंमुद्गरेणपाणिपा दैरनेकधा ८ कुम्भकर्णंतदादृष्ट्वागदापाणिर्विभीषणः ॥ ननाम चरणौतस्यभ्रातुर्ज्येष्ठस्यबुद्धिमान् ९ बिभीषणोहं भ्रातुर्मे दयां कुरु महामते ॥ रावणस्तुमयाभ्रातर्बहुधापरिबोधितः १० सीतांदेहीतिरा

मायरामःसाक्षाज्जनार्दनः ॥ नशृणोतिचमांहन्तुंखड्गमुद्यस्यचोक्तवा न् ११ धिक्त्वांगच्छतिमांहत्वापदापापिसिराद्यतः ॥ चतुर्भिर्मंत्रि भिःसार्द्धंरामंशरणमागतः १२ तच्छ्रुत्वाकुम्भकर्णोऽपिज्ञात्वाभ्रात रमागतम् ॥ समालिंग्यचवत्सत्वंजीवरामंपदाश्रयः १३ कुलसं रक्षणार्थाय राक्षसानांहितायच ॥ महाभागवतोसित्वंपुरामेनारदा च्छुतम् १४ ॥

और वानरोंको चारोंतरफ से भगारहा और भक्षण करताहुआ और बड़ाहै बल जिसमें और मुद्गर करिकै और हाथों करिकै और पावों करिकै वानरों को चूर्ण करताहुआ जो कुम्भकर्ण तिसको ८ गदाहै हाथमें जिसके ऐसा जो विभीषणसो देखिकै अपने जेठेभाई कुम्भकर्ण के चरणोंको प्रणाम करताहुआ जिस से बड़ा बुद्धिमान् रहा इससे ९ और यह वचनबोला कि मैं विभीषणहौं और हे श्रेष्ठमते भाई जो मैं हूं तिसके ऊपर दयाकरौ और रावण जो भाई है तिसको बहुतेरा मैंने समुझाया १० कि सीताको रामकोदेवो और राम साक्षात् नारायणहैं सो मेरे वचनको नहीं सुनताहुआ और उलटाखड्गलेके मेरे मारनेको उद्यतहुआ ११ और पापियों करकेयुक्त जो रावण सो मुझको पांउसे ताड़न करके अर्थात् लातमारके यह कहताहुआ कि तुझको धिक्कारहै और तू यहांसे जा तो मैं चारमन्त्रियों को साथलैकै रामके शरणआताहुआ १२ तबयहवचन सुनिकै कुम्भकर्ण अपनाभाई जो विभीषण तिसको प्राप्त जानिकै हृदयसे आलिंगनकरके यहबोला कि हे वत्स जिससे तू रामके चरणका आश्रयणकरता हुआहै इससे तू बहुतकाल जीवनको प्राप्तहोउ १३ और कुलकी रक्षाके अर्थ और राक्षसों के कल्याणके अर्थ तुम महाभागवत उत्पन्न हुयेहो यह मैंने नारद जी के मुखसे पहिलेसुनाहै १४ ॥

गच्छतातममेदानींदृश्यतेनचकिंचन ॥ मदीयोवापरोवापिमदम त्तविलोचनः १५ इत्युक्तोश्रुमुखोभ्रातुश्चरणावभिवंद्यसः ॥ रामपा र्श्वंसुपागत्यचिंतापरउपस्थितः १६ कुम्भकर्णोऽपिहस्ताभ्यांपादा भ्यांपिष्टयन्हरीन् ॥ चचारवानरींसेनांकालयन्गंधहस्तिवत् १७ दृष्ट्वातंराघवःक्रुद्धोवायव्यंशस्त्रमादरात् ॥ चिक्षेपकुम्भकर्णायतेनवि च्छेदरक्षसः १८ समुद्गरंदक्षहस्तंतेनघोरंननादसः ॥ सहस्तःप तितोभूमावनेकानर्दयन्कपीन् १९ पर्यंतमाश्रिताःसर्वेवानराभयवे पिताः ॥ रामराक्षसयोर्युद्धम्पश्यंतःपर्यवस्थिताः २० कुम्भकर्णःछिन्न

हस्तःशालमुद्यम्यवेगतः॥ समरेराघवंहंतुंदुद्रावतमथोच्छिनत् २१॥

और हे तात अब तुम मेरे आगेसे चलेजाओ क्योंकि इस समय में मुझे अपना बिराना कुछ नहीं सूझता जिससे वीर मद करके मेरे नेत्र मतवाले होरहेहैं १५ ऐसा जब कुंभकर्णने कहा तौ नेत्रोंसे अश्रुपात जिसके चलेजाते हैं ऐसा जो विभीषण सो भाई के चरणों को प्रणामकरके फिर राम के समीप आकै चिन्ता में मग्न स्थित होताहुआ १६ अब कुम्भकर्णभी अपने हाथों से औ पावोंसे वानरोंको पीसताहुआ मतवाले हाथीकी तरह बानरोंकी सेना को भगाताहुआ संग्राम में स्थितहोताहुआ १७ तिस कुम्भकर्ण को देखि कै रामचन्द्र क्रोधकरके वायव्य अस्त्र छोडतेहुये कुम्भकर्ण के अर्थ तिस अस्त्र करके श्री रामचन्द्र मुद्गरकरके सहित कुम्भर्णके दक्षिण हाथको काटडालते हुये १८ तिस करके कुम्भकर्ण घोरशब्द करताहुआ सो हाथ अनेक वानरों का मर्दन करताहुआ पृथिवी में गिरपडा १९ और वानरभी उस कुम्भकर्णके हाथ के गिरने की भयकर के चारोंतरफ से हटजातेहुये और राम और कुम्भ कर्ण के युद्धको देखतेहुये दूर स्थित होतेहुये २० अब कटिगया है एक हाथ जिसका ऐसा जो कुम्भकर्ण सो दूसरे हाथ कर के शालके वृक्षको उठाकर बडे वेगसे रामके मारने को दौडताहुआ तब राम ऐन्द्र अस्त्रकरके वृक्षसहित उस की बामभुजा को काटि डालते हुये २१ ॥

शालेनसहितंवामहस्तमैंद्रेणराघवः॥ छिन्नबाहुमथायांतंनर्दन्तं वीक्ष्यराघवः २२ द्वावर्द्धचंद्रौनिशितावादायास्यपदद्वयम्॥ चिच्छे दपतितौपादौलंकाद्वारिमहास्वनौ २३ निकृत्तपाणिपादोपिकुम्भर्णोऽ तिभीषणः॥ वडवामुखवद्वक्त्रंव्यादायरघुनन्दनम् २४ अभिदुद्रा वनिनदन्राहुश्चन्द्रमसंयथा॥ अपूरयत्सिताग्रैश्चशायकैस्तद्रघूत्त मः २५ शरपूरितवक्त्रोसौचुक्रोशातिभयंकरः॥ अथसूर्यप्रतीकाश मैंद्रंशरमनुत्तमम् २६ वज्राशसिसमंरामश्चिक्षेपासुरमृत्यवे॥ सत त्पर्वतसंकाशंस्फुरत्कुंडलदंष्ट्रकम् २७ चकर्त्तरक्षाधिपतेःशिरोवृत्रमि वाशनिः॥ तच्छिरःपतितंलंकाद्वारिकायोमहोदधौ २८॥

तब कटि गई हैं दोनों भुजा जिसकी और गर्जताहुआ सन्मुख आरहा है ऐसे कुम्भकर्ण को श्रीराम देखके २२ बडे पैने दो अर्द्ध चन्द्राकार वाणों करके उस कुंभकर्ण के दोनों पावोंको काटि डालतहुये और फिर उन्हों को लंकाके द्वार पै बाणों से पहुंचा देतेहुये २३ अब कटिगये हैं हाथ पाँव जिसके ऐसा

जो अत्यन्त भयंकर कुम्भकर्ण सो वड़वा अग्नि के शतयोजन निवासस्थानके तुल्य जो अपना मुख तिसको फैलाकरके रामके सन्मुख दौड़ताहुआ २४ अर्थात् सरकता हुआ जैसे राहु शब्द करताहुआ चन्द्रमाको ग्रास करनेको दौड़े तब श्रीराम पैने पैने बाणों करके उस कुम्भकर्ण के मुख को पूर्ण करते हुये २५ फिर बाणों करके पूर्णमुख जिसका ऐसा जो भयंकर कुम्भकर्ण सो चिल्लाताहुआ अब तिसके अनन्तर सूर्य के तुल्य है प्रकाश जिसका ऐसा जो ऐन्द्र अस्त्र करके युक्त २६ वज्रके तुल्य बाण तिसको श्रीरामचन्द्र कुम्भकर्ण की मृत्युके अर्थ चलातेहुये सो बाण देदीप्यमानहै कुण्डल और डाढ़ैं जिसमें ऐसा जो पर्वत के समान कुम्भकर्णका शिर २७ तिसको काटताहुआ जैसे इन्द्रका वज्र वृत्रासुर के शिर को काटै वह शिर लंका के द्वारपै गिरताहुआ और उसका धड़ समुद्रमें गिरता हुआ २८ ॥

शिरोस्यरोधयद्द्वारंकायोनक्राद्यचूर्णयत् ॥ ततोदेवाःसऋषयोगंधर्वाःपन्नगाःखगाः२९ सिद्धायक्षागुह्यकाश्चअप्सरोभिश्चराघवम् ॥ ईडिरेकुसुमासारैर्वर्षैतश्चाभिनन्दिताः ३० आजगामतदारामंद्रष्टुंदेवमुनीश्वराः ॥ नारदोगगनात्तूर्णंस्वभासाभासयन्दिशः ३१ राममिंदीवरश्याममुदारांगंधनुर्धरम् ॥ ईषत्ताम्रविशालाक्षमैंद्रास्त्रांचितबाहुकम् ३२ दयार्द्रदृष्ट्यापश्यन्तवानरान्शरपीडितान् ॥ दृष्ट्वागद्गद्यावाचाभक्तयास्तोतुंप्रचक्रमे ३३ नारदउवाच ॥ देवदेवजगन्नाथपरमात्मन्सनातन ॥ नारायणाखिलधारविश्वसाक्षिन्नमोस्तुते ३४ विशुद्धज्ञानरूपोपित्वंलोकानतिवंचयन् ॥ माययामनुजाकारःसुखदुःखादिमानिव ३५ ॥

सो कुम्भकर्णका शिरतो लंकाके द्वारको रोंकताहुआ और उसकाधड़ नाके आदि जे समुद्रके जन्तु हैं तिनको चूर्ण चूर्ण करता हुआ तिसके उपरान्त ऋषियोंकरके सहित जोदेवता और गन्धर्व और यक्ष और पन्नग और पक्षी२९ और सिद्ध और यक्ष अप्सराओं करके सहित गुह्यक ये सब रामकी स्तुति करते हुये और बड़े आनन्दयुक्त हो पुष्पोंकी वृष्टिकरते हुये ३० उसीसमयमें श्रीराम के दर्शन करनेको देवर्षियोंके स्वामी जो नारदसो अपनी कान्ति करके दिशाओं का प्रकाश करते हुये आकाशसे उतरतेहुये ३१ और श्यामसुन्दरहै अंग जिनका और धनुपको धारणकरे और थोड़ी ललामीको लियेहुये विशाल हैं नेत्र जिनके और ऐन्द्र अस्त्रकरके शोभितहैं भुजा जिनकी ३२ और बाणोंकरके पीड़ित जे वानर तिनको दयायुक्त दृष्टिकरके देखरहेहैं ऐसे जो श्रीराम तिनको

नारद देखिके गद्गदवाणीसे स्तुतिकरने लगे ३३ हे देवदेव देवताओं को भी पूजाकरने योग्य हे जगन्नाथ हे परमात्मन् हे नारायण हे अखिलाधार अर्थात् सबके आश्रय हे विश्वसाक्षिन् हे विश्वके देखनेवाले तुम्हारे अर्थ नमस्कार है ३४ यद्यपिआप विशुद्धज्ञान रूपभीहौ तौभी अपनी मायाकरके सबलोकों को ठगतेहुये मनुष्यका सा आकार जिनका ऐसे हुये सुख दुःखादि युक्त की नाईं प्रतीयमान होतेहौ ३५॥

त्वंमाययागूह्यमानःसर्वेषांहृदिसंस्थितः॥ स्वयंज्योतिःस्वभाव स्त्वंव्यक्तएवामलात्मनाम् ३६ उन्मीलयन्सृजस्येतन्नेत्रेरामजगत्त्र यम्॥ उपसंह्रियतेसर्वंत्वयाचक्षुर्निमीलनात् ३७ यस्मिन्सर्वमिदंभा तियतश्चैतच्चराचरम्॥ यस्मान्नकिंचिल्लोकेस्मिन्तस्मैतेब्रह्मणेनमः ३८ प्रकृतिंपुरुषंकालंव्यक्ताव्यक्तस्वरूपिणम्॥ यंजानन्तिमुनिश्रेष्ठा स्तस्मैरामायतेनमः ३९ विकाररहितंशुद्धंज्ञानरूपंश्रुतिर्जगौ॥ त्वां सर्वजगदाकारमूर्तिंचाप्याहसाश्रुतिः ४० विरोधोदृश्यतेदेववैदिको वेदवादिनाम्॥ निश्चयंनाधिगच्छंतित्वत्प्रसादंविनाबुधाः ४१ मा ययाक्रीड़तोदेवनविरोधोमनागपि॥ रश्मिजालंरवेर्यद्वद्दृश्यतेजल वद्भ्रमात् ४२॥

और तुमसबके हृदयमें स्थितऔर स्वयंप्रकाश भीहौ तौभी मायाकरिकै आच्छादित होनेसे सबको नहीं प्रतीयमान होतेहौ और निर्मलहै अन्तःकरण जिनका ऐसे पुरुषोंको तो प्रकटही प्रतीत होतेहौ ३६ और हे राम जब तुम नेत्र खोलतेहौ तौ तीनों जगत्को रचतेहौ और जब नेत्रमूंदतेहौ तोसब लोकों को संहार करतेहौ ३७ और हेराम जिस आश्रयके बिषे संपूर्ण जगत् प्रतीयमान होरहाहै अर्थात् जिसकी सत्तासे प्रतीतहोरहाहै इसकहनेसे वर्तमान काल में ईश्वरकी सत्तादिखलाई और हे राम यतः नाम जिससे चराचर जगत् उत्पन्न होताहै और जिसकरके जीवनको प्राप्तहोताहै जिसमें फिर लयको प्राप्तहोताहै यहां तीनोंकाल में सत्यता दिखलाई और जिसते परे और कोई कारण नहीं है ऐसे जो ब्रह्मरूप तुमहौ तिसके अर्थ नमस्कारहै ३८ और हे राम मुनियों में श्रेष्ठ जे मुनिहैं ते जिस तुमको प्रकृति रूपकरके जानतेहैं और पुरुषरूप तुम हीको जानतेहैं और व्यक्तनाम प्रकट जो निमेष घटिकादिरूपकाल और अव्य-क्तनाम अप्रकट जोक्षणरूप काल तिसकोभी तुमहींमें जानतेहैं इसप्रकारकरके सर्वत्ररमण करतेहुये राम जोतुमहौ तिसके अर्थ नमस्कारहै ३९ और हे राम बिकार रहित शुद्धज्ञान स्वरूप तुमको वेद प्रतिपादन करताहै और सर्व जगदा-

कारहै मूर्ति जिनकी ऐसे तुमहौ यह भी वेदकहताहै ४० इसप्रकार वेद वादियोंका परस्पर विरोध दिखलाई पड़ताहै इससे पण्डितभी आपके प्रसाद के विना निश्चयको नहीं प्राप्तहोसकेहैं और जिनके ऊपर आपकी कृपाहै वे तौ निश्चयको प्राप्तहो कुछभी विरोध नहीं देखते क्योंकि जितना विकारहै सो सब जगत्हीका है आपतो निर्विकारहैं ४१ और हे देव मायाकरके क्रीड़ाकरते हुये जोतुमहौ तिसमें कुछभी विरोध नहीं और जगदाकाररूप तौ मायिकही है जैसे निर्जलदेशमें मृगोंको सूर्यकी किरणें भ्रमसे जलवत् प्रतीयमान हुआ करतीहैं तैसे तुमभी जगदाकार प्रतीतहोतेहौ ४२ ॥

भ्रांतिज्ञानात्तथाशामत्वयिसर्वंप्रकल्प्यते ॥ मनसोविषयोदेवरूपं तेनिर्गुणंपरम् ४३ कथंदृश्यंभवेद्देवदृश्याभावभजेत्कथम् ॥ अतस्त वावतारेषुरूपाणिनिपुणाभुवि ४४ भजंतिबुद्धिसंपन्नास्तरंत्येवभवार्ण वम् ॥ कामक्रोधादयस्तत्रबहवःपरिपंथिनः ४५ भीषयंतिसदाचेतोमा र्जारामूषकंयथा ॥ त्वन्नामस्मरतांनित्यंत्वद्रूपमपिमानसे ४६ त्वत्पूजा निरतानांतेकथामृतपरात्मनाम् ॥ त्वद्भक्तसंगिनांरामसंसारोगोपदा यते ४७ अतस्तेसगुणंरूपं ध्यात्वाहंसर्वदाहृदि ॥ मुक्तश्चरामिलोके षुपूज्योहंसर्वदेवतैः ४८ रामत्वयामहत्कार्यंकृतंदेवहितेच्छया ॥ कुम्भ कर्णवधेनाद्यभूभारोयंगतःप्रभो ४९ ॥

और हे राम भ्रांतिज्ञान से जैसे सिप्पी में रजतकी कल्पनाहोतीहै तैसेही तुम्हारे विषे सारा जगत् कल्पना कियाजाता है और हेदेव प्रकृतिसेपरे निर्गुण जो तुम्हारारूप सो शुद्ध मनकाविषयहै अर्थात् शुद्धमनहीसे जानाजाताहै ४३ कदाचित् कोईकहै तौ सगुणरूपकाध्यान मायिकहोनेसे क्या निष्फलहै तिस के ऊपर नारदजी कहतेहैं कि हेदेव यहनिर्गुणरूप आपका नेत्रोंके गोचर कैसे होसक्ताहै और विनादेखे भक्ति कैसे होसक्ती है इसकारणसे अवतारोंके विषेजे तुम्हारेरूपहैं तिनको बड़ेचतुर भक्तलोग भजतेहैं ४४ और उसभजनसे संसार सागरके पार भी होजातेहैं परन्तु उस भजनमें भी काम क्रोधादिक बहुत से डांकू चोर ४५ भक्तके चित्तको जैसे बिल्ली चूहेके ऊपर दौड़ाकरै ऐसे भय उत्पन्न कियाकरतेहैं तिसभयके दूरकरनेका यह उपायहै कि नित्य जे आप के नामका स्मरणकरतेहैं और नित्यही आपके रूपको जो मनमें ध्यानकरते हैं ४६ और आपकी प्रतिमा पूजनमें जे निरतहैं अर्थात् प्रीतियुक्तहैं और आपकी कथाही जो अमृत तिसमें तत्परहै मनजिन्होंका और जे तुम्हारे भक्तोंके संग करनेवालेहैं ऐसे जो भक्त तिनको तो हेराम जैसे गायके खुरमात्र भूमिमें भरे

हुये जलको कोई अनायाससे नांघिजाइ तैसे संसारसागर होजाताहै ४७ इस से सबकालमें अपने हृदयमें तुम्हारे सगुणरूपहीको ध्यान करताहुआ मैं सब देवताओंकरके पूजनीय मुक्तहो सबलोकोंमें विचरताहूं ४८ और हे राम जो देवताओंके हितकी इच्छाकरके तुमने कुंभकर्णको मारा तिसकरके बड़ाकार्य किया क्योंकि कुंभकर्णके बधसे पृथिवीका भारही दूरहोगया ४९ ॥

श्वोहनिष्यतिसौमित्रिरिन्द्रजेतारमाहवे ॥ हनिष्यसेथरामस्त्वंप रश्वोदशकन्धरम् ५० पश्यामिसर्वंदेवेशसिद्धैःसहनभोगतः ॥ अनु ग्रह्णीष्वमांदेवगमिष्यामिसुरालयम् ५१ इत्युक्त्वाराममामंत्र्यनार दोभगवानृषिः ॥ ययौदेवैःपूज्यमानोब्रह्मलोकमकल्मषम् ५२ अ तरंनिहतंश्रुत्वाकुम्भकर्णंमहाबलम् ॥ रावणःशोकसंतप्तोरामेणाक्लि ष्टकर्मणा ५३ मूर्च्छितःपतितोभूमावुत्थायविललापह ॥ पितृव्यंनि हतंश्रुत्वापितरंचातिविक्लवम् ५४ इन्द्रजित्प्राहशोकार्तंत्यजशोकंम हामते ॥ मयिजीवतिराजेन्द्रमेघनादेमहाबले ५५ दुःखस्यावसरःकु त्रदेवांतकमहामते ॥ व्येतुतेदुःखमखिलंस्वस्थोभवमहीपते ५६ ॥

और कल्हिके दिन संग्राममें लक्ष्मण मेघनादको मारैंगे और परसोंके दिन हे राम तुम रावणको मारौगे ५० अब यहां नारदके कथनमें कल्ह परसों के कहनेका शीघ्र बधमें तात्पर्यहै और वाल्मीकीय और अग्निवेश्य रामायण के देखनेसे तौ तीनदिन निरन्तर संग्रामकरके लक्ष्मणजीने मेघनादको मारा है और अठारहदिन राम रावणका संग्रामहुआहै ऐसा विदितहोताहै अबनारदजी जानेको आज्ञामांगतेहुये यह कहतेहैं कि हे देवेश सिद्धोंकरके सहित आकाश में स्थितहोके मैं आपका संग्रामादि चरित्र सब देखताहूं और अब मेरे ऊपर अनुग्रहकीजिये मैं देवलोकको जाताहूं ५१ यहकहके और रामकी आज्ञालेके नारद भगवान् देवताओंकरके पूजितहो शुद्ध ब्रह्मलोक को जातेहुये ५२ अब रावण थोड़ेही परिश्रमकरके श्रीरामचन्द्रके हाथसे महाबली कुम्भकर्ण भाई को मराहुआसुनके बड़े शोककरके संतप्तहोकर ५३ मूर्च्छितहुआ पृथिवीमेंगिर पड़ा और फिर उठकरके विलापकरताहुआ तब उससमयमें इन्द्रजित् नाम जो रावणकापुत्र सो अपने चचाको मराहुआ सुनके और पिताको अत्यन्त शोकमें व्याकुल देखके ५४ शोक पीड़ित रावणसे यहकहताहुआ कि हेमहामते आप शोकको त्याग करिये और मैं जो महाबली मेघनाद तिसके जीवते हुये हे देवताओंके नाशकरनेवाले औ हे श्रेष्ठ बुद्धियुक्त आपको दुःखकरनेका क्या समयहै और हेराजन् तुम्हारादुःखसब दूरहो और आपस्वस्थचित्तहूजिये ५६ ॥

सर्वंशमीकरिष्यामिहनिष्यामिचवैरिपून् ॥ गत्वानिकुम्भिलांसद्यस्तर्पयित्वाहुताशनम् ५७ लब्ध्वारथादिकंतस्मादजेयोहंभवाम्यरेः ॥ इत्युक्त्वात्वरितंगत्वानिर्दिष्टंहवनस्थलम् ५८ रक्तमाल्यांबरधरोरक्तगंधानुलेपनः ॥ निकुम्भिलास्थलेमौनीहवनायोपचक्रमे ॥ विभीषणोथतच्छ्रुत्वामेघनादस्यचेष्टितम् ५९ प्राहरामायसकलंहोमारंभंदुरात्मनः ॥ समाप्यतेचेद्धोमोयंमेघनादस्यदुर्मतेः ॥ तदाऽजेयोभवेद्राममेघनादःसुरासुरैः ६० अतःशीघ्रंलक्ष्मणेनघातयिष्यामिरावणिम् ॥ आज्ञापयमयासार्द्धंलक्ष्मणंबलिनांवरम् ॥ हनिष्यतिनसंदेहोमेघनादंतवानुजः ६१ ॥ श्रीरामचन्द्रउवाच ॥ अहमेवागमिष्यामिहन्तुमिन्द्रजितंरिपुम् ॥ आग्नेयेनमहास्त्रेणसर्वराक्षसघातिना ६२ विभीषणोपितंप्राहनासावन्यैर्निहन्यते ॥ यस्तुद्वादशवर्षाणिनिद्राहारविवर्जितः ६३ ॥

और मैं सब तुम्हारे दुःखको भस्मकरदेऊंगा और सब तुम्हारे शत्रुओं का नाश करताहूं अब मैं निकुंभिला नाम करके जोर्श्रशिलाहै तहां जाके अग्निको तृप्तकरके ५७ और तिस अग्नि से रथ आदि पदार्थोंको प्राप्तहो शत्रुको अजेय हो जाऊंगा अर्थात् फिर नहीं कोई मुझको जीत सकैगा यह रावण से कहि के इन्द्रजित् फिर शीघ्र ही निकुम्भिलापै जाके ५८ वहां रक्तपुष्पों की माला और रक्त चन्दन और रक्त वस्त्र इनको धारण करिकै हवन का प्रारम्भ करताहुआ अब इसके उपरान्त विभीषण इस मेघनाद के सब चरित्र को सुनिके ५९ श्रीरामचन्द्र से दुष्टात्मा मेघनाद के होमके प्रारम्भ को कहता हुआ और यह भी कहा कि हे राम जो कदाचित् इस दुष्टमति मेघनाद का यह होम समाप्त होगया तौ यह मेघनाद सुर और असुर इन करके अजेय हो जायगा अर्थात् फिर नहीं जीता जायगा ६० इससे शीघ्रही लक्ष्मण के हाथ से मैं इस रावण के पुत्र को मरवा देऊंगा सो आप बलवानों में श्रेष्ठ जो लक्ष्मण तिनको मेरे साथ जाने की आज्ञा दीजिये ६१ औ लक्ष्मण अवश्य मेघनाद को मारेंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं है तब राम बोले कि हे बिभीषण मैं हीं सब शत्रों के नाश करने वाले आग्नेय अस्त्र करके मेघनाद शत्रु के मारने को जाऊंगा ६२ परन्तु यह वचन वाल्मीकिय से विरुद्ध है वाल्मीकीय में अपनी इच्छा से राम ने लक्ष्मणही को भेजा है और कोई रावण का पुत्र अपने हाथ से नहीं मारा है ऐसा लिखा है तौ रामका पूर्वोक्त-

बचन सुनि कै विभीषण राम से बोला कि हे राम यह मेघनाद और के हाथसे नहीं मरने का है क्योंकि जो बारह बर्षतक निद्रा और आहार इनको त्याग देवै ६३ ॥

तेनैवमृत्युर्निर्दिष्टोब्रह्मणास्यदुरात्मनः ॥ लक्ष्मणस्तुअयोध्याया निर्गम्यायात्त्वयासह ६४ तदादिनिद्राहारादीन्नजानातिरघूत्तम ॥ सेवार्थंतवराजेन्द्रज्ञातंसर्वमिदंमया ६५ तदाज्ञापयदेवेशलक्ष्मणंत्व रयामया ॥ हनिष्यतिनसंदेहःशेषःसाक्षाद्धराधरः ६६ त्वमेवसाक्षाज्ज गतामधीशोनारायणोलक्ष्मणएवशेषः ॥ युवांधराभारनिवारणार्थं जातौजगन्नाटकसूत्रधारौ ६७ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डेऽष्टमःसर्गः ८

तिसी के हाथ से इसकी मृत्यु ब्रह्माने कही है और हे राम लक्ष्मण तौ अयोध्या से निकसिकै जबसे आपके सङ्ग बनको आये हैं ६४ तिस दिन से लेके हे राम निद्रादिकों को जानताही नहीं है सो केवल आप की सेवा के कारण से यह वृत्तान्त मेरा सब जाना हुआ है ६५ तिस कारण से हे देवेश लक्ष्मण को मेरे संग जाने की आज्ञा कीजिये ये पृथ्वी के धारण करने वाले साक्षात् शेषरूप लक्ष्मण मेघनाद को मारेंगे इस में कुछसंशय नहीं है ६६ और हे राम तुमही सब जगत् के साक्षात् स्वामीहौ अर्थात् लक्ष्मण जो कार्य करेंगे उसमें भी तुम्हारी ही शक्ति है ऐसे नारायण आप हैं और लक्ष्मण शेषावतार हैं और तुम दोनों पृथिवी के भार दूर करने को प्रकटहुये हौ और साक्षात् जगत् का निर्माण रूप जो नाटक तिसके सूत्रधारहौ अर्थात् मुख्य कारण रूप हौ ६७ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्बादेयुद्धकाण्डेश्रीमि-
द्रामदत्तकृतभाषाटीकायामष्टमःसर्गः ८ ॥

विभीषणवचःश्रुत्वारामोवाक्यमथाब्रवीत् ॥ जानामितस्यरौद्र स्यमायांकृत्स्नांविभीषण १ सहिब्रह्मास्त्रविच्छूरोमायावीचमहाबलः जानामिलक्ष्मणस्यापिस्वरूपंममसेवनम् २ ज्ञात्वैवास्महंतूष्णींभ विष्यत्कार्यगौरवात् ॥ इत्युक्त्वालक्ष्मणंप्राहरामोज्ञानवतांवरः ३ ग च्छलक्ष्मणसैन्येनमहताजहिरावणिम् ॥ हनूमत्प्रमुखैःसर्वैर्यूथपैःस हलक्ष्मण४जाम्बवानृक्षराजोयंसहसैन्येनसंवृतः॥ विभीषणश्चसचि वैःसहत्वामभियास्यति ५ अभिज्ञस्तस्यदेशस्यजानातिविवराणि

सः ॥ रामस्यवचनंश्रुत्वांलक्ष्मणःसविभीषणः ६ जग्राहकार्मुकंश्रेष्ठम न्यद्भीमपराक्रमः ॥ रामपादांबुजंस्पृष्ट्वाहृष्टःसौमित्रिरब्रवीत् ७ ॥

दो० । नवमसर्गमहँ इन्द्रजितमारोलक्ष्मणवीर ॥
शोकाकुलदशकंठपुनि गयोजानकीतीर १
सीतामारनहेतुखलखड्गनग्नतिहिंलीन्ह ॥
तहांसुपारसमन्त्रिवरवरजिस्वस्थमनकीन्ह २

अब महादेव जी पार्वती से कथा वर्णन करें हैं कि हे पार्वति अब श्रीरामचन्द्र विभीषण के वचन सुनि बोलतेहुये कि हे विभीषण तिस तमोगुणी इन्द्रजित् की मायाको मैं सब जानताहूं १ और सो इन्द्रजित् ब्रह्मास्त्र को जानता है और शूर है और मायावी है और बड़ा बली है और लक्ष्मण के स्वरूप को भी मैं जानताहूं और जैसे मेरी सेवा के हेतु लक्ष्मण ने निद्राआहारआदि जीते हैं सो भी मैं जानताहूं २ और यह सब जान के ही होने वाले कार्यके गौरव से मैं मौनहोगया यह वचन विभीषणसे कहिकै जानने वालों में श्रेष्ठ जो राम सो लक्ष्मण से बोले ३ कि हे लक्ष्मण हनुमान् को आदि लै के जे यूथपती तिन्हों कर के सहित और बड़ी सेना को साथ लेके युद्धकरनेको जावो और रावणके पुत्रकोमारो ४ और जाम्बवान् जो ऋक्षराज सो अपनी सेनाकरके सहित तुम्हारेसंग जायगा और मन्त्रियों करके सहित विभीषणभी तुम्हारेसंग जायगा ५ क्योंकि यह विभीषण उसनिकुम्भिलास्थानका जाननेवालाहै औरभी अलक्षितस्थानोंको जानताहै अब ये राम के वचन सुनिकै विभीषणसहित जो बड़े पराक्रमयुक्त लक्ष्मण सो ६ श्रेष्ठ धनुष को ग्रहणकरके और रामके चरणारविन्दको स्पर्शकरके प्रसन्नहो लक्ष्मणजी बोलतेहुये ७ ॥

अद्यमत्कार्मुकान्मुक्ताःशरानिर्भिद्यरावणिम्॥ गमिष्यंतिहिपातालं स्नातुंभोगवतीजले ८ एवमुक्त्वाससौमित्रिःपरिक्रम्यप्रणम्यतम् ॥ इंद्रजिन्निधनाकांक्षीययौत्वरितविक्रमः ९ वानरैर्बहुसाहस्रैर्हनूमान्पृष्ठतोन्वगात् ॥ विभीषणश्चसहितोमंत्रिभिस्त्वरितंययौ १० जांबवत्प्रमुखाऋक्षाःसौमित्रिंत्वरयान्वगुः ॥ गत्वानिकुंम्भिलादेशंलक्ष्मणोवानरैःसह ११ अपश्यद्बलसंघातंदूराद्राक्षससंकुलम् ॥ धनुरायम्यसौमित्रिर्यत्तोभूद्भूरिविक्रमः १२ अंगदेनचवीरेणजांबवानृक्षसाधिपः ॥ तदाविभीषणःप्राहसौमित्रिंपश्यराक्षसान् १३ यदेतद्राक्षसानीकंमेघश्यामंविलोक्यते॥अस्यानीकस्यमहतोभेदनेयत्नवान्भव १४॥

आज मेरे धनुष से छूटेहुये जे बाणहैं ते रावण के पुत्रको विदारण करके भोगवती गंगा के जलमें अथवा जो भोगवती नागोंकी पुरीहै तिसके जलमें स्नानकरनेको पाताललोकको जावैंगे ८ इसप्रकार लक्ष्मण वचनकहिकै और श्रीरामकी परिक्रमाकरके और प्रणामकरके इन्द्रजित्के मारनेकी इच्छाकरके शीघ्रही जातेहुए ९ अब बहुतहजार बानरोंको साथलेकै लक्ष्मणकेपीछे पीछे हनुमान्जी जातेहुये और मन्त्रियोंकरके सहित जो विभीषण सो शीघ्रहीजा ताहुआ १० और जाम्बवान्को आदिलैके जे ऋक्षहैं तेभी आकरके लक्ष्मण के पीछेपीछे जातेहुये अब बानरोंकरके सहित लक्ष्मण जहां निकुम्भिलास्था नरहा तहांजाके ११ दूरहीसे राक्षसोंकरके व्याप्त राक्षसोंकी सेनाओंके समूह को देखतेहुये और बड़ेपराक्रम जिनके ऐसेजो लक्ष्मण सो धनुषकोलेकै यत्न करके सहित स्थितहोतेहुये १२ और अंगदबीरकरके सहित जाम्बवान्भी यत्न युक्त स्थितहोताहै और उससमय में राक्षसों का स्वामी जो विभीषण है सो लक्ष्मणसे यह कहताहुआ कि हेलक्ष्मण अब राक्षसोंको देखिये १३ और जो यह राक्षसोंकी सेना मेघवत् श्यामबर्ण दिखाई पड़तीहै इस बड़ीसेनाके भेदन में अर्थात् नाश करनेमें तुम यत्नकरो १४॥

राक्षसेंद्रसुतोप्यास्मिन्भिन्नदृश्योभविष्यति ॥ अभिद्रवाशुयावद्वै नैतत्कर्मसमाप्यते १५ जहिवीरदुरात्मानंहिंसापरमधार्मिकम् ॥ बिभीषणवचःश्रुत्वालक्ष्मणःशुभलक्षणः १६ ववर्षशरवर्षाणिराक्षसेंद्र सुतंप्रति ॥ पाषाणैःपर्वताग्रैश्चवृक्षैश्चहरियूथपाः १७ निर्जघ्नुःसर्व तोदैत्यान्तेपिवानरयूथपान् ॥ परश्वधैःसितैर्बाणैरसिभिर्यष्टितोम रैः १८ निर्जघ्नुर्वानरानीकंतदाशब्दोमहानभूत् ॥ ससंप्रहारस्तुमु लःसंजज्ञेहरिरक्षसाम् १९ इंद्रजित्स्वबलंसर्वमर्द्यमानंविलोक्यसः॥ निकुम्भिलांचहोमंचत्यक्त्वाशीघ्रंविनिर्गतः २० रथमारुह्यसधनुः क्रोधेनमहतागमत् ॥ समाकर्यित्वासौमित्रिंयुद्धायरणमूर्द्धनि २१ ॥

और जब इससेनाको तुम विदारणकरके भगाइदेवोगे तभी यहां निकुंभि कलास्थानमें होमकरताहुआ जो मेघनाद सो दिखलाईदेगा अर्थात् होमछोड़ि कै युद्धकरनेको आवैगा इससे जबतक इसकाहोम समाप्तनहोय तबतक स- न्मुखजाके शीघ्रही युद्धका प्रारम्भकरिये १५ और हिंसामें परायण अधर्मिष्ठ जो दुरात्मा इन्द्रजित् तिसको हेवीर शीघ्रहीमारिये इसका तात्पर्य यह है कि होमसमाप्तभये पीछे यह मारने को अशक्य होजायगा अब ये विभीषण के वचनसुनिकै शुभलक्षण जो लक्ष्मणजी १६ सो इन्द्रजित्के ऊपर बाणों की

वृष्टिकरतेहुये और पर्वतोंके शृंगोंकरके अर्थात् शिलाओंकरके औ वृक्षों करके १७ वानर राक्षसोंकी सेनाको चारोंतरफसे मारतेहुये और वे राक्षसभी फरसाओंकरके और बाणों करके और तलवारों करके और लाठियों करके और तोमरोंकरके वानरोंको मारतेहुये १८ और उससमयमें बड़ाघोरशब्द होता हुआ और वहसंग्राम वानर और राक्षस इनका परस्परमिलके होताहुआ १९ अब इन्द्रजित् अपनीसेनाको अत्यन्त पीड़ितदेखके उस निकुम्भिलास्थान और होमको छोड़िकै वहांसे निकलताहुआ २० अब मेघनाद धनुषको लेके और रथकेऊपर चढ़िकै बड़े क्रोधकरके आताहुआ और संग्रामभूमिमें लक्ष्मण को युद्धके अर्थ बुलाकरके यहबोला २१ ॥

सौमित्रेमेघनादोहंमयाजीवन्नमोक्ष्यसे ॥ तत्रदृष्ट्वापितृव्यंसःप्राह निष्ठुरभाषणम् २२ इहैवजातःसंवृद्धःसाक्षाद्भ्रातापितुर्मम ॥ यस्त्वंस्वजनमुत्सृज्यपरभृत्यत्वमागतः २३ कथंद्रुह्यसिपुत्रायपापीयानसिदुर्मतिः ॥ इत्युक्त्वालक्ष्मणंदृष्ट्वाहनूमत्पृष्ठतःस्थितम् २४ उद्यदायुधुनिस्त्रिंशेरथेमहतिसंस्थितः ॥ महाप्रमाणमुद्यम्यघोरंविस्फारयन्धनुः २५ अद्यवोमामकाबाणाःप्राणान्यास्यंतिवानराः ॥ ततःशरंदाशरथिःसंधायामित्रकर्षणः २६ ससर्जराक्षसेंद्रायक्रुद्धःसर्पइवश्वसन् ॥ इन्द्रजिद्रक्तनयनोलक्ष्मणंसमुदैक्षत २७ शक्राशनिसमस्पर्शैर्लक्ष्मणेनाहतःशरैः ॥ मुहूर्त्तमभवन्मूढःपुनःप्रत्याहृतेन्द्रियः २८ ॥

कि हे लक्ष्मण मैं मेघनादहौं मेरे आगे जीवते तुमनहीं छूटसकोगे फिर तहां विभीषणको देखके मेघनाद कठोर वचन बोलताहुआ २२ कि हे विभीषण जोतू राक्षस कुल में उत्पन्नहुआ और यहांहीं वृद्धिको प्राप्तहुआ और साक्षात् मेरे पिताका भाईहोकै जोअपने भाई बन्धुओंको त्यागिकै वैरियोंके दासभावको प्राप्तहुआ इससे तुझको धिक्कारहै २३ और पुत्रजो मैंहौं तिससे कैसे द्रोहकरता है इससे तूबड़ा पापी और दुष्टमतिहै अब मेघनाद ऐसे कठोरवचन विभीषण से कहिकै और हनुमान्की पीठके ऊपर स्थित लक्ष्मणको देखके २४ प्रकाशमानहैं शस्त्र और अनेक खड्ग जिसमें ऐसे बड़ेभारी रथके ऊपर बैठाहुआ बड़ेभारी धनुषको चढ़ाके उसके प्रत्यंचाके शब्दको करता हुआ यहबोला २५ कि हे वानरो आज मेरे बाणतुम्हारे रुधिरको पानकरैंगे अब तिसके उपरान्त शत्रुओंके नाशकरने वाले जोलक्ष्मण सो २६ धनुष में बाणका सन्धानकरके सर्पकी तरहक्रोध करके श्वासछोड़ते हुये इन्द्रजित्के विदारण करनेको बाणों को छोड़ते हुये और इन्द्रजित् जोमेघनाद सोभी लालनेत्र करके लक्ष्मणकी

तरफ देखताहुआ २७ और इन्द्रके वज्रके समानहै स्पर्श जिनका ऐसे जोबाण हैं तिनकरके लक्ष्मण करके ताड़न कियागया दोघड़ीतक तौ मूर्च्छित होगया फिर सचेतहो २८॥

ददर्शावस्थितंवीरंवीरोदशरथात्मजम्॥ सोभिचक्रामसौमित्रिंक्रोधसंरक्तलोचनः २९ शरान्धनुषिसंधायलक्ष्मणंचेदमब्रवीत्॥ यदितेप्रथमेयुद्धेनदृष्टोमेपराक्रमः ३० अद्यत्वांदर्शयिष्यामितिष्ठेदानींव्यवस्थितः॥ इत्युक्त्वासप्तभिर्बाणैरभिविव्याधलक्ष्मणम् ३१ दशभिश्चहनूमंतंतीक्ष्णधारैःशरोत्तमैः॥ ततःशरशतेनैवसंप्रयुक्तेनवीर्यवान् ३२ क्रोधद्विगुणसंरब्धोनिर्बिभेदबिभीषणम्॥ लक्ष्मणोपितथाशत्रुंशरवर्षैरवाकिरत् ३३ तस्यबाणैःसुसंबिद्धंकवचंकांचनप्रभम्॥ व्यशीर्य्यतरथोपस्थेतिलशःपतितंभुवि ३४ ततःशरसहस्रेणसंक्रुद्धोरावणात्मजः॥ विभेदसमरेवीरंलक्ष्मणंभीमविक्रमम् ३५॥

वीर जोमेघनाद सो अपने सामने स्थित लक्ष्मणबीरको देखताहुआ तौ क्रोधसे रक्तहैं नेत्र जिसके ऐसा मेघवाद लक्ष्मणके सन्मुख जाताहुआ २९ और बाणोंको धनुषमें सन्धानकरके लक्ष्मणसे यहबोला कि जोतुमने पहिले संग्राममें मेरा पराक्रम नहीं देखाहै तौअब मैं दिखलाताहौं ३० तुम मेरे आगे संग्राम में खड़ेरहो यहकहिके मेघनाद सातबाणोंकरके लक्ष्मणको ताडन करताहुआ ३१ और पैनीहै धार जिनकी ऐसे दशबाणोंकरके हनुमान्को ताडन करताहुआ तिसके उपरान्त बडा बलवान् जोमेघनादसो सौबाणोंकरके ३२ सब से अधिक दूना क्रोधकर विभीषणको विदारण करताहुआ और लक्ष्मणजीभी क्रोधकरके बैरी जोमेघनाद तिसको बाणोंकी वृष्टिकरके आच्छादित करतेहुये ३३ फिर तिस लक्ष्मणके बाणोंकरके बेधाहुआ जोमेघनादका सुवर्णका वख्तर सो रथकेऊपर तिल तिल खण्डखण्डहो पृथिवीमें गिरपडताहुआ ३४ तिसके उपरान्त क्रोध करताहुआ जो रावणका पुत्र सोहजार बाणोंकरके भयंकरहै पराक्रम जिसकाऐसा जोलक्ष्मणबीर तिसको विदारण करताहुआ ३५॥

व्यशीर्य्यतापतद्दिव्यंकवचंलक्ष्मणस्यच ॥ कृतप्रतिकृतान्योन्यंबभूवतुरभिद्रुतौ३६ अभीक्ष्णंनिश्वसंतौतौयुद्धेतांतुमुलंपुनः॥ शरसंवृतसर्वांगौसर्वतोरुधिरोक्षितौ३७ सुदीर्घकालंतौवीरावन्योन्यंनिशितैश्शरैः॥ अयुध्येतांमहासत्वौजयाजयविवर्जितौ ३८ एतस्मिन्नन्तरे वीरोलक्ष्मणःपंचभिःशरैः॥रावणेस्सारथिंसाश्वंरथंचसमचूर्णयत्३९

चिच्छेदकार्मुकंतस्यदर्शयन्हस्तलाघवम् ॥ सोन्यत्तुकार्मुकंभद्रंसज्यं चक्रेत्वरान्वितः ४० तच्चापमपिचिच्छेदलक्ष्मणस्त्रिभिराशुगैः ॥ त मेवच्छिन्नधन्वानंविव्याधानेकसायकैः ४१ पुनरन्यत्समादायकार्मु कंभीमविक्रमः ॥ इन्द्रजिल्लक्ष्मणंबाणैःशतैरादित्यसन्निभैः ४२ ॥

तब दिव्य जो लक्ष्मणका वख्तर सो टूटकरके पृथिवीमें गिरपड़ताहुआ इसप्रकार मेघनाद जो शस्त्रोंको चलाताहै तिसके बदलेके लक्ष्मण छोड़ते हैं फिर मेघनाद उसके बदलेपै छोड़ताहै ऐसे परस्पर दोनों सन्मुख दौड़ते हुये बराबर युद्धकरतेहुये३६ और वारंवार दोनोंक्रोधकरके श्वासलेतेहुये जो किसी के समुझमें भी न आसके ऐसा आश्चर्य युक्त युद्धकरतेहुये और बाणों करके व्याप्तहोरहेहैं सब अंग जिनके और रुधिरसे डूबरहेहैं ऐसे लक्ष्मण और मेघ- नाद दोनों होतेहुये ३७ अब बड़े पराक्रमयुक्त और जय और पराजय रहित दोनों वीर बहुतकाल तक बड़े बड़े पैने बाणोंकरिकै परस्पर युद्धकरतेहुये ३८ उसी समयमें लक्ष्मण वीर पांच बाणोंकरिकै मेघनादके सारथीको और घोड़ों और रथको चूर्ण चूर्ण करतेहुये ३९ और अपने हस्तकी लघुताको अर्थात् शी- घ्रताको दिखाते हुये लक्ष्मणजी उस मेघनादके धनुषको भी काटतेहुये फिर वह मेघनाद शीघ्रही और धनुषको ग्रहण करिकै चढ़ालेताहुआ ४० फिर उस धनुषको भी लक्ष्मण तीन बाण करिकै काटडालतेहुये फिर कटिगयाहै धनुष जिसका ऐसे मेघनादको लक्ष्मण बहुत बाणोंकरिकै बेधनकरतेहुये ४१ फिर बड़ा भयंकरहै पराक्रम जिसका ऐसा जो इन्द्रजित् सो और धनुषलैकै सूर्यके तुल्यहैप्रकाशजिनकाऐसेपैने२ बाणोंकरिकैलक्ष्मणकोविदारणकरताहुआ४२॥

बिभेदवानरान्सर्वान्बाणैरापूरयन्दिशः ॥ ततऐन्द्रंसमादायल क्ष्मणोरावणिंप्रति ४३ संधायाकृष्यकर्णांतंकार्मुकंदृढनिष्ठुरम् ॥ उवा चलक्ष्मणोवीरःस्मरन्रामपदांबुजम् ४४ धर्मात्मासत्यसन्धश्चरामो दाशरथिर्यदि ॥ त्रिलोक्यामप्रतिद्वंद्वस्तदेनंजहिरावणिम् ४५ इत्यु क्त्वाबाणमाकर्णाद्विकृष्यतमजिह्मगम् ॥ लक्ष्मणःसमरेवीरःससर्जेन्द्र जितंप्रति ४६ सशरःसशिरस्त्राणंश्रीमज्ज्वलितकुण्डलम् ॥ प्रमथ्ये न्द्रजितःकायात्पातयामासभूतले ४७ ततःप्रमुदितादेवाःकीर्त्तयन्तो रघूत्तमम् ॥ववर्षुःपुष्पवर्षाणिस्तुवंतश्चमुहुर्मुहुः ४८ जहर्षशक्रोभग वान्सहदेवैर्महर्षिभिः॥आकाशेपिचदेवानांशुश्रुवेदुन्दुभिःस्वनः ४९

और बाणोंकरिकै दिशाओंको पूर्ण करताहुआ सब वानरोंको ताड़न कर

ताहुआ तिसके उपरान्त लक्ष्मणजी ऐन्द्र अस्त्र करिकै अभिमन्त्रित बाणको मेघनादके बधकरनेको ग्रहण करिकै ४३ और उसबाणको धनुषमें संधान करिकै और बड़ा कठोर जो धनुष तिसको दृढ़ जैसेहोय तैसे कर्णपर्यन्त खैंचिकै श्रीरामचन्द्रके चरणारविन्दको स्मरण करतेहुये यह बोले कि ४४ दशरथके पुत्र श्रीरामचन्द्रजी जो धर्मात्माहोयँ और सत्यहै मर्यादा जिनकी ऐसे होयं और तीनोंलोकमें जिनके समान कोई योद्धा नहीं है जो कदाचित् ऐसे होवैं तौ हे बाण तू इसरावणके पुत्रको नाशकरु ४५ यहवचन लक्ष्मणजी कहिकै और उस बाणको कर्णपर्यंत खैंचिकै समरमें इन्द्रजित्के ऊपर छोड़ते हुये ४६ तब वह बाण इन्द्रजित्के शिरके मुकुट करिकै सहित और देदीप्यमान है कुण्डल जिसमें ऐसा जो शिर तिसको काटिकै धड़सेपृथक् पृथिवीमें डारि देताहुआ ४७ अब तिसके उपरांत बड़े हर्षयुक्त देवता श्रीरामचन्द्रके गुणों का कीर्त्तन करतेहुये लक्ष्मणजीके ऊपर पुष्पोंकी वृष्टि करतेहुये और बारम्बार स्तुतिकरतेहुये ४८ और देवताओं करिकै और ऋषियों करिकै सहित इन्द्र जो भगवानहैं सो आनन्दको प्राप्तहोतेहुये और आकाशमें देवताओंके नगाड़ों का शब्द सुनाई देताहुआ ४९ ॥

विमलंगगनंचासीत्स्थिराभूद्दिइवधारिणी ॥ निहतंरावणिंदृष्ट्वाजयजल्पसमन्वितः ५० गतश्रमःससौमित्रिःशंखमापूरयद्रणे ॥ सिंहनादंततःकृत्वाज्याशब्दमकरोद्विभुः ५१ तेननादेनसंहृष्टावानराश्चगतश्रमाः ॥ वानरेन्द्रैश्चसहितःस्तुवद्भिर्हृष्टमानसैः ५२ लक्ष्मणःपरितुष्टात्मादद्दर्शाभ्येत्यराघवम् ॥ हनूमद्राक्षसाभ्यांचसहितोविनयान्वितः ५३ ववंदेभ्रातरंरामंज्येष्ठंनारायणंविभुम् ॥ त्वत्प्रसादाद्रघुश्रेष्ठहतोरावणिराहवे ५४ श्रुत्वातल्लक्ष्मणाद्भक्त्यातमालिंग्यरघूत्तमः ॥ मूर्ध्न्यवघ्रायमुदितःसस्नेहमिदमब्रवीत् ५५ साधुलक्ष्मणतुष्टोस्मिकर्मैतद्दुष्करंकृतम् ॥ मेघनादस्यनिधनेजितंसर्वमरिंदम ५६ ॥

और उससमयमें निर्मल आकाश होताहुआ और पृथ्वी स्थिर होती हुई और मरेहुये मेघनादको देखिकै जय शब्दयुक्त ५० और श्रमरहित जो लक्ष्मण सो संग्राममें शंखको बजातेहुये फिर लक्ष्मणजी सिंहवत् गर्जके धनुष के प्रत्यंचाके शब्दको करतेहुये ५१ तिस शब्दकरके वानर प्रसन्नहुये और श्रम रहित होतेहुये फिर आनन्दयुक्तहै मन जिनको और स्तुति करतेहुये ऐसे जे श्रेष्ठ वानर तिन करके युक्त ५२ और प्रसन्नहै चित्त जिनका और हनुमान् विभीषणकरके सहित ऐसे जो लक्ष्मण सो नम्रहो ५३ रामके सन्मुखआके

और रामको देखके साक्षात् नारायण ज्येष्ठभ्राता जो राम तिनकोप्रणामकर तेहुये और यह कहतेहुये कि हेराम तुम्हारेप्रसादते संग्राम में रावणका पुत्र मेघनाद मारागया ५४ तब श्रीराम लक्ष्मणके मुखसे यहवचन सुनिकै प्रीति करिकै लक्ष्मणको हृदयसे आलिंगनकरके और शिरमेंसूंघकर आनन्दयुक्तहो स्नेहपूर्वक यह कहतेहुये ५५ कि हेलक्ष्मण मैं तुम्हारेऊपर बड़ाप्रसन्नहौं और तुमने बड़ा दुष्करकर्म किया और हेशत्रुकेनाशकरनेवाले मेघनाद के मारने से तुमने सबराक्षसोंके कुलको जीतलिया ५६ ॥

अहोरात्रैस्त्रिभिर्वीरःकथंचिद्विनिपातितः ॥ निःसपत्नःकृतोस्म्य द्यनिर्यास्यतिहिरावणः ५७ पुत्रशोकान्मयायोद्धुंतंहनिष्यामिरावण म् ॥ मेघनादंहतंश्रुत्वालक्ष्मणेनमहाबलम् ५८ रावणःपतितोभूमौ मूर्च्छितःपुनरुत्थितः ॥ विललापातिदीनात्मापुत्रशोकेनरावणः ५९ पुत्रस्यगुणकर्माणिसंस्मरन्पर्यदेवयत् ॥ अद्यदेवगणाःसर्वेलोकपा लामहर्षयः ६० हतमिंद्रजितंज्ञात्वासुखंस्वप्स्यंतिनिर्भयाः ॥ इत्या दिबहुशःपुत्रलालसोविललापह ६१ ततःपरमसंक्रुद्धोरावणोराक्षसा धिपः ॥ उवाचराक्षसान्सर्वान्विनाशायरिपुराहवे ६२ सपुत्रवधसंतप्तः शूरःक्रोधवशंगतः ॥ संवीक्ष्यरावणोबुद्ध्याहंतुंसीतांप्रदुद्रुवे ६३ ॥

और तीनदिन रात्रोंकर कैसे भी मारपाया और हे लक्ष्मण इससमय में तुमने मुझको शत्रुरहित करदिया और अबपुत्रशोक करके व्याकुल रावण शी- घ्रही निकलैगा ५७ मेरे संग युद्धकरनेको तोमैं उसको मारौंगा अबमहादेव कहतेहैं हे पार्वति तिसके उपरान्त रावण लक्ष्मण करके महाबली मेघनाद को माराहुआ सुनके५८मूर्च्छितहो पृथिवीमें गिरपड़ताहुआ औरफिर उठि करके पुत्रशोककरके दीनजोरावणसो विलापकरताहुआ५९पुत्रकेजेगुण औरकर्म ति- नको यादिकरके विलापकरता रावण यहकहताहुआ कि आजु सब देवता और लोकपाल और महर्षि ६० अर्थात् बड़ेबड़े ऋषिलोग येसब मरेहुये इन्द्रजित् कोसुनके निर्भय होके सुखपूर्वक सोवैंगे इसप्रकार पुत्रकी लालसा करके युक्त रावण बहुत विलाप करताहुआ ६१ तिसके उपरान्त परमक्रोध युक्त जोरा- वणसो शत्रुओंके नाशकरनेकी इच्छा करके सबराक्षसों से बोला कि हेराक्षसो तुमसब युद्धकरनेको जावो ६२ फिर पुत्रके वधकरके संतप्तक्रोधके वशीभूत हुआ जोबड़ाशूररावणसोबुद्धिसेविचारकरकेसीताकेमारनेकोदौड़ताहुआ ६३ ॥

खड्गपाणिमथायांतंक्रुद्धंदृष्ट्वादशाननम् ॥ राक्षसीमध्यगासीता भयशोकाकुलाभवत् ६४ एतस्मिन्नन्तरेतस्यसचिवोबुद्धिमान्शुचिः ॥

सुपार्श्वोनाममेधावीरावणंवाक्यमब्रवीत् ६५ ननुनामदशग्रीवसाक्षाद्वैश्रवणानुजः ॥ वेदविद्याव्रतस्नातःस्वकर्मपरिनिष्ठितः ६६ अनेकगुणसंपन्नःकथंस्त्रीबधमिच्छसि ॥ अस्माभिःसहितोयुद्धेहत्वारामंच लक्ष्मणम् ॥ प्राप्स्यसेजानकींशीघ्रमित्युक्तःसन्यवर्त्तत ६७ ततोदुरात्मासुहृदानिवेदितंवचःसुधर्म्यंपरिगृह्यरावणः ॥ गृहंजगामाशुशुचाविमूढधीःपुनःसभांचप्रययौसुहृद्वृतः ६८ ॥

इत्यध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डेनवमःसर्गः ९॥

अब राक्षसियोंके मध्यमें स्थित जो सीतासो खड्गको हाथ में लिये क्रोध युक्तरावणको आवतेदेखके भय और शोक इनकरके व्याकुल होती हुई ६४ उसी समयमें बड़ा बुद्धिमान् और पवित्र एकसुपार्श्वनाम मन्त्री रावणसे वचन बोलताहुआ कि ६५ हे दशग्रीव तुम प्रसिद्ध साक्षात् कुबेरके छोटे भाई होके और आपभी वेदविद्या और व्रत इनमें कुशल और अपने धर्ममें स्थित ६६ और अनेक गुणोंकरके युक्तहो कैसे स्त्री वधकी इच्छा करतेहो इससे हम सबराक्षसों करके युक्त युद्धमें राम और लक्ष्मण इनको मारिकै शीघ्रही सीताको प्राप्तहोउगे ऐसा जब सुपार्श्वने समुझाया तौ रावण सीताके बधसे निवृत्त होता हुआ ६७ अब दुरात्मा जोरावण सो मित्रके कहेहुये जोधर्म युक्त बचन तिनको ग्रहणकरके शीघ्रही अपने गृहको जाताहुआ और मूढ़है बुद्धि जिस की ऐसा जो रावण सो फिर अपने मन्त्री आदि मित्र गणों करके वेष्टित सभा में प्रवेश करता हुआ ६८ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डे भाषाटीकायांनवमस्सर्गः ९ ॥

सविचार्य्यसभामध्येराक्षसैःसहमंत्रिभिः ॥ निर्ययौयेवशिष्टास्तैराक्षसैःसहराघवम् १ शलभःशलभैर्युक्तःप्रज्वलंतमिवानलम् ॥ ततोरामेणनिहताःसर्वेतेराक्षसायुधि २ स्वयंरामेणनिहतस्तीक्ष्णबाणेन वक्षसि ॥ व्यथितस्त्वरितंलंकांप्रविवेशदशाननः ३ दृष्ट्वारामस्य बहुशःपौरुषंचाप्यमानुषम् ॥ रावणोमारुतेश्चैवशीघ्रंशुक्रांतिकंययौ ४ नमस्कृत्यदशग्रीवःशुक्रंप्रांजलिरब्रवीत् ॥ भगवन्राघवेणैवंलंकां राक्षसयूथपैः ५ विनाशितामहादैत्यान्निहताःपुत्रबांधवाः॥ कथंमेदुःखसंदोहस्त्वयितिष्ठतिसद्गुरौ ६ इतिविज्ञापितोदैत्यगुरुःप्राहदशाननम्॥ होमंकुरुप्रयत्नेनरहसित्वंदशानन ७ ॥

दशमसर्ग दशकण्ठरिपु दहन शुक्रमत लीन्ह ॥
इहांविभीषणभालुकपि भेजिविघ्नबहुकीन्ह १

अब महादेवजी पार्वतीसे कथा वर्णनकरेहैं कि हेपार्वति अब रावण सभा के मध्यमें राक्षस और मन्त्रियोंके साथ विचारकरके जेराक्षस बाकीरहेथे तिन करके सहित रामसे युद्धकरनेको जाताहुआ १ कैसे जैसे पतंगा और पतंगाओं करके सहित जलतीहुई अग्निमें प्रवेशकरै तब रामने संग्राममें वे सबराक्षस मारडाले २ और रामने छातीमें बाणकरके जबघायलकिया तौ आप रावण भी बड़ीव्यथाको प्राप्तहो लंकाहीमें प्रवेशकरताहुआ ३ अब रावण बहुतसा रामका पराक्रम अमानुष अर्थात् जो मनुष्योंसे न होसके ऐसादेखके और हनुमानका भी ऐसाही पराक्रमदेखके शीघ्रही शुक्राचार्यके समीप जाताहुआ ४ अब रावण शुक्राचार्यको नमस्कारकरके हाथजोड़के बोलताहुआ कि हे भगवन् राक्षसों करके सहित सबलंका रामने नाशकरदी ५ और बड़े बड़े दैत्य मारेगये और मेरे पुत्र पौत्र और सब बांधव मारेगये सो आप जो सद्गुरुहैं तिनकेबैठे ऐसा मुझको दुःख समूह कैसे होय ६ ऐसा जब अपना अभिप्राय रावण ने जनाया तौ शुक्राचार्य रावणसे कहतेहुये कि हे रावण तुम यत्न कर एकान्त में हवन करौ ७ ॥

यदिविघ्नोनचेद्धोमेतर्हिहोमानलोत्थितः ८ महान्रथश्चवाहाश्चचापतूणीरशायकाः ॥ संभविष्यंतितैर्युक्तस्त्वमजेयोभविष्यसि ९ गृहाणमंत्रान्मद्दत्तान्गच्छहोमंकुरुद्रुतम् ॥ इत्युक्तस्त्वरितंगत्वारावणोराक्षसाधिपः १० गुहांपातालसदृशींमंदिरेस्वेचकारह ॥ लंकाद्वारकपाटादिबध्वासर्वत्रयत्नतः ११ होमद्रव्याणिसंपाद्ययान्युक्तान्याभिचारिके ॥ गुहांप्रविश्यचैकांतेमौनीहोमंप्रचक्रमे १२ उत्थितंधूममालोक्यमहान्तरावणानुजः ॥ रामायदर्शयामासहोमधूमंभयाकुलः १३ पश्यरामदशग्रीवोहोमंकर्तुंसमारभत् ॥ यदिहोमःसमाप्तःस्यात्तदाजेयोभविष्यति १४ ॥

जो कदाचित् होममें विघ्न न होवेगा तो होमकी अग्निसे एकरथ निकलेगा ८ और घोड़े और तरकस और बाण जे उत्पन्न होवेंगे तिनकरकेयुक्त तुम फिर शत्रुओंसे अजय होजावगे अर्थात् शत्रु कोई नहीं जीतसकेगा ९ और मेरे दिये हुये मन्त्रों को तुम ग्रहण करौ और शीघ्रही जाके होमकरो ऐसा जब शुक्राचार्यजीने कहा तौ रावण शीघ्रहीजाकर१० अपने मन्दिरमें एक बड़ी गहिरी गुहा बनावताहुआ और बड़े यत्नसे लंकाके द्वारोंके फाटक सब बन्द करवादि-

ये११और मारणकर्ममें जौनसी होमकी सामग्री कही हैं तिन सबोंको संपादन करके अर्थात् इकट्ठीकरके और आप उस एकांत देशमें गुहामें प्रवेशकर मौनहोके होमका प्रारम्भ करताहुआ १२ तब बिभीषण उस गुहासे उठा जो बड़ाभारी धूम तिसको देखके भयसे व्याकुलहो रामको दिखाताहुआ १३ और यह कहता हुआ कि हेराम यहरावण होमकरनेको प्रारम्भकरताहुआहै तिसको देखिये जो कदाचित् यह होम समाप्तहोगया तौ रावण जीतनेके योग्य नहीं रहैगा १४ ॥

अतोविघ्नायहोमस्यप्रेषयाशुहरश्वरान् ॥ तथेतिरामःसुग्रीवसंमतेनांगदंकपिम् १५ हनूमत्प्रमुखान्वीरान्आदिदेशमहाबलान् ॥ प्रकारंलंघयित्वातेगत्वारावणमंदिरम् १६ दशकोट्यःप्लवंगानांगत्वा मंदिररक्षकान् ॥ चूर्णयामासुरश्वांश्चगजांश्चन्यहनन्क्षणात् १७ ततश्चसरमानामप्रभातेहस्तसंज्ञया ॥ विभीषणस्यभार्यासाहोमस्थानमसूचयत् १८ गुहापिधानपाषाणमंगदःपादघट्टनैः ॥ चूर्णयित्वामहासत्वःप्रविवेशमहागुहाम् १९ दृष्ट्वादशाननंतत्रमीलिताक्षंदृढासनम् ॥ ततोऽगदाज्ञयासर्वेवानराविविशुर्द्रुतम् २० तत्रकोलाहलंचक्रुस्ताडयंतश्चसेवकान् ॥ संभारांश्चिक्षिपुस्तत्रहोमकुंडेसमंततः २१ ॥

इससे इसके होमके विघ्न के लिये वानरों को भेजिये तब राम तैसेही बिभीषणका वचन मानिकै सुग्रीव की सलाह से अंगदको १५ और हनुमान् को आदि लेके बड़े २ बलवान् बीर वानरोंको आज्ञा देतेहुये तौ वे सब दश करोर बानर लंकाकी दीवालको नांधिकै १६ रावणके मन्दिरकी रक्षा करने वाले जे राक्षसथे तिनको और घोड़ोंको और हाथियोंको मारके चूर्ण २ एक क्षणमात्र मेंही करडालते हुये १७ फिर तिसके उपरान्त सरमानाम करके जो बिभीषणकी स्त्रीथी सो प्रातःकालके समयमेंही हाथके इशारेसे रावण के होमके स्थानको बतला देतीहुई १८ फिर महाबली जोअंगदसो उसगुहा के मूंदनेकी शिलाको अपनी लातों करके चूर्ण २ करके गुहा में प्रवेश करता हुआ १९ फिर अंगदकी आज्ञासे और भी सबवानर प्रवेश करतेहुये फिर आंखोंको मूंदेहुये और दृढआसनपै बैठेहुये रावणको देखके २० सब वानरबड़ा भारी कोलाहल शब्दकरतेहुये और रावणके सेवकोंको मारनेलगे और होम की सामग्रियोंको चारोंतरफसे कुण्ड में डारनेलगे २१ ॥

स्रुवमाच्छिद्यहस्ताच्चरावणस्यबलाद्रुषा ॥ तेनैवसंजघानाशुहनुमान्प्लवगाग्रणीः २२ घ्नन्तिदंतैश्चकाष्ठैश्चवानरास्तमितस्ततः ॥

नजहौरावणोध्यानंहतोपिविजिगीषया २३ प्रविश्यांतःपुरेवेश्मन्यंग दोवेगवत्तरः ॥ समानयत्केशबंधेधृत्वामंदोदरींशुभाम् २४ रावणस्यै वपुरतोविलपंतीमनाथवत् ॥ विददारांगदस्तस्याःकञ्चुकंरत्नभूषि तम् २५ मुक्ताविमुक्ताःपतिताःससंताद्रत्नसंचयैः ॥ श्रोणिसूत्रंनिपाति तंत्रुटितंरत्नचित्रितम् २६ कटिप्रदेशाद्विस्रस्तानीवीतस्यैवपश्यतः॥ भूषणानिचसर्वाणिपतितानिसमंततः २७ देवगन्धर्वकन्याश्चनीताहृ ष्टैःप्लवंगमैः ॥ मन्दोदरीरुरोदाथरावणस्याग्रतोभृशम् २८ ॥

अब वानरोंमें श्रेष्ठ जोहनूमान्सो रावणके हाथसेस्रुवाको छीनके उसी स्रुवा करके रावणको ताड़न कर्त्ताहुआ २२ अववानर इधर उधरसे दांतोंकरके और ल कड़ियों करके रावणको ताड़न भी करतेहुयेहैं तौभी विजयकी इच्छाकरके ताड़न कियाहुआ भी रावण ध्यानको नहीं छोड़ताहुआ २३तबतो बड़ेवेगकरके युक्त अंगद रावणके रनिवास में जाके रावणकी रानी जो मन्दोदरी तिसको जूरा पकरके घसीटता हुआ रावणके आगेलेआके २४ फिर अनाथकी नाईं विलाप कररही जोमन्दोदरी तिसकीरत्नोंकरके जटित अर्थात्जड़ाऊ जोजरीकेकामकी चोली तिसको अपने नखोंसे फाड़डालता हुआ २५ फिर उस मन्दोदरीकी चोलीसे रत्नों के समूहकरके सहित अनेक मोती गिरतेहुये फिर उसकी कमर में जो रत्नोंसे जड़ीहुई तागड़ीथी सोभी अंगदके हाथसोंटूटी हुई पृथिवी में पड़तीहुई २६ फिर उसकी कमर में जो लहँगा बंधाथाउसके नालेकी गांठी ऐंचा खैंची में खुलगई तौ वहभी रावण केदेखते देखते गिरगया ऐसेही मन्दो-दरीके अंगसे आभूषण टूटि टूटिकै पृथ्वीमें चारोंतरफस गिरतेहुये २७ फिर उसी समयमें जे देवतोंकी कन्या और गन्धर्वोंकी कन्यारावणकी स्त्री होगई थीं तिनको भी वानरोंने पकड़ि पकड़िकै रावणके सामनेलाके वोही दशाकी जोअंगदने मन्दोदरीकीकी अब मन्दोदरी रावणकेआगेअत्यन्त रोवतीहुई २८॥

क्रोशंतीकरुणंदीनाजगाददशकन्धरम् ॥ निर्लज्जोसिपरैरेवंके शपाशेविकृष्यते २९ भार्यातवैवपुरतःकिंजुहोषिनलज्जसे ॥ हन्यंते पश्यतोयस्यभार्यापापैश्चशत्रुभिः ३० मर्तव्यंतेनतत्रैवजीवतान्मर णंवरम् ॥ हामेघनादतेमाताक्लिश्यतेवतवानरैः ३१ त्वयिजीवतिमे दुःखमीदृशंचकथंभवेत् ॥ भार्यालज्जाचसंत्यक्ताभर्त्रामेजीविताशया ३२ श्रुत्वातद्देवितंराजामंदोदर्यादशाननः ॥ उत्तस्थौखड्गमादाय त्यजदेवीमितिब्रुवन् ३३ जघानांगदमव्यग्रंकटिदेशेदशाननः ॥ त

तोत्सृज्यययुःसर्वेविध्वंस्यहवनंमहत् ३४ रामपार्श्वमुपागम्यतस्थुः सर्वेप्रहर्षिताः ॥ रावणस्तुततोभार्यामुवाचपरिसांत्वयन् ३५ ॥

और दया जैसे होइ ऐसे दीनहोके दीर्घस्वरकरके रोदनकरती मन्दोदरी रावणसे बोलतीहुई कि हेदशकन्धर तू बड़ानिर्लज्ज है क्योंकि जिससे तेरी स्त्री तेरेई आगे बैरियोंकर केशपकड़िकै खैंचीजाय २९ अर्थात् कढ़ेलीजावै और तू होमकरतारहै और लज्जाको न प्राप्तहोय और जिसकिसी पुरुषके देखते देखते जिसकीस्त्री पापी जो शत्रुहैं तिन्होंकरके ताड़नकरीजाय ३० तो उस पुरुषको मरजानाचाहिये क्योंकि ऐसेजीवनसे मरणही श्रेष्ठहै अब मन्दोदरी मेघनादकी यादिकर बिलापकरके कहती है कि हामेघनाद बड़ेखेदकी बार्त्ता है जो तेरीमाता वानरोंकरके ऐसे क्लेशको प्राप्तहोइ ३१ और तेरेजीवते मुझको ऐसादुःख कभी न होता और मेरेपतिने तो अपनेजीवनकी आशाकरके भार्या और लज्जा दोनों त्यागदी ३२ अब रावणजो है राजा सो यह मन्दोदरी के बिलापको सुनिकै देवीजो मन्दोदरी तिसकोछोड़दे ऐसा अंगदसे कहताहुआ और खड्गलेके उठताहुआ ३३ फिर सावधानहोके रावण अङ्गदको कमरमें खड्गकरके ताड़नकरताहुआ तिसकेउपरान्त सबवानर रावणकी स्त्रियों को त्यागकरके और रावणके होमकोनाशकरके चलेजातेहुये ३४ फिर राम के समीप प्राप्तहो सबवानर आनन्दयुक्त स्थितहोतेहुये और रावणतो मन्दोदरी जो भार्या तिसके चित्तको सावधान करताहुआ बोला ३५ ॥

दैवाधीनमिदम्भद्रेजीवताकिन्नदृश्यते ॥ त्यजशोकंविशालाक्षि ज्ञानमालंब्यनिश्चितम् ३६ अज्ञानप्रभवःशोकःशोकोज्ञानविनाश कृत् ॥ अज्ञानप्रभवाहंधीःशरीरादिष्वनात्मसु ३७ तन्मूलःपुत्रदारा दिसम्बन्धःसंसृतिस्ततः॥हर्षशोकभयक्रोधलोभमोहस्पृहादयः ३८ अज्ञानप्रभवाह्येतेजन्ममृत्युजरादयः ॥ आत्मातुकेवलःशुद्धोव्यति रिक्तोह्यलेपकः ३९ आनंदरूपोज्ञानात्मासर्वभावविवर्जितः ॥ नसं योगोवियोगोवाविद्यतेकेनचित्सतः ४० एवंज्ञात्वास्वमात्मानंत्यज शोकमनिन्दिते ॥ इदानीमेवगच्छामिहत्वारामंसलक्ष्मणम् ४१ आ गमिष्यामिनोचेन्मांदारयिष्यतिशायकैः ॥ श्रीरामोवज्रकल्पैश्चततो गच्छामितत्पदम् ४२ ॥

कि हेभद्रे कल्याणरूपे यह सब जगत् दैवाधीनहै इससे जीवते पुरुषकरके क्यानहीं दिखाईपड़ताहै अर्थात् जबतक प्राणी जीवताहै तबतक प्रारब्धवश

ते सुख दुःख सबोंदेखताहै इससे हेविशालनेत्रे जोकुछ होनहार है उसको उल्लंघन कोईनहीं करसक्ताहै यहजानिकै शोकको त्यागिदे ३६ और यहशोक आत्मा और अनात्मपदार्थके अविवेकसे उत्पन्नहोताहै और ज्ञानका नाशकरनेवाला है और शरीरादिक जे अनात्मपदार्थ हैं तिनमें अज्ञानसेही अहंबुद्धि उत्पन्नहोतीहै ३७ अर्थात् यह ब्राह्मणादिरूप मैंहों और ये मेरे हैं ऐसी बुद्धि उत्पन्नहोतीहै और यही अहंबुद्धिहै कारण जिसमें ऐसा पुत्र दारादि सम्बन्ध होता है और तिससे फिर संसारहेतु बन्धककर्मोंकी उत्पत्तिहोती है और तिन कर्मोंसे फिर हर्ष शोक भय क्रोध लोभ मोह स्पृहादिक होतेहैं ३८ इसीप्रकार जन्म मृत्यु जरादिकभी सब अज्ञानसेही उत्पन्नहोते हैं और आत्माका तो वास्तवमें किसीसे संबन्ध नहींहै क्योंकि आत्मातो केवल शुद्धहै और सबसे व्यतिरिक्तहै और न्याराहै और निर्लेपहै ३९ और आनन्दरूप है और ज्ञान स्वरूपहै और सुख दुःखादिभावोंकरके रहितहै और सद्रूप आत्माका न किसी से संयोगहै न वियोगहै ४० अर्थात् बुद्धिही मुख्यताकरके हर्ष शोकादिमें कारणहै इससे हेअनिन्दिते मन्दोदरि इसप्रकार अपनेआत्माको जानके शोकको त्यागदे और मैं अभी लक्ष्मण सहित रामको मारिकै आवताहों ४१ अथवा रामही अपने वज्रतुल्य जे बाणहैं तिन्होंकरके मुझको बिदारण करैगा तोभी मैं रामके पदको प्राप्तहोऊंगा ४२ ॥

तदात्वयामेकर्त्तव्याक्रियामच्छासनात्प्रिये ॥ सीतांहत्वामयासार्द्धंत्वंप्रवेक्ष्यसिपावकम् ४३ एवंश्रुत्वावचस्तस्यरावणस्यातिदुःखिता ॥ उवाचनाथमेवाक्यंशृणुसत्यंतथाकुरु ४४ शक्योनराघवोजेतुंत्वयाचान्यैःकदाचन ॥ रामोदेववरःसाक्षात्प्रधानपुरुषेश्वरः ४५ मत्स्योभूत्वापुराकल्पेमनुंवैवस्वतंप्रभुः ॥ ररक्षसकलापद्भ्योराघवोभक्तवत्सलः ४६ रामःकूर्मोभवत्पूर्वंलक्षयोजनाविस्तृतः ॥ समुद्रमथनेपृष्ठेदधारकनकाचलम् ४७ हिरण्याक्षोतिदुर्वृत्तोहतोनेनमहात्मना ॥ क्रोडरूपेणवपुषाक्षोणीमुद्धरताक्वचित् ४८ त्रिलोककंटकंदैत्यंहिरण्यकशिपुंपुरा ॥ हतवान्नारसिंहेनवपुषारघुनन्दनः ४९ ॥

और हेप्रिये जब मैं रामके बाणों करके मारा जाउँ तो मेरी पारलौकिक क्रिया मेरी आज्ञासे तुझको करना योग्य है और सीताको मारके तू मेरेसंग अग्निमें प्रवेश करजाना ४३ अब इसप्रकार रावणके वचनसुनिकै अतिदुःखित जो मन्दोदरी सो रावणसेबोली कि हेनाथ मेरेसत्यवचनसुनो और फिर तैसे हीकरो ४४ तुमकरिके वा औरोंकरिकै रामजीतने को शक्यनहीं हैं क्योंकि

राम साक्षात् प्रकृतपुरुषका ईश्वर नारायणहैं ४५ और यही राम पहिलेकल्प में मत्स्यरूप धारणकर वैवस्वतमनुको सबआपत्तियोंसे रक्षाकरताहुआ क्यों कि भक्तलोग उसको प्रियहैं इसकारणसे ४६ और यहीराम पहिले समुद्रके मथनसमय में लक्षयोजनकाहै विस्तार जिसका ऐसा कच्छपरूप होताहुआ और उस कच्छपरूप करिकै मन्दराचलको पीठिपै धारण करताहुआ ४७ और बाराहरूप करिकै पृथिवीका उद्धारण करताहुआ जो यह महात्मा राम तिसने अतिदुर्वृत्त अतिदुराचार जो हिरण्याक्ष दैत्य तिसको मारा ४८ और यही श्रीराम पहिले नरसिंहरूपकरिकै तीनोंलोकोंका कंटक जो हिरण्यकाशिपुदैत्य तिसको मारतेहुये ४९ ॥

विक्रमैस्त्रिभिरेवासौबलिंबध्वाजगत्त्रयम् ॥ आक्रम्यादात्सुरेन्द्रायभृत्यायरघुसत्तमः ५० राक्षसाःक्षत्रियाकाराजाताभूमेर्भरावहाः। तान्हत्वाबहुशोरामोभुवंजित्वाह्यदान्मुनेः ५१ सएवसांप्रतंजातोरघुवंशेपरात्परः ॥ भवदर्थेरघुश्रेष्ठोमानुषत्वमुपागतः ५२ तस्यभार्याकिमर्थंवाहृतासीतावनाद्बलात् ॥ ममपुत्रविनाशार्थंस्वस्यापिनिधनायच५३ इतःपरंवावैदेहींप्रेषयस्वरघूत्तमे ॥ विभीषणायराज्यंतुदत्वागच्छामहेवनम् ५४ मंदोदरीवचःश्रुत्वारावणोवाक्यमब्रवीत् ॥ कथंभद्रेरणेपुत्रान्भ्रातॄन्राक्षसमण्डलम् ५५ घातयित्वाराघवेणजीवामिवनगोचरः ॥ रामेणसहयोत्स्यामिरामबाणैःसुशीघ्रगैः५६ ॥

और यही राम बामनरूप धारण करिकै तीन पद अर्थात् तीन पैग करिकै तीनोंलोकको नापिकै और राजाबलि को बांधिकै तीनिहू लोकों को अपना सेवक जो इन्द्र तिनके अर्थ देतहुये ५० और यही रामपरशुराम रूप धारण करके क्षत्रियोंके रूप में उत्पन्न हुये जे बहुतसे पृथिवी के भारभूत राक्षस तिनको इक्कीस बार संहार करके कश्यपमुनि को पृथिवी को देते हुये ५१ और सोई परसेपरे श्री राम तुम्हारे कारण से रघुबंश में इससमय में मनुष्य भावको प्राप्त हुआहै ५२ तिस रामकी भार्या जो सीता सो किसवास्ते बनसे जबरदस्ती तुमने हरी और विदितहुआ कि मेरेपुत्रके नाशके अर्थ और अपनी मृत्युके अर्थ सीताको हरलायेहौ ५३ और अबभी सीताको राम के समीप भेजिदेवो और बिभीषणके अर्थ राज्यकोदेके हम तुम दोनोंवनको चलैं ५४ तौ यह मन्दोदरी के वचन सुनिकै रावण बोला हे कल्याण रूपे संग्राम में पुत्रोंको और भाइयोंको और सब राक्षसोंको ५५ रामसे मरवाके कैसेमैंवन

में जाके अपना जीवन करों इससे रामके संगयुद्धहीकरोंगा फिरशीघ्रचलने वाले जो रामकेबाण तिन्होंकरके ५६ ॥

विदार्य्यमाणोयास्यामितद्विष्णोःपरमंपदम् ॥ जानामिराघवंविष्णुं लक्ष्मींजानामिजानकीम् ॥ ज्ञात्वैवजानकीसीतामयानीतावनाद्बलात् ५७ रामेणनिधनंप्राप्ययास्यामीतिपरम्पदम् ॥ विमुच्यत्वांतु संसारात्गमिष्यामिसहप्रिये ५८ परानंदमयींशुद्धासेव्यतेयामुमुक्षुभिः ॥ तांगतिंतुगमिष्यामिहतोरामेणसंयुगे ५९ प्रक्षाल्यकल्मषाणीह मुक्तिंयास्यामिदुर्लभाम् ६० क्लेशादिपंचकतरंगयुगंभ्रमाढ्यं दारात्मजाप्तधनबंधुझषाभियुक्तम् ॥ औवीनलाभनिजरोषमनंगजालंसंसारसागरमतीत्यहरिंव्रजामि ६१ ॥

इतिमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डेदशमःसर्गः १० ।

विदीर्ण हुआ विष्णुका जो परमपद है तिसको प्राप्त होऊंगा और रामको में विष्णु जानता हौं और सीताको साक्षात् लक्ष्मी जानताहौं और जानही करके जनक नन्दिनी जो सीताहै सो मैंने बनसे बलते यहां प्राप्तकी ५७ और हे प्रिये रामके हाथसे मृत्यु को प्राप्तहोके तुझको और सब संसार को त्यागि के मरे हुये जे अपने बंधुहैं तिन्होंकरके सहित परमपदको जाऊंगा ५८ और परमानन्दमयी जो वैकुण्ठरूप शुद्धगति मुमुक्षुओं करके प्रार्थनाकरी जाती है तिस गतिको में रामकरके संग्राममें बधको प्राप्तहोके प्राप्तहोऊंगा५९और इस राक्षसशरीरकरके करेजेपापहैं तिनको अन्तकालमें रामनामके स्मरणसे और राममूर्तिके दर्शनके प्रभावसे धोकरके दुर्लभजो मुक्तिहै तिसकोप्राप्त होऊंगा६० और हे मन्दोदरि संसाररूपी समुद्रकोपारहोके मैं हरिको प्राप्त होऊंगा कैसा संसाररूप समुद्रहै औ समुद्रमें तो तरंगहोतेहैं इसमें कौन तरंगहै जो आपने वास्तवस्वरूप काभूलना और झूठे देहादिकों में आत्मबुद्धि करना और राग-द्वेषहोना और मरणकी त्रासहोनायेहैं पांचतरंग जिसमें और संशयरूपहैं भौंर जिसमें और स्त्री पुत्र मित्र धन कुटुम्बी येहैं ग्राह जिसमें और क्रोधरूप है बड़वानल अग्नि जिसमें और कामदेवहै जालजिस में ऐसे संसाररूप समुद्र को उल्लंघनकरके मैं रामको प्राप्तहोऊंगा ६१ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डे भाषाटीकायांदशमस्सर्गः १० ॥

इत्युक्त्वावचनंप्रेम्णाराज्ञींमन्दोदरींतदा ॥ रावणःप्रययौयोद्धुंरा

मेणसहसंयुगे १ दृढंस्यंदनमास्थायवृतोघोरैर्निशाचरैः ॥ चक्रैःषोडशभिर्युक्तंसबरूथंसकूवरम् २ पिशाचवदनैर्घोरैःखरैर्युक्तंभयावहम् ॥ सर्वास्त्रशस्त्रसहितंसर्वोपस्करसंयुतम् ३ निश्चक्रामाथसहसारावणोभीषणाकृतिः ॥ आयातंरावणंदृष्ट्वाभीषणंरणकर्कशम् ४ संत्रस्ताभूत्तदासेनावानरीरामपालिता ५ हनुमानथचोत्प्लुत्यरावणंयोद्धुमाययौ ॥ आगत्यहनुमान्रक्षोवक्षस्यतुलविक्रमः ६ मुष्टिंबंधंदृढंबध्वाताडयामासवेगतः॥तेनमुष्टिप्रहारेणजानुभ्यामपतद्रथे ७॥

दो०। सर्गग्यारहें घोर अति युद्ध दशाननकीन्ह ॥
रामब्रह्मशरछोडिउर फारिप्राणहरिलीन्ह १
सोवतजागतचलतमगकहतसुनतसबकाल ॥
रावणसुमिरत रामको रामभयो ततकाल २

अब महादेवजी पार्वतीजीसे कथावर्णनकरैहैं हेपार्वति अब इसकेउपरान्त रावण मन्दोदरी रानीसे पूर्वोक्त बचनकहिकै आप रामकेसंग संग्राममें युद्ध करनेको जाताहुआ १ और घोरराक्षसों करके युक्त जो रावण सो सोलह हैं पहिये जिसमें और रक्षाकरनेवाला जो चर्म तिसकरके बेष्टित और जुआरि जिसमें लगीहुई है २ और पिशाचोंकेसे हैं मुख जिन्होंके ऐसे गर्दभों करके जुड़ाहुआ और बड़ाभयंकर और सब शस्त्रअस्त्रोंकरके युक्त और सब युद्ध की सामग्रियोंकरके युक्त ३ ऐसा जो बड़ापुष्टरथ तिसकेऊपर चढ़िकै भयंकर है स्वरूप जिसका ऐसा रावण नगरसे निकलताहुआ फिर युद्धकरने में कठोर उस अतिभयंकर रावणको आवते देखके ४ रामकरके रक्षित जो वानरों की सेना सो बड़ीत्रासको प्राप्तहुई ५ अब इसके उपरान्त हनूमान् कूदिकै रावण से युद्धकरनेको आतेहुए फिर अतुल है पराक्रम जिसका ऐसा जो हनुमान् सो आकै अपनीमुट्ठीको दृढबांधिकै ६ बड़ेबेगसे रावणकी छातीमें एकमुष्टिक मारतेहुये फिर उसमुष्टिकाके प्रहारकरके रावण घुटुरुओंको टेकके रथके भितर गिरपड़ताहुआ ७ ॥

मूर्च्छितोथमुहूर्त्तेन रावणःपुनरुत्थितः ॥ उवाचचहनूमंतंशूरोसिममसंमतः ८ हनूमानाहतंधिङ्मांयस्त्वंजीवसिरावण ॥ त्वंतावन्मुष्टिनावक्षोममताडयरावण९ पश्चान्मयाहतःप्राणान्मोक्ष्यसेनात्रसंशयः ॥ तथेतिमुष्टिनावक्षोरावणेनापिताड़ितः १० विघूर्णमानन्नयनःकिंचित्कश्मलमाययौ ॥ संज्ञामवाप्यकपिराट्रावणंहंतुमुद्य

तः ११ ततोन्यत्रगतोभीत्यारावणोराक्षसाधिपः ॥ हनूमानंगदश्चैव नलोनीलस्तथैवच १२ चत्वारःसमवेताग्रेदृष्ट्वाराक्षसपुंगवान् ॥ अग्निवर्णंतथासर्परोमाणंखड्गरोमकम् १३ तथावृश्चिकरोमाणंनिर्जघ्नुःक्रमशोसुरान् ॥ चत्वारश्चतुरोहत्वाराक्षसान्भीमविक्रमान् १४ ॥

फिर दोघड़ीभर मूर्च्छितहुआ रावण उठिके हनुमान्से बोला कि मुझको संमत तुम बड़ेशूरहौ ८ तौ हनुमान् रावणसेबोले कि धिक्कार मुझको है जो तू मेरेप्रहारसे जीवतारहा और हेरावण तूभी अपनी मुष्टिकाकरके मेरीछाती में प्रहारकरु ९ पीछे मेरेप्रहारसे मराहुआ प्राणोंको तू छोड़देगा इसमें कुछ संशयनहीं फिर तैसेई मुष्टिकाकरके बक्षस्थलमें रावणने ताड़नकिया १० जो हनुमान् सो घूमरहे हैं नेत्र जिसके ऐसाहो कुछ थोड़ेसे काल मूर्च्छाको प्राप्त होताहुआ फिर होशमेंआके हनुमान् रावणके मारनेको उद्यतहोताहुआ ११ तो राक्षसोंका स्वामी जो रावण सो भयकरके हनुमान्के आगेसे और जगह युद्धकरनेको जाताहुआ तिसके उपरान्त हनुमान् और अंगद और नल और नीलये १२ चारोंजन अपनेआगे अग्निवर्ण और सर्परोमा और खड्गरोमा १३ और वृश्चिकरोमा इनचारों राक्षसों को देखके एक एक एक एक बड़ेबली राक्षसको मारताहुआ १४ ॥

सिंहनादंपृथक्कृत्वारामपार्श्वमुपागताः॥ततःक्रुद्धोदशग्रीवःसंदष्टदशनच्छदम् १५ विवृत्यनयनेक्रूरोराममेवान्वधावत ॥ दशग्रीवोरथस्थस्तुरामंवज्रोपमैःशरैः १६ आजघानमहाघोरैर्धाराभिरिवतोयदः॥ रामस्यपुरतःसर्वान्वानरानपिविव्यधे १७ ततःपवनसंकाशैःशरैःकांचनभूषणैः ॥ अभ्यवर्षद्रणेरामोदशग्रीवंसमाहितः १८ रथस्थंरावणंदृष्ट्वाभूमिस्थंरघुनन्दनम् ॥ आहूयमातलिंशक्रोवचनंचेदमब्रवीत् १९ रथेनममभूमिष्ठंशीघ्रंयाहिरघूत्तमम् ॥ त्वरितंभूतलंगत्वा कुरुकार्यंममानघ २० एवमुक्तोथतंनत्वामातलिर्देवसारथिः ॥ ततो हयैश्चसंयोज्यहरितैःस्यंदनोत्तमम् २१ ॥

तहां हनुमान्तो अग्निवर्णराक्षसको मारतेहुये और अंगद सर्परोमनामक राक्षसको मारताहुआ और नल खड्गरोम राक्षसको मारताहुआ और नील वृश्चिकरोम राक्षसको मारताहुआ फिर सब हनुमान्को आदिलेके चारोंबानर पृथक् २ सिंहवत् गर्जिके रामके समीप आवतेहुए तब रावण क्रोधकरके अपनेदांतोंसे ओठोंको काटिकै १५ और नेत्रोंको फैलाकरके रामहीकेसंमुख

युद्धकरनेको दौड़ताहुआ अब रथपैस्थित जो रावण सो वज्रकेतुल्य जो घोर बाण तिन्होंकरके रामको १६ ताड़नकरताहुआ जैसे मेघ जलकीधाराओंकर के पर्वतके ऊपर वृष्टिकरै और रामकेअगाड़ी खड़े जे बानर तिनकोभी ताड़न करताहुआ १७ तिसके उपरान्त अग्निकेतुल्य है प्रकाश जिनका और सुवर्ण करके भूषित ऐसे जे तीक्ष्णबाण तिनकरके श्रीराम सावधानहो रावण के ऊपर वृष्टिकरतेहुये १८ अब इन्द्र रथमेंस्थित रावणको देखके और भूमिमें स्थित रामको देखके मातलिनामकरके जो सारथी तिसकोबुलाके यह कहते हुये १९ कि हेमातले मेरेरथकरके पृथ्वी में स्थित जो राम तिनके समीप शीघ्रही प्राप्तहो और भूतलमें जाके रथपैरामको बैठाकर मेरे कार्यकोकर २० ऐसा जबइन्द्रने वचनकहा तौमातलिनाम सारथी इन्द्रको नमस्कार करके हरितवर्ण जे घोड़े हैं तिनकरके रथकोजोड़के २१॥

स्वर्गाज्जयार्थंरामस्यह्युपचक्राममातलिः॥ अब्रवीच्चततोरामम प्रतर्क्यरथेस्थितः॥ प्रांजलिर्देवराजेनप्रेषितोस्मिरघूत्तम २२ रथो यंदेवराजस्यविजयायतवप्रभो॥ प्रेषितश्चमहाराजधनुरैन्द्रंचभूषित म् २३ अभेद्यंकवचंखड्गंदिव्यतूणीयुगंतथा॥ आरुह्यचरथंरामराव णंजहिराक्षसम् २४ मयासारथिनादेववृत्रंदेवपतिर्यथा॥ इत्युक्तस्तं परिक्रम्यनमस्कृत्यरथोत्तमम् २५ आरुरोहरथंरामोलोकाँल्लक्ष्म्या नियोजयन्॥ ततोभवन्महायुद्धंभैरवंरोमहर्षणम् २६ महात्मनो राघवस्यरावणस्यचधीमतः॥ आग्नेयेनचआग्नेयंदैवंदैवेनराघवः २७ अस्त्रंराक्षसराजस्यजघानपरमास्त्रवित्॥ ततस्तुससृजेघोरंरा क्षसंचास्त्रमस्त्रवित् २८॥

श्रीराम के जयके अर्थ स्वर्गसे रामके समीप आवताहुआ और किसीके मन में भी नआसकै ऐसे रथमें स्थितजो मातलि सो वचन बोलताहुआ हाथजोड़ के कि हे राम इन्द्रने मुझको भेजाहै २२ और यहइन्द्रने रथआपके विजयके अर्थ भेजाहै और आभूषणयुक्त जोइन्द्रका धनुष २३ और किसी शस्त्र करके जिसका भेदन न होय ऐसा जोकवचनाम बख्तर और खड्गऔर दिव्य जे दो तरकस अर्थात् जिनमेंसे बाणकभी घटैं नहीं यहसब वस्तु आपको इन्द्रने भेजीहै सो हे राम इसरथके ऊपर चढ़िकै रावण जोराक्षस तिसको मारिये २४ और मैं जोसारथीहौं तिसके सहायकरके जैसे इन्द्र वृत्रासुरको मारतेहुये तैसे आपभी रावणको मारिये इसप्रकार जबमातलि सारथीने कहातौ श्रीरा- मचन्द्र उसरथकी परिक्रमाकरके और नमस्कार करिकै २५ सबलोकों को

लक्ष्मी करके युक्तकरना है इसहेतुसे उसरथके ऊपर चढ़तेहुये तिसकेउपरान्त श्रीरामका और रावणका बड़ा भयंकर रोमहर्षण युद्धहोताहुआ २६ अर्थात् जिसको देखके रोमखड़े होजावें ऐसा युद्धहुआ तो परम अस्त्र विद्यामें कुशल जोश्रीरामचन्द्र सो आग्नेय अस्त्र करके रावणके आग्नेय अस्त्रको शांत करते हुये और इसीप्रकार करके जिस देवताके मन्त्र करके अभिमन्त्रित बाण रावण छोड़ताहुआतौ श्रीरामभी उसीदेवताके मन्त्रकरके अभिमंत्रित अपने बाण करके उसको काटतेहुये २७ तबतौ रावण राक्षस मन्त्रकरके अभिमंत्रितबाणों को रामके ऊपर बड़े क्रोधकरके छोड़नेलगा २८ ॥

क्रोधेनमहताविष्टोरामस्योपरिरावणः ॥ रावणस्यधनुर्मुक्ताःसर्पाभूत्वामहाविषाः॥शराःकांचनपुंखाभाराघवंपरितोपतन् २९ तैःशरैःसर्ववदनैर्वमद्भिरनलंमुखैः ॥ दिशश्चविदिशश्चैवव्याप्तास्तत्रतदाभवन् ३० रामःसर्पांस्ततोदृष्ट्वासमंतात्परिपूरितान् ॥ सौपर्णमस्त्रंतद्घोरंपुरःप्रावर्तयद्रणे ३१ रामेणमुक्तास्तेबाणाभूत्वागरुड़रूपिणः ॥ चिच्छिदुःसर्पबाणांस्तान्समंतात्सर्पशत्रवः ३२ अस्त्रेप्रतिहतेयुद्धेरामेणदशकन्धरः ॥ अभ्यवर्षत्ततोरामंघोराभिःशरवृष्टिभिः ३३ ततःपुनःशरानीकराममक्लिष्टकारिणम् ॥ अर्दयित्वातुघोरेणमातलिंप्रत्यविध्यत ३४ पातयित्वारथोपस्थेरथकेतुंचकांचनम् ॥ ऐन्द्रानश्वानभ्यहनद्रावणःक्रोधमूर्च्छितः ३५ ॥

तबतौ रावणके धनुषसे छूटेहुये जे सुवर्ण पुंखके बाण से बड़े बड़े बिषधर सर्परूप होकर रामके चारोंतरफसे आके गिरतेहुये २९ फिरसर्पकेसे मुख जिनके और मुखसे अग्निकोवमन कररहे ऐसे जे रावणके सर्पाकार बाण तिन करके दिशा और विदिशासब उससमयमें व्याप्तहोजाती हुईं ३० तब श्रीराम सबजगह परिपूर्ण उनसर्पोंको देखके उनसर्पोंका नाशकरने वाला जोबड़ा भयंकर गारुड़अस्त्र तिसको रावणके आगे छोड़तेहुये ३१ तबतौ गरुड़के मंत्र करके अभिमन्त्रित जे रामके धनुषसे छूटेहुये बाणते गरुड़रूपीहो उनसर्परूप बाणोंको काटडालते हुये जिससे वेसर्पों के शत्रुरूपहैं ३२ जब युद्धमें रामने वहरावणका अस्त्र नष्टकरदिया तबतौ रावणघोरबाणोंकी वृष्टिकरके रामकेऊपर वर्षाकरता हुआ ३३ फिरभी रावण बाणोंके समूहों करके रामको पीड़ितकरके एकबड़े भयंकर बाणकरके मातलिसारथी को बधताहुआ ३४ और सुवर्णकी जोरथकी ध्वजा है तिसको एकबाण करके काटके रथके भीतर डालदेताहुआ

और फिर क्रोध करके मूर्च्छित जोरावणसो इन्द्रके घोड़ोंकोभी बाणोंकरके ताडनकरताहुआ ३५ ॥

विषेदुर्देवगन्धर्वाश्चारणाःपितरस्तथा ॥ आर्ताकारंहरिंदृष्ट्वाव्यथिताश्चमहर्षयः ३६ व्यथितावानरेन्द्राश्चबभूवुःसविभीषणाः ॥ दशास्योविंशतिभुजःप्रगृहीतशरासनः ३७ ददृशेरावणस्तत्रमैनाकइवपर्वतः ॥ रामस्तुभृकुटिंबध्वाक्रोधसंरक्तलोचनः ३८ कोपंचकारसदृशंनिर्दहन्निवराक्षसम् ॥ धनुरादायदेवेन्द्रधनुराकारमद्भुतम् ३९ गृहीत्वापाणिनाबाणंकालानलसमप्रभम् ॥ निर्दहन्निवचक्षुर्भ्यांददृशेरिपुमंतिके ४० पराक्रमंदर्शयितुंतेजसाप्रज्वलन्निव ॥ प्रचक्रमेकालरूपीसर्वलोकस्यपश्यतः ४१ विकृष्यचापंरामस्तुरावणंप्रतिविध्यच ॥ हर्षयन्वानरानीककालांतकइवाबभौ ४२ ॥

अब इसप्रकार रावणके पराक्रमकरके रामकोपीड़ितके तुल्य देखके देवता और गन्धर्व और चारण और पितर महर्षि ये बड़े विषादको प्राप्तहुये ३६ और विभीषण सहित वानरोंकी सेनाके स्वामीभी बड़े क्लेशयुक्त होतेहुये और दश हैं मुख जिसके और बीसभुजाहैं जिसके ऐसा जो रावण ३७ सो मैनाकपर्वत के तुल्य उससमयमें दिखलाईपड़ताहुआ और रामभी उससमयमें अपनीभौंहों को चढ़ाके क्रोधकरके रक्तहैं नेत्र जिनके ऐसेहो ३८ रावणको मानों दृष्टिकर के भस्मकरदेवेंगे ऐसा अपने स्वरूपकेसदृश कोपकरतेहुये और जैसेवर्षाकाल में इन्द्रकाधनुष निकलताहै ऐसे स्वरूपके धनुषको हाथमें लैके ३९ और प्रलय कालके अग्निके तुल्यहै कान्ति जिसकी ऐसे बाणको ग्रहण करके अपनेनेत्रों करके जलातेहुये समीप शत्रुको देखतेहुये ४० और अबश्रीराम अपनापराक्रम दिखानेको तेजकरके अग्निकी तरह प्रकाशकरतेहुये सबलोकोंके देखते देखते कालकासा स्वरूप जिनका ऐसेहो युद्धका प्रारंभकरतेहुये ४१ और धनुषको खैंचिके बाणोंकरके रावणको ताड़नकरके बानरोंकी सेनाको हर्षकराते हुये काल और मृत्युकेतुल्य प्रकाशितहोतेहुये ४२ ॥

क्रुद्धंरामस्यवदनंदृष्ट्वाशत्रुंप्रधावतः ॥ तत्रसुःसर्वभूतानिचचालचवसुन्धरा४३रामंदृष्ट्वामहारौद्रमुत्पातांश्चसुदारुणान् ॥ त्रस्तानिसर्वभूतानिरावणंचाविशद्भयम् ४४ विमानस्थाःसुरगणाः सिद्धगन्धर्वकिन्नराः ॥ ददृशुः सुमहायुद्धंलोकसंवर्तकोपमम् ॥ ऐन्द्रमस्त्रंसमादायरावणस्यशिरोच्छिनत् ४५ मूर्द्धानोरावणस्याथबहवो

रुधिरोक्षिताः ॥ गगनात्प्रपतंतिस्मतालादिवफलानिहि ४६ नदिनंनचवैरात्रिर्नसंध्यानदिशोपिवा ॥ प्रकाशंतेनतद्रूपंदृश्यतेतत्रसंगरे ४७ ततोरामोबभूवाथविस्मयाविष्टमानसः ॥ शतमेकोत्तरंछिन्नंशिरसांचैकवर्चसाम् ४८ नचैवरावणःशांतोदृश्यतेजीवितक्षयात् ॥ ततसर्वास्त्रविद्वीरःकौशल्यानंदवर्द्धनः ४९ ॥

अब शत्रुके सन्मुख दौड़ते हुये जो राम तिनका क्रोध युक्तमुख देखके सब प्राणी त्रास को प्राप्त हुये और पृथिवी चलायमान होतीहुई ४३ अब राम के भयंकर रूपको देखके और बड़ेबड़े भयंकर उत्पातोंको देखके सबभूत भयभीत होतेहुये और रावणके हृदयमेंभी भयप्रविष्ट होतीहुई ४४ और अपने अपने विमानोंमें स्थित जे देवताओंके समूह और सिद्ध और गंधर्व और किन्नर ये सब लोकके प्रलयकालके तुल्य जो वह बड़ाभारी युद्ध तिसको देखतेहुये ४५ अब ऐन्द्र अस्त्रको ग्रहणकरके श्रीराम रावणके शिरोंकोकाटतेहुये तब रुधिर से डूबेहुये रावणके बहुतसे शिरआकाशसे गिरनेलगे जैसे तालके वृक्षसेपके हुये फल पृथ्वीमें पड़ें ४६ अब उससमयमें संग्रामके विषे नतौ दिन और न रात्रि और न दिशा और न विदिशा और न संध्या और न मस्तकरहित रावण का रूप ये कोई नहीं जानेजातेहुये अर्थात् वारम्वार शिरोंके उत्पन्न होने से सबजगह शिरहीशिर दिखाईपड़तेहैं और दिन रात्रि इत्यादि कहनेसे अनेक दिन राम रावणका निरन्तर युद्धहुआ यह सूचनकिया ४७ तबतौ राम बड़े आश्चर्य युक्तमनमें होतेहुये और यहविचारकरतेहुये कि एकहीसा तेज जिन का ऐसे एक सौएक शिर मैंने काटे औ अभी बढ़तेहीजातेहैं४८और यह रावण भी अभी नहीं मरता ऐसाकहिकै तिसके उपरान्त सब अस्त्र विद्या के जानने वाले और बड़ेवीर और सब अस्त्रोंकरके सहित ऐसे जो कौशल्याके आनन्दके बढ़ानेवाले श्रीरामचन्द्र ४९ ॥

अस्त्रैश्चबहुभिर्युक्तश्चिंतयामासराघवः ॥ यैर्यैर्बाणैर्हतादैत्यामहासत्वपराक्रमाः ५० तएतेनिष्फलंयातारावणस्यनिपातने ॥ इति चिन्ताकुलेरामेसमीपस्थोविभीषणः ५१ उवाचराघवंवाक्यंब्रह्मदत्तवरोह्यसौ ॥ विछिन्नावाहवोप्यस्यविच्छिन्नानिशिरांसिच ५२ उत्पत्स्यंतिपुनःशीघ्रमित्याहभगवानजः॥नाभिदेशेमृतंतस्यकुण्डलाकारसंस्थितम् ५३ तच्छोषयानलास्त्रेणतस्यमृत्युस्ततोभवेत् ॥ विभीषणवचश्श्रुत्वारामःशीघ्रपराक्रमः ५४ पावकास्त्रेणसंयोज्यनाभिंविव्याध राक्षसः॥ अनंतरंचचिच्छेदाशिरांसिचमहाबलः५५बाहूनपिचसंरब्धो

रावणस्यरघूत्तमः ॥ ततोघोरांमहाशक्तिमादायदशकन्धरः ५६ ॥

सो चिन्तवन करतेहुये कि जिनबाणों करके बड़ेबड़े पराक्रम युक्त दैत्य मैं नेमारे ५० तेबाण रावणके मारनेमें निष्फल होगये ऐसे जब चिन्तामें व्याकुलरामहुये तब समीप स्थित जोबिभीषण ५१ सोश्रीरामसे वचन बोला किहे राम यहरावण ब्रह्मासे ऐसे वरको प्राप्तहुआहै कि भुजा और शिर ये संग्राममें तेरे कटभी जायँगे तौफिर नवीन शीघ्रही उत्पन्नहोवैंगे ५२ ऐसे भगवान् जो ब्रह्मासो कहतेहुये और इसरावणके नाभिके ठिकाने पै एकअमृतका कुण्डहै ५३ सो हे राम आग्नेय अस्त्रकरके प्रथम उसको सुखादीजिये तबरावणकी मृत्युहोवैगी तब ये बिभीषणके वचनसुनिकै शीघ्रहै पराक्रम जिनका ऐसे जो राम ५४ सोआग्नेय अस्त्रकरके अभिमन्त्रित जोबाण तिसकरके रावणकी नाभिको बेधन करतेहुये फिर तिसके अनन्तर महाबली जो श्रीराम सोउसके शिरोंको काटतेहुये ५५ और क्रोधयुक्तजो श्रीरामचन्द्रसो रावणकी भुजाओंको भीकाटतेहुये तबबड़ी भयंकर जोसांग तिसको रावण ग्रहणकरके ५६ ॥

विभीषणबधार्थायचिक्षेपक्रोधबिह्वलः ॥ चिच्छेदराघवोबाणैस्तां शितैर्हेमभूषितैः ५७ दशग्रीवशिरश्छेदात्तदातेजोविनिर्गतम् ॥ म्लानरूपोबभूवाथच्छिन्नैःशीर्षैर्भयंकरैः ५८ एकेनमुख्यशिरसाबाहुभ्यांरावणोबभौ ॥ रावणस्तुपुनःक्रुद्धोनानाशस्त्रास्त्रवृष्टिभिः ५९ ववर्षरामं तंरामस्तथाबाणैर्ववर्षच ॥ ततोयुद्धमभूद्घोरंतुमुलंलोमहर्षणम् ६० अथसंस्मारयामासमातलीराघवंतदा ॥ विसृज्यास्त्रंबधायास्यब्राह्मं शीघ्रंरघूत्तम ६१ विनाशकालःप्रथितोयःसुरैःसोद्यवर्त्तते ॥ उत्तमांगंनचैतस्यछेत्तव्यंराघवत्वया ६२ दैवशीर्षाणिप्रभोवध्योवध्यएवहिमर्मणि ॥ ततःसंस्मारितोरामस्तेनवाक्येनमातलेः ६३ ॥

क्रोधमें भराहुआ बिभीषणके बधके लिये चलाताहुआ तिसशक्तिको सुवर्ण करिकै भूषित जे बड़े पैने २ बाण तिनकरके श्रीराम काट डालतेहुये ५७ तब तौ रावणका तेज शिरोंके कटनेसे नष्टहोगया और बड़ेभयंकर शिरोंके कटनेसे रावण कान्ति हीनहोगया और पुष्पकीतरह कुम्हिलाय गया ५८ अब एकशिर और दोभुजाही करके दिखलाई पड़ताहुआ अबरावण फिर भी क्रोधकरके नानाप्रकारके शस्त्र अस्त्रोंकरके रामके ऊपर वृष्टिकरता हुआ ५९ और राम रावणके ऊपर बाणोंकी वृष्टिकरते हुये तबतौ जिस युद्धकेदेखनेसे भयकरके रोमखड़े होजायँ ऐसापरस्पर मिलिकै राम और रावण इनका घोरयुद्ध होता हुआ ६० तबतौ उससमयमें मातलि जो सारथी सो रामको रावणके मृत्यु

समयकास्मरण करताहुआ यहवचन बोला कि हे राम अब शीघ्रही इसरावण के वधके लिये ब्रह्मास्त्रको छोड़िये ६१ क्यों कि जोदेवताओंने रावणकामरण समयकहाहै सो इससमयमें आगयाहै और हे राम इससमयमें इसका शिर न काटिये ६२ क्यों कि हे स्वामिन् शिरके काटनेसे यह नहीं मरैगा इसकी मृत्युहृदयमें वाणमारनेसे होवैगी तबउस मातलि सारथी के बचनकरके स्मरणकराये हुये अर्थात् यादिकरायेहुये जोराम ६३ ॥

जग्राहसशरंदीप्तंनिःश्वसंतमिवोरगम् ॥ यस्यपार्श्वेतुपवनःफले भास्करपावकौ ६४ शरीरमाकाशमयंगौरवेमेरुमन्दरौ ॥ पर्वस्वपि चविन्यस्तालोकपालामहौजसा ६५ जाज्वल्यमानंवपुषाभातंभास्करवर्चसा ॥ तमुग्रमस्त्रंलोकानांभयनाशनमद्भुतम् ६६ अभिमन्त्र्यततोरामस्तंमहेषुंमहाभुजः ॥ वेदप्रोक्तेनबिधिनासंदधेकार्मुकेबली ६७ तस्मिन्संधीयमानेतुराघवेणशरोत्तमे ॥ सर्वभूतानिवित्रेसुश्चचाल चवसुन्धरा ६८ सरावणायसंक्रुद्धोभृशमानम्यकार्मुकम् ॥ चिक्षेपपरमायत्तस्तमस्त्रंमर्मघातिनम् ६९ सवज्रइवदुर्द्धर्षोवज्रपाणिविसर्जितः॥ कृतांतइवघोरास्योन्यपतद्रावणोरसि ७० ॥

सो जैसे सर्प श्वास लेताहोइ ऐसा प्रज्वलित जो वाणहै तिसकोहाथ में लेतेहुये जिसवाणके दोनों तरफतौ पवनदेवताहै और जिसके भालके ऊपर सूर्य अग्निवास करतेहैं ६४ और जिसकाशरीर आकाशमयहै अर्थात् आकाशवत् व्यापक हिरण्यगर्भरूपहै और जिसकी गरुआईमें मेरु और मन्दर पर्वत है और जिसकी गांठियोंमें इन्द्रआदि लोकपाल वसतेहैं ६५ और जो अपने शरीरकरके सूर्यवत् प्रकाशकररहाहै ऐसा जो सब लोकोंकी भयका नाशकरने वाला वड़ा अद्भुतउग्र अस्त्र ६६ तिसकरके उसवाणको जैसे वेदमेंकहाहै तैसे अभिमन्त्रित करके धनुष में संधान करतेहुये ६७ तबवह वाण धनुष में जब संधानकियागया तबसब भूतत्रासको प्राप्तहो और पृथ्वी चलायमान होतीहुई ६८ फिर क्रोधयुक्त जोराम सोधनुषको खैंचिकै रावणकी मृत्युकेअर्थ उसमर्मघाती वाणको छोड़ते हुये ६९ सो इन्द्रका छोड़ावज्र सरीखा और यमराजके तुल्य भयंकरहै मुख जिसकाऐसाजो रामका वाणसो रावण की छातीमें जाके प्रविष्टहोताहुआ ७० ॥

सनिमग्नोमहाघोरःशरीरान्तकरःपरः ॥ विभेदहृदयंतूर्णंरावणस्य महात्मनः ७१ रावणस्याहरत्प्राणान्विवेशधरणीतले ॥ सशरोरावणंहत्वारामतूणीरमाविशत् ७२ तस्यहस्तात्पपाताशुसशरंकार्मुकंम

हृत् ॥ गतासुर्भ्रमिवेगेणराक्षसेंद्रोऽपतद्भुवि ७३ तंदृष्ट्वापतितंभूमौहृतशेषाश्चराक्षसाः ॥ हतनाथाभयत्रस्तादुद्रुवुःसर्वतोदिशम् ७४ दशग्रीवस्यनिधनंविजयंराघवस्यच ॥ ततोविनेदुःसंहृष्टावानराजितकाशिनः ७५ वदन्तोरामविजयंरावणस्यचतद्वधम् ॥ अथान्तरिक्षेव्यनदत्सौम्यस्त्रिदशदुन्दुभिः ७६ पपातपुष्पवृष्टिश्चसमंताद्राघवोपरि ॥ तुष्टुवुर्मुनयःसिद्धाश्चारणाश्चदिवौकसः ७७ ॥

अबवह रावणके हृदयमें प्रविष्ट जोशरीरके नाशकरने वाला घोरबाण सो शीघ्रही रावणके हृदयको विदारण करताहुआ ७१ और रावणके प्राणोंको हरता हुआ फिर पृथ्वीतलमें प्रवेशकरता हुआ इसप्रकार वहबाण रावणको मारके फिर रामके तरकसमें आके प्रवेशकरताहुआ ७२ फिर रावणके हाथसे वाण सहित धनुष शीघ्रही गिरपड़ा और बाणके लगतेही घूमकरके मराहुआ रावण पृथ्वीमें गिरपड़ता हुआ ७३ अबरावणको पृथ्वीमें पड़ादेखके मारागया है स्वामी जिनका ऐसे मारनेसे बचेहुये जे राक्षस तेभयकरके सब दिशाओंको भागतेहुये ७४ अब रावणकी मृत्यु और श्रीरामचन्द्रके विजयको वानर देखकेबड़े प्रसन्नहुये जयकरके प्रकाशमान गर्जतेहुये ७५ और रामके विजयको और रावणके बधको सबजगह कहतेहुये सिंहवत् शब्दकरतेहुये अब इसकेउपरान्त आकाशमें मंगलसूचक देवताओंके नगाड़े बजतेहुये ७६ और चारोंतरफसे श्रीरामके ऊपर पुष्पोंकी वृष्टिहोती हुई और मुनि और सिद्ध और चारण और देवता ये स्तुतिकरतेहुये ७७ ॥

अथान्तरिक्षेननृतुःसर्वतोप्सरसोमुदा ॥ रावणस्यचदेहोत्थंज्योतिरादित्यवत्स्फुरत् ७८ प्रविवेशरघुश्रेष्ठंदेवानांपश्यतांसताम् ॥ देवाऊचुरहोभाग्यंरावणस्यमहात्मनः ७९ वयंतुसात्विकादेवाविष्णोःकारुण्यभाजनाः ॥ भयदुःखादिभिर्व्याप्ताःसंसारपरिवर्त्तिनः ८० अयन्तुराक्षसःक्रूरोब्रह्महातीवतामसः ॥ परदाररतोविष्णुद्वेषीतापसहिंसकः ८१ पश्यत्सुसर्वभूतेषुराममेवप्रविष्टवान् ॥ एवंब्रुवत्सुदेवेषुनारदःप्राहसुस्मितः ८२ शृणुतात्रसुरायूयंधर्म्मतत्त्वविचक्षणाः ॥ रावणोराघवद्वेषादनिशंहृदिभावयन् ८३ भृत्यैःसहसदारामचरित्रंद्वेषसंयुतः ॥ श्रुत्वारामात्स्वनिधनंभयात्सर्वत्रराघवम् ८४ ॥

और आकाशमें चारोंतरफ आनन्द करके अप्सरानृत्य करतीहुईं अब रावणके देहमें उठीहुई जो ज्योति सो सूर्यके तुल्यप्रकाश करतीहुई ७८ सब

देवताओंके देखते २ राममें प्रवेशकरजाती हुई तौ देवता बोले कि बड़ा आश्चर्य्यहै और इसमहात्मा रावणका बड़ाभाग्यहै ७९ देखिये विष्णुकी दयाकेपात्र हमसब जे सत्वगुणसे उत्पन्नहुये देवता ते भय दुःखादिकों करके युक्त संसार हीमें परिभ्रमणकररहेहैं ८० और यहक्रूर राक्षस और ब्राह्मणोंके मारने वाला और अत्यन्ततमोगुणी और बिरानी स्त्रियोंमें आसक्त और विष्णु काद्वेषी और तपस्वी पुरुषोंका मारनेवाला ८१ सो सबके देखते २ राममें प्रवेशकरगया ऐसे जबदेवताओंने वचनकहे तब नारदजी मन्द मुसक्यान करतेहुये बोले ८२ कि हे धर्मतत्त्वके जाननेमें कुशल देवताओ इसविषयमें जोकुछ मैं कहताहौं तिस को सुनिये रावणद्वेष बुद्धिकरके श्रीरामको निरन्तर हृदयमें ध्यानकरता हुआ ८३ द्वेषयुक्तभीहो शुकआदि राक्षसोंके मुखसे रामचरित्रको सुनिकै और राम से अपनी मृत्युसुनके भयसेरामहीको सबजगह नित्य देखताहुआ ८४ ॥

पश्यन्नतुदिनंस्वप्नेराममेवानुपश्यति ॥ क्रोधोपिरावणस्याशुगुरुबोधाधिकोभवत् ८५ रामेणनिहतश्चांतेनिर्धूताशेषकल्मषः ॥ रामसायुज्यमेवापरावणोमुक्तबंधनः ८६ पापिष्ठोवादुरात्मापरधनपरदारेषुसक्तोयदिस्यान्नित्यंस्नेहाद्भयाद्वारघुकुलतिलकंभावयन्संपरेतः ॥ भूत्वाशुद्धांतरंगोभवशतजनितानेकदोषैर्विमुक्तःसद्योरामस्यविष्णोः सुरवरविनुतंयातिवैकुंठमाद्यम् ८७ हत्वायुद्धेदशास्यंत्रिभुवनविषमंवामहस्तेनचापंभूमौविष्टभ्यतिष्ठन्नितरकरधृतंभ्रामयन्बाणमेकम् ॥ आरक्तापांतनेत्रःशरदलितवपुः सूर्य्यकोटिप्रकाशोवीरश्रीबंधुरांगःस्त्रिदशपतिनुतःपातुमांवीररामः ८८ ॥

इत्यध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डे रावणवधोनामैकादशःसर्गः ११ ॥

और स्वप्नमें भी रावण रामहीको देखताथा इससे क्रोध भी रावणकागुरू की सेवासेहुआ जो ज्ञान तिससे अधिक होताहुआ ८५ और अन्त में रामके हाथसे मृत्युको प्राप्तहो दूरहुये सबपाप जिसके और छूटिगये हैं सकल बन्धन जिसके ऐसा जो रावण सो रामकेसमानरूपहो उनके लोकको प्राप्तहुआ ८६ और इसीतरह और भी कोई पुरुष पापिष्ठ भी हो और दुष्टचित्त भी हो और परधन और परस्त्री इनमें आसक्त भी होय परन्तु नित्यहीस्नेहसे अथवा भय से श्रीरामकेध्यानमें तत्परहोय सो अन्तमें शुद्ध अन्तःकरणहोके सैकड़ोंजन्म के पापोंसे छूटिकै देवताओं करके स्तुतिकियागया जो रामका वैकुण्ठलोक तिसको शीघ्रही प्राप्तहोताहै ८७ अब श्रीमहादेवजी रामके उससमयकाध्यान

कहतेहैं जो राम युद्धमें तीनोंलोकोंका कंटक जो रावण तिसको मारिकै बाम हाथसे धनुषको पृथ्वीमें टेकके खडेहोरहेहैं और दूसरे हाथसे बाणको लिये घुमारहेहैं और थोड़ासारक्तहै नेत्रोंका समीपभाग जिसका और रावणकेबाणों करके विदीर्णहोरहाहै शरीर जिसका और कठोर सूर्य्योंकासाहै प्रकाश जिसका अथवा मध्याह्नकालका तीव्र जो सूर्य तिसके तुल्यहै प्रकाशजिसका और यथा योग्य कहीं नम्र कहीं ऊंचाहै अंग जिसका औ इन्द्रादि देवताओंकरके स्तुति कियेगयेहैं ऐसे जो वीर शिरोमणि राम सो मेरी रक्षाको करौ ८८॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डे भाषाटीकायामेकादशःसर्गः ११॥

रामोविभीषणंदृष्ट्वाहनूमंतंतथांगदम् ॥ लक्ष्मणंकपिराजंचजाम्बवंतंतथापरान् १ परितुष्टेनमनसासर्वानेवाब्रवीद्वचः॥ भवतांबाहुवीर्येणनिहतोरावणोमया २ कीर्त्तिःस्थास्यतिवःपुण्यायावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥ कीर्तयिष्यंतिभवतांकथांत्रैलोक्यपावनीम् ३ ययोपेतां कलिहरांयास्यंतिपरमांगतिम् ॥ एतस्मिन्नन्तरेदृष्ट्वारावणंपतितंभुवि ४ मंदोदरीमुखाःसर्वाःस्त्रियोरावणपालिताः ॥ पतितारावणस्याग्रेशोचंत्यःपर्यदेवयन् ५ विभीषणःशुशोचार्तोशोकेनमहतावृतः॥ पतितोरावणस्याग्रेबहुधापर्यदेवयत् ६ रामस्तुलक्ष्मणंप्राहबोधयस्वविभीषणम् ॥ करोतुभ्रातृसंस्कारंकिंविलम्बेनमानद ७॥

दो० सर्ग बारहें शोकवश विकल विभीषण देखि॥
विगतशोक लक्ष्मणकियो लोकवेदगतिपेखि १॥
पुनि लंकाको भूपकरि सीताकी सुधिलीन्ह॥
आयजानकी रामलखि गमनहुताशनकीन्ह २॥

अब श्रीमहादेवजी पार्वतीसे कथा बर्णनकरै हैं हे पार्वति अब श्रीरामचन्द्र बिभीषण और हनुमान् और अंगद और लक्ष्मण और सुग्रीव और जांबवान् को आदिलैकै और सब वानरोंसे १ बड़े प्रसन्न मनसे वचन बोलतेहुये कि तुम्हारे सबकेभुजाओंके पराक्रमसे मैंनेरावणको मारा २ जबतक चन्द्रमासूर्य हैं तबतक तुम्हारी सबोंकी पवित्र कीर्त्ति स्थितहोगी और तीनों लोकों की पवित्रकरनेवाली तुम्हारी कथाकोकविलोग गानकरेंगे ३ और कलियुगके दोष कीहरनेवाली आपलोगोंकी सत्कीर्तियुक्तकथाका जे सेवनकरैंगे ते परम गति को प्राप्तहोवैंगे अब उसीसमय में रावणको पृथ्वी में गिराहुआ देखके ४ मन्दोदरी आदिलैके जे रावणकीरानी ते रावणके आगे पृथ्वीमें पड़ीहुई छाती

कूटतीहुई विलापकरतीहुई ५ और विभीषण बड़ेभारी शोककरके युक्त और दुःखितहो शोचकरताहुआ और रावणके आगे गिरके विलाप करता हुआ ६ तब श्रीराम लक्ष्मण से बोले कि हे लक्ष्मण इस विभीषणको बोधकरावो और यह अपने भाई का संस्कारकरै बहुत विलम्बसे क्या प्रयोजन है ७ ॥

स्त्रियोमन्दोदरीमुख्याःपतिताविलपंतिच ॥ निवारयतुताःसर्वा राक्षसीरावणप्रियाः ८ एवमुक्तोथरामेणलक्ष्मणोऽगाद्विभीषणम् ॥ उवाचमृतकोपांतेपतितंमृतकोपमम् ९ शोकेनमहताविष्टंसौमित्रिरिदमब्रवीत् ॥ यंशोचसित्वंदुःखेनकोयंतवविभीषण १० त्वंवास्य कतमःसृष्टेःपुरेदानीमतःपरम् ॥ यद्वत्तोयौघपतिताःसिकतायांतितद्वशाः ११ संयुज्यंतेवियुज्यंतेतथाकालेनदेहिनः ॥ यथाधानासुवैधाना भवंतिनभवंतिच १२ एवंभूतेषुभूतानिप्रेरितानीशमायया ॥ त्वंचेमे वयमन्येचतुल्याःकालवशोद्भवाः १३ जन्ममृत्यूयदायस्मात्तदात स्माद्भविष्यतः ॥ ईश्वरःसर्वभूतानिभूतैःसृजातिहंत्यजः १४ ॥

और मन्दोदरी को आदि लैके जे रावणकी स्त्रियां पृथ्वी में पड़ीहुई ये विलापकररहीं हैं तिनको यह विभीषण निवारणकरै ८ इसप्रकार रामकरके आज्ञाकरेहुये जो लक्ष्मण सो विभीषणके समीप जातेहुये और मरेहुये रावण के समीप मरेके तुल्य पड़ेहुआ और बड़े शोक करके युक्त जो बिभीषण तिससे लक्ष्मणजी यह वचन बोले ९ कि हे विभीषण जिसको तुम दुःख करके शोच रहेहौ सो तुम्हारा यह कौनहै १० और तुम इसके कौनहौ क्योंकि आत्म को शुद्ध बुद्ध स्वभाव होनेसे किसीसे सम्बन्ध नहीं है और यहभी विचार करना चाहिये कि सृष्टिके पहिले तुम्हारा इसका कुछ सम्बन्ध न था और इसके मरने के अनन्तर अब भी कुछ सम्बन्ध नहीं है इसीसे मध्यमें भी कुछ वास्तव सम्बन्ध न था किन्तु एक झूठा अभिमानहीकरके सम्बन्धमान लियाथा जैसे जलके समूह में गिराहुआ जो रेणुका समूह सो प्रवाहके वशसे बहाहुआ चला जाताहै ११ सो वह बालू कभी मिलजाती है कभी दूर बहिकै चलीजाती है तैसेई कालकेवशसे कभी प्राणी मिलजाते हैं और कभी वियोगको प्राप्तहोते हैं और जैसे भूनेहुये जवोंके ऊपर कोई ठहरसके हैं कोई सरकजाते हैं १२ ऐसे ईश्वरकी मायाकरके प्रेरेहुये जे प्राणी हैं ते कभी मिलतेहैं कभी अलगहोजाते हैं और केवल रावणकाही तुमको संयोग वियोग हुआहोय सो नहीं है किन्तु तुम और हम और जेकोई और दिखाई पड़ते हैं येसब कालके अधीन बराबरही हैं १३ और जिसकाल में जिससे अपने जन्म और मृत्यु ईश्वरने कर्म सहित

रचे हैं तब उसी समयमें उससे अवश्य होवैंगे और बालक जैसे अपने सुखादिक की चाह नहीं करताहुआ स्वभावही से अपने आप मिट्टीके और काठके स्त्री पुरुषों को रचिकै फिर उनका विवाहादिक और पुत्रादिकों की कल्पना करके खेलताहै और क्षणमात्र में बिगाड़ भी डालताहै और हर्ष शोक युक्त नहीं होता ऐसेही ईश्वर भी अपनी मायाकरके रचेहुये जे स्त्री पुरुषरूप प्राणी तिनकेद्वारा पुत्रादिकों को रचता है और उन्हीं से पालन भी कराता है और कभी किसीसे मरवा भी देता है १४॥

आत्मसृष्टैरस्वतन्त्रैरनपेक्षोऽपिबालवत्॥ देहेनदेहिनोजीवादेहादेहोभिजायते १५ बीजादेवयथाबीजन्देहान्यइवशाश्वतः॥ देहीदेहबिभागोयमविवेककृतःपुरा १६ नानात्वंजन्मनाशश्चक्षयोवृद्धिःक्रियाफलम्॥ द्रष्टुराभात्यतद्धर्मायथाऽग्नेर्दारुविक्रियाः १७ तइमेदेहसंयोगादात्मनाभात्यसद्ग्रहात्॥ अथायथातथाचान्यद्ध्यायतोसत्सदाग्रहात् १८ प्रसुप्तस्यानहम्भावात्तदाभाति न संसृतिः॥ जीवतोऽपितथातद्वद्विमुक्तस्यानहंकृतेः १९ तस्मान्मायामनोधर्मंजह्यहंममताभ्रमम्॥ रामभद्रेभगवतिमनोधेह्यात्मनीश्वरे २० सर्वभूतात्मनिपरेमायामानुषरूपिणि॥ बाह्येन्द्रियार्थसम्बन्धात्याजयित्वामनःशनैः २१॥

नकहौ प्रसिद्ध माता पिताही को कर्तृत्व रहौ किसवास्ते ईश्वरकी कल्पना कीजाती है तिससे कहते हैं कि वे प्राणी अस्वतन्त्रहैं अर्थात् तृणमात्रके चलाने में भी स्वतन्त्र नहीं उत्पत्यादिक तो बार्ताही क्याहैं और माता पिता की देह से देहमात्रही उत्पन्न होताहै और उस देहसे जीव देहधारी कहाताहै कुछ आत्मा उत्पन्न नहीं होताहै १५ और हे बिभीषण जैसे बीजसे वृक्ष होताहै और उस वृक्षसे फिर बीज होताहै फिर उससे वृक्ष होताहै ऐसे संसार भी अनादि कालसे चलाआताहै इसका प्रकार यह है कि अविद्या काम कर्मरूप बीजसे देह होताहै और उसदेह में फिर अविद्या वशते अहम्बुद्धि करताहै तिससे फिर काम कर्मद्वारा और देह उत्पन्न होताहै उससे फिर देहान्तरारम्भक अर्थात् और देहका उत्पन्न करनेवाला जो और कर्म तिसको करताहै इसप्रकार जब तक अविद्यारूप बीज नहीं नष्ट होताहै तबतक संसार भी नहीं निवृत्त होताहै और जीव तो देहसे अन्यहै और नित्यहै और देह के सम्बन्धही से यह देही कहाताहै सो देह सम्बन्ध अविद्याकरके कल्पितहै इससे झूँठाहै क्योंकि अंतःकरणकरके आत्माके अविवेकते देह गेहादिकों में अहम्मम ऐसी बुद्धि होतीहै तब यह बिचार करनेसे जब देहही में ममता बुद्धिको झूँठापनाहै तौ उससे

बहिरंग जो भ्रातादिक तिनमें ममता झूँठी है इसमें क्या कहना है १६ और वास्तवमें तो भाई आदि पदार्थों में स्वरूपसे अन्यबुद्धि और नाशादि बुद्धि अर्थात् मेरे देखनेके योग्य भाई आदि भी पदार्थ कोई थे तिनका नाश होगया यह बुद्धि भी झूँठी है इसआशय से लक्ष्मणजी कहते हैं हे विभीषण भेद और जन्म और नाश और क्षय और वृद्धि और सुखदुःखादिक येभी देहादिकोंकेही धर्म देखने में आते हैं और आत्म धर्म नहीं हैं जैसे जलतेहुये काठमें टेढ़ापना सूधापना यह काठहीका धर्म है और अग्निका नहीं है तैसे १७ और हे बिभीषण ये जो नानात्व अर्थात् भेद और जन्म नाशादिक धर्म हैं ते अंतःकरण के संयोगते अहम्ममता बुद्धिकरके आत्मामें भी प्रतीयमान होते हैं जैसे कीटक भृंगीका ध्यानकरते वैसाही कहाजाताहै तैसे अहम्बुद्धिकरके भी वैसाही प्रतीत होताहै १८ और जैसे सुषुप्ति अवस्था में अहंकार के नहीं होनेसे संसार नहीं प्रतीतहोताहै तैसेही तत्त्वज्ञान के माहात्म्यकरके जीवन्मुक्त जो पुरुषहै तिसको जीवतेही अहंकारकेअभावसे दुःखशोकादिरूप संसारकी निवृत्तिहोतीहै १९ तिससे हे विभीषण मायाका विकार जो मन तिसकाधर्म जो अहंममतारूप भ्रम तिसको त्यागदेवो और राम रूप जो आत्मा ईश्वर तिसमें मनको स्थिरकरौ अर्थात् जिस परमात्माके मनमें प्रतिबिम्ब होनेसे आत्मत्व व्यवहार प्रतीयमान होरहाहै उस परम त्मामें मनको धारणकरौ अर्थात् तदाकारवृत्ति को करौ २० और हे विभीषण बाहर इंद्रियोंके जे शब्दादिक बिषयहैं तिनमें दोष दृष्टि करके धीरे धीरे उनके संबन्धसे मनको जुदाकरके मायाही करके है२१॥

तत्रदोषान्दर्शयित्वारामानंदेतियोजय ॥ देहबुद्ध्याभवेद्भ्रातापितामातासुहृत्प्रियः २२ विलक्षणंयदादेहात्जानात्यात्मानमात्मना ॥ तदाकःकस्यवाबंधुर्भ्रातामातापितासुहृत् २३ मिथ्याज्ञानवशाज्जाता दारागारादयःसदा ॥ शब्दादयश्चविषयाविविधाश्चैवसम्पदः २४ बलंकोशोभृत्यवर्गोराज्यंभूमिःसुतादयः ॥ अज्ञानजत्वात्सर्वेतेक्षणसंगमभंगुराः २५ अथोत्तिष्ठहृदारामंभावयन्भक्तिभावितम् ॥ अनुवर्तस्वराज्यादिभुंजन्प्रारब्धमन्वहम् २६ भूतंभविष्यदभजन्वर्तमानमथाचरन् ॥ विहरस्वयथान्यायंभवदोषैर्नलिप्यसे २७ आज्ञापयतिरामस्त्वांयद्भ्रातुःसांपरायिकम्॥तत्कुरुष्वयथाशास्त्रंरुदतीश्चापियोषितः २८ ॥

मनुष्यरूप जिसका और सब भूतोंका आत्मा ऐसे जो प्रकृतिसे परे परमानन्दरूप राम तिसके विषे मनको लगावो न कहो परमेश्वरमें मन लगानेसे

भी कैसे संसारकी निवृत्तिहोगी इससे उस प्रकारको कहतेहैं कि देहकी बुद्धि करके भाई और पिता और माता और मित्र और प्रिय यह बुद्धिहोतीहै २२ और परमेश्वरमें मन लगानेसे अन्तःकरण शुद्धद्वारा जब देहसेबिलक्षण न्यारा आत्माको जानताहै तो कौन किसका भाईहै कौन किसकी माताहै कौन किसका पिता कौन किसका मित्रहै २३ क्योंकि झूठेही अज्ञानबशसे स्त्री और गृहादिक और नानाप्रकारके शब्दादिक विषय और धन संपदा २४ और सेना और खजाना और नौकर चाकर और राज्य और भूमि और पुत्रादिक ये सब अज्ञानसे ऊत्पन्न क्षणभंगुरहै ऐसी बुद्धि उत्पन्नहोती है २५ और हे विभीषण इससे भक्तिकरके सदा स्मरणकिया जो राम तिसको निरंतर हृदयके ध्यान करते उठौ और बिना भोगके प्रारब्ध कर्मका क्षय नहीहोता यह जानिकै प्रारब्ध कर्मको भोगतेहुये राज्यादिका पालन करो २६ और कैसे येबन्धु मित्रादिक नष्टहोगये और अब क्या होगा इसप्रकार करके जो व्यतीतहोगया है और जो होनेवालाहै तिसकी चिन्ता नहीं करतेहुये और जो कुछ वर्त्तमान समय में प्राप्त सुख दुःखादि तिसको भोगतेहुये शास्त्रके अनुकूल विहार करो तौ संसार के दोषोंकरके नहीं लिप्तहोउगे २७ और रामकी तुम्हारे वास्ते यह आज्ञाहै कि जो कुछ भाईका पारलौकिक कृत्यहै अर्थात् मरेहुयेका जो कर्म किया जाताहै तिसको शास्त्रकी विधिपूर्वककरौ औ हे श्रेष्ठबुद्धियुक्त रोवतीहुईं जे स्त्रियां हैं तिनको २८ ॥

निवारयमहाबुद्धेलंकांगच्छन्तुमाचिरम् ॥ श्रुत्वायथावद्वचनंलक्ष्मणस्यविभीषणः २९ त्यक्त्वाशोकंचमोहंचरामपार्श्वमुपागमत् ॥ विमृश्यबुद्ध्याधर्मज्ञोधर्मार्थसहितंवचः ३० रामस्यैवानुवृत्त्यर्थमुत्तरंपर्यभाषत ॥ नृशंसमनृतंक्रूरंत्यक्तधर्मव्रतम्प्रभो ३१ नार्होऽस्मिदेवसंस्कर्तुम्परदाराभिमर्शिनम् ॥ श्रुत्वातद्वचनम्प्रीतोरामोवचनमब्रवीत् ३२ मरणान्तानिवैराणिनिर्वृत्तन्नःप्रयोजनम् ॥ क्रियतामस्यसंस्कारोममाप्येषयथातव ३३ रामाज्ञांशिरसाधृत्वाशीघ्रमेवविभीषणः ॥ सान्त्ववाक्यैर्महाबुद्धिराज्ञीम्मन्दोदरीन्तदा ३४ सान्त्वयामासधर्मात्माधर्मबुद्धिर्विभीषणः ॥ त्वरयामासधर्मज्ञःसंस्कारार्थस्वबांधवान् ३५ ॥

निवारणकरो जिससे शीघ्रही लंकाको जावें अब बिभीषण जैसे कुछ लक्ष्मणजीने वचन कहे तिनको सुनिकै २९ शोक और मोह इनको त्यागि कै रामके समीप जाताहुआ और धर्मज्ञ जो बिभीषण सो उससमयकेयोग्यबुद्धि

से विचार करके ३० रामकी सम्मतिके धर्म और अर्थ तिनकरके सहित जो वचनहैं तिनको बोलताहुआ कि हेप्रभोहिंसाकरनेवाला और झूंठबोलनेवाला और क्रूर और त्यागकरा धर्मकासंकल्प जिसने और बिरानी स्त्रियाओंका सेवन करनेवाला ऐसा जो रावण है तिसको मैं संस्कारकरनेके योग्य नहींहौं ३१ तब यह विभीषणका वचन सुनिके प्रसन्नहोके श्रीराम बचन बोलतेहुये ३२ कि हे विभीषण मरण पर्यंत बैरहुआकरते हैं सो रावणके मारनेसे मेरा प्रयोजन सिद्धहोगया अब तौ यह जैसा तेराभाईहै तैसे मेराभी है इससे मेरी सम्मतिहै कि इसका संस्कार करनाचाहिये इसका अभिप्राययहहै कि रावणसे मेरावास्तवविरोधनहीं क्यातौ प्रकृतिमात्रकाविरोधथाजिसप्रकृतिसे रावणदेवता और ब्राह्मण और धर्मइनसेविरोध करताथा सोअबवहरावणकी आसुरीराक्षसी प्रकृति संग्राम में मेरे बाणों के मारने से और अंत समयमें मेरे स्वरूप के दर्शन से शांतहोगई और दैवीप्रकृति प्राप्तहुई तौ कहां बैर विरोधका अवसर रहा ३३ अब विभीषण रामकी आज्ञा को शिरसे धारण करके शांतिके वचनों करके श्रेष्ठबुद्धि जो मन्दोदरीरानी तिसको ३४ सावधान करताहुआ फिर वह धर्मात्मा विभीषण अपने बांधवों का दाहादि संस्कार करने को उद्यत होता हुआ ३५ ॥

चित्यांनिवेश्यविधिवत्पितृमेधविधानतः ॥ आहिताग्नेर्यथाकार्यं रावणस्यविभीषणः ३६ तथैवसर्वमकरोद्बन्धुभिःसहमन्त्रिभिः । ददौ चपावकंतस्यविधियुक्तंविभीषणः ३७ स्नात्वाचैवार्द्रवस्त्रेणतिलान्दर्भाभिमिश्रितान् ॥ उदकेनचसंमिश्रान्प्रदायविधिपूर्वकम् ३८ प्रदायचोदकंतस्मैमूर्ध्नाचैनंप्रणम्यच॥ताःस्त्रियोनुनयामाससांत्वमुक्त्वा पुनःपुनः ३९ गम्यतामितिताःसर्वाविविशुर्नगरंतदा ॥ प्रविष्टासुच सर्वासुराक्षसीषुविभीषणः ४० रामपार्श्वमुपागत्यतदातिष्ठद्विनीतवत् ॥ रामोपिसहसैन्येनसुग्रीवःसहलक्ष्मणः ४१ हर्षंलेभेरिपून्हत्वायथावृत्रंशतक्रतुः ॥ मातलिश्चतदारामंपरिक्रम्याभिवंद्यच४२॥

फिर जैसे शास्त्रमेंकहाहै तैसे रावणको चितामेंस्थापनकर अग्निहोत्र यज्ञ करनेवालेका जैसाकर्महोताहै तैसे विभीषण करताहुआ ३६ और मंत्री और बन्धुओंकरके सहित जो विभीषण सो रावणका अग्निदाहकरताहुआ ३७ फिर विभीषणस्नानकरके वैसेई ओदेवस्त्रसहित मंत्रपूर्वक कुशातिलयुक्त जलांजली को विधिपूर्वक ३८ रावणकेअर्थदेकै और शिरकरके उसको प्रणामकरके बारंबार शांतिके वचनोंकरके मन्दोदरीआदि जे रावणकी रानियांहैं तिनको सम-

भ्राताहुआ ३९ फिर विभीषणकी आज्ञासे सबवेस्त्रियांलंकामें प्रवेशकरतीहुई फिर जब वे सबराक्षसी लंकामें प्रविष्ट होगई तब विभीषण ४० रामकेसमीप आके नम्रहो स्थितहोताहुआ अब श्रीरामभी सेना और सुग्रीव लक्ष्मणकरके सहित ४१ शत्रुओंको मारके परम आनन्द को प्राप्तहोतेहुये जैसे वृत्रासुर को मारके इन्द्र आनन्द को प्राप्तहुये अब उस समय में मातलि सारथी राम की परिक्रमा करके और प्रणाम करके ४२ ॥

अनुज्ञातश्चरामेणययौस्वर्गंविहायसा ॥ ततोहृष्टमनारामोलक्ष्मणंचेदमब्रवीत् ४३ विभीषणायमेलंकाराज्यंदत्तंपुरैवहि ॥ इदानीमपिगत्वात्वंलंकामध्येविभीषणम् ४४ अभिषेचयविप्रैश्चमंत्रवद्विधिपूर्वकम् ॥ इत्युक्तोलक्ष्मणस्तूर्णंजगामसहवानरैः ४५ लंकांसुवर्णकलशैःसमुद्रजलसंयुतैः ॥ अभिषेकंशुभंचक्रेराक्षसेंद्रस्यधीमतः ४६ ततःपौरजनैःसार्द्धंनानोपायनपाणिभिः ॥ विभीषणःससौमित्रिरुपायनपुरस्कृतः ४७ दण्डप्रणाममकरोद्रामस्याक्लिष्टकर्मणः ॥ रामोविभीषणंदृष्ट्वाप्राप्तराज्यंमुदान्वितः ४८ कृतकृत्यमिवात्मानममन्यतसहानुजः ॥ सुग्रीवंचसमालिंग्यरामोवाक्यमथाब्रवीत् ४९ ॥

रामकी आज्ञालैकै आकाश मार्ग करके स्वर्गको जाताहुआ तब श्रीराम प्रसन्नमनहोके लक्ष्मणसे यहवचन कहतेहुये४३ कि हेलक्ष्मणविभीषणकेअर्थ लंकाकाराज्य मैं पहिलेईदेचुकाहौं तौभी इस समयमें तुमजाके लंकाकेमध्य में ४४ मंत्रोंके जाननेवाले जे ब्राह्मण तिन करके विधिपूर्वक विभीषणकाअभिषेक करावो इसप्रकार रामकी आज्ञाको प्राप्त जो लक्ष्मण सो बानरोंकरके सहित लंकाकोजाके ४५ समुद्रकेजलसे भरेहुये जे सुवर्णकेकलश तिन करके बुद्धिमान् जो विभीषण तिसकाअभिषेक करातेहुये ४६ तिसके उपरांत नाना प्रकारकी भेंटें हैं जिनके हाथों में ऐसे जे पुरवासी तिनको साथ लैकै और लक्ष्मणकरके सहित विभीषण आपभी भेंटलैकै रामके समीप आके ४७ श्रीरामको दण्डवत् प्रणाम करताहुआ और श्रीरामभी प्राप्तहुआहै राज्य जिसको ऐसेविभीषणको देखके आनंदयुक्तहोके ४८ लक्ष्मण करके सहित अपना को कृतकृत्य मानतेहुये और सुग्रीव को आलिंगन करके वचन बोलतेहुये ४९ ॥

सहायेनत्वयावीरजितोमेरावणोमहान् ॥ विभीषणोपिलंकायामभिषिक्तोमयानघ ५० ततःप्राहहनूमंतंपार्श्वस्थंविनयान्वितम् ॥ विभीषणस्यानुमतेगच्छत्वंरावणालयम् ५१ जानक्यैसर्वमाख्या

ह्रिरावणस्यवधादिकम् ॥ जानक्याःप्रतिवाक्यंमेशीघ्रमेवनिवेदय५२ एवमाज्ञापितोधीमान्रामेणपवनात्मजः॥ प्रविवेशपुरींलंकांपूज्यमानो निशाचरैः५३ प्रविश्यरावणगृहंशिंशपामूलमाश्रिताम्॥ददर्शजानकीं तत्रकृशांदीनामनिंदिताम्५४राक्षसीभिःपरिवृतांध्यायंतींराममेवहि॥ विनयावनतोभूत्वाप्रणम्यपवनात्मजः ५५ कृतांजलिपुटोभूत्वाप्रह्वो भक्त्याग्रतःस्थितः ॥ तंदृष्ट्वाजानकीतूष्णींस्थित्वापूर्वस्मृतिंययौ५६॥

कि हे वीर तुम्हारे सहायकरके वडाभारी भी रावण मैंने जीता और तुम्हारेही सहाय से विभीषण का लंकामें अभिषेक भी किया ५० अब तिसके उपरांत श्रीराम समीप स्थित विनययुक्तजो हनुमान् तिससे बोलते हुये कि हे हनुमन् विभीषण की सम्मतिसे अर्थात् सलाहसे तुम रावण के गृहमें जावो ५१ फिर वहां जाके जो कुछ रावणवधादिक वृत्तहै तिसको सीता से कहो फिर सीता सुनिकै जोकुछ प्रत्युत्तरकहै उसको मुझसे आके कहौ ५२ इसप्रकार रामकी आज्ञाको प्राप्त जो वड़ाबुद्धिमान् हनुमान् सो राक्षसों करके सत्कारकियागया लंकापुरीमें प्रवेशकरताहुआ ५३ फिर हनुमान् रावण के गृहमें प्रवेशकरके वहां शिंशपावृक्षके मूलको आश्रयण करके स्थित अत्यन्त दुर्बल और दुःखित और दोषरहित ऐसी जो सीता तिसको देखतेहुये ५४ और राक्षसियों करके वेष्टित और केवल रामहीका ध्यान करतीहुई जो सीतातिसको नम्रहोके प्रणाम करके हनुमान् भक्तिकरके और हाथ जोड़े हुये अगाडी खड़े होतेहुये ५५ फिर तिस हनुमान् को सीतादेखके मौनवैठी हुई पहिले मैंने कभी देखाहै ऐसा स्मरण करतीहुई ५६ ॥

ज्ञात्वातंरामदूतंसाहर्षात्सौम्यमुखीभवत् ॥ सतांसौम्यमुखींदृष्ट्वा तस्याःपवननंदनः ॥ रामस्यभाषितंसर्वमाख्यातुमुपचक्रमे ५७ देवि रामःससुग्रीवोविभीषणसहायवान् ॥ कुशलीवानराणांचसैन्यैश्चस हलक्ष्मणः ५८ रावणंससुतंहत्वासबलंसहमंत्रिभिः ॥ त्वामाहकुश लंरामोराज्येकृत्वाविभीषणम् ५९ श्रुत्वाभर्तुःप्रियंवाक्यंहर्षगद्गद याגिरा ॥ किंतेप्रियंकरोम्यद्यनपश्यामिजगत्त्रये ६० समंतेप्रियवा क्यस्यरत्नान्याभरणानिच॥एवमुक्तस्तुवैदेह्याप्रत्युवाचप्लवंगमः ६१ रत्नौघाद्विविधाद्वापिदेवराज्याद्विशिष्यते ॥ हतशत्रुंविजयिनंरामंप श्यामिसुस्थिरम् ६२ तस्यतद्वचनंश्रुत्वामैथिलीप्राहमारुतिम् ॥ सर्वेसौम्यागुणाःसौम्यत्वय्येवपरिनिष्ठिताः ६३ ॥

फिर कुछकालमें हनुमान्‌को रामदूत जानिके आनन्दसे शोकरहितहै मुख जिसका ऐसी सीता होतीहुई तब हनुमान् सीताको प्रसन्न देखके उससेराम का बचन कहता हुआ ५७ कि हे देवि सुग्रीवसहित और बिभीषण सहित और लक्ष्मणसहित और वानरोंकी सेनासहित जो रामहैं सोबड़ीकुशल पूर्वक हैं ५८ और पुत्र और सेना और मंत्रियों करकेसहित रावणको मारके और विभीषण को राज्यमें स्थापनकरके राम तुझसे कुशल पूंछतेहैं ५९ अब सीता जी भर्ता जोश्रीराम तिसकाकहाहुआ हनुमान्‌के मुखसे बचनसुनकै हर्षकरके गद्गदहुई जो बाणी तिसकरके बचन बोलती हुई कि हे हनुमन् जो तुमने इस समयमें मुझको प्रियवचन सुनायाहै इसकेसमान अर्थात् इसकेबदले में तीनों लोकमें जेरत्न आभरणादिकवस्तुहैं तिनको मैं देके उद्धारहोउँ ६० यह नहीं देखती फिरक्या देवों अर्थात्तेरे इस प्रियबचन सुनाने के ऋणसे उद्धारनहीं होवोंगी अब यहां सकल लोकोंकी अधीश्वरी जो सीता तिसके यह बचन कहनेका यह आशयहै कि जिस मेरे प्रभावकरके सब जगत् मोहित होरहाहै सो मेरे प्रसादसे तुझको कोई संसारमें बन्धन न करै और मेरे गुणोंसे परे जोपरमानन्दसन्दोह राम तिसमें सदा मग्नरहैगा और मेरी कृपासे मेरे रचे हुये सबलोकों की संपदाओं के देदेनेकी भी तेरीसामर्थ्य होगी यह सूचित किया अब ऐसा जब सीताजीने कहा तौ हनुमान्‌बोला ६१ कि हे मातः जो मैंमारेहैं रावणादिक शत्रुजिसनेऐसाजो विजययुक्त सदा एकरस राम तिसको देखताहूं सो रत्नोंके समूहसे और सब देवताओंकी राज्यसे भी विशेषहै अर्थात् मुझको रामसे अधिकप्रिय वस्तु नहीं देखपड़ती इस हनुमान् के कहनेका यह आशयहै कि ब्रह्मानन्दमें सब आनन्द अन्तर्गत होरहे हैं इससे जब सर्व आनन्दोंका समूह परब्रह्म रामहीको परप्रेमास्पदरूपकरके देखरहाहौं तौ झूठेराज्य रत्नादिक मुझको क्या सुख देसक्ते हैं नहीं कहींसांचे रत्नोंके प्रभा- वको जानके और फिर उनको प्राप्तहोके फिरझूंठे कांचादि रत्नोंकी इच्छा करताहै ६२ अब हनुमान्‌के येबचन सुनिकै सीता बचनबोलतीहुई कि हे सौम्य हे चन्द्रतुल्य प्रियदर्शन येचन्द्रमाके तुल्य आनन्ददायक गुणतुम्हारे मेंही दिखाईदेतेहैं ६३ ॥

रामंद्रक्ष्यामिशीघ्रम्मामाज्ञापयतुराघवः ॥ तथेतितांनमस्कृत्यय यौद्रष्टुंरघूत्तमम् ६४ जानक्याभाषितंसर्वंरामस्याग्रेन्यवेदयत् ॥ यन्नि मित्तोयमारंभःकर्म्मणांचफलोदयः ६५ तांदेवींशोकसंतप्तांद्रष्टुमर्हसि मैथिलीम् ॥ एवमुक्तोहनुमताराभोज्ञानवतांवरः ६६ मायासीतांपरि

त्यक्तुंजानकीमनलेस्थिताम् ॥ आदातुंमनसाध्यात्वारामःप्राहविभी
षणम् ६७ गच्छराजन्जनकजामानयाशुममांतिकम् ॥ स्नातांवि
रजवस्त्राढ्यांसर्वाभरणभूषिताम् ६८ विभीषणोऽपितच्छ्रुत्वाजगाम
सहमारुतिः ॥ राक्षसीभिःसुवृद्धाभिःस्नापयित्वातुमैथिलीम् ६९
सर्वाभरणसम्पन्नामारोप्यशिविकोत्तमे ॥ याष्टिकैर्बहुभिर्गुप्तांकंचुको
ष्णीषिभिःशुभाम् ७० ॥

अब राम के दर्शन करने की मेरी इच्छा है सो शीघ्रही राम आज्ञाकरैं यह कहो तब हनुमान् उसी समय में सीता को प्रणामकर के राम के देखने को गया ६४ फिर सीताजी का जो वचन है सो सब राम से हनुमान् कहते हुये और यह वोले कि हे राम जिस सीताके कारण से इसयुद्ध का आरम्भ किया गया था तिसके फल की सिद्धिरूप जो शोक संतप्त सीताहै तिसको ६५ आप देखने के योग्यहो ऐसे जब हनुमान् ने कहा तौ जाननेवालों में श्रेष्ठ जो श्री रामचन्द्र सो ६६ मायारूपिणी जो सीता तिसको परित्यागकरने को और अग्नि में स्थित जो सत्य सीता तिसको ग्रहण करने को मनसे ध्यान करके विभीषण से वोलते हुये ६७ कि हे राजन् शीघ्रही तुम जाओ और सीताको स्नान करवाके और नवीन वस्त्र और आभूषणों करके भूषित कर मेरे समी-प शीघ्रही प्राप्त करो ६८ अब बिभीषण यह राम का वचन सुनि कै हनुमान् करके सहित वहां जातेहुये और वृद्ध राक्षसियों करके सीता को स्नान करवा के ६९ फिर सम्पूर्ण वस्त्र और आभूषणों करके भूषित कर श्रेष्ठ पालकी पै सवार कराके और जामा और पगड़ियोंको धारणकरे जे आशा वल्लम छड़ी-दार मनुष्य तिन्हों करके रक्षा करवाते हुये ७० ॥

तांद्रष्टुमागताःसर्वेवानराजनकात्मजाम् ॥ तान्वारयंतोबहवःसर्व
तोवेत्रपाणयः ७१ कोलाहलंप्रकुर्वंतोरामपार्श्वमुपाययुः ॥ दृष्ट्वातां
शिविकारूढांदूरादथरघूत्तमः ७२ विभीषणकिमर्थंतेवानरान्वारयं
तिहि ॥ पश्यन्तुवानराःसर्वेमैथिलींमातरंयथा ७३ पादचारेणसाया
तुजानकीममसन्निधिम् ॥ श्रुत्वातद्रामवचनंशिविकाद्ववरुह्यसा ७४
पादचारेणशनकैरागतारामसन्निधिम् ॥ रामोपिदृष्ट्वातांमायासीतां
कार्यार्थनिर्मिताम् ७५ अवाच्यवादान्वहुशःप्राहतांरघुनन्दनः ॥ अ
मृष्यमाणासासीतावचनंराघवोदितम् ७६ लक्ष्मणंप्राहमेशीघ्रम्प्र
ज्वालयहुताशनम्॥विश्वासार्थंहिरामस्यलोकानांप्रत्ययायच ७७॥

फिर जब सीता मनुष्यों करके रक्षित रामके समीप चलने लगी तौ वानर सीता के दर्शन करने को आतेहुये तिन बानरों को बेंत धारण करे बिभीषण के मनुष्य चारों तरफ से वारण करतेहुये ७१ फिर वे वानर आदि सब परस्पर शब्द करते हुये राम के समीप आतेहुये तब श्रीरामचन्द्र दूरसे पालकी पै चढ़े हुये आते सीता को देखके विभीषणसे बोले ७२ कि हे विभीषण किस वास्ते इन सब बानरों को सीता के देखने को मना करतेहौ सब वानर सीता को देखैं जैसे कोई माता को देखता है ७३ और पांवों पांवों सीता मेरे समीप आवैं अब यह राम का बचन सुनि कै सीता पालकी से उतर के ७४ धीरे २ पांवों ही से राम के समीप आती हुई अब राम भी रावण वधरूप कार्य के अर्थ निर्माण करी हुई मायारूपिणी जो सीता तिस को देख के ७५ बहुत से दुर्वचन अर्थात् जो कहनेयोग्य नहीं ऐसे कहतेहुये फिर उन बचनोंको नहीं सहती हुई जो निर्दोष जगन्माता सीता ७६ सो लक्ष्मण से कहती हुई कि हे लक्ष्मण राम को जिस में विश्वास होवै इसकेलिये और सब लोकों की प्रतीति के अर्थ तुम शीघ्र ही अग्नि को प्रज्वलित करौ ७७ ॥

राघवस्यमतंज्ञात्वालक्ष्मणोपितदैवहि ॥ महाकाष्ठचयंकृत्वाज्वालयित्वाहुताशनम् ७८ रामपार्श्वमुपागम्य तस्थौतूष्णीमरिन्दमः॥ ततःसीतापरिक्रम्यराघवम्भक्तिसंयुता ७९ पश्यतांसर्वलोकानांदेवराक्षसयोषिताम्॥ प्रणम्यदेवताभ्यश्चब्राह्मणेभ्यश्चमैथिली ८० बद्धांजलिपुटाचेदमुवाचाग्निसमीपगा ॥ यथामेहृदयंनित्यंनापसर्पति राघवात् ८१ तथालोकस्यसाक्षीमांसर्वतःपातुपावकः॥ एवमुक्तातदासीतापरिक्रम्यहुताशनम् ८२ विवेशज्वलनंदीप्तन्निर्भयेनहृदासती ८३ दृष्ट्वाततोभूतगणाःससिद्धाःसीतांमहावह्निगतांभृशार्ताः ॥ परस्परंप्राहुरहोससीतांरामःश्रियंस्वांकथमत्यजज्ज्ञः ८४ ॥

इत्यध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेद्वादशःसर्गः १२ ॥

फिर लक्ष्मण भी उसीसमय में रामके मनका अभिप्राय जानके बड़ाभारी काष्ठ के समूहको करके और उसमें अग्नि प्रज्वलित करके ७८ रामके समीप आके मौनहो स्थितहोतेहुये तब भक्तियुक्तसीता श्रीरामकी परिक्रमाकरके ७९ सब लोकों के देखते देखते और सब देवता और राक्षस इनकी स्त्रियों के देखते२सीता सबदेवताओं के अर्थ और सबब्राह्मणोंकेअर्थ प्रणामकरके ८० बलतीहुई अग्निके समीप जाके हाथ जोड़ के खड़ीहुई सीता यह वचन बोलतीहुई कि जो मेरामन श्रीरामसे औरमें कभी न जाताहोय ८१ तौ सब

लोकका साक्षी जो यह अग्नि सो मुझको सब प्रकारसे रक्षाकरै अर्थात् मेरा रोमतक न भस्मकरै अर्थात् शीतल होजाय इसप्रकार सीता उससमयमें कह के और अग्निकी परिक्रमा करके ८२ प्रज्वलित जो अग्नि तिसमें निर्भय हृदय से प्रवेश करतीहुई ८३ तब उस समयमें सिद्धगणों करके सहित सब देव वानर राक्षसादि प्राणी सीताको अग्निमें प्रविष्ट देखके बहुत पीड़ित होके परस्पर यह कहते हुये कि बड़ा आश्चर्यहै कि राम सर्वज्ञ होके कैसे अपनी नित्य लक्ष्मी जो सीता तिसको अग्निमें प्रवेशकरने की आज्ञा देतेहुये ८४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डे
भाषाटीकायांद्वादशस्सर्गः १२ ॥

ततःशक्रःसहस्राक्षोयमश्चवरुणस्तथा ॥ कुबेरश्चमहातेजाः पिनाकीवृषवाहनः १ ब्रह्माब्रह्मविदांश्रेष्ठोमुनिभिःसिद्धचारणैः ॥ पितरोऋषयःसाध्यागन्धर्वाप्सरसोरगाः २ एतेचान्येविमानाग्र्यैराजग्मुर्यत्रराघवः ॥ अब्रुवन्परमात्मानंरामंप्रांजलयश्चते ३ कर्त्तात्वंसर्वलोकानांसाक्षीविज्ञानविग्रहः ॥ वसूनामष्टमोसित्वंरुद्राणांशंकरोभवान् ४ आदिकर्त्तासिलोकानांब्रह्मात्वंचतुराननः ॥ अश्विनौघ्राणभूतौतेचक्षुषीचन्द्रभास्करौ ५ लोकानामादिरंतोसिनित्यएकःसदोदितः ॥ सदाशुद्धःसदाबुद्धःसदामुक्तगुणोद्वयः ६ त्वन्मायासंवृतानांत्वंभासिमानुषविग्रहः ॥ त्वन्नामस्मरतांरामसदाभासिचिदात्मकः ७ ॥

सो० सर्ग तेरहें राम अग्निदत्त सीता सहित ॥
चलेस्वपुरसुखधामसुखवन्दितजीवितकटक १

अब श्रीमहादेवजी पार्वतीजी से कथा वर्णन करैहैं हे पार्वती फिर तिसके उपरांत सहस्र हैं नेत्र जिसके ऐसा जो इन्द्र और यमराज और वरुण और कुबेर और बड़े तेजस्वी जो बैलपै चढ़े महादेव १ और वेदके जानने वालोंमें श्रेष्ठ जो सिद्धचारण और मुनियों करके सहित ब्रह्मा और पितृगण और ऋषि और साध्य और गन्धर्व और अप्सरा और उरग २ इनको आदि लेके सब देवगण श्रेष्ठ विमानोंपै चढ़िकै जहां रामचन्द्र स्थितरहे तहां सब आवतेहुये और सब हाथ जोड़के परमात्मा जो रामहैं तिनसे बोलतेहुये ३ कि हे राम तुम सब लोकोंके रचनेवालेहौ और अन्तर्य्यामि रूपकरकेसबके देखनेवालेहौ और विज्ञानस्वरूपहौ और वसुदेवताओंके मध्यमें अष्टमवसु तुमही हौ और ग्यारह रुद्रोंमें शंकर आपहीहौ ४ और सब लोकोंके आदि कर्त्ता चतुरानन ब्रह्मा तु-

महीहौ और अश्विनीकुमार तुम्हारी घ्राण इन्द्रियहैं और चन्द्रमा और सूर्य तुम्हारे नेत्रहैं ५ और सब लोकोंके उत्पत्ति कर्त्ता और संहार कर्त्ता तुमहीं हौ और सदा उदयको प्राप्त अर्थात् रात्रि दिन व्यवहार रहितहौ और नित्य हौ और एकहौ और सदा शुद्धहौ अर्थात् मायाके गुणों करके स्पर्श नहीं करे गये हौ और इसीसे सदा बुद्धहौ ज्ञानस्वरूपहौ और इसीसे सदा मुक्तहौ अर्थात् संसारी नहींहौ औ गुणों करके रहितहौ और अद्वयहौ द्वैतभावकरके रहितहौ ६ औ जे कोई तुम्हारी माया करके आच्छादितहोरहेहैं तिनको मनुष्य विग्रह मालूम पड़तेहौ और जे कोई तुम्हारे नामका स्मरण करतेहैं तिनको शुद्ध ज्ञान स्वरूप विदित होतेहो ७ ॥

रावणेनहृतंस्थानमस्माकंतेजसासह ॥ त्वयाद्यनिहतोदुष्टःपुनः प्राप्तम्पदंस्वकम् ८ एवंस्तुवत्सुदेवेषुब्रह्मासाक्षात्पितामहः ॥ अब्रवीत्प्रणतोभूत्वारामंसत्यपथेस्थितम् ९ ब्रह्मोवाच ॥ वंदेदेवंविष्णुमशेषस्थितिहेतुंत्वामध्यात्मज्ञानिभिरंतर्हृदिभाव्यम् ॥ हेयाहेयद्वन्द्वविहीनंपरमेकंसत्तामात्रंसर्वहृदिस्थंदृशिरूपम् १० प्राणापानौनिश्चयबुद्ध्याहृदिरुध्वाछित्वासर्वंसंशयबंधंविषयौघान् ॥ पश्यंतीशंयंगतमोहायतयस्तंवंदेरामंरत्नकिरीटंरविभासम् ११ मायातीतंमाधवमाद्यंजगदादिंमानातीतंमोहविनाशंमुनिवन्द्यम् ॥ योगिध्येयंयोगविधानंपरिपूर्णंवंदेरामंरंजितलोकंरमणीयम् १२ भावाभावप्रत्ययहीनंभवमुख्यैर्भोगाशक्तैरर्चितपादांबुजयुग्मम् ॥ नित्यंशुद्धंबुद्धमनंतंप्रणवाख्यंवंदेरामंवीरमशेषासुरदावम् १३ त्वंमेनाथोनाथितकार्याखिलकारीमानातीतोमाधवरूपोखिलधारी ॥ भक्त्यागम्योभावितरूपोभवहारी योगाभ्यासैर्भावितचेतःसहचारी १४ ॥

और हे भगवन् रावणने तेजकरके सहित हमारा स्थान हरलिया रहा सो दुष्ट अब आपनेमारा और फिर अपना स्थान और तेज हमको प्राप्त हुआ ८ जब इस प्रकार देवता स्तुति करते थे उसी समयमें लोक पितामह जो साक्षात् ब्रह्मा सो नम्र होके सत्यमार्गमें स्थित जो राम तिनसे बोलतेहुये ९ कि हे राम सबके पालनमें कारणभूत विष्णुरूप जो तुमहौ तिसकी मैं वन्दना करताहौं अर्थात् प्रणाम करताहौं कैसेहौ जो तुम आत्म ज्ञानियोंकरके हृदयमें भावना कियेगयेहौ अर्थात् ध्यानद्वारा जानेगयेहौ और हेयाहेय अर्थात् त्याग करने योग्य और ग्रहणकरने योग्य जो दुःखसुख पाप पुण्यादिरूप द्वन्द्व तिस

करके रहितहौ और सबसेपरेहौ और अद्वितीयहौ और कूटस्थहोनेसे सत्तामात्र हौ और सबके हृदय में स्थितहौ और ज्ञान स्वरूपहौ १० और हे राम प्राण जो नासिकाकेद्वारा निकसनेवाला पवनहै और अपान जो गुदाके द्वारा निकसनेवाला पवनहै इनको हृदयमें निश्चय बुद्धिकरके अर्थात् हठयोगकरके प्राणायामद्वारा हम ईश्वरका दर्शन करेंगे ऐसा निश्चयकरके प्राण और अपान वायु इनको हृदयमें रोकके और है किंवा नहीं है और है भी तौ ज्ञान स्वरूप है अथवा शरीरी है ऐसा जो ईश्वर विषयक सर्वसन्देह तिसको श्रवण मननादि करके छेदनकरके और वैराग्यकरके सब विषयोंका छेदनकरके नष्टहुआ है मोह जिनका ऐसे संन्यासीलोग जिस रामको देखते हैं तिसको मैं प्रणाम करताहूँ कैसाहै जो रत्नोंकरके जटित जो मुकुट तिसको धारण करेहै और सूर्य के तुल्य जिसका प्रकाशहै अथवा सूर्यकाभी जो प्रकाशकहै ११ और जो राम मायातीतहै अर्थात् मायाकेगुणोंकरके स्पर्श नहीं कियाजाता और लक्ष्मीका पतिहै और जो जगत्का परमकारणहै और जो देशकालादि परिच्छेदकरके रहित है अर्थात् इतनेही देशमें है और इसीसमयमें है ऐसेव्यवहारकरके रहितहै और अपने सेवकों के मोहका नाशकरने वालाहै और मुनियों करके बन्दनीय और योगियोंके ध्यानकरने योग्य और योगशास्त्रका प्रवर्तक और सर्वत्र परिपूर्ण और अपने गुणों करकेप्रीति युक्तकराहै लोक जिसने ऐसा जोरमणीय अति सुन्दर राम तिसकीस्तुति मैंकरताहूं १२ और जोभाव दृश्यपदार्थ और अभावजोअति तुच्छ इनदोनोंके ज्ञानका अविषयहै और त्यागकरेहैं भोग जिन्होंने ऐसे जोशिवादिकतिनकरके पूजितहै चरणारविन्दजिसका और जोनित्यहै तीनकालकरके अबाध्यहै अर्थात् सबकालमें एकसाहीहै और जोशुद्धहै मायारहितहै और बुद्धहै ज्ञानरूपहै और जोअनन्तहै देशकालादि परिच्छेद रहितहै और प्रणवॐकार है नाम जिसका ऐसा जोसब असुरोंका अग्नि तुल्य नाशकबीर राम तिसकी मैं वन्दना करताहूं १३ और हे भगवन् तुम मेरे नाथहौ और जो मैंने पृथिवीका भार दूरकरनेकी प्रार्थनाकीथी तिसके करने वालेहौ और देशकाल वस्तुइन तीन परिच्छेद करके रहितहौ और लक्ष्मीके पतिहौ और सबके धारणकरने वाले हौ औ केवल अनन्य भक्तिहीकरके प्राप्तहोतेहौ और जो कोई तुम्हारारूप हृदयमें ध्यानकरताहै उसके संसार दुःखके हरनेवालेहौ और योगाभ्यासकरके शुद्धकियागया जो चित्त तिसमें विचरनेवालेहौ अर्थात् उसीमेंजानेजातेहौ १४॥

त्वामाद्यन्तंलोकततीनांपरमीशं लोकानांनोलौकिकमानैरधिगम्यम्॥ भक्तिश्रद्धाभावसमेतैर्भजनीयंवन्देरामंसुन्दरमिंदीवरनीलम्१५ कोवाज्ञातुंत्वामतिमानंगतमानं मानासक्तोमाधवशक्तोमुनिमान्यम्॥

वृन्दारण्येवन्दितवृन्दारकवृन्दंवन्देरामंभवमुखवन्द्यंसुखकन्दम् १६ नानाशास्त्रैर्वेदकदम्बैःप्रतिपाद्यं नित्यानन्दंनिर्विषयज्ञानमनादिम् ॥ मत्सेवार्थमानुषभावम्प्रतिपन्नं वन्देरामम्मरकतवर्णंमथुरेशम् १७ श्रद्धायुक्तोयःपठतीमंस्तवमाद्यं ब्राह्मम्ब्रह्मज्ञानविधानम्भुविमर्त्यः ॥रामं श्यामङ्कामितकामप्रदमीशं ध्यात्वाध्यातापातकजालैर्विगतःस्यात् १८ श्रुत्वास्तुतिंलोकगुरोर्विभावसुःस्वांकेसमादायविदेहपुत्रिकाम् ॥ विभ्राजमानांविमलारुणद्युतिंरक्ताम्बरांदिव्यविभूषणान्विताम् १९ प्रोवाचसाक्षीजगतांरघूत्तमंप्रपन्नसर्वार्त्तिहरंहुताशनः ॥ गृहाणदेवीं रघुनाथजानकींपुरात्वयामय्यवरोपितांवने २० विधायमायाजनकात्मजांहरेदशाननप्राणविनाशनायच ॥ हतोदशास्यःसहपुत्रबांधवैर्निराकृतोनेनभरोभुवःप्रभो २१ ॥

और जोलोकोंकी परम्पराका सृष्टिसंहार करने वालाहै और जोलोकोंका पालनका हेतुहै और जोलौकिक प्रमाणों करके नहीं जानाजाताहै अर्थात् शास्त्रहीकरके जानाजाताहै और जो भक्ति श्रद्धादियुक्त पुरुषोंके सेवनकरिबेयोग्यहै ऐसा जो नीलकमल तुल्य सुन्दरराम तिसकी मैं स्तुति करताहूं१५और हेराम कौन इन्द्रियरूप प्रमाणोंमें आसक्त पुरुषसर्वव्यापक और इतनेहौ ऐसे जानने को अशक्य जोतुमहौ तिसको जाननेको समर्थ होय और हेमाधव मुनियोंके माननीय और वृन्दावनमें कृष्णरूप करके बन्दना करेहै देवताओं के समूह जिसने ऐसा जोशिवादिक करके स्तुति कियागया सुखकन्दराम तिसको मैं प्रणाम करताहूं १६ और नानाशास्त्रों करके निर्णय कियाहै अर्थ जिन्होंका ऐसे जोवेद समूह तिन्होंकरके जोप्रतिपादन करिबे योग्य और नित्यानन्द स्वरूप और बिषयरहित ज्ञानका बिषय और आदि रहित और मेरी सेवाकेअर्थ मनुष्य भावको प्राप्त ऐसा जोमथुराका ईश मरकतमणि सदृशराम तिसकी मैं बंदनाकरताहूं १७ जो पृथिवी में श्रद्धायुक्त पुरुष सकल अभीष्टकामना के देनेवाले श्यामसुन्दर रामको ध्यानकरके इसब्रह्माके कियेहुए ब्रह्मज्ञानकेकरनेवाले स्तोत्रको पढ़ता है सो संपूर्ण पातकजालों से रहितहोता है १८ अब इसकेउपरांत अग्नि स्वरूपको धारणकरके और ब्रह्माकी स्तुतिसुनके प्रकाशमान निर्मलहै कान्ति जिसकी औ रक्तबस्त्रोंको धारणकरे और दिव्यआभूपणों को धारणकरे ऐसी जो जनकनन्दिनी तिसको गोदीमेंलेके १९ जगत्साक्षीजो हुताशन सो शरणागत पुरुषोंकी आर्तिहरनेवाले रामसे बचन बोलताहुआ कि हेरघुनाथ जो आपने पहिले बनमें मेरेको सौंपीथी उस अपनीसीतादेवी

को ग्रहणकीजिये २० और हेहरे रावणके नाशकेलिये मायारूपिणी सीताको रचिके पुत्र बांधवोंकरके सहित रावणका वधकिया और इस रावणके वध करके पृथिवीका भार आपने दूरकिया २१ ॥

तिरोहितासाप्रतिविम्बरूपिणीकृतायदर्थंकृतकृत्यतांगता ॥ ततोतिहृष्टांपरिगृह्यजानकींरामःप्रहृष्टःप्रतिपूज्यपावकम् २२ स्वांके समावेश्यसदानपायनींश्रियंत्रिलोकीजननींश्रियःपतिः ॥ दृष्ट्वाथरामंजनकात्मजायुतंश्रियास्फुरंतंसुरनायकोमुदा २३ भक्त्यागिरागद्गदयासमेत्य कृतांजलिःस्तोतुमथोपचक्रमे ॥ इन्द्रउवाच ॥ भजेहंसदाराममिन्दीवराभंभवारण्यदावानलाभाभिधानम् ॥ भवानीहृदाभावितानंदरूपं भवाभावहेतुंभवादिप्रपन्नम् २४ सुरानीकदुःखौघनाशैकहेतुंनराकारदेहंनिराकारमीड्यम् ॥ परेशंपरानंदरूपंवरेण्यंहरिंराममीशंभजेभारनाशम् २५ प्रपन्नाखिलानन्ददोहंप्रपन्नम्प्रपन्नार्तिनिःशेषनाशाभिधानम् ॥ तपोयोगयोगीशभावाभिभाव्यंकपीशादिमित्रंभजेराममित्रम् २६ सदाभोगभाजांसुदूरेविभांतंसदायोगभाजामदूरेविभांतम् ॥ चिदानंदकन्दसदाराघवेशंविदेहात्मजानन्दरूपंप्रपद्ये २७ महायोगमायाविशेषानुयुक्तोविभासीशलीलानराकारवृत्तिः ॥ त्वदानंदलीलाकथापूर्णकर्णाःसदानंदरूपाभवंतीहलोके २८॥

और हेप्रभो जिसप्रयोजनके अर्थ प्रतिविम्बरूपिणी सीतारचीथी सो अपनेकार्यको करके अन्तरहित होगई अब यह अग्निकावचन सुनिके आनन्दयुक्त जो श्रीराम सो अग्निका पूजनकरके २२ और अत्यन्त हर्षयुक्त जो जनकनन्दिनी सीता तिसको ग्रहणकरके और सबकाल निकटरहनेवाली ऐसी जो तीनोंलोककी माता लक्ष्मीरूप सीता तिसको लक्ष्मीपति रामचन्द्र अपने वामअंगमें स्थापनकर अत्यन्त शोभितहोतेहुये अब सीतासहित प्रकाशमान श्रीरामको इन्द्रदेखके २३ बड़ेहर्षकरके और गद्गद वाणीकरके भक्तिसहित हाथजोड़के स्तुतिकरनेको प्रारंभकरताहुआ नीलकमलके तुल्यहै आभा कान्ति जिसकी और संसाररूपी वनके भस्मकरनेको अग्निके तुल्य है नाम जिसका और पार्वती के हृदयकरके ध्यानकिया है आनन्दरूप जिसका और संसारके दुःखकेनाशका हेतु और शिवादिकोंकरके सेवित ऐसा जोराम तिसका मैं भजनकरताहों २४ और देवताओंकेसमूहका जो दुःखोंकासमूह तिसके नाशका जो हेतु और मनुष्यके आकारहै देहजिसका और वास्तवमें जोनिरा-

कारहै और स्तुतिकरनेयोग्य और ब्रह्मादिकोंकाभी जोईश ऐसाजो परमानन्द-रूप भारनाशक सेवनयोग्य राम तिसका मैं भजनकरताहौं २५ और शरणागत मनुष्योंको सम्पूर्ण आनन्दका देनेवाला जोहै और भक्तोंकरके सदासेवित और भक्तोंके सम्पूर्णदुःखों का नाशकरनेवाला है नाम जिसका और तपकरके और शम दमादिकोंकरके योग जिनका ऐसे जेयोगीश्वर तिनको सद्रूपकरके जो ध्यानकरनेके योग्य और जो सुग्रीवादिकोंका मित्र ऐसा जो सूर्यरूप राम तिस को मैं भजताहौं २६ और जो संसारके विषय सेवनकरनेवाले को दूरप्रतयिमान होरहा है और जो योगियोंको अत्यन्तनिकट सदा प्रकाशकरता है और चिद्रूप जो आनन्द तिसका समूहहै और जो रघुवंशकास्वामीहै ऐसाजो सीता को सबआनन्दों का देनेवाला राम तिसके मैं शरणप्राप्तहौं २७ और हे ईश आपकी जो बड़ीभारी योगमाया तिसके सत्त्वादिकगुण तिनमें आप जैसे शुद्ध स्फटिकमणिके समीप रक्त पुष्प रक्खाजावे और वह मणि जैसे रक्तसीप्रतीत होवे तैसे आपभी प्रकाशितहोरहेहौ और उसी योगमायाकरके आपकी मनुष्य कीसी आकृति है और आपकी आनन्दलीलाकी कथाओंकरके पूर्णहोरहे हैं कान जिनके ऐसे जे मनुष्य ते सदा इसलोकमें आनन्दयुक्तहो रहतेहैं २८॥

अहंमानपानाभिमत्तप्रमत्तोनवेदाखिलेशाभिमानाभिमानः॥ इदानींभवत्पादपद्मप्रसादात्त्रिलोकाधिपत्याभिमानोविनष्टः २९ स्फुरद्रत्नकेयूरहाराभिरामंधराभारभूतासुरानीकदावम् ॥ शरच्चंद्रवक्त्रंलसत्पद्मनेत्रंदुरावारपारंभजेराघवेशम् ३० सुराधीशनीलाभ्रनीलांगकांतिंविराधादिरक्षोबधाल्लोकशांतिम् ॥ किरीटादिशोभंपुरारातिलाभंभजेरामचन्द्रंरघूणामधीशम् ३१ लसच्चंद्रकोटिप्रकाशादिपीठेसमासीनमंकेसमाधायसीताम् ॥ स्फुरद्धेमवर्णान्तडित्पुंजभासांभजेरामचन्द्रंनिवृत्तार्तितंद्रम् ३२ ततःप्रोवाचभगवान्भवान्यासहितोभवः॥ रामंकमलपत्राक्षंविमानस्थोनभस्थले ३३ आगमिष्याम्ययोध्यायांद्रष्टुंत्वांराजसत्कृतम् ॥ इदानींपश्यपितरमस्यदेहस्यराघव ३४ ततोपश्यद्विमानस्थंरामोदशरथंपुरः॥ ननामशिरसापादौमुदाभक्त्यासहानुजः ३५॥

और हे ईश अहंकाररूपी जो मद्यपान तिसकरके मतवारा इसीसे प्रमत्त तुमको भूलरहा ऐसा जो मैंहौं सो और चक्रवर्ती राजाओंको अपने ऐश्वर्य्य का अभिमानहोताहै तिसके तुल्य अभिमान युक्त होरहाथा सो इस समयमें

आपके चरणारविंदके प्रसादसे मेरा तीनोंलोकके स्वामित्वका अभिमान नष्ट होगया २९ और देदीप्यमान जे रत्नों करके जटित केयूर अर्थात् बाहुभूषण और हार तिन करके अतिसुंदर और पृथिवीके भारभूत जो दैत्यों का समूह सोई हुआ तृणसमूह तिसको अग्निके तुल्य जोहै और शरदृऋतुके चन्द्रतुल्य है मुखारविंद जिसका और कमलतुल्यहैं नेत्रजिसके और दुःखकरके अपार पार जिसका अर्थात् यह पार वह पारजिसका ऐसे जो राम तिसका मैं भजन करताहों ३० और जो देवताओंका अधीशहै और इन्द्रनीलमणि और नील मेघके तुल्यहै अंगकी कांति जिसकी और बिराधादि जो राक्षस तिनके बधसे जो लोकका शांतिदेनेवाला और मुकुटादिकों करके शोभा जिसकी और महादेवजीको जो रत्न लाभतुल्यहै ऐसा रघुवंशियोंका स्वामी जो राम तिसका मैं भजन करताहों ३१ और शोभायमान होरहा कडोरों चन्द्रमाओंका प्रकाश जिसमें ऐसा जो सिंहासन तिसके ऊपर देदीप्यमान जो सुवर्ण तिसकासा वर्ण जिसका और बिजुलियोंके समूहकीसी कांति जिसकी ऐसीजो सीता तिनको गोदमें स्थापनकर जो स्थित ऐसे जो दुःख आलस्य रहित राम तिसको मैं भजताहों ३२ अब तिसके उपरांत आकाशमें विमानके ऊपर स्थित जो भवानी करके सहित भगवान् महादेव सो कमलवत् विशालहैं नेत्र जिसके ऐसे जो राम तिनसे वचन बोलतेहुये ३३ कि हे राम जब तुम अयोध्या में राज्य सिंहासनमें स्थित होउगे तब तुमको देखनेको मैं आऊंगा और इस समयमें इस तुम्हारे देहका पिता जो यह दशरथहै तिसको देखिये ३४ तब श्रीरामचन्द्र विमानके ऊपर स्थित जो दशरथ तिसको आगे देखके लक्ष्मण करके सहितआप बड़ीभक्तिसे शिरकरकेदशरथके चरणोंकाप्रणामकरतेहुये ३५

आलिंग्यमूर्ध्न्यवघ्रायरामंदशरथोब्रवीत् ॥ तारितोस्मित्वयावत्ससंसाराद्दुःखसागरात् ३६ इत्युक्त्वापुनरालिंग्यययौरामेणपूजितः रामोपिदेवराजंतंदृष्ट्वाप्राहकृतांजलिम् ३७ मत्कृतेनिहतान्संख्येवानरान्पतितान्भुवि ॥ जीवयाशुसुधावृष्ट्यासहस्राक्षममाज्ञया ३८ तथेत्यमृतवृष्ट्यातान्जीवयामासवानरान् ॥ येयेमृतामृधेपूर्वंतेतेसुप्तोत्थिताइव ॥ पूर्ववत्बलिनोहृष्टारामपार्श्वमुपाययुः ३९ नोत्थिताराक्षसास्तत्रपीयूषस्पर्शनादपि ॥ विभीषणस्तुसाष्टांगंप्रणिपत्याब्रवीद्वचः ४० देवमामनुगृह्णीष्वमयिभक्तिर्यदातव ॥ मङ्गलस्नानमद्यत्वंकुरु सीतासमन्वितः ४१ अलंकृत्यसहभ्रात्राश्वोगमिष्यामहेवयम् ॥ विभीषणवचःश्रुत्वाप्रत्युवाचरघूत्तमः ४२ ॥

तबदशरथ श्रीरामको हृदयसे आलिंगन करके और शिरको सूंघिकै यह कहतेहुये कि हेवत्स संसाररूपी जो दुःखसागर तिससे तुमने मुझको उद्धार किया ३६ यहबचन कहिकै और फिर आलिंगनकरके रामकरके सत्कारकिये जा-तेहुये और श्रीरामभी हाथजोड़े अगाड़ी स्थितजो इन्द्र तिससे यहकहतेहुये ३७ किहेइन्द्र मेरे अर्थ संग्राममें मारेगये पृथिवीमें पड़ेहुये जेमरे वानर तिनको शीघ्रही मेरी आज्ञासे अमृत वृष्टिकरके जिलाओ ३८ फिर तैसेई इन्द्रअमृत वृष्टिकरके मरेहुये जेवानर तिनको रामकी आज्ञासे जिवावता हुआ फिर वे वानर जैसे सोवतेसे कोईउठै तैसे उठिकरके पहिलेईके तरहसे बलवान् और प्रसन्न वानर रामके समीप आतेहुये ३९ और अमृतकी वृष्टिसे भी राक्षस नहीं उठतेहुये इसमें कारण यहहै कि सत्यसंकल्पजो राम तिनके बाणोंकरके दग्ध जे राक्षस तिनके जीवनदेनेको अमृतकी सामर्थ्य नथी और जीवनसमय में भी वानरोंके जिवाने काही रामका संकल्पथा और राक्षसोंके जिवाने का नहींथाइसीसे वानरोंकेही जिवानेको अमृतकी बृष्टिकी इन्द्रको आज्ञाकी और भगवत्संकल्पसे राक्षसोंके ऊपर अमृतकी बृष्टिनहोवै इसमें कुछभी आश्चर्य्य नहींहै और कोई तोऐसाकहतेहैं कि रावणने मरेहुये राक्षससमुद्रमें फिकवाय दियेथे इससे उनके शरीरही वहां नहीं फिरउनका जीवनकैसे होय अबइसके अनन्तर बिभीषण रामको साष्टांगदण्डवत् प्रणामकरके रामसेबोलताहुआ४० कि हेदेवमेरेऊपर अनुग्रहकरिये और मेरेमें जो आपकीप्रीतिहै तोमेरीयहप्रार्थना है कि आपवनवासकेव्रतके समाप्तिका मंगलस्नान सीतासहित यहांकरिये ४१ फिर लक्ष्मणकरके सहित वस्त्रालंकारकरके भूषितहो अयोध्याको प्रातःकाल हम सब जावेंगे तब यह बिभीषणका बचन सुनिकै श्रीराम बोलतेहुये ४२ ॥

सुकुमारोतिभक्तोमेभरतोमामवेक्षते ॥ जटावल्कलधारीसशब्दब्रह्मसमाहितः४३कथन्तेनविनास्नानमलंकारादिकम्मम ॥ अतःसुग्रीवमुख्यांस्त्वंपूजयाशुविशेषतः ४४ पूजितेषुकपीन्द्रेषुपूजितोहन्नसंशयः ॥ इत्युक्तोराघवेणाशुस्वर्णरत्नाम्बराणिच ४५ ववर्षराक्षसश्रेष्ठोयथाकामंयथारुचि ॥ ततस्तान्पूजितान्दृष्ट्वारामोरत्नैश्चयूथपान् ४६ अभिनन्द्ययथान्यायंविससर्जहरीश्वरान् ॥ विभीषणसमानीतंपुष्पकंसूर्यबर्चसम् ४७ आरुरोहततोरामस्तद्विमानमनुत्तमम् ॥ अंकेनिधायवैदेहीं लज्जमानांयशस्विनीम् ४८ लक्ष्मणेनसहभ्रात्राविक्रांतेनधनुष्मताम् ॥ अब्रवीच्चबिमानस्थःश्रीरामःसर्ववानरान् ४९ ॥

कि हे बिभीषण अतिसुकुमार और मेराभक्त और मेरेही तरह जटा और

वल्कलवस्त्रको धारणकरे और प्रणवकेध्यानमें तत्पर ४३ ऐसा जो भरत सो मेरे आगमनकी राहदेखरहाहै अर्थात् अवधिके व्यतीतहोनेमें प्राणत्यागकरिदेवेगा ऐसे भरतकेबिना यहां मेरामंगलस्नान कैसे होसकाहै इससे बिभीषण सुग्रीवादिक जे वानरहैं तिनका पूजनकरौ ४४ और ये श्रेष्ठवानरोंका जो तुम पूजनकरोगे तो मेंहीं पूजितहोउंगा इसमें कुछ संशयनहींहै इसप्रकार कहागया जो विभीषण सो शीघ्रही नानाप्रकारके रत्न और सुवर्ण और वस्त्र इनकीवृष्टि करताहुआ ४५ और जैसी जिसकी कामनारही और जैसी रुचिथी तैसे तैसे सत्कारकरताहुआ तब श्रीरामरत्नों करके पूजितयूथपति वानरों को देख करके ४६ यथायोग्य प्रशंसाकरके विदाकरतेहुये फिर विभीषणने मँगवाया जो सूर्यकेतुल्य प्रकाशमान पुष्पक विमान ४७ तिसमें लज्जायुक्त जो सीता तिसको गोदमें बैठारके रामचढ़तेहुये ४८ और बड़ापराक्रमी धनुषको धारण किये जो लक्ष्मण तिसकरके सहित उसपुष्पकाविमानमें स्थित जो श्रीराम सो सब वानरोंसे बोलतेहुये ४९ ॥

सुग्रीवंहरिराजंचअंगदंचविभीषणम् ॥ मित्रकार्यंकृतंसर्वंभवद्भिः सहवानरैः ५० अनुज्ञातामयासर्वेयथेष्टङ्गन्तुमर्हथ ॥ सुग्रीवप्रतिया ह्याशुकिष्किन्धांसर्वसैनिकैः ५१ स्वराज्येवसलंकायांममभक्तोविभीष ण॥नत्वांधर्षयितुंशक्ताःसेन्द्राअपिदिवौकसः५२अयोध्याङ्गंतुमिच्छा मिराजधानींपितुर्मम ॥ एवमुक्तास्तुरामेणवानरास्तेमहावलाः ५३ ऊचुःप्रांजलयःसर्वेराक्षसश्चविभीषणः॥अयोध्यांगन्तुमिच्छामस्त्व यासहरघूत्तम ५४ दृष्ट्वात्वामभिषिक्तन्तुकौशल्यामभिवाद्यच॥पश्चा द्गमिष्येराज्यमनुज्ञान्देहिनःप्रभो ५५ रामस्तथेतिसुग्रीववानरैःसवि भीषणः ॥ पुष्पकंसहनूमांश्चशीघ्रमारोहसाम्प्रतम् ५६ ॥

और वानरोंकाराजा जो सुग्रीव और अंगद और विभीषण इनसे भी कहते हुये कि आप सबोंने वानरोंकरके सहित जो कुछ मित्रकाकार्य उचितहै तैसा किया ५० अब मैं आज्ञादेताहौं इच्छापूर्वक अपने अपने गृहकोजावो और हे सुग्रीव तुम अपनी सेनासहित किष्किन्धाको जाओ ५१ और हेविभीषण तुम मेरीभक्तियुक्तहो लंकामें राज्यका भोगकरतेहुये वासकरो और इन्द्रादि देवता भी तुम्हारा तिरस्कार करनेको समर्थ नहीं होवेंगे ५२ और मैं अपने पिताकी राजधानी जो अयोध्याहै तिसके जानेकी इच्छाकरताहौं अब इसप्रकार राम करके कहेहुये जे महाबलीवानर ५३ ते और विभीषण ये सब हाथजोड़के रामसेकहतेहुये कि हे राम आपकेसंग हमसबभी अयोध्याके जानेकी इच्छा

करतेहैं ५४ और राज्यमें अभिषेकयुक्त आपकोदेखके और कौशल्याको प्रणाम करके फिर हम राज्यको करना चाहतेहैं इससे हे स्वामिन् अपनेसंग लेचलने की हमको आज्ञादीजिये ५५ तब श्रीराम बोले कि हे सुग्रीव वानरों करके सहित और बिभीषणकरके सहित और हनुमान्करके सहित तुमशीघ्रही इस समयमें पुष्पेकविमान पै चढ़ौ ५६ ॥

ततस्तुपुष्पकंदिव्यंसुग्रीवःसहसेनया ॥ विभीषणश्चसामात्यः सर्वेचारुरुहुर्द्रुतम् ५७ तेष्वारूढेषुसर्वेषुकौबेरंपरमासनम् ॥ राघवेणाभ्यनुज्ञातमुत्पपातविहायसा ५८ बभौतेनविमानेनहंसयुक्तेन भास्वता ॥ प्रहृष्टश्चतदारामश्चतुर्मुखइवापरः ५९ ततोबभौभास्करबिम्बतुल्यंकुबेरयानंतपसानुलब्धम् ॥ रामेणशोभांनितरांप्रपेदेसीतासमेतेनसहानुजेन ६० ॥

इत्यध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डेत्रयोदशःसर्गः १३॥

तबतौ सेनाकरके सहितसुग्रीव और मन्त्रियोंकरके सहित बिभीषण ये शीघ्रही दिव्य जोपुष्पक विमान तिसके ऊपरचढ़तेहुये ५७ जब सब उसमें बैठिलिये तौकुबेर सम्बन्धी जोवह पुष्पक विमान सोशीघ्रही रामकी आज्ञा करके आकाशमार्गकरके चलताहुआ ५८ अब हंसोंकरके युक्त प्रकाशमान जो पुष्पक विमान तिसकरके आनन्दयुक्त जोरामसो हंसबाहन ब्रह्माके सदृश शोभितहोतेहुये ५९ अबबड़े तपकरके प्राप्तहुआ जोवह कुबेरका पुष्पकविमान सो सूर्यके तुल्य प्रकाशमान होताहुआ और सीता लक्ष्मण सहित रामकरके तौअत्यन्त शोभाको प्राप्तहोताहुआ ६० ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डे भाषानुवादेत्रयोदशःसर्गः १३ ॥

पातयित्वाततश्चक्षुःसर्वतोरघुनन्दनः ॥ अब्रवीन्मैथिलींसीतांरामःशशिनिभाननाम् १ त्रिकूटशिखराग्रस्थांपश्यलंकांमहाप्रभाम् ॥ एतांरणभुवंपश्यमांसकर्दमपंकिलाम् २ असुराणांप्लवंगानामत्रवैशसनंमहत् ॥ अत्रमेनिहतःशेतेरावणोराक्षसेश्वरः ३ कुम्भकर्णेन्द्रजिन्मुख्याःसर्वेचात्रनिपातिताः ॥ एषसेतुर्मयाबद्धःसागरेसलिलाशये ४ एतच्चदृश्यतेतीर्थंसागरस्यमहात्मनः ॥ सेतुबंधमितिख्यातंत्रैलोक्येनचपूजितम् ५ एतत्पवित्रंपरमंदर्शनात्पातकापहम् ॥ अत्ररामे

श्वरोदेवोमयाशम्भुःप्रतिष्ठितः ६ अत्रमांशरणंप्राप्तोमंत्रिभिश्चवि भीषणः ॥ एषासुग्रीवनगरीकिष्किंधाचित्रकानना ७ ॥

दो० । सर्ग चौदहें विविध थल सीताको दरशाइ ॥
भरद्वाजपद देखि हरि भरत मिलेहियलाइ १

अब श्रीमहादेवजी पार्वतीजीसे कथा वर्णन करतेहैं हे पार्वति जबपुष्पक विमान आकाशमार्ग करके अयोध्यानगरीको चला तब श्रीरामचन्द्र विमानके ऊपरसे चारोंतरफ नेत्रोंको चलातेहुये चन्द्रमाके तुल्यहै मुख जिसका ऐसी जोसीता तिससे बोलतेहुये १ कि हे सीते त्रिकूटपर्वतके ऊपर बसतीहुई जो प्रकाशमान लंका तिसको देख और मांस रुधिरकी जिसमें कीचडउठरही है ऐसी जोसंग्रामकी पृथ्वी तिसको देखो २ और इसीरण भूमिमें असुरोंका और वानरोंका बड़ाभारी नाशहुआ है और हे सीते इसजगह मुझकरके माराहुआ रावण शयनकरताहुआ ३ और इस जगह कुम्भकर्ण और मेघनाद आदि लैके सबराक्षस मारेगयेहैं और यह मैंने समुद्रमें सेतु बँधवाया है तिसको देख ४ और यहसमुद्रके तीर परमपवित्र तीर्थ है और दर्शनहीसे पापका नाशकरने वालाहै और इसीजगह रामेश्वर नामकरके ५ जो महादेवसो मैंने स्थापन कियाहै सो यह सेतुबन्ध नाम करके तीर्थ दिखाई पड़ताहै जोतीनोंलोकोंकरके पूजत हैं ६ और हे सीते इसजगह मन्त्रियों करके सहित बिभीषण मेरे शरण प्राप्तहुआहै और चित्र विचित्रहै वनजिसमें ऐसी यहसुग्रीवकी नगरी किष्कि-न्धा दिखाई पड़तीहै ७ ॥

तत्ररामाज्ञयातारप्रमुखाहरियोषितः ॥ आनयामाससुग्रीवःसीतायाःप्रियकाम्यया ८ ताभिःसहोत्थितंशीघ्रंविमानंप्रेक्ष्यराघवः ॥ प्राहचाद्रिंऋष्यमूकंपश्यवाल्यत्रमेहतः ९ एषापंचवटीनामराक्षसायत्र मेहताः॥अगस्त्यस्यसुतीक्ष्णस्यपश्याश्रमपदेशुभे १० एतेतेतापसाः सर्वेदृश्यंतेवरवर्णिनि ॥ असौशैलवरोदेविचित्रकूटःप्रकाशते ११ अत्रमांकैकयीपुत्रःप्रसादयितुमागतः ॥ भरद्वाजाश्रमंपश्यदृश्यतेयमुनातटे १२ एषाभागीरथीगंगादृश्यतेलोकपावनी ॥ एषासादृश्यतेसीते सरयूर्यूपमालिनी १३ एषासादृश्यतेऽयोध्याप्रणामंकुरुभामिनि ॥ एवंक्रमेणसंप्राप्तोभरद्वाजाश्रमंहरिः १४ ॥

अब महादेव पार्वतीसे कहतेहैं कि इसप्रकार राम सीताजीको मार्गदिखा-तेहुये वार्त्ता कररहेथे तबतक किष्किन्धानगरीके समीप जब विमानआयातब रामकी आज्ञाकरके सुग्रीव सीताजीकी प्रीतिकी इच्छासे ताराआदिक जेअपनी

स्त्रियां तिनको वहां बुलवाताहुआ ८ फिर उनस्त्रियों करके सहित पुष्पक विमान आकाशमार्ग करके चलनेलगा तौश्रीराम सीतासे कहनेलगे कि हे सीते इसऋष्यमूक पर्वतकोदेखो और इसजगह पै मैंने बालीको माराथा ९ और यह पंचवटी नामकरके आश्रम दिखाई पड़ताहै और इसजगह पर मैंने चौदहहजार राक्षसमारेहैं और ये अगस्त्यके और सुतीक्ष्ण ऋषिकेदोनोंआश्रम दिखाईपड़तेहैं १० और हे सीते ये सबदण्डकवनके तपस्वीलोग दिखाईपड़ते हैं और हे देवि यहपर्वतोंमें श्रेष्ठ चित्रकूट दिखाई पड़ताहै ११ और इसजगह पै मुझकोप्रसन्न करनेको कैकेयीकापुत्र भरतआयाथा और यह यमुनाके तट पै भरद्वाज ऋषिका आश्रम दिखाईदेता है १२ और हे सीते यहलोकों की पवित्र करनेवाली भागीरथी गंगा दिखाईपड़तीहै और यहां रघुवंशियोंके यज्ञोंके खम्भाओंकी मालासरीखी बनरही है और यहसरयू दिखाईपड़ती है १३और हे सीते यह अयोध्यानगरी दिखाई पड़तीहै इसको प्रणामकरो अब इसक्रमसे सीताजीको देशदिखातेहुये श्रीरामभरद्वाजऋषिकेआश्रमको प्राप्तहोतेहुये१४॥

पूर्णेचतुर्दशेवर्षेपञ्चम्यांरघुनन्दनः॥ भरद्वाजंमुनिंदृष्ट्वावन्देसानुजःप्रभुः १५ पप्रच्छमुनिमासीनंविनयेनरघूत्तमः॥ शृणोषिकच्चिद्भरतःकुशल्यास्तेसहानुजः १६ सुभिक्षावर्त्ततेऽयोध्याजीवंतिमममातरः॥ श्रुत्वारामस्यवचनंभरद्वाजःप्रहृष्टधीः १७ प्राहसर्वेकुशलिनोभरतस्तुमहामनाः॥ फलमूलकृताहारोजटावल्कलधारकः १८ पादुकेसकलंन्यस्यराज्यंत्वांसुप्रतीक्षते॥ यद्यत्कृतंत्वयाकर्मदण्डकेरघुनन्दन १९ राक्षसानांविनाशंचसीताहरणपूर्वकम्॥ सर्वंज्ञातंमयारामतपसातेप्रसादतः २० त्वंब्रह्मपरमंसाक्षादादिमध्यांतवर्जितः॥ त्वमग्रेसलिलंदृष्ट्वातत्रसुप्तोसिभूतकृत् २१॥

जब चौदहवांबर्ष जिसदिन पूर्णहुआ उसीदिन पंचमीतिथिको श्रीरामचन्द्र भरद्वाजके आश्रममें प्राप्तहो लक्ष्मणसहित राम भरद्वाजमुनिका दर्शनकरिके प्रणामकरतेहुये १५ और आश्रममें बैठेहुये जो भरद्वाजमुनि तिनसे नम्रतापूर्वक राम पूछतेहुये कि हे भगवन् शत्रुघ्नकरके सहित भरत कुशलयुक्त है यह आपने सुनाहै१६और अयोध्या धनधान्य समृद्धियुक्तहै और मेरीमाता जीवती हैं तब ये रामकेवचन सुनिके प्रसन्न चित्तहो मुनि कहतेहुये १७ हे राम सब कुशल युक्तहैं और शुद्धहै मन जिसका ऐसा जो भरत सो तो फलमूल भोजन करताहै और जटावल्कलको धारणकरे रहताहै १८ और सब राज्य आपकी खड़ाउओंको समर्पणकर आप केवल तुम्हारी प्रतीक्षा किया करताहै कि कब

रामके दर्शनहोंगे और हेराम दण्डकवनमें रहिकै जो जो कर्म आपनेकिया १९ और सीताहरण को आदि लेके जो राक्षसोंका विनाश किया सो मैंने तुम्हारे प्रसाद से तपकरके सबजाना २० और हे राम तुम आदि मध्य अन्तकरके रहित साक्षात् परब्रह्महो और सब भूतोंके रचनेवाले जो तुमहौ सो अगाड़ी जलको रचिकै उसमें शयन करते हुये हौ २१ ॥

नारायणोसिविश्वात्मन्नराणामन्तरात्मकः ॥ त्वन्नाभिकमलोत्पन्नो ब्रह्मालोकपितामहः २२ अतस्त्वञ्जगतामीशःसर्वलोकनमस्कृतः ॥ त्वंविष्णुर्जानकीलक्ष्मीः शेषोऽयंलक्ष्मणाभिधः २३ आत्मनासृजसीदंत्वमात्मन्येवात्ममायया ॥ नसज्जसेनभोवत्त्वंचिच्छक्त्यासर्वसाक्षिकः २४ बहिरंतश्चभूतानांत्वमेवरघुनंदन ॥ पूर्णोपिमूढदृष्टीनां विच्छिन्नइवलक्ष्यसे २५ जगत्त्वंजगदाधारस्त्वमेवपरिपालकः ॥ त्वमेवसर्वभूतानांभोक्ताभोज्यंजगत्पते २६ दृश्यतेश्रूयतेयद्यत्स्मर्यतेवा रघूत्तम॥त्वमेवसर्वमखिलंत्वद्विनान्यन्नकिंचन २७मायासृजतिलोकांश्चस्वगुणैरहमादिभिः॥त्वच्छक्तिप्रेरितारामतस्मात्त्वय्युपचर्यते २८

इससे तुम नारायणहो इसका अभिप्राय यहहै कि नर जो पुरुष तिससे उत्पन्नहोयँ जे ते नर कहिये अर्थात् जल वेजलहैं अयन आश्रय तिसके सो कहिये नारायण अथवा सब वानरोंके जीवोंके अन्तर्यामीहौ इससे नारायणहौ इसपक्षमें नार जो जीवसमूह तिसका अयननाम प्रवृत्तिहोवै जिससे सो कहिये नारायण ये दोनों नारायण शब्दके अर्थ व्याकरणादिक से सिद्ध हैं और हे राम ऐसे जलशायी नारायण जो आप तिनहींके नाभिकमलसे लोकपितामह ब्रह्माहोताहुआ २२ और हे राम जिससे ब्रह्माकेभी पिता तुमहौ इससे सबजगत् के स्वामी तुमहींहौ और सबलोकों करके नमस्कार किये गयेहौ और आप साक्षात् विष्णुहौ और सीता लक्ष्मीरूपिणी है और लक्ष्मण शेषरूप है २३ और हे राम तुम अपने आत्माहीमें अपनी मायाकरके अपनेही रूपको जगत्रूपकरके आपही रचतेहौ और अपनी चिच्छक्तिकरके आकाशवत् कहीं लिप्त नहीं होते और सबके साक्षीहौ २४ और हेरघुनन्दन सब प्राणियोंके बाहर भीतर तुमहींहौ और तुम सर्वत्र परिपूर्ण भी हौ परन्तु मूढदृष्टि पुरुषोंको परिच्छिन्नकी तरह अर्थात् मनुष्यरूपकरके जानेजाते हौ २५ और जगत्रूपभी आपहीहौ और जगत्के आधारभी तुमहींहौ और जगत् के रक्षा करनेवाले भी तुमहींहौ और सबके भोक्ताभी तुमहींहौ और भोग्यरूप जो अन्नादिक सोभी तुमहींहौ २६ और जोकुछ सुनाई देताहै और जो कुछ स्मरण

कियाजाताहै सो सब तुमहींहौ और हे राम ऐसा कुछ जगत्में पदार्थ नहीं जो तुम्हारे बिना होय अर्थात् सर्वस्वरूप तुमहौ २७ न कहौ क्या परमार्थ करके सृष्ट्यादि कर्तृत्व मुझमें है तिससे भरद्वाज कहते हैं कि हे राम तुमकरके प्रेरित जो तुम्हारी शक्तिमाया सो अहंकारादिक जो अपने गुण तिन करके लोकोंको रचती है इससे तुम्हारे में जगत्कर्तृत्वादि व्यवहार प्रतीत होताहै जैसे भृत्यकृत राजा में प्रतीतहै २८॥

यथाचुम्बकसान्निध्याच्चलंत्येवायआदयः॥ जडातथात्वयादृष्टा मायासृजतिवैजगत् २९ देहद्वयमदेहस्यतवविश्वंररिक्षिषोः॥ विराट्स्थूलंशरीरंतेसूत्रंसूक्ष्ममुदाहृतम् ३०विराजःसम्भवंत्येतेअवताराः सहस्रशः॥ कार्यांतेप्रविशंत्येवविराजंरघुनन्दन ३१ अवतारकथां लोकेयेगायन्तिगृणन्तिच॥ अनन्यमनसोमुक्तिस्तेषामेवरघूत्तम३२ त्वंब्रह्मणापुराभूमेर्भारहारायराघव॥ प्रार्थितस्तपसातुष्टस्त्वंजातो सिरघोःकुले ३३ देवकार्यमशेषेणकृतंतेरामदुष्करम्॥ बहुवर्षसहस्राणिमानुषंदेहमाश्रितः ३४ कुर्वन्दुष्करकर्माणिलोकद्वयहितायच॥ पापहारीणिभुवनंयशसापूरयिष्यसि ३५॥

और प्रेरकत्व व्यवहारभी सन्निधिमात्र करके आरोपित है वास्तवनहींहै सो कहतेहैं कि हे राम जैसे चुम्बक पत्थरके सन्निधिमात्र करकेही लोहादिक आपही चलतेहैं तैसे जड़जो मायाहै सो तुमकरके देखीहुई जगत्को रचतीहै २९ और जगत्की रक्षाकरनेकी इच्छाकरतेहुये जोतुमहौ तिनके दोशरीर हैं बिराट् तौतुम्हारा स्थूल शरीरहै और सूत्रात्मा हिरण्यगर्भ सूक्ष्म शरीर है तहां समस्तदेवासुरनरतिर्यगादि नदी पर्वतादिस्थूल शरीरोंके समूहको विराट् कहतेहैं और जिस ईशानवायुमें सबके प्राणादिलिंग शरीर प्रविष्टहोरहेहैं ऐसा जोसूत्रात्मा उसको हिरण्यगर्भ कहतेहैं ३० और आपके विराट्शरीरसे हजारों अवतार होतेहैं और कार्यके अन्तमें फिर उसीमें प्रवेश करते हैं ३१ और जे कोई लोकमें आपके अवतारों की कथाओंको गानकरते हैं अथवा श्रवणद्वारा सराहना करते हैं एकाग्रचित्तहो हे रघुनन्दन वे पुरुष मुक्तिभागी होते हैं ३२ और हे राम तुम पहिले ब्रह्माके तपकरिकै प्रसन्नहुये ब्रह्माकरिकै प्रार्थना किये गये पृथिवी के भारको दूरकरने के अर्थ रघुकुल में प्रकटहुयेहौ ३३ सो हे राम दुष्कर अर्थात् औरोंके करनेको अशक्य यह देवताओंका कार्य तुमने सबकिया और बहुत हजार वर्षभर मनुष्यदेह को आश्रयण करेहुये ३४ दोनों लोकोंके

कल्याणके अर्थ मनुष्यों के पाप हरनेवाले दुष्करकर्म करतेहुये लोकोंको अपने यशकरिके पूर्ण करोगे ३५ ॥

प्रार्थयामिजगन्नाथपवित्रंकुरुमेगृहम् ॥ स्थित्वाद्यभुक्त्वासबलःश्वोगमिष्यसिपत्तनम् ३६ तथेतिराघवोऽतिष्ठत्तस्मिन्नाश्रमउत्तमे ॥ ससैन्यःपूजितस्तेनसीतयालक्ष्मणेनच ३७ ततोरामश्चिंतयित्वामुहूर्तंप्राहमारुतिम् ॥ इतोगच्छहनूमंस्त्वमयोध्याम्प्रतिसत्वरः ३८ जानीहिकुशलीकच्चिज्जनोनृपतिमन्दिरे ॥ शृङ्गवेरपुरङ्गत्वाब्रूहिमित्रंगुहम्मम ३९ जानकीलक्ष्मणोपेतमागतम्मान्निवेदय ॥ नन्दिग्रामन्ततोगत्वाभ्रातरंभरतंमम ४० दृष्ट्वाब्रूहिसभार्यस्यसभ्रातुःकुशलंमम ॥ सीतापहरणादीनिरावणस्यवधादिकम् ४१ ब्रूहिक्रमेणमेभ्रातुःसर्वंतत्रविचेष्टितम् ॥ हत्वाशत्रुगणान्सर्वान्सभार्यःसहलक्ष्मणः ४२ ॥

और हे जगन्नाथ मैं यह आपसे प्रार्थना करताहूँ कि मेरा गृह पवित्र करिये आज यहां स्थितहोकर सेना सहित भोजनकरिकै प्रातःकाल अयोध्या नगरी को जाइये ३६ श्रीराम मुनिकी आज्ञाको स्वीकार करिकै रात्रिभर उस आश्रममें वासकरतेहुये और सेनाकरिकै सहित और लक्ष्मण सीताकरिकै सहित बड़े सत्कारको प्राप्त होतेहुये ३७ तब राम एक मुहूर्तभर चिन्तनकरिकै हनुमान् से बोलतेहुये कि हे हनुमन् शीघ्रही तुम यहां से अयोध्याको जाउ ३८ और वहां जाके राजादशरथ के गृहमें सबजन कुशलहैं यह प्रथम खबरि लेउ और शृंगवेरपुरमें जाके मेरा मित्र जो निषाद तिससे मेरी कुशल कहौ ३९ और यह निषाद से कहो कि सीता लक्ष्मण सहित राम कुशलपूर्वक भरद्वाज के आश्रममें आगये हैं फिर नन्दिग्राममें जाकर मेरा भाई जो भरत तिसको देखिकै ४० कि सीता लक्ष्मण सहित मेरा आगमन कुशलपूर्वक सुनावो और सीता हरणको आदिलैके रावणवधादि चरित्र मेराक्रमकरिकै संपूर्ण भरतसे कहौ ४१ और संपूर्ण शत्रुओंको मारकरिकै सीता लक्ष्मण सहित ४२ ॥

उपयातिसमृद्धार्थःसहऋक्षहरीश्वरैः ॥ इत्युक्त्वातत्रवृत्तान्तंभरतस्यविचेष्टितम् ४३ सर्वंज्ञात्वापुनःशीघ्रमागच्छममसन्निधिम् ॥ तथेतिहनुमांस्तत्रमानुषंवपुरास्थितः ४४ नन्दिग्रामंययौतूर्णंवायुवेगेन मारुतिः ॥ गरुत्मानिववेगेनजिघृक्षन्भुजगोत्तमम् ४५ शृङ्गवेरपुरम्प्राप्यगुहमासाद्यमारुतिः ॥ उवाचमधुरंवाक्यम्प्रहृष्टेनान्तरात्मना ४६ रामोदाशरथिःश्रीमान्सखातेसहसीतया ॥ सलक्ष्मणस्त्वां

धर्मात्माक्षेमीकुशलमब्रवीत् ४७ अनुज्ञातोद्यमुनिना भरद्वाजेनराघ वः ॥ आगमिष्यतितन्देवंद्रक्ष्यसित्वंरघूत्तमम् ४८ एवमुक्त्वामहाते जाःसम्प्रहृष्टतनूरुहम् ॥ उत्पपातमहावेगोवायुवेगेनमारुतिः ४९ ॥

और ऋक्ष वानरों करिकै सहित परिपूर्ण मनोरथ राम आवतेहैं यह सब वृत्त भरतसे कहौ और भरतके यहांका सब वृत्तांत और भरतका चरित्र ४३ सब जानिकै फिर शीघ्रही मेरे समीप आवो तब हनुमान् तैसेई श्रीरामकी आज्ञाको स्वीकारकर मनुष्यके रूपमें स्थित होतेहुये ४४ फिर हनुमान् जैसे गरुड सर्पके ग्रहणकरनेको शीघ्रगति करिकैचलै ऐसे पवनके वेगकरिकै शीघ्रही नन्दिग्रामको जाताहुआ ४५ तहां मार्गमें प्रथम हनुमान् शृङ्गवेर पुरको प्राप्त होके वहां गुह नाम जो निषाद तिसको मिलके बडे प्रसन्न मनसे मधुरवचन बोलताहुआ ४६ कि हेगुह बड़े शोभायमान सीता लक्ष्मण युक्त धर्मात्मा जो तुम्हारे सखा दशरथके पुत्र राम सो कुशलयुक्त हैं और तुम्हारी कुशल पूछते हुयेहैं ४७ और आज भरद्वाज मुनिकी आज्ञाको प्राप्तहोके आवैंगे तिनरघुश्रेष्ठ देवको तुमदेखोगे ४८ ऐसे वचन निषादसे कहिकै हनुमान् पवनके वेगसे आकाश मार्गकरके जाते हुये और निषाद रामकी कुशल सुनके अत्यन्त आनन्द युक्त होताहुआ ४९ ॥

सोपश्यद्रामतीर्थंचसरयूंचमहानदीम् ॥ तामतिक्रम्यहनुमान्नंदि ग्रामंययौमुदा ५० क्रोशमात्रेत्वयोध्यायाश्चीरकृष्णाजिनाम्बरम् ॥ ददर्शभरतंदीनंकृशमाश्रमवासिनम् ५१ मलपंकविदिग्धांगंजटिलं वल्कलांबरम् ॥ फलमूलकृताहारंरामचिंतापरायणम् ५२ पादुकेते पुरस्कृत्यशासयंतंवसुन्धराम्॥ मंत्रिभिःपौरमुख्यैश्चकाषायांबरधारि भिः५३वृतदेहंमूर्तिमंतंसाक्षाद्धर्ममिवास्थितम्॥ उवाचप्रांजलिर्वाक्यं हनूमान्मारुतात्मजः ५४ यंत्वंचिंतयसेरामंतापसंदण्डकेस्थितम् ॥ अनुशोचसिकाकुत्स्थःसत्वांकुशलमब्रवीत् ५५ प्रियमाख्यामितेदेव शोकंत्यजसुदारुणम्॥अस्मिन्मुहूर्तेभ्रात्रात्वंरामेणसहसंगतः ५६ ॥

सो अब आगे हनुमान् जाके राम तीर्थको देखतेहुये और सरयू नदी को देखतेहुये फिर सरयूके पारहो बड़े आनन्दपूर्वक नन्दिग्राममें प्राप्तहोतेहुये ५० फिर अयोध्या नगरीसे एककोस भर पै चीर वस्त्र और मृगचर्मको धारणकिये और अति दुर्बल और रामके वियोगसे दुःखित आश्रममें वास करतेहुये जो भरत तिनको हनुमान् देखतेहुये ५१ फिर कैसे भरतहैं कमलरूपी जो पंकज

तिसकरिकै लिप्तहै अंग जिनका और जटा और वल्कल वस्त्र इनको धारण करेहैं और फल मूलका भोजन करतेहैं और रामकी चिन्तामें परायण होरहे हैं ५२ और रामकी खड़ाउओंको आगेकरके पृथिवीकी रक्षाकरतेहैं और गेरू के रँगेहुये वस्त्रोंको धारणकरे जे मन्त्री और पुरवासी तिन करिकै सेवित हैं ५३ और मानों मूर्तिको धारणकिये साक्षात् धर्महीस्थितहोय ऐसा जो भरत तिसको हाथजोड़के प्रणामकर हनुमान् बोलतेहुये ५४ कि हेभरत जिसदण्डक वनमें स्थित तपस्वी रामको तुम चिन्तन कररहेहो और शोचरहेहौ सोईराम तुमसे कुशल पूछते हुये हैं ५५ और हे देव तुमको मैं प्रिय सुनाताहूं इससे दारुण जो यह शोकहै तिसको त्यागकरिये इसी समयमें भाई जो राम तिससे तुम मिलोगे ५६ ॥

समरेरावणंहत्वारामःसीतामवाप्यच ॥ उपयातिसमृद्धार्थःससीतःसहलक्ष्मणः ५७ एवमुक्तोमहातेजाभरतोहर्षमूर्च्छितः ॥ पपात भुविचास्वस्थःकैकेयीप्रियनन्दनः ५८ आलिंग्यभरतःशीघ्रम्मारुतिं प्रियवादिनम् ॥ आनन्दजैरश्रुजलैःसिषेचभरतःकपिम् ५९ देवोवा मानुषोवात्वमनुक्रोशादिहागतः ॥ प्रियाख्यानस्यतेसौम्यददामिब्रुवतःप्रियम् ६० गवांशतसहस्रंचग्रामाणांचशतंवरम् ॥ सर्वाभरणसंपन्नामुग्धाःकन्यास्तुषोड़श ६१ एवमुक्त्वापुनःप्राहभरतोमारुतात्मजम् ॥ वहूनीमानिवर्षाणिगतस्यसुमहद्वनम् ६२ शृणोम्यहंप्रीतिकरंमनाथस्यकीर्तनम् ॥ कल्याणीवतगाथेयंलौकिकीप्रतिभातिमे ६३ ॥

और संग्राममें रावणको मारके और सीताको प्राप्तहोके और सवकार्य सिद्ध करके लक्ष्मण सहित राम समीप प्राप्तहैं इससे अव आतेहैं ५७ ऐसा जब हनुमान्ने वचन कहा तो वड़ातेजस्वी जो भरत सो सुनतेई आनन्द समुद्रमें ऐसा मग्नहोगया कि कुछ कालतक पूंछनेका भी होश न रहा ५८ फिर उठिके प्रिय वचन कहनेवाला जो हनुमान् तिसको हृदयसे आलिंगनकर आनन्द के नेत्र जलसे सींचताहुआ ५९ और यह वचन भरतजी वोले कि तुम देवता हौ किंवा मनुष्यहौ जो मेरे ऊपर दयाकरके यहां प्राप्तहुये हौ और हे सौम्य जो तुमने प्रिय वचन मुझको सुनाये हैं इसके वदले में कुछ पारितोषिक धन में देताहूँ ६० सौ हजार तो गाइ देताहूं और श्रेष्ठ सौ ग्राम देताहूं और सम्पूर्ण आभूषणोंकरके युक्त और वड़ी सुन्दरी ऐसी सोलह कन्या देताहूँ ६१ अव ऐसा कहिकै फिर भरतजी हनुमान् से वोले कि हे सौम्य वड़ेभारी दण्डक वनको गये जे वहुत वर्ष मेरे स्वामी को व्यतीत हुईं ६२ आज मैंने आनन्द-

दायक अपने स्वामीका कीर्त्तन सुना और आज यह कल्याण के देनेवाली लौकिक गाथा मेरेको सत्य विदित होती है ६३ ॥

एतिजीवन्तमानन्दोनरंवर्षशतादपि ॥ राघवस्यहरीणाञ्चकथमासीत्समागमः ६४ तत्त्वमाख्याहिभद्रन्तेविश्वसेयंवचस्तव॥एवमुक्तोथहनुमान्भरतेनमहात्मना ६५ आचचक्षेथरामस्यचरितंकृत्स्नशःक्रमात्॥श्रुत्वातुपरमानन्दम्भरतोमारुतात्मजात् ६६ आज्ञापयच्छत्रुहणम्मुदायुक्तंमुदान्वितः ॥ दैवतानिचयावंतिनगरेरघुनन्दन ६७ नानोपहारबलिभिःपूजयन्तुमहाधियः ॥ सूतावैतालिकाश्चैववन्दिनस्तुतिपाठकाः ६८ वारमुख्याश्चशतशोनिर्यान्त्वद्यैवसंघशः॥राजदारास्तथामात्यासेनाहस्त्यश्वपत्तयः ६९ ब्राह्मणाश्चतथापौराराजानोयेसमागताः ॥ निर्यान्तुराघवस्याद्यद्रष्टुंशशिनिभाननम् ७० ॥

कि लौकिक मनुष्य यह कहतेहैं कि जीवते मनुष्यको सौवर्षतकभी आनन्द प्राप्तहोताहीहै सो यह मैंने अपने दृष्टान्तसेही निश्चित किया और हे सौम्य रामका और वानरोंका समागम कैसेहुआ ६४ यह सब निश्चयकरके कहो तौ मैं तुम्हारे वचनमें श्रद्धाकरौं ऐसा जब महात्मा भरत करके हनुमान् कहा गया अर्थात् जबभरतजीने ऐसापूंछा ६५ तौहनुमान्ने क्रमसेसब रामकाचरित्र वर्णनकिया अब भरतजी हनुमान्से परमआनन्दकी वार्तासुनिकै ६६ बड़े आनन्दयुक्तहो शत्रुघ्नको आज्ञा करतेहुये कि हे शत्रुघ्न जितनी नगर में देवताओंकी प्रतिमाहैं तिनका ६७ गन्धधूपदीपनैवेद्यादि करके और बलियों करके बुद्धिमान् मनुष्य पूजनकरैं और सूत मागध और बन्दीजन और स्तुति करनेवाले पुरुष ६८ और सैकड़ों वेश्या ये सब अभी अपने समूह बांधिकै पुरके बाहर निकलैं और राजा दशरथकी सब रानियां और मन्त्री और हाथी घोड़ेआदि सेना ६९ और ब्राह्मण और पुरवासीलोग और जे राजा जहांतहां से आये हैं ते सब इससमयमें श्रीरामका चन्द्रमातुल्य जो मुख है तिसके देखने को आवैं ७० ॥

भरतस्यवचःश्रुत्वाशत्रुघ्नपरिचोदिताः ॥ अलंचक्रुश्चनगरींमुक्तारत्नमयोज्ज्वलैः ७१ तोरणैश्चपताकाभिर्विचित्राभिरनेकधा ॥ अलंकुर्वन्तिवेश्मानिनानाबलिविचक्षणाः ७२ निर्यान्तिवृन्दशःसर्वेरामदर्शनलालसाः ॥ हयानांशतसाहस्रङ्गजानामयुतन्तथा ७३ रथानांदशसाहस्रंस्वर्णसूत्रविभूषितम्॥ पारमेष्ठीन्युपादायद्रव्याण्युच्चावचा

निच ७४ ततस्तुशिविकारूढानिर्ययूराजयोषितः ॥ भरतःपादुके न्यस्यशिरस्येवकृतांजलिः ७५ शत्रुघ्नसहितोरामम्पादचारेणनिर्ययौ ॥ तदेवदृश्यतेदूराद्विमानश्चन्द्रसन्निभम् ७६ पुष्पकंसूर्यसङ्काशंमनसाब्रह्मनिर्मितम् ॥ एतस्मिन्भ्रातरौवीरौवैदेह्यारामलक्ष्मणौ ७७॥

अवये भरतकेवचनसुनिकै शत्रुघ्नकरके प्रेरितजे मनुष्यते मोती और रत्नों करके उज्ज्वल जे तोरण तिनकर और पताकाओं करके अयोध्या नगरी को अलंकृत करते हुये ७१ और नानाप्रकारकी रचना में प्रवीण जे मनुष्य हैं ते अपने अपने गृहोंको अलंकृत करते हुये अर्थात् सजावते हुये ७२ अब सब पुरवासीआदि मनुष्य समूह समूहहो रामके दर्शनकी इच्छा करके चलतेहुये तिसमें सौ हजार तौ घोड़ों के सवार चलतेहुये और दशहजार हाथी७३ और सुवर्णकरके भूषित दशहजाररथ और चक्रवर्त्ती राजाओंके योग्य उच्चनीच रत्नोंकोलैके और सब राजमनुष्य चलतेहुये ७४ फिर तिसकेउपरांत पालकियोंमें चढ़िकै राजादशरथकी रानियांचलतीहुई और शत्रुघ्नसहितभरत हाथ जोड़ेहुये और रामके खड़ाउओंको शिरपै धारणकरके ७५ पाउँपाउँही चलतेहुये फिर उसीसमयमें दूरसे चन्द्रमाकेतुल्य पुष्पकविमान दिखाईपड़ा ७६ जो क्या सूर्यतुल्य प्रकाशमान विमान ब्रह्माने मनहींकरके रचाहै तवहनुमान् बोले कि हे मनुष्यो यह विमान जो दिखाईपड़रहाहै इसीमें सीतासहित वीर दोनोंभाई रामलक्ष्मण वैठेहैं ७७ ॥

सुग्रीवश्चकपिश्रेष्ठोमन्त्रिभिश्चविभीषणः ॥ दृश्यतेपश्यतजनाइत्याहपवनात्मजः ७८ ततोहर्षसमुद्भूतोनिश्वनोदिवमस्पृशत् ॥ स्त्रीबालयुवद्धानांरामोयमितिकीर्त्तनात् ७९ रथकुञ्जरवाजिस्थाअवतीर्य महींगतः ॥ ददृशुस्तेविमानस्थञ्जनाःसोममिवाम्बरे ८० प्राञ्जलिर्भरतोभूत्वाप्रहृष्टोराघवोन्मुखः ॥ ततोविमानाग्रगतम्भरतोराघवंमुदा ८१ ववन्देप्रणतोरामंमेरुस्थमिवभास्करम् ॥ ततोरामाभ्यनुज्ञातंविमानमपतद्भुवि ८२ आरोपितोविमानन्तद्भरतःसानुजस्तदा ॥ राममासाद्यमुदितःपुनरेवाभ्यवादयत् ८३ समुत्थाप्यचिराद्दृष्टंभरतं रघुनन्दनः ॥ भ्रातरंस्वांकमारोप्यमुदातम्परिषस्वजे ८४ ॥

और वानरोंकरके सहित राजा सुग्रीव वैठा है और मन्त्रियों करके सहित विभीषण वैठाहै७८तब तो वालक और स्त्री और जवान और वूढ़े इनसवोंका जो रामहै ऐसाआनन्दकाशब्द उससमयमें आकाशपर्यंत परिपूर्णहोताहुआ७९ फिर रथोंमें और हाथियोंमें और घोड़ोंपै जे सवारथे ते सब उतरिकै पृथिवी

में स्थितहोके विमानपै बढ़े जोराम तिनकोदेखतेहुये जैसे आकाशमें चन्द्रमा उदयहुआहोवे ऐसेप्रकाशमान रामहोरहेहैं ८० तबतौ रामके सम्मुख पृथिवी में खड़े बड़े आनन्दयुक्त जो भरत सो हाथजोड़ के विमान में स्थित जो राम तिनको बड़ेहर्षकरके दण्डवत् प्रणामकरतेहुये ८१ जैसे सुमेरु पर्वतपैस्थित जो सूर्य तिसको कोई प्रणामकरै फिर रामकी आज्ञाकरके पृथिवी में विमान उतरताहुआ ८२ फिर उसविमानपै शत्रुघ्नसहित जोभरत तिसको रामचढ़ालेतेहुये फिर भरत रामकोप्राप्तहो बड़ेआनन्दकरके रामकेचरणोंमें पड़तेहुये ८३ फिर श्रीरामचन्द्रजी बहुत कालसे देखा जो भरत तिसको उठाकर हृदयसे लगाकर गोद में बैठाकर फिर आनन्द से आलिंगन करतेहुये ८४॥

ततोलक्ष्मणमासाद्यवैदेहींनामकीर्त्तयन् ॥ अभ्यवादयतप्रीतो भरतःप्रेमविह्वलः ८५ सुग्रीवंजाम्बवंतंचयुवराजंतथांगदम् ॥ मैंदद्विविदनीलांश्चऋषभंचैवसस्वजे ८६ सुषेणंचनलंचैवगवाक्षंगन्धमादनम् ॥ शरभंपनसंचैवभरतःपरिषस्वजे ८७ सर्वेतेमानुषंरूपंकृत्वा भरतमादृताः ॥ पप्रच्छुःकुशलंसौम्याःप्रहृष्टाश्चप्लवंगमाः ८८ ततः सुग्रीवमालिंग्यभरतःप्राहभक्तितः ॥ त्वत्सहायेनरामस्यजयोभूद्रावणोहतः ८९ त्वमस्माकंचतुर्णान्तुभ्रातासुग्रीवपंचमः ॥ शत्रुघ्नश्चतदाराममभिवाद्यसलक्ष्मणम् ९० सीतायाश्चरणौपश्चाद्ववंदेविनयान्वितः ॥ रामोमातरमासाद्यविवर्णांशोकविह्वलाम् ९१ ॥

फिर भरत लक्ष्मण और सीता इनको प्राप्त हो अपना नाम उच्चारणकर प्रेम में बिह्वलहोकर प्रीतिकरके प्रणाम करतेहुये ८५ फिर सुग्रीव और जाम्बवान और अंगद और मैंद और द्विविद और नील और ऋषभ इनको हृदय से आलिंगन करते हुये ८६ और सुषेण और नल और गवाक्ष और गन्धमादन और शरभ और पनस इन को भी भरत जी भेटते हुये ८७ और जेसब बानर मनुष्यका रूप धारण करके सौम्यरूप और आदरयुक्त होकर आनन्दपूर्वक भरत से कुशल पूंछते हुये ८८ तब भरत सुग्रीव को आलिंगन करके प्रीति पूर्वक बोलतेहुये कि हे सुग्रीव तुम्हारे सहाय करके राम को जयप्राप्त हुआ और रावण मारा गया ८९ और हे सुग्रीव हम चारों भाइयों के मध्य में पांचवें भाई तुम हो फिर तिसके उपरांत शत्रुघ्न रामचन्द्र को प्रणाम करके लक्ष्मण को प्रणाम करतेहुये ९० फिर बिनय पूर्वक सीता के चरणों को प्रणाम करते हुये अब रामचन्द्र शोक करके बिह्वल दुर्बल जो अपनी माता तिस को प्राप्त होके ९१ ॥

जग्राहप्रणतःपादौमनोमातुःप्रसादयन् ॥ कैकेयींचसुमित्रांचननामेनरमातरः ९२ भरतःपादुकेतेतुराघवस्यसुपूजिते ॥ योजयामासरामस्यपादयोर्भक्तिसंयुतः ९३ राज्यमेतन्न्यासभूतंमयानिर्यातितंतव ॥ अद्यमेसफलंजन्मफलितोमेमनोरथः ९४ यत्पश्यामिसमायातस्त्वयोध्यांत्वामहंप्रभो ॥ कोष्ठागारंबलंकोशंकृतंदशगुणंमया ९५ ॥ त्वत्तेजसाजगन्नाथपालयस्वपुरंस्वकम् ॥ इतिब्रुवाणंभरतंदृष्ट्वासर्वेकपीश्वराः ९६ मुमुचुर्नेत्रजंतोयंप्रशशंसुर्मुदान्विताः ॥ ततोरामःप्रहृष्टात्माभरतंस्वांकगंमुदा ९७ ययौतेनविमानेनभरतस्याश्रमंतदा ॥ आवरुह्यतदारामोविमानाग्र्यान्महीतलम् ९८ ॥

नम्र हो माताको प्रसन्नकरते हुये उसके चरणों को ग्रहण करतेहुये अर्थात् प्रणाम करते हुये फिर कैकेयी और सुमित्रा इनको प्रणाम करतेहुये फिर और जो माता हैं तिन सबों को प्रणाम करतेहुये ९२ और भरत वो रामचन्द्र की पूजाकरी हुई जो खड़ाऊँ तिनको फिर भक्तियुक्तहो रामके पावों में पहिरादेते हुये ९३ और भरत यह कहतेहुये कि हे राम यह आप के धरोहर की तरह मेरे पास रक्खा हुआ जो राज्य तिनको मैं आप को सौंपता हूं सो ग्रहण करिये और आज मेरा जन्म सफल हुआ और मेरा मनोरथ परिपूर्ण हुआ ९४ जो मैं अयोध्या में प्राप्त जो आप हैं तिनको देखताहूं और हे जगन्नाथ हे स्वामिन् आपही के प्रभाव करके मैं ने जितना खजाना और सिवाय उसके और भी वस्तु थी सो सबदश गुणित करदी है तिसको सँभारलीजिये ९५ और अपने पुरकी रक्षा करिये ऐसा कहताहुआ जो भरतहै तिसको सब वानरेश्वर देखके नेत्रों से जल को छोड़ते हुये ९६ और आनन्दयुक्त हो भरत की बड़ी प्रशंसा करतेहुये तब श्रीराम प्रसन्नहोके भरतको अपनी गोदमें करके ९७ पुष्पक विमान करके जहां भरत का आश्रम था वहां जाते हुये फिर श्री राम विमान पै से भूमि में उतरि के ९८ ॥

अब्रवीत्पुष्पकंदेवोगच्छवैश्रवणंवह ॥ अनुगच्छानुजानामिकुबेरंधनपालकम् ९९ रामोवशिष्ठस्यगुरोःपदाम्बुजंनत्वायथादेवगुरोःशतक्रतुः ॥ दत्वामहार्हासनमुत्तमंगुरोरुपाविवेशाथगुरोःसमीपतः १००

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडे चतुर्दशःसर्गः १४ ॥

पुष्पक बिमान से श्रीराम कहते हुये कि हे पुष्पक मैं तुमको आज्ञादेता हौं तुम धनपालक जो कुबेर हैं तिसके पास जावो और कुबेर को प्राप्त किया करो अर्थात् लेचलाकरो ९९ अब श्रीराम जैसे इन्द्र बृहस्पति को प्रणाम करतेहैं तैसे अपने गुरू जो वशिष्ठजी तिनकोप्रणामकरके और बडाश्रेष्ठ जो आसन तिसको दैकै वशिष्ठ जी के समीप आप बैठते हुये १०० ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडे भाषाटीकायांचतुर्दशस्सर्गः १४॥

ततस्तुकैकयीपुत्रोभरतोभक्तिसंयुतः ॥ शिरस्यंजलिमाधायज्येष्ठंभ्रातरमब्रवीत् १ मातामेसत्कृतारामदत्तंराज्यंत्वयाममः ॥ ददामितत्तेचपुनर्यथात्वमददामम २ इत्युक्त्वापादयोर्भक्त्यासाष्टांगंप्रणिपत्यच ॥ बहुधाप्रार्थयामासकैकेय्यागुरुणासह ३ तथेतिप्रतिजग्राह भरताद्राज्यमीश्वरः ॥ मायामाश्रित्यसकलांनरचेष्टामुपागतः ४ स्वाराज्यामुभयोयस्यसुखज्ञानैकरूपिणः ॥ निरस्तातिशयानंदरूपिणः परमात्मनः ५ मानुषेणतुराज्येनकिंतस्यजगदीशितुः ॥ यस्यभ्रूभंगमात्रेणात्रिलोकीनश्यतिक्षणात् ६ यस्यानुग्रहमात्रेणभवंत्याखंडलश्रियः ॥ लीलासृष्टिमहासृष्टिः कियदेतद्रमापतेः ७ ॥

दो०। सर्गपन्द्रमें अनुजसखि वृन्दसमेत रमेश।
विविधवसन भूषण लसत कीन्हों नगर प्रवेश १
गुरुवशिष्ठपुनिरामको कियेराजअभिषेक।
सियाराममणिपीठमिलि भासितरूप अनेक २

अब श्रीमहादेवजी पार्वती से कथा वर्णन करतेहैं कि हे पार्वति तिस के उपरान्त कैकेयी का पुत्र जो भरत सो भक्तिसंयुक्त हो हाथ जोड़कै श्रीराम से कहताहुआ १ कि हे राम आपने मुझको राज्यदै करके चौदह वर्षतक वनवास करनेसे मेरी माताका सत्कार किया परन्तु अब यहराज आपको मैं देताहूं जैसे आप पहिले मुझको देतेहुये २ ऐसा कहिकै भरत श्रीराम के चरणों में साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करके कैकेयी और वशिष्ठकरके सहित बहुतप्रार्थना करतेहुये ३ फिर ईश्वर जो राम सो मनुष्यों कीसी चेष्टा जिसमें ऐसी माया का आश्रयण करके उस संपूर्ण राज्य को भरत से ग्रहण करतेहुये ४ और जो राम अपनेआत्म सुखकर तृप्तहोरहे हैं और सुख और ज्ञान येही रूपजिसका और दूरहुआहै और कातिरस्कार कारणरूप अतिशय जिससे ऐसा जो आनन्द सोई है रूप जिसका ऐसा जो परमात्मा जगत्का

ईश राम तिसको ५ मनुष्य राज्यकरके क्या प्रयोजन है और जिसकेभृकुटी चलानेमात्रही से क्षण भरमें त्रिलोकी नाशको प्राप्तहोजातीहै ६ और जिस के अनुग्रहमात्र करके इन्द्रकी संपदा होतीहै और लीलाही करके रची है अनेक ब्रह्माण्डों की सृष्टि जिसने ऐसा जो लक्ष्मीकापति राम तिसको अयोध्याका राज्य कितनाहै ७ ॥

तथापिभजतांनित्यंकामपूरविधित्सया ॥ लीलामानुषदेहेनसर्व मप्यनुवर्तते ८ ततःशत्रुघ्नवचनान्निपुणःश्मश्रुकृंतकः ॥ संभाराश्चा भिषेकार्थं आनीताराघवस्यहि ९ पूर्वंतुभरतेस्नातेलक्ष्मणेचमहा त्मनि ॥ सुग्रीवेवानरेंद्रेचराक्षसेंद्रे विभीषणे १० विशोधितजटा स्नातश्चित्रमाल्यानुलेपनः ॥ महार्हवसनोपेतस्तस्थौतत्रश्रियः ज्वलन् ११ प्रतिकर्मचरामस्यलक्ष्मणश्चमहामतिः ॥ कारयामास भरतःसीतायाराजयोषितः १२ महार्हवस्त्राभरणैरलंचक्रुःसुमध्यमा म् ॥ ततोवानरपत्नीनांसर्वासामेवशोभना १३ अकारयतकौशल्या प्रहृष्टापुत्रवत्सला ॥ ततःस्यंदनमादायशत्रुघ्नवचनात्सुधीः १४ ॥

तौभी भजन करनेवाले जोपुरुष तिनकी अभिलाषा पूर्ण करनेकी इच्छा करके लीलाही करके धारणकिया मनुष्य शरीर जिसने ऐसा जो राम तिस करके मनुष्य व्यवहारमात्र लोक शिक्षार्थ कियाजाता है ८ अब इसके उपरांत शत्रुघ्न की आज्ञासे बड़ा बुद्धिमान् नाई और अभिषेक के अर्थ जे सामग्रियां हैं ते सब राम के अर्थ मन्त्री लोगों करके संचित होती हुईं ९ तिसमें प्रथमतो भरत क्षौरादि कराके स्नान करते हुये फिर लक्ष्मण स्नान करतेहुये फिर सुग्रीव और बिभीषण स्नान करतेहुये १० तिसके उपरांत श्रीराम जटाओं को शुद्धकराके स्नान करके फिर चित्र बिचित्र पुष्प और चन्दन केसर कस्तूरी आदि अनुलेपन को लगाके फिर बहुमूल्य बस्त्रों को धारणकर शोभाकरके प्रकाशमान वहां स्थितहोतेहुये ११ तहां रामका उबटना आदि शरीर संस्कार को श्रेष्ठमति जो लक्ष्मण और भरत ये कराते हुये और सीता का दशरथकी स्त्री करातीहुईं १२ फिर बहुमूल्य जो वस्त्र और अलंकार तिन करके सीताको अलंकृत करती हुईं तिसके उपरांत पुत्रवत्सला जो कौशल्या सो सब सुग्रीवादि वानरों की स्त्रियाओंका १३ उद्वर्तनादिक शरीर का संस्कार कराके वस्त्रालंकारादि करके भूषित कराती हुईं फिरशत्रुघ्नके वचन से श्रेष्ठबुद्धि जो सुमन्त्र १४ ॥

सुमंत्रःसूर्यसंकाशंयोजयित्वाग्रतस्थितः ॥ आरुरोहरथंरामःस

त्यधर्मपरायणः १५ सुग्रीवोयुवराजश्चहनुमांश्चविभीषणः ॥ स्ना त्वादिव्यांबरधरादिव्याभरणभूषिताः १६ राममन्वीयुरग्रेचरथा श्वगजवाहनाः ॥ सुग्रीवपत्न्यःसीताचययुर्यानैःपुरंमहत् १७ वज्रपा णिर्यथादेवैर्हरिताश्वरथेस्थितः ॥ प्रययौरथमास्थायतथारामोमहत् पुरम् १८ सारथ्यंभरतश्चक्रेरत्नदंडमहाद्युतिः ॥ श्वेतातपत्रंशत्रु घ्नोलक्ष्मणोव्यजनंदधे १९ चामरंचसमीपस्थोन्यवीजयदरिंदमः ॥ शशिप्रकाशंत्वपरंजग्राहासुरनायकः २० दिविजैःसिद्धसंघैश्चऋषि भिर्दिव्यदर्शनैः ॥ स्तूयमानस्यरामस्यशुश्रुवेमधुरध्वनिः २१ ॥

सो सूर्यके प्रकाश तुल्य रथको जोड़के रामके आगेआके स्थित होताहुआ तब सत्यधर्म परायण जो श्री रामचन्द्र सो उस रथके ऊपर चढ़तेहुये १५ फिर सुग्रीव और अंगद और हनुमान् और विभीषण ये सबस्नानकरके दिव्य वस्त्र धारणकरके और दिव्यआभूषणों को धारण करे १६ रथ और हाथी और घोड़े इनपैचढ़के रामके पीछे चलतेहुये और कोई अगाड़ी अगाड़ी चलतेहुये और सुग्रीव की स्त्री और सीता ये सब शिविका आदि सवारियों पै सवार हो अयोध्या को जाती हुईं १७ और जैसे बज्रपाणि जो इन्द्र सो हरित घोड़ों करके जुरा हुआ जो रथ तिसमें स्थित होके देवों करके सहित गमन करैं तैसे रामभी रथमें स्थितहोके अयोध्या को जाते हुये १८ तहां भरतजी सारथ्य कर्म करते हुये अर्थात् सारथी होके घोड़े चलाते हुये और रत्न का दण्ड जिस का ऐसा सपेदछत्र तिसको शत्रुघ्न धारण करते हुये और लक्ष्मण व्यजनजो पंखा तिसको धारण करते हुये १९ और समीप स्थित जो सुग्रीव सो चमर को ढुलाता हुआ और चन्द्रमाकासा प्रकाश जिसका ऐसे दूसरे चमरको वि- भीषणग्रहण करता हुआ २० और देवता और सिद्धों का समूह और दिव्य दर्शन जो ऋषि तिन करके स्तुति किये जोरामतिनके स्तुतिवचनोंका मधुर शब्दसुनाई देताहुआ २१ ॥

मानुषंरूपमास्थायवानरागजवाहनाः ॥ भेरीशंखनिनादैश्चमृदं गपणवानकैः २२ प्रययौराघवश्रेष्ठस्तांपुरींसमलंकृताम् ॥ ददृशुस्ते समायांतंराघवंपुरवासिनः २३ दूर्वादलश्यामतनुंमहार्हकिरीटरत्ना भरणांचितांगम् ॥ आरक्तकंजायतलोचनांतंदृष्ट्वाययुर्मोदमतीवपु ण्याः २४ विचित्ररत्नांचितसूत्रनद्धपीताम्बरंपीनभुजांतरालम् ॥ अ नर्घ्यमुक्ताफलदिव्यहारैर्विरोचमानंरघुनंदनंप्रजाः २५ सुग्रीवमुख्यै

हरिभिःप्रशांतैर्निषेव्यमाणंरवितुल्यभासम् ॥ कस्तूरिकाचंदनलिप्त गात्रंनिवीतकल्पद्रुमपुष्पमालं २६ श्रुत्वास्त्रियोराममुपागतम्मुदा प्रहर्षवेगोत्कलितानन्नश्रियः ॥ अपास्यसर्वंगृहकार्यमाहितंहर्म्याणि चैवारुरुहुःस्वलंकृताः २७ दृष्ट्वाहरिंसर्वदृगुत्सवाकृतिंपुष्पैःकिरंत्यः स्मितशोभिताननाः ॥ दृग्भिःपुनर्नेत्रमनोरसायनंस्वानन्दमूर्तिंमनसा भिरेभिरे २८

और मनुष्य रूपको धारणकर वानरहाथियोंके ऊपर चढ़करके चलतेहुये और भेरी और शंख और मृदंग और पणव आनक इनको बजाते हुये २२ बाजाओं करके श्रीराम अयोध्यापुरी में प्रवेशकरते हुये अब आवते हुये जो रघुनन्दन तिनको पुरवासी लोग देखतेहुये २३ अब दूर्वादलके तुल्य श्यामहै तनु जिसका और श्रेष्ठ जो मुकुट औररत्नजटित जेआभूषण तिनकरके व्याप्त है अंग जिसका और थोड़ेरक्त जो कमल तद्वत् विशालहैं नेत्र जिसके ऐसेजो राम तिनको बड़े पुण्ययुक्त जे अयोध्यावासी ते देखके अत्यन्त आनन्द को प्राप्तहोते हुये २४ और चित्र विचित्र रत्नों करके युक्त जो कटिसूत्र तागड़ी तिसकरके बँधाहुआहै पीताम्बर जिसका और पुष्टहै भुजाओंका मध्यभागवक्ष-स्स्थल जिसका और बहुमोल्य मोतियोंके जे दिव्यहार तिनकरके प्रकाशमान ऐसे रामको सब प्रजा देखती हुई २५ फिर कैसेरामहैं कि सुग्रीवादिकजेशांत-चित्त वानर तिनकरिकै सेवनकियेगयेहैं और सूर्यकेतुल्यहै कांतिजिनकी और कस्तूरीकरिके मिलाहुआ जो चन्दन तिसकरिकै लिप्तहै अंगजिसका औरकल्प-वृक्षके पुष्पोंकी मालाओंको धारणकिये हैं ऐसे रामको आवतेहुये सब प्रजा देखतीहुई २६ अब आवतेहुये रामको देखिकै आनन्दके वेगकरिकै वृद्धि को प्राप्तहुईहै मुखकी शोभाजिनकी ऐसी जे अयोध्या नगरीकी स्त्रियां ते आवश्य-कभी गृहकार्य्यको त्यागि कै और वस्त्रालंकारों को धारण करिकै श्रीराम के मुखारविंद देखनेको महलों के ऊपर चढ़तीहुई २७ अब सबकेनेत्रोंकी दृष्टि-योंका जो उत्सव मंगल तिसी ने मानों स्वरूप धारण कियाहोय ऐसे जोराम तिनको सब स्त्रियां देखके मन्दमुसुकानि करकै शोभितहैं मुख जिनके ऐसी हो पुष्पोंकीवृष्टि करतीहुई और नेत्र और मन इनको रसायनकेतुल्यआह्लाद बढ़ानेवाली जो अपनी आनन्दमूर्त्ति श्रीरामचन्द्र तिसको नेत्रोंके द्वारा हृदय में प्रविष्ट करिके मन करिकै आलिंगन करतीहुई २८ ॥

रामःस्मितस्निग्धदृशाप्रजास्तथापश्यन्प्रजानाथइवापरःप्रभुः ॥ शनैर्जगामाथपितुःस्वलंकृतंगृहंमहेंद्रालयसन्निभंहरिः २९ प्रविश्यवे

ड्मांतरसंस्थितोमुदारामोववंदेचरणौस्वमातुः ॥ क्रमेणसर्वाःपितृयो षितःप्रभुर्ननामभक्त्यारघुवंशकेतुः३० ततोभरतमाहेदंरामःसत्यपरा क्रमः ॥ सर्वसम्पत्समायुक्तंममन्दिरमुत्तमम् ३१ मित्रायवानरेंद्राय सुग्रीवायप्रदीयताम् ॥ सर्वेभ्यःसुखवासार्थंमंदिराणिप्रकल्पय ३२ रामेणैवसमादिष्टोभरतश्चतथाकरोत् ॥ उवाचचमहातेजाःसुग्रीवं राघवानुजः ३३ राघवस्याभिषेकार्थंचतुःसिंधुजलंशुभम् ॥ आनेतुं प्रेषयस्वाशुदूतांस्त्वरितविक्रमान् ३४ प्रेषयामाससुग्रीवोजाम्बवंतं मरुत्सुतम् ॥ अंगदंचसुषेणंचतेगत्वावायुवेगतः ३५ ॥

फिर प्रसन्नमुख जो राम सो स्नेहयुक्त दृष्टिकरिकै ब्रह्माकीतरह अपनी प्रजाको देखतेहुये धीरेधीरे इन्द्रके गृहके तुल्य जो अपने पिताका अलंकार युक्त गृह तिसको जातेहुये २९ फिर उस दशरथ के गृह में प्रवेश करिकै बीच की डेउढ़ी में स्थितहोके राम अपनीमाता जो कौशल्या तिसके चरणों में प्रणामकरतेहुये फिर श्रीराम क्रमकरिकै सब दशरथकी स्त्रियाओंको प्रणाम करतेहुये ३० फिर तिसके उपरान्त सत्य है पराक्रम जिसका ऐसे जो राम सो भरतसे यहवचन कहतेहुये कि हे भरत सम्पूर्ण सम्पत्तियों करिकैयुक्त जो मेरागृह तिसको ३१ मेरा मित्र जो बानरोंकास्वामी सुग्रीव तिसकोदेवो और सब बानरोंको और बिभीषणको सुखपूर्वक रहनेको पृथक् स्थानदेवो ३२ फिर इसप्रकार रामकरिकै आज्ञाकोप्राप्त जो भरत सो जैसे रामनेकहा तैसेई करता हुआ और फिर भरत सुग्रीव से यह कहताहुआ ३३ कि हे सुग्रीव श्रीराम के अभिषेकके लिये चारोंसमुद्रका जल लेनेको बड़ेशीघ्र चलनेवाले बलवान् जे दूतहैं तिनको भेजिये ३४ तब सुग्रीव भरतकावचन सुनतेई जाम्बवान् और हनुमान् और अंगद औ सुषेण इनको भेजताहुआ फिर वे सब पवनके बेग करके जाकर ३५ ॥

जलपूर्णाञ्छातकुम्भकलशांश्चसमानयन् ॥ आनीतंतीर्थसलिलं शत्रुघ्नोमंत्रिभिःसह ३६ राघवस्याभिषेकार्थंवशिष्ठायन्यवेदयत् ॥ ततस्तुप्रयतोवृद्धोवशिष्ठोब्राह्मणैःसह ३७ रामंरत्नमयेपीठेससीतंसं न्यवेशयत् ॥ वशिष्ठोवामदेवश्चजाबालिर्गौतमस्तथा ३८ वाल्मी किश्चतथाचक्रुःसर्वेरामाभिषेचनम् ॥ कुशाग्रतुलसीयुक्तंपुण्यगन्धज लैर्मुदा ३९ अभ्यषिंचन्रघुश्रेष्ठंवासवंवसवोयथा ॥ ऋत्विग्भिर्ब्राह्म णैःश्रेष्ठैःकन्याभिःसहमंत्रिभिः ४० सर्वौषधीरसैश्चैवदैवतैर्नभसिस्थि

तैः ॥ चतुर्भिर्लोकपालैश्चस्तुवद्भिःसगणैस्तथा ४१ छत्रंचतस्यजग्राहशत्रुघ्नःपांडुरंशुभम् ॥ सुग्रीवराक्षसेंद्रौतौदधतुःश्वेतचामरे ४२ ॥

समुद्रों के जलसेभरेहुये जे सुवर्ण के कलश तिनको लातेहुये फिर आया हुआ जो तीर्थोंकाजल तिसको मन्त्रियोंकरिकै सहित शत्रुघ्न ३६ श्रीराम के अर्थ वशिष्ठजीको निवेदनकरतेहुये अर्थात् सौंपतेहुये फिर तिसके उपरान्त जितेंद्रिय और वृद्ध ऐसे जो वशिष्ठ सो वामदेवादिक ब्राह्मणों करिकै सहित ३७ सीताकरिकै सहित रामको सुवर्ण की चौकी पै बैठातेहुये फिर वशिष्ठ और वामदेव और जाबालि और गौतम ३८ और बाल्मीकि ये सबऋषिलोग कुश और तुलसी इनसे मिलाहुआ जो सुगन्ध द्रव्ययुक्त तीर्थोंकाजल तिस करिकै रामका अभिषेक बड़ेआनन्दसे करतेहुये ३९ और जैसे वसुनाम करिकै देवता इन्द्रका अभिषेक करतेहुये हैं तैसेही वशिष्ठादिक श्रेष्ठ जे ऋत्विक् ब्राह्मण तिनकरके और ब्राह्मण की कन्याओं करके और मन्त्रियों करिकै ४० और आकाश में स्थित जे देवता और अपने गणोंकरिकै युक्त स्तुति करते हुये जे इन्द्रादि लोकपाल इन सबों करिकै सहित जे पूर्वोक्त वशिष्ठादिक ते सब ओषधियों के रसों करिकै सीतासहित रामको अभिषेक करतेहुये अर्थात् ऋग्वेदादि वेदों के मन्त्रोंकरिकै स्नान करातेहुये ४१ और श्वेतवर्ण जो रामका छत्र तिसको शत्रुघ्न ग्रहण करतेहुये और सुग्रीव और बिभीषण ये दोनोंचमर रामके ऊपर ढुलातेहुये ४२ ॥

मालांचकांचनींवायुर्ददौवासवचोदितः ॥ सर्वरत्नसमायुक्तम्मणिकांचनभूषितम् ४३ ददौहारंनरेंद्रायस्वयंशक्रस्तुभक्तितः ॥ प्रजगुर्देवगन्धर्वानन्तृतुश्चाप्सरोगणाः ४४ देवदुन्दुभयोनेदुःपुष्पवृष्टिःपपातखात् ॥ नवदूर्वादलश्यामंपद्मपत्रायतेक्षणम् ४५ रविकोटिप्रभायुक्तकिरीटेनविराजितम् ॥ कोटिकन्दर्पलावण्यंपीताम्बरसमावृतम् ४६ दिव्याभरणसम्पन्नं दिव्यचन्दनलेपनम् ॥ अयुतादित्यसंकाशंद्विभुजंरघुनन्दनम् ४७ वामभागेसमासीनांसीतांकांचनसन्निभाम् ॥ सर्वाभरणसम्पन्नांवामांकेसमुपस्थिताम् ४८ रक्तोत्पलकरांभोजांवामेनालिंग्यसंस्थितम् ॥ सर्वातिशयशोभाढ्यंदृष्ट्वाभक्तिसमन्वितः ४९ ॥

और इन्द्रके भेजेहुये पवनसुवर्ण निर्मित दिव्य मालाको रामके अर्थ देते हुये और सम्पूर्ण रत्नोंकरके जटित और मणि और सुवर्णकरके भूषित ऐसा जोहार तिसको ४३ श्रीराजाधिराज जो राम तिनके अर्थ आपही इन्द्रभक्ति

करके देताहुआ और उससमयमें देवताओं के गन्धर्व गानकरतेहुये औ अप्सराओं के समूह नृत्य करते हुये ४४ और देवताओंके दुन्दुभी जे नगाड़े ते बजतेहुये और आकाशसे पुष्पोंकी वृष्टि होतीहुई और उसी समय में दिव्य सिंहासनके ऊपर स्थित और नवीन दूर्वादलके तुल्य श्यामवर्ण और कमल पत्रके तुल्य बिशालहैं नेत्र जिसके ४५ और करोड़ों सूर्यों के तुल्य कांतिहै जिसकी ऐसे मुकुटकरके बिराजित और करोड़ों कामदेवों के तुल्य है सौन्दर्य जिसका और पीताम्बरको धारणकरे ४६ और दिव्य आभूषणों को धारण करे और दिव्य चन्दनको लगायेहुये और अयुत सूर्योंकासा प्रकाश जिसका और दोहैं भुजा जिसकी ऐसे जो राम सो ४७ सुवर्णके तुल्यहै कांति जिस की और सम्पूर्ण आभूषणों करके भूषित और रक्त कमलहै हाथमें जिसके ऐसी जो सीता तिसको बामभागमें ४८ बामे हाथ करके आलिंगन करके स्थित और सबसे अधिक शोभायुक्त ऐसे जो रघुनन्दन तिसको ४९॥

उमयासहितोदेवःशंकरोरघुनन्दनम् ॥ सर्वदेवगणैर्युक्तःस्तोतुंस मुपचक्रमे ५० श्रीमहादेवउवाच ॥ नमोस्तुरामायसशक्तिकायनी लोत्पलश्यामलकोमलाय ॥ किरीटहारांगदभूषणायसिंहासनस्था यमहाप्रभाय ५१ त्वमादिमध्यान्तविहीनएकःसृजस्यवस्यत्सिच लोकजातम् ॥ स्वमाययातेननलिप्यसेत्वंयत्स्वेसुखेजस्त्ररतोनवद्यः ५२ लीलांविधत्सेगुणसंवृतस्त्वंप्रपन्नभक्तानुविधानहेतोः ॥ नाना वतारैःसुरमानुषाद्यैःप्रतीयसेज्ञानिभिरेवनित्यम् ५३ स्वांशेनलोकं सकलंविधायतंबिभार्षिचत्वंतदधःफणीश्वरः ॥ उपर्यधोभान्वनिलो डुपौषधीप्रवर्षरूपोवसिनैकधाजगत् ५४ त्वमिहदेहभृतांशिखिरूपः पचसिभुक्तमशेषमजस्रम् ॥ पवनपञ्चकरूपसहायोजगदखण्डमने नबिभार्षि ५५ चन्द्रसूर्यशिखिमध्यगतंयत्तेजईशचिदशेषतनूनाम् ॥ प्राभवत्तनुभृतामिहधैर्यंशौर्यमायुरखिलंतवसत्वम् ५६॥

पार्वती करके सहित और सब देवगणों को संगलिये जो महादेव सो देखके स्तुति करनेको प्रारम्भ करते हुये ५० कि अपनी असाधारण शक्ति योगमायाका अवतार रूप जो सीता तिस करके सहित और नील कमल के तुल्य कोमलहै स्वरूप जिसका और किरीट मुकुट और हार और अंग बाहु भूषणादि हैं आभूषण जिसके और सिंहासनके ऊपर स्थित कांतियुक्त जो श्रीराम तिसके अर्थ नमस्कारहै ५१ और हे राम आदि मध्य अन्त करके हीन जो एक तुम सो अपनी मायाकरके सब जगत्को रचतेहो और पालन

करतेहो और संहार करतेहो तोभी उन कर्मों करके लिप्त नहीं होते सदा निर्दोषही रहतेहो नहीं कभी ऐन्द्रजालके पुरुष अपनी माया करके रचेहुये पुरुषोंका--वधकरके हिंसादि दोष करके लिप्त होताहै और आप सदा निरन्तर अपने आनन्द में स्थित रहतेहो ५२ और गुणमयी मायां करके आच्छादित जो तुमहो सो शरणागत जो भक्त तिनके मोक्षके कारणसे सुर मनुष्यादि अपने अनेक अवतारोंकरके लीलाको धारण करतेहो सो ज्ञानीपुरुषों कोही ऐसे प्रतीत होतेहो कि जे परमेश्वर के अवतार हैं और अज्ञानी पुरुष तो यही जानतेहैं कि रामकृष्णादिक भी कोई श्रेष्ठ पुरुषहैं ५३ और हे राम अपने अंश करके सब जगत् को रचिकै शेष नागरूप होके फिर आपहीनीचे से पृथ्वीको धारण करतेहो और ऊपर से सूर्य और पवन और चन्द्रमा और व्रीहि जवादिक औषधी और मेघ इन सबोंका रूप होके सब जगत्कोपालन करतेहो ५४ और आपही प्राण अपान समान उदान व्यान इन पांचप्राणोंका सहाय जिसका ऐसे जाठराग्नि रूपहोके जे देहधारियों करके भोजन किये अन्नादिक का परिपाक करते हो इस प्रकारकरके भी सब जगत् का पालन करतेहो ५५ और हे ईश चन्द्रमा और सूर्य और अग्नि इनमें जो तेजहै और सम्पूर्ण देह धारियों में जो चैतन्यशक्तिहै और सब देह धारियों का जो धैर्य और शूरता और आयुर्बल सो सब तुम्हारी ही सत्ता तौन तौन रूप करके प्रकट होरही है ५६ ॥

त्वंविरंचिशिवविष्णुविभेदात्कालकर्मशशिसूर्यविभागात् ॥ वादिनांपृथगिवेशविभासिब्रह्मनिश्चितमनन्यदिहैकम् ५७ मत्स्यादिरूपेणयथात्वमेकःश्रुतौपुराणेषुचलोकसिद्धः ॥ तथैवसर्वंसदसद्विभागस्त्वमेवनान्यद्भवतोविभाति ५८ यद्यत्समुत्पन्नमनंतसृष्टावुत्पत्स्यतेयच्चभवच्चयच्च ॥ नदृश्यतेस्थावरजंगमादौत्वयाविनातःपरतःपरस्त्वम् ५९ तत्त्वंनजानंतिपरात्मनस्तेजनाःसमस्तास्तवमाययातः ॥ त्वद्भक्तसेवामलमानसानांविभातितत्त्वंपरमेकमैशम् ६० ब्रह्मादयस्तेनविदुःस्वरूपंचिदात्मतत्त्वंबहिरर्थभावाः ॥ ततोबुधस्त्वामिदमेवरूपंभक्त्याभजन्मुक्तिमुपैत्यदुःखः ६१ अहंभवन्नामगृणन्कृतार्थोवसामिकाश्यामनिशंभवान्या ॥ मुमूर्षमाणस्यविमुक्तयेहंदिशामिमंत्रन्तवरामनाम ६२ इमंस्तवंनित्यमनन्यभक्त्याशृण्वंतिगायंतिलिखंतियेवै ॥ तेसर्वसौख्यंपरमंचलब्ध्वाभवत्पदंयांतुभवत्प्रसादात् ६३ ॥

और हे ईश ब्रह्मादि भेद करके और कालादि भेद करके ईशवादी जो

मनुष्य तिनको तौन तौनरूप करके तुमहीं भजनीय हौ अर्थात् कोई ब्रह्मा हीको ईश्वर जानिकै भजन करतेहैं कोईशिवको कोईविष्णुको कोईकाल को कोई कर्म को कोई चन्द्र सूर्य को ईश मानिकै भजन करते हैं तिनमें तुम हीं भेदकरके ब्रह्मादिरूपसे प्रकाश कररहेहौ और वास्तव में तौ भेदरहित एक अद्वितीय ब्रह्महीं निश्चितहौ ५७ और जैसे तुमहीं एकअवतार धारण करिकै मत्स्य कच्छपादि अनेक रूपकरके वेद में और पुराणोंमें और लोकमें प्रसिद्धहौ तैसे तुमहीं एकब्रह्मसदसद्रूपकरिकै ब्रह्मादिरूप और मनुष्यादिरूप करिकै प्रतीत होरहेहौ और तुमसे अन्यकुछनहीं भानहोताहै अर्थात् बिचार करके देखाजाताहै तौ तुमसेअन्य मिथ्याही प्रतीत होताहै ५८ और यह अनादि काल से चलीआती जो अनन्तसृष्टि तिसमें जोकुछ उत्पन्नहोचुकाहै और जोहोवैगा और जोहोरहाहै तिसमें ऐसाकोई स्थावर जंगम में नहीं देख पड़ता जो तुम्हारेबिना होय इससे परेसे परेभी तुमहौ ५९ और सबमनुष्य तुम्हारीही मायाकरिकै आच्छादितहैं इससे तुम्हारे परमार्थ स्वरूपको नहीं जानतेहैं और तुम्हारे भक्तों की सेवा करके निर्मलहै मनजिनका ऐसेमनुष्यों को तौ तुम्हारा ईश्वररूपप्रतीत होताहै ६० और जो कदाचित् बाहरके बिषयों मेंहीहै सत्य बुद्धिजिनकी ऐसे ब्रह्मादिकभी तुम्हाराचैतन्य जोआत्मतत्त्व स्वरूप तिसको नहीं जानसक्तेहैं औरोंकी तौ वार्त्ताही क्याहै तिसकारणसे विवेकी पुरुषयह जोश्यामसुन्दर तुम्हारास्वरूप तिसका भक्तिकरके भजनकरता हुआ सबदुःखों से निवृत्तिहो मुक्तिको प्राप्तहोताहै ६१ और हे राममैं जोशिव हौं सो पार्वती करिकै सहित आपके नामको उच्चारणकरता कृतार्थहो काशीपुरी में बासकरताहूं और जोकाशीमें कोईपुरुष मरने लगताहै तौ उसके मोक्षकेलिये आपके रामतारक मन्त्रका उपदेश करता हूं ६२ और हे भगवन् अब मेरी यह प्रार्थनाहै कि जे पुरुष इस मेरेकियेहुये आपके स्तोत्रको नित्य अनन्यभक्तिकरिके पढ़ैं अथवा सुनैं अथवा लिखैं अथवा गानकरैं तेपरम सुखको प्राप्तहोकै आपके प्रसादसे आपकेपद को प्राप्त होवैं ६३ ॥

इन्द्रउवाच ॥ रक्षोधिपेनाखिलदेवसौख्यंहृतंचमेब्रह्मवरेणदेव ॥ पुनश्चसर्वंभवतःप्रसादात्प्राप्तंहतोराक्षसदुष्टशत्रुः ६४ देवाऊचुः ॥ हतायज्ञभागाधरादेवदत्ता मुरारेखलेनादिदैत्येनविष्णो ॥ हतोद्यत्वयानोवितानेषुभागापुरावद्भविष्यंतियुष्मत्प्रसादात् ६५ पितरऊचुः हतोद्यत्वयादुष्टदैत्योमहात्मन्गयादौनरैर्दत्तपिंडादिकान्नः ॥ बलादत्तिहत्वागृहीत्वासमस्तानिदानींपुनर्लब्धसत्वाभवामः ६६ यक्षाऊ

चुः ॥ सदाविष्टिकर्मण्यनेनाभियुक्तावहामोदृशास्यंबलाद्दुःखयुक्ताः॥ दुरात्माहतोरावणोराघवेशत्वयातिवयंदुःखजाताद्विमुक्ताः ६७ गन्धर्वाऊचुः ॥ वयंसंगीतनिपुणागायंतस्तेकथामृतम् ॥ आनंदामृतसंदोहयुक्ताःपूर्णाःस्थिताःपुरा ६८ पश्चाद्दुरात्मनारामरावणेनाभिविद्रुताः ॥ तमेवगायमानाश्चतदाराधनतत्पराः६९ स्थितास्त्वयापरित्राताहतोयंदुष्टराक्षसः॥एवंमहोरगाःसिद्धाःकिन्नरामरुतस्तथा ७० ॥

अब महादेव जी के अनन्तर इन्द्रकहते हुये कि हे देव इसरावण ने ब्रह्मा जी के वरदान के प्रभाव करके मेरासब देव राज्यका सुखहरिलिया था सो आप के प्रसाद से फिर मुझको प्राप्तहुआ और यह दुष्ट शत्रुभी मारागया यह बड़ा आनदहै ६४ अबसबदेवता कहतेहुये कि हे विष्णो यज्ञोंमें ब्राह्मणोंकरके दियेहुये जे हमारेभाग ते उसदुष्ट रावणने हरिलियेथे सोवहदुष्टरावण आपने मारा इससेआपके प्रसादसेपहिलेकीतरह फिरहमको यज्ञभागमिला करैंगे ६५ अब पितृगणकहतेहैं कि हेराम जो दुष्टरावण गयादिकतीर्थोंमें हमारेपुत्रोंकरके दिये हुये जे श्राद्धादि पिण्ड तिनको जबरदस्ती आपही खाताथा सो दुष्ट आपने मारा इससे अबहम अपने पिण्डोंको प्राप्तहोके बलयुक्त होवैंगे ६६ फिर तिसके उपरांत यक्षबोलतेहुये कि हेराम हमलोग सबबड़ेदुःख करके युक्त इस रावणकी बेगारमें प्रेरित हुये कर्म करतेथे सोहे ईश इससमय में आपने इस दुरात्माको मारा इससे हम सबोंको दुःखजालसे छुड़ादिया ६७ फिर तिसके उपरांत गन्धर्व अपना दुःख कहतेहुये कि हेराम हमलोग गानादि विद्याओंमें बड़े चतुर पहिले आपका कथारूप अमृतका गानकरतेहुये आनंद से परिपूर्ण होतेथे ६८ फिर इसके पीछे दुष्ट रावणने आपके गानसे छुड़ाके अपने गुणों काही गान कराया तबसे हम रावणके गुणोंको गानकरतेहुये उसीके आराधन में तत्पररहे ६९ सो अब आपने उस दुष्टको मारा इससे हम सबरक्षाको प्राप्त हो बड़े आनन्दित हुये अब इसी प्रकार उरग अर्थात् सर्प और सिद्ध और किन्नर और मरुत् ७० ॥

वसवोमुनयोगावोगुह्यकाश्चपतत्त्रिणः॥सप्रजापतयश्चैतेतथाचाप्सरसांगणाः ७१ सर्वेरामंसमासाद्य दृष्ट्वानेत्रमहोत्सवम् ॥ स्तुत्वापृथक्पृथक्सर्वेराघवेणाभिवंदिताः ७२ ययुः स्वंस्वंपदंसर्वे ब्रह्मरुद्रादयस्तथा ॥ प्रशंसंतोमुदारामं गायंतस्तस्यचेष्टितम् ७३ ध्यायंतस्त्वाभिषेकार्द्रंसीतालक्ष्मणसंयुतम् ॥ सिंहासनस्थंराजेंद्रंययुः

सर्वैर्हृदिस्थितम् ७४ खेवाद्येषुध्वनत्सुप्रमुदितहृदयैर्देववृन्दैः स्तुवद्भिर्वर्षद्भिः पुष्पवृष्टिंदिविमुनिनिकरैरीड्यमानंसमंतात् ॥ रामः श्यामः प्रसन्नस्मितरुचिरमुखः सूर्यकोटिप्रकाशः सीतासौमित्रिवातात्मजमुनिहरिभिःसेव्यमानोविभाति ७५ ॥

इत्यध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेपंचदशस्सर्गः १५ ॥

और वसुगण और मुनिलोग औ गौयें और गुह्यक और पक्षियों के समूह और दक्षादिप्रजापति और अप्सराओंके समूह ७१ ये सब रामके पास आके नेत्रोंकोआनन्ददायक रामकेस्वरूपका दर्शनकरके और पृथक्पृथक्अर्थात् न्यारी न्यारी स्तुतिकरके श्रीराम करके प्रशंसितहुये ७२ ब्रह्म रुद्रादि गण आनन्द करके आपभी रामकी प्रशंसाकरतेहुये और रामचरित्रोंको गानकरतेहुये ७३ और सिंहासनपैस्थित जो सीता लक्ष्मण युक्त राजराजेन्द्र परमानंदरूप तिस को हृदयमें ध्यानकरतेहुये अपने अपने लोककोजातेहुये ७४ अब उससमय श्रीरामका ध्येयरूप कविवर्णनकरताहै कि आकाशमें अनेकप्रकारके बाजेबजते हुये और आनन्दयुक्तहो स्तुतिकरते हुये और पुष्पोंकी वृष्टिकरते हुये जे देवताओंके समूह और मुनिलोग तिन्होंकरके स्तुति कियेगये जो कोटिसूर्यप्रकाश प्रसन्नमुख सीता लक्ष्मण हनुमदादि सेवित परमानन्ददायक श्याम सुन्दर राम सो रत्नसिंहासनके ऊपर प्रकाशकररहेहैं ७५ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डे
भाषानुवादेपंचदशःसर्गः १५ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ रामेभिषिक्तेराजेन्द्रेसर्वलोकसुखावहे ॥ वसुधासस्यसम्पन्नाफलवंतोमहीरुहाः १ गन्धहीनानिपुष्पाणिगन्धवंतिचकाशिरे ॥ सहस्रशतमश्वानांधेनूनांचगवांतथा २ ददौशतवृषान्पूर्वंद्विजेभ्योरघुनन्दनः ॥ त्रिंशत्कोटिसुवर्णस्यब्राह्मणेभ्योददौपुनः ३ वस्त्राभरणरत्नानि ब्राह्मणेभ्योमुदातथा ॥ सूर्यकांतिसमप्रख्यांसर्वरत्नमयींस्रजम् ४ सुग्रीवायददौप्रीत्याराघवोभक्तवत्सलः ॥ अंगदायददौदिव्येह्यंगदेरघुनंदनः ५ चंद्रकोटिप्रतीकाशंमणिरत्नविभूषितम् ॥ सीतायैप्रददौहारंप्रीत्यारघुकुलोत्तमः ६ अवमुच्यात्मनः कण्ठाद्धारंजनकनन्दिनी ॥ अवैक्षतहरीन्सर्वान्भर्तारंचमुहुर्मुहुः ७ ॥

दो० । सर्ग सोल्हमें सखा सब सनमाने श्रीराम ॥
मनचाहतहू राम के प्रेरितगे निजधाम १

अब श्रीमहादेवजी पार्वतीजीसे कथावर्णनकरते हैं कि हे पार्वति जब सब लोकों को सुखके देनेवाले श्रीरामराज्याभिषेक को प्राप्तहो राज सिंहासनपै बैठके राज्यकरनेलगे तौ संपूर्णपृथिवी धनधान्य संपदाओंकरके पूर्ण होतीहुई और वृक्षफलोंकरके युक्त होतेहुये १ और जे पुष्प सुगन्धि हीनभी थे वे भी सुगन्धि युक्तहो प्रकाशकरतेहुये और उस समयमें श्रीराम सौहजार घोड़े और सौहजार गाय ब्राह्मणोंको देतेहुये २ और सैकडों बैल देतेहुये और तीसकरोड़ अशरफी ब्राह्मणों को देते हुये ३ और वस्त्र और आभूषण और रत्न इनको बहुत आनन्दपूर्वक देतेहुये और सूर्यकीसी कांति जिसकी ऐसी जो रत्नोंकरके जटित माला तिसको ४ बड़ी प्रीतिसे भक्तवत्सल श्रीराम सुग्रीवको देते हुये और अंगदको बडेप्रकाशयुक्त स्वर्णके बनेहुये दोअंगद अर्थात् भुजाओं में पहिरने के आभूषण जे बहूटा तिनको देतेहुये ५ और करोड़ों चन्द्रमाओंका सा प्रकाश जिसका और मणि रत्नोंकरके भूषित ऐसा जो हार तिसको बड़ीप्रीति से राम सीताको देतेहुये ६ तब उससमयमें सीताजी अपनेगलेसे उसहारको उतारके देनेकेलिये सबवानरों के तरफ देखतीहुईं और अपनाभर्त्ता जो राम तिसकोभी बारंबार देखतीहुईं ७ ॥

रामस्तामाहवैदेहीमिंगितज्ञोविलोकयन् ॥ वैदेहियस्यतुष्टासिदेहितस्मैवरानने ८ हनूमतेददौहारंपश्यतोराघवस्यच ॥ तेनहारेणशुशुभेमारुतिर्गौरवेणच ९ रामोपिमारुतिंदृष्ट्वाकृतांजलिमुपस्थितम् ॥ भक्त्यापरमयातुष्टइदंवचनमब्रवीत् १० हनूमंस्तेप्रसन्नोस्मिवरंवरयकांक्षितम् ॥ दास्यामिदेवैरपियत्दुर्लभम्भुवनत्रये ११ हनूमानपितंप्राहनत्वारामंप्रहृष्टधीः ॥ त्वन्नामस्मरतोरामनतृप्यतिमनोमम १२ अतस्त्वन्नामसततंस्मरन्स्थास्यामिभूतले ॥ यावत्स्थास्यतितेनामलोकेतावत्कलेवरम् १३ ममतिष्ठतुराजेंद्रवरोऽयंमेभिकांक्षितः ॥ रामस्तथेतितंप्राहमुक्तस्तिष्ठयथासुखम् १४ ॥

तब इशारेके जाननेवाले जो राम सो उससमयमें सीतासे बोलतेहुये कि हेसीते जिसकेऊपर तुमप्रसन्नहोवो तिसको यहदीजिये ८ तब श्रीरामको देखते सीता उसहारको हनुमान्केअर्थ देतीहुई फिर हनुमान् उसहारकरके और सीताजीके आदरकरके अत्यन्त शोभितहोताहुआ ९ और श्रीरामचन्द्रभी हाथ जोड़ेहुये समीप स्थित जो हनुमान् तिसको देखिकै हनुमान् की भक्तिकरके

प्रसन्नहो यहकहतेहुये १० कि हेहनुमन् मैं तेरेऊपर प्रसन्नहूं जो तेरीइच्छाहोय सोवरमांग और तीनोंलोकों में जो देवताओंकोभी दुर्लभ सो मैं तुझको देऊँगा ११ तो हनुमान्भी प्रसन्नहो श्रीरामको नमस्कारकरके बोलताहुआ कि हे राम तुम्हारेनामको स्मरणकरते करते मेरामन नहीं तृप्त होता है १२ इससे आपकेनामको स्मरणकरतेहुई मैं पृथ्वीमें स्थितरहों और हेराजेंद्र जबतक तुम्हारानाम लोकमें स्थितरहै तबतक मेराशरीर स्थितरहै यही वर मुझको अभीष्ट है १३ तब श्रीरामचन्द्रजीने कहा कि हेहनुमन् तैसे होगा और तुम जीवन्मुक्तहो पृथ्वीमें स्थितरहोगे १४ ॥

कल्पांतेमनसायुज्यंप्राप्स्यसेनात्रसंशयः ॥ तमाहजानकीप्रीता यत्रकुत्रापिमारुते १५ स्थितंवामनुयास्यंतिभोगाःसर्वेममाज्ञया ॥ इत्युक्तोमारुतिस्ताभ्यामीश्वराभ्यांप्रहृष्टधीः १६ आनंदाश्रुपरीताक्षो भूयोभूयःप्रणम्यतौ ॥ कृच्छ्राद्ययौतपस्तप्तुंहिमवंतंमहामतिः १७ ततोगुहंसमासाद्यरामःप्रांजलिमब्रवीत् ॥ सखेगच्छपुरंरम्यंशृंगिवेरमनुत्तमम् १८ मामेवचिंतयन्नित्यंभुंक्ष्वभोगान्निजार्जितान् ॥ अंतेममैवसारूप्यंप्राप्स्यसेत्वंनसंशयः १९ इत्युक्त्वाप्रददौतस्मैदिव्यान्याभरणानिच ॥ राज्यंचविपुलंदत्त्वाविज्ञानंचददौविभुः २० रामेणालिंगितोहृष्टोययौस्वभवनंगुहः ॥ येचान्येवानराःश्रेष्ठाअयोध्यां समुपागताः २१ ॥

और कल्पके अन्तमें मेरे सायुज्य मोक्षको तुम प्राप्तहोउगे इसमें कुछ संदेहनहीं तब सीता प्रसन्नमनहो हनुमान्से बोली १५ कि हेपवनसुत जहां तुम स्थितरहौगे तहां सबभोग मेरीआज्ञाकरके तुम्हारेसमीप प्राप्तहुआ करैंगे इसप्रकार जगत्माता पिता जो सीता और राम इनकरके कहाहुआ जोहनुमान् सो बड़ाप्रसन्न होताहुआ १६ और आनन्द के आंशुओं करके भरेहुये हैं नेत्र जिसके ऐसा जो हनुमान् सो वारंवार सीता रामको प्रणामकरके बड़े कष्टसे तपकरनेको हिमालयपर्वतको जाताहुआ १७ तिसके उपरांत हाथ जोड़े अगाड़ीखड़ा जो गुह निषाद तिसको श्रीराम प्राप्तहोके अर्थात् देखिकै वचनबोले कि हेसखे तुम अपना श्रेष्ठ जो शृंगवेरपुर तिसको जाव १८ और मेराही नित्य स्मरणकरतेहुये अपनेपुण्योंकरके उपार्जितकिये जेभोग तिनको करौ और अंतमें मेरेहीस्वरूपको प्राप्तहोउगे इसमें कुछसंशय नहींहै १९ यह वचनकहिकै श्रीराम उस गुहको दिव्य और देवलोकके जे आभूषण तिनको देतेहुये और राज्य बहुतसा देतेहुये और ज्ञान देतेहुये २० फिर रामकरके

आलिंगनकिया इसी से बड़े आनन्दकरके युक्त ऐसा जोगुह सो अपने गृहको जाताहुआ और जे जे वानर श्रेष्ठ अयोध्यापुरीमें आयेथे २१ ॥

अमूल्याभरणैर्वस्त्रैःपूजयामासराघवः ॥ सुग्रीवप्रमुखाःसर्वेवानराःसविभीषणाः २२ यथार्हंपूजितास्तेनरामेणपरमात्मना ॥ प्रहृष्टमनसःसर्वेजग्मुरेवयथागतम् २३ सुग्रीवप्रमुखाःसर्वेकिष्किंधांप्रययुर्मुदा ॥ विभीषणस्तुसंप्राप्यराज्यंनिहतकंटकम् २४ रामेणपूजितःप्रीत्यायवौलंकामनिंदितः ॥ राघवोराज्यमखिलंशशासाखिलवत्सलः २५ अनिच्छन्नपिरामेणयौवराज्येभिषेचितः ॥ लक्ष्मणःपरयाभक्त्यारामसेवापरोभवत् २६ रामस्तुपरमात्मापिकर्माध्यक्षोऽपिनिर्मलः॥कर्तृत्वादिविहीनोपिनिर्विकारोपिसर्वदा २७ स्वानंदेनापितुष्टःसन्लोकानामुपदेशकृत्॥अश्वमेधादियज्ञैश्चसर्वैर्विपुलदक्षिणैः २८ ॥

तिन सबोंका बहुत मूल्यके अथवा मूल्यरहितजे दिव्यवस्त्र और आभूषण तिन्होंकरके श्रीरामपूजन करतेहुये और सुग्रीवको आदिलेके विभीषणसहित जे वानरआयेथे तेसब परमात्माकरके यथायोग्य पूजितहुये आनन्दयुक्तहो अपने अपने गृहोंको जातेहुये २३ तिसमें सुग्रीवादिक तौ किष्किन्धानगरी को आनन्दपूर्वक जातेहुये और विभीषणभी निष्कंटक राज्यको पाके २४ रामकरके सत्कार कियागया लंकापुरीको जाताहुआ और रामकी कृपासे कुलक्षयमें कारणभूत विभीषण कभी निन्दाको प्राप्तनहीं होताहुआ और सबको प्रियजोराम सो सबभूमण्डल की रक्षाकरतेहुये २५ और नहीं इच्छा करता हुआ भी लक्ष्मण रामने युवराज पदवीमें अभिषेकको प्राप्त किया सो परम भक्तिकरके रामहीकी सेवामें तत्परहोताहुआ २६ और राम यद्यपि सबको फलप्रदाता ईश्वरहैं और निर्मलहैं और परमात्माहैंऔर कर्तृत्वादि दोषोंकरके रहितहैं और सर्वदानिर्विकारहैं २७और अपने आनन्दकरकेपरिपूर्णभीहैं तौभी मनुष्यवपुको आश्रयणकरके महात्मा पुरुषोंको उपदेश करतेहुये बहुतदक्षिणा जिन्होंमें ऐसे जे अश्वमेधादिक यज्ञ २८ ॥

अयजत्परमानन्दोमानुषंवपुराश्रितः ॥ नपर्यदेवन्विधवानचव्यालकृतंभयम् २९ नव्याधिजंभयंचासीद्रामेराज्यंप्रशासति ॥ लोके दस्युभयंनासीदनर्थोनास्तिकश्चन ३० वृद्धेषुसत्सुबालानांनासीन्मृत्युभयंतथा ॥ रामपूजापराःसर्वेसर्वेराघवचिंतकाः ३१ ववर्षुर्जलदास्तोयंयथाकालंयथारुचि ॥ प्रजाःस्वधर्मनिरतावर्णाश्रमगुणान्वि

ताः ३२ औरसानिवरामोऽपिजुगोपपितृवत्प्रजाः ॥ सर्वलक्षणसंयु
क्तःसर्वधर्मपरायणः ३३ दशवर्षसहस्राणिरामोराज्यमुपास्तसः ३४
इदंरहस्यंधनधान्यऋद्धिमत्दीर्घायुरारोग्यकरंसुपुण्यदम् ॥ पवित्र
माध्यात्मिकसंज्ञितंपुरारामायणंभाषितमादिशंभुना ३५ ॥

तिन्होंकरके यजन करतेहुये और श्रीरामचन्द्रके राज्यमें कोई विधवा स्त्री बिलाप नहीं करतीहुई औ न किसीको सर्पका भयहोताहुआ २९ और न किसीको रोगका भयहोताहुआ और न किसीको चोरका भय होताहुआ और न किसीप्रकारका अनर्थ होताहुआ ३० और बूढे मनुष्यों के बैठे हुये बालकोंकी मृत्युश्रीरामके राज्यमें नहीं होतीहुई और सबमनुष्य श्रीरामकी पूजामें परायण होतेहुये और सबश्रीरामहीका स्मरणकरते हुये ३१ और बर्षाकालमें जैसा जिसको अभीष्टहै तैसामेघ बर्षताहुआ और वर्णाश्रमगुणों करके युक्तप्रजा अपने अपने धर्ममें तत्परहोती हुई ३२ और सब शुभलक्षणों करके युक्त और सबधर्मोंके आश्रयभूतजो श्रीरामसो औरसपुत्रों के तुल्यप्रजा की रक्षाकरतेहुये ३३ और दशहजार बर्षतक श्रीराम राज्यकरते हुये ३४ और यह रहस्यनाम गोपनीय और धनधान्यका बढ़ानेवाला औरबड़ी आयुर्बल काकरनेवाला और आरोग्यकरनेवाला और पुण्यकादेनेवाला और अतिपवित्र ऐसा जोअध्यात्मरामायणसो श्रीमहादेवजीने प्रथम पार्वतीजीसेकहाहै ३५ ॥

शृणोतिभक्त्यामनुजःसमाहितोभक्त्यापठेद्वापरितुष्टमानसः ॥ स
र्वाः समाप्नोतिमतोगताशिषोविमुच्यतेपातककोटिभिःक्षणात् ३६ रा
माभिषेकंप्रयतःशृणोतियोधनाभिलाषीलभतेमहद्धनम् ॥ पुत्राभि
लाषीसुतमार्यसंमतंप्राप्नोतिरामायणमादितःपठन् ३७ शृणोतियो
ध्यात्मिकरामसंहितांप्राप्नोतिराजाभुवमृद्धसंपदम्॥ शत्रून्विजित्यारि
भिरप्रधर्षितोव्यपेतदुःखोविजयीभवेन्नृपः ३८ स्त्रियोऽपिशृण्वंत्यधि
रामसंहितांभवंतिताजीवसुताश्चपूजिताः ॥ बंध्याऽपिपुत्रंलभते
सुरूपिणंकथामिमांभक्तियुताशृणोतिया ३९ श्रद्धान्वितोयःशृणुया
त्पठेन्नरोविजित्यकोपंचतथाविमत्सरः ॥ दुर्गाणिसर्वाणिविजित्यनि
र्भयोभवेत्सुखीराघवभक्तिसंयुतः ४० सुराःसमस्ताअपियांतितुष्टतां
विघ्नाःसमस्ताअपयांतिशृण्वताम् ॥ अध्यात्मरामायणमादितोनृ
णांभवंतिसर्वाअपिसंपदःपराः ४१ रजस्वलावायदिरामतत्पराशृ

णे तिरामायणमेतदादितः ॥ पुत्रंप्रसूतेऋषभंचिरायुषंपतिव्रतालोकसुपूजिताभवेत् ४२ ॥

सो जोमनुष्य भक्तिकरके और एकाग्रचित्त से इसको श्रवण करता है अथवा प्रसन्न मन करके भक्तिसे इसको पढ़ता है सो सब मनकी कामनाओं को प्राप्तहोता है और करोड़ों पातकोंसे क्षणमात्र में छूटिजाताहै ३६ और जो धनाभिलाषी पुरुष श्रीराम के अभिषेक चरित्रको एकाग्रचित्तहो श्रवणकरता है सो बहुत से धनको प्राप्त होताहै और जो पुत्रकी अभिलाषा करके आदि से लेके रामायणको पढ़े तौ श्रेष्ठ पुरुषोंको सम्मत अर्थात् माननीय पुत्रको प्राप्त होता है ३७ और जो राजा इस अध्यात्म रामायणको श्रवण करै तौ समृद्धि युक्त पृथ्वी को प्राप्त होता है और शत्रुओं करके नहीं तिरस्कार किया गया शत्रुओं को जीतके सब दुःखों से रहितहो विजयको प्राप्त होता है ३८ और जिस स्त्री के पुत्र मरजाते होयँ सो मृतवत्सा स्त्री इस रामायण का श्रवणकरै तौ उसके पुत्र जीवने लगें अर्थात् वह स्त्री जीवत्पुत्राहोय और लोकमें सत्कार को प्राप्तहोय और जो वन्ध्या स्त्री इस रामायण को भक्तियुक्तहो श्रवण करै तौ बड़े स्वरूपयुक्तपुत्र को प्राप्तहोवै ३९ और जो श्रद्धायुक्त मनुष्य इस रामायण को श्रवण करै अथवा क्रोधरहित और मत्सरदोष रहित होके इस को पढ़ै तौ सब क्लेशों से छूट करके निर्भय और सुखी और रामकी भक्ति करके युक्त होता है ४० और जे पुरुष अध्यात्म रामायण का श्रवण करते हैं तिनके ऊपर सब देवता और ब्राह्मण प्रसन्न होते हैं और सब विघ्न नाशको प्राप्तहोते हैं और संपूर्ण संपत्ति प्राप्ति होतीहै ४१ और जो रजस्वला स्त्री ऋतु स्नान कर बारह दिन तक आदिसे लेकै इस रामायण का श्रवण करै तौ आयुर्बल युक्त और गुणयुक्त पुत्रको उत्पन्न करती है और पतिव्रता और लोकपूजित होतीहै ४२ ॥

पूजयित्वातुयेभक्त्या नमस्कुर्वंतिनित्यशः ॥ सर्वैःपापैर्विनिर्मुक्ता विष्णोर्यांतिपरंपदम् ४३ अध्यात्मरामचरितंकृत्स्नंशृण्वंतिभक्तितः ॥ पठंतिवास्वयंवक्त्रात्तेषांरामःप्रसीदति ४४ रामएवपरंब्रह्मतस्मिंस्तुष्टेऽखिलात्मनि॥ धर्मार्थकाममोक्षाणांयद्यदिच्छतितद्भवेत् ४५ श्रोतव्यंनियमेनैतद्रामायणमखंडितम् ॥ आयुष्यमारोग्यकरंकल्पकोटचघनाशनम्४६देवाश्चसर्वेतुष्यंतुग्रहाःसर्वेमहर्षयः॥ रामायणस्यश्रवणेतृप्यंतिपितरस्तथा ४७ अध्यात्मरामायणमेतदद्भुतंवैराग्यविज्ञानयुतंपुरातनम् ॥ पठंतिशृण्वंतिलिखंतियेनरास्तेषांभवेऽस्मि

न्नपुनर्भवोभवेत् ४८ आलोड्याखिलवेदराशिमसकृद्यत्तारकंब्रह्मत द्रामोविष्णुरहस्यमूर्त्तिरितियोविज्ञायभूतेश्वरः ॥ उद्धृत्याखिलसार संग्रहमिदंसंक्षेपतः प्रस्फुटं श्रीरामस्यनिगूढतत्त्वमखिलंप्राहप्रियायै भवः ४९ काण्डेयुद्धात्मकेसर्गानवसप्तनीलकण्ठोक्ताः ॥ सार्द्धैकादश शतश्लोकामनुसंख्यायुताः ॥

इत्यध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डेषोडशःसर्गः १६ ॥

और जे पुरुष इस अध्यात्मरामायणकी पुस्तकको नित्य पूजनकरके भक्ति करके नमस्कार करतेहैं ते संपूर्ण पापोंसे छूटिकै विष्णु के परमपदको प्राप्तहोते हैं ४३ जे पुरुष सम्पूर्ण अध्यात्मरामायण चरित्रको भक्ति करके श्रवण करते हैं अथवा अपने मुखसे कहतेहैं तिनके ऊपर श्रीराम प्रसन्नहोते हैं ४४ और रामही साक्षात्परब्रह्महैं इससे सर्वात्मा जो रामहैं तिनके प्रसन्न होने से धर्म अर्थ काम मोक्ष इनकेमध्यमें जिसजिस पदार्थकी इच्छाकरताहै वहीवहीपदार्थ को प्राप्तहोता है ४५ और जिसकारण से यह रामायण आयुर्बलका बढ़ानेवाला है और आरोग्यका करनेवालाहै और करोड़ोंकल्पके पापोंका नाशकरनेवालाहै इससे नियमकरके इससंपूर्ण रामायणका श्रवणकरनाचाहिये४६औररामायण के सुनने से सबदेवता प्रसन्नहोतेहैं और सूर्यादिग्रहप्रसन्नहोतेहैं और सब महर्षि प्रसन्न होतेहैं और सब पितर प्रसन्नहोते हैं ४७ और वैराग्य और विज्ञानकरके संयुक्त यह अद्भुत आश्चर्ययुक्त जो अध्यात्मरामायण तिसको जे पुरुष पढ़तेहैं और सुनतेहैं और जे लिखतेहैं तिनका इस संसार में फिर जन्मनहीं होताहै ४८ और भूतेश्वर जो श्री महादेवजी सो सबवेदराशिको बारम्बार विचारकर के यह निश्चयकरते हुये जो तारक ब्रह्महै सोई विष्णुकी रहस्य अर्थात् गुप्तमूर्तिहै और सब उपनिषद् इसीतारक ब्रह्मका व्याख्यान भूतहैं यहजानके श्री महादेवजी उपनिषदोंका जो सारभूत अर्थतिसको संक्षेपकरके श्रीरामकागुप्त जो तत्त्व स्वरूप सो प्रकटजैसे होय तैसे अध्यात्मरामायणकी द्वारा उसी तत्त्व को प्रिया जो पार्वती तिसके अर्थकहतेहुये ४९ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेश्रीमद्रुक्मिणी
गर्भजत्रिपाठिकुलभूषणतुलारामसूनुश्रीमदुमादत्तविरचित
भाषाटीकायांषोडशस्सर्गः १६ ॥
समाप्तश्चायंयुद्धकाण्डः ६ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ अध्यात्मरामायण ॥

उत्तरकाण्ड ॥

भाषा टीकासहित ॥

जयतिरघुवंशतिलकःकौशल्याहृदयनन्दनोरामः ॥ दशवदननिधनकारीदाशरथिःपुण्डरीकाक्षः ॥ पार्वत्युवाच ॥ अथरामःकिमकरोत्कौशल्यानन्दवर्द्धनः ॥ हत्वामृधेरावणादीन्राक्षसान्भीमविक्रमः १ अभिषिक्तस्त्वयोध्यायांसीतयासहराघवः ॥ मायामानुषतांप्राप्यकतिवर्षाणिभूतले २ स्थितवान्लीलयादेवःपरमात्मासनातनः ॥ अत्यजन्मानुषंलोकंकथमंतेरघूद्वहः ३ एतदाख्याहिभगवन्श्रद्दधत्यामम्प्रभो ॥ कथापीयूषमास्वाद्यतृष्णामेतीववर्द्धते ॥ रामचंद्रस्यभगवन्ब्रूहिविस्तरशःकथाम् ४ श्रीमहादेवउवाच ॥ राक्षसानांबधंकृत्वाराज्येरामउपस्थिते॥आययुर्मुनयःसर्वेश्रीराममभिवंदितुम् ५ विश्वामित्रोसितःकण्वोदुर्वासाभृगुरङ्गिराः ॥ कश्यपोवामदेवोत्रिस्तथासप्तर्षयोमलाः ६ अगस्त्यःसहशिष्यैश्चमुनिभिःसहितोऽभ्यगात् ॥ द्वारमासाद्यरामस्यद्वारपालमथाब्रवीत् ७ ॥

दो० । प्रथम सर्गमहँ राम के दर्शन हेतु मुनीश ॥
आयेकुम्भजमुनिसहित सनमानेजगदीश १
पुनि मुनि कथापुरातनी कहनलगेहरपाइ ॥
धनददशाननआदिलै जिमिजनमे सबभाइ २

अब श्रीपार्वती जी रामका उत्तर चरित्र श्रवणकरनेको बड़ी उत्कण्ठा से श्रीमहादेव जी से पूंछतीहुई कि हे भगवन् अब इसके उपरान्त कौशल्याको आनन्दके करनेवाले श्रीराम संग्राम में रावणादिक राक्षसों को मारके और अयोध्यामें राज्यकोप्राप्तहो क्या करतेहुये १ और सनातन परमात्मा जोराम सो लीला सहित मनुष्यभाव को प्राप्तहो कितने वर्ष पर्य्यंत पृथ्वी में वास करतेहुए २ और इसमनुष्य शरीरको लीलाही करके अन्तमें कैसे त्यागकरते

हुये ३ हे भगवन् श्रद्धायुक्त जो मैं हौं तिससे यह सब वृत्तान्त कहिये और यह कथारूप अमृतका पान करतीहुई मैं तृप्तिको नहीं प्राप्तहोतीहौं इससे रामचन्द्रकी कथाको विस्तारपूर्वक कहिये ४ अब ये पार्वतीजीके वचनसुनिकै महादेव कहनेलगे कि हे पार्वति जब राक्षसों का बधकरके राम राज्यको प्राप्त हुये तौ श्रीराम को प्रणाम करने को मुनिलोग आवतेहुये ५ विश्वामित्र और असित औ कण्व औ दुर्वासा औ भृगु औ अंगिरा औ कश्यप औबामदेव और अत्रि और अवशिष्टरहे जे सप्तर्षि ६ और शिष्यगणों करके सहित और मुनियों करके सहित अगस्त्य जी आवते हुये ये सब ऋषिलोग राम के द्वार प्राप्त हो द्वारपाल से बोलते हुये ७॥

ब्रूहिरामायमुनयःसमागत्यबहिःस्थिताः॥अगस्त्यप्रमुखाःसर्वेआशीभिरभिनंदितुम् ८प्रतिहारस्ततोराममगस्त्यवचनाद्द्रुतम्॥नमस्कृत्वाब्रवीद्वाक्यंविनयावनतःप्रभुम् ९ कृतांजलिरुवाचेदमगस्त्यो मुनिभिःसह॥ देवत्वद्दर्शनार्थायप्राप्तोबहिरुपस्थितः १० तमुवाच द्वारपालंप्रवेशययथासुखम्॥ पूजिताविविशुर्वेश्मनानारत्नविभूषितम् ११ दृष्ट्वारामोमुनीन्शीघ्रंप्रत्युत्थायकृतांजलिः॥ पाद्यार्घ्यादिभिरापूज्यगांनिवेद्ययथाविधि १२ नत्वातेभ्योददौदिव्यान्यासनानि यथार्हतः॥ उपविष्टाःप्रहृष्टाश्चमुनयोरामपूजिताः १३संपृष्टकुशलाः सर्वेरामंकुशलमब्रुवन्॥ कुशलंतेमहाबाहोसर्वत्ररघुनन्दन १४॥

कि हे द्वारपाल तुम रामसे जाकर यह कहो कि अगस्त्य को आदि लैके ये सब मुनिगणआपको आशीर्वाददेनेको उपस्थितहुये हैं ८ तब द्वारपालअगस्त्य के बचन से शीघ्रही रामके समीप जाके श्रीरामको प्रणाम कर नम्र हो यह कहताहुआ ९ कि हेराम मुनियोंकरके सहित अगस्त्य मुनि आपके दर्शनाभिलाषी हाथ जोड़े यह कहतेहुये कि हे देव हम आपके दर्शनके अर्थ बाहर खड़े हैं १० तब श्री राम द्वारपालसे बोले कि सुखपूर्वक सब मुनियों को प्राप्त करौ तब सब मुनिलोग रामकी आज्ञा से बड़े सत्कार पूर्वक अनेक प्रकार के रत्नों करके भूषित रामकेमन्दिरमें प्रवेशकरतेहुये ११ तब श्रीराम मुनियोंको देखके शीघ्रही हाथजोड़के आसनसे उठिकै पाद्यार्घादिक सामग्रियोंकरके पूजनकरके गौको निवेदनकरतेहुये १२ और सबमुनियोंको नमस्कारकरके यथायोग्य दिव्य आसन बैठनेको देतेहुये फिर रामसे पूजाको प्राप्तहो सब ऋषि आनन्द पूर्वक आसनोंपै बैठतेहुये १३ फिरकुशलप्रश्न पूछेहुये सबऋषि रामसे कुशल पूछते हुयेबोले कि हे महाबाहो हे रघुनन्दन तुम्हारे सबराज्योंके अंगोंमें कुशलहै १४॥

दिष्ट्येदानींप्रपश्यामोहतशत्रुमरिंदम ॥ नहिभारःसतेरामरावणो राक्षसेश्वरः १५ सधनुस्त्वंहिलोकांस्त्रीन्विजेतुंशक्तएवहि ॥ दिष्ट्या त्वयाहताःसर्वेराक्षसारावणादयः १६ सह्यमेतन्महाबाहोरावणस्य निबर्हणम् ॥ असह्यमेतत्संप्राप्तंरावणेर्यन्निषूदनम् १७ अंतकप्र तिमाःसर्वेकुम्भकर्णादयोमृधे ॥ अंतकप्रतिमैर्बाणैर्हतास्तेरघुसत्तम १८ दत्ताचेयंत्वयाऽस्माकंपुराह्यभयदक्षिणा ॥ हत्वारक्षोगणान्संख्ये कृतकृत्योद्यजीवसि १९ श्रुत्वातुभाषितंतेषांमुनीनांभावितात्मनाम्॥ विस्मयंपरमंगत्वारामःप्रांजलिरब्रवीत् २० रावणादीनतिक्रम्यकुम्भ कर्णादिराक्षसान् ॥ त्रिलोकजयिनोहित्वाकिंप्रशंसथरावणिम् २१ ॥

और हे राम जोशत्रुओंको मारके राज्य में स्थितजो आप तिनको मैं दे-खताहौं सोबड़ा आनन्दहै और जोराक्षसोंका ईश्वर रावणको आपने मारासो कुछआपको भारनहींहै १५ अर्थात् कठिन नहीं क्योंकि धनुषको हाथमें लिये अकेले आप तीनोंलोकोंको नाशकरनेको समर्थहौ तौभी जोरावणादिक राक्ष-स आपनेमारे इससे हमको आनन्द हुआ १६ तिसमें भी हे राम जोरावण का मारनाहुआ सोतौ सहजथा परन्तु जो रावणका पुत्र मेघनाद तिस का मारना बड़ा मुशकिलरहा १७ इससे मेघनाद के वधका हमको आश्चर्य हुआ और हे राम संग्राममें कालमृत्यु के तुल्य बली जे कुंभकर्णादि राक्षस तिनको वैसेही पराक्रम युक्त अपने बाणोंकरके आपने मारा १८ सो आपने हम सब ऋषियों को अभयदक्षिणादी और सब राक्षसों को मारिकै आपभी कृतकृत्यहो जीवनको प्राप्तहौ १९ अब श्रीरामचन्द्रजी ये सब अगस्त्य आदि मुनियों के वचन सुनिकै बड़े आश्चर्यको प्राप्तहो हाथ जोड़के बोलतेहुये २० कि हे मुनीश्वरो आपलोग त्रैलोक्यविजयी अर्थात् तीनोंलोकोंकेजीतनेवाले जे रावण कुंभकर्ण आदि राक्षस तिनको छोड़केक्याएक मेघनादहीकी तारीफ करते हौ अर्थात् सबको छोड़के मेघनादहीकी प्रशंसा में आपका क्याआशयहै सो कहिये २१ ॥

ततस्तद्वचनंश्रुत्वाराघवस्यमहात्मनः ॥ कुम्भयोनिर्महातेजारा मंप्रीत्यावचोऽब्रवीत् २२ शृणुरामयथावृत्तंरावणेरावणस्यच ॥ जन्म कर्मवरादानंसंक्षेपाद्वदतोमम २३ पुराकृतयुगेरामपुलस्त्योब्रह्मणःसु तः ॥ तपस्तप्तुंगतोविद्वान्मेरोःपार्श्वेमहामतिः २४ तृणबिन्दोराश्रमे सोन्यवसन्मुनिपुंगवः ॥ तपस्तेपेमहातेजाःस्वाध्यायनिरतःसदा २५

तत्राश्रमेमहारम्येदेवगन्धर्वकन्यकाः ॥ गायंत्योननृतुस्तत्रहसंत्योवा दयंतिच २६ पुलस्त्यस्यतपोविघ्नंचक्रुःसर्वाअनिंदिताः ॥ ततःक्रुद्धोमहातेजाव्याजहारवचोमहत् २७ यामेदृष्टिपथंगच्छेत्सागर्भंधार यिष्यति ॥ ताःसर्वाःशापसंविग्नानतंदेशंप्रचक्रमुः २८ ॥

तो बड़े तेजस्वी जो अगस्त्यमुनि सो श्रीमहात्मा रामचन्द्रजी के बचनसुनि कै परम प्रीतिसे रामके प्रतिवचन बोले२१कि हेराम जैसाकुछ मेघनादका और रावणका वृत्तहै और जन्म औ कर्म और बरदानकी प्राप्तिहुई तिससबको मैं संक्षेपसे कहताहूं सो आप सुनिये २३ पहिले एक ब्रह्माजीके पुत्र वेदादिकों के जाननेवाले पुलस्त्यमुनि तपकरनेको सुमेरुपर्वतके समीप जातेहुये २४वहां एक तृणबिन्दु ऋषिका आश्रमथा उसमें बासकरतेहुये नित्यवेदके पाठमें परा- यणहो तपकरनेलगे २५ फिर उस बड़े रमणीय आश्रम में देवता और गन्धर्वों की कन्या बहुतसी आनेलगीं और वहां गानभी करतीहुईं और कोई नाचकरने लगीं और कोई बाजाबजायाकरें और कोईहास्य किया करें २६ इसप्रकार वे बड़ी बड़ी सुन्दरी कन्या पुलस्त्यजी महाराजके तपमें विघ्नकरतीहुईं तब तो बड़े तेजस्वी पुलस्त्य मुनि क्रोधकरके कहतेहुये२७कि जोआजसेकन्यामेरेनेत्रों के आगे आवैंगी सो गर्भको धारण करैंगी अर्थात् मेरीदृष्टिके पड़तेहीउसीसमय उसकेगर्भ होजायगा तबतो वहां शापकीभयसे कोई कन्या नहींजातीहुई२८॥

तृणविन्दोस्तुराजर्षेःकन्यातन्नाशृणोद्वचः ॥ विचचारमुनेरग्रेनि र्भयातंप्रपश्यती २९ बभूवपांडुरतनुर्व्यंजितांतःशरीरजा ॥ दृष्ट्वासा देहवैवर्ण्यंभीतापितरमन्वगात् ३० तृणविंदुश्चतांदृष्ट्वाराजर्षिरमि तद्युतिः ॥ ध्यात्वामुनिकृतंसर्वमवैद्विज्ञानचक्षुषा ३१ तांकन्यांमुनिव र्यायपुलस्त्यायददौपिता ॥ तांप्रगृह्याब्रवीत्कन्यांबाढमित्येवसद्वि जः ३२ शुश्रूषणपरांदृष्ट्वामुनिःप्रीतोब्रवीद्वचः ॥ दास्यामिपुत्रमेकंते उभयोर्वंशवर्द्धनम् ३३ ततःप्रासूतसापुत्रंपुलस्त्याल्लोकविश्रुतम् ॥ विश्रवाइतिविख्यातःपौलस्त्योब्रह्मविन्मुनिः ३४ तस्यशीलादिकंदृ ष्ट्वाभरद्वाजोमहामुनिः ॥ भार्यार्थंस्वांदुहितरंददौविश्रवसेमुदा ३५ ॥

परन्तु जिस तृणबिन्दुराजर्षिका वह आश्रमथा उनकीकन्याने यह मुनिका शाप नहींसुनाथा इससे वह निर्भयहो पुलस्त्यजीकी दृष्टिकेसामने विचरती हुई मुनिको देखतीहुई २९ फिर वह उसीसमयमें पीतवर्णहोगई और जैसे गर्भके चिह्न होते हैं तैसेही चिह्नोंको धारणकरे गर्भवती होगई फिर वह

कन्या अपने देहका वर्ण विपरीतदेखके भयपीड़ितहो अपने पिताके समीप जातीहुई ३० फिर तृणविन्दु राजर्षि तैसी अवस्थाको प्राप्त अपनी कन्याको देखके ध्यानमार्ग में ज्ञानदृष्टि के प्रभावसे सब वहचरित्र पुलस्त्यका जानता हुआ ३१ फिर तृणविन्दुराजा उस कन्याको पुलस्त्यजीकेअर्थ देताहुआ और पुलस्त्यमुनिभी उसको भार्यारूपकरके स्वीकारकरतेहुये ३२ फिर पतिशुश्रूषामेंतत्पर उसकोदेखके मुनिप्रसन्नहोके एकसमय बोले कि हेकल्याणि दोनों वंशोंकी वृद्धिकरनेवाला ऐसा एकपुत्र तुझको देऊँगा ३३ तबतौ वहस्त्री पुलस्त्यजीके सकाशते विश्रवानामकरके विख्यातपुत्रको उत्पन्नकरतीहुई फिरवह सबवेदोंका जाननेवाला पौलस्त्य और विश्रवानामकरके लोकमें प्रसिद्धहोताहुआ ३४ फिर तिस विश्रवाका शील और गुणदेखके भरद्वाजमुनि अपनी कन्याको विवाह करदेतेहुये ३५ ॥

तस्यांतुपुत्रःसंजज्ञेपौलस्त्याल्लोकसम्मतः ॥ पितृतुल्योवैश्रवणोब्रह्मणाचानुमोदितः ३६ ददौतत्तपसातुष्टोब्रह्मातस्मैवरंशुभम् ॥ मनोभिलषितंतस्यधनेशत्वमखंडितम् ३७ ततोलब्धवरःसोपिपितरंद्रष्टुमागतः ॥ पुष्पकेनधनाध्यक्षोब्रह्मदत्तेनभास्वता ३८ नमस्कृत्वाथपितरंनिवेद्यतपसःफलम् ॥ प्राहमेभगवान्ब्रह्मादत्त्वावरमनिंदितम् ३९ निवासायनमेस्थानंदत्तवान्परमेश्वरः ॥ ब्रूहिमेनियतंस्थानंहिंसायत्रनकस्यचित् ४० विश्रवाअपितंप्राहलंकानामपुरीशुभा ॥ राक्षसानांनिवासायनिर्मिताविश्वकर्मणा ४१ त्यक्त्वाविष्णुभयाद्दैत्याविविशुस्तेरसातलम्॥सापुरीदुःप्रधर्षान्यैर्मध्येसागरमास्थिता४२॥

फिर उसस्त्रीमें विश्रवामुनिसे वैश्रवण और कुवेरनामकरकेब्रह्माकीसम्मतिसे प्रसिद्धपुत्र होताहुआ जो गुणोंसे पिताकेतुल्यहै ३६ फिर तिसकुवेर के तपकरके प्रसन्नहुये ब्रह्मा मनोभिलषित वरदेतेहुये जिससे अखंडित देवताओंके धनकी स्वामिताप्राप्तहुई ३७ फिर इसप्रकार ब्रह्माजीसे वरकोप्राप्तहो कुवेर एकसमय ब्रह्माकादिया सूर्यतुल्य प्रकाशमान पुष्पक विमान के ऊपर चढ़िके अपनेपिताके दर्शन करनेको आवताहुआ ३८ फिर वहांआके पिताको नमस्कार करके जो तपकाफल प्राप्तहुआथा सोसब सुनाके कुवेर यह कहने लगा कि हेपितः ब्रह्माजी प्रसन्नहो मुझको धनकास्वामी तो करतेहुये ३९ परन्तु रहनेको स्थान कोई नहींदिया सो आप कृपाकरके मेरे रहनेको स्थान बतलाइये जहां किसी की बाधा न होवे अर्थात् जहां मेरे रहने से किसी

प्राणीको क्लेश न होय ऐसा नियतस्थान दीजिये ४० तौ विश्रवामुनि अपने पुत्र कुबेरसेबोले कि हेपुत्र लंकानामकरके एक बड़ीअच्छी पुरी है जो प्रथम राक्षसोंके निवासकरनेको विश्वकर्माने रचीथी ४१ सो दैत्य राक्षस तो विष्णुकी भयसे उसपुरीको त्यागिकै पातालमें प्रवेशकरगये इससे समुद्रके मध्यमें स्थित उसलंका पुरीमें किसीके जानेतककी शक्तिनहीं है और जब दैत्य लोग पातालको चलेगयेहैं तबसे कोई उसमें नहींबसाहै ४२॥

तत्रवासायगच्छत्वंनान्यैःसाधिष्ठितापुरा॥ पित्रादिष्टस्त्वसौगत्वातांपुरींधनदोविशत् ४३ सतत्रसुचिरंकालमुवासपितृसम्मतः॥ कस्यचित्त्वथकालस्यसुमालीनामराक्षसः ४४ रसातलान्मर्त्यलोकंचचारपिशिताशनः॥गृहीत्वातनयांकन्यांसाक्षाद्देवीमिवश्रियम् ४५ अपश्यद्धनदंदेवंचरंतंपुष्पकेणसः॥ हितायचिंतयामासराक्षसानांमहामनाः ४६ उवाचतनयांतत्रकैकसींनामनामतः॥ वत्सेविवाहकालस्तेयौवनंचातिवर्त्तते ४७ प्रत्याख्यानाच्चभीतैस्त्वंनवरैर्गृह्यसेशुभे॥ सात्वंवरयभद्रंतेमुनिंब्रह्मकुलोद्भवम् ४८ स्वयमेवततःपुत्राभविष्यंतिमहाबलाः॥ ईदृशाःसर्वशोभाढ्याःधनदेनसमाःशुभे ४९॥

इससे उसी लंकामें तुमवासकरो इसप्रकार पिताकी आज्ञासे कुबेर लंकापुरीमें जाके प्रवेशकरताहुआ ४३ वहकुबेर बहुतकालतक पिताकी सम्मतिसे उसलंकापुरीमें वासकरताहुआ फिरकिसीसमयमेंसुमालीराक्षस ४४लक्ष्मीके तुल्य प्रकाशमान अपनीकन्याकोलैके पाताललोकसेआके मनुष्यलोकमेंबिचरताहुआ ४५ और उसके यह अभिलाषथी कि कोई अच्छावर मिलै तौइसका विवाह करदेवों तबतक उसीसमयमें पुष्पकविमानकेऊपर चढ़िकै विचरतेहुये कुबेरकोवहराक्षसदेखताहुआ फिर सबराक्षसोंके हितकेलिये उसनेऐसाविचार किया ४६ किमेरी इसकन्याकाभी ऐसाहीसूर्यतुल्यतेजस्वी पुत्रहोता तौअच्छा रहा ऐसाविचारकर अपनी कैकसीकन्यासे बचनबोला कि हेवत्से तेराबिवाह समयप्राप्त होरहाहै तेरी यौवन अवस्थाभी वृथाव्यतीतहुई जातीहै४७औरतेरे मनाकरनेकी भयसे कोई तुझको बरता नहीं अर्थात् तेरे रूप और तेजकरिकै लज्जितहुआ कोई तेरी प्रार्थना नहींकरता इससे तू आपही जाके ब्रह्मकुलमें उत्पन्न जो विश्रवा मुनि तिसको अपना पतिरूप करके स्वीकारकर ४८ तौ तेरेभी ऐसेही कुबेरके तुल्य पुत्र होवैंगे ४९॥

तथेतिसाश्रमंगत्वामुनेरग्रेव्यवस्थिता॥ लिखंतीभुवमग्रेणपादेनाधोमुखीस्थिता ५० तामपृच्छन्मुनिःकात्वंकन्यासिवरवर्णिनि॥

साब्रवीत्प्रांजलिर्ब्रह्मन्ध्यानेनज्ञातुमर्हसि ५१ ततोध्यात्वामुनिः स र्वंज्ञात्वातांप्रत्यभापत ॥ ज्ञातंतवाभिलषितंमत्तः पुत्रानभीप्सथ सि ५२ दारुणायांतुवेलायामागतासिसुमध्यमे ॥ अतस्तेदारुणौ पुत्रौराक्षसौसंभविष्यतः ५३ साब्रवीन्मुनिशार्दूलत्वत्तोप्येवंविधौ सुतौ ॥ तामाहपश्चिमोयस्तेभविष्यतिमहामतिः ५४ महाभागवतः श्रीमान्रामभक्त्येकतत्परः ॥ इत्युक्त्वासातथाकालेसुषुवेदशकन्धर म् ५५ रावणंविंशतिभुजंदशशीर्षंसुदारुणम् ॥ तद्रक्षोजातमात्रेणच चालचवसुन्धरा ५६ ॥

फिर वह केकसी वैसेही पिताकी आज्ञासे विश्रवामुनिके आगेखड़ीहुईऔर पांवके अग्रभागसे पृथ्वीको खोदतीहुई नीची गरदनकरके स्थित होतीहुई ५० तो विश्रवामुनि उस कैकसीसे पूछतेहुये हे स्त्रियाओं में श्रेष्ठ किसकी तू कन्या है तो वह हाथ जोड़िके मुनिसे बोलती हुई कि हे ब्रह्मन् ध्यान के प्रभाव से मेरा अभिप्राय जान लीजिये तो ५१ विश्रवामुनि ध्यान करके उसके हृदयका आशय जानिके बोलतेहुये कि तू मुझसे पुत्रोंकी इच्छाकरतीहै यह तेरामनो-रथ मैंने जाना ५२ और हे सुमध्य मे जो तू घोरसंध्यासमयमें पुत्र की इच्छा करके मेरे समीप प्राप्तहुई है इसकारणसे बड़े घोरराक्षसदो पुत्र तेरेहोवैंगे ५३ तो वह केकसी राक्षसी बोली कि हे मुनियोंमें श्रेष्ठ तुमसे भी क्या ऐसे पुत्रहोना योग्य है तो फिर मुनिबोले कि जो तेरे तीसरा पुत्र होगा सो सो श्री राम भक्ति करके परिपूर्ण बड़ा धर्मात्मा महाभागवत श्रेष्ठमति होगा ५४ ऐसाजब मुनिने कहा फिर तिसकेउपरांत जब पुत्रोत्पत्तिकासमय प्राप्तहुआ तब कैकसी दश हैं शिर जिसके और बीस भुजा जिसके ऐसा घोर राक्षस पुत्रको उत्पन्न करती हुई ५५ और जिस समय में वह पुत्र उत्पन्नहुआ उससमयमें पृथिवी चलायमानहुई ५६ ॥

बभूवुर्नाशहेतूनिनिमित्तान्यखिलान्यपि ॥ कुंभकर्णस्ततोजातो महापर्वतसन्निभः ५७ ततःशूर्पणखानामजातारावणसोदरी ॥ त तोविभीषणोजातःशांतात्मासौम्यदर्शनः५८स्वाध्यायीनियताहारोनि त्यकर्मपरायणः ॥ कुंभकर्णस्तुदुष्टात्माद्विजान्संतुष्टचेतसः ५९ भक्ष यन्नपिसंख्यांश्चविचचारातिदारुणः॥ रावणोऽपिमहासत्वोलोकानां भयदायकः ॥ बद्धवैलोकनाशायह्यामयोदेहिनामिव ६० रामस्त्वंस कलांतरस्थममितोजानासिविज्ञानदृक् साक्षीसर्वहृदिस्थितोहिपरमो

नित्योदितोनिर्मलः ॥ त्वंलीलामनुजाकृतिः स्वमहिमामायागुणैर्नि
र्ज्यसेलीलार्थंप्रतिचोदितोघभवतोवक्ष्यामिरक्षोद्भवम् ६१ जानामि
केवलमनंतमचिन्त्यशक्तिंचिन्मात्रमक्षरमजंविदितात्मतत्त्वम्॥त्वांरा
मगूढ़निजरूपमनुप्रवृत्तोमूढ़ोप्यहंभवदनुग्रहतश्चरामि ६२ एवंवद
न्तमिनवंशपवित्रकीर्त्तिः कुम्भोद्भवंरघुपतिःप्रहसन्बभाषे ॥ मायाश्रि
तंसकलमेतदनन्यकृत्वान्मत्कीर्त्तनंजगतिपापहरंनिबोध ६३ ॥
इतिमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंबादेउत्तरकांडेप्रथमःसर्गः१॥

और संसारके नाशहेतु उत्पात होतेहुये फिर तिसके उपरांत कुम्भकर्णपुत्र उत्पन्न होताहुआ जो पर्वत के समान वृद्धिको प्राप्तहुआ ५७ फिर तिसके उपरान्तशूर्पणखा नामकन्या उत्पन्नहोतीहुई जो लोकमें रावणकी सहोदरभगिनी प्रसिद्ध है फिर तिसके उपरान्त शांतहै स्वभाव जिसका और जिसके दर्शनही से सुखहोय ऐसा विभीषण उत्पन्न हुआ ५८ और जो विभीषण वेदोंको नित्य पढ़ता है और परमित भोजन करता है और संध्योपासनादि नित्य कर्म में परायण है और दुष्टात्मा अति निर्दय और भयंकर कुम्भकर्ण तो महात्मा ब्राह्मणों को भक्षणकरता बिचरताहुआ ५९ और बड़ाबली लोकों को भयदायक रावणभी उससमयमें कैसे वृद्धिको प्राप्तहुआ जैसे प्राणियों के देह में रोगबढ़ै ६० अब अगस्त्यजी यह कहतेहैं हेराम तुम सबप्राणियोंके हृदय में साक्षिरूपकरिकै स्थित नित्यप्रकाशमान विज्ञानदृष्टिसे सबजानतेहौ तौ भी आप मनुष्यलीलाकरके मुझसे जैसे पूछतेहौ तैसे आपका प्रेराहुआ राक्षसों की उत्पत्ति कहताहूं और हेराम असाधारणहै महिमाजिसकी ऐसे आप माया गुणोंसे लिप्त नहींहोते ६१ और हेराम मूढ़भी मैंहौं तौभी आपके अनुग्रहसे आपको अद्वितीय और अनन्त और अचिन्त्यशक्ति और चिन्मात्र और अक्षर जानताहूं और मनुष्य नाटककरिकै छिपाया है वास्तवरूप जिसने ऐसे जो श्यामसुन्दर धनुर्बाणको धारणकरे आप तिनका उपासक जो मैंहौं सो भगवत्प्रवृत्तिमार्गमें बिचररहाहौं ६२ ऐसेवचन कहतेहुये जो अगस्त्यजी तिनसे श्रीरामचन्द्र हँसिकरके बोले कि हेमुने जो तुमने वर्णनकियासो सब मायाश्रितहीहै अर्थात् मायाहीको लेकरके है क्योंकि मैं सब धर्मों से रहितहौं और मेरा कीर्त्तन संसार में सबपापों का हरनेवाला है यही मेरे अवतार का मुख्य प्रयोजन जानो ६३ ॥

इत्यध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंबादेउत्तरकांडेभाषाटीकायांप्रथमस्सर्गः१॥

श्रीरामवचनंश्रुत्वापरमानन्दनिर्भरः ॥ मुनिःप्रोवाचसदसिसर्वं

पानेत्रशृण्वताम् ॥ अथवित्तेश्वरोदेवस्तत्रकालेनकेनचित् ॥ आय यौपुष्पकारूढःपितरंद्रष्टुमंजसा १ दृष्ट्वातंकैकसीतत्रभ्राजमानंमहौ जसम् ॥ राक्षसीपुत्रमासीप्यंगत्वारावणमब्रवीत् २ पुत्रपश्यधनाध्य क्षंज्वलंतंस्वेनतेजसा ॥ त्वमप्येवंयथाभूयास्तथायत्नंकुरुप्रभो ३ त च्छुत्वारावणोरोपात्प्रतिज्ञामकरोद्द्रुतम् ॥ धनदेनसमोवापिह्यधि कोवाचिरेणतु ४ भविष्याम्यम्बसांपश्यसंतापंत्यजसुव्रते ॥ इत्युक्त्वादु ष्करंकर्तुंतपःसदशकंधरः ५ आगमत्फलसिद्ध्यर्थंगोकर्णंतुसहानु जः॥स्वंस्वंनियममास्थायभ्रातरस्तेतपोमहत् ६ आस्थिताद्दुष्करंघो रंसर्वलोकैकतापनम् ॥ दशवर्षसहस्राणिकुंभकर्णोऽकरोत्तपः ७ ॥

दो० । सर्ग दूसरे तपोबल ब्रह्माको वश कीन्ह ॥
पुनिरावणसुरजीतिकैलोकसबनकेलीन्ह १
पुनिशठकालअधीनह्वै करतविप्रअपकार ॥
तबजगदीशमनुष्यह्वैहन्योसहितपरिवार २

अब श्रीमहादेवजी पार्वतीसे कथा वर्णनकरै हैं कि हेपार्वति अब अगस्त्य मुनि श्रीरामके वचनसुनि परमानन्द युक्तहो सभामें सबके सुनते श्रीरामसे वचनकहतेहुये १ हेराम अब इसकेअनन्तर कुबेर किसीसमयमें पुष्पकविमा नपै चढ़िकै पिताके देखनेको आवताहुआ २ तब उससमयमें कैकसी राक्षसी विश्रवामुनिके समीपसे जाकरके प्रकाशमान बड़ेपराक्रमयुक्त कुबेरको देखके अपनेपुत्र रावणके समीपजाके कहतीहुई ३ कि हेपुत्र अपनेतेजसे प्रकाशमान इसकुबेरको देखो और तुमभी जिससे ऐसेहोजावो ऐसायत्न कुछकरो ४ यह माताका वचनसुनिकै रावण क्रोधकर यहप्रतिज्ञा करताहुआ किहेमातः इस कुबेरके समान अथवा इससेभीअधिक मैं थोड़ेहीकालमें होजाउँगा तू संताप का त्यागदे यहवचन रावण मातासे कहिकै दुष्करतपकरनेको ५ अपनेभाइयों करकेसहित गोकर्णतीर्थको आवताहुआ वहां सबभाई अपने अपने नियम में स्थितहोकर ६ सबलोकोंको तपानेवाला घोरतप करतेहुये तहां दशहजारवर्ष तक तो कुम्भकर्ण तपकरताहुआ ७ ॥

विभीषणोपिधर्मात्मासत्यधर्मपरायणः॥पञ्चवर्षसहस्राणिपादेनैके नस्थितवान्॥दिव्यवर्षसहस्रंतुनिराहारोदशाननः॥ पूर्णेवर्षसहस्रेतु शीर्षमग्नौजुहावसः ॥ एवंवर्षसहस्राणिनवतस्यातिचक्रमुः ८ अथव र्षसहस्रेतुदशमेदशमेशिरः ॥ छेत्तुकामस्यधर्मात्माप्राप्तश्चाथप्रजाप

तिः॥वत्सवत्सदशग्रीवप्रीतोस्मीत्यभ्यभाषत १० वरंवरयदास्यामिय
त्तेमनसिकांक्षितम्॥दशग्रीवोपितच्छ्रुत्वाप्रहृष्टेनांतरात्मना ११ अमर
त्वंवृणोमीशवरदोयदिमेभवान् ॥सुपर्णनागयक्षाणांदेवतानांतथासु
रैः॥अवध्यत्वंतुमेदेहितृणभूताहिमानुषाः १२ तथास्त्वितिप्रजाध्यक्षः
पुनराहदशाननम्॥ अग्नौहुतानिशीर्षाणियानितेसुरपुंगव १३ भवि
ष्यंतियथापूर्वमक्षयाणिचसत्तम १४॥

और सत्य धर्ममें परायण धर्मात्मा जो विभीषणसो एकपांउकर खड़ेहोके पांचहजार बर्षतक तपकरताहुआ ८ और देवताओं की हजारबर्षतक रावण निराहार होके तप करताहुआ जब हजारबर्ष व्यतीतहोगये तौ अपनेशिरों को काटि काटि अग्निमें हवन रावण करताहुआ इसप्रकार नौहजारबर्ष व्यतीतहुये ९ जब दशहजारहें वर्षमें रावण अपने दशवें शिरको काटने की इच्छा करताहुआ तभी धर्मात्मा जो ब्रह्मा सो रावण के समीप बर-देने को प्राप्तहुये और यहकहतेहुये कि हे वत्स रावणमैं तेरे तपसे प्रसन्नहौं १० और फिर ब्रह्माजी यह कहतेहुये कि हे रावण जोवर तुझको अभीष्टहोय अर्थात् जोमनमें स्थितहोवै तिसको मांगुमैं देवोंगा तौ रावण यहवचन सुनिके बड़े आनन्दयुक्त चित्तसे बोला ११ कि हे ईश जोआप मुझको वरदेनेको उप-स्थितहौ तौ अमरपदवी मुझको दीजिये जिससे कभी सुपर्ण अर्थात् गरुड़औ नाग औयक्ष और देवता इनकरके मैं अवध्यहोवों अर्थात् ये कोई मुझकोमार नसकैं और मनुष्यतौ तृणके समानहैं १२ तौ ब्रह्मा तथास्तु अर्थात् तैसेही होगा यहकहिकै फिर रावणसे बोले कि हे असुर श्रेष्ठ जे शिर तूने अग्निमें हवन कियेहैं १३ तेजैसे पहिलेथे तैसेही होजावैंगे और अक्षय होवैंगे अर्थात् कोई काटेगा तोभी फिर उत्पन्नहोजाया करैंगे १४॥

एवमुक्त्वाततोरामदशग्रीवंप्रजापतिः ॥ विभीषणमुवाचेदंप्रणतं
भक्तवत्सलः १५ विभीषणत्वयावत्सकृतंधर्मार्थमुत्तमम् ॥ तपस्त
तोवरंवत्सवृणीष्वाभिमतंहितम् १६ विभीषणोपितंनत्वाप्रांजलिर्वा
क्यमब्रवीत् ॥ देवमेसर्वदाबुद्धिर्धर्मेतिष्ठतुशाश्वती ॥ माचेयत्वध
र्मेमेबुद्धिःसर्वत्रसर्वदा १७ततःप्रजापतिःप्रीतोविभीषणमथाब्रवीत्॥
वत्सत्वंधर्मशीलोसितथैवचभविष्यसि १८ अयाचितोपितेदास्येह्य
मरत्वंविभीषण ॥ कुम्भकर्णमथोवाचवरंवरयसुव्रत १९ वाण्याव्या
प्तोथतंप्राहकुम्भकर्णःपितामहम् ॥ स्वप्स्यामिदेवषण्मासान्दिनमेकं

नभोजनम् २० एवमस्त्विततिंप्राहब्रह्मादृष्ट्वादिवौकसः ॥ सरस्वतीचतद्वक्त्रान्निर्गताप्रययौदिवम् २१ ॥

हे राम इसप्रकार ब्रह्माजी रावणसे कहिकै अब अगाड़ी हाथजोड़े नम्र खड़ाहुआ जोविभीषण तिससे यहकहतेहुये १५ कि हे वत्स विभीषण जिससे तूने धर्महीकेअर्थ उत्तमतप कियाहै इससे जोतेरी इच्छाहोय सोतूंमांग १६ तो विभीषण ब्रह्माको प्रणाम करकेहाथ जोड़के वचनबोला कि हेदेव सबकाल में मेरी बुद्धिधर्महीमें स्थित निरन्तररहै और मेरी बुद्धिको अधर्मकभी नरुचै अर्थात् अधर्मकी तरफ कभी बुद्धिनजावै १७ तब ब्रह्मा प्रसन्नहो विभीषण से बोले कि हे वत्सतूसदा धर्म शीलहीहोगा अर्थात् तेरीबुद्धिकभी अधर्ममें नहीं जायगी १८ और हे विभीषणबिना मांगेभी मैं तुझको अमरपदवी देताहौंअब इसके अनन्तर कुम्भकर्णसे ब्रह्माजी कहतेहुये कि हे शोभनव्रततूवरमांगु १९ तोउससमयमें देवताओंकी प्रार्थनाकी हुई सरस्वती कुम्भकर्णकी बुद्धिमें प्रविष्टहोतीहुई इससे कुम्भकर्ण ब्रह्मासे यहवर मांगताहुआ कि हेदेव छःमहीने तोमैं सोयाकरों और एकदिन भोजन कियाकरौं २० तोब्रह्मा देवताओंके तरफ़ देखके उस कुम्भकर्णसे बोले कि ऐसेहीहोगा तबतक सरस्वती उसकुम्भकर्णके मुखसे निकलिकै स्वर्गको जातीहुई २१ ॥

कुम्भकर्णस्तुदुष्टात्माचिन्तयामासदुःखितः ॥ अनभिप्रेतमेवस्यात्किंनिर्गतमहोविधिः २२ सुमालीवरलब्धांस्ताञ्ज्ञात्वापौत्रान्निशाचरान् ॥ पातालान्निर्भयःप्रायात्प्रहस्तादिभिरन्वितः २३ दशग्रीवंपरिष्वज्यवचनंचेदमब्रवीत् ॥ दिष्ट्यातेपुत्रसंवृत्तोवांछितोमेमनोरथः २४ यद्भयाच्चवयंलंकांत्यक्त्वायातारसातलम् ॥ तद्गतंनोमहाबाहोमहद्विष्णुकृतंभयम् २५ अस्माभिःपूर्वमुषितालंकेयंधनदेनते ॥ भ्रात्राक्रांतामिदानींत्वंप्रत्यानेतुमिहार्हसि २६ साम्नावाथबलेनापिराज्ञांबन्धुःकुतःसुहृत् ॥ इत्युक्तोरावणःप्राहनार्हस्येवंप्रभाषितुम् २७ वित्तेशोगुरुरस्माकमेवंश्रुत्वातमब्रवीत् ॥ प्रहस्तःप्रश्रितंवाक्यंरावणंदशकंधरम् २८ ॥

फिर दुष्टात्मा कुम्भकर्ण दुःखितहो अपने मनमें यह विचार करताहुआकि बिना मनोरथ कियाहुआ वरमेरे मुखसे यहकैसे निकलगया बड़े कष्टकी बातहुई और प्रारब्ध किसीतरहनहीं उल्लंघनकी जातीहै २२ तबतक सुमाली राक्षसअपनी कन्याके पुत्रोंको ब्रह्मासेवरप्राप्तहुआहै यह निश्चय करके निर्भय हो प्रहस्तादिक राक्षसोंकरके सहित पातालसे निकलताहुआ २३ औररावण

को हृदयसे लगाके यहबोला कि हेपुत्र यहबड़ा आनन्दहुआ जोमेरा मनोरथ थासो तुमने वरप्राप्तहोके पूराकिया २४ और जिसभयसे हमसब राक्षसलोग लंकाको त्यागके पातालको चलेगयेथे वह विष्णुसेबड़ा भयहमारा अबदूरहुआ २५ और यहलंकापुरी पहिले हमसब राक्षसोंकी बसाई हुईहै औरअबतुम्हारे भाई कुबेरने लेलीहै इससे इसलंका पुरीको कुबेरसे लैलेना चाहिये २६ चाहे अपनी राजीसे तुम्हारा भाई तुमकोदेदेवै चाहे तुमजबरदस्तीसे छीनलेओ और राजाओंका क्याकभी भाई मित्रहोताहै ऐसाजब सुमालीनेकहातोरावण बोला ऐसा आपको कहना उचित नहीं है २७ क्योंकि कुबेर मेरा बड़ा भाई पिता के समान है तब यह रावण का वचन सुनि के प्रहस्त राक्षसनम्रतापूर्वक रावण से बोला २८॥

शृणुरावणयत्नेननैवत्वंवक्तुमर्हसि॥ नाधीताराजधर्म्मास्तेनीतिशास्त्रंतथैवच२९ शूराणांनहिसौभ्रात्रंशृणुमेवदतःप्रभो॥ कश्यपस्य सुतादेवाराक्षसाश्चमहाबलाः ३० परस्परमयुध्यंतत्यक्त्वासौहृदमायुधैः॥ नैवेदानींतनंराजन्वैरंदेवैरनुष्ठितम् ३१ प्रहस्तस्यवचःश्रुत्वा दशग्रीवोदुरात्मनः॥ तथेतिक्रोधताम्राक्षस्त्रिकुटाचलमन्वगात् ३२ दूतंप्रहस्तंसंप्रेष्यनिष्काश्यधनदेश्वरम्॥ लंकामाक्रम्यसचिवैराक्षसैःसुखमास्थितः ३३ धनदःपितृवाक्येनत्यक्त्वालंकांमहायशाः॥ गत्वाकैलासशिखरंतपसातोषयच्छिवम् ३४ तेनसख्यमनुप्राप्यते नैवपरिपालितः॥ अलकांनगरींतत्रनिर्ममेविश्वकर्मणा॥ दिक्पालत्वंचकारात्रशिवेनपरिपालितः॥ रावणोराक्षसैःसार्द्धमभिषिक्तः सहानुजैः ३५॥

कि हे रावण सावधान हो मेरा वचन सुनिये और फिर आप उसका उत्तर दीजिये मुझ को विदित होता है कि अभी आप ने राज धर्म नहीं पढ़े हैं और न कुछ राज नीति को जानते हो २९ और हे स्वामिन् शूरों की कभी भाइयोंके साथ प्रीति नहीं होती है सो प्रकार मुझसे सुनिये कश्यपजीके पुत्र देवता और राक्षस दोनों तरह के बड़े बलवान् होते हुये ३० ते परस्पर प्रीति को त्याग के शस्त्रों से घोर युद्ध करते हुये इससे कुछ अभी देवताओं का और राक्षसों का बैर हुआ होय सो नहीं है पहिले से ही चला आता है ३१ अब यह दुष्टात्मा प्रहस्त के बचन सुनि के रावण की भी बुद्धि फिर जाती हुई और क्रोध करके रक्तनेत्र हो जहां कुबेर का स्थान त्रिकूट पर्वत पै था वहां जाता हुआ ३२ और वहां जाके प्रहस्त राक्षस को दूत बना के कुबेर के पास

भिन्न के और कुबेर को लंकापुरी से निकाल के फिर राक्षसों कर के सहित आप रावण सुखपूर्वक वास करता हुआ ३३ और कुबेर पिता की आज्ञा से लंकापुरी को त्यागि के कैलास पर्वत पै जाके तप करके महादेवजी को प्रसन्न करता हुआ ३४ फिर महादेव जी के साथ मित्रता कर श्री महादेवजी के सहाय से रक्षा को प्राप्त कुबेर कैलास पर्वत पै विश्वकर्मा के द्वारा अलका नाम पुरी का निर्माण कराता हुआ ३५ ॥

राज्यंचकारासुराणांत्रिलोकींबाधयन्खलः ॥ भगिनींकालखंजायदद्दौविकटरूपिणीम् ३६ विद्युज्जिह्वायनाम्नासौमहामायीनिशाचरः ॥ ततोमयोविश्वकर्माराक्षसानांदितेःसुतः ३७ सुतांमन्दोदरींनाम्नाददौलोकैकसुंदरीम्॥रावणायपुनःशक्तिममोघांप्रीतिमानसः ३८ वैरोचनस्यदौहित्रींवृत्रज्वालेतिविश्रुताम् ॥ स्वयंदत्तःसुदवहत्कुम्भकर्णायरावणः ३९ गन्धर्वराजस्यसुतांशैलूषस्यमहात्मनः ॥ विभीषणस्यभार्यार्थेधर्मज्ञांसमुदावहत् ४० सरमांनामशुभगांसर्वलक्षणसंयुताम्॥ ततोमन्दोदरीपुत्रंमेघनादमजीजनत्४१ जातमात्रस्तुयोनादंमेघवत्प्रमुमोचह॥ ततःसर्वेब्रुवन्मेघनादोयमितिचासकृत् ४२॥

और महादेव से रक्षा को प्राप्त हो कुबेर अपनी दिशा की रक्षा करताहुआ और भाइयों करके सहित रावण लंका के राज्य में राक्षसों करके अभिषेक को प्राप्त हो तीनों लोकों को दुःख देताहुआ दुष्ट असुरों का राज्य करताहुआ और फिर रावण भयंकर है रूप जिसका ऐसी अपनी शूर्पणखा भगिनी को काल खंज के वंश में उत्पन्न जो ३६ वड़ा मायावी विद्युज्जिह्व राक्षस तिसके अर्थ देता हुआ अर्थात् उस के साथ शूर्पणखा का विवाह कर देताहुआ फिर तिसके अनन्तर राक्षसोंका विश्वकर्मा अर्थात् कारीगर दितिकापुत्रजो मयदैत्य सो ३७ सब लोकोंमें एकसुन्दरी जो मन्दोदरी अपनीकन्या तिसको रावणके अर्थ देताहुआ और प्रसन्न मनसे एक अमोघशक्तिको देताहुआ ३८ फिरतिस के उपरान्त वलिकी दोहती वृत्रज्वाला नामसे प्रसिद्ध और पिताने आकेआपही जिस को दिया तिस के साथ कुम्भकर्णका विवाह रावण करताहुआ ३९ और महात्मा गन्धर्वराज शैलूप की कन्या जो वड़े धर्म की जाननेवाली और सौभाग्य के चिह्नों करके युक्त ४० और सरमा जिस का नाम था तिस के साथ विभीषण का विवाह रावण करताहुआ फिर मन्दोदरी प्रथम मेघनाद नाम पुत्र को उत्पन्न करती हुई ४१ जो उत्पन्नहोतेही मेघके तुल्य शब्दको करता हुआ तिसमे सब राक्षस उस को मेवनाद नामसे पुकारते हुये ४२ ॥

कुम्भकर्णस्ततःप्राहनिद्रामांबाधतेप्रभो॥ततश्चकारयामासगुहां दीर्घांसुविस्तराम् ४३ तत्रसुष्वापमूढात्मा कुम्भकर्णोविघूर्णितः॥ निद्रितेकुम्भकर्णेतुरावणोलोकरावणः ४४ ब्राह्मणान्ऋषिमुख्यांश्च देवदानवकिन्नरान्॥ देवस्त्रियोमनुष्यांश्चनिजघ्नेसमहोरगान् ४५ धनदोपिततःश्रुत्वारावणस्याक्रमंप्रभुः॥अधर्मंमाकुरुष्वेतिदूतवाक्यै र्न्यवारयत् ४६ ततःक्रुद्धोदशग्रीवोजगामधनदालयम् ॥ विनिर्जि त्यधनाध्यक्षंजहारोत्तमपुष्पकम्४७ततोयमंचवरुणंनिर्जित्यसमरेसु रः॥ स्वर्गलोकमगात्तूर्णंदेवराजजिघांसया ४८ ततोऽभवन्महद्युद्ध मिंद्रेणसहदैवतैः॥ ततोरावणमभ्येत्यवबंधत्रिदशेश्वरः ४९॥

फिर कुम्भकर्ण रावणसे यहबोला कि हे प्रभो निद्रा मुझको बहुत बाधा किया करतीहै तो रावण बड़ी लम्बी चौड़ी एकगुहा बनवाताहुआ ४३ फिर मूढात्मा कुम्भकर्ण उसमें पड़ा सोवताहुआ और कुम्भकर्ण जब निद्राको प्राप्त हुआतो लोकोंका रुवाने वालारावण ४४ ब्राह्मण और ऋषिलोग और देवता और दानव और किन्नर और मनुष्य और नाग इनसबोंको मारताहुआऔर इनकी सम्पदाओंको और स्त्रियाओंको हरताहुआ ४५ और कुबेर रावणकेऐसे अन्यायको सुनिकै दूतकेद्वारा खबरभेजताहुआ कि ऐसा दुराचार तुझको नहीं करनाचाहिये ४६ फिर उसदूतके बचनसुनिकै क्रोधयुक्तरावण अल-कापुरी में जाके कुबेरको जीतके उनके पुष्पक विमानको हरताहुआ ४७ ति-सके उपरान्त रावण संग्राममें यमराज और वरुण इनकोजीतके इन्द्रकेजीत नेकी इच्छासे शीघ्रही स्वर्गलोकको जाताहुआ ४८ फिर वहां स्वर्गमें देवताओं करके सहित इन्द्रके साथरावणका बड़ा घोर संग्रामहुआ फिर उस संग्राम में इन्द्र रावणको बांध लेताहुआ ४९॥

तच्छ्रुत्वासहसागत्यमेघनादःप्रतापवान्॥ कृत्वाघोरंमहद्युद्धंजि त्वात्रिदशपुंगवान् ५० इन्द्रंगृहीत्वाबध्वासौमेघनादोमहाबलः॥ मोचयित्वातुपितरंगृहीत्वेंद्रंययौपुरम् ५१ ब्रह्मातुमोचयामासदेवेंद्रं मेघनादतः॥ दत्त्वावरान्बहूंस्तस्मैब्रह्मास्वभवनंययौ ५२ रावणोवि जयीलोकान्सर्वान्जित्वाक्रमेणतु॥ कैलासंतोलयामासबाहुभिःपरि घोपमैः ५३ तत्रनंदीश्वरेणैवशप्तोयंरावणेश्वरः॥ वानरैर्मानुषैश्चै वनाशंगच्छेतिकोपिना ५४ शप्तोप्यगणयन्वाक्यंययौहैहयपत्तनम्॥

तेनबद्धोदशग्रीवःपुलस्त्येनविमोचितः ५५ ततोपिवलमासाद्यजिघां सुर्हरिपुंगवम् ॥ धृतस्तेनैवकक्षेणवालिनादशकंधरः ५६ ॥

महबालीको बड़ा प्रतापी मेघनाद सुनके शीघ्रही स्वर्गमें आके और बड़ा घोरयुद्ध करके श्रेष्ठ श्रेष्ठ देवताओंको जीति कै ५० महावली जोमेघनाद सो अपने पिताको छुड़ाके और इन्द्रको पकड़ि मुसकबांधिकै अपनेरथमें बांधि लंकापुरीको ल्याताहुआ ५१ फिर ब्रह्माजी आके मेघनादको बहुतसे बरदेके इन्द्रको छुड़वाके फिर अपने स्थानको आतेहुये ५२ अब रावणभी इसप्रकार सबलोकोंको क्रमसे जीतिकै सबजगह विजयको प्राप्तहो परिघदण्ड समान अपनी भुजाओं करके कैलास पर्वतको उठाकेतोलता हुआ अर्थात् अजमाता हुआ ५३ फिर वहां नन्दीश्वर जोमहादेवजीका पार्षद तिसने क्रोधकरकेरावण को शापदिया कि तू वानरऔर मनुष्योंसे नाशको प्राप्तहो अब यहां शापका कारण कैलासका उठानाही सूचित होताहै और वाल्मीक्यादि रामायण के देखनेसे तोनन्दीश्वरका वानरका मुखदेखके रावण हँसा इससेशापको प्राप्त हुआ यह विदितहोताहै ५४ अब इसप्रकार रावण शापकोभी प्राप्तहुआ परन्तु उसको कुछ गिना नहीं अर्थात् ऐसा कौन पृथ्वीमें वानरवा मनुष्यहै जोमेरा जयकरसकै इसगर्वसे रावण नन्दीश्वरजीके वाक्यमें विश्वास न करताहुआ और तभी कार्त्तवीर्य राजाके नगर में रावण युद्धकरनेको गया वहां उसराजाने इसरावणको बांधिकै अपनेकारागृहमें डालदिया फिर पुलस्त्यजीने छुड़वादिया ५५ तौभी अपने बलके गर्वसे वाली के मारने को रावण किष्किंधा नगरीको गया वहां वालीने रावण को वगल में दवालिया ५६ ॥

भ्रामयित्वातुचतुरःसमुद्रान्रावणंहरिः ॥ विसर्जयामासततस्तेन सख्यंचकारसः ५७ रावणःपरमप्रीतएवंलोकान्महावलः ॥ चकार स्ववशेगामवुभुजेस्वयमेवतान् ५८ एवंप्रभावोराजेंद्रदशग्रीवःसहेंद्र जित् ॥ त्वयाविनिहतःसंख्येरावणोलोकरावणः ५९ मेघनादश्चनि हतोलक्ष्मणेनमहात्मना ॥ कुम्भकर्णश्चनिहतस्त्वयापर्वतसन्निभः ६० भवान्नारायणःसाक्षाज्जगतामादिकृद्विभुः ॥ त्वत्स्वरूपमिदंसर्वं जगत्स्थावरजंगमम् ६१ त्वन्नाभिकमलोत्पन्नोब्रह्मालोकपितामहः ॥ अग्निस्तेमुखतोजातोवाचासहरघूत्तम ६२ बाहुभ्यांलोकपालौघा श्चक्षुर्भ्यांचंद्रभास्करौ ॥ दिशश्चविदिशश्चैव कर्णाभ्यांतेसमु त्थिताः ६३ ॥

अब इसप्रकार बालीकाँखमें दबायेहुये रावणको घुमाताहुआ चारोंसमुद्रों में गया फिर आपही रावणको छोड़दिया तोरावण उसबालीके संग मित्रता करताहुआ५७इस प्रकार परम प्रसन्न जो महाबली रावणसो अपने वशमेंसब लोकोंकोकरके आपही सबलोकोंको भोगताहुआ५८ हेराजेन्द्र ऐसाप्रभावयुक्त इन्द्रजित् सहित रावणहुआसो रावण आपने संग्राममें मारा ५९ औरमेघनाद लक्ष्मणने मारा और पर्वततुल्यजो कुम्भकर्ण सोभी आपने मारा ६० औरसब लोकोंके रचनेवाले और सर्बव्यापक आप साक्षात् नारायणहौ और सबस्था- वर जंगम जगत् तुम्हाराही स्वरूपहै ६१ और तुम्हारेही नाभिकमलसे लोक पितामह ब्रह्मा उत्पन्न हुआ और हे रघूत्तमबाणी करके सहित अग्नि तुम्हारे मुखसे उत्पन्न हुआहै ६२ और तुम्हारी भुजाओंसे सबइन्द्रादिक लोक पाल उत्पन्न हुये और तुम्हारे नेत्रोंसे चन्द्रमा औ सूर्य उत्पन्न हुये और दिशा औ बिदिशा तुम्हारे कानोंसे उत्पन्नहुईहैं ६३ ॥

घ्राणात्प्राणःसमुत्पन्नश्चाश्विनौदेवसत्तमौ ॥ जंघाजानूरुजघना द्भुवर्लोकादयोऽभवन् ६४ कुक्षिदेशात्समुत्पन्नाश्चत्वारःसागराहरेः॥ स्तनाभ्यामिंद्रवरुणौबालखिल्याश्चरेतसः ६५ मेढ्राद्यमोगुदान्मृत्यु र्मन्योरुद्रस्त्रिलोचनः ॥ अस्थिभ्यःपर्वताजाताःकेशेभ्योमेघसंहतिः ६६ ओषध्यस्तवरोमभ्योनखेभ्यश्चखरादयः॥ त्वंविश्वरूपःपुरुषो मायाशक्तिसमन्वितः ६७ नानारूपइवाभासिगुणव्यतिकरेसति ॥ त्वामाश्रित्यैवविबुधाःपिबंत्यमृतमध्वरे ६८ त्वयासृष्टमिदंसर्वंविश्वं स्थावरजंगमम् ॥ त्वामाश्रित्यैवजीवंतिसर्वेस्थावरजंगमाः ६९ त्व द्युक्तमखिलंवस्तुव्यवहारेऽपिराघव॥ क्षीरमध्यगतंसर्पिर्यथाव्याप्या खिलंपयः ७० ॥

और तुम्हारे घ्राण इन्द्रियसे सबलोकोंका प्राण प्रकट हुआ और अश्विनी कुमार दोनों देव उत्पन्नहुये और तुम्हारी जंघा औ जानु औ ऊरू औ जघन इन अंगोंसे अन्तरिक्षादि लोक उत्पन्नहुयेहैं ६४ औ हे हरे तुम्हारी कोषि से चारों समुद्र उत्पन्नहुये और तुम्हारे दोनोंस्तनोंसे इन्द्र औ वरुण उत्पन्नहुये और तुम्हारे वीर्यसे बालखिल्या नामकरके साठिहजार ऋषि उत्पन्नहुये ६५ और तुम्हारे मेढ्र इन्द्रियसे अर्थात् लिंगसे यमराज उत्पन्नहोते हुये और गुदा से मृत्यु उत्पन्नहुई और तुम्हारे क्रोधसे रुद्र उत्पन्नहुये और तुम्हारे हाड़ोंसे पर्वत उत्पन्न होतेहुये और केशोंसे मेघ उत्पन्नहुये ६६ और तुम्हारे रोमों से औषधी उत्पन्नहुईं और तुम्हारे नखोंसे लोह आदि कठोर पदार्थ उत्पन्न हुये

तुम प्रकार अपनी माया शक्ति करके संयुक्त आप विराट्रूप करके बहुत रूप से प्रतीयमान होरहेहो ६७ और अपनी मायाके सत्त्वादिक गुणोंके न्यूनाधिक्य भाव करके परस्पर मिलनेसे ब्रह्मा विष्णु रुद्रादि रूपसे तुमहीं प्रकाशित हो रहेहो और अग्निरूप जो तुमहौ तिसके द्वारा सबदेवता यज्ञमें हविरूप अमृत का पान करतेहैं ६८ और हे राम स्थावर जंगम भेद करके सबजगत् आपही ने रचाहै और तुम्हारेही आश्रयसे सबप्राणी जीवतेहैं ६९ और हेराम व्यवहार में भी सब वस्तु तुमहीं करके युक्तदेख पड़तीहै अर्थात् तुम्हारी सत्तासे न्यारी सत्ता किसीकी नहीं है जैसे सब दुग्धके अंशोंको प्राप्तकरके घृत दुग्धमें रहताहै ऐसेही सबको व्याप्त करके आप स्थितहौ ७० ॥

त्वद्भासाभासतेर्कादिर्नत्वंतेनावभाससे ॥ सर्वगंनित्यमेकंत्वांज्ञानचक्षुर्विलोकयेत् ७१ नाज्ञानचक्षुस्त्वांपश्येदंधदृक्भास्करंयथा ॥ योगिनस्त्वांविचिन्वंतिस्वदेहेपरमेश्वरम् ७२ अतन्निरसनमुखैर्वेदशीर्षैरहर्निशम् ॥ त्वत्पादभक्तिलेशेनगृहीतायदियोगिनः ७३ विचिन्वंतोहिपश्यंतिचिन्मात्रंत्वांनचान्यथा ॥ मयाप्रलपितंकिंचित्सर्वज्ञस्यतवाग्रतः ७४ क्षंतुमर्हसिदेवेशतवानुग्रहभागहम् ॥ दिग्देशकालपरिहीनमनन्यमेकंचिन्मात्रमक्षरमजंचलनादिहीनं ॥ सर्वज्ञमीश्वरमनंतगुणव्युदस्तमायंभजेरघुपतिंभजतामभिन्नम् ७५ ॥

इत्यध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेउत्तरकाण्डेद्वितीयस्सर्गः २ ॥

और तुम्हारे प्रकाशकरके सूर्य अग्नि चन्द्र तारागणादि प्रकाशकरतेहैं और तुम सूर्यादि करके नहीं प्रकाशितहो और ज्ञानदृष्टिपुरुष तुमको सर्व व्यापक नित्य अद्वितीय रूपसे देखसक्ताहै ७१ और अज्ञान दृष्टि कभी नहीं देखसक्ता जैसे अन्धपुरुष सूर्य्यको नहीं देखसक्ता और योगीजन अपनेदेहहीमें परमेश्वर रूप जो तुमहो तिसको ढूंढ़तेहैं ७२ और योगीजन भी आपके चरणारविंदके भक्तिलेशकरके युक्त जो होवें ७३ तभी जड़वर्गको त्याग करतेहुये नेति नेति पद उपनिषद्में प्रसिद्ध उपायकरके तुमकोढूंढ़तेहुये चिद्रूपमात्र तुमको देखते हैं और प्रकारसे तो कभी नहींदेखसक्तेहैं और हेभगवन् सर्वज्ञ जो आपहैं तिन के आगे जो कुछ मैंने कहाहै ७४ तिसको आप क्षमा करिवेयोग्य हैं क्योंकि मेरी बुद्धि आपही के अनुग्रह से इस विषय में प्रवृत्त हुई है जो देश काल व्यवहारादिसेरहितहै और जो सजातीय आदि भेदकरकै शून्यहै और जो एक है औ चैतन्यमात्र है औ जो नाश रहितहै औ जो कभी उत्पन्न नहीं होता औ चलनादि धर्मोंसे रहितहै औ जो सर्वज्ञहै औ जो ईश्वर रहै और जिसकेअनन्त

गुणहैं औ जिसने अपनी चिच्छक्तिकरके मायाके दोषदूरकरे हैं औ जो भजन करनेवालेको अभेद बुद्धिके विषयहैं अर्थात् अपना से अभिन्नरूप करके जिस को देखतेहैं ऐसा जो रामतिसका मैं भजन करताहौं ७५ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेउत्तरकाण्डे भाषाटीकायांद्वितीयःसर्गः २॥

श्रीरामउवाच ॥ बालिसुग्रीवयोर्जन्मश्रोतुमिच्छामितत्त्वतः ॥ रवींद्रौवानराकारौजज्ञातइतिनःश्रुतः १ अगस्त्यउवाच ॥ मेरोःस्वर्णमयस्याद्रेर्मध्यशृंगेमणिप्रभे ॥ तस्मिन्तसभास्तेविस्तीर्णाब्रह्मणः शतयोजना २ तस्यांचतुर्मुखः साक्षात्कदाचिद्योगमास्थितः ॥ नेत्राभ्यांपतितंदिव्यमानंदसलिलंबहु ३ तद्गृहीत्वाकरेब्रह्माध्यात्वाकिंचित्तदत्यजत् ॥ भूमौपतितमात्रेणतस्माज्जातोमहाकपिः ४ तमाहद्रुहिणोवत्सकिंचित्कालंवसात्रमे ॥ समीपेसर्वशोभाढ्येततः श्रेयोभविष्यति ५ इत्युक्तोन्यवसत्तत्रब्रह्मणावानरोत्तमः ॥ एवंबहुतिथेकालेगतेऋक्षाधिपःसुधीः ६ कदाचित्पर्यटन्नद्रौफलमूलार्थमुद्यतः ॥ अपश्यद्दिव्यसलिलांवापींमणिशिलान्विताम् ७ ॥

दो० सर्ग तीसरे प्रकट भे बाली औ सुग्रीव ॥
राममहातममुनिकह्यो रावणसेअनमीव १

अब महादेवजी पार्वती से कथा वर्णन करेहैं हे पार्वती अब राम अगस्त्य जीसे फिर पूछतेहुये हे भगवन् बालि सुग्रीव के जन्म के श्रवण करनेको मैं इच्छा करताहूं और सूर्य और इन्द्र ये वानरके रूप में होते हुये यह हमने सुनाहै सो कैसेहुये तिसको आप कृपाकरके कहिये १ तब अगस्त्यजी कहते हुये कि हे राम सुवर्ण का जो सुमेरु पर्वत तिसका जो बीचका मणियोंकी कान्तियोंकरके युक्तशृंग तिसके ऊपर सौ योजनका है विस्तार जिसका ऐसी एक ब्रह्माजीकी सभाहै २ उससभामें एक समयमें ब्रह्मा योगाभ्यासमें स्थित होतेहुये उससमय में ब्रह्माजीके नेत्रोंसे आनन्द का जल बहुत सा गिरता हुआ ३ उस जलको ब्रह्मा हाथ में लेकर ध्यान करके कुछ उसमें से पृथिवी में डाल देतेहुये फिर वह जल पृथ्वी में गिरतेही एक बड़ा भारी वानर हो गया ४ फिर उस वानर से ब्रह्मा बोले कि हे वत्स कछु काल मेरे समीप शोभायमान इस पर्वतके शृंग पै तुम बास करो तौ तुम्हारा कल्याण होगा५ ऐसा जब ब्रह्माजी ने कहा तौ वह बानर वहां वास करता हुआ ऐसे बहुत समय व्यतीत होगया तो श्रेष्ठबुद्धि ऋक्षों का स्वामी वह वानर ६ किसी

समयमें उद्योगयुक्त हुआ उस पर्वतपै फल मूलादिकों के लिये पर्यटनकरताहुआ फिर निर्मलहै दिव्यजल जिसमें और मणियों से जटित ऐसी एक बाउलीको देखताहुआ ७ ॥

पानीयंपातुमागच्छत्तत्रछायामयंकपिं ॥ दृष्ट्वाप्रतिकपिंमत्वानिपपातजलांतरे ८ तत्रादृष्ट्वाहरिंशीघ्रं पुनरुत्प्लुत्यवानरः ॥ अपश्यत्सुन्दरींरामात्मानंविस्मयंगतः ९ ततःसुरेशोदेवेशंपूजयित्वाचतुर्मुखम् ॥ गच्छन्मध्याह्नसमयेदृष्ट्वानारींमनोरमाम् १० कंदर्पशरविद्धांगस्त्यक्तवान्वीर्यमुत्तमम्॥तामप्राप्यैवतद्वीजंबालदेशेपतद्भुवि ११ बालीसमभवत्तत्रशक्रतुल्यपराक्रमः ॥ तस्यदत्त्वासुरेशानःस्वर्णमालांदिवंगतः १२ भानुरप्यागतस्तत्रतदानीमेवभामिनीम् ॥ दृष्ट्वा कामवशोभूत्वाग्रीवादेशेसृजन्महत् १३ बीजंतस्यास्ततः सद्योमहाकायोऽभवद्धरिः ॥ तस्यदत्त्वाहनूमंतंसहायार्थंगतोरविः १४ ॥

फिर उस बाउलीमें जब पानीपीनेको आया तब अपना प्रतिबिम्बवानराकार देखके और दूसरेवानरको वहां स्थितजानिकै उसके पकडनेको उस जल में कूदपड़ा ८ फिर उस जलमें वानर तो कोई थाहीनहीं जो मिलै इससे कुछढूंढ़के जब बाहर निकला तौ सुन्दरस्त्री रूप अपनाको देखके बड़ेआश्चर्य को प्राप्तहुआ ९ उसीसमय में दैवयोगसे इन्द्र ब्रह्माजीका पूजनकरनेको आये थे सो जब इन्द्र ब्रह्माजीका पूजनकरिकै लौटे तौ मार्गमें बड़ी सुन्दरी उस स्त्री को देखके १० कामदेवके वशहो अपने उत्तमवीर्यको छोड़तेहुये फिरवह इन्द्रका वीर्य उसस्त्रीमें बिनाही प्राप्तहुये जहांबालपड़ेथे वहां पृथिवीमें पड़ता हुआ अथवा उसस्त्रीहीके बालोंको स्पर्शकर पृथिवीमें पड़ा११तौ उसी समयमें इन्द्रकेतुल्य पराक्रमी बालीनाम वानर उत्पन्नहुआ फिर उसको इन्द्रसुवर्ण की मालादेके आप स्वर्गकोजातेहुये १२ फिर सूर्यभी उसीसमयमें वहांआके उस स्त्रीको देखके कामपीड़ितहो उसस्त्रीकी गर्दन के ऊपर वीर्यको छोड़ते हुये १३ फिर तिससे बड़ाकाय शरीर जिसका ऐसा सुग्रीवनाम वानरहोता हुआ तिस सुग्रीव के सहाय के लिये हनुमान् को नियुक्तकर सूर्य अपने लोकको जाते हुये १४॥

पुत्रद्वयंसमादायगत्वासानिद्रिताक्वचित् ॥ प्रभातेऽपश्यदात्मानं पूर्ववद्वानराकृतिम् १५ फलमूलादिभिःसार्द्धंपुत्राभ्यांसहितःकपिः ॥ नत्वाचतुर्मुखस्याग्रेऋक्षराजःस्थितःसुधीः १६ ततोब्रवीत्समाश्वास्य

बहुशःकपिकुंजरम् ॥ तत्रैकंदेवतादूतमाहूयामरसन्निभम् १७गच्छदूतमयादिष्टोगृहीत्वावानरोत्तमम् ॥ किष्किंधांदिव्यनगरींनिर्मितांविश्वकर्मणा १८ सर्वसौभाग्यबलितांदेवैरपिदुरासदाम् ॥ तस्यांसिंहासनेवीरंराजानमभिषेचय १९सप्तद्वीपगतायेयेवानराःसंतिदुर्जयाः॥ सर्वेतेऋक्षराजस्यभविष्यंतिवशेऽनुगाः २० यदानारायणःसाक्षाद्रामोभूत्वासनातनः ॥ भूभारासुरनाशायसंभविष्यतिभूतले २१ ॥

फिर दोनोंपुत्रोंको साथलेके वह स्त्री कहीं सोगई फिर प्रातःकाल जागकर केदेखै तो पहिलेहीके तरह अपनापुरुष बानरकास्वरूप देखतीहुई १५ फिर वह वानर फल मूलादिकोंको लेकै और दोनोंपुत्रों करिकै सहित ब्रह्माजी के आगे जाके स्थित होताहुआ १६ फिर ब्रह्माजी बहुतप्रकार से उस बानर के चित्त को सावधान कर अर्थात् स्त्रीरूप होजानेकी ग्लानिको दूरकर फिर एक देव दूतको बुलाके यह कहतेहुये १७ कि हेदूत तुम मेरी आज्ञासे इन बानरों को लेके पृथ्वी पर जाउ वहां एक किष्किन्धा नगरी विश्वकर्मा की रचीहुई है १८ और संपूर्ण भोग बस्तुओं करिकै युक्तहै और देवताओं कोभी दुष्प्रापहै तिस नगरी में सिंहासनपै इस बानर का अभिषेक करो १९ और सप्त द्वीप भरे में जे बड़े दुर्जय बानरहैं ते सब इस ऋक्षराजके बशमेंरहैंगे २० और जब सनातन साक्षात् नारायण पृथिवी के भारभूत असुरों के नाशके अर्थ रामरूप कर पृथिवीमें प्रकटहोंगे २१ ॥

तदासर्वेसहायार्थेतस्यगच्छंतुवानराः ॥ इत्युक्तोब्रह्मणादूतोदेवानांसमहामतिः २२ यथाज्ञप्तस्तथाचक्रेब्रह्मणातंहरीश्वरम् ॥ देवदूतस्ततोगत्वाब्रह्मणेतन्निवेदयत् २३ तदादिवानराणांसाकिष्किंधाऽभून्नृपाश्रयः ॥ सर्वेश्वरस्त्वमेवासीरिदानींब्रह्मणाऽर्थितः २४ भूमेर्भारोहृतःकृत्स्नस्त्वयालीलान्देहिना ॥ सर्वभूतांतरस्थस्यानित्यमुक्ताचिदात्मनः २५ अखंडानंदरूपस्याकियानेषपराक्रमः ॥ तथापिवर्ण्यंतेसद्भिर्लीलामानुषरूपिणः २६ यशस्तेसर्वलोकानांपापहृत्यैसुखायच॥ यइदंकीर्त्तयेन्मर्त्योबालिसुग्रीवयोर्महत् २७जन्मत्वदाश्रयत्वात्समुच्यतेसर्वपातकैः ॥ अथान्यांसंप्रवक्ष्यामिकथांरामत्वदाश्रयाम् २८ ॥

तब उनरामके सहायके लिये सातों द्वीपके वानर जाइँगे ऐसा जब ब्रह्माजीने कहा तो वह श्रेष्ठमति देवताओं को दूत २२ जैसे ब्रह्माजी ने कहाथा वैसेही सब कृत्यकर उस वानरको सब बानरोंका राजा करता हुआ फिर वह

देवदूत ब्रह्माजीके पासजाके अपना कृत्यसब निवेदन करताहुआ २३ तबसे लेकर किष्किन्धापुरी वानरोंकी राजधानी होतीहुई और हेराम सबके ईश्वर तो आपहीहो सो इससमयमें ब्रह्माकरके प्रार्थनाकियेगयेहौ २४ इसकारणसे मनुष्यदेह धारणकरके आपने पृथ्वीकाभार दूरकिया और सबप्राणियोंके अंतर्यामी और नित्यमुक्त चिद्रूप२५ और अखण्डानन्दस्वरूप जो आप तिनका रावण कायवरूप कितना पराक्रमहै तौभी लीलाहीकरके मनुष्यरूपधारी जोआप२६ तिनकायश सबलोकोंके पापदूरकरनेके अर्थ और परमानन्दकी प्राप्तिके लिये महात्माओं करके वर्णन कियाजाता है और जोपुरुष आपके उपकार के लिये जो वालि सुग्रीवका श्रेष्ठजन्म तिसका कीर्त्तनकरताहै २७ सो सबपातकों से छूटजाताहै और हेराम अब जिसप्रयोजनसे दुष्टात्मा रावणने सीताको हरा है तिसको प्रकटकरनेको औरभी आपके यशकेबढ़ानेवाली कथा मैं कहताहूं २८॥

सीताहृतायदर्थंसारावणेनदुरात्मना ॥ पुराकृतयुगेरामप्रजापतिसुतंविभुम् २९ सनत्कुमारमेकांतेसमासीनंदशाननः॥ विनयावनतोभूत्वाह्यभिवाद्येदमब्रवीत् ३० कोन्वस्मिन्प्रवरोलोकेदेवानांबलवत्तरः॥ देवाश्चयंसमाश्रित्ययुद्धेशत्रुंजयंतिहि ३१ कंयजंतिद्विजानित्यंकंध्यायंतिचयोगिनः ॥ एतन्मेशंसभगवन्प्रश्नंप्रश्नविदांवर ३२ ज्ञात्वातस्यहृदिस्थंयत्तदशेषेणयोगदृक् ॥ दशाननमुवाचेदंशृणुवक्ष्यामिपुत्रक ३३ भर्त्तायोजगतांनित्यंयस्यजन्मादिकंनहि॥ सुरासुरैर्नुतोनित्यंहरिर्नारायणोऽव्ययः ३४ यन्नाभिपंकजाज्जातोब्रह्माविश्वसृजांपतिः॥ सृष्टंयेनैवसकलंजगत्स्थावरजंगमम् ३५ ॥

तिसको सुनिये हेराम पहिले एकसमय सतयुगमें एकांतमें आसनके ऊपर स्थित जो ब्रह्माजीकापुत्र सनत्कुमार २९ तिनके समीप रावणजाके बहुत विनयसे नम्रहो प्रणामकरके वचन बोलताहुआ ३० कि हेभगवन् इसलोक में सबदेवोंमें श्रेष्ठ और अधिकबलवान् देव कौनहै जिसके बलको आश्रयणकरके देवता शत्रुको जीततेहैं ३१ और ब्राह्मणादिक नित्य किसका यजनकरते हैं औ योगीलोग नित्य किसका ध्यानकरते हैं हेभगवन् यह मेरे प्रश्नका उत्तर आप कहिये जिससे आप जाननेवालों में श्रेष्ठहो ३२ अब परमयोगी जो सनत्कुमार भगवान् सो रावण के हृदयका सम्पूर्ण भाव जानके अर्थात् रावणका आशय यहहै कि ऐसे श्रेष्ठदेव से मेरी मृत्युहोय यहसब अभिप्राय जानके रावण से बोले कि हेपुत्र तू श्रवणकरु मैं तुमसे कहताहूं ३३ हेरावण जो सबजगत्का भरण पोषणकरनेवाला औ जिसकी कभी जन्मादिककीभय होतीनहीं औ जो

सुर और असुरोंकरके नित्यही नमन कियाजाताहै अर्थात् सबदेव औ असुर जिसको नित्य प्रणामकरके स्तुतिकियाकरतेहैं ऐसा अविनाशी नारायणहै ३४ औ जिस नारायणके नाभिकमलसे प्रजापतियों का पति ब्रह्मा प्रकटहुआ है औ सबस्थावर जंगम जगत् जिसने रचाहै ३५

तंसमाश्रित्यविबुधाजयंतिसमरेरिपून् ॥ योगिनोध्यानयोगेनतमेवानुजपंतिहि ३६ महर्षेर्वचनंश्रुत्वाप्रत्युवाचदशाननः ॥ दैत्यदानवरक्षांसिविष्णुनानिहितानिच ३७ कांवागतिंप्रपद्यंतेप्रेत्यतेमुनिपुंगव ॥ तमुवाचमुनिःश्रेष्ठोरावणंराक्षसाधिपम् ३८ दैवतैर्निहतानित्यंगत्वास्वर्गमनुत्तमम् ॥ भोगक्षयेपुनस्तस्माद्भ्रष्टभूमौभवंतिते ३९ पूर्वार्जितैःपुण्यपापैर्म्रियंतेचोद्भवंतिच ॥ विष्णुनायेहतास्तेतुप्राप्नुवंतिहरेर्गतिम् ४० श्रुत्वामुनिमुखात्सर्वंरावणोहृष्टमानसः ॥ योत्स्येऽहंहरिणासार्द्धमितिचिंतापरोभवत् ४१ मनःस्थितंपरिज्ञात्वारावणस्यमहामुनिः ॥ उवाचवत्सतेऽभीष्टंभविष्यतिनसंशयः ४२ ॥

औ तिसीका आश्रयकर देवता संग्राम में शत्रुओंको जीतते हैं औ योगी लोग ध्यानयोगकरके उसीका नित्य ध्यानकरतेहैं ३६ तब यह सनत्कुमारका बचनसुनिकै रावण फिर पूछताहुआ कि हेभगवन् विष्णुकरके मारेहुये दैत्य दानव और राक्षस ये कौनगतिको प्राप्तहोतेहैं ३७ यह रावणका बचनसुनिकै सनत्कुमारमुनि बोले३८कि हेरावण देवताओंकरके मारेहुये दैत्य दानव उत्तम स्वर्गलोकको प्राप्तहोतेहैं फिर जब पुण्यभोग क्षीणहोजाताहै तौ स्वर्गसेगिरके पृथिवी में उत्पन्नहोतेहैं ३९ और फिर पूर्व्वजन्मके पुण्य पापोंकरके मरते हैं और जन्मलेतेहैं और बिष्णु भगवान्से जिनकी मृत्युहोतीहै वेतौ नारायणकी गतिको प्राप्तहोतेहैं अर्थात् ब्रह्मलोकको प्राप्तहो मुक्तिको प्राप्तहोते हैं ४० तब तो रावण यह सनत्कुमारके मुखसे बचनसुनिकै हर्षयुक्तहो यह बिचार करता हुआ कि विष्णुकेसाथ मैं युद्धकरौंगा ४१ तब सनत्कुमारमुनि रावणकामनोरथजानिकैबोले कि हेवत्स तेरामनोरथ सिद्धहोगा इसमें कुछसंदेहनहींहै ४२॥

कंचित्कालंप्रतीक्षस्वसुखीभवदशानन ॥ एवमुक्त्वामहाबाहोमुनिःपुनरुवाचतम् ४३ तस्यस्वरूपंवक्ष्यामिह्यरूपस्यापिमायिनः ॥ स्थावरेषुचसर्वेषुनदेषुचनदीषुच ४४ ॐकारश्चैवसत्यंचसावित्रीपृथिवीचसः ॥ समस्तजगताधारःशेषरूपधरोहिसः ४५ सर्वेदेवाःसमुद्राश्चकालःसूर्यश्चचन्द्रमाः ॥ सूर्य्योदयोदिवारात्रीयमश्चैवत

थाऽनिलः ४६ अग्निरिन्द्रस्तथामृत्युःपर्जन्योवसवस्तथा ॥ ब्रह्म रुद्रादयश्चैवयेचान्येदेवदानवाः ४७ विद्योततिज्वलत्येषापातिचा त्तीतिविश्वकृत् ॥ क्रीडांकरोत्यव्ययात्मासोऽयंविष्णुःसनातनः ४८ तेनसर्वमिदंव्याप्तंत्रैलोक्यंसचराचरम् ॥ नीलोत्पलदलश्यामोविद्यु द्वर्णाम्बरावृतः ४९ ॥

परंतु कुछकाल प्रतीक्षाकरौ और हेरावण तुम सुखीहोउ अब अगस्त्य राम से कहते हैं कि हेराम ऐसा रावणसेकहिकै सनत्कुमार फिर कहतेहुये ४३कि हे रावण है तो वह नारायण रूपरहित परंतु माया के आश्रयसे उसके अनेक रूप प्रतीतहोरहेहैं तिनको सुनिये सवस्थावरोंमें अर्थात् वृक्ष पाषाणादिकोंमें और नद नदियोंमें उसीकास्वरूप स्थित होरहाहै ४४ और शब्दोंमें प्रणवरूप करके स्थितहै और जोमनुष्य वचनवोलतेहैं तिनमें सत्यवचन वह आपही हैं और मंत्रों में गायत्री मंत्र आपही हैं और शेषरूपहो सबजगत्का आधार आपही हैं ४५ और सब देवता औ समुद्र औ काल औ सूर्य औ चंद्रमा औ दिन औ रात्रि औ यमराज औ पवन ४६ औ अग्नि औ इंद्र औ मृत्यु औ मेघ औ वसु औ ब्रह्मरुद्रादि औ देव दानव येसवउसीका रूपहैं अर्थात् विराट् रूपकर आपही हैं ४७ औ सूर्यादिकोंमें आपही प्रकाशकररहा औ अग्न्यादिकों में ज्वलन आप ही करता है और विश्व को रचता है और पालन करता है और अन्त में संहार भी आपही करता है औ आप अविनाशी इस प्रकार क्रीड़ा करता है वोही यह सनातन विष्णु है ४८ औ तिसी कर के सम्पूर्ण चराचर जगत् व्याप्त हो रहाहै फिर वो नील कमल के दल के समान श्याम वर्ण है और बिजुली की तरह चमकते पीत वस्त्रको धारण करे है ४९ ॥

शुद्धजाम्बूनदप्रख्यांश्रियंवामांकसंस्थिताम् ॥ सदाऽनपायिनीं देवींपश्यन्नालिंग्यतिष्ठति ५० द्रष्टुंनशक्यतेकैश्चिद्देवदानवपन्नगैः यस्यप्रसादंकुरुतेसचैनंद्रष्टुमर्हति ५१ नचयज्ञतपोभिर्वानदानाध्य यनादिभिः ॥ शक्यतेभगवान्द्रष्टुमुपायैरितरैरपि ५२ तद्भक्तैस्तद्गत प्राणैस्तच्चित्तैर्धूतकल्मषैः ॥ शक्यतेभगवान्विष्णुर्वेदांतामलदृष्टिभिः ५३ अथवाद्रष्टुमिच्छास्तिशृणुत्वंपरमेश्वरम् ॥ त्रेतायुगेसदेवेशोभ विनानृपविग्रहः ५४ हितार्थदेवमर्त्यानामिक्ष्वाकूणांकुलेहरिः॥ रामो दाशरथिर्भूत्वामहासत्वपराक्रमः ५५ पितुर्नियोगात्सभ्रात्राभार्यया दण्डकेवने ॥ विचरिष्यतिधर्मात्माजगन्मात्रास्वमायया ५६ ॥

औ शुद्ध सुवर्ण के तुल्य जिसकी कांति ऐसी जो सदा बाम भाग में स्थित लक्ष्मी देवी तिस को देखताहुआ रत्न सिंहासन पै स्थित है ५० और किसी देव दानव की सामर्थ्य नहीं जो उस को देख सकै औ जिस के ऊपर उस की प्रसन्नता होवै वोही देख सक्ता है ५१ औ वह भगवान् नारायण तौ यज्ञ तप दान वेदाध्ययनादिकों कर के औ न और उपायों कर के देखा जाता है ५२ और उसी में है प्राण औ चित्त जिन्हों का ऐसे ये पापरहित भक्त हैं तिन को वेदांत शास्त्रज्ञान करके निर्मल दृष्टियों से देखने को शक्य है ५३ अथवा हे रावण जो तुझ को परमेश्वरको देखने की इच्छा होय तौ सुनु वोही देवताओं का ईश नारायण त्रेतायुग में राजा के वेष में होगा ५४ देवता औ मनुष्य इन के कल्याण के अर्थ इक्ष्वाकुवंश में सो विष्णु बड़ा बली पराक्रमी दशरथ का पुत्र राम होके ५५ पिता की आज्ञा से भाई करके सहित औ अपनी शक्ति जो सीता तिस कर के सहित दण्डक वन में बिचरेगा ५६ ॥

एवंतेसर्वमाख्यातंमयारावणविस्तरात् ॥ भजस्वभक्तिभावेन तदारामंश्रियायुतम् ५७ एवंश्रुत्वासुराध्यक्षोध्यात्वाकिंचिद्विचार्य्यंच। त्वयासहविरोधेप्सुर्मुमुदेरावणोमहान् ५८ युद्धार्थीसर्वतोलोकान्पर्यटन्समवस्थितः ॥ एतदर्थंमहाराजरावणोऽतीवबुद्धिमान् ॥ हृतवाञ्जानकींदेवींत्वयात्मबधकांक्षया ५९ इमांकथांयःशृणुयात्पठेद्वासंश्रावयेद्वाश्रवणार्थिनांसदा ॥ आयुष्यमारोग्यमनंतसौख्यंप्राप्नोति लाभंधनमक्षयंच ६० ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेउत्तरकाण्डेतृतीयःसर्गः ३ ॥

हे रावण यह सब वृतान्त मैं ने बिस्तार पूर्बक बर्णन किया औ तुम भक्ति भाव कर के लक्ष्मी युक्त जो राम तिसका भजन करो ५७ अब अगस्त्य कहते हैं हे राम इस प्रकार रावण सनत्कुमार जी से वचन सुनि कै कुछ काल बिचार कर आप के संग बिरोध की इच्छा कर के बड़े आनन्द को प्राप्तहुआ ५८ फिर युद्ध के अर्थ सब लोकों में बिचरता हुआ और हे महाराज इसीके लिये बड़ा बुद्धिमान् जो रावण सो तुम्हारे हाथ से अपनी मृत्यु की इच्छा कर के सीता देवी को हरताहुआ ५९ जो इस रहस्य कथाको सुनताहै अथवा औरों को सुनावता है सो आयुर्बल और आरोग्य औ अनन्त सुख को प्राप्त होताहै और अक्षय धन को प्राप्त होता है ६० ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्बादेउत्तरकाण्डे भाषाटीकायांतृतीयस्सर्गः ३ ॥

एकदाब्रह्मणोलोकादायांतंनारदंमुनिम् ॥ पर्यटन्रावणोलोका न्दृष्ट्वानत्वाऽब्रवीद्वचः १ भगवन्ब्रूहिमेयोद्धुंकुत्रसंतिमहाबलाः ॥ यो द्धुमिच्छामिबलिभिस्त्वंज्ञातासिजगत्त्रयम् २ मुनिर्ध्यात्वाऽऽहसुचिरं श्वेतद्वीपनिवासिनः ॥ महाबलामहाकायास्तत्रयाहिमहामते ३ वि ष्णुपूजारतायेवैविष्णुनानिहताश्चये ॥ तएवतत्रसंजाताअजेयाश्च सुरासुरैः ४ श्रुत्वातद्रावणोवेगान्मंत्रिभिःपुष्पकेणतान् ॥ योद्धुका मःसमागत्यश्वेतद्वीपसमीपतः ५ तत्प्रभाहततेजस्कंपुष्पकंनाचल त्ततः ॥ त्यक्त्वाविमानंप्रययौमंत्रिणश्चदशाननः ६ प्रविशन्नेवतद्द्वी पंधृतोहस्तेनयोषिता ॥ पृष्टश्चत्वंकुतःकोऽसिप्रेषितःकेनवावद ७ ॥

चौथे सर्गरमेश प्रभु सुनि सीता अपवाद ॥
त्यागतभेसोउमुनिनिरखि कह्योयथारथवाद १ ॥

अब श्रीमहादेवजी पार्वतीसे कथा वर्णनकरतेहुये कि हे पार्वति एकसमय में ब्रह्मलोकसे आवतेहुये नारदजी को पर्यटन करताहुआ रावण देखके नम स्कार कर बोलताहुआ १ किहे भगवन् मुझसे युद्धकरनेको बड़े बलवान्कहां वास करतेहैं तिनको बतलाइये मेरे युद्धकरनेकी इच्छाहै औ आप तीनोंलोकों के जाननेवाले हो २ तो नारदमुनि बहुतकाल ध्यानकरके रावणसे बोलेकि हे रावण श्वेतद्वीप के रहनेवाले बड़े बलवान् औ बड़े बड़े शरीरवाले हैं इस से श्वेतद्वीपको तुमजाउ ३ और जे पुरुष विष्णुपूजामें परायण हैं औ जे संग्राममें विष्णुने मारेहैं वे वहांउत्पन्नहोतेहैं ४ अब रावण यह नारदजी का वचन सुनके बड़े वेगसे मन्त्रियोंकोसंगलिये पुष्पक विमानपै चढ़िकैश्वेतद्वीप को जाताहुआ ५ फिरजब वहां श्वेतद्वीपकेसमीप विमानपहुंचा तो उसकी गति मंदहोगई अगाड़ी नहीं चलसका औ न कोईमन्त्री जानेकोसमर्थ हुआ तब रावण विमान औ मन्त्रियोंको वहांही छोड़के अकेला पांउ पांउ जाताहु आ ६ और कोई यहांऐसाकहतेहैं कि मंत्रियोंकोभी संग वहांलेके प्रवेशकिया सो तो सम्भव नहीं होता है अब रावण ने जब श्वेत द्वीपमें प्रवेश किया तो उसी समयमें एक स्त्रीने रावणको पकड़लिया आगेनहीं जानेदिया और यह पूछा कि तू कौनहै और किसकाभेजा आयाहै ७ ॥

इत्युक्तोऽब्रवीत्त्यान्त्रीभिर्हसन्तीभिःपुनःपुनः॥ कृच्छ्राद्धस्ताद्विनिर्मुक्त स्तासांत्रीणांदशाननः ८ आश्चर्यमतुलंलब्ध्वाचिन्तयामासदुर्मतिः विष्णुनानिहतोयामियैकुंठामितिनिश्चितः ९ मयिविष्णुर्यथा कु

ष्येत्तथाकार्यंकरोम्यहम् ॥इतिनिश्चित्यवैदेहींजहारविपिनेऽसुरः १० जानन्नेवपरात्मानंसजहारावनीसुताम् ॥ मातृवत्पालयामासत्वत्तः कांक्षन्बधंस्वकम् ११ रामत्वंपरमेश्वरोऽसिसकलंजानासिविज्ञानदृ क्भूतंभव्यमिदंत्रिकालकलनासाक्षीविकल्पोज्झितः ॥ भक्तानामनु वर्तनायसकलांकुर्वन्क्रियासंहतिं त्वाश्शृण्वन्मनुजाकृतिर्मुनिवचोभा सीशलोकार्चितः १२ स्तुत्वैवंराघवंतेनपूजितःकुंभसंभवः ॥ स्वाश्रमं मुनिभिः सार्द्धंप्रययौहृष्टमानसः १३ रामस्तुसीतयासार्द्धंभ्रातृभिःस हमंत्रिभिः ॥ संसारीवरमानाथोरममाणोवसद्गृहे १४ ॥

तौ रावणकी सब हकचक भूलगई कुछभी जवाब न दियागया तबतक बहुतस्त्रियां हँसनेलगीं तौ रावण जैसे तैसे उनसे हाथ छुड़ाके भागता हुआ फिर रावण बड़े आश्चर्यको प्राप्तहो यह चिन्तवन करताहुआ कि विष्णु से मैं मृत्युको प्राप्तहोऊँ तौ वैकुण्ठमें ऐसेही बासकरौं ऐसाबिचारकर ८।९ मेरेबिषे विष्णु जैसेकोप करैं तैसा मुझको करना चाहिये यह निश्चयकरके बन में सीताको हरताहुआ १० औ हे राम आपको परमात्मा जानहीकरके आपसे अपनी मृत्यु चाहताहुआ सीताको हरके माताकेतुल्य उसकी रक्षाकरताहुआ ११ औ हे राम तुम परमेश्वरहौ औ अपनी विज्ञान दृष्टिसे जो कुछहोआया है और होगा और होरहाहै इसप्रकार तीनोंकालके पदार्थोंको जानतेहौ और प्रपञ्च रहित सबके साक्षीहौ औ भक्तोंके अनुग्रहकेलिये मुनिवचनोंको सुन तेहुये यज्ञादिक्रियाको करतेहौ औ सब लोकोंकरके पूजितहौ और सब में अन्तर्यामिरूपकरके प्रकाशभी करतेहौ १२ अब इसप्रकार रामकी स्तुतिकरके रामसे पूजाको प्राप्तहुये जो अगस्त्य मुनिसो ऋषियोंकरके सहित अपने आ श्रमको जातेहुये औ बड़े प्रसन्नहुये १३ औ लक्ष्मीनाथ जो श्रीराम सो सीता करके सहित औ भाई मन्त्रियों करके सहित रमण करते हुये गृहमें वास करतेहुये १४ ॥

अनासक्तोऽपिविषयान्बुभुजेप्रिययासह ॥ हनूमत्प्रमुखैःसद्भिर्वा नरैःपरिवेष्टितः १५ पुष्पकंचागमद्राममेकदापूर्ववत्प्रभुम् ॥ प्राहदेव कुबेरेणप्रेषितंत्वामहंततः १६ जितंत्वंरावणेनादौपश्चाद्रामेणनिर्जि तम्॥अतस्त्वंराघवंनित्यंवहयावद्वसेद्भुवि १७ यदागच्छेद्रघुश्रेष्ठोवैकुं ठंयाहिमांतदा ॥ तच्छ्रुत्वाराघवःप्राहपुष्पकंसूर्यसन्निभम् १८ यदा स्मरामिभद्रंतेतदागच्छममांतिकम् ॥ तिष्ठान्तर्द्धायसर्वत्रगच्छेदानीं

समाज्ञया १९ इत्युक्त्वारामचन्द्रोऽपिपौरकार्याणिसर्वशः ॥ भ्रात निर्मन्त्रिभिःसार्द्धंयथान्यायंचकारसः २० राघवेशासतिभुवंलोकना थेरमापतौ ॥ वसुधासस्यसंपन्नाफलवंतश्चभूरुहाः २१ ॥

और हनुमान्को आदि लेके श्रेष्ठ वानरोंकरके सेवित औ आसक्ति रहितही श्रीरामप्रियाके साथ विषयोंकी सेवन करतेहुये १५ अब एक समय पुष्पक विमान रामके समीप आके यह कहताहुआ कि हे राम मैं कुबेरकाभेजाहुआ फिर आपके समीप प्राप्तहुआहौं १६ और हे राम कुबेरने मुझ से यहवचन कहा कि हे पुष्पक पहिले तुमको रावणने जीतलिया पीछे रामनेजीता इस से जबतक राम पृथ्वीमें स्थितहैं तबतक तुम रामही को लेचला करो १७ और जबराम वैकुण्ठलोकको जावें तबमेरे समीप प्राप्तहोउ अबराम यहपुष्पक विमानका वचनसुनिकै सूर्यतुल्य जो पुष्पक तिससेबोले १८ कि हे पुष्पक तुम्हारा कल्याणहोय और जबमैंतुम्हारा स्मरण कियाकरौं तब प्राप्तहुआ करौ और मेरीआज्ञासे तुमजाउ औ अन्तर्द्धानहो अर्थात् छिपकरसब जगह स्थित रहाकरो श्रीरामका आशययह है कि सबलोग मेरे दिव्य ऐश्वर्यको नजानैं इससे तुम छिपेहुये मेरे समीप स्थितरहौ और जो तुम प्रकटहो नित्यवास क- रोगे तौये देवदेव नारायणहैं ऐसासभी जाननेलगैंगेसो मुझको करनानहींइस से यहभी सूचितहुआ कि जब परमेश्वरका अवतार होताहै तौ उससमयमेंभी सबको पारमेश्वररूपका ज्ञान नहीं होताहै जिनके ऊपरकृपाहै वोहीजानते हैं और राम कृष्णादि अवतार धारणकर कोईकोई चरित्रभी ऐसाकरतेहैं जिसमें राजस तामस मनुष्योंको निश्चय होताही नहींहै इसीसे अबभी असुरमनुष्य राम कृष्णको मनुष्यही कहतेहैं और यह वे अन्धेनहीं जानते कि हजारोंश्रुति स्मृति जिनको ईश्वरत्व प्रतिपादनकर रहीहैं और उनकी व्याख्या करनेवाले शंकराचार्यादिकोंने अपने ग्रंथोंमें राम कृष्णादिकोंमें ईश्वरावतार जबस्पष्ट लिखा फिर सन्देहका अवकाश कहांहै १९ अबश्रीरामचन्द्र यह पुष्पक विमान से कहिके भाई औ मन्त्रियों करके सहित जैसे शास्त्रमें कहाहै तैसेपुरवासियों का कार्य करतेहुये २० जब साक्षात्लक्ष्मीके पति श्रीराम पृथिवीकीरक्षाकरते हुये तब अन्नोंकी वृद्धिसे शोभित सब पृथिवी होतीहुई औबहुतफल पुष्पयुक्त वृक्षहोते हुये २१ ॥

जनाधर्मपराःसर्वेपतिभक्तिपराःस्त्रियः ॥ नापश्यत्पुत्रमरणंकश्चि द्राजनिराघवे २२ समारुह्यविमानाग्र्यंराघवःसीतयासह ॥ वानरै र्भ्रातृभिःसार्द्धंसंचचारावनिंप्रभुः २३अमानुषाणिकार्याणिचकारव

हुशोभुवि ॥ ब्राह्मणस्यसुतंदृष्ट्वाबालंमृतमकालतः २४ शोचंतंब्राह्मणंचापिज्ञात्वारामोमहामतिः ॥ तपस्यन्तंवनेशूद्रंहत्वाब्राह्मणबालकम् २५ जीवयामासशूद्रस्यददौस्वर्गमनुत्तमम् ॥ लोकानामुपदेशार्थंपरमात्मारघूत्तमः २६ कोटिशःस्थापयामासशिवलिंगानिसर्वशः॥ सीतांचरमयामाससर्वभोगैरमानुषैः २७ शशासरामोधर्मेणराज्यंपरमधर्मवित् ॥ कथांसंस्थापयामाससर्वलोकमलापहाम् २८ ॥

और मनुष्यसब अपने २धर्ममें परायणहोतेहुये औ अपने पतिभक्तिमें तत्पर स्त्रियां होतीहुईं औ राम जबराजा हुये तौकोई अपने पुत्रकीमृत्युको नदेखताहुआ २२ फिर श्रीराम भाई औवानर औ सीता इनकरके सहित पुष्पक विमानपै चढ़िकै पृथिवीमें बिचरतेहुये २३ औ बहुतसे अमानुषचरित्र अर्थात् जोमनुष्योंसे न होसकैं ऐसे चरित्र पृथिवीमें करतेहुये और एकसमयमें श्री राम असमय में किसी ब्राह्मणके पुत्रकोमरा हुआ देखके २४ और उसपुत्र को शोचताहुआ ब्राह्मणको जानके श्रेष्ठ मति जोरामसो बनमें तपकरताहुआ जोशूद्र तिसकोमारके उसब्राह्मणके पुत्रको जिवा देतेहुये २५ और उसशूद्र कोभी उत्तमलोक देतेहुये अर्थात् उससमय में उसशूद्रका तपकरनाही एक रामके राज्य में अधर्मथा इसीसे ब्राह्मणका पुत्र मरगया था सो शूद्र के मारने से पुत्र भी जिया उस शूद्र को स्वर्ग प्राप्तहुआ २६ अब परमात्मा जो रामसो लोकोंके उपदेशके लिये कड़ोरों शिवलिंगोंका स्थापन करतेहुये सब जगह औ अमानुष भोगोंकरके सीताकोरमण करातेहुये २७ औ परमधर्म के जाननेवाले जोश्रीरामसो धर्मकरके राज्यकी रक्षाकरतेहुये औसब लोकों के पापनाश करनेवाली जो अपनीकथा तिसको लोकोंमें स्थापनकरतेहुये २८॥

दशवर्षसहस्राणिमायामानुषविग्रहः ॥ चकारराज्यंविधिवल्लोकवंद्यपदाम्बुजः २९ एकपत्नीव्रतोरामोराजर्षिःसर्वदाशुचिः ॥ गृहमेधीयमखिलमाचरन्शिक्षयन्जनान् ३०सीताप्रेम्णाऽनुवृत्त्याचप्रश्रयेणदमेनच ॥ भर्त्तुर्मनोहरासाध्वीभावज्ञासाह्रियाभिया ३१ एकदाक्रीडविपिनेसर्वभोगसमन्विते ॥ एकांतेदिव्यभवनेसुखासीनंरघूत्तमम् ३२ नीलमाणिक्यसंकाशंदिव्याभरणभूषितम् ॥ प्रसन्नवदनंशांतंविद्युत्पुंजनिभांवरम् ३३सीताकमलपत्राक्षीसर्वाभरणभूषिता॥ राममाहकराभ्यांसालालयंतीपदाम्बुजे३४देवदेवजगन्नाथपरमात्मन्सनातन ॥ चिदानंदादिमध्यांतरहिताशेषकारण ३५ ॥

औ मायाही करके मनुष्य रूपहै जिनका औ सब लोकोंको वन्दनीयहैं चरणारविन्द जिनकेऐसे जोराम जोदशहजार वर्ष विधिपूर्वक राज्यकरतेहुये २६ औ एकपत्नीके व्रतको धारणकरे अर्थात् सिवाय अपनी स्त्रीके और स्त्री में स्वप्नमेंभी जिनकामन नहीं गया ऐसे जोराजर्षि श्रीराम सोसदापवित्र आप सब मनुष्योंको शिक्षाकरतेहुये गृहस्थोंके धर्मका आचरण करते हुये ३० ॥ औ सीता प्रेमकरके औ अनुकूलाचरण करके औ नम्रतासे औइन्द्रियोंकेदमन से औ लज्जा से औ भयसेसबकाल में प्रियतम रामका अभिप्राय जानतीहुई और पातिव्रत में तत्पर हो श्रीराम के मनको हरतीहुई अर्थात् वश करती हुई ३१ अब एक समयमें विहार करनेके बगीचे में सब भोगोंकी सामग्रियों करके युक्त जो एकान्त में मन्दिर तिसमें स्थित जो ३२ नील मणिके सदृश औ दिव्य आभरणों करके भूषित औ बिजुली के तुल्यप्रकाशमान पीत वस्त्रों को धारण करे औ प्रसन्नहै मुखारविन्द जिसका औशान्तहै स्वरूपजिसकाऐसे जो श्रीराम तिनसे ३३ सब आभूषणोंको धारणकरे कमलनयनी सीताअपने हाथों से रामके चरण कमल पलोटती हुई बोली ३४ हे देव देव हे जगन्नाथ हे परमात्मन् हे सनातन हे चिदानन्द हे आदि मध्य अन्तरहित हे अशेष कारण अर्थात् सबके कारण ३५ ॥

देवदेवाःसमासाद्यमामेकांतेब्रुवन्वचः ॥ बहुशोऽर्थयमानास्तेवैकुंठागमनंप्रति ३६ त्वयासमेतश्चिच्छक्त्याशमास्तिष्ठतिभूतले ॥ विसृज्यास्मात्स्वकंधामवैकुंठंचसनातनम् ३७ आस्तेत्वयाजगद्धात्रि रामःकमललोचनः ॥ अग्रतोयाहिवैकुंठंत्वंतथाचेद्रघूत्तमः ३८ आगमिष्यतिवैकुंठंसनाथान्नःकरिष्यति ॥ इतिविज्ञापिताहंतैर्मयाविज्ञापितोभवान् ३९ यच्चुक्तंतत्कुरुष्वाद्यनाहमाज्ञापयेत्प्रभो ॥ सीतायास्तद्वचःश्रुत्वारामोध्यात्वाऽब्रवील्क्षणम् ४० देविजानामिसकलंतत्रोपायंवदामिते ॥ कल्पयित्वामिषंदेविलोकवादंत्वदाश्रयम् ४१ त्यजामित्वांवनेलोकवादाद्भीतिइवापरः ॥ भविष्यतःकुमारौद्वौवाल्मीकेराश्रमांतिके ४२ ॥

सब इंद्रादि देव एकान्तमें मेरे समीप आके आपके वैकुण्ठके गमन की बहुत प्रार्थना करते हुये मुझसे यह वचन कहतेहैं ३६ कि हे सीते तू जो राम की अचिन्त्य अनादि अव्यक्त सकल कार्यके करने वाली शक्तिहै तिसकेसहाय से राम हमसब देवताओं को औ वैकुण्ठको त्यागके पृथिवीमें स्थितहैं ३७ इस से हे जगन्मातः तुमपहिले वैकुण्ठ लोकको जाउ तौ रामभी वैकुण्ठ में

आकै हमको सनाथकरैं इसप्रकारदेवताओंने अपनाकार्य मुझसे निवेदनकिया औ मैंने आपसे कहा ३९ और अब आप जैसाकुछ मुनासिब समझिये तैसा कीजिये हे स्वामिन् मैंकुछ आपको आज्ञा नहीं करती हौं मेरा तौ इतनाही धर्महै जोकुछ कार्यहोइ सो आपको निवेदनकरना तब राम यह सीता का बचनसुनिकै क्षणमात्र ध्यानकरके बोलते हुये ४० कि हे देवि यहवृत्तांतसब मैं जानताहूं औ तिसमें उपाय अब कहताहूं हे देवि तुही है कारण जिसमें ऐसा एक अपने ऊपर लोकापवाद का बहाना ४१ रचिकै जैसे कोईसंसारी पुरुष होय तैसे लोकापवादसे भयभीतकी नाईं तुझको बनमें त्यागौंगा औ वाल्मीकि मुनि के आश्रम में तेरे दोपुत्र होवेंगे ४२ ॥

इदानींदृश्यतेगर्भःपुनरागत्यमेन्तिकम् ॥ लोकानांप्रत्ययार्थंत्वं कृत्वाशपथमादरात् ४३ भूमेर्विवरमात्रेणवैकुंठंयास्यसिद्रुतम् ॥ पश्चादहं गमिष्यामिएषएवसुनिश्चयः ४४ इत्युक्त्वातांविसृज्याथरामोज्ञानैकलक्षणः ॥ मंत्रिभिर्मंत्रतत्त्वज्ञैर्बलमुख्यैश्चसंवृतः ४५ तत्रोपविष्टंश्रीरामंसुहृदःपर्युपासत ॥ हास्यप्रौढकथासुज्ञा हासयंतःस्थिताहरिम् ४६ कथाप्रसंगात्पप्रच्छरामोविजयनामकम् ॥ पौराजानपदामेकिंवदंतीहशुभाशुभम् ४७सीतांवामातरंवामेभ्रातृन्वाकेकयीमथ ॥ नभेतव्यंत्त्वयाब्रूहिशापितोऽसिममोपरि४८इत्युक्तःप्राह विजयोदेवसर्वेवदन्तिते॥कृतंसुदुष्करंसर्वंरामेणाविदितात्मना ४९ ॥

और हे सीते इस समयमें जो तेरेउदरमें गर्भ है इसीसे तेरे दोपुत्रहोवेंगे फिरिपुत्रोपत्तिके अनन्तर कुछकाल में मेरे समीपआके सब लोकोंके बिश्वास के लिये शपथ करके ४३ पृथिवी के छिद्रके द्वारा तू बैकुंठको जावेगी फिरमैं भी तिसके पीछे बैकुंठको आऊंगा यह मेरा निश्चयहै ४४ फिर बोध स्वरूप श्रीराम सीतासे यह वचनकहिकै उसको बिदाकर आप सभामें प्रवेशकरतेहुये वहां अच्छी सलाहके जानने वाले मंत्रियों करके औ सेनाके मनुष्यों करके सेवित ४५ राज्य सिंहासन पै बैठे जो श्रीराम तिनको हास्य कथाके तत्त्वके जानने वाले मित्रलोग हँसाते सेवन करतेहुये ४६ फिरकथाके प्रसंग सेराम विजय नाम मित्रसे पूछते हुये कि हे विजय पुरबासी औ देशके मनुष्यक्या मेरा शुभअशुभ अर्थात् भलाई बुराई कहतेहैं ४७ औ सीताको औ माताको औ भाइयों को औ कैकेयी को कैसा कहतेहैं तुम भय न करना सत्य सत्य जैसा कुछ प्रजा के मनुष्य कहतेहोवैं तैसा कहो औ मैं अपनी शपथ अर्थात् सौगन्द दिलाताहूं झूठ न कहना ४८ इस प्रकार श्रीराम अपनी मायाके

सोहकताको हृदयमें निश्चयकरके बड़े आदरसे उसविजयसे पूछतेहुये ४९॥

किन्तुहत्वादशग्रीवंसीतामाहृत्यराघवः ॥ अमर्षंपृष्ठतःकृत्वास्व वेश्मप्रत्यपादयत् ५० कीदृशंहृदयेतस्यसीतासंभोगजंसुखम् ॥ चाहृताविजनेऽरण्येरावणेनदुरात्मना ५१ अस्माकमपिदुष्कर्मयोषि तांमर्षणंभवेत् ॥ यादृक्भवतिवैराजाताहृश्योनियतंप्रजाः ५२ श्रुत्वा तद्वचनंरामःस्वजनान्पर्यपृच्छत ॥ तेऽपिनत्वाऽब्रुवन्राममेवमेतन्न संशयः ५३ ततोविसृज्यसचिवान्विजयंसुहृदस्तथा ॥ आहूयलक्ष्म णंरामोवचनंचेदमब्रवीत् ५४ लोकापवादस्तुमहान्सीतामाश्रित्य मेऽभवत् ॥ सीतांप्रातःसमानीयवाल्मीकेराश्रमांतिके ५५ त्यक्त्वा शीघ्रंरथेनत्वंपुनरायाहिलक्ष्मण ॥ वक्ष्यसेयदिवाकिंचित्तदामांहत वानसि ५६ ॥

ऐसाजब रामचन्द्रने पूछा तौवह विजय यहकहताहुआ कि हे देवसब प्रजाके मनुष्ययह कहतेहैं रामने बड़ादुष्कर कर्म किया अर्थात् जोकिसीसे न होसके ऐसा रावणका वधरूप कर्म किया ५० परन्तुएक अच्छा नहींकियाजो रावणको मारके फिर सीताको ल्याकै अपने घरमें प्रवेशकराया और सीतासे कुछभी क्रोधन किया और रामके हृदय में सीताके संभोगका सुखकैसा होता होगा जोसीता विजन वनमें दुष्टात्मा रावणने हरी और रावणके घररही और फिर उसको घरमेंडारलियायह कुछकरनेयोग्य नहींकिया ५१ और जो ऐसाही हुआ तौ हमसबोंकोभी अपनीस्त्रियाओंका ऐसा अपराध सहनापड़ेगा क्योंकि जैसाराजाहोताहै वैसीही प्रजाभीहोती हैं ५२ तबतौ उस विजयनाम सखा के वचनसुनके श्रीराम अपने मन्त्रियोंसे पूछतेहुये कि यहकहताहै सोइसका कथनकैसाहै तौमन्त्री लोग नमस्कारकरके श्रीरामचन्द्रजीसे बोले कि हे राम जोवह कहताहै इसमें कुछसंदेह नहींहै ५३ तब श्रीराम ऐसा वचनसुनि कै सबमन्त्रियोंको औ उसविजयकोऔ सब मित्रोंको विदाकर लक्ष्मणको बुला के यहकहते हुये ५४ कि हे लक्ष्मण सीताकेकारणसे मेराबड़ा लोकापवादहो रहाहै इससे तुमप्रातःकाल सीताको रथपैचढ़ाके लेजावो ५५ और वाल्मीकि ऋषिके आश्रमके समीप छोड़के शीघ्रही रथकरके मेरे समीपआवो और जो इसमें कुछकहोगे तौमेरे मारनेके पापकेभागी होउगे ५६ ॥

इत्युक्तोलक्ष्मणोभीत्याप्रातरुत्थायजानकीम् ॥ सुमन्त्रेणरथेकृत्वा जगाममहसावनम् ५७ वाल्मीकेराश्रमस्यान्तेत्यक्त्वासीतामुवाच

सः॥लोकापवादभीत्यात्वांत्यक्तवानूराघवोवने ५८ दोषोनकश्चिन्मे मातर्गच्छाश्रमपदंमुनेः॥इत्युक्त्वालक्ष्मणःशीघ्रंगतवानूरामसन्निधिम् ५९ सीताऽपिदुःखसन्तप्ताविललापातिमुग्धवत्॥शिष्यैःश्रुत्वाच वाल्मीकिःसीतांज्ञात्वासदिव्यदृक् ६० अर्घ्यादिभिःपूजयित्वासमाश्वास्यचजानकीम्॥ज्ञात्वाभविष्यसकलमार्पयन्मुनियोषिताम् ६१ तास्तांसंपूजयन्तिस्मसीतांभक्त्यादिनेदिने॥ ज्ञात्वापरमात्मनोलक्ष्मींमुनिवाक्येनयोषितः॥ सेवांचक्रुःसदातस्याविनयादिभिरादरात् ६२ रामोपिसीतारहितःपरात्माविज्ञानदृक्केवलआदिदेवः॥ संत्यज्यभोगानखिलान्विरक्तोमुनिव्रतोभून्मुनिसेवितांघ्रिः ६३॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादे
उत्तरकाण्डेचतुर्थस्सर्गः ४॥

अब इसप्रकार रामसे आज्ञाको प्राप्त लक्ष्मण बड़ीभयसे प्रातःकालही उठिकै सुमन्त्रसारथीसे रथमँगवाके तिसपै जानकीजीको सवारकराके शीघ्रही वनको जातेहुये ५७ फिर वाल्मीकिके आश्रमके समीप सीताको त्यागिकैयह लक्ष्मणबोले कि हे मातः लोकापवादके भयसे रामने तुमको बनमें त्यागाहै ५८ कुछमेरा दोषनहीं है औतुमवाल्मीकि मुनिके आश्रमको जाउ यह सीतासे कहिकै लक्ष्मण शीघ्रही रामके समीप आतेहुये ५९ औ सीताभी दुःखसे संतप्तहो अत्यन्त अज्ञकी नाईं विलाप करती हुई तबतक वाल्मीकि मुनि अपने शिष्योंसे किसी स्त्रीको विलाप करते सुनिके अपनी दिव्यदृष्टिसे सीताको जानके ६० फिर वहां आके अर्घआदि सामग्रियोंसे पूजनकर सीताके चित्तको सावधान करके आगे होने वाला सबवृत्त जानिकै उससीताको मुनियोंकी स्त्रियाओंको सौंपतेहुये ६१ अबवे मुनियोंकी भार्या वाल्मीकिजीके बचनसे सीताको परमात्मा रामकी लक्ष्मीजानके बड़ी प्रीतिसे दिनदिन पूजनकरती हुईं ६२ अब सीता करके रहित आदिदेव विज्ञानदृष्टि परमात्मा रामचन्द्रभी सबभोगोंको त्यागिकै सबसे विरक्तहो मुनियोंके व्रतको धारण करतेहुये और यद्यपि मुनियोंकरके सेवितहैं चरणकमल जिनके ऐसे आपहीहैं तौभी लोकशिक्षाके अर्थ मुनिव्रत होतेहुये ६३॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणउमामहेश्वरसंवादेउत्तर
काण्डेभाषाटीकायांचतुर्थःसर्गः ४॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ ततोजगन्मङ्गलमंगलात्मनाविधायरामायणकीर्त्तिमुत्तमाम् ॥ चचारपूर्वाचरितंरघूत्तमोराजर्षिवर्य्यैरभिसेवितंयथा १ सौमित्रिणापृष्टउदारबुद्धिनारामःकथाःप्राहपुरातनीःशुभाः ॥ राज्ञःप्रमत्तस्यनृगस्यशापतोद्विजस्यतिर्य्यक्त्वमथाहराघवः २ कदाचिदेकान्तउपस्थितंप्रभुंरामंरमालालितपादपंकजम् ॥ सौमित्रिरासादितशुद्धभावनःप्रणम्यभक्त्याविनयान्वितोब्रवीत् ३ त्वंशुद्धबोधोऽसिहिसर्वदेहिनामात्माऽस्यधीशोऽसिनिराकृतिःस्वयम् ॥ प्रतीयसेज्ञानदृशांमहामतेपादाब्जभृङ्गाहितसंगसंगिनाम् ४ अहंप्रपन्नोऽस्मिपदांबुजंप्रभोभवापवर्गंतवयोगिभावितम् ॥ यथांजसाज्ञानमपारवारिधिंसुखंतरिष्यामितथाऽनुशाधिमाम् ५ श्रुत्वाऽथसौमित्रिवचोऽखिलंतदाप्राहप्रपन्नार्त्तिहरःप्रसन्नधीः ॥ विज्ञानमज्ञानतमोपशांतयेश्रुतिप्रपन्नंक्षितिपालभूषणः ६ आदौस्ववर्णाश्रमवर्णिताःक्रियाःकृत्वासमासादितशुद्धमानसः ॥ समाप्यतत्पूर्वमुपात्तसाधनःसमाश्रयेत्सद्गुरुमात्मलब्धये ७ ॥

दो० । सर्गपांचमें दयानिधि उपदेशो निज बोध ।
जोनाशैभ्रममिहिरजिमि अथवास्वप्नप्रबोध १

अब श्रीमहादेवजी रामलक्ष्मणके संवादकेद्वारा परमतत्त्वके उपदेशकरनेको पार्वतीजीसे कहतेहुये कि हेपार्वति तिसकेउपरांत श्रीराम जगत्के मंगलोंकाभी मंगलकरनेवाला जो अपनास्वरूप अर्थात् जगत्संगल जे विषयानन्द तिनको सत्तादेनेवाली जो ब्रह्मानन्दरूप अपनीमूर्त्ति तिसकरके वाल्मीक्यादि रामायणोंकी प्रवृत्तिकरानेवाली जो अपनी निर्मलकीर्त्ति तिसको लोकोंमें विस्तारकरके अपनेवंशके इक्ष्वाकुआदि राजाओंने किया जो प्रजापालन धर्मानुष्ठान सत्कथा श्रवणादि सदाचार अर्थात् अच्छा चालचलन तिसको आपभी जैसे और राजर्षियोंने सेवन किया है तैसे सेवन करतेहुये १ फिर श्रेष्ठबुद्धि लक्ष्मणने जब पूंछा तो श्रीराम पहिले राजाओं की धर्मविषयिणी कथाओंको लक्ष्मण से कहतेहुये फिर प्रमत्त जो राजानृग अर्थात् भूलिके एकगायको दो ब्राह्मणोंको देताहुआ फिर दोनों झगड़ाळुओंकी फिरयादकोभी नहींसुनताहुआ जो राजानृग तिसको ब्राह्मणके शापसे जैसे गिरगिट की योनि प्राप्तहुई वो कथाभी लक्ष्मणको सुनातेहुये इसकाअभिप्राय यहहै कि राजाको विषयों में फँसिके कार्यार्थियोंके कार्यको नहींसुननेमें बड़ाभारी दुःखहोता है और दूसरा

आशय यहभीहै कैसेभीब्राह्मणके धनकेअपहरणमेंदुःखहोताहीहै जैसे दानियोंमें श्रेष्ठ जो राजानृग तिसकोहुआ २ अब किसीसमयमें शुद्धकियाहै अन्तःकरण जिसने ऐसे जो लक्ष्मण सो एकांतदेशमें बैठेहुये और लक्ष्मीजीने लाड़लड़ाये हैं चरणकमल जिसके ऐसे जो श्रीरामचन्द्रजी तिनको गुरुबुद्धिसे प्रणामकरके नम्रतापूर्वक वचनबोलतेहुये ३ कि हे राम तुम निर्मलज्ञानस्वरूपहो औ सब प्राणियों के आत्माहो औ सबके प्रेरकहौ अर्थात् अन्तर्यामी हो औ जीवों के सदृश कर्माधीन देहरहितहो अर्थात् मायाको बशकर अपनी इच्छाहीसे मनुष्य कासा आकार धारणकरे हो औ ऐसे ज्ञानस्वरूप आपको सबकोई नहीं जान सक्तेहैं किन्तु आपके चरणारविंदों में जिन्होंने भृङ्गकेसदृश अपना अन्तःकरण समर्पणकियाहै ऐसे जे एकांतीभक्त तिनका हुआहै संग जिनको ऐसे जो ज्ञान दृष्टिपुरुष तिनकोही उक्तज्ञानस्वरूप प्रतीतहोतेहौ अर्थात् ज्ञानीपुरुषहीआपके वास्तवस्वरूपकोजानसक्तेहैं ४औहेभगवन् योगियोंकरकेहृदयमेंध्यानकियागया और संसारसे छुड़ादेनेवाले ऐसे जो आपके चरणकमल तिनकेमें शरणप्राप्त-हुआहौं इससे हेप्रभो जैसे मैं अज्ञानरूपी समुद्रको साक्षात् सुखपूर्वकपारहोउँ तैसे शिक्षाकरिये ५ अब इसकेउपरान्त राजाओंके भूषण और शरणागतभक्तों के दुःखके हरनेवाले श्रीराम पूर्वोक्त लक्ष्मणके वचनसुनके प्रसन्नचित्तहो(तमेवविदित्वातिमृत्युमेतिनान्यःपन्थाविद्यतेयनाय) उस परमात्माही को जानके संसाररूपी मृत्युको पारहोताहै सिवाय ज्ञानके और कोईमार्ग आश्रयकरने के योग्य नहीं है इत्यादि श्रुतियोंकरके बोधित जो आत्मतत्त्वज्ञान तिसको अज्ञान रूपी अन्धकारके नाशकेलिये लक्ष्मणसे कहतेहुये ६ तहां प्रथम आत्मज्ञान के प्राप्तिके लिये परमदयालु श्रीरामचन्द्र क्रमसे बहिरंगसाधनोंको कहते हैं कि हे लक्ष्मण प्रथम मोक्षार्थीपुरुषअपने वर्णाश्रमोंमें विहित जो यज्ञदानादि निष्का-म सत्कर्म तिनको करै फिर तिनके करनेसे जब अन्तःकरण शुद्धहोजाय तब अन्तरंग शमदमादि साधनोंमें स्थितहो पूर्वोक्त सबकर्मोंको त्यागकरके आत्म ज्ञानकी प्राप्तिकेलिये ब्रह्मनिष्ठ अर्थात् ब्रह्मज्ञानमें तत्पर औ श्रोत्रिय वेदकेअर्थ केजाननेबालाजोदयालुगुरु तिसकाआश्रयणकरै शुश्रूषादिकरकेप्रसन्नकरै ७॥

क्रियाशरीरोद्भवहेतुरादृताप्रियाप्रियौतौभवतःसुरागिणः॥धर्मेतरौतत्रपुनःशरीरकंपुनःक्रियाचक्रवदीर्यतेभवः ८ अज्ञानमेवास्यहिमूलकारणंतद्धानमेवात्रविधौविधीयते॥विद्यैवतन्नाशविधौपटीयसीनकर्मतज्जंसविरोधमीरितम् ९ नाज्ञानहानिर्नचरागसंक्षयोभवेत्ततःकर्मसदोषमुद्भवेत्॥ ततःपुनःसंसृतिरप्यवारितातस्माद्बुधोज्ञानवि

चास्वान्भवेत् १० ननुक्रियावेदमुखेनचोदितायथैवविद्यापुरुषार्थसाधनम् ॥ कर्त्तव्यताप्राणभृतःप्रचोदिताविद्यासहायत्वमुपैतिसापुनः ११ कर्मीकृतोदोषमपिश्रुतिर्जगौतस्मात्सदाकार्यमिदंमुमुक्षुणा॥ ननुस्वतंत्राध्रुवकार्यकारिणीविद्यानकिंचिन्मनसाऽप्यपेक्षते १२ नसत्यकार्योऽपिहियद्वदध्वरःप्रकांक्षतेन्यानपिकारकादिकान् ॥ तथैवविद्याविधितःप्रकाशितैर्विशिष्यतेकर्मभिरेवमुक्तये १३ केचिद्वदंतीतिवितर्कवादिनस्तदप्यसद्दृष्टविरोधकारणात्॥ देहाभिमानादभिवर्द्धतेक्रियाविद्यागताहंकृतितःप्रसिद्ध्यति १४ ॥

अब गुरुही की कृपासे प्राप्तहुआ जो ज्ञान तिससे संसार चक्रसे निवृत्ति होतीहै यहसूचन करनेको संसाररूप चक्र को वर्णन करते हुये श्रीरामकहते हैं कि हेलक्ष्मण आदरपूर्वक अर्थात् प्रीतिपूर्वक पूर्वजन्म में कियाहुआ जो कर्म सो इस शरीरके जन्मका कारणहै फिर तिस जन्म में प्रीतियुक्त अर्थात् विषयों के सेवनकी अभिलाषा करताहुआ जो पुरुष तिसको शास्त्रमें प्रसिद्ध जे धर्मअधर्म सुख दुःखकेउत्पन्नकरनेवालेहोतेहैं अर्थात् धर्मसुखकाकरनेवाला होताहै औ अधर्म दुःख देनेवाला होताहै अथवा अज्ञान के प्रभाव से अन्धदृष्टि पुरुषको कभी अधर्मही में सुखबुद्धिसे प्रवृत्तिहोतीहै औ धर्म में दुःख बुद्धिहोतीहै किसीको कदाचित सुखबुद्धिभी होतीहै इससे धर्माधर्म दोनोंसुख दुःख जनकहोतेहैं यहग्रन्थकारकका आशयहै इसप्रकार विषयोंकी अभिलाषा से इस विद्यमान शरीरमें किया जोपुण्य पापरूपकर्म तिससे फिर शरीर उत्पन्नहोताहै फिर उसशरीरमें भी पूर्व संस्कार वशसे फिर कर्म करताहै इस प्रकार गाड़ीके पहियाकी तरहयह जन्ममरण रूपसंसार चक्रभी वर्णन किया गयाहै अर्थात् जैसे गाड़ीके पहियेका ऊपरला भागकभी नीचे आताहै और नीचेका भागऊपरजाताहै तैसेही इससंसार चक्रमेंभी वर्त्तमानजीवकभी पुण्य वशसे ऊपरके लोकको जाताहै कभी पापकर्मसे नीचे लोकमें ८ और हे लक्ष्मण इससंसारका अज्ञानही मूलकारणहै इससे संसारकी निवृत्तिरूप विधि में अज्ञानकानाशही विधानकिया जाताहै और उस अज्ञानके नाश विधि में विद्याही अर्थात् ज्ञानही समर्थहैऔ कर्म तोअज्ञान के नाशमें नहीं समर्थ है जिससे कर्म अज्ञानसे उत्पन्न हुआहै इससे अज्ञानके नाशमें समर्थ नहीं न कहो वृश्चिककर्कटादि अर्थात् बीछी औ गिंगटा जिससे उत्पन्नहोतेहैं उसीका नाशकरतेहैं तैसे अविद्यासे उत्पन्न हुआभी कर्म अविद्याका नाशकरैगाही इसआशंकाको दूरकरतेहुये कहतेहैं कि (सविरोधमीरितम्)इसकाअर्थयहहैकि

नाशकरने वालापदार्थ विरोध सहित शास्त्रकारोंने कहाहै इसका आशययह है कि जोजिससे उत्पन्नहोय वहउसका नाशकरताहै जैसे वृश्चिकसे उत्पन्न हुआ वृश्चिक अपनीमाताका नाशकरता है यहां नाशमें उत्पत्तिहेतु नहीं है विरोधही हेतुहै अर्थात् जिसका जिससे विरोध है वही उसका नाशकरताहै तो यहां कर्मसे और अज्ञानसे विरोधनहींहै इससे कर्म अज्ञानकानाश नहीं करसक्ता और विद्यातो अज्ञानकी विरोधिनीहै इससे उसके नाशकरनेमें समर्थहै ९ और जिससे कर्मका और अज्ञानका विरोधका अभावहै इससे कर्मसे न अज्ञानका नाशहोताहै और न रागजो विषयप्रीति तिसकानाश होता है और उलटाकर्म करनेसे दोषयुक्त कर्महो उत्पन्नहोता है और फिर तिसकर्मसे जन्ममरणरूप संसार होताहै अर्थात् कर्मसे कभी संसृति निवृत्तनहींहोती है फिर मोक्षकी कौनआशा है इससे हे लक्ष्मण विवेकी पुरुष सदा वेदांत वाक्यों के विचारमें तत्पररहैं १० अब जे कोई आचार्य ऐसाकहते हैं कि ज्ञान कर्म दोनों मिलेहुयेसे मुक्तिहोतीहै केवल ज्ञानसे मुक्तिनहीं होती है तिन समुच्चयवादियों के मतके खण्डनके लिये श्रीरामचन्द्र पहिले तीन श्लोकों करके उनके मतका अनुवाद करतेहैं अबयहां यह आशंका होतीहै कि जैसे विद्याअर्थात् ज्ञान (ब्रह्मविदाप्नोतिपरम्) ब्रह्मका जाननेवाला ब्रह्महीको प्राप्त होताहै इत्यादि वेदमुखसे मोक्षरूप पुरुषार्थका साधनकहा है तैसेही कर्म भी (यावज्जीवमग्निहोत्रंजुहोति) जबतक जीवै तबतक अग्निहोत्र कर्मकरै इत्यादि वेदमुखसे अवश्य करनाचाहिये इसरीतिसे जीवों को कर्म विधान किया गयाहै इससे विद्याकी अर्थात् ज्ञानकी सहायताको प्राप्त होताहै इससे यह सूचित होताहै कि कर्म सहितही विद्या मुक्तिमें उपयोगिनी है औ समुच्चयवादियोंने और भी प्रमाण कहाहै कि श्लोक ॥ (उभाभ्यामेवपक्षाभ्यांयथाखेपक्षिणांगतिः ॥ तथैवज्ञानकर्मभ्यांप्राप्यतेब्रह्मशाश्वतमिति) अर्थ कि जैसे दोनों पंखोंसे पक्षियोंका आकाश में गमनहोताहै ऐसेहीज्ञान औ कर्म इनदोनों से ही सत्यब्रह्म प्राप्तहोताहै ११ औ कर्म के नहीं करनेमें दोषभी वेदने कहा है कि (वीरहावाएष देवानांयोग्निमुद्वासयतइति) वहपुरुष देवताओं के वीर के नाशकरने वालाहोता है जो अग्निहोत्र कुण्डके अग्निको वुझा देता है तिससे मुमुक्षुको अर्थात् मोक्षार्थीपुरुषको सदाकर्म करना चाहिये अब सिद्धांतीही पूर्वपक्षीहोके आशंका करताहै कि मोक्षरूप स्थिरकार्य्यको करने वाली जोविद्यासो अपने कार्य्यके सिद्धकरने में स्वतन्त्रा है अर्थात् सहायके विनाहीसमर्थहै जैसे सूर्य्य अन्धकारके नाशमें किसी सहायकी अपेक्षा नहीं रखते तैसे विद्यामनकरकेभी किसीपदार्थ की अपेक्षानहीं करतीहै १२ अब

फिर समुच्चय वादीकहताहै कि जोतुमने कहा कि विद्यामोक्षरूप परम पुरुषा- र्थ साधन में किसीकर्मादिककी सहायता नहीं चाहतीहै सोतुम्हारा मतठीक नहींहै क्योंकि चातुर्मास्य यज्ञकरने वालेका अक्षय अर्थात् नाशरहित सुकृत होताहै इत्यादि वेदकेप्रमाणसे*स्थिरकार्य्यभीअध्वरहै अर्थात् योगहैपरन्तु और भीकारकोंकी अर्थात् प्रयाजादिअंगोंकीऔरदेशकालादिकोंकी जैसेअपेक्षाकरते हैं तैसेही जबतक जीवै तबतक अग्निहोत्रकरै इत्यादि वेदके विधि वाक्यों से प्रकाशित जे अग्निहोत्रादिकर्म तिनकी सहायताहीसे विद्या मोक्षरूप फलको करसक्तीहै कुछस्वतन्त्रनहीं है १३ अबसिद्धांती यहांतकसमुच्चय वादीकेमतको अनुवादकरके उसका खण्डनकरता है कि हे लक्ष्मण इसप्रकार वितर्कवादी अर्थात् समुच्चय वादीकहतेहैं सो असत् मिथ्याहै क्योंकि सबजगह देखाहुआ जोविरोधतिसकेकारणसे अबउसीविरोधकोकहतेहैं कि देहकेविषे अभिमानसे अर्थात् अनात्म देहादिकोंमें आत्मत्वके अभिमानसे अर्थात् मैंहूं ऐसेअभिमानसे क्रिया वृद्धिको प्राप्तहोतीहै अर्थात् कर्म सिद्धहोताहै और सब देहाभिमाननष्ट होजायतौ विद्यासिद्ध होतीहैअर्थात्ज्ञानउदयको प्राप्तहोताहै ॥ इसका आशय यहहै कि जबअहंकारतौ कर्मकाकारणहुआ औ अहंकार नहींहो मायाज्ञानका कारणहुआ तौदिन रात्रिके तुल्यपरस्पर विरुद्ध ज्ञानकर्म दोनों संगसंग एक किसी पुरुषमें एकसमय में कैसे रहिसक्ते हैं और जोदोनों एकत्रइकट्ठे नहीं रहे तौसमुच्चय कैसे सिद्ध होसक्ताहै क्योंकि समुच्चय उसीसे कहतेहैं कि ज्ञान कर्म दोनों एककालमें किसी एकपुरुषमेंरहैं सोबन नहींसक्ताहै इससेसमुच्चय वादीका मत महा असंगतहै यह सिद्धांतवादीका आशयहै १४ ॥

विशुद्धविज्ञानविरोचनांचिताविद्याऽऽत्मवृत्तिश्चरमेतिभण्यते ॥ उदेतिकर्माखिलकारकादिभिर्निहंतिविद्याखिलकारकादिकम् १५ त स्मात्त्यजेत्कार्यमशेषतःसुधीर्विद्याविरोधान्नसमुच्चयोभवेत् ॥ आत्मा नुसंधानपरायणःसदानिवृत्तसर्वेन्द्रियवृत्तिगोचरः १६ यावच्छरीरा दिषुमाययाऽऽत्मधीस्तावद्विधेयोविधिवादकर्मणाम् ॥ नेतीतिवाक्यैर

* वेदमें प्रयाजअनुयाजादि अंगयागकहेहैं तिनकेविनाकियेदर्श पौर्णमासा दि अंगीबडेयागबननहींहोसकेहैं ऐसेहीदर्शपौर्णमासभी अग्निहोत्रकाअंगहै यह मुण्डकोपनिषद्मेंकहाहै [यस्याग्निहोत्रमदर्शमपौर्णमासमचातुर्मास्यमनाग्र यणमतिथिवर्जितंचअहुतमवैश्वदेवमविधिनाहुत मासप्तमांस्तस्यलोकान्हि नस्तीतिमनसोवृत्तिशून्यस्वब्रह्माकारतयास्थितिः ॥ ग्रासंप्रज्ञातनामासौसमा धिरभिधीयते ॥ इतियोगशास्त्रे ॥

खिलंनिषिद्ध्यततुज्ञात्वापरात्मानमथत्यजेत्क्रियाः १७ यदापरात्मा त्मविभेदभेदकंविज्ञानमात्मन्यवभातिभास्वरम् ॥ तदैवमायाप्रविली यतेऽजसासकारकाकारणमात्मसंसृतेः १८ श्रुतिप्रमाणाभिविनाशि ताचसाकथंभविष्यत्यपिकार्यकारिणी ॥ विज्ञानमात्रादमलद्वितीय तस्तस्मादविद्यानपुनर्भविष्यति १९ यदिस्मनष्टानपुनःप्रसूयतेक र्ताऽहमस्येतिमतिःकथंभवेत् ॥ तस्मात्स्वतंत्रानकिमप्यपेक्षतेविद्या विमोक्षायविभातिकेवला २० सातैत्तिरीयश्रुतिराहसादरंन्यासंप्रश स्ताखिलकर्मणांस्फुटम् ॥ एतावदित्याहचवाजिनांश्रुतिर्ज्ञानंविमो क्षायनकर्मसाधनम् २१

अबजो पूर्व पक्षीने अनुमान कियाथा कि प्रयाजादि अंगयागोंके सहितही दर्श पौर्णमासादि मुख्ययागजैसे होताहै तैसेज्ञानभी कर्मकरके सहितही होताहै तिसका खण्डनकरते हुये श्रीरामचन्द्रजी विद्याका स्वरूपवर्णन करते हैं कि हे लक्ष्मण विशुद्ध निर्मलज्ञानहोताहै जिनसे ऐसेजे वेदांतशास्त्रके वाक्य तिनके विचारकरनेसे प्राप्तहुई जो चरमअन्त्य ब्रह्माकार अन्तःकरणकी वृत्ति उसको विद्या कहते हैं औकर्म जो यज्ञादि सोतो कर्तृ कर्मादि अंगोंकरिकै सहित उत्पन्नहोता है और विद्या तो कर्तृ कर्मादिभेद बुद्धियों को नाशकरती है अर्थात् सबव्यापार को त्याग के ब्रह्म में असंप्रज्ञात समाधिको विद्याकहते हैं इसका यह आशयहै कि विद्याकी प्राप्तिके लिये अन्तःकरण शुद्धके अर्थ तो कर्मकी अपेक्षाहै क्योंकि विना अन्तःकरण शुद्धहुए विद्याकी प्राप्ति दुर्लभ है और जो विद्याकी प्राप्ति होचुकी तो मोक्ष के अर्थ विद्या कर्मकी सहायता नहींचाहती और जो किसी सहायताकी अपेक्षाकरै तो विद्याके स्वरूप हीका नाशहोजाय क्योंकि चरमवृत्तिको विद्याकहतेहैं और जो विरुद्धवृत्तिहो तो वह चरमवृत्ति कैसे होसक्तीहै और जो कर्मका कारणभी अहंकारही नहीं रहा तो उस अवस्थामें कर्मकासंभवही कहां है जिसकी अपेक्षाहोय इससे प्रयाजादि यागका दृष्टान्तभी कर्महीमें संभवहोता है ज्ञानमें नहीं फिर पूर्व पक्षीका अनुमानभी कैसे संभवहोता है इससे विद्याकी स्वतन्त्रता में सूर्य तिमिरहीका दृष्टान्तठीकहै १५ और हेलक्ष्मण जिससे विद्या औ कर्म इनके विरोधते समुच्चय नहींबनसक्ता तिसकारण से ज्ञानी संपूर्ण कर्मको त्यागदेय औ सबइन्द्रियोंके विषयों से निवृत्तहो सच्चिदानंद स्वरूप परमात्माके ध्यान में परायणरहै १६ अब अधिकारीके भेदसे कर्मके करनेनहीं करनेकीव्यवस्था को कहतेहैं कि हेलक्ष्मण जबतक मायाकरके अर्थात् अविद्यावशसे शरीरादि-

[illegible]आत्मबुद्धि प्रतीयमानहोवै अर्थात् मैंकर्त्ताहौं ऐसाजानै तबतक वेदविहितजे [illegible]कर्म तिनको अन्तःकरणकी शुद्धिकेलियेकरै और अन्तःकरण शुद्धिकेअनन्तर [illegible]निसे परे अपने स्वरूपको जानके नेतिनेति इत्यादिवाक्यों से सबजगत्का निश्चयकरके अर्थात् स्वप्नवत् मिथ्या है ऐसा निर्णयकरके अहंकारके अभावसे सबकर्मोंकोत्यागदेवे १७ अबआत्मज्ञानकेहुये पीछेअविद्याअवश्यनिवृत्तिहोती है यह प्रतिपादनकरतेहैं हेलक्ष्मण जिसअवस्थामें शुद्धअन्तःकरणबिषेईश औ जीवइनदोनोंकीभेदकरानेवाली जोमाया औअन्तःकरणरूप दोउपाधीतिनका नाशकरनेवाला प्रकाश स्वभाव विज्ञान अर्थात् सबवृत्तियोंके मर्दनकरनेवाली ब्रह्माकार अखण्डवृत्ति प्रकाशकरती है तब जन्मान्तरप्रापक कर्मों के सहित अपनी संसृतिका कारण जो माया अर्थात् जीवोपाधिभूत अविद्या सोसाक्षात् विलयको प्राप्तहोतीहै १८ औ हेलक्ष्मण श्रुतियों के प्रमाणसे अर्थात् (तत्त्वमस्यादि) महावाक्योंके ज्ञानसे विनाशको प्राप्तहुई जो वहअविद्या सो कैसे भी फिर बन्धनरूप कार्य के करनेवाली होती है अर्थात् कैसेभी नहीं होसक्ती क्योंकि जिससे शुद्ध अद्वितीय आत्म विषयज्ञानसे नष्टहुई है इससे फिर नहीं उदयको प्राप्तहोनेवाली होती है १९ औ हेलक्ष्मण जो नष्टहुई अविद्या फिर नहीं उत्पन्नहोती है तब कारणके अभावसे कर्मकरनेको अहंकर्त्ता ऐसी बुद्धिही कैसे उत्पन्नहोतीहै अर्थात् नहींहोतीहै फिर अहंमतिके अभावसे कर्मकाभी अभावहुआ तिसकर्मके अभावसे उससमयमें स्वतन्त्रविद्या मोक्षकेअर्थ किसीकी अपेक्षा नहींकरती किन्तु केवल आपही प्रकाश करती है २० और हे लक्ष्मण सो प्रसिद्ध तैत्तिरीय आरण्यकी श्रुति आदरपूर्वक संपूर्णप्रशस्तकर्मोंके त्यागको स्पष्टकहती है कि [नकर्मणानप्रजयाधनेनत्यागेनैकेनामृतत्वमानशुःपरेणनाकंनिहितं गुहायांविभ्राजतेयद्यतयोविशन्तीति] तै० आ० प्र १० अ १० ॥ अर्थ ॥ अग्निहोत्रादिकर्म करके औ संतानकरके औ धन करके मोक्ष प्राप्त नहींहोताहै किन्तु सबलौकिक वैदिक कर्मोंके त्यागहीकरके कोई अन्तर्मुख पुरुष अमृतत्व जो मोक्षतिसको प्राप्तहोते हैं जिस अमृतत्वमें इन्द्रियोंके वशकरनेवाले संन्यासीलोग प्रवेशकरते हैं और वहअमृतत्व स्वर्गसेभी उत्कृष्टहै और जो अपनी एकाग्रबुद्धिरूप गुहामें स्थितहै और जो तत्त्व प्रकाशमान और अन्तर्मुख पुरुषों करकेही जानाजाता है औ यह श्रुति कर्म समुच्चयको नहींकहती है और [एतावदरेखल्वमृतत्वम्] इत्यादि वाजसनेयि शाखावालेकी श्रुतिभीज्ञानही मोक्षका साधनहै कर्म नहीं यहकहतीहै २१ ॥

विद्यासमत्वेननुदर्शितस्त्वयाक्रतुर्नदृष्टांतउदाहृतःसमः॥फलैःपृथक्त्वाद्बहुकारकैःक्रतुःसंसाध्यतेज्ञानमतोविपर्ययम् २२सप्रत्यवायो

ह्यहमित्यनात्मधीरज्ञप्रसिद्धानतुतत्त्वदर्शिनः॥ तस्माद्बुधैस्त्याज्यम
पिक्रियात्मभिर्विधानतःकर्मविधिप्रकाशितम् २३ श्रद्धान्वितस्तत्त्वम
सीतिवाक्यतोगुरोःप्रसादादपिशुद्धमानसः॥ विज्ञायचैकात्म्यमथात्म
जीवयोःसुखीभवेन्मेरुरिवाप्रकंपनः २४ आदौपदार्थावगतिर्हिकार
णंवाक्यार्थविज्ञानविधौविधानतः॥ तत्त्वंपदार्थौपरमात्मजीवकावसी
तिचैकात्म्यमथानयोर्भवेत् २५ प्रत्यक्परोक्षादिविरोधमात्मनोर्विहा
यसंगृह्यतयोश्चिदात्मताम्॥ संशोधितांलक्षणयाचलक्षितांज्ञात्वा
स्वमात्मानमथाद्वयोभवेत् २६ एकात्मकत्वाज्जहतीनसंभवेतथाऽज
हल्लक्षणताविरोधतः॥ सोऽयंपदार्थाविवभागलक्षणायुज्येततत्त्वंप
दयोरदोषतः २७ रसादिपंचीकृतभूतसंभवंभोगालयंदुःखसुखा
दिकर्मणाम्॥ शरीरमाद्यंतवदादिकर्मजंमायामयंस्थूलमुपाधि
मात्मनः २८॥

अब श्री समुच्चयवादी से कहते हैं कि हे समुच्चयवादिन् जो तुम ने विद्या के समान यज्ञ दिखाया परन्तु उसमें कोई सम दृष्टान्त नहीं कहा इससे तुम्हारा कथन ठीक नहीं क्योंकि यज्ञ तौ फलों के भेद से औ बहुतसे कर्तृ कर्मादि कारकों करके औ बाह्य देशकालादि नियमों करके सिद्ध कियाजाता है औ ज्ञानमें तौ कर्तृत्वादि बुद्धिकात्याग होताहै इससे कर्म से बिपरीतही है फिर साम्य कैसे बनसक्ता है औ बिना साम्यके समुच्चय कहां २२ और इस कर्म के त्याग में मैं निश्चयकरके प्रायश्चित्ती होऊंगा ऐसी जो अनात्म धर्म सम्बन्धिनी बुद्धि सो आत्मज्ञान रहित मूर्खही को होती है तत्त्वदर्शीको नहीं होती है तिससे फलमें आसक्त है चित्त जिनका ऐसे पुरुषोंको इसरीति से करना चाहिये इसप्रकारसे आवश्यकत्व करके शास्त्र बोधितभी कर्म है परन्तु आत्मानात्म विवेकपूर्वक तत्त्वदर्शी जे पुरुष हैं तिनको त्याज्यही है अर्थात् त्याग करिबे योग्यहीहै २३ औ निष्काम कर्मके करनेसे शुद्धहुआ अन्तःकरण जिसका ऐसा जो गुरुशास्त्र में विश्वासयुक्त पुरुष सो गुरूके प्रसाद से प्राप्त जो तत्त्वमस्यादि महावाक्य तिनके मननादिक करके जीव ईश्वरके ऐकात्म्य को जानके सुमेरु पर्वतके तुल्य कम्पा रहितहो अर्थात् विषयाभिलाषसे नहीं चलायमान हुआहै चित्त जिसका ऐसाहोके सुखीहोताहै २४ अब महावाक्य के अर्थ का विचार करनेको वाक्यके पदोंका अर्थ क्रमसे कहते हैं हे लक्ष्मण भ्रम औ प्रमाद इनके नहीं होने से वाक्यार्थ ज्ञानकी उत्पत्ति में प्रथम तौ

पदार्थ ज्ञानही कारण है तिस महावाक्य में तीनपद हैं (तत्त्वमसि) तहां सर्वज्ञत्वादि गुण विशिष्ट परमात्मातत्पद का अर्थ है औ अल्पज्ञत्वादि विशिष्ट जीवत्वंपदका अर्थ है और इन दोनों तत्त्वंपदों का अभेदबोधकअसि पदहै २५ फिर अहंबुद्धि करके जाननेयोग्य जो प्रत्यक्त्व अर्थात् अनेक पदार्थोंको अपना मानना सो जीव धर्म है और परोक्षत्व अर्थात् इन्द्रियोंका प्रत्यक्षन होना यह ईश्वरधर्म है तिन दोनों धर्मोंको आदि लेके औरभी धर्मोंकरकेकिया जो जीव और परमात्माका विरोध तिसको त्यागकरके तिन दोनोंपदोंको सम्यक्प्रकार से शोधनकीगई अर्थात् अनेक युक्तियों करके सम्यक् विचार करी औ भाग-त्याग लक्षणाके लक्षिता अर्थात् ज्ञात जो चिद्रूपता तिसको संग्रहकरके अर्थात् तत्त्वंपद से यह उपस्थित है ऐसा निश्चय से अपने स्वरूपको जानके द्वैत भाव से रहित होय अर्थात् चिद्रूपता को प्राप्तकी नाईं होय इसका आशय यहहै कि तत्पदके औ त्वं पद के दो अर्थ हैं एकवाच्य और एकलक्ष्य तिसमें तत्पदका वाच्य अर्थ तो मायोपाधिक सर्वज्ञत्वादि विशिष्टचैतन्य औ उपाधि रहित शुद्धचैतन्य लक्ष्यअर्थ है ऐसेही त्वंपदका वाच्य अर्थ तो माया कार्य्य अविद्योपाधिक अल्पज्ञत्वादि विशिष्ट चैतन्य औ उपाधि रहित शुद्धचैतन्य लक्ष्य अर्थ है तहां वाच्य अर्थोंका तो विरुद्ध अर्थ होने से सामानाधिकरण्य अर्थात् एकताहो नहीं सक्ती क्योंकि जो सर्वज्ञहै सो अल्पज्ञ नहींहोसक्ता और जो अल्पज्ञहै सो सर्वज्ञ नहीं होसक्ता औ शुद्धचैतन्य जो दोनोंका लक्ष्यअर्थ है तिन्होंकी एकता में कुछबाध नहीं इससे लक्ष्यार्थोंहीकी एकता होती है २६ अब श्रीराम लक्षणाका स्वरूप वर्णन करते हैं कि हे लक्ष्मण लक्षणा तीनि प्रकारकी होती हैं एक तो जहल्लक्षणा दूसरी अजहल्लक्षणा तीसरी जहद-जहल्लक्षणा तहां जहल्लक्षणा उसको कहते हैं जहां सम्पूर्ण वाच्य अर्थ का त्यागहोय जैसे (गंगायांघोषः) अर्थात् गंगामें अहीरों का गृह है यह कहने में गंगाशब्दका वाच्य जो प्रवाहरूप अर्थ तिसमें अहीरका घर नहीं सम्भवहोता है इससे गंगाशब्द की तटमें लक्षणा कीजाती है अर्थात् गंगाशब्दसे तटका बोध होताहै तो गंगातट में अहीरका घरहै ऐसे अर्थ होनेमें कोई दोष न हुआ परन्तु यहां गंगाशब्द का प्रवाहरूप वाच्यअर्थ कुछभी नहीं प्रतीत होता है उसका त्यागहोके तटहीका ग्रहण होताहै तैसे [तत्त्वमसि] यहां जहल्लक्षणा नहीं सम्भव होती क्योंकि तत्पद त्वं पद के अर्थोंकी एकता विवक्षित है सो जहल्लक्षणा माननेमें चैतन्यकेभी त्याग से एकता किसके साथ होगी और जिस में वाच्य अर्थका त्याग न होय और अधिकका संग्रहहोय उसको अज-हल्लक्षणाकहतेहैं जैसे (काकेभ्योदधिरक्षताम्) यहांकौवोंसे दधिकी रक्षाकरौ

इसवाक्य के कहने में यहअर्थ प्रतीत होताहै कि कौओं से दधिकी रक्षाकरो औ उसके उपघात अर्थात् नाशकरनेवाले जे मार्जारादिक तिन्होंसेभी रक्षा करो तो यहां काकपदकेअर्थ का त्याग नहींहुआ और उस दहीके नाश करने वाले मार्जारादि अर्थात् बिल्ली आदिकोंकाभी लक्षणासे ग्रहणहुआ सो इस अजहल्लक्षणाकाभी यहां (तत्त्वमसि) इसवाक्यमें ग्रहणका सम्भव नहींहोता क्योंकि जब तत्पद औ त्वं पदका सर्वज्ञत्व अल्पज्ञत्वादिरूप वाच्य अर्थका त्याग न हुआ तो बिरोध ज्योंकात्योंही बनारहा तिससे दोष नहीं होने से तत्पदार्थ औ इदं पदार्थों के सदृश तत्पदार्थ औ त्वं पदार्थ की भागत्याग लक्षणाही युक्त है इसका आशय यहहै कि जहां विशेषणांशका तौ त्याग होय औ विशेष्यअंशका ग्रहणहोय उसको जहदजहल्लक्षणा कहते हैं उसी का नाम भागत्याग लक्षणाभी है जैसे [सोयं देवदत्तः] अर्थात् सो यह देवदत्त है इसवाक्य में किसी देश में स्थितकवच कुण्डलादि धारणकरे पुष्ट शरीरवान् देवदत्त पहिले समय में जो देखाथा सो (सोयं हिंआं सः) इस का वाच्यअर्थ हुआ और अबइस देशमें स्थितकवच कुण्डलरहित कृशशरीर देवदत्त अयंइसका वाच्यअर्थ है तौपहिले जैसा देखाथा तैसा अब नहीं है इसप्रकार बिशेषणका परस्परभेद स्पष्टप्रतीत होताहै और वही देवदत्तहै कोई और नहींहै यह अभेदभी इसवाक्यसे प्रतीतहोताहै तौइस विरोधका परिहार तभी होसक्ता है जबदोनों जगहके विशेषणोंको त्यागदियाजावे और विशेष्य देवदत्तके मांस पिण्डमात्रका ग्रहणहोय तौइस लक्षणा में पहिले देशके कवच कुण्डलादि विशिष्टपुष्टत्वादि धर्मका और इसदेशसहित कृशत्वादि धर्म का तौ त्यागहुआ और देवदत्तमात्रका ग्रहणहुआ तौ यह जहदजहल्लक्षणा हुई और इसीसे अभेद सिद्धहुआ तैसेही (तत्त्वमसि) इसवाक्यमेंभी तच्छब्दके अर्थ में तौ मायोपाधिक सर्वज्ञत्वादि धर्मका त्यागहुआ औ त्वंशब्द के अर्थमें अविद्योपाधिक अल्पज्ञत्वादि धर्मका त्यागहुआ फिर तिसके अनन्तर दोनों जगह के शुद्ध चैतन्यकी एकता सिद्ध होती है + २७ औ हे लक्ष्मण पंचीकृत भूमिआदि महाभूतोंसे जो उत्पन्नहुआ औ सुखदुःखादिकों के कारण भूत जे पुण्यपापादिकर्म तिन्हों के भोगका एक आलय मन्दिर औ उत्पत्ति विनाश धर्मयुक्त औ प्राचीन कर्म से जो प्रकटहुआ ऐसा जो मायामय यह शरीर तिसको आत्माका स्थूल उपाधि कहते हैं और पंचीकरणका प्रकार यहहै कि पृथिव्यादि महाभूतोंमें एकएकके दोदोभाग किये तिसमें भी एकएकभाग के चारचारभाग किये फिर वह सबोंका आठवाँ आठवाँ भाग सबोंके अर्द्धअर्द्ध भागमें मिलायागया तौ सब पृथिव्यादिकों में आधाआधाभाग तौ अपनाहुआ

और आठवाँ आठवाँ भाग उन चारोंका आके मिला तौ एकएकमें जो पांचों के मिलने को पंचीकरण कहते हैं तिसमें अपने अपने भागके अधिक होनेसे पृथिव्यादि व्यवहार भी बनारहा २८ ॥

सूक्ष्मंमनोबुद्धिदशेंद्रियैर्युतंप्राणैरपञ्चीकृतभूतसंभवम् ॥ भोक्तुःसुखादेरनुसाधनंभवेच्छरीरमन्यद्विदुरात्मनोबुधाः २९ अनाद्यनिर्वाच्यमपीहकारणंमायाप्रधानंतुपरंशरीरकम् ॥ उपाधिभेदात्तुयतःपृथक्स्थितंस्वात्मानमात्मन्यवधारयेत्क्रमात् ३० कोशेष्वयंतेषुतुतत्तदाकृतिर्विभातिसंगात्स्फटिकोपलोयथा ॥ असंगरूपोऽयमजोऽद्वितीयोविज्ञायतेऽस्मिन्परितोविचारिते ३१ बुद्धेस्त्रिधावृत्तिरपीहदृश्यतेस्वप्नादिभेदेनगुणत्रयात्मनः ॥ अन्योऽन्यतोऽस्मिन्व्यभिचारितोमृषानित्येपरेब्रह्मणिकेवलेशिवे ३२ देहेंद्रियप्राणमनश्चिदात्मनांसंघादजस्रंपरिवर्त्ततेधियः ॥ वृत्तिस्तमोमूलतयाऽज्ञलक्षणायावद्भवेत्तावदसौभवोद्भवः ३३ नेतिप्रमाणेननिराकृताखिलोहृदासमास्वादितचिद्घनामृतः॥त्यजेदशेषंजगदात्तसद्रसंपीत्वायथांभःप्रजहातितत्फलम्३४कदाचिदात्मानमृतोनजायतेनक्षीयतेनापिविवर्द्धतेनवः ॥ निरस्तसर्वातिशयःसुखात्मकः स्वयंप्रभःसर्वगतोऽयमद्वयः ३५ ॥

औ हे लक्ष्मण जो शरीर सूक्ष्महै अर्थात् चक्षुरादि इन्द्रियों के अगोचर है औ मन औ बुद्धि औ पांच ज्ञानेन्द्रिय औ पांच कर्मेन्द्रिय औ पांच प्राण इन्हों करके युक्त औ अपंचीकृत महाभूतोंसे उत्पन्नहुआ औ भोक्ता जो जीव तिसको सुखदुःखादि के जाननेमें जो साधनहै अर्थात् इसीके भीतर प्रविष्ट होने से स्थूल शरीर भी भोगसाधन होसक्ताहै इसकेवियोगमें तौ फिर मरणहीहोताहै ऐसा जो स्थूलसे अन्य सूक्ष्मशरीर तिसको आत्माका लिंगोपाधिकहते हैं २९ इसप्रकार स्थूल सूक्ष्मभेदसे जीवकी दोउपाधी कहिके अब ईश्वरकी उपाधि को कहते हैं कि हे लक्ष्मण जो अनादि अर्थात् उत्पत्ति रहितहै और जो सत् असत्रूपकरके कहनेको अशक्यहै और जो कारणरूप है अर्थात् सब प्रपंचके रचनेवाली माया उसको उत्कृष्ट प्रधान शरीर कहते हैं औ इसप्रकारसे एकही चैतन्य उपाधि भेदकरके जीव ईश्वर भेदकरके पृथक् स्थित होरहाहै अर्थात् स्थूल सूक्ष्मोपाधिजीव औ कारणोपाधि ईश्वरहै इससे उपाधिका परित्याग करके श्रवण मननादि क्रमकरके अपने आत्माही में आत्माका निश्चयकरै अर्थात् आत्माको जानै ३० औ हे लक्ष्मण जैसे निर्मल भी स्फटिक मणि

जपाकुसुमादि संगते तैसा तैसा रक्तरूपादि प्रतीत होता है तैसे अन्नमयादि पांचकोशों में आत्माभी आसक्तिबशते तैसाही तैसा प्रतीत होताहै औ महावाक्यार्थका सम्यक् अर्थात् अच्छे प्रकारसे विचार करने से तौ अन्नमयादि कोशोंसे न्यारा असंग अज अव्यय द्वैतभावरहित प्रकाशित यह आत्माप्रतीत होताहै ३१ और जो इस आत्मामें जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति भेदसे तीनप्रकारकी वृत्ति दिखाई पड़ती है सो भी सत्त्व रजस्तमोगुण त्रयात्मा अर्थात् गुण त्रय स्वरूप जो बुद्धि तिसीका धर्म है जाग्रदादि तीनों अवस्थाओं का साक्षी जो आत्मा तिस में तीनों अवस्थाओंका जो भानहै सो झूंठा जोबुद्धिका अध्यास अर्थात् ऐक्यभ्रम तिसकेकारणसे वास्तव नहीं है क्योंकि इन तीनों अवस्थाओंका परस्पर व्यभिचारसे अर्थात् स्वप्न अवस्थामें जाग्रत सुषुप्ति के अभावसे औ जाग्रत अवस्थामें स्वप्न सुषुप्ति के अभावसे औ सुषुप्ति में जाग्रत स्वप्नके अभावसे तीनोंअवस्थाओं को स्वरूपसे मिथ्यात्व होने से उनकी प्रतति को मिथ्यात्व है अर्थात् झूंठापना है औ नित्य अर्थात् उत्पत्ति विनाश रहित औ तीनोंगुणोंसे परे औ व्यापक ऐसा असंगजो आनन्दरूप ब्रह्मतिसमें परस्पर व्यभिचारी धर्म कहांसंभव होसक्ते हैं ३२ अब त्याग करनेकेलिये संसार की मूलभूत प्रवृत्तीको कहतेहैं कि हेलक्ष्मण जबतक अज्ञानके कारणसे देहइंद्रिय प्राण मन चिदाभास बनके संगते समूहते अज्ञताके जताने वाली रजस्तमः प्रधान अर्थात् रजोगुण तमोगुणहै प्रधानजिसमें ऐसीबुद्धिकी वृत्तिहुआकरती है तबतक संसारकी उत्पत्तिभीहोती है अर्थात् तबतक जन्ममरणरूप संसृति निवृत्तनहीं होती ३३ अब जिसने महावाक्यका बिचार किया है उसज्ञानीको क्या करनाचाहिये तिसको कहतेहैं कि हेलक्ष्मण नेति नेति इस वेदकेप्रमाण करके खंडनाकिया है अर्थात् झूंठा जानलिया है सब जगत् जिस ने फिर सत्त्व प्रधान मन करके आस्वादन अनुभव किया है संसार दुःखों से रहित चैतन्य घन अमृत रूप सुख जिसने ऐसा जो ज्ञानी है सो संपूर्ण जगत् को त्याग देय न कहो जिस देहेन्द्रियादि द्वारा ज्ञानका लाभहुआहै उसका त्याग कैसे उचितहै यह आशंकाकरके दृष्टांतसे उसशंकाको निवृत्त करतेहैं कि जैसे कोई तृषायुक्त पुरुष ग्रहणाकिया अर्थात् खैंचलियाहै संपूर्ण माधुर्यरस जिसने ऐसा जो नारिकेल अर्थात् नारियल नारंगीआदि फलोंकाजल तिसको पीकै फिर नीरसफलको त्यागदेताहै अर्थात् फिर तिसकी इच्छा नहीं करताहै ऐसे ही सब जगत्का सारांश ब्रह्मसुख तिसको प्राप्तहो निस्सार जो दृश्य जगत् तिसको न ग्रहण करनेयोग्य देखता न त्यागकरनेयोग्य क्योंकि जबतकभय की संभावनाहोती तभीतक हेयत्व बुद्धि रहती है भय निवृत्तिके अनन्तर तौ

उदासीनही होजाती है ३४ और हे लक्ष्मणकभी यहआत्मामरतानहीं औरन कभी उत्पन्नहोय और न कभी क्षीणहोताहै अर्थात्घटतानहीं और न कभीवृद्धि कोप्राप्तहोय और नवीन नहींहै अबयहां नवीन नहींहै इस कहनेसे उत्पत्तिके अनन्तरएकअस्तित्वरूप विकारहोताहै उसकाभी निषेधकिया अर्थात् उत्पत्ति होकर जो होना वहविकारहोता है सोआत्मामेंनहींहै और यहभीसूचन किया कि जो नवीन नहींहै तो वृद्धभी नहीं है क्योंकि जो नवीन हुआ वोहीपुराना होसकाहै इससे और अवस्थाहीको नहीं प्राप्तहोनेसेरूपान्तरा पत्तिरूपपरिणाम विकारभी आत्मामें नहीं है अब यहांजो वेदांत शास्त्रों में उत्पन्नहोना १ औ होकरके रहना २ औ रूपका बदलना ३ औ बढ़ना ४ औ घटना ५ औ नाश होना ६ ये छः विकारकहेहैं ते आत्मा में नहींहै औ इससे भिन्न संपूर्णदेहादि इन विकारोंकरिकै युक्तहै इससे देहादिकोंसे विरक्तहोय यह सूचनकिया अब यह प्रतिपादन करतेहैं कि जिससे आत्माविकार रहित है इसीसे दूरकरा है देह इन्द्रियादिकों का महत्त्व जिसने अपनेआत्मलाभसे ऐसा है औ आनन्द स्वरूपहै औ स्वयंप्रकाशहै औ सर्वव्यापकहै औ यह मैं हौं ऐसीबुद्धि का विषय जो प्रत्यगात्मा जीव है सोभी ब्रह्मरूपही है तिससे न्यारा नहीं है क्योंकि [अयमात्माब्रह्मेतिश्रुतेः]यहसमीपवर्ती आत्माब्रह्महैइसश्रुतिके प्रमाणसे३५॥

एवंविधेज्ञानमयेसुखात्मकेकथंभवोदुःखमयःप्रतीयते ॥ अज्ञानतोऽध्यासवशात्प्रकाशतेज्ञानेविलीयेतविरोधतःक्षणात् ३६ यदन्यदन्यत्रविभाव्यतेभ्रमादध्यासमित्याहुरमुंविपश्चितः ॥ असर्पभूतेहिविभावनंयथारज्ज्वादिकेतद्वदपीश्वरेजगत् ३७ विकल्पमायारहितेचिदात्मकेऽहंकारएषःप्रथमःप्रकल्पितः ॥ अध्यासएवात्मनिसर्वकारणेनिरामयेब्रह्मणिकेवलेपरे ३८ इच्छादिरागादिसुखादिधर्मिकाःसदाधियःसंसृतिहेतवःपरे ॥ यस्मात्प्रसुप्तौतदभावतःपरःसुखस्वरूपेणविभाव्यतेहिनः ३९ अनाद्यविद्योद्भवबुद्धिबिंबितोजीवःप्रकाशोऽयमितीर्यतेचितः ॥ आत्माधियःसाक्षितयापृथक्स्थितोबुद्ध्यापरिच्छिन्नपरःसएवहि ४० चिद्बिम्बसाक्षात्मधियांप्रसंगतस्त्वेकत्रवासादनलाक्तलोहवत् ॥ अन्योऽन्यमध्यासवशात्प्रतीयतेजडाजडत्वंचचिदात्मचेतसोः ४१ गुरोःसकाशादपिवेदवाक्यतःसंजातविद्यानुभवोनिरीक्षितम् ॥ स्वात्मानमात्मस्थमुपाधिवर्जितंत्यजेदशेषंजडमात्मगोचरम् ४२ ॥

कदाचित् कोई कहै ऐसा ज्ञानमय सुखस्वरूप जो आत्मा तिसमें दुःखमय संसार कैसे प्रतीत होताहै तिसपै कहतेहैं कि अज्ञानमूलक जो अध्यास अर्थात् देह और अन्तःकरणाबिषे यहमैंहूं और यह मेराहै ऐसी भ्रमयुक्त बुद्धि तिसकरके प्रतीतहोताहै सो ज्ञानके प्रकट होतेही विरोधके कारणसे क्षणमात्र में लीनहोजाताहै क्योंकि ज्ञानअज्ञानका विरोधीहै इसकारणसे ज्ञानके उदय समयमेंही अज्ञानके नाशसे उसका कार्य जो संसार सोभी रज्जुज्ञानमें रज्जु सर्पके सदृश लयको प्राप्तहोता है ३६ औ हेलक्ष्मण जो और में और बस्तु जहां जहां भ्रम से प्रतीतहोय उसीको ज्ञानीलोग अध्यासकहते हैं जैसे रज्जु सर्परूप नहींहै और उसमें सर्पकी प्रतीति अज्ञानसे होती है ऐसेही ईश्वरमें भी जगत् अज्ञानजनित भ्रमहीसे प्रतीतहोरहा है ३७ औ हेलक्ष्मण वास्तव सेतौ सर्व विकल्पमायाके संगसेरहित चिद्रूप सर्वकारण औ दुःख स्पर्शरहित आनन्दमय औ सबविकारोंसे रहित जो व्यापकआत्मा तिसमें प्रथमअहंकार जो कल्पना कियागयाहै वही अध्यास है अर्थात् अहंबुद्धिरूप अहंकारही संसारका कारण है ३८ औ हे लक्ष्मण सबका साक्षी जो आत्मा तिसके बिषे इच्छा औ उपेक्षा औ राग द्वेष औ सुख दुःखआदि द्वन्द्वहीधर्म जिन्हों के ऐसी जो बुद्धिवृत्तितेही सदा संसृतिका कारणहै क्योंकि जिसहेतुसे सुषुप्तिअवस्था में बुद्धिकी वृत्तियोंके अभावसे अर्थात् नहींहोने से पर जो आत्माहै सो सुख रूपकरके हमसबको प्रतीतहोता है निश्चयकरके जानाजाताहै और संसारी रूपसे नहीं प्रतीतहोता है क्योंकि जब सोइकरके पुरुष उठता है तो उसको ऐसा स्मरणहोता है कि आजु मैं सुखपूर्बक ऐसासोया मैंने कुछनहीं जाना तो इससे यह निश्चयहोताहै कि केवल आत्माही का उसअवस्थामें अनुभव होताहै इससे यहां अन्वयव्यतिरेकसे बुद्धिही में संसार रहताहै आत्मामें नहीं है यह सिद्धहुआ ३९ अब फिर त्वंपदार्थ का स्वरूप कहते हैं कि हे लक्ष्मण अनादि जो अविद्या तिससे उत्पन्नहुआ जो अन्तःकरण तिसमें प्रतिविम्बको प्राप्तहुआ जो चैतन्यका प्रकाश सो जीव कहाता है और आत्मातो बुद्धिका साक्षी रूपसेन्याराही स्थितहै औ बुद्धिके परिच्छेदसे रहित है सो जब ज्ञानकरके बुद्धिरूप अन्तःकरणकालयहोताहैतो उपाधिके अभावसे प्रतिविम्बके नहींहो ने से सोजीव प्रसिद्ध परमात्मरूपहीहोताहै ४० और हेलक्ष्मण चिदात्मा अर्थात् चैतन्यरूप आत्मा और बुद्धि इनका जो परस्पर अध्यास अर्थात् परस्पर तदात्म्यारोप बुद्धिको चित्तरूप मानना औ चिद्रूप आत्माको बुद्धिमानना तिससे जडाजडत्व प्रतीतहोता है अर्थात् वास्तवमें जड जो बुद्धि है तिसमें चिद्रूपज्ञानकी प्रतीत होती है और चिद्रूप आत्मामें जड़त्वकी प्रतीत होती है

इसीसे तार्किकलोग ज्ञानाश्रय आत्माको मानते हैं सो अध्यास चिदाभास और इन्द्रियोंकरके सहित मन औ अन्तःकरण इनके परस्पर सन्निकर्ष से अर्थात् समीप होनेसे प्रतीत होताहै जैसे अग्नि में तप्त जो लोहपिण्ड तिसमें अग्निका पृथक् विभाग नहीं होनेसे प्रकाशदाहादि अग्निकाधर्म प्रतीत होताहै औ गुलाई औ चौखूंटापना लोहका धर्म अग्निमें प्रतीतहोताहै तैसेही आत्मा औ बुद्धि इनके भी परस्पर धर्म प्रतीत होते हैं ४१ इससे गुरुके सकाशसे प्राप्त हुआ जो वेद वाक्यका श्रवण तिससे प्राप्तहुआहै मननपूर्वक विद्याकानिदिध्यासन आत्माकारवृत्ति जिसको ऐसा जो पुरुष सो अपने आत्माही में स्थित उपाधिरहित अपने आत्माको देखके अर्थात् साक्षात्कार करके भ्रान्ति करके प्रतीत हुआ रहा जो आत्मामें सम्पूर्ण जड़वर्ग अर्थात् दृश्यवर्ग तिसको त्यागदेय ४२॥

प्रकाशरूपोऽहमजोऽहमद्वयोसकृद्विभातोऽहमतीवनिर्मलः ॥ विशुद्धविज्ञानघनोनिरामयःसंपूर्णआनन्दमयोऽहमक्रियः ४३ सदैवमुक्तोऽहमचिंत्यशक्तिमानतींद्रियज्ञानमविक्रियात्मकः ॥ अनंतपारोऽहमहर्निशंबुधैर्विभावितोऽहंहृदिवेदवादिभिः ४४ एवंसदात्मानमखंडितात्मनाविचारमाणस्यविशुद्धभावना ॥ हन्यादविद्यामचिरेणकारकैरसायनंयद्वदुपासितंरुजः ४५ विविक्तआसीनउपारतेंद्रियोविनिर्जितात्माविमलांतराशयः ॥ विभावयेदेकमनन्यसाधनोविज्ञानदृक्केवलआत्मसंस्थितः ४६ विश्वंयदेतत्परमात्मदर्शनंविलापयेदात्मनिसर्वकारणे ॥ पूर्णश्चिदानन्दमयोवतिष्ठतेनवेदबाह्यन्नचकिंचिदान्तरम् ४७ पूर्वंसमाधेरखिलंविचिन्तयेदोंकारमात्रंसचराचरंजगत् ॥ तदेववाच्यंप्रणवोहिवाचकोविभाव्यतेज्ञानवशान्नबोधतः४८अकारसंज्ञःपुरुषोहिविश्वकोह्युकारकस्तैजसईर्य्यतेक्रमात् ॥ प्राज्ञोमकारःपरिपठ्यतेखिलैःसमाधिपूर्वंनतुतत्त्वतोभवेत् ४९ ॥

अब निरुपाधिक आत्मस्वरूपका वर्णन दोश्लोककरके करते हैं हेलक्ष्मण ज्ञानी ऐसी भावना करै कि मैं प्रकाशस्वरूपहौं अर्थात् मेराही सर्वत्र प्रकाश है औ मैं किसी करके प्रकाशित नहींहौं औ मैं जन्मादि विकार रहितहौं औ अद्वयहौं सजातीय विजातीय स्वगतभेद रहितहौं औ मैं असकृत् विभात हौं

१ तहां सजातीय भेदतौ जैसे ब्राह्मणसेब्राह्मणका भेद शुक्लत्रिपाठी इत्यादि प्रकारका और विजातीय भेद ब्राह्मणका क्षत्रियादिकोंसे औ स्वगतभेदहस्तपादादि अंगोंसे अपनासो ब्रह्ममें कोईनहीं है ॥

जो वस्तु कभी दीपक सूर्यादिसे प्रकाशितहोय उसको सद्भाविभात कहते हैं मैं तो तैसा नहींहौं किंतु सूर्यादिकोंकाभी सदाप्रकाशकरनेवालाहौं इसीसे (नतत्रसूर्योभातिनचन्द्रतारकम्) तिसपरमात्मामें सूर्य नहीं प्रकाश करसक्ताहै और न चन्द्र तारकादि प्रकाशकरसक्तेहैं ऐसाश्रुति में कहाहै औ मैं अत्यन्त निर्मल हौं अर्थात् मायाका किया हुआ आवरण विक्षेपादि मल रहित हौं औ विशुद्ध चिद्रूप एक रसहौं औ निरामय हौं कर्तृत्वाभिमान रहित हौं औ संपूर्ण हौं देशकालादि परिच्छेद रहित हौं औ आनन्दमयहौं आनन्दस्वरूप हौं औ अक्रिय हौं क्रियारहित होनेसे परिणाम हीन हौं ४३ औ मैं सदैव तीनोंकाल में मुक्तहौं औ मैं अचिन्त्य शक्ति युक्त परमात्मा हौं और इन्द्रियों से रहित जो ज्ञानहै सोई मैंहूं औ मैं अविक्रिय स्वरूपहूं अर्थात् बिकार रहित होने से मेरा रूप नहीं बदलताहै औ मैं अनन्त पारहूं अर्थात् न कालकरके मेराअंत है और न देशकरके मेरा पारहै ऐसाजो परमात्मा पंडितों करके सदा हृदय में ध्यान किया गया है सो मैंहूं ४४ हे लक्ष्मण इसप्रकार एकाग्र चित्तकरके सदा आत्माका ध्यान करताहुआ जो पुरुष तिसको वह विशुद्धभावना अर्थात् ब्रह्माकार अन्तःकरण की वृत्ति उत्पन्न होतीहै जो और जन्मोंके उत्पन्न करनेवाले जेकर्म तिन्हों करके सहित अविद्याको शीघ्रहीनाश करतीहै जैसे उपासित अर्थात् सेवन करीहुई जो रसायन औषध सो संपूर्ण रोगोंका नाशकरै तैसे ४५ तहां आत्मध्यान संसारकी निवृत्ति में कारण कहा तिसमें जो कुछ कृत्यहै तिसको कहते हैं हे लक्ष्मण निर्जन स्थानमें यथा योग्य योगशास्त्र प्रसिद्ध आसनपै स्थितहो निवृत्त हुआ दर्शनादि व्यापार जिन्हों का ऐसी इन्द्रियों करके प्राणायामादिकों करके जीताहै अन्तःकरण जिसने इसी से विशुद्ध हुआ चित्त जिसका और विज्ञानही दृष्टि जिसकी अर्थात् मैं देखनेवाला हौं और यह देखनेके योग्यहै ऐसा भाव जिसको नहींहै ऐसीनिर्विकल्प असंप्रज्ञात समाधि में स्थित औ अनन्य साधन अर्थात् तत्त्वज्ञानको छोड़के और नहींहै साधन का भ्रम जिसको औ केवल असंग और आत्माही में संस्था स्थिति जिसकी अर्थात् विषयान्तर में जिसकाचित्त नहीं ऐसा हो करके ध्यानकरै ४६ और परमात्मा है प्रकाशक जिसका ऐसा जो चराचर विश्व तिसको माया सान्निधान से सबका उपादान कारण जो परमात्मा तिस में लय कर देय अर्थात् कारणसेन्यारी कार्य्यसत्ताको न देखै ऐसा जबहोताहै तौ पूर्णहुये अर्थात् प्राप्त हुये हैं सब काम जिसके ऐसा चिदानंद रूपहोके स्थित होताहै और उस समयमें बाहरभीतर सिवाय ब्रह्म के कुछ नहीं देखता है ४७ औ हे लक्ष्मण इस निर्विकल्पक समाधि की पूर्व अवस्था में संपूर्ण चराचर जगत्को ॐकार

मात्र देखै अर्थात् ओंकार है वाचक जिसका ऐसी भावना करै तिस में सब जगत् वाच्य है औ ओंकार वाचक है यह भावना भी अज्ञानवश से होती है ४८ ज्ञानके अनंतर नहींहोतीहै सो प्रकार दिखलातेहैं तहाँ ओंकार में अकार उकार मकार तीन वर्णहैं तिनकी उपासना क्रमसे कहतेहैं हे लक्ष्मण जाग्रत अवस्था का स्वामी जो विश्वहै तिसको अकार जानै अर्थात् ॐकारका आदि अक्षर जो अकार तिसका वाच्य अर्थ जाग्रत अवस्था का अभिमानी जो मैं हूं सो समष्टि स्थूल उपाधिका अभिमानी विराट्से अभिन्नहूं यहभावनाप्रणवके अकार में करै फिर इसी प्रकार से स्वप्न अवस्था का स्वामी जो तैजस मैं हूं सो ॐकारका द्वितीयवर्ण जो उकार तिसकावाच्य अर्थहूं औ सूक्ष्म समष्ट्यु पाधि जो हिरण्यगर्भ तिससे अभिन्नहूं अर्थात् तिसी का स्वरूपहौं ऐसी प्रण वके द्वितीयवर्ण उकार में पुरुषभावना करै और सुषुप्ति अवस्थाका अभिमानी जो प्राज्ञ मैंहूं सो ओंकार के तृतीय अक्षर का वाच्य अर्थ जो मायोपाधिक ईश्वर तिससे अभिन्नहूं अर्थात् तिसीका रूपहूं ऐसी ओंकारके तृतीयअक्षर मकारमें भावनाकरै परंतु यहभिन्न भिन्नभावना समाधिके पूर्वहीकरैऔरन्यारी न्यारी भावनाओंकाभी फलमाण्डूक्य[1] उपनिषद्में कहा है सो निम्नभाग के लेखसे जानना ४९ ॥

विश्वंत्वकारंपुरुषंविलापयेदुकारमध्येबहुधाव्यवस्थितम् ॥ ततो मकारेप्रविलाप्यतैजसंद्वितीयवर्णंप्रणवस्यचान्तिमे५० मकारमप्या त्मनिचिद्घनेपरेविलापयेत्प्राज्ञमपीहकारणम् ॥ सोऽहंपरंब्रह्मसदा विमुक्तिमद्विज्ञानदृङ्मुक्तउपाधितोऽमलः ५१ एवंसदाजातपरात्म भावनःस्वानन्दतुष्टःपरिविस्मृताखिलः ॥ आस्तेसनित्यात्मसुखप्र काशकःसाक्षाद्विमुक्तोऽचलवारिसिन्धुवत् ५२ एवंसदाऽभ्यस्तसमा

१ औ माण्डूक्यउपनिषद्में ऐसा कहाकि जाग्रत्अवस्थाका स्वामी वैश्वा नर पुरुष जैसे सबका आदि कारण है औ सब जगत्को व्याप्तकरनेवाला है ऐसे ॐकारका आदि अक्षर अकार सब वर्णों का आदि है और सब अक्षरोंको व्याप्तकरने वाला है इससे उस अकार में जो पुरुष वैश्वानर पुरुषका अभेद करके ध्यान करताहै सो संपूर्ण कामोंको प्राप्त होताहै औ सबका आदिकारण होताहै इसी प्रकार उकार में तैजस की उपासना करनेवाला विद्या को प्राप्त होता है और प्राज्ञ की उपासना करनेवाला ईश्वरता को प्राप्त होताहै औ मात्राके विभाग रहित ॐकारमें ब्रह्मका अभेदकरके ध्यानकरताहुआ निष्कल ब्रह्मको प्राप्त होताहै ॥

धियोगिनोनिवृत्तसर्वेन्द्रियगोचरस्यहि ॥ विनिर्जितःशेषरिपोरहंस दाहश्योभवेयंजितषड्गुणात्मनः ५३ ध्यात्वैवमात्मानमहर्निशंमुनि स्तिष्ठेत्सदामुक्तसमस्तबन्धनः ॥ प्रारब्धमश्नन्नभिमानवर्जितोमय्ये वसाक्षात्प्रविलीयतेततः ५४ आदौचमध्येचतथैवचांततोभवंविदि त्वाभयशोककारणम् ॥ हित्वासमस्तंविधिवादचोदितंभजेत्स्वमात्मा नमथाखिलात्मनाम् ५५ आत्मन्यभेदेनविभावयन्निदंभवत्यभेदेन मयात्मनातदा ॥ यथाजलंवारिनिधौयथापयःक्षीरेवियद्व्योम्न्यनि लेयथाऽनिलः ५६ ॥

अब फिर नित्य समाधि कहनेको लयका प्रकार वर्णन करते हैं हे लक्ष्मण अकारवाच्य जो विराट्रूप बहुतप्रकारका स्थितविश्व तिसका उकारवाच्य जो हिरण्यगर्भरूप तैजस तिसमें लयकरै अर्थात् तिसीकारूप देखै तैसेही उकार वाच्य जो हिरण्यरूप तैजस तिसको मकारवाच्य ईश्वररूप प्राज्ञमें लयकरै अर्थात् तिसीकारूप देखै और यहां वाचक जे अकारादिवर्ण तिनका भी लय विवक्षितहै परन्तु सर्वत्र यहां लय उपाधियोंकाही जानना चेतनका लय कहीं वेदान्तशास्त्रमें नहीं कहाहै ५० फिर तिसके उपरान्त मकार जो ॐकारका ती-सरा वर्ण तिसको औ मकारका वाच्य अर्थ जो ईश्वररूप प्राज्ञ अर्थात् कारण तिसका भी शुद्ध चैतन्य जो परब्रह्म तिसमें लयकरै अर्थात् ब्रह्मरूपही करके देखै फिर सो उपाधिरहित निर्मल विज्ञानरूप सदामुक्त परब्रह्म मैंहूँ ऐसी भावनाकरै ५१ इसप्रकार उत्पन्नहुई है परमात्माकी भावना जिसको इसीसे अपने स्वरूपानन्दहीकरके जो तुष्ट होरहा कुछ विषयानन्द करके नहीं क्यों कि उसको परिणाम में दुःखरूपत्वहै इससे उससे विरक्तरहै और विस्मृतहुआ पुत्रादिवर्ग जिसको औ साक्षात् नित्यसुख प्रकाशस्वरूप आत्मरूपही जो होरहा है ऐसा जीवन्मुक्तपुरुष अचल समुद्रके तुल्य रहताहै अर्थात् जैसे समुद्रकी लहरी न चलायमान होयँ वह स्थिरहोयँ तैसेही विषयसम्बन्धरूप जिस चित्त की लहरी निवृत्त हुई हैं ऐसे स्थिरचित्त रहताहै ५२ ऐसेको मेरीप्राप्ति होतीहै सो कहते हैं औ हे लक्ष्मण इसप्रकार सदा अभ्यास कियाहै समाधिमें जिसने ऐसा योगयुक्त औ निवृत्तहुये हैं सब शब्दादि इन्द्रियों के विषय जिससे औ जीते हैं कामादिक शत्रु जिसने औ सर्वज्ञ होना १ और नित्य तृप्त रहना २ औ ज्ञान स्वरूप होना ३ औ स्वतन्त्र होना ४ औ सब कालमें रहना५औ अनन्त रूप होना ६ ये छः हैं गुण जिसमें ऐसा परमात्मा जिस भक्तने वशकियाहै ऐसे भक्तको मैं सदा दर्शन देताहूँ अर्थात् जो मेराभक्त योगी है उसीको मैं

दिखाई देताहूँ विमुखको नहीं ५३ औ हेलक्ष्मण इसप्रकार रात्रि दिन आत्मा का ध्यानकरने से छूटगये हैं सब कर्मबन्धन जिसके ऐसा जो मुनि सो अभिमान रहित प्रारब्ध कर्मको भोगताहुआ स्थित होताहै सो प्रारब्ध भोगके अनन्तर मेरेही विषे लीन होताहै अर्थात् मेराही रूप होजाताहै ५४ अब सब धर्मोंमें यही धर्म श्रेष्ठहै इस आशयसे कहते हैं कि हे लक्ष्मण आदिमें औमध्य में औ अन्त्यमें सबसंसार भयशोकका कारणहै यह जानके और (स्वर्गकामो यजेत) स्वर्ग की जिसको कामना होय सो यज्ञकरै इसको आदि लेके ये वेद में विधिवादहैं तिन्होंकरके प्रेरित जो सम्पूर्ण जाल तिसको त्यागिकै सबजीवों का स्वरूप भूत जो परमेश्वर तिसका भजनकरै ५५ अब मेरे विषे अभेद भावनासे सबजगत् मेराहीरूप होताहै यह दृष्टान्त सहित वर्णन करते हैं कि हे लक्ष्मण सबका आश्रय जो मैंहूँ तिसके विषे यह अपना स्वरूप जो जीव तिस को अभेदकरके ध्यान करताहुआ जब कोई प्राणी स्थितहोताहै तब मैं जो परमेश्वर तिसके साथ अभिन्न होजाताहूँ कैसे इसमें दृष्टान्त कहते हैं कि जैसे नद्यादिकोंका जल समुद्रमें प्रविष्ट होनेसे समुद्रही होजाताहै और जैसे दूधमें जल मिलने से दुग्धरूपही होजाताहै और जैसे महाकाशमें घटादिकोंका आकाश महाकाशही होजाताहै जैसे लुहार की धौकनीका पवन बहुत पवन में मिलके वैसाही होजाताहै तैसे मेरे स्वरूप मिलिकै मोहीसा होजाताहै अर्थात् जैसे नदी आदिकोंको ❁ समुद्रादिकों में मिलने के अनन्तर नामरूपादिभेद कुछ नहीं रहता सब समुद्रही कहाजाताहै तैसेही ज्ञानकी महिमा से मेरेविषे मिलने से भी जीवोंका पृथक् नामरूप नहीं रहता है ५६ ॥

इत्थंयदिक्षेतहिलोकसंस्थितोजगन्मृषैवेतिविभावयन्मुनिः ॥ निराकृतत्वाच्छ्रुतियुक्तिमानतोयथेन्दुभेदोदिशिदिग्भ्रमादयः ५७ यावन्नपश्येदखिलंमदात्मकंतावन्मदाराधनतत्परोभवेत् ॥ श्रद्धालुरत्यूर्जितभक्तिलक्षणोयस्तस्यदृश्योऽहमहर्निशंहृदि ५८ रहस्यमेतच्छ्रुतिसारसंग्रहंमयाविनिश्चित्यतवोदितंप्रिय ॥ यस्त्वेतदालोचयतीह बुद्धिमान्समुच्यतेपातकराशिभिःक्षणात् ५९ भ्रातर्यदीदंपरिदृश्यते जगन्मायैवसर्वंपरिहृत्यचेतसा ॥ मद्भावनाभावितशुद्धमानसःसुखी भवानंदमयोनिरामयः ६० यःसेवतेमामगुणंगुणात्परंहृदाकदावायदिवागुणात्मकम् ॥ सोहंस्वपादांचितरेणुभिःस्पृशन्पुनातिलोक

❁ यथानद्यःस्यन्दमानाःसमुद्रे अस्तंगच्छन्ति नामरूपेविहायतथाविद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः परात्परं पुरुष मुपैतिदिव्यमितिमुण्डकश्रुतिः १० ॥

त्रितयंयथारविः ६१ विज्ञानमेतदखिलंश्रुतिसारमेकंवेदांतवेद्यच रणेनमयैवगीतम् ॥ यःश्रद्धयापरिपठेद्गुरुभक्तियुक्तोमद्रूपमेतिय दिमद्वचनेषुभक्तिः ६२ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेउत्तरकाण्डे श्रीरामगीतानामपंचमस्सर्गः ५ ॥

और हे लक्ष्मण लोकमें स्थित भी मुनि इसप्रकार जीवन्मुक्त अवस्थामें १ लोक व्यवहार करताहुआ भी श्रुति औ युक्तिइनके प्रमाणसे खण्डितहोचुकाहै इसहेतुसे जगत् मिथ्याहै ऐसा निश्चय करताहुआ जो इसप्रकार जीव ब्रह्मके ऐक्यकोजानै तौ निवृत्तहुआहै जगत्की सत्यताका भ्रम जिसको ऐसा होजाता है तहां दृष्टान्त कहते हैं जैसे एकचन्द्रमामें दो चन्द्रमाओं को जो भ्रम सो एकत्व ज्ञानही से निवृत्त होताहै और जैसे पूर्वकी दिशामें पश्चिम दिशाका भ्रम अथवा घूमताहुआ जो पुरुष तिसको दिशाओंमें निकटवर्ती वृक्षादिकों में घूमनेका भ्रमहोताहै सो सब यथार्थ ज्ञानहीसे निवृत्त होताहै तैसेही जगत्भ्रम भी तत्त्व ज्ञानही से निवृत्त होताहै ५७ औ हे लक्ष्मण जबतक मेंहीहौं आधार जिसका ऐसे सबजगत्को नहीं देखै तबतक श्रद्धाभक्तियुक्तहोके अर्थात् परमेश्वर की भक्तिही से ऐसा ज्ञानहोताहै और कोई उपायसे नहीं इस दृढविश्वास से जो मेरे आराधनमें तत्पर होताहै तिसको हृदयमें राति दिनमें दिखाईदेता हूँ अर्थात् उसभक्तके हृदयमें स्थितहो ऐसी बुद्धि देताहूँ जिससे मुझको प्राप्त होय ५८ और हे प्रिय लक्ष्मण यह सब वेदोंके सारका संग्रहरूप रहस्य अति गोपनीयज्ञान मैंने निश्चयकरके तुमसेकहाहै तिसको जो बुद्धिमान्पुरुष विचार करैगा सो क्षणमात्रमें संपूर्णपापोंकी राशिसे छूटिजायगा अर्थात् जे पाप सकल पुरुषार्थ साधन भूत मेरे आराधनही को नहीं होनेदेते हैं तिन्होंसे छूटने का रामगीताका अर्थानुसन्धानपूर्वक पाठ करनाही परम उपाय है ५९ अब श्री भगवान् रामचन्द्र कहेहुये सबगीताके अर्थको दृढताकेलिये संक्षेपसे एकश्लोक करके फिर कहते हैं कि हे भ्रातः यह सब जगत् जो दिखाई देताहै सो सब मायाही है यह जानके चित्तसे सब त्यागके मेरी भावना से अर्थात् ध्यान से शुद्धहुआ अन्तःकरण जिसका ऐसेहोके सबदुःखोंसे निवृत्त और उपद्रव रहित परमानन्द स्वरूप हुये तुम सो सदारहो यह आशीर्वाद श्रीराम लक्ष्मण को देते हैं इससे ग्रन्थके अन्तमें मंगल सूचन किया ६० औ हेलक्ष्मण जो पुरुष जब कभी अर्थात् पुण्य समूहों की विपाक दशामें मायाके गुणोंकरके रहित औ गुणवती मायासे परे सच्चिदानन्द विग्रह जो मैंहूँ तिसको अथवा सर्वज्ञत्व

भक्तवात्सल्यादि अनन्तकल्याणयुत श्यामसुन्दरसगुणस्वरूप जो मैंहूं तिसको भक्तिकरके सेवनकरताहै सो मेराही स्वरूपहै और वह पुरुष अपने चरणोंकी रेणुओंकरके जिसको स्पर्श करताहै तिसका अज्ञानरूपी अन्धकार से पवित्र करताहै जैसे सूर्य अपनी किरणोंकरके तीनोंलोकोंको पवित्र करते हैं ६१ और हेलक्ष्मण सब श्रुतियोंकासार एक अद्वितीय विज्ञान अर्थात् विज्ञान जनक गीताशास्त्र सो वेदान्तशास्त्रकरके वेद्यहै जगत्सृजनादि कर्म जिसका ऐसा जो मैंहूं तिसीने गानकियाहै तिसको जो गुरुभक्तियुक्त पुरुष श्रद्धाकरके पढ़ताहै वह मेरे रूपको प्राप्तहोता है जो मेरे वचनों में भक्ति अर्थात् विश्वासहोय तो इससे यह सूचन किया कि गुरुवाक्यमें विश्वासयुक्त पुरुषकोही वेदान्तशास्त्र प्रसिद्ध फलकी प्राप्तिहोती है और श्रुतिभी*इसी अर्थको कहती है कि जिसकी परमेश्वर में परमभक्ति होय औ जैसे परमेश्वरमें होय तैसेही गुरूमें भी होय उसपुरुषको वेदान्त शास्त्रमें कहेहुये अर्थ प्रकाश करते हैं ६२ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेउत्तरकाण्डे भाषाटीकायांरामगीतानामपंचमःसर्गः ५ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ एकदामुनयस्सर्वेयमुनातीरवासिनः ॥ आजग्मूराघवंद्रष्टुंभयाल्लवणरक्षसः १ कृत्वाग्रेतुमुनिश्रेष्ठंभार्गवंच्यवनंद्विजाः ॥ असंख्याताःसमायातारामादभयकांक्षिणः २ तान्पूजयित्वापरयाभक्त्यारघुकुलोत्तमः ॥ उवाचमधुरंवाक्यंहर्षयन्मुनिमंडलम् ३ करवाणिमुनिश्रेष्ठाःकिमागमनकारणम् ॥ धन्योस्मियदियूयंमांप्रीत्याद्रष्टुमिहागताः ४ दुष्करंचापियत्कार्यंभवतांतत्करोम्यहम् ॥ आज्ञापयंतुमांभृत्यंब्रह्मणादैवतंहिमे ५ तच्छ्रुत्वासहसाहृष्टश्च्यवनोवाक्यमब्रवीत् ॥ मधुनामामहादैत्यःपुराकृतयुगेप्रभो ६ आसीदतीवधर्मात्मादेवब्राह्मणपूजकः ॥ तस्यतुष्टोमहादेवोददौशूलमनुत्तमम् ७ ॥

दो० छठेंसर्ग शत्रुघ्न को मुनि कारण रघुनाथ ।
भेजिलवणरिपुघातिपुनिमखसाजोनिजहाथ १

अबश्री महादेवजी पार्वतीजी से कथा वर्णन करतेहैं हे पार्वति एकसमय यमुना तटवासी मुनिलोग लवणासुर की भयसे रामके देखनेको आतेहुये १

* यस्यदेवेपराभक्तिः यथादेवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाः प्रकाशन्तेमहात्मनः ॥ इतिश्रुतेः १५ ॥

ते सब असंख्यक मुनि अर्थात् बहुतसे मुनीश्वर श्रीरामसे अभयकी इच्छासे भार्गवों में श्रेष्ठच्यवन मुनिको आगे कर रामके समीपआवतेहुये २ अब रघुकुलमें श्रेष्ठ श्रीराम आयेहुये उन यमुनातटबासी मुनियोंकोबड़ी प्रीतिसे पूजन करके सब मुनियोंको प्रसन्नकरतेहुये मधुरबचनबोले ३ हेमुनि श्रेष्ठो मैं क्या आपका कार्य्य करूं सो कहिये और अपने आगमनका कारण कहिये औरजो आपलोग केवल प्रीतिसे देखनेहीको आयेहों तो मैं बड़ाधन्यहों ४ और दुःख करभी अर्थात् बड़ाकठिनभी आपकाकार्यहोगा तिसकोमैं करूंगा भृत्य जो मैं हूं तिसको आपआज्ञाकरिये क्योंकि ब्राह्मण मेरे परम इष्टदेवहैं ५ यह रामका बचन सुनिकै परमप्रसन्न च्यवन ऋषि बचनबोले कि हेविभो पहिले सतयुग में मधुनाम बड़ा बली दैत्य होताहुआ ६ सो मधुदैत्य अत्यन्त धर्मात्मा औ देव ब्राह्मणोंका पूजनकरनेवालाहोताहुआ तिसके ऊपर महादेव प्रसन्नहोके बड़ा श्रेष्ठ त्रिशूल देतेहुये ७॥

प्राहचानेनयंहंसिसतुभस्मीभविष्यति ॥ रावणस्यानुजाभार्या तस्यकुंभीनसीश्रुता ८ तस्यांतुलवणोनामराक्षसोभीमविक्रमः ॥ आसीद्दुरात्मादुर्धर्षोदेवब्राह्मणहिंसकः ९ पीडितास्तेनराजेन्द्रवयंत्वां शरणंगताः ॥ तच्छ्रुत्वाराघवोप्याहमाभीर्वोमुनिपुंगवाः १० लवणं नाशयिष्यामिगच्छंतुविगतज्वराः ॥ इत्युक्त्वाप्राहरामोपिभ्रातॄन्को वाहनिष्यति ११ लवणंराक्षसंदद्याद्ब्राह्मणेभ्योभयंमहत् ॥ तच्छ्रुत्वा प्रांजलिःप्राहभरतोराघवायवै १२ अहमेवहनिष्यामिदेवाज्ञापयमांप्र भो ॥ ततोरामंनमस्कृत्यशत्रुघ्नोवाक्यमब्रवीत् १३ लक्ष्मणेनमहत्का र्यंकृतंराघवसंयुगे ॥ नंदिग्रामेमहाबुद्धिर्भरतोदुःखमन्वभूत् १४ ॥

और यह बचनबोले कि इस शूलकरके जिसको तूमारेगा सो भस्म होजायाकरैगा और कुंभिनसीनामसेप्रासिद्ध जो रावणकी छोटीभैन सो उसकी भार्याथी ८ तिसमें बड़ाभयंकर पराक्रमी लवणनाम राक्षस उत्पन्नहोताहुआ जो बड़ादुरात्मा औरदुस्सह औ देवब्राह्मणोंका मारनेवालाथा ९ औहेराजेन्द्र तिस राक्षसकरकेपीड़ित हमलोगआपके शरण प्राप्तहुयेहैं यहमुनियोंकावचन सुनिके श्रीराम बोले हे मुनिश्रेष्ठो अबतुमको भयनहींहोगी १० लवणदैत्यका मैं नाशकराऊंगा इससे आपलोग संतापरहित अपने गृहको जावो ऐसा वचन राम मुनियोंसे कहिकै फिर भाइयों से बोले कि तुमसबों में कौनलवणरा क्षस का बधकरैगा ११ औ जो ब्राह्मणोंको अभयदानदेवै सो कहै तब यहवचन रामचन्द्रजीका सुनिकै भरत हाथजोड़के रामसे बोलतेहुये १२ कि हे देव हे

प्रभो मुझको आज्ञादीजिये मैंही लवणासुरका वधकरौंगा फिर तिसके अनन्तर शत्रुघ्न रामको नमस्कारकरके बोले १३ कि हे राम लक्ष्मणने तौ संग्राममें आपके साथ बड़ाकार्यकिया और श्रेष्ठबुद्धि जो भरत सो नन्दिग्राम में बड़ा दुःख भोगतेहुये १४ ॥

अहमेवगमिष्यामिलवणस्यवधायच ॥ त्वत्प्रसादाद्रघुश्रेष्ठहन्यां तंराक्षसंयुधि १५ तच्छ्रुत्वास्वांकमारोप्यशत्रुघ्नंशत्रुसूदनः ॥ प्राहा द्यैवाभिषेक्ष्यामिमथुराराज्यकारणात् १६ आनाय्यचसुसंभारांल्ल- क्ष्मणेनाभिषेचने ॥ अनिच्छंतमपिस्नेहादभिषेकमकारयत् १७ द त्त्वातस्मैशरंदिव्यंरामःशत्रुघ्नमब्रवीत् ॥ अनेनजहिबाणेनलवणंलो ककंटकम् १८ सतुसंपूज्यतच्छूलंगेहेगच्छतिकाननम् ॥ भक्षणार्थं तुजंतूनांनानाप्राणिवधायच १९ सतुनायातिसदनंयावद्वनचरोभवे त् ॥ तावदेवपुरद्वारितिष्ठत्वंधृतकार्मुकः २० योत्स्यतेसत्वयाक्रुद्ध स्तदावध्योभविष्यति ॥ तंहत्वालवणंक्रूरंतद्वनंमधुसंज्ञितम् २१ ॥

इससे लवणासुरके वधकेलिये मैंही जाऊंगा औ हे रघुश्रेष्ठआपकेप्रसाद से उस राक्षसको मैं संग्राममें मारौंगा १५ तब शत्रुओंके नाशक श्रीराम शत्रुघ्न कावचन सुनिकै औ शत्रुघ्नको अपने गोदमें बिठालके यह बोले कि शत्रुघ्न अभी तेरा मथुराके राज्यकेलिये अभिषेक करताहूं १६ फिर श्रीराम लक्ष्मण के द्वारा अभिषेककी सामग्रियोंको मँगाके नहीं इच्छाकरताहुआ जो शत्रुघ्न तिसका राज्याभिषेक स्नेहवश से करतेहुये १७ फिर श्रीराम शत्रुघ्नको एक दिव्यबाणदेके यहबोले कि हेशत्रुघ्न इसबाणकरके लोककंटक जो लवणराक्ष- स तिसकोमारो १८ और सो लवणराक्षस उसशूलको अपनेगृहमें पूजनकरके फिर अपने भोजनके लिये नानाप्रकारके प्राणियोंको मारने के लिये बनको जायाकरताहै १९ सो वह लवणराक्षस जबतक अपनेघरमें प्रवेश न करनेपावै और बनही में रहै तबतक तुम उसके पुरके द्वारपै धनुषलेके स्थितरहौ २० अर्थात् जिसमें त्रिशूललेनेको अपने गृह न जानेपावै तबतक पहिले से तुम उसकेद्वारपै खड़ेहोउ फिर क्रोधकरके वहराक्षस तुम्हारे साथ युद्धकरैगा तब तुम्हारे मारनेके योग्य होगा इसप्रकार से उस क्रूर लवण राक्षस को मारके फिर जहां मधुवनहै २१ ॥

निवेश्यनगरंतत्रतिष्ठत्वंमेऽनुशासनात् ॥ अश्वानांपंचसाहस्रंर थानांचतदर्धकम् २२ गजानांषट्शतानीहपत्तीनामयुतत्रयम् ॥ आ

गमिष्यतिपश्चात्त्वमग्रेसाधयराक्षसम् २३ इत्युक्त्वामूर्ध्न्यवघ्रायप्रेषयामासराघवः॥ शत्रुघ्नम्मुनिभिःसार्द्धमाशीर्भिरभिनंद्यच २४ शत्रुघ्नोपितथाचक्रेयथारामेणचोदितः ॥ हत्वामधुसुतंयुद्धेमथुरामकरोत्पुरीम् २५ स्फीतांजनपदांचक्रेमथुरांदानमानतः ॥ सीतापिसुषुवेपुत्रौद्वौवाल्मीकेरथाश्रमे २६ मुनिस्तयोर्नामचक्रेकुशोज्येष्ठोनुजोलवः॥ क्रमेणविद्यासम्पन्नौसीतापुत्रौबभूवतुः २७ उपनीतौचमुनिनावेदाध्ययनतत्परौ ॥ कृत्स्नंरामायणंप्राहकाव्यंबालकयोर्मुनिः २८ ॥

वहां नगरबसाके अर्थात् मथुराको बसायकै फिर मेरीआज्ञासे उसमें तुम राज्यकरो और पांचहजार घोड़े और ढाईहजार रथ २२ और छःसैहाथी और तीसहजार प्यादे इतनी सेना तुम्हारे पीछे आवैगी और तुम आगेजाके उस राक्षसको मारो २३ यहकहिके श्रीरामचन्द्र शत्रुघ्नको शिरमेंसूंघके और आशीर्बाददेके मुनियोंके साथ भेजतेहुये२४अब शत्रुघ्नभी जैसे रामचन्द्रनेआज्ञा की तैसेही करतेहुये उस लवणासुरको युद्धमेंमारके वहां मथुरापुरीको बसाते हुये २५ और समृद्ध हैं देश जिसके ऐसी मथुरापुरीको शत्रुघ्न करतेहुये अब इसकेअनन्तर सीता वाल्मीकिके आश्रममें दोपुत्र उत्पन्नकरतीहुई २६ फिर बाल्मीकि मुनि उनपुत्रोंका नामकरण करतेहुये ज्येष्ठकानाम कुश और छोटे कानाम लवरक्खा फिर क्रमकरके वे सीताजीके दोपुत्र सब विद्याओं करके पूर्णहोतेहुये २७ जब मुनीश्वरने उनका यज्ञोपवीत किया तब वेदाध्ययनमें तत्पर होतेहुये फिर संपूर्ण बाल्मीकि रामायण काव्य उन दोनों को मुनि पढ़ातेहुये २८ ॥

शंकरेणपुराप्रोक्तंपार्वत्यैपुरहारिणा ॥ वेदोपबृंहणार्थायतावद्ग्राहयतप्रभुः २९ कुमारौस्वरसम्पन्नौसुन्दरावश्विनाविव ॥ तंत्रीतालसमायुक्तौगायंतौचेरतुर्बने३०तत्रतत्रमुनीनांतौसमाजेसुररूपिणौ॥ गायंतावभितोदृष्ट्वाविस्मितामुनयोब्रुवन् ३१ गंधर्वैर्ष्विहाकिन्नरेषुभुविवादेवेषुदेवालयेपातालेष्वथवाचतुर्मुखगृहेलोकेषुसर्वेषुच ॥ अस्माभिश्चिरजीविभिश्चिरतरंदृष्टादिशःसर्वतोनाज्ञायीदृशगीतवाद्यगरिमानादर्शिनाश्राविच ३२ एवंस्तुवद्भिरखिलैर्मुनिभिःप्रतिवासरम् ॥ आसातेसुखमेकान्तेवाल्मीकेराश्रमेचिरम् ३३ अथरामोऽश्वमेधादींश्चकारबहुदक्षिणान् ॥ यज्ञान्स्वर्णमयींसीतांविधायविपुलद्यु

नि: ३४ तस्मिन्वितानेऋषयःसर्वेराजर्षयस्तथा ॥ ब्राह्मणाःक्षत्रिया वैश्याःसमाजग्मुर्दिदृक्षवः ३५ ॥

जो रामायण प्रथम महादेवजीने पार्वतीजीको उपदेशकिया उसीरामायण को वाल्मीकिमुनि वेदके अर्थकी वृद्धिकरने के लिये कुश, लवको ग्रहणकराते हुये २९ फिर वे दोनों कुमार स्वर विद्या में कुशल और अश्विनीकुमार के सदृश सुंदर और वीणाके मूर्च्छना आलाप में बड़ेप्रवीण गानकरते उसवनमें विचरतेहुये ३० और देवताओंकासा रूप जिनका और मुनियोंके समाजमें गानकरतेहुये तिन दोनोंकुमारोंको मुनिलोग चारोंतरफसेदेखके बड़ेआश्चर्य युक्तहोके बोलतेहुये ३१ कि गन्धर्वोंमें और किन्नरों में औ भूर्लोकमें जितने गानकरने वाले तिन्होंमें अथवा स्वर्ग में जे देवतालोग तिन्होंमें और पाताल लोकमें जे गानकरने वाले तिन्हों में अथवा ब्रह्मलोक में अथवा सबलोकों में ऐसा गानकरनेवाला बजानेवाला बहुतकाल जीवनेवाले जे हमलोग तिन्होंने न देखा न सुना और दिशा भी सब देखी तिन्होंमें भी कोई नहीं देखा जैसे ये राजकुमारदोनों गान करनेवालेहैं ३२ इसप्रकार प्रतिदिन स्तुतिकरतेहुये जोमुनि लोग तिन्होंकरके सहित वाल्मीकि के आश्रम में एकान्तमें सुखपूर्वक बहुत कालतक दोनों रहतेहुये ३३ अबइसके उपरान्त बड़ी कान्ति जिसकी ऐसे श्रीरामचन्द्र सुवर्णकी सीताको बनाकर बहुत है दक्षिणा जिन्होंमें ऐसे अश्वमेधादि यज्ञोंको करतेहुये ३४ उन रामचन्द्रजी के यज्ञमें सब ऋषि लोग और राजर्षि और ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य ये सब बहुतसे देखनेको आतेहुये ३५ ॥

वाल्मीकिरृषिसंश्रुत्यगायंतौतौकुशीलवौ ॥ जगामऋषिवाटस्य समीपंमुनिपुंगवः ३६ तत्रैकांतेस्थितंशांतं समाधिविरमेमुनिम् ॥ कुशःपप्रच्छवाल्मीकिंज्ञानशास्त्रंकथांतरे ३७ भगवन्श्रोतुमिच्छामिसंक्षेपाद्भवतोखिलम् ॥ देहिनःसंसृतिर्बंधःकथमुत्पद्यतेदृढः ३८ कथंविमुच्यतेदेहीदृढबंधाद्भवाभिधात् ॥ वक्तुमर्हसिसर्वज्ञमह्यंशिष्यायतेमुने ३९ वाल्मीकिरुवाच ॥ शृणुवक्ष्यामितेसर्वंसंक्षेपाद्बन्धमोक्षयोः ॥ स्वरूपंसाधनंचापिमत्तःश्रुत्वायथोदितम् ४० तथैवाचर भद्रंतेजीवन्मुक्तोभविष्यसि॥ देहएवमहागेहमदेहस्यचिदात्मनः४१ तस्याहंकारएवास्मिन्मंत्रीतेनैवकल्पितः ॥ देहगेहाभिमानंस्वंसमारोप्याचिदात्मनि ४२ ॥

और बाल्मीकिऋषिभी रामायणके गानकरने वालेयेदोनों कुश लवकुमार तिनको संगलैके जहां यज्ञमें ऋषियोंका समुदायथा तहां आतेहुये ३६ तहां किसी एकान्त स्थानमें समाधिके अन्तमें स्थितशान्त स्वभाव जो बाल्मीकि मुनि तिनसे किसी कथाके प्रसंगमें कुशजो कुमारसो ज्ञानशास्त्रको पूंछताहुआ ३७ कि हे भगवन् आपसे संपूर्ण मैं संक्षेपसे यहसुना चाहताहूं कि काहे से संसारमें दृढबन्ध उत्पन्नहोताहै ३८ और कैसे इससंसार बन्धनसे प्राणी छूटताहै सो हे सर्वज्ञ आपका शिष्य जो मैंहूं तिसके अर्थ आपकहनेको योग्य हौ ३९ तबबाल्मीकि मुनिकहतेहुये कि हे कुश अब संक्षेपसे बन्धमोक्षका स्वरूप औसाधन मैं तुझसे कहताहूं तिसको सुन ४० फिर सुनिके जैसे मैं कहूं तैसे आचरण कर तब जीवन्मुक्त पदवीको प्राप्तहोगा और तेरा कल्याण होय औ हे कुश देहरहित जो चिद्रूप आत्मा तिसका यहदेह जो सोई एकबड़ा घरहै ४१ तिस देहमें अहंकाररूप मन्त्री तिसी आत्माने कल्पना किया अर्थात् चिद्रूप आत्माके संनिधि से मायाका अहंकाररूप परिणाम नाम रूपान्तर हुआहै इससे ऐसा कहाजाताहै सोअहंकार देहरूपी गृहका अभिमान अर्थात् यहमेरा है इसप्रकारका अभिमान उस चिद्रूप आत्मामें आरोपण करके ४२ ॥

तेनतादात्म्यमापन्नःस्वचेष्टितमशेषतः॥ विदधातिचिदानन्देतद्भासितवपुःस्वयम् ४३ तेनसंकल्पितोदेहीसंकल्पनिगडावृतः॥पुत्रदारगृहादीनिसंकल्पयतिचानिशम् ४४ संकल्पयन्स्वयंदेहीपरिशोचतिसर्वदा॥त्रयस्तस्याहमोदेहाअधमोत्तममध्यमाः४५ तमःसत्वरजःसंज्ञाजगतःकारणंस्थितेः ॥ तमोरूपाद्धिसंकल्पान्नित्यंतामसचेष्टया ४६ अत्यन्तंतामसोभूत्वाकृमिकीटत्वमाप्नुयात् ॥ सत्यरूपोहिसंकल्पोधर्मज्ञानपरायणः ४७ अदूरमोक्षसाम्राज्यःसुखरूपोहितिष्ठति॥ रजोरूपोहिसंकल्पोलोकेसव्यवहारवान् ४८ परितिष्ठतिसंसारेपुत्रदारानुरञ्जितः ॥ त्रिविधन्तुपरित्यज्यरूपमेतन्महामते४९ ॥

जिससे उसआत्माके साथतादात्म्यको प्राप्तहै अर्थात् अभेदको प्राप्तहोरहा है इससे अपना चेष्टित अर्थात् व्यापार चिदानन्द में विधान करताहै न कहौ जड़अहंकार में चेष्टा कैसे तिससे कहतेहैं कि (तद्भासितवपुः) उस चिद्रूप आत्माही के संपर्कसेही प्रकाशितहुआ बपुशरीर जिसका ऐसा अहंकारहै अर्थात् उसीके संपर्कसे उसमें ऐसीसामर्थ्यहुई जो चेष्टाकरै ४३ फिर उसअहंकारही करके संकल्पको प्राप्तहुआ जोदेहाभिमानी आत्मासो संकल्प रूपबेड़ी से बँधाहुआ पुत्रदार गृहादिकोंका संकल्पकरताहै अर्थात् ये मेरे होयँ ऐसी

चाहकरना है इसका आशय यह है कि यद्यपि संकल्प करना यह अहंकारहीका धर्म है कुछ असंगअविकारी चिद्रूप आत्माका नहीं है तोभी परस्पर अध्यास वशसे अहंकाररूप उपाधिमें प्रतिविम्बित जो आत्मा तिसमें अविवेककरके जलस्थ चन्द्रादि प्रतिविम्ब में कम्पादिकके सदृश भूठाही प्रतीत होताहै तिसकी निवृत्तिका उपाय आगे कहाजायगा अभीतौ चारिश्लोककरके अहंकार कियेहुये संसाररूपअनर्थको कहतेहैं ४४ फिर देहाभिमानी जो पुरुष सो संकल्पकरता है औ जिसपदार्थ का संकल्पहुआ उसपदार्थ कीप्राप्ति नहीं हुई अथवा लब्धहुआही नष्टहोगया तो सर्वदासब कालमें शोचकरताहै और अहंकारके तीन देह हैं एकअधम एकउत्तमएक मध्यम ४५ तिसमें तमोगुण है संज्ञा जिसकी ऐसा जो देहहै सो अधमहै औ सत्वगुण उत्तमहै और जो गुण मध्यमहै और ये तीनोंदेह जगत्के कारण हैं तिसमें तमोगुण प्रधानसंकल्पसे नित्यही तामसचेष्टाकरके ४६ अर्थात् अज्ञानकी वृद्धिसे पश्वादितुल्य विवेकरहित आचरणोंकरके अत्यन्ततामसहो,कृमिकीटादि योनियोंको प्राप्तहोताहै और जब सत्वगुणप्रधान संकल्पहोताहैतौ पुरुषधर्मऔर ज्ञान इनमें तत्परहोताहै ४७ और समीपहीहै मोक्षरूपचक्रवर्त्तित्वपद जिसकेऐसाहो के सुखरूपही स्थितरहताहै और जिसका रजोगुण प्रधान संकल्पहोताहै वह पुरुष लौकिक व्यवहारमें बडाचतुर होताहै ४८ और पुत्र दारादिकोंकी प्रीतिसे रँगाहुआ संसारमें स्थितरहताहै औ हे श्रेष्ठबुद्धियुक्त जब वह संकल्पकरनेवाला अहंकार त्रिगुणरूप तीनप्रकारके स्वरूपको परित्यागकरके ४९ ॥

संकल्पःपरमाप्नोतिपदमात्मपरिक्षये ॥ दृष्टीःसर्वाःपरित्यज्यनियम्यमनसामनः ५० सबाह्याभ्यंतरार्थस्यसंकल्पस्यक्षयंकुरु ॥ यदि वर्षसहस्राणितपश्चरसिदारुणम् ५१ पातालस्थस्यभूस्थस्यस्वर्गस्थस्यापितेनघ ॥ नान्यःकश्चिदुपायोस्तिसंकल्पोपशमादृते ५२ अनाबाधेविकारेस्वेसुखेपरमपावने॥ संकल्पोपशमेयत्नम्पौरुषेणपरं कुरु ५३ संकल्पतन्तौनिखिलाभावाःप्रोक्ताःकिलानघ ॥ छिन्नेतंतौ नजानीमःक्यान्तिविभवाःपराः ५४ निःसंकल्पोयथाप्राप्तव्यवहारपरोभव ॥ क्षयेसंकल्पजालस्यजीवोब्रह्मत्वमाप्नुयात् ५५ अधिगतपरमार्थतामुपेत्यप्रसभमपास्यविकल्पजालमुच्चैः ॥ अधिगमयपदं तदाहितीयंविततसुखायसुषुप्तचित्तवृत्तिः ५६ ॥

इत्यध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेउत्तरकाण्डेषष्ठःसर्गः ६ ॥

अपनेरूपके क्षयमें अर्थात् संकल्पके क्षयमें परमपदको प्राप्तहोताहै इससे हे कुश तुम अपने शुद्ध मनकरके विषयासक्त जो मनहै तिसका नियम न करके अर्थात् विषयोंसे निवृत्तकरके ५० बाहर भीतरके पदार्थोंका जो संकल्प तिसका क्षयकरो और जो कदाचित् तुम हज़ारोंवर्ष तपकरो ५१ और चाहो पातालमें जाके वासकरो चाहो स्वर्गमें और चाहो पृथिवी लोकमें परन्तु संकल्पके क्षयके बिना कोई दूसरा उपाय मोक्षकेलिये नहीं है ५२ और उत्पत्ति विनाशादि विकाररहित परमपवित्र आत्मसुखके लिये संकल्पके उपशममें अर्थात् निवृत्तिमें पुरुषार्थ करके परमयत्नकरो ५३ औ हे अनघ निष्पाप संकल्परूप धागामें जितने सांसारिक पदार्थहैंते सब पुहे हुयेहैं तौसंकल्प रूपधागे के टूटनेमें विगतनष्टहुआ जन्ममरण संसार जिन्होंका ऐसे हुये कहां जाइँगे यहहम नहीं जानते अर्थात् सर्वथा विलयको प्राप्तहोंगे ५४ इससे तू संकल्प रहित होके दैवइच्छासे प्राप्त व्यवहार में स्थितहो क्योंकि संकल्पजालके क्षयमेंजीव ब्रह्मभाव को प्राप्त होता है ५५ और प्राप्त हुई जो परमार्थता अर्थात् जीव ब्रह्मकाऐक्य तिसको प्राप्तहोके बड़ाभारी संकल्पजालको बलसे काटके सुषुप्ति अवस्थाके तुल्यहुई है चित्तवृत्ति जिसकी ऐसाहोके निरन्तर सुखके लिये अद्वितीयपदको प्राप्तहो ५६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेउत्तरकांडे
भाषाटीकायांषष्ठःसर्गः ६ ॥

वाल्मीकिनाबोधितोसौकुशःसद्योगतभ्रमः ॥ अंतर्युक्तोबहिःसर्वमनुकुर्वंश्चचारसः १ वाल्मीकिरपितौप्राहसीतापुत्रौमहाधियौ ॥ तत्रतत्रचगायन्तौपुरेवीथिषुसर्वतः २ रामस्याग्रेप्रगायेतांशुश्रूषुर्यदिराघवः ॥ नग्राह्यंवैयुवाभ्यांतद्यदिकिंचित्प्रदास्यति ३ इतितौचोदितौतत्रगायमानौविचेरतुः ॥ यथोक्तंऋषिणापूर्वंतत्रतत्राभ्यगायताम् ४ तांसशुश्रावकाकुत्स्थःपूर्वचर्यांततस्ततः ॥ अपूर्वपाठजातिंचगेयेनसमभिप्लुताम् ५ बालयोराघवःश्रुत्वाकौतूहलमुपेयिवान् ॥ अथकर्मांतरेराजासमाहूयमहामुनीन् ६ राज्ञश्चैवनरव्याघ्रःपण्डितांश्चैवनैगमान् ॥ पौराणिकाञ्छब्दविदोयेचवृद्धद्विजातयः ७ ॥

दो०। सर्ग सातमें जानकी शपथ सभा में कीन्ह ॥
पुनिधरणीगहि जानकिहिअन्तर्हितजगकीन्ह १

अब श्रीमहादेव पार्वतीजी से कथावर्णनकरते हैं कि हे पार्वति वाल्मीकि ऋषिकरके बोधको प्राप्तहुये जो कुश सो शीघ्रही नष्टहोगयाहै संसाररूप भ्रम

जितका और इसीसे भीतर तो मुक्ति अवस्थाकोप्राप्तहुआ और बाहरसेलोकके देखनेमें नकल तरीखी करता व्यावहारिक कर्मोंको करता हुआ १ बाल्मीकि ऋषिभी श्रेष्ठ बुद्धिहैं जिन्होंकी और जहां तहां पुरकी वीथियोंमें रामचरित्रको गानकरतेहुये जासीताजीके पुत्र कुश लव तिनसे कहतेहुये २ कि जोरामको श्रवण करनेकी इच्छाहोय तो रामके आगे जाके इसचरित्रको गानकरो और जो राम कुछधनदेवें तो कुछ नहींग्रहणकरना ३ इसप्रकार ऋषिकरकेप्रेरित जेकुश लव ते तहां तहां गानकरते विचरतेहुये जहां जहां के लिये जैसे कुछ ऋषिने कहाहै तहां तहां गानकरतेहुये ४ तब इसवार्त्ताको रामचन्द्रभी पुरवासियोंके मुखसे श्रवणकरतेहुये कि अपूर्व एकपाठकरनेकी दोबालकों को रीतिआतीहै जो गानकरके युक्तहैं ५ यहश्रवणकरके बड़ेआश्चर्य युक्तहुये और जब यज्ञकर्म में विश्रामहुआकरता था उससमयमें बड़े बड़े श्रेष्ठमुनियोंको ६ और राजा लोगोंको और जे वेदशास्त्रके जाननेवाले पण्डितलोगोंको और पुराणकेजान- नेवाले पंडितोंको और व्याकरणशास्त्रके जाननेवालेथे और जे औरभी ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य वृद्धथे तिनसबोंको ७ ॥

एतान्सर्वान्समाहूयगायकौसंप्रवेशयत् ॥ तेसर्वेहृष्टमनसोराजानो ब्राह्मणादयः ८ रामंतौदारकौदृष्ट्वाविस्मिताह्यनिमेषणाः ॥ अवोच न्सर्वएवैतेपरस्परमथागताः ९ इमौरामस्यसदृशौबिम्बाद्बिम्बमिवो दितौ ॥ जटिलौयदिनस्यातांनचवल्कलधारिणौ १० विशेषंनाधि गच्छामोराघवस्यानयोस्तदा ॥ एवंसंवदतांतेषांविस्मितानांपरस्प रम् ११ उपचक्रमतुर्गातुंतावुभौमुनिदारकौ ॥ ततःप्रवृत्तंमधुरंगां धर्वमतिमानुषम् १२ श्रुत्वातन्मधुरंगीतमपराह्णेरघूत्तमः ॥ उवाच भरतंचाभ्यांदीयतामयुतंवसु १३ दीयमानंसुवर्णंतुनतज्जगृहतुस्त दा ॥ किमनेनसुवर्णेनराजन्नौवन्यभोजनौ १४ ॥

बुलाके रामायणके गानकरनेवाले जो कुश लव तिनको सभामें बैठालते हुये तब बड़े प्रसन्नचित्त राजालोग और ब्राह्मणादिक ८ रामको और दोनों बालकोंको पलकरहित नेत्रोंसे देखके परस्पर बोलतेहुये ९ कि येदोनोंबालक जैसे सूर्यकेविम्बसे दूसराविम्ब उदयको प्राप्तहोय तैसे रामकेसदृशहैं जो कदा- चित् जटा वल्कलधारी ये दोनों न होते १० तौ राम और इन बालकों की विशेषता कुछ नहींदेखते इसप्रकार बड़ेआश्चर्ययुक्त सब आपसमें वार्त्तालापकर रहेथे ११ उसी समयमें दोनों मुनिबालक गाने का प्रारम्भकरतेहुये तब तो अतिमधुर ऐसागान होताहुआ जोकभी किसीमनुष्यमें किसीने नसुनाथा१२

तब श्रीरामचन्द्र मध्याह्न के उत्तरकाल में अर्थात् दिनके तीसरे पहरमें उस अतिमधुर गानकोसुनके प्रसन्नहो भरतसे यह बोले कि इन गानेवालेबालकों को दशहजार अशरफी देनाचाहिये १३ तब उसीसमयमें भरतजीने लाकेदिया जो सुवर्ण तिसको वे बालक नहीं ग्रहणकरतेहुये और यहवचन बोले कि हे राजन् बनके कन्दमूल फलादि भोजनकरनेवाले जो हम तिनको इस धनसे क्याप्रयोजनहै १४ ॥

इतिसंत्यज्यसंदत्तंजग्मतुर्मुनिसन्निधिम् ॥ एवंश्रुत्वातुचरितंराम स्स्वस्यैवविस्मितः १५ ज्ञात्वासीताकुमारौतौशत्रुघ्नंचेदमब्रवीत् ॥ह नूमंतंसुखेणंचाविभीषणमथांगदम् १६ भगवन्तंमहात्मानंवाल्मीकिं मुनिसत्तमम् ॥ आनयध्वंमुनिवरंससीतंदेवसंमितम् १७ अस्यास्तु पर्षदोमध्येप्रत्ययंजनकात्मजा ॥ करोतुशपथंसर्वेजानंतुगतकल्मषा म् १८ सीतांतद्वचनंश्रुत्वागताःसर्वेतिविस्मिताः ॥ ऊचुर्यथोक्तंरा मेणवाल्मीकिंरामपार्षदाः १९ रामस्यहृद्गतंसर्वंज्ञात्वावाल्मीकिरब्रवी त् ॥ श्वःकरिष्यतिवैसीताशपथंजनसंसदि २० योषितांपरमंदैवंप तिरेवनसंशयः ॥ तच्छ्रुत्वासहसागत्वासर्वेप्रोचुर्मुनेर्वचः २१ ॥

यहकहिकै और उस दियेहुयेसुवर्णको त्यागके वाल्मीकिजीके समीपजाते हुये इसप्रकार श्रीरामचन्द्र अपनाही चरित्र श्रवणकरके आश्चर्ययुक्त होते हुये १५ फिर श्रीराम उन दोनोंको सीता के कुमार जानके शत्रुघ्न औ हनु- मान् औ सुग्रीव औ बिभीषण और अङ्गद इनसेकहतेहुये कि १६ सीताकरके सहित देवसदृश मुनियों में श्रेष्ठ जो भगवान् वाल्मीकि तिनको ल्यावो १७ और इस सभाकेमध्यमें जनकनन्दिनी सीता सबजनोंको निश्चयकरनेवाली शपथकोकरै जिससे सबजानैं कि सीता कल्मषरहितहै अर्थात् निर्दोषहै१८तब ये रामके वचनसुनिकै शत्रुघ्नआदि सब परमविस्मितहो जैसे कुछ रामचन्द्र- जीनेकहाथा तैसेही बाल्मीकिमुनिसे कहतेहुये १९ तब रामके हृदयकाआशय बाल्मीकि जानके बचनबोले कि कल्हके दिन सीता सभामें शपथ करैगी २० क्योंकि स्त्रियोंका पतिही परमदेव है इसमें कुछ संशयनहीं तब शत्रुघ्नादिक यह मुनिकावचन सुनिकै श्रीरामसे जाके कहते हुये २१ ॥

राघवस्यापिरामोपिश्रुत्वामुनिवचस्तथा ॥ राजानोमुनयःसर्वेश्टृ णुध्वमितिचाब्रवीत् २२ सीतायाःशपथंलोकाविजानंतुशुभाशुभम्॥ इत्युक्ताराघवेणाथलोकाःसर्वेदिदृक्षवः २३ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याःशू

ग्राऽवैवसहर्षयः ॥ वानराऽचसमाजग्मुःकौतूहलसमन्विताः २४ ततोमुनिवरस्तूर्णंसस्रीतःसमुपागमत् ॥ अग्रतस्तमृषिंकृत्वायांतींकिंचिदवाङ्मुखी २५ कृतांजलिर्बाष्पकण्ठासीतायज्ञंविवेशतम् ॥ दृष्ट्वालक्ष्मीमिवायांतींब्रह्माणमनुयायिनीम् २६ वाल्मीकेःपृष्ठतःसीतां साधुवादोमहानभूत् ॥ तदामध्येजनौघस्यप्रविश्यमुनिपुंगवः २७ सीतासहायोवाल्मीकिरितिप्राहचराघवम् ॥ इयंदाशरथेसीतासुव्रता धर्मचारिणी २८ ॥

तब श्रीराम मुनिके वचनसुनके यह सब सभासदों से बोले कि हेराजालोगो हेमुनियो मेरावचन तुमसबसुनो २२ कि सीता जोप्रातःकाल शपथकरै तिसका शुभ वा अशुभ तुमजानौ ऐसा वचन जब रामनेकहा तौ२३ब्राह्मण औ क्षत्रिय औ वैश्य औ शूद्रऔ सबलोक देखनेकीइच्छाकरके परमआश्चर्य युक्तहोआतेहुये२४ तिसकेउपरान्त मुनियोंमें श्रेष्ठ जो वाल्मीकिजी सो सीतासहित शीघ्रहीआते हुये अब वाल्मीकिमुनिको आगेकरके गमनकरती औ नीचे को मुखकरे २५ औ हाथजोड़ेहुये और अश्रुपातकरती सीता रामके यज्ञमें प्रवेशकरतीहुई अब जैसे ब्रह्माजीके पीछे स्थिरलक्ष्मी आतीहोय तैसे वाल्मीकि ऋषिके पीछेपीछे आईहुई सीताकोदेखके २६ सबमनुष्यों का साधुवाद होताहुआ अर्थात् धन्य वादहोताहुआ तब उससमयमें सीतासहित वाल्मीकिमुनि मनुष्य समूह के मध्यमें प्रवेशकरतेहुये २७ और फिर रामचन्द्रसे यह कहतेहुये कि हेराम शोभन पातिव्रत्ययुक्त धर्मके करनेवाली पापरहित यह सीता २८ ॥

अपापातेपुरात्यक्तामामाश्रमसमीपतः ॥ लोकापवादभीतेनत्वयाराममहावने २९ प्रत्ययंदास्यतेसीतातदनुज्ञातुमर्हसि ॥ इमौतुसीतातनयौइमौयमलजातकौ३०सुतौतुतवदुर्धर्षौतथ्यमेतद्ब्रवीमिते॥प्रचेतसोहंदशमःपुत्रोरघुकुलोद्वह ३१ अनृतंनस्मराम्युक्तंयथेमौतव पुत्रकौ ॥ बहून्वर्षगणान्सम्यक्तपश्चर्यामयाकृता ३२ नोपाश्नीयां फलंतस्यादुष्टेयंयदिमैथिली ॥ वाल्मीकिनैवमुक्तस्तुराघवःप्रत्यभाषत ३३ एवमेतन्महाप्राज्ञयथावदसिसुव्रत ॥ प्रत्ययोजनितोमह्यंत वावाक्यैराकल्मिषैः ३४ लंकायामपिदत्तोमेवैदेह्याप्रत्ययोमहान् ॥ देवानांपुरतस्तेनमंदिरेसंप्रवेशिता ३५ ॥

लोकापवाद की भयसे मेरे आश्रम के समीप महावनमें तुमने त्याग करी थी सो यह २९ अब शपथ करतीहै जिसमें तुमको प्रतीतहोय सो तुम आज्ञा

देनेके योग्यहौ और ये सीतामें उत्पन्नहुये कुश लव ३० दोनों तुम्हारेही पुत्र हैं यह मैं सत्यही कहताहूं और हेराम प्रचेताका मैं दशम पुत्रहौं ३१ सो अब तक अपना कोई बचन झूठा नहीं स्मरण करताहूं अर्थात् बाल्यावस्थामें भी कभी झूंठ नहींबोलाहौं इससे मैं सत्यकहताहूं ये तुम्हारेही पुत्रहैं और बहुत वर्षतक जो मैंने तप कियाहै ३२ तिस तपके फलको मैं न प्राप्तहोउं जो दोष युक्त सीताहोय अब इसप्रकार मुनीश्वर करके कहेहुये जो रामचन्द्र ३३ सो वचन बोलतेहुये हेमहाप्राज्ञ पंडितोंमें श्रेष्ठ जैसे आप कहतेहौ सो सब ऐसेहै और पापरहित अर्थात् सत्य जे आपके वाक्य तिन्होंकरके मुझको निश्चय हुआ ३४ और लंकामें भी सब देवताओंके आगे इन्द्रादिक लोकपालोंने और अग्निने प्रत्यक्षमुझसेकहा किसीतानिर्दोषहै तो मैंनेगृहमेंप्रवेश करायाथा३५॥

सेयंलोकभयाब्रह्मन्नपापापिसतीपुरा ॥ सीतामयापरित्यक्ताभवान्तत्क्षंतुमर्हसि ३६ ममैवजातौजानामिपुत्रावेतौकुशीलवौ ॥ शुद्धायांजगतीमध्येसीतायांप्रीतिरस्तुमे ३७ देवाःसर्वेपरिज्ञायरामाभिप्रायमुत्सुकाः ॥ ब्रह्माणमग्रतःकृत्वासमाजग्मुःसहस्रशः ३८ प्रजाःसमागमन्हृष्टाःसीताकौशेयवासिनी ॥ उदङ्मुखीह्यधोदृष्टिःप्रांजलिर्वाक्यमब्रवीत् ३९ रामादन्यंयथाहंवैमनसापिनचिंतये॥ तथामेधरणीदेवीविवरंदातुमर्हति४०तथाशपंत्याःसीतायाःप्रादुरासीन्महाद्भुतम् ॥ भूतलाद्दिव्यमत्यर्थंसिंहासनमनुत्तमम् ४१ नागेन्द्रैर्ध्रियमाणंच दिव्यदेहैरविप्रभम् ॥ भूदेवीजानकींदोर्भ्यांगृहीत्वास्नेहसंयुता४२॥

हेब्रह्मन् सो यह सीता पापरहिता और पतिव्रताहै यह मैं जानता भी रहा परन्तु लोकापवादकी भयसे मैंने इसको त्याग किया सो अपराध आप क्षमा करनेके योग्यहो ३६ और मेरेही ये दोनों कुश लव पुत्र उत्पन्न हुये हैं यह मैं जानताहूं परंतु इस लोकमें शुद्ध जो सीताहै तिसमें मेरी प्रीति होय इसी आशयसे मैंने फिर शपथ करने को कहा ३७ अब इसके उपरांत सब देवता रामका अभिप्राय जानके बड़ी उत्कंठायुक्तहो ब्रह्माको आगेकरके अयोध्या को आतेहुये ३८ और हजारों प्रजाके मनुष्य जहां तहां से उस कौतुक देखने को आतेहुये और उससमयमें नवीन रेशमीवस्त्र धारणकरे और उत्तर दिशा को जिसकामुख और नीची दृष्टिकरके भूमिको देखतीहुई सीता हाथजोड़के यहवचन बोलतीहुई ३९ जोरामसे अन्यकिसीको मनसेभीमैं न चिंतनकरती होउँ तौतुम सत्यकरके पृथ्वीदेवीमुझको विवरदेनेके योग्यहो अर्थात् फटकरके मुझको ग्रहणकरौ ४० ऐसा जबसीताने वचनकहातौपरम अद्भुत अर्थात् अ-

त्यन्त आश्चर्ययुक्त ४१ और दिव्य अलौकिक अतिउत्तमरत्न जटित और नागेन्द्र अर्थात् बड़े प्रतापीनाग दिव्यरूप धारण करके जिसको अपने मस्तकपै धारणकरे औ सूर्य तुल्य जिसका प्रकाश ऐसा सिंहासन पृथ्वीको विदारण करके प्रकटहोताहुआ और उससमयमें दिव्यरूपको धारण करे और बड़े स्नेह करके युक्त पृथ्वी देवी अपनीभुजाओंसे सीताजीको ग्रहणकर ४२ ॥

स्वागतंतामुवाचैनामासनेसंन्यवेशयत् ॥ सिंहासनस्थांवैदेहींप्रविशन्तींरसातलम् ४३ निरंतरापुष्पवृष्टिर्दिव्यासीतामवाकिरत् ॥ साधुवादश्चसुमहान्देवानांपरमाद्भुतः ४४ ऊचुश्चबहुधावाचोन्तरिक्षगताःसुराः ॥ अन्तरिक्षेचभूमौचसर्वेस्थावरजंगमाः ४५ वानराश्चमहाकायाःसीताशपथकारणात् ॥ केचिच्चिन्तापरास्तस्याःकेचिद्ध्यानपरायणाः ४६ केचिद्रामंनिरीक्षन्तःकेचित्सीतामचेतसः ॥ मूहूर्त्तमात्रंतत्सर्वंतूष्णींभूतमचेतनम् ४७ सीताप्रवेशनंदृष्ट्वासर्वंसंमोहितंजगत् ॥ रामस्तुसर्वंज्ञात्वैवभविष्यत्कार्यगौरवम् ४८ अजानन्निवदुःखेनशुशोचजनकात्मजाम् ॥ ब्रह्मणाऋषिभिःसार्द्धंबोधितोरघुनन्दनः ४९ ॥

अच्छातेरा आगमनहुआ यह कहिकै उस दिव्य सिंहासन पै बैठालतीहुई इसप्रकार सिंहासन पै स्थित रसातललोक में प्रवेश करतीहुई सीताके ऊपर ४३ निरन्तर देवताओंकी कीहुई दिव्य पुष्पोंकी वृष्टिहोती हुई और देवताओं का परम अद्भुत धन्यवादभी होताहुआ ४४ और आकाशमें स्थितजे देवताते बहुत प्रकारकी वाणियोंको कहतेहुये और आकाश में और पृथ्वीमें जितने स्थावर जंगमजीवरहे ४५ और बड़ेबड़े शरीरके वानरये सब सीताके शपथ के कारणसे कोई तौ चितामें परायणहोगये और कोई सीताके स्वरूपके ध्यानमें स्थित होतेहुये ४६ और कोईरामको देखरहे हैं और कोई सीताको विना देखे मूर्च्छितहोजाते हुये इसप्रकार उससमयमें एक मुहूर्तमात्र अर्थात् दोघड़ीतक सम्पूर्ण जगत् अचेतनके सदृश अर्थात् जड़सदृश होताहुआ ४७ अबसीताका भूमिमें प्रवेश देखकरके सम्पूर्णजगत् मोहित होताहुआ और राम तौ सम्पूर्ण होनेवाले कार्यका निश्चयजान करकेभी ४८ मनुष्य नाटकतासे अज्ञके सदृश दुःखकरके जनक नंदिनीका शोच करतेहुये फिर ऋषियोंकरके सहित ब्रह्मा करके बोध कराये हुये जोराम ४९ ॥

प्रतिबुद्धइवस्वप्नाच्चकारानंतराःक्रियाः ॥ विससर्जऋषीन्सर्वा

न्र्त्विजोयेसमागताः५० तान्सर्वान्धनरत्नाद्यैस्तोषयामासभूरिशः॥ उपादायकुमारौतावयोध्यामगमत्प्रभुः ५१ तदादिनिस्पृहोरामःस र्वभोगेषुसर्वदा॥ आत्मचिन्तापरोनित्यमेकान्तेसमुपस्थितः ५२ ए कांतेध्याननिरतेएकदाराघवेसति॥ ज्ञात्वानारायणंसाक्षात्कौशल्याप्रि यवादिनी ५३ भक्त्यागत्यप्रसन्नंतंप्रणताप्राहहृष्टधीः॥ रामत्वंजग तामादिरादिमध्यांतवर्जितः५४ परमात्मापरानंदःपूर्णःपुरुषईश्वरः॥ जातोसिमेगर्भगृहेममपुण्यातिरेकतः ५५ अवसानेममाप्यद्यसमयो भूद्रघूत्तम॥ नाद्याप्यबोधजःकृत्स्नोभवबंधोनिवर्तते ५६॥

सो निद्रासे कोई जैसे जाग्रत अवस्थाको प्राप्तहोय तैसे फिर अपने स्वरूप के बोधको प्राप्तहो उत्तरकालमें होनेके योग्य जे यज्ञक्रिया तिनको करतेहुये ५० फिर जे यज्ञमें ऋषि लोग ऋत्विज् अर्थात् यज्ञकराने वाले आयेथे तिन सबोंको बहुत धनरत्नादिकोंसे प्रसन्नकरके बिदाकरतेहुये ५१ फिर दोनों सीता के कुमारोंको लेकर अयोध्यामें प्रवेश करतेहुये तबसे लेकरके राम सब राज भोगोंसे निस्पृह होतेहुये ५२ अपने स्वरूपही के ध्यानमें परायण नित्यएकांत देशमें स्थितहोतेहुये एकसमयमें एकांत देशमें स्थित ध्यानमें परायण श्रीरा-मचन्द्रजीथे उसी समयमें प्रियवचन कहने वाली कौशल्या ५३ रामको सा-क्षात्नारायण जानके और समीप आके प्रसन्नस्वरूप जोराम तिनको भक्ति से प्रणामकरके प्रसन्नबुद्धिहो वचन बोलतीहुई कि हे राम तुमसब जगत्के आदि कारणहौ और आपआदि मध्य अन्तकरके रहितहौ ५४ और तुमपरमा-त्माहौ सबके अन्तर्यामीहौ औ परमानन्द स्वरूपहौ औ आप्तकाम होनेसे पूर्ण पुरुषहौइसीसे ईश्वरहौ सबके नियंताहौसो बहुत पुण्योंकी वृद्धिसे मेरे उदर में प्रकटहुये हौ ५५ और हे रघूत्तम इसवृद्धावस्था में मुझको प्रश्नकरने का समय मिला है और अभीतक अज्ञानसे उत्पन्न संसारका बंधनसंपूर्ण नहीं निवृत्त हुआहै ५६॥

इदानीमपिमेज्ञानम्भवबन्धनिवर्त्तकम्॥ यथासंक्षेपतोभूयात्तथा बोधयमांविभो ५७ निर्वेदवादिनीमेवम्मातरम्मातृवत्सलः॥ दया लुःप्राहधर्मात्माजराजर्जरितांशुभाम् ५८ मार्गास्त्रयोमयाप्रोक्ताःपुरा मोक्षाप्तिसाधकाः॥ कर्मयोगोज्ञानयोगोभक्तियोगश्चशाश्वतः५९ भ क्तिर्विभिद्यतेमातस्त्रिविधागुणभेदतः॥ स्वभावोयस्ययस्तेनतस्यभ क्तिर्विभिद्यते ६० यस्तुहिंसांसमुद्दिश्यदम्भम्मात्सर्यमेववा॥ भेदद

ष्टिश्चसंरम्भीभक्तोमेतामसःस्मृतः ६१ फलाभिसन्धिर्भोगार्थीधन कामोयशस्तथा ॥ अर्चादौभेदवुद्ध्यामाम्पूजयेत्सतुराजसः ६२ परस्मिन्नर्पितंयस्तुकर्मनिर्हरणायवा ॥ कर्तव्यमितिवाकुर्याद्भेदवुद्ध्यास सात्विकः ६३ ॥

इससे इससमयमें भी संसार वन्धनका निवृत्त करनेवाला ज्ञान मुझको जैसे होय तैसे संक्षेपसे कृपाकरके कहिये ५७ इसप्रकार विषयों से वैराग्य के कारणसे वचन कहतीहुई और वृद्धावस्थाकरके जीर्ण होरहाहै निष्कल्मषशरीर जिसका ऐसी जो कौशल्या माता तिससे परम दयालु धर्मात्मा जो श्रीरामचन्द्र सो वचन कहतेहुये ५८ कि हे मातः पहिले मैंने मोक्षके प्राप्तिके साधक तीन उपाय कहे हैं कर्मयोग और ज्ञानयोग और निरन्तर भक्तियोग इसका आशय यह है कि यद्यपि (ऋतेज्ञानान्नमुक्तिः) ज्ञानके विना मुक्तिनहीं है इस सिद्धान्त से ज्ञानयोगही मुक्तिकासाधक है तौ भी अधिकारियों के भेदसे तीन उपाय कहेहैं तिसमें जो पुरुष अत्यन्त विषयासक्तहै अनेकप्रकारकेउपदेशोंसेभी जिसको विषयोंसे विराग नहीं होता उसकेलिये मैंने निष्कामकर्म योग उपाय कहा क्योंकि उसकी यह विधि है कि हम वेद पुरुषरूप परमेश्वर की आज्ञा से उसकी प्रसन्नताकेलिये जो वर्णाश्रम विहित नित्य नैमित्तिकर्म तिसका करते हैं इसका फल सिद्ध होउ वा न होउ हमारी कुच चाहनानहीं और जो कुछ होइ भी सो ईश्वरके अर्पण है ऐसीबुद्धिसे जो कर्म कियाजाताहै उसको निष्काम कर्म योग कहते हैं इसके करनेसे अन्तःकरण की शुद्धिद्वारा ज्ञानका अधिकारी वा भक्तिका अधिकारी होताहै तहां जब पूर्ण अन्तःकरणकी शुद्धि होती है तौ सब विषयोंसे तीव्र वैराग्यको प्राप्तहो वेदांतशास्त्र प्रसिद्ध शमदमादि साधनद्वारा गुरुमुखसे महावाक्यश्रवण करतेही शुद्ध अन्तःकरण की महिमासे शीघ्रही मनन निदिध्यासन द्वारा आत्मसाक्षात्कार होतेही कृतार्थताको प्राप्तहोताहै और जो कुछ न्यून अन्तःकरणकीशुद्धिहुई और उसीअवस्था में भक्तोंका सत्संग होगया तौ नित्यनैमित्तिक कर्मोंसे भी चित्तको पृथक्करिकै भगवत्गुणानुवाद श्रवण और भगवन्नामोच्चारणे में प्रीति और सबजीवों के ऊपर दया और परोपकारता और सत्यभाषण और अहर्निश यथा रुचि शरणागत रक्षण भक्तवात्सल्यादि अनन्तकल्याणगुणयुक्त भगवत्स्वरूपके ध्यानकी महिमासे शीघ्रही ब्रह्मात्मैक्य ज्ञानको प्राप्तहो मुक्तहोताहै और जो विषयासक्त पुरुषोंको जो ज्ञानयोगहीका उपदेश कियाजावै तौ आत्मा असंग अकर्त्ता है ऐसे ज्ञानसे कर्ममें श्रद्धाके अभावसे कर्मछूटिजाय और अन्तःकरणकीशुद्धि के अभावसे आत्म साक्षात्कारके नहीं होनेसे धनादिपदार्थों में आसक्ति और

विषयानन्दमें नीरसताके अनुभवके अभावसे संसाररूप आत्यन्तिकदुःख की निवृत्ति दुर्लभही होजायगी और अन्तःकरणकी शुद्धिके नहीं होनेसे बहुत से कलियुगके वेदान्ती लोग औरोंको ब्रह्मज्ञानका उपदेशकरते हैं आप कामक्रोध लोभ से भरेहुये धनादिकन की आशासे विविध उपाय रचते डोलते हैं औ जिस पुरुष की पुण्य विशेष से भगवच्चरणकमल में प्रीति तौ उत्पन्न हुई परन्तु संसारबन्धनकात्याग भी नहीं होसक्ताहै अर्थात् तीव्र वैराग्य नहीं तौ वह भक्तियोगका अधिकारी और जो पूर्ण अन्तःकरणकी शुद्धिसे जिसको तीव्र वैराग्य हुआहोय वह ज्ञानयोगका अधिकारी है और जहां मुक्तिसे भी भक्तिको स्वतन्त्र कहाहै वहां ज्ञान और भक्तिके अभेदमें तात्पर्य है इससे कहीं विरोध नहीं आसक्ता और कर्म और ज्ञानकी तौ कभी एकत्र स्थिति होनहींसक्ती क्योंकि उन दोनोंका दिन रात्रिके तुल्य परम विरोध इससे केवल कर्मसे मुक्तिहोती है यह कथन केवल मनोरथहीमात्रहै तिससे श्रीरामचन्द्रजीने अधिकारीके भेद करकेही तीन उपाय मोक्षके कहे कुछ तीनोंके स्वातन्त्र्य कहनेमें तात्पर्य नहीं और जो ऐसा न कहोगे तौ वेदांतशास्त्रोंका विरोध आवेगा और इसअध्यात्म रामायणही में परस्पर वचनों से विरोधहोगा क्योंकि रामगीतामें ब्रह्मविद्याही का स्वातन्त्र्य वर्णन कियाहै कर्म्मकी स्वतन्त्रताका खण्डन कियाहै ५९ अब श्रीरामचन्द्रजी भक्तियोगकी श्रेष्ठता वर्णनकरते हैं कि हे मातः इनतीनोंमार्गोंमें भक्तियोग सुलभहै औ श्रेष्ठहै परन्तु वह भक्ति सत्व रज तम इनतीनगुणों के भेदसे भेदको प्राप्त होती है क्योंकि जिसका जैसा स्वभाव होगा उसको भक्ति भी वैसेही होगी जैसे सात्विक स्वभाव पुरुषको भक्तिसात्विकी होती है औ रजो गुण स्वभावको राजसी और तामस स्वभाव युक्त पुरुषको तामसीभक्ति होतीहै औ गुणातीत स्वभावको निर्गुण भक्तिहोतीहै ६० तिसका स्वरूपन्यारा न्यारा कहते हैं कि जो पुरुष किसी शत्रुकी हिंसाको और दम्भको अर्थात् लोक में सत्कारको औ अन्य पुरुषके गुणों के नहीं सहने से उसको नीचादिखाने को मनमें विचारिकै भेददृष्टिसे अर्थात् शत्रु मित्रादि दृष्टि से औ संरंभकरके अग्रह वशसे क्रोधकरके परमेश्वर की भक्तिकरै वह तामसभक्त कहाता है तौ उसकी भक्ति भी तामसी हुई ६१ और जो स्वर्ग राज्यादि फलकी इच्छासे औ इस लोकमें इन्द्रियों के भोगके लिये और जो धनकी और यशकी कामनासे प्रतिमादिक में भेद बुद्धि करके उपास्य उपासक भावसे मेरा पूजनकरै वह राजस भक्तहै और उसकी भक्ति राजसीहै ६२ और जो पुरुष जोकुछ करै सो परमेश्वरही के अर्पणकरे और संसाररूप बन्धनकी निवृत्ति के लिये भगवद्भजन हमको अवश्य करनाहै ऐसे मनमें राखिकै दास स्वामि भावसे पूर्वोक्त

पूजनादिकरै वह सात्विक भक्त होताहै और उसकी भक्ति सात्विकी है ६३ ॥

मद्गुणाश्रयणादेवमय्यनंतगुणालये ॥ अविच्छिन्नामनोवृत्तिर्यथागंगाम्बुनोम्बुधौ ॥ तदेवभक्तियोगस्यलक्षणंनिर्गुणस्यहि६४अहैतुक्यव्यवहितायाभक्तिर्मयिजायते ॥ सामेसालोक्यसामीप्यसार्ष्टिसायुज्यमेववा ६५ ददात्यपिनगृह्णंतिभक्तामत्सेवनंविना ॥ सएवात्यंतिकोयोगोभक्तिमार्गस्यभामिनि ६६ मद्भावंप्राप्नुयात्तेनअतिक्रम्यगुणत्रयम् ॥ महताकामहीनेनस्वधर्माचरणेनच ६७ कर्मयोगेनशस्तेनवर्जितेनविहिंसनम् ॥ मद्दर्शनस्तुतिमहापूजाभिःस्मृतिवंदनैः ६८ भूतेषुमद्भावनयासंगेनासत्यवर्जनैः ॥ बहुमानेनमहतांदुःखिनामनुकम्पया ६९ स्वसमानेषुमैत्र्याचयमादीनांनिषेवया ॥ वेदान्तवाक्यश्रवणान्ममनामानुकीर्तनात् ७० ॥

और हेमातः मेरे गुणोंके श्रवणमात्रहीसे अर्थात् सुनतेही जिसपुरुष की मनोवृत्ति अनन्त कल्याणगुणालय अर्थात् अनंतकल्याण गुणोंका आश्रय जो मैं हूं तिस में विच्छेदरहित कभी नहीं छुटनेवाली जैसे गंगाके जलका समुद्र में बड़ी उमंग से प्रवेश होताहै तैसे स्वभावहीसे प्रवेश करै सो निर्गुण भक्ति* योगका लक्षणहै यद्यपि अनन्तकल्याण गुणालय सगुणस्वरूपहीमें गंगा प्रवाह सदृश भक्तकी चित्तवृत्तिका निरंतर प्रवाह यहां वर्णनकिया तौ भी भक्तके चित्त वृत्तिमें कामादि कपटके नहीं होनेसे औ भेदबुद्धिके अभावसे सगुण निर्गुण की एकरूप ताकी भावनासे नैर्गुण्यफलही इसकाहोना इससे इसको निर्गुण भक्ति कहते हैं ६४ इसी आशयसे अब श्रीरामचन्द्रजी कहते हैं कि हेमातः प्रयोजन रहित और निरन्तर जो मेरेविषे अर्थात् परमानन्द स्वरूप जो मैं तिस में भक्तिनाम प्रीतिहोतीहै सो उस भक्तको सालोक्य औ सामीप्य औ सारूप्य औ सायुज्यइसप्रकारसे चारप्रकारकी मुक्तिको देतीभीहै ६५ परन्तु मेरेभक्त सिवायमेरेसेवनके उसकीनहींचाहकरतेहैं अर्थात् परमानन्दस्वरूपमें चित्तवृत्ति के रमणसे किसी पदार्थकी अपेक्षा होतीही नहीं और हे मातः यही उसभक्ति योगका पूर्ण योग है जो किसी पदार्थकी इच्छा न होना ६६ और इसी भक्ति योग करके तीनों गुणोंको अति क्रमणकरके अर्थात् उल्लंघनकरके मेरे भाव को प्राप्तहोताहै अब इस भक्ति योगके साधन कहतेहैं कि कामना और प्राणि-

---

* इसी को योगशास्त्रमें संप्रज्ञात समाधि कहते हैं परंतु वहां अभ्यास करके होतीहै यह सहज है इतना अन्तरहै २८ ॥

यों की हिंसा तिस करके रहित जो बड़ाभारी अपने धर्म्मका आचरण ६७ सो हुआ क्रियायोग तिस करके और मेरा दर्शन औ स्तुति औ प्रणाम इन्हों करके ६८ औ सब प्राणियोंमें मेरी भावना करनेसे और दुष्टोंके संगको परित्याग करनेसे अथवा वैराग्य करके और झूठके त्यागसे और महात्मा पुरुषों के बहुत मानकरनेसे और दुःखित पुरुषोंके ऊपर दयाकरनेसे ६९ और अपने समानमें मैत्री करनेसे और यम नियमादिकों के सेवन करनेसे और वेदांत वाक्योंके श्रवण करनेसे और मेरे नामके कीर्तनसे ७० ॥

सत्संगेनार्जवेणैवह्यहमःपरिवर्जनात् ॥ कांक्षयाममधर्मस्यपरिशुद्ध्यांतरोजनः ७१ मद्गुणश्रवणादेवयातिमामंजसाजनः ॥ यथा वायुवशात्गंधःस्वाश्रयाद्घ्राणमाविशेत्७२योगाभ्यासरतंचित्तमेव मात्मानमाविशेत् ॥ सर्वेषुप्राणिजातेषुह्यहमात्माव्यवस्थितः ७३ तमज्ञात्वाविमूढात्माकुरुतेकेवलंबहिः ॥ क्रियोत्पन्नैर्नैकभेदैर्द्रव्यैर्मेनास्वतोषणम् ७४ भूतावमानिनाचार्यामर्चितोहंनपूजितः ७५ तावन्मामर्चयेद्देवंप्रतिमादौस्वकर्मभिः ॥ यावत्सर्वेषुभूतेषुस्थितंचात्मनि नस्मरेत् ७६ यस्तुभेदंप्रकुरुतेस्वात्मनश्च परस्य च ॥ भिन्नदृष्टेर्भयं मृत्युस्तस्यकुर्यान्नसंशयः ७७ ॥

और धर्मनिष्ठसत्पुरुषों के संग से औ कोमल स्वभावसे और देहादिक अनात्म पदार्थों में अहंकारके त्यागसे और शुद्ध सात्विक भगवद्धर्म्म में इच्छा करनेसे इनसब साधनों से शुद्धहुआ अन्तःकरण जिसका ऐसा जो पुरुष ७१ तिसकामन मेरे गुणोंके सुनतेमेरे में आताहै अर्थात् ब्रह्माकार उसकी चित्त वृत्तिहोतीहै फिर वह मेराही स्वरूप होजाताहै और हे मातः जैसे पवनकेवश से कमलादिकों का सुगन्धघ्राण इन्द्रियमें आइके प्राप्तहोता है ७२ ऐसेही योगाभ्यास करके वशीकृत जो चित्तसो बिकार रहितहुआ आत्मामें प्रवेश करताहै और सब प्राणियों में मैंही आत्मरूपकरके स्थितहों ७३ तिस आत्माको बिना जाने देहबुद्धिसे सबप्राणियोंमें द्वेषकरता हुआ विमूढ़ात्मा पुरुष केवल बाहिरकी क्रिया करके उत्पन्नहुये जे गन्ध पुष्पाक्षतादि द्रव्यतिन्होंकरके बहिर्दृष्टिसे भक्तिरहित प्रतिमाके बिषे मेरा पूजनकरताहै ७४ तौतिस प्राणियों के अवमान करनेवाले देहदृष्टि पुरुषके ऊपर नमैं प्रसन्नहोताहूं और न उनकी पूजाकरके मैं पूजितहोताहूं इसका आशययहहै किसब जीवोंको मेरी दृष्टि से सत्कारकरने वाला जोपुरुष सो मेरी सर्व व्यापकताके निश्चयसे प्रतिमा में मेरी बुद्धिसे प्रेमकरके पूजन करताहै वहीपूजन मुझको पहुंचता है और

जो भिन्नदर्शी पुरुषभक्ति श्रद्धारहित मेरापूजन करताहै उससे मैं प्रसन्ननहीं होताहूं इससे भेदबुद्धिका त्यागके सब जीवोंमें दयामैत्री सत्कारादि यथोचित करै इसमें भगवानका तात्पर्यहै और प्रतिमा पूजनके निषेधमें तात्पर्य नहींहै अन्यथा यहांहीं रामके आगमनके उत्सवमें भरतजीने शत्रुघ्नसे कहाकि कोई पवित्ररूप पुष्पदीपोपहारादिकों करके नगरभरे के देवमन्दिरों में सब देव मूर्तियोंका पूजनकरै इत्यादि वाक्योंसे विरोध पड़ैगा और वास्तवमें तौकर्म लक्षणा साधन भक्तिहीमें प्रतिमा आदि बाह्यआधारोंमें अन्तःकरणकी शुद्धि केलिये गन्धमाल्यादि बाह्यसामग्रियोंकरके भगवत्पूजनकी आवश्यकताहै और ज्ञान लक्षणा भक्तिमेंतौ सबजीवों में दया और शमदमादि साधन पूर्वक ध्यान धारणा समाध्यादि जे अन्तरंग साधनहैं तिन्होंकी आवश्यकताहै इसी आशयसे श्रीराम कौशल्यासेकहतेहैं ७५ कि हे मातः तबतक वर्णाश्रम धर्मोंकरके प्रतिमा आदिमें मेरा पूजनकरै जबतक सब प्राणियोंमें और अपने हृदयमें स्थित जो मैंहूं तिसको निश्चयकरके न जानै ७६ अर्थात् हृदयमें जब ठीकठीक मुझको जानिलेवै तौध्यानादिकरके हृदिस्थ जो मैंहूं तिसीका पूजनकरै और जोपुरुष अपना विराना ऐसा भेदकरके देखताहै उस भेद देखने वाले पुरुषको मृत्यु-रूप होकरके मैं भयकरताहूं इसमें कुछ संशय नहीं है ७७ ॥

मामतःसर्वभूतेषुपरिच्छिन्नेषुसंस्थितम् ॥ एकंज्ञानेनमानेनमैत्र्या चार्चेदभिन्नधीः ७८ चेतसैवानिशंसर्वभूतानिप्रणमेत्सुधीः ॥ ज्ञात्वा मांचेतनंशुद्धंजीवरूपेणसंस्थितम् ७९ तस्मात्कदाचिन्नेक्षेतभेदमी श्वरजीवयोः ॥ भक्तियोगोज्ञानयोगोमयामातरुदीरितः ८० आल म्ब्यैकतरंवापिपुरुषःशमसृच्छति ॥ ततोमांभक्तियोगेनमातःसर्वहृदि स्थितम् ८१ पुत्ररूपेणवानित्यंस्मृत्वाशांतिमवाप्स्यसि ॥ श्रुत्वारा मस्यवचनंकौशल्यानंदसंयुता ८२ रामंसदाहृदिध्यात्वाछित्त्वासंसार बन्धनम् ॥ अतिक्रम्यगतीस्तिस्रोप्यवापपरमांगतिम् ८३ कैकेयी चापियोगंरघुपतिगदितंपूर्वमेवाधिगम्यश्रद्धाभक्तिप्रशांताहृदिरघुपति मकंभावयंतीगतासुः ॥ गत्वास्वर्गेस्फुरंतीदशरथसहितामोदमानाव तस्थेमाताश्रीलक्ष्मणस्याप्यतिविमलमतिःप्रापभर्त्तुःसमीपम् ८४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेउत्तर काण्डेमातृणांस्वर्गप्रस्थानंनामसप्तमस्सर्गः ७॥

और हे मातः इसकारणसे सब न्यारेन्यारे भूतों में मैंहींएकपरमात्मास्थि-

तहूँऐसे ज्ञानकरके सबप्राणियोंका सत्कार और मित्रताकरके अभेददृष्टिसेमेरा पूजनकरै ७८ और ज्ञानीपुरुष सबमें जीवरूपकरके स्थितजो चेतनरूप मैं तिसकोजानके मनहीसे सब प्राणियोंको प्रणामकियाकरै क्योंकि निर्गुण परमात्मामें कायव्यापारका असंभव इसहेतुसे ७९ जिससे मैंहीं सर्वत्रजीवरूपकरके स्थितहौं इसकारणसे कभीजीव ईश्वरके भेदको न देखै अब इसप्रकार हेमातः भक्तियोग और ज्ञानयोग मैंने तुमसे कहा ८० सो इनदोनोंमें एकको जो आश्रयणकरै तौ वह पुरुष शांतिरूप सुखको प्राप्तहोताहै इससे हे मातःजोमैंने कहा भक्तियोग तिसकरके सब प्राणियोंके हृदयमें स्थितजो मैं तिसको ईश्वर रूपकरके ८१ वा पुत्ररूप करके स्मरणकरती हुई शांतिको प्राप्तहोगी अर्थात् सब दुःखोंकी निवृत्तिको प्राप्तहोगी यहरामका बचन सुनके आनन्द युक्त कौशल्या ८२ सो राम को सदाहृदयमें ध्यानकरके संसाररूप बन्धनको काटिकै सात्विकी राजसी तामसी इनतीनों गतियों को उल्लंघनकरके परमगतिको प्राप्त होती हुई अर्थात् मोक्षको प्राप्तहोती हुई ८३ और कैकेयीभी जो चित्रकूट पर्वत पै रामने पहिले योगका उपदेश कियाथा उसको जानके श्रद्धा औ भक्ति इन्होंकरके प्रशांतहुआ हृदय जिसका ऐसीहो रामको हृदयमें ध्यान करतीहुई प्राणों को त्यागकर स्वर्गको प्राप्तहो दिव्यरूप करके प्रकाशमान दशरथकरके सहित आनन्द करतीहुई स्थितहोतीहुई और अत्यन्त निर्मलहै मति जिसकी ऐसी जो श्रीलक्ष्मणजी की माता सुमित्रा सो भी दशरथ के समीप प्राप्तहोती हुई ८४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेउत्तरकाण्डेभाषाटीकायां मातॄणांस्वर्गप्रस्थापनोनामसप्तमःसर्गः ७ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ अथकालेगतेकस्मिन्भरतोभीमविक्रमः ॥ युधाजितामातुलेनह्याहूतोगात्ससैनिकः १ रामाज्ञयागतास्तत्रहत्वागंधर्वनायकान् ॥ तिस्रःकोटीःपुरेद्वेतुनिवेश्यरघुनंदनः २ पुष्करं पुष्करावत्यांतक्षंतक्षशिलाह्वये ॥ अभिषिच्यसुतौतत्रधनधान्यसुहृतौ३ पुनरागत्यभरतोरामसेवापरोभवत् ॥ ततःश्रीरामोरघुश्रेष्ठोलक्ष्मणंप्राहसादरम्४ उभौकुमारौसौमित्रेगृहीत्वापश्चिमांदिशम् ॥ तत्राभिल्लान्विनिर्जित्यदुष्टान्सर्वापकारिणः ५ अंगदश्चित्रकेतुश्चमहासत्वपराक्रमौ ॥ द्वयोर्द्वेनगरेकृत्वागजाश्वधनरत्नकैः ६ अभिषिच्यसुतौतत्रशीघ्रमागच्छमांपुनः॥रामस्याज्ञांपुरस्कृत्यगजाश्वबलवाहनः७॥

दो० । सर्गआठमें लषणको त्यागकियो रघुनाथ ।
सोपुनियोगसमाधि निजलोकगयोअहिनाथ १

अब श्रीमहादेवजी पार्वतीजीसेकथा वर्णनकरतेहैं कि हेपार्वति अब इसके उपरांत कुछसमय व्यतीतहुआ तौ युधाजित नाम अपने मामा करके बुलाये हुये बड़ेपराक्रमी भरतजी सेनाकरके सहित रामकी आज्ञासे केकयदेशको जाते हुये १ फिर वहां उस देशके समीप गन्धर्व वासकरतेथे तिनकेसंग युद्ध करके तीन करोर गन्धर्वोंकोमारके भरतजीदोनगर बसातेहुये २ तिसमें पुष्करावती नगरीमें पुष्करको और तक्षशिलनाम नगरमें तक्षपुत्रको राज्याभिषेक करके फिर उन दोनों पुत्रों को धनधान्य से परिपूर्ण करके ३ फिर भरत अयोध्यामें आके रामसेवाहीमें तत्पर होतेहुये फिर प्रसन्नहोके रामचन्द्र आदर पूर्वक लक्ष्मणसे बोले ४ कि हेलक्ष्मण दोनों अपनेपुत्रोंको लेके पश्चिम दिशाको तुम जाउ तहां बड़ेदुष्ट भीलरहतेहैं तिनको तुमजीतिकै ५ हाथी घोड़े धन रत्नोंकर के पूर्ण दो नगर तहां बसाकरके अंगद और चित्रकेतु इन दोनों पुत्रोंका अभिषेककरके ६ अर्थात् एकएकनगरका राज्यदैके फिर तुमशीघ्रही मेरेसमीपआवो तब लक्ष्मण रामकी आज्ञाको ग्रहणकरके हाथी घोड़े आदि सेनाकोलैके ७ ॥

गत्वाहत्वारिपून्सर्वान्स्थापयित्वाकुमारकौ॥ सौमित्रिःपुनरागत्य रामसेवापरोभवत् ८ ततस्तुकालेमहतिप्रयातेरामंसदाधर्मपथेस्थितंहरिम् ॥ द्रष्टुंसमागाद्दृषिवेषधारीकालस्ततोलक्ष्मणमित्युवाच ९ निवेदयस्वातिबलस्यदूतंमांद्रष्टुकामंपुरुषोत्तमाय ॥ रामायविज्ञापनमस्तुतस्यमहर्षिमुख्यस्यचिरायधीमन् १० तस्यतद्वचनंश्रुत्वासौमित्रस्त्वरयान्वितः ॥ आचचक्षेथरामायसंप्राप्तन्तपोधनम् ११ एवं ब्रुवंतंप्रोवाचलक्ष्मणंराघवोवचः ॥ शीघ्रम्प्रवेश्यतांतातमुनिःसत्कारपूर्वकम् १२ लक्ष्मणस्तुतथेत्युक्त्वाप्रावेशयततापसम् ॥ स्वतेजसा ज्वलंतंतंघृतसिक्तंयथानलम् १३ सोभिगम्यरघुश्रेष्ठंदीप्यमानःस्वतेजसा ॥ मुनिर्मधुरवाक्येनवर्धस्वेत्याहराघवम् १४ ॥

वहांजाके उन शत्रुओंको मारके और दोनों पुत्रोंको राज्यमें स्थापनकरके फिरआके रामसेवामें परायण होतेहुये ८ फिर तिसके उपरांत बहुत काल व्यतीतहुआ तब सदा धर्ममार्गमें स्थित और सबके हृदयमें स्थित जो राम तिनको देखनेको कालही साक्षात् ऋषिरूपको धारणकर आके लक्ष्मणसे यह वचन बोलताहुआ ९ कि हेलक्ष्मण सब महर्षियोंमें श्रेष्ठ अतिबलका मैं दूत हौं सो रामकेदेखनेकी इच्छाकरके आयाहौं और उनमहर्षिका संदेशा देरतक

मुझको कहनाहै यह सब पुरुषोत्तम जो राम तिनसेजाके खबरि करौ १० तब तौ यह उसकाल पुरुषका वचन सुनके बड़ी शीघ्रतायुक्त होके प्राप्तहुआ जो तपोधन तिसको रामसे कहतेहुये ११ ऐसे वचनकहतेहुये जो लक्ष्मण तिनसे राम बोले कि हे तात शीघ्रही उस मुनिको सत्कारपूर्वक मेरेपास ल्यावो १२ तब लक्ष्मण घृतकी आहुति से प्रज्वलित जो अग्नि तिसके तुल्य तेज करके प्रकाशमान जो वह तपस्वी तिसको रामकेसमीप प्रवेश करातेहुये १३ तौ वह मुनि अपने असाधारण अर्थात् जो किसी और में न पायाजाय ऐसे तेजकरके प्रकाशमान जो राम तिनसे मधुरवचन करके बर्द्धस्व अर्थात् इससे भी अधिक ऐश्वर्य करके वृद्धि को प्राप्तहोउ यह कहताहुआ १४॥

तस्मैसमुनयेरामःपूजांकृत्वायथाविधि॥ पृष्टानामयमव्यग्रोरामःपृष्टोतथेनसः १५ दिव्यासनेसमासीनोरामःप्रोवाचतापसम्॥ यदर्थमागतोसित्वमिहतत्प्रापयस्वमे १६ वाक्येनचोदितस्तेनरामेणाहमुनिर्वचः॥ द्वन्द्वमेवप्रयोक्तव्यमनालक्ष्यंतुतद्वचः १७ नान्येनचैतच्छ्रोतव्यंनाख्यातव्यंचकस्यचित्॥ शृणुयाद्वानिरीक्ष्येद्वायःसबध्यस्त्वयाप्रभो १८ तथेतिचप्रतिज्ञायरामोलक्ष्मणमब्रवीत्॥ तिष्ठत्वंद्वारिसौमित्रेनायात्वत्रजनोरहः १९ यद्यागच्छतिकोवापिसबध्योमेनसंशयः॥ततःप्राहमुनिरामोयेनवात्वंविसर्ज्जितः २०यत्तेमनीषितंवाक्यं तद्वदस्वममाग्रतः॥ ततःप्राहमुनिर्वाक्यंशृणुरामयथातथम् २१॥

फिर उस तपस्वी करके कुशल प्रश्न पूछेगये जो रामसो उस तपस्वीका विधि पूर्वक पूजनकरके १५ और कुशल पूछिके बचन बोलते हुये कि हे मुने जिसकारण से आप आये हैं सो कहिये १६ जब रामने ऐसा कहा तौ वह मुनि बोला कि हेराम मैं और आप दोई जनेहोयँ तीसराकोईनहोय तो मैं आपसे वार्त्ताकरौं क्योंकि वहबचन किसी और के जाननेकेयोग्यनहींहै अर्थात् अतिरहस्य है १७ जो मैं वचन आपसे कहौं तिसको और न कोईसुनै औरन और के आगे आप कहैं और हमारे आपके वार्त्तालाप करने में जो कोई सुने अथवा देखै सो आपका वध्यहोगा अर्थात् वह माराजावे १८ फिर श्री राम तैसेही उस मुनिसे प्रतिज्ञाकरके लक्ष्मण से बचन बोले कि हे लक्ष्मण तुम द्वारपै स्थित रहौ जिसमें कोई पुरुष मेरे समीप न आनेपावै १९ औरजोकोई आवैगा उसकोमैं मारडालोंगा इसमें कुछ संदेहनहींहै फिर तिसके अनन्तर राम मुनिसे कहतेहुये कि जिसने तुमको भेजाहै तिसकाजोसंदेशाहोय अथ-

वा तुमको जो कुछ अभीष्टहोय सो मेरे आगेकहौ २० तव वह मुनि बोला हे राम मैं सत्यआपसे कहताहूं तिसकोसुनिये २१ ॥

ब्रह्मणाप्रेषितोस्मीशकार्यार्थेतेंतिकंप्रभो ॥ अहंहिपूर्वजोदेवतव पुत्रःपरंतप २२ मायासंगमजोवीरकालःसर्वहरःस्मृतः ॥ ब्रह्मात्वा माहभगवान्सर्वदेवर्षिपूजितः २३ रक्षितुंस्वर्गलोकस्यसमयस्तेम हामते ॥ पुरात्वमेकएवासीर्लोकान्संहृत्यमायया २४ भार्य्ययासहि तस्त्वंमामादौपुत्रमजीजनः॥तथाभोगवतंनागमनंतमुदकेशयम् २५ माययाजनयित्वात्वंद्वौससत्वौमहाबलौ ॥ मधुकैटभकौदैत्यौहत्वामे दोस्थिसंचयम् २६ इमांपर्वतसंबद्धांमेदिनींपुरुषर्षभ ॥ पद्मोदिव्या र्कसंकाशेनाभ्यामुत्पाद्यमामपि २७ मांविधायप्रजाध्यक्षंमयिसर्वंन्य वेदयत् ॥ सोहंसंयुक्तसंभारस्त्वामवोचंजगत्पते २८ ॥

हे ईश मैं ब्रह्माका भेजाहुआ कुछ ब्रह्माका अभीष्ट कार्य के अर्थ आयाहूं और हे राम आपका जब मायासे संयोगहुआ तो सब से ज्येष्ठ आपका पुत्र सबके संहारकरनेवाला काल नामकरके मैं हूं २२ औ हेभगवन् सब देवर्षियों करके पूजित जो ब्रह्मा सो जो कहतेहुये हैं तिसको सुनिये हे महामते अबयह स्वर्गलोकके रक्षाकरनेका तुम्हारासमय है २३ तुम मायाकरके सब लोकोंका संहारकरके पहिले तुम्हीं एक होतेहुये फिर अपनी मायारूप भार्या करके सहित तुम में जो ब्रह्मा तिसको सृष्टि की आदि में अपनापुत्र रूपकरके उत्पन्न करतेहुये २४ तैसेई वहुतहैं फण जिसके और जलमें शयनकरने वाला ऐसा जो अनन्त नाग तिसको मायाकरके उत्पन्नकरतेहुये इसप्रकार शेषनागऔ मैं ये दोनों बड़े बल पराक्रम युक्तहोतेहुये २५ औ हेपुरुषर्षभ पुरुषोंमेंश्रेष्ठ पहिले आप मधु औ कैटभ इन दैत्योंको मारके इनके मेदा अर्थात् चरबी अस्थिसमूह इन्होंकरके पर्वत सहित पृथिवीको रचतेहुये २६ और सूर्य्यके तुल्य है प्रकाश जिसका ऐसा दिव्य अपने नाभि कमल तिसके ऊपर सब प्रजाओंका स्वामी जो मैं हूं तिसको रचिकै फिर सब प्रजाका भार मेरेविषे स्थापन करतेहुये २७ फिर अंगीकार किया प्रजाका पालनादि भारजिसने ऐसाजो मैं सो हेजगत्पते तुमसे प्रार्थना करताहुआ कि जो मेरे पराक्रम के नाशकरनेवाले अर्थात् मेरी पूजाके नाशकरने वाले भूतहैं तिनसे मेरी रक्षाका विधानकरिये २८ ॥

रक्षाविधत्स्वभूतेभ्योयेमेवीर्यापहारिणः ॥ ततस्त्वंकश्यपाज्जातो विष्णुर्वामनरूपधृक् २९ हतवानसिभूभारंबधाद्रक्षोगणस्यच ॥ स

र्वांसूत्सार्यमाणासुप्रजासुधरणीधर ३० रावणस्यबधाकांक्षीमर्त्यलोकमुपागतः॥ दशवर्षसहस्राणिदशवर्षशतानिच ३१ कृत्वावासस्यसमयंत्रिदशेष्वात्मनःपुरा॥ सतेमनोरथःपूर्णःपूर्णेचायुषितेनृषु ३२ कालस्तापसरूपेणत्वत्समीपमुपागमत्॥ ततोभूयश्चतेबुद्धिर्यदिराज्यमुपासितुम् ३३ तत्तथाभवभद्रंतेएवमाहपितामहः॥यदितेगमनेबुद्धिर्देवलोकंजितेन्द्रिय३४सनाथाविष्णुनादेवाभवंतुविगतज्वराः॥ चतुर्मुखस्यतद्वाक्यंश्रुत्वाकालेनभाषितम् ३५॥

तौ विष्णुरूप आप कश्यपऋषि से अदिति में वामनरूप को धारणकरे प्रकटहोतेहुये फिर राक्षसोंके समूहको मारके पृथ्वी के भारको हरतेहुये २९ और हेधरणीधर अब जब प्रजासब दुःखकरके पीड़ितहुई ३० तौ रावणके बध की इच्छासे मनुष्य लोक में आके प्राप्तहुये सो दशहजार और दशशतबर्ष पृथिवी में अपने वासका समय अर्थात् संकेत देवताओं में करतेहुये ३१ सो तुम्हारा मनोरथ पूराहुआ और मनुष्यों की आयुभी पूर्णहुई ३२ और काल जोहै सो तपस्वीके बेषकरकेआपके समीपप्राप्तहोताहै और हेराम तिससंकेत से अधिक पृथिवी के राज्यकरनेकी जो तुम्हारीबुद्धिहो तौ तैसेही करिये अब यह कालपुरुष कहताहै कि हेराम इतनेवचन ब्रह्मा कहिकै फिर यह कहते हुये ३३ और हेजितेन्द्रिय जो तुम्हारे स्वर्गलोकजानेकी इच्छाहोय तौ बिष्णु करके सबदेवता संतापरहित औ सनाथहोयँ ३४ अब राम कालकेकहेहुये ये ब्रह्माकेवचन सुनिकै हँसकरके कालसे यहबोले ३५॥

हसन्रामस्तदावाक्यंकृत्स्नास्यांतकमब्रवीत्॥ श्रुतंतववचोमेद्यममापीष्टतरंतुतम् ३६ संतोषःपरमोज्ञेयस्त्वदागमनकारणात्॥ त्रयाणामपिलोकानांकार्यार्थंममसंभवः ३७ भद्रंतेस्त्वागमिष्यामियतयेवाहमागतः॥ मनोरथस्तुसंप्राप्तोनमेत्रास्तिविचारणा ३८ मत्सेवकानांदेवानांसर्वकार्येषुवैमया॥ स्थातव्यंमाययापुत्रयथाचाहप्रजापतिः ३९ एवंतयोःकथयतोर्दुर्वासामुनिरभ्यगात्॥ राजद्वारंराघवस्यदर्शनापेक्षयाहतम् ४० मुनिर्लक्ष्मणमासाद्यदुर्वासावाक्यमब्रवीत्॥ शीघ्रंदर्शयरामंमेकार्यंमेत्यंतमाहितम् ४१ तच्छ्रुत्वाप्राहसौमित्रिर्मुनिंज्वलनतेजसम्॥रामेणकार्यंकिंतेद्यकिन्तेभीष्टंकरोम्यहम् ४२॥

कि हेकाल मैंने तुम्हारे येबचनसुने और मुझकोभी यही अभीष्टरहा सो तुम्हारे आगमनके कारणसे मुझको परम संतोषहुआ ३६ और तीनोंलोकों

के कार्य के अर्थ मेरा आविर्भाव है और काल तुम्हारा कल्याणहोय और मैं जहांसे आयाहौं तहांहीं जाऊंगा ३७ और जो मेरामनोरथ था सो प्राप्तहुआ और इसमें कुछमुझको विचारकरना नहीं ३८ और मेरे सेवकजे देवतातिन के कार्य्य में हे पुत्र सदा मुझको स्थित होनाचाहिये इससे जैसे ब्रह्माने कहा तैसे मैं करौंगा इसप्रकार राम और काल दोनों वार्त्ताकररहेथे तबतक दुर्वासा ऋषि आतेहुये ३९ अब दुर्वासामुनि शीघ्रही राम के दर्शनकी इच्छासे द्वारपै स्थित जो लक्ष्मण तिनको प्राप्तहोके यह कहतेहुये ४० कि हे लक्ष्मण शीघ्र ही रामको मुझे दिखाओ मेरा कुछकार्य्य आवश्यकहै वह सुनके लक्ष्मण अग्निके तुल्य जो दुर्वासा तिनसे वचन बोलतेहुये ४१ कि हे मुने राम से आपका क्याकार्य्य है तिसको कहिये और जो आपका अभीष्टहै तिसको मैं अभीकरौं और राजा तो किसी कार्य्य में व्यग्रहैं इससे एक मुहूर्त्तभर प्रतीक्षा करिये अर्थात् परखिये ४२ ॥

राजाकार्यांतरेऽव्यग्रोमुहूर्तंसंप्रतीक्ष्यताम् ॥ तच्छ्रुत्वाक्रोधसंतप्तो मुनिःसौमित्रिमब्रवीत् ४३ अस्मिन्क्षणेतुसौमित्रेनदर्शयसिचेद्विभुम् ॥ रामंसविषयंवंशंभस्मीकुर्य्यांन्नसंशयः ॥ ४४ श्रुत्वातद्वचनं घोरमृषेर्दुर्वाससोभृशम् ॥ स्वरूपंतस्यवाक्यस्यचिन्तयित्वासलक्ष्मणः ४५ सर्वनाशाद्वरंमेद्यनाशोह्येकस्यकारणात् ॥ निश्चित्यैवंततोगत्वारामायप्राहलक्ष्मणः ४६ सौमित्रेर्वचनंश्रुत्वारामःकालंव्यसर्जयत् ॥ शीघ्रंनिर्गम्यरामोपिददर्शात्रेःसुतंमुनिम् ४७ ॥ रामोभिवाद्यसंप्रीतोमुनिंपप्रच्छसादरम् ॥ किंकार्यंतेकरोमीति मुनिमाहरघूत्तमः ४८ तच्छ्रुत्वारामवचनंदुर्वासाराममब्रवीत् ॥ अद्यवर्षसहस्राणामुपवाससमापनम् ४९ ॥

यहवचन सुनिकै दुर्वासा क्रोधकरके संतप्तहोके लक्ष्मण से बोले ४३ कि हे लक्ष्मण जो इससमयमें रामको नहीं दर्शन करातेहौ तौ राज्य कुलसहित रामको भस्मकर देऊंगा इसमें कुछ संशय नहीं है ४४ तौ लक्ष्मण यह घोर वचन दुर्वासाका सुनिकै उस वचन के अर्थको विचारकरके यह निश्चय करते हुये ४५ कि दुर्वासा के कारणसे सबके नाश से मेरे एकका नाशहोना श्रेष्ठ है यह निश्चयकर रामकेसमीप जाके लक्ष्मण वचन बोलतेहुये ४६ तब राम लक्ष्मणके वचन सुनके कालको तो बिदा करतेहुये और शीघ्रही उसस्थान से निकलिकै अत्रिकेपुत्र जो दुर्वासामुनि तिनको देखतेहुये ४७ फिर राम प्रसन्न होके मुनिको प्रणामकरके मुनिसे पूछतेहुये कि हे मुने क्याकार्य्य आपका

मैं करौं तिसको कहिये ४८ तब यह वचन सुनके दुर्वासा बोले कि हे राम आज हजारवर्षका उपवास मेरा समाप्त हुआहै ४९॥

अतोभोजनमिच्छामिसिद्धंयत्तेरघूत्तम॥ रामोमुनिवचःश्रुत्वासंतोषेणसमन्वितः ५० ससिद्धमन्नंमुनयेयथावत्समुपाहरत्॥ मुनिर्भुक्त्वान्नममृतंसंतुष्टःपुनरभ्यगात् ५१ स्वमाश्रमंगतेतस्मिन्रामःसस्मारभाषितम्॥ कालेनशोकदुःखार्त्तोविमनाश्चातिविह्वलः ५२ अवाङ्मुखोदीनमनानशशाकाभिभाषितुम्॥ मनसालक्ष्मणंज्ञात्वाहतप्रायंरघूद्वहः ५३ अवाङ्मुखोबभूवाथतूष्णीमेवाखिलेश्वरः॥ ततोरामंविलोक्याहसौमित्रिर्दुःखसंप्लुतम् ५४ तूष्णींभूतंचिंतयतंगर्हितंस्नेहबन्धनम्॥ मत्कृतेत्यजसंतापंजहिमांरघुनन्दन ५५ गतिःकालस्यकालितापूर्वमेवेदृशीप्रभो॥ त्वयिहीनप्रतिज्ञेतुनरकोमेध्रुवंभवेत् ५६॥

इससे जोभोजन सिद्ध अर्थात् पाकक्रिया तैयारतुम्हारे गृह में होय तिसके भोजन करनेकी इच्छाकरताहूं ५० अब श्रीरामचन्द्र मुनिके वचन सुनिकै परम संतोषयुक्तहो सिद्ध अन्नको मुनिके भोजनके लिये समीप प्राप्तकरतेहुये ५१ और मुनि उस अमृततुल्य अन्नको भोजनकरके तृप्तहोकर अपनेआश्रमको फिर जातेहुये जब मुनि अपने आश्रमको चलेगये तब राम अपनेवचनको स्मरणकरतेहुये औ उस काल पुरुषके बचन स्मरणकरके बड़े उदास मन अति विह्वल शोक दुःखकरके पीड़ितहोतेहुये ५२ नीचेको मुखकरके दुःखितहै मन जिनका ऐसे होकर कुछ लक्ष्मणसे सन्मुख वचनकहने को न समर्थ होतेहुये ५३ अब श्रीरामचन्द्र मनकरके लक्ष्मणको मरेकेतुल्य जानके क्योंकि अपनी प्रतिज्ञाको अन्यथाकरनेको भी अशक्तहैं और स्नेह वशसे लक्ष्मणके बधकरनेको भी अशक्त इसहेतुसे सबके ईश्वर जो राम सो नीचेको मुखकरके मौन होजाते हुये ५४ तब लक्ष्मण दुःखमें निमग्न और मौन और निन्दित जो स्नेह बन्धन तिसको स्मरणकरतेहुये ऐसी अवस्थाको प्राप्त रामको देखिकै बचनबोलतेहुये ५५ कि हे रघुनन्दन मेरे निमित्तसे जो संताप तिसको त्यागदेउ और मुझको मारौ क्योंकि हे प्रभो कालकीगति ऐसीहीहै यह पहिलेही विचाररक्खी है ५६॥

मयिप्रीतिर्यदिभवेद्यद्यनुग्राह्यतातव॥ त्यक्त्वाशंकांजहिप्राज्ञमामाधर्मंत्यजप्रभो ५७ सौमित्रिणोक्तंतच्छ्रुत्वारामश्चलितमानसः॥ आहूयमंत्रिणःसर्वान्वसिष्ठंचेदमब्रवीत् ५८ मुनेरागमनंयत्तुकालस्यापिहिभाषितम्॥ प्रतिज्ञामात्मनश्चैवसर्वमावेदयत्प्रभुः ५९ श्रु

त्यागमस्यवचनंमंत्रिणःसपुरोहिताः॥ ऊचुःप्रांजलयःसर्वेराममक्लिष्टकारिणम् ६० पूर्वमेवहिनिर्दिष्टंतवभूभारहारिणः॥ लक्ष्मणेनावियोगस्तेज्ञातोविज्ञानचक्षुषा ६१ त्यजाशुलक्ष्मणंराममाप्रतिज्ञांत्यजप्रभो॥ प्रतिज्ञातेपरित्यक्तेधर्मोभवतिनिष्फलः ६२ धर्मेनष्टेऽखिलेरामत्रैलोक्यंनश्यतिध्रुवम्॥ त्वंतुसर्वस्यलोकस्यपालकोसिरघूत्तम ६३॥

और जो आपकी प्रतिज्ञा मिथ्याहुई तौ मुझको भी नरकहोगा इससे मेरेमें आपकी प्रीतिहै और अनुग्रहहै तौ हेस्वामिन् शंकाकोत्यागिकै मुझकोमारौ और धर्मको त्याग न करो ५७ अब ऐसा लक्ष्मणका वचनसुनिकै भाईके स्नेहसे चलितचित्त अर्थात् त्यागदिया भ्रातृस्नेह जिसने ऐसे जो श्रीरामचन्द्र सो सब मन्त्रियोंकोबुलाकर वशिष्ठसे यह वचनबोलतेहुये५८ कि जैसे दुर्व्वासामुनिका आगमनहुआ और जैसेकालपुरुषसे समागमहुआ और जैसेआपनेप्रतिज्ञाकीथी यह सब वशिष्ठमुनिसे कहतेहुये५९ तब पुरोहितसहित सब मन्त्री रामकावचन सुनके हाथजोड़के रामसे वचन बोलतेहुये ६० कि हे राम पृथिवीभारके दूर करनेको अवतार धारणकरतेहुये जो आप तिनको लक्ष्मणकावियोग पहिलेही से होनेवालाथा सो हमने ज्ञानदृष्टिसे जानाहीथा ६१ इससे हे राम लक्ष्मणको शीघ्रही त्यागकरिये और अपनी प्रतिज्ञाको त्याग न करिये क्योंकि आपकीप्रतिज्ञाकेत्यागमें धर्महीं निष्फलहोजायगा ६२ और हे राम धर्मके नाशहोनेमें तीनों लोक नाशको प्राप्तहोजायँगे जिससे हे रघूत्तम तुम सब धर्मके रक्षकहौ ६३॥

त्यक्त्वालक्ष्मणमेवैकंत्रैलोक्यंत्रातुमर्हसि॥ रामोधर्मार्थसहितंवाक्यंतेषामनिन्दितम् ६४ सभामध्येसमाश्रुत्यप्राहसौमित्रिमञ्जसा॥ यथेष्टंगच्छसौमित्रेमाभूद्धर्मस्यसंक्षयः ६५ परित्यागोवधोवापिसतामेवोभयंसमम्॥ एवमुक्तेरघुश्रेष्ठेदुःखव्याकुलितेक्षणः ६६ रामंप्रणम्यसौमित्रिःशीघ्रंगृहमगात्स्वकम्॥ ततोगात्सरयूतीरमाचम्यसकृतांजलिः ६७ नवद्वाराणिसंयम्यमूर्ध्निप्राणमधारयत्॥ यदक्षरंपरंब्रह्मवासुदेवाख्यमव्ययम् ६८ पदंतत्परमंधामचेतसासोभ्यचिंतयत्॥ वायुरोधेनसंयुक्तंसर्वेदेवाःसहर्षयः ६९ साग्नयोलक्ष्मणंपुष्पैस्तुष्टुवुश्चसमाकिरन्॥ अदृश्यंविबुधैःकैश्चित्सशरीरंसवासवः ७०॥

इससे एक लक्ष्मणको त्यागके तीनोंलोकोंकी रक्षाकरनेके योग्यहौ तब श्री राम धर्मार्थसहित उनमन्त्रियोंके पक्षपातरहित वचनसुनिकै ६४ सभाकेमध्य में सबकेप्रत्यक्ष वचनबोलतेहुये हे लक्ष्मण जहां तुम्हारी इच्छाहोय तहां जाउ

जिससे धर्मका नाश न होय ६५ इससे मैंने तुमकोत्यागकिया क्योंकि परित्याग और बध ये दोनों सत्पुरुषोंको समानही हैं ऐसा वचन जब रामनेकहा तौ राम वियोगके दुःखकरके व्याकुलहैं इन्द्रिय जिसकी ऐसा जो लक्ष्मण ६६ सो शीघ्रही रामको प्रणामकरके अपनेगृहको जातेहुये फिर तिसके उपरान्त सरयूतीर जाके वहां आचमनकरके और हाथजोड़के ६७ सो लक्ष्मण जब जो पवन के निकलनेकेद्वार तिनको रोंकके ब्रह्माण्डमें प्राणोंको धारणकरतेहुये फिर जो अक्षरे नाशरहित और वासुदेवहै नाम जिसका ऐसा जो परब्रह्म सबकाआधार परमपद ६८ तिसको शुद्धमनसे चिन्तवनकरतेहुये अर्थात् सो परब्रह्म मैंहूं ऐसी भावनासे मनोवृत्तिको तदाकार करतेहुये इसप्रकार जब प्राण निरोधयुक्त लक्ष्मण योगयुक्तहुये तब अग्निकरकेसहित सब देवता और महर्षि ६९ ये सब लक्ष्मणकेऊपर पुष्पोंकीवृष्टि और स्तुतिकरतेहुये और किसी देवताके देखनेमें नहींआयेऐसेजोशरीरसहितलक्ष्मणतिसकोइन्द्रस्वर्गलोकमेंप्राप्तकरतेहुये७०॥

गृहीत्वालक्ष्मणंशक्रःस्वर्गलोकमथागमत्। ततोविष्णोश्चतुर्भागन्तन्देवंसुरसत्तमः॥ सर्वेदेवर्षयोदृष्ट्वालक्ष्मणंसमपूजयन् ७१ लक्ष्मणेहिदिवमागतेहर्षोसिद्धलोकगतयोगिनस्तदा॥ब्रह्मणासहसमागमन्मुदाद्रष्टुमाहितमहाहिरूपकम् ७२॥

इत्यध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेउत्तरकाण्डेऽष्टमस्सर्गः ८॥

तब प्राप्तहुआ जो विष्णुकाचौथाभाग लक्ष्मण तिसकोसबदेवता और महर्षि देखके पूजनकरतेहुये७१जब लक्ष्मणरूप विष्णु स्वर्गमें प्राप्तहुये तब सिद्धलोक में रहनेवाले जे योगीजन ते ब्रह्माकरकेसहित पूर्वदेहको बड़ाभारी सर्परूपकरनेवाले जो लक्ष्मण तिसको अर्थात् शेषरूपधारी लक्ष्मणके देखनेकोआतेहुये७२॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेउत्तरकाण्डे-
भाषाटीकायामष्टमःसर्गः ८॥

श्रीमहादेवउवाच॥ लक्ष्मणन्तुपरित्यज्यरामोदुःखसमन्वितः॥ मन्त्रिणोनैगमांश्चैववशिष्ठञ्चेदमब्रवीत् १ अभिषेक्ष्यामिभरतमधिराज्येमहामतिम्॥अद्यचाहङ्गमिष्यामिलक्ष्मणस्यपदानुगः २ एवमुक्तेरघुश्रेष्ठेपौरजानपदास्तदा॥द्रुमाइवच्छिन्नमूलादुःखार्ताःपतिताभुवि ३ मूर्च्छितोभरतोवापिश्रुत्वारामाभिभाषितम्॥ गर्हयामासराज्यंसप्राहेदंरामसन्निधौ ४ सत्येनचशपेनाहन्त्वांविनात्रिदिवंभुवि॥ कांक्षेराज्यं रघुश्रेष्ठशपेत्वत्पादयोःप्रभो ५ इमौकुशलवौराजन्नभिषिंचस्वराघ

त्र ॥ कोशलेषुकुशंवीरमुत्तरेषुलवंतथा ६ गच्छन्तुदूतास्त्वरितंशत्रुघ्नानयनायहि ॥ अस्माकमेतद्गमनंस्वर्वासायशृणोतुसः ७ ॥

दो० । निर्मल यश विस्तारिकै नवमसर्ग घनश्याम ॥
जो नाशै कलिदोष सब राम गये निजधाम १

अब श्रीमहादेवजी पार्वतीजीसे कथावर्णनकरैहैं कि हे पार्वति अब लक्ष्मण को परित्यागकरके दुःखयुक्त जो श्रीराम सो मन्त्री और नगरके बनिये लोग और वशिष्ठ इनसबोंसे यहवचनकहतेहुये १ कि श्रेष्ठमति जो भरत तिसको सब पृथिवीके राज्यका अभिषेकमें करौंगा और अभी मैं लक्ष्मणका अनुगमनकरौंगा अर्थात् जहां लक्ष्मणगयेहैं तहां मैंभी जाऊँगा २ ऐसेवचन श्रीरामचन्द्रने जबकहे तब पुरवासी और देशकेमनुष्य जैसे जड़जिनकी कटिजाय और वे वृक्षपृथिवी में पड़ें तैसे दुःखकरके पीड़ित सब पृथिवीमें गिरपड़तेहुये ३ और राम के वचनसुनके भरत भी मूर्च्छितहोजातेहुये औ राज्यकी निन्दाकरतेहुये राम के समीप यह बोले ४ कि हे रघुवंशियों में श्रेष्ठ और हे स्वामिन् सत्यकी और आपकेचरणोंकी शपथकरके कहताहूं कि आपकेबिना न स्वर्ग के राज्यकी इच्छाकरताहूं और न पृथिवीके राज्यकी ५ औ हेराम ये दोनों कुश लव जो पुत्रहैं तिनका अभिषेक करिये तिसमें कोशलापुरी में कुशका औ उत्तर दिशामें लवका अभिषेक करिये ६ और शत्रुघ्नके लिवाआने को शीघ्रही दूत मथुराकोजाय और स्वर्गकेलिये हमारे सबकागमन शत्रुघ्न जिसमें सुनै ७ ॥

भरतेनोदितंश्रुत्वापतितारुलाःसमीक्ष्यतम् ॥ प्रजाश्चभयसंविग्ना रामविश्लेषकातराः ८ वशिष्ठोभगवान्राममुवाचसदयंवचः ॥ पश्य तातादरात्सर्वाःपतिताभूतलेप्रजाः ९ तासांभावानुगंरामप्रसादङ्कर्तुमर्हसि ॥ श्रुत्वावशिष्ठवचनन्ताःसमुत्थाप्यपूज्य च १० सस्नेहोरघुनाथस्ताःकिंकरोमीतिचाब्रवीत् ॥ ततःप्रांजलयःप्रोचुःप्रजाभक्त्यारघूद्वहम् ११ गन्तुमिच्छसियत्रत्वमनुगच्छामहेवयम् ॥ अस्माकमेषापरमार्थानिर्धर्मोयमक्षयः १२ तवानुगमनेरामहृद्गतानोदृढामतिः ॥ पुत्रदारादिभिःसार्द्धमनुयामोद्यसर्वथा १३ तपोवनंवास्वर्गंवापुरंवारघुनंदन ॥ ज्ञात्वातेषांमनोदार्ढ्यंकालस्यचवचनंयथा १४ ॥

ऐसे भरतके वचन सुनिकै सब प्रजा रामकेवियोगसे भयभीतहो पृथिवीमें गिरपड़तीहुई ८ तब वशिष्ठमुनि दया जिससेहोय ऐसावचन रामसेबोलतेहुये कि हे तात तुम्हारे स्नेहसे ये सबप्रजा पृथिवीमें पड़ीहैं तिनको देखिये ९ और

प्रेमके अनुसार इनकेऊपर अपनाप्रसाद करनेके योग्यहो तब राम यह वशिष्ठ का वचन सुनके उन सबप्रजाओंको उठाकरके औ सत्कार करके १० स्नेह युक्तहो यह कहतेहुये कि मैं तुम्हारा क्या उपकारकरों तब सबप्रजा हाथजोड़ के बड़ीभक्ति पूर्वक श्रीरामसे बोलतीहुईं ११ कि हेनाथ जहां आपजायाचाहते हौ तहां हम सब भी आपके पीछे २ गमनकरैंगे यहीहमारी परम प्रीतिहोगी और यही आपका अक्षय अर्थात् नाशरहित धर्म है १२ औ हेराम तुम्हारे अनुगमनमें अर्थात् संगचलनेमें हमारी दृढ़मतिहै और अपने पुत्रदारादिकों करके सहित सर्वथा हमआपके संगचलैंगे१३ चाहैं आप तपोबनको जायँ चाहोस्वर्ग को और चाहौ किसीनगर को परन्तु हम आपके संगही जावैंगे तब परमदयालु श्रीरामचन्द्र उनसबोंकी मनकी दृढ़ताको देखके और कालके वचनको भी स्मरण करके १४ ॥

भक्तम्पौरजनंचैवबाढमित्याहराघवः॥ कृत्वैवनिश्चयंरामस्तस्मिन्नेवाहनिप्रभुः १५ प्रस्थापयामासचतौरामभद्रःकुशीलवौ॥ अष्टौरथसहस्राणिसहस्रंचैवदंतिनाम् १६ षष्टिंचाश्वसहस्राणामेकैकस्मैददौबलम्॥ बहुरत्नौबहुधनौहृष्टपुष्टजनावृतौ १७ अभिवाद्यगतौरामंकृच्छ्रेणतुकुशीलवौ॥ शत्रुघ्नानयनेदूतान्प्रेषयामासराघवः॥ तेदूतास्त्वरितंगत्वाशत्रुघ्नायन्यवेदयन् १८ कालस्यागमनंपश्चादत्रिपुत्रस्यचेष्टितम्॥ लक्ष्मणस्यचनिर्याणंप्रतिज्ञांराघवस्य च १९ पुत्राभिषेचनंचैवसर्वंरामाचिकीर्षितम्॥ श्रुत्वातद्दूतवचनंशत्रुघ्नःकुलनाशनम् २० व्यथितोपिधृतिंलब्ध्वापुत्रावाहूयसत्वरः॥ अभिषिच्यसुबाहुंवैमथुरायांमहाबलः २१॥

स्नेहयुक्त जो पुरवासी तिनका अनुगमन अंगीकार करतेहुये और ऐसा निश्चयकरके राम उसीदिन १५ कुश लव जो पुत्र तिनको राज्य धनादिकदेके वहांसे विदा करतेहुये और आठहजार रथ और एकहजारहाथी १६ औ साठि हजार घोड़े इतनी इतनी सेना एक एकको देतेहुये फिर बहुतसेरत्न और धन इन करकेयुक्त और बहुतसे प्रसन्न और बलवान् पुरुषोंकरके वेष्टित दोनों कुश लव १७ श्रीरामको प्रणाम करके रामके वियोगके कारणसे बड़े कष्टसे जाते हुये फिर शत्रुघ्नके बुलानेको श्रीराम दूतोंको भेजतेहुये वे दूत शीघ्रही जाकर शत्रुघ्नसे सब वृत्तान्त कहतेहुये १८ जैसे काल पुरुषका आगमनहुआ फिर दुर्वासा ऋषिने आकर जो लक्ष्मणसे कहा और लक्ष्मणका परलोक गमन और फिर रामको भी परमधाम जानेकी प्रतिज्ञा १९ और पुत्रोंको राज्य का

अभिषेक यह सब रामको करनेका अभीष्ट और कुलनाश दूतोंके मुखसे शत्रुघ्न सुनके २० बड़े व्यथायुक्त भी हुये परन्तु धैर्यको धारणकर अपने पुत्रोंको बुलाकर शीघ्रही सुबाहुनाम पुत्रको मथुराके राज्यका अभिषेककर २१ ॥

यूपकेतुंचविदिशानगरेशत्रुसूदनः ॥ अयोध्यांत्वरितंप्रागात्स्वयं रामदिदृक्षया २२ ददर्शचमहात्मानंतेजसाज्वलनप्रभम् ॥ दुकूल युगसंवीतंऋषिभिश्चाक्षयैर्वृतम् २३ अभिवाद्यरमानाथंशत्रुघ्नो रघुपुंगवम् ॥ प्रांजलिर्धर्मसहितंवाक्यंप्राहमहामतिः २४ अभिषि च्यसुतौतत्रराज्येराजीवलोचन ॥ तवानुगमनेराजन्विद्धिमांकृतनि श्चयम् २५ त्यक्तुंनार्हसिमांवीरभक्तंतवविशेषतः ॥ शत्रुघ्नस्यदृढां बुद्धिंविज्ञायरघुनन्दनः २६ सज्जीभवतुमध्याह्नेभवानित्यब्रवीद्वचः अथक्षणात्समुत्पेतुर्वानराःकामरूपिणः २७ ऋक्षाश्चराक्षसाश्चैव गोपुच्छाश्चसहस्रशः ॥ऋषीणांदेवतानांचपुत्राराममस्यनिर्गमम् २८॥

और यूपकेतु पुत्रको विदिशानगरके राज्यका अभिषेक करके शीघ्रही आप शत्रुघ्न रामके देखनेकी इच्छाकर अयोध्याको आवतेहुये २२ और वहां तेज करके अग्निकेतुल्य प्रकाशमान और दो वस्त्रोंको धारणकरे और चिरजीवी वशिष्ठादि ऋषियों कहके वेष्टित २३ ऐसे महात्मा लक्ष्मीनाथ रामको शत्रुघ्न दर्शन करताहुआ और फिर प्रणामकरके महामति शत्रुघ्न धर्म सहित वचन बोलताहुआ २४ कि हेराजीवलोचन राम मैं अपनेराज्यमें पुत्रोंका अभिषेक करके आपकेपश्चात् गमनमेंकिया निश्चय जिसने ऐसा मुझको जानिये २५ इससे हे वीर मुझको त्यागकरनेकेयोग्य नहींहौ और आपका भक्तहौं इससे विशेषकरके त्यागकेयोग्य नहीं हौ तब श्रीरामचन्द्र शत्रुघ्नकी दृढबुद्धिको जानके २६ हे शत्रुघ्न मध्याह्नसमयमें तैयाररहो ऐसा वचन कहतेहुये अब उसी समयमें इच्छारूपधारी जे वानर ते बहुतसे आतेहुये २७ औ ऋक्ष औ राक्षस और गोपुच्छजातिके हजारोंवानर जे ऋषियोंके और देवताओंके पुत्र ते सब वानर राक्षस रामकी यात्राको सुनिके २८ ॥

श्रुत्वाप्रोचूरघुश्रेष्ठंसर्वेवानरराक्षसाः ॥ तवानुगमनेविद्धिनिश्चि तार्थान्हिनःप्रभो २९ एतस्मिन्नन्तरेरामंसुग्रीवोपिमहाबलः ॥ यथा वदभिवाद्याहराघवंभक्तवत्सलम् ३० अभिषिच्यांगदंराज्येआगतो स्मिमहाबलम् ॥ तवानुगमनेरामविद्धिमांकृतनिश्चयम् ३१ श्रुत्वा तेषांदृढंवाक्यंऋक्षवानररक्षसाम् ॥ विभीषणमुवाचेदंवचनंमृदुसाद

रम्॥ ३२ धरिष्यतिधरायावत्प्रजास्तावत्प्रशाधिमे ॥ वचनाद्राक्ष संराज्यंशापितोसिममोपरि ३३ नकिंचिदुत्तरंवाच्यंत्वयामत्कृतकारणात् ॥ एवंविभीषणंतूक्ताहनूमन्तमथाब्रवीत् ३४ मारुतेत्वंचिरंजीवममाज्ञांमामृषाकृथाः॥ जाम्बवन्तमथप्राहातिष्ठत्वंद्वापरांतरे ३५ ॥

बचन बोलतेहुये कि हेप्रभो आपके अनुगमन में निश्चयकरके हम आये हैं अर्थात् आपके संगजानेका निश्चयकरके यहां प्राप्तहुये हैं यह जानिये २९ अब उसी समयमें महाबली जो सुग्रीव सो प्राप्तहोके और भक्तबत्सल जो श्रीराम तिनको यथावत्प्रणाम करके बोलताहुआ ३० कि हे राम महाबली जो अंगद तिसको राज्यमें अभिषेककरके आपकेसंगका निश्चयकरके प्राप्तहुआ हौं सो जानिये ३१ अब श्रीरामचन्द्र सब ऋक्ष बानर राक्षसोंका दृढ़वचन सुनके तिनमें प्रथम बिभीषणसे आदरपूर्वक मधुरवचन बोलतेहुये ३२ हे बिभीषण जबतक पृथिवी है तबतक राक्षस राज्यकी प्रजाओंकी तू रक्षाकर अर्थात् तबतक लंकाका राज्यकर और तुझको मेरी शपथ है ३३ इससे कुछ उत्तर न देना और तेरी राज्यकी इच्छा नहींभी होय तौ मेरी प्रीतिकेकारण से राज्यकर अब श्रीराम इसप्रकार बिभीषण से कहके फिर हनुमान् से बोले ३४ हे पवनपुत्र तुम बहुतकालजीवो मेरी आज्ञा को झूंठामतकरो फिर जाम्बवान् से कहतेहुये कि हे जाम्बवान् तुमभी यहांपृथिवीमें अभी स्थितरहो और द्वापरयुगके अन्तमें ३५ ॥

मयासार्द्धंभवेद्युद्धंयत्किञ्चित्कारणान्तरे ॥ ततःतान्राघवःप्राह ऋक्षराक्षसवानरान् ३६ सर्वानेवमयासार्द्धंप्रयातेतिदयान्वितः ॥ ततःप्रभातेरघुवंशनाथेविशालवक्षासितकंजनेत्रः ॥ पुरोधसंप्राहवशिष्ठमार्य्ययांत्वग्निहोत्राणिपुरोगुरोमे ३७ ततोवशिष्ठोपिचकारसर्वंप्रास्थानिकंकर्ममहद्विधानात् ॥ क्षौमांबरोदर्भपवित्रपाणिर्महाप्रयाणायगृहीतबुद्धिः ३८ निष्क्रम्यरामोनगरात्सिताभ्राच्छशीवयातःशशिकोटिकांतिः ॥ रामस्यसव्येसितपद्महस्तापद्मागतापद्मविशालनेत्रा ३९ पार्श्वेथदक्षेरुणकंजहस्ताश्यामाययौभूरपिदीप्यमाना ॥ शास्त्राणिशस्त्राणिधनुश्चबाणाजग्मुःपुरस्ताद्धृतबिग्रहास्ते ४० वेदाश्चसर्वेधृतबिग्रहाश्चययुश्चसर्वेमुनयश्चदिव्याः ॥ माताश्रुतीनांप्रणवेनसाध्वीययौहरिंव्याहृतिभिःसमेता ४१ गच्छन्तमेवानुगता

सदानंदमयोसिपूर्णोजानासितत्त्वंनिजमैशमेकम् ५३ तथापिदासस्य ममाखिलेशकृतंवचोभक्तपरोसिविद्वन् ॥ त्वंभ्रातृभिर्वैष्णवमेकमाद्यं प्रविश्यदेहंपरिपाहिदेवान् ५४ यद्वापरोवायदिरोचतेतंप्रविश्यदेहंप रिपाहिनस्त्वम् ॥ त्वमेवदेवाधिपतिश्चविष्णुर्जानन्तिनत्वांपुरुषावि नामाम् ५५ सहस्रकृत्वस्तुनमोनमस्तेप्रसीददेवेशपुनर्नमस्ते ॥ पि तामहप्रार्थनयासरामःपश्यत्सुदेवेषुमहाप्रकाशः ५६ ॥

और उससमयमें सूर्यकेतुल्य करोड़ोंदेवविमानोंकरके आकाश आच्छादित होताहुआ और उनविमानोंकी कांतियों करके प्रकाशित आकाश प्रकाशमय होताहुआ ५० और जे कोई इसलोकमें पुण्यकरके ऊपरके लोकोंको गयेहैं तिनके समूहकरके भी आकाश आवृतहोताहुआ और सुगन्ध युक्त पवन उस समयमें चलतेहुये और पुष्पोंकी वृष्टिहोतीहुई ५१ और देवताओंके मृदंग बजते हुये और विद्याधर और किन्नर ये गान करते हुये और रामचन्द्र उस समय में पांवों करके एक बार तौ सरयू नदी के जल को स्पर्श करके फिर अनन्तशक्ति राम जैसे कोई पृथिवी में चलै ऐसे जलके ऊपर चलते हुये ५२ उस समयमें ब्रह्माजी हाथ जोड़ के रामसे बोलते हुये कि हे राम हेपरमात्मन् तुम परमेश्वरहौ और सदानन्दमय सबजगह परिपूर्ण जो विष्णु सो तुमहौ और एक अपने ऐश्वर्य रूपको यथार्थ आपही जानसक्तेहो ५३ और हेअखिलेश तौ भी दास जो मैंहूं तिसका वचन करते हुये और हेविद्वन् सबके जानने वाले जिससे तुम भक्तवत्सल हौ तिसते भाइयों करके सहित एक अद्वितीय सर्वकारण वैष्णव शरीर में प्रविष्ट होके सब देवताओं की रक्षा कीजिये ५४ अथवा और जो कोई देह आपको रुचै उसदेहमें प्रविष्टहो हमारी सबकी रक्षा कीजिये और सब देवताओंके अधिपति विष्णु तुम्हींहो और सिवाय मेरे और कोई पुरुष तुमको नहीं जानताहै ५५ और देवेश तुम प्रसन्न होउ और हजारवार मेरा नमस्कारहै और तिससे भी अधिक नमस्कारहै अब इस प्रकार ब्रह्माजीकी प्रार्थना से राम सब देवताओं के देखते देखते सब के नेत्रों को चुराते हुये ५६ ॥

मुष्णंश्चचक्षूंषिदिवौकसांतदाबभूवचक्रादियुतश्चतुर्भुजः ॥ शेषो बभूवेश्वरतल्पभूतःसौमित्रिरत्यद्भुतभोगधारी ५७ बभूवतुश्चक्रदरौ चदिव्यौकैकेयिसूनुर्लवणांतकश्च ॥ सीताचलक्ष्मीरभवत्पुरैवरामोहि विष्णुःपुरुषःपुराणः ५८ सहानुजःपूर्वशरीरकेनबभूवतेजोमयदिव्य मूर्तिः ॥ विष्णुंसमासाद्यसुरेन्द्रमुख्यादेवाश्चसिद्धामुनयश्चयक्षाः ५९

पितामहाद्याःपरितःपरेशं स्तवैर्गृणंतःपरिपूजयंतः॥ आनंदसंप्लावितपूर्णचित्ता बभूविरेप्राप्तमनोरथास्ते ६० तदाहविष्णुर्द्रुहिणंमहात्माएतेहिभक्तामयिचानुरक्ताः॥ यांतंदिवंमामनुयांतिसर्वेतिर्यक्शरीराअपिपुण्ययुक्ताः ६१ वैकुंठसाम्यंपरमंप्रयांतुसमाविशस्वाशुममाज्ञयात्वम्॥ श्रुत्वाहरेर्वाक्यमथाब्रवीत्कःसांतानिकान्यांतुविचित्रभोगान् ६२ लोकान्मदीयोपरिदीप्यमानांस्तद्भावयुक्ताःकृतपुण्यपुंजाः॥ येचापितेरामपवित्रनामगृणंतिमर्त्यालयकालएव ६३॥

उसी राम रूपकरके चतुर्भुज चक्रादियुक्त विष्णुरूपहोतेहुये और अत्यंत अद्भुत योगको धारण करने वाले जो लक्ष्मण सो उसीरूप करके ईश्वर तल्प रूप शेषरूप होते हुये ५७ और भरत शत्रुघ्न ये दोनों उसी रूपसे शंख चक्र रूप होते हुये और सीता तौ लक्ष्मी रूप प्रथमही होजाती हुई और राम जो हैं सो साक्षात् पुराण विष्णु प्रसिद्धही हैं ५८ इसप्रकार श्रीरामचन्द्र अनुजों करके सहित पूर्वरूप करके तेजोमय दिव्य मूर्ति होते हुये अब उस समयमें इन्द्रको आदिलेके सब देवता और सिद्ध औ मुनि औ यक्ष ५९ और ब्रह्मादिक सब देवता ये सब सबसे परे ईश जो विष्णु तिसको प्राप्त होके स्तोत्रों करके स्तुति करते हुये और पूजन करते हुये और आनन्द में मग्न हैं संपूर्ण चित्त जिन्होंके ऐसे सब प्राप्त मनोरथ होतेहुये अर्थात् सबका मनोरथ परिपूर्ण होताहुआ ६० अब उस समयमें विष्णु भगवान ब्रह्मासे कहते हुये कि ये सब अयोध्यावासी मेरे भक्तहैं और मेरे में परमप्रीति युक्तहैं और जब मैं चलताहूं तौ मेरे संग संग पीछे चलते हुयेहैं इनमें जे तिर्यक् शरीरहैं अर्थात् कूकर आदि जे हैं ते भी पुण्ययुक्त हैं ६१ इससे बैकुण्ठ के समान जो लोक है तिसमें मेरी आज्ञासे तुम इनको प्राप्तकरो ऐसे हरिके वचन सुनके ब्रह्मा बोले कि चित्रविचित्रहैं भोग जिन्होंमें ऐसे सांतानिक नामकरके जे लोक हैं तिनको ये प्राप्त होयँ ६२ और जे लोक मेरे लोकोंसे भी ऊपर प्रकाशमान हैं तिनको ये सब प्राप्त होंगे औ करेहैं पुण्योंके समूह जिन्होंने ऐसे जो आपकी भक्ति करके युक्त हैं और ये पुरुष मरणसमय मेंही आपके अतिपवित्र नामको उच्चारण करतेहैं ६३॥

अज्ञानतोवापिभजंतुलोकांस्तानेवयोगैरपिचाधिगम्यान्॥ ततोतिहृष्टाःहरिराक्षसाद्यास्प्रष्ट्वाजलंत्यक्तकलेवरास्ते ६४ प्रपेदिरेप्राक्तनमेवरूपंयदंशजात्रक्षहरीश्वरास्ते॥ प्रभाकरंप्रापहरिप्रवीरःसुग्रीवआदित्यजवीर्यवत्वात् ६५ ततोविमग्नासरयूजलेषुनराःपरित्य

ज्यमनुष्यदेहम् ॥ आरुह्यदिव्याभरणाविमानंप्रापुश्चतेसांतनिका स्यलोकान् ६६ तिर्यक्प्रजाताअपिरामदृष्टाजलंप्रविष्टादिवमेवया ताः ॥ दिदृक्षवोजानपदाश्चलोकारामंसमालोक्यविमुक्तसंगाः ६७ स्मृत्वाहरिंलोकगुरुम्परेशंस्पृष्ट्वाजलंस्वर्गमवापुरंजः ॥ एतावदेवो त्तरमाहशम्भुःश्रीरामचन्द्रस्यकथावशेषम् ६८ यःपादमप्यत्रपठे त्सपापाद्विमुच्यतेजन्मसहस्रजातात् ॥ दिनेदिनेपापचयंप्रकुर्वन्प ठेन्नरःश्लोकमपीहभक्त्या ६९ विमुक्तसर्वाघचयःप्रयातिरामेतिसा लोक्यमनन्यलभ्यम् ॥ आख्यानमेतद्रघुनायकस्यकृतंपुराराघव चोदितेन ७० ॥

श्रो जे जानके वा बिना जानेभी आपका अनन्यहोके भजन करते हैं तेभी योगियों करके प्राप्तहोने के योग्यजो लोकहैं तिनको प्राप्त होतेहैं अब तिसके उपरान्त अत्यन्त प्रसन्न जे वानर और राक्षसादि ते सरयू के जलको स्पर्श करतेही शरीरका त्याग करके ६४ जिस जिस देवता के अंशसे जोजोवानर और ऋक्षउत्पन्न हुये थे उस उस देवताही के स्वरूपको प्राप्तहोतेहुये तिसमें सूर्य के वीर्यसे उत्पन्नहुआ जोसुग्रीवसो सूर्यको प्राप्तहोताहुआ अर्थात् सूर्यहीका रूप होजाताहुआ ६५ फिर तिसके उपरान्त सरयूजल में स्नानकरतेही अयो-ध्यावासी मनुष्य देहको त्याग करके दिव्य आभूषणवस्त्रादिकों करके युक्त दिव्य अर्थात् देवताओंका रूपधारणकरके बिमानके ऊपर चढ़के सान्तानिक लोकों को प्राप्त होतेहुये ६६ और तिर्यग्योनि में भी अर्थात् कूकर शूकरादि योनिमें उत्पन्न हुये जीव जे रामने देखेथे तेभी सरयू जल में स्नानकरतेही शरीर त्याग करके स्वर्ग लोकको जातेहुये और उससमयमें रामके देखनेकी इच्छाकरके जेमनुष्य देश देशान्तरके आयेथे तेभी सबगृहादिकों की प्रीतिको त्यागके ६७ परेशजो लोकका गुरु राम तिसकास्मरणकर सरयूजलमें स्नान करि स्वर्गलोक को प्राप्तहोतेहुये अब इतना श्रीमहादेवजी श्री रामचन्द्रकी कथाका अवशिष्टभाग अर्थात् बाकीरहाभाग इस उत्तरकाण्ड में कहते हुयेहैं ६८ अब जो पुरुष चौथाई श्लोक भी अध्यात्मरामायण का पढ़ताहै सोहज़ार जन्मों के पापों से छूटजाताहै और जो दिन दिन नियम से एकश्लोक भी भक्तिकरके पढ़ताहै सो नित्य कियेहुये पापसे छूटजाताहै ६९ और जबपापों से छूटके शुद्ध शरीर हुआ तौ राम के लोक को प्राप्तहोताहै और श्रीरामचन्द्र की प्रेरणासे श्रीमहादेवजी ने ७० ॥

महेश्वरेणाप्तभविष्यदर्थंश्रुत्वातुरामःपरितोषमेति ॥ रामायणंका

व्यमनंतपुण्यंश्रीशंकरेणाभिहितंभवान्यै ७१ भक्त्यापठेद्यःशृणुयात्सपापैर्विमुच्यतेजन्मशतोद्भवैश्च ॥ अध्यात्मरामंपठतश्चनित्यंश्रोतुश्चभक्त्यालिखितुश्चरामः ७२ अतिप्रसन्नश्चसदासमीपेसीतासमेतःश्रियमातनोति ७३ रामायणंजनमनोहरमादिकाव्यंब्रह्मादिभिःसुरवरैरपिसंस्तुतंच ॥ श्रद्धान्वितःपठतियःशृणुयात्तुनित्यंविष्णोःप्रयातिसदनंसविशुद्धदेहः ७४ ॥

इत्यध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेउत्तरकाण्डेनवमःसर्गः ९ ॥

अध्यात्मोत्तरकांडेसर्गाग्रहसंख्ययापरिक्षिप्ताः ॥ ऋतुशतसंख्याश्लोकाःपुराणसंख्याश्चपुरहरेणोक्ताः १ पार्वत्यैपरमेश्वरेणगदितेह्यध्यात्मरामायणे कांडैःसप्तभिरन्वितेतिशुभदेसर्गाश्चतुःषष्टिकाः ॥ श्लोकानांतुशतद्वयेनसहितान्युक्तानिचत्वारिवै साहस्राणिसमाप्तितश्रुतिशतेषूक्तानितत्त्वार्थतः २ ॥ समाप्तम् ॥

यह भविष्यदर्थयुक्त अर्थात् होनेवाला जो उत्तर रामचरित्र तिसकरके युक्त आदिसे ले के संपूर्ण अध्यात्मरामायण रूप रामचरित्र कहा तिसकोसुनके रामप्रसन्नहोते हैं अर्थात् सर्वव्यापक जो राम तिसको यहरामायण हम सुनाते हैं ऐसे मनसे संकल्पकरके जो रामकी प्रीतिके अर्थ जोसंपूर्ण रामायण को बांचताहै उसके ऊपर राम प्रसन्न होते हैं और श्रीमहादेव जी ने पार्वती के अर्थ कहा ७१ जो परमपुण्यका देनेवाला उत्तम काव्य अध्यात्मरामायण तिसको भक्तिसे जो सुनता है सो सैकड़ों जन्मों के पापों से छूटजाताहै और जो अध्यात्मरामायण को नित्यपढ़ता है अथवा जो कोई भक्तिकरके सुनता है अथवा जो कोई लिखताहै ७२ तिसके ऊपर राम अतिप्रसन्न होकर सदा समीप बास करतेहुये लक्ष्मी का बिस्तारकरते हैं अर्थात् उस पुरुष को कभी लक्ष्मी परित्याग नहीं करती ७३ ब्रह्मादि देवों करके स्तुति कियागया और मनुष्यों के मनके हरनेवाला ऐसाजो अत्युत्तम आदि काव्य रामायण तिसको श्रद्धा युक्त जो पुरुष नित्य पढ़ता है अथवा सुनता है सो शुद्ध चित्त होके विष्णु के लोकको प्राप्त होता है ७४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादे उत्तरकाण्डेश्रीमद्रुक्मिणीगर्भजबुधतुलारामसूनुत्रिपाठ्युमादत्तकृतौभाषाटीकायांनवमःसर्गः ९ ॥

समाप्तश्चायमुत्तरकाण्डःॐतत्सदिति ॥

मुंशी नवलकिशोर (सी,आई,ई)के छापेखानेमें छपी एप्रिल सन् १८९३ ई० ॥

विज्ञापनम् ॥

दोहा ॥

चन्द्र निगम अरु अङ्क शशि संवत विक्रम भूप ॥
कातिक सुदिहरितिथिसुभग भृगुदिन पूरणरूप १
चिरजीवो यह जगत में मुन्शी नवलकिशोर ॥
जिहि निदेश ते कीन्ह मैं रामचरित चितचोर २
यद्यपि कविवर भणित बहु नाना छन्द प्रबन्ध ॥
तदपि रामगुण कथन में कौन करै मतिबन्ध ३
जैसे कामी कामिनी गुण गण सुनि हुलसात ॥
तैसे हरिगुण कथन में हरिजन नहिं अलसात ४
यदपि मन्दमति मोर अति गुणगण सागर राम ॥
तदपि ढिठाई दीनहित लखि हरषे हैं श्याम ५
देव गिरामय शिव कह्यो अध्यातम अति गूढ़ ॥
नर भाषामय कियो सुख लहैं प्रेम आरूढ़ ६
यद्यपि वेद त्रिकाण्ड हैं सबजीवन सुख हेतु ॥
तदपि ज्ञानतिनमहँ प्रबलनित्यातम सुखहेतु ७
तिहि ते मैं वेदान्त रस शङ्कर मत अनुसार ॥
अवगाहन कर रच्यो यह भाषामय सब सार ८
यदपि ज्ञान सुख हेतु है सकलशास्त्रयह शोर ॥
तदपि भक्तिबिन सुलभनहिं यहमतसर्वनिचोर ९
ताते प्रतिपद राम की भक्ति कही बहु बार ॥
शंकर ने सोइ मैं कही बोध हेतु सुखसार १०
अध्यातम भाषा रची उमादत्त भूदेव ॥
तिहिते सबजन लहौ सुख सो पुरवो रघुदेव ११

इति

कोभाषा और संस्कृत भी पढ़नेकी शक्ति अच्छीतरहसे होजावै तिस पीछे अनुभूतिस्वरूपाचार्य्य कृत सारस्वत पुस्तकको इसभांतिसे कि जिस तरह फ़र्रुखाबाद निवासि स्वर्गवासि पण्डितवर उमादत्तशास्त्री और उन्नाम प्रदेशान्तर्गत मुरादाबादनिवासि पं० शक्तिधरजीने इसका अर्थ कियाहै प्रारम्भकरावें इसमें उक्त पण्डितजनोंने प्रथम मूल, पदच्छेद, अन्वयकरके भाषामें इसभांतिसे अर्थ कियाहै कि जिसमें बालकोंको सहजहीमें ज्ञानहोकर पूर्ण बोधहोजावे इसभांति संज्ञाप्रक्रिया, स्वरसन्धि, प्रकृतिभाव, व्यञ्जनसन्धि, विसर्गसन्धि, स्वरान्तपुँल्लिग, स्वरान्तस्त्रीलिंग, स्वरान्तनपुंसकलिंग, हसान्तपुँल्लिग, हसान्तस्त्रीलिंग, हसान्तनपुंसकलिंग, युष्मद् अस्मद् शब्द, अव्यय, स्त्रीप्रत्यय, कारक, समास और तद्धितको पढ़ाकर तिसपीछे सिद्धान्तचन्द्रिका और रघुवंश और कुमारसम्भवादि काव्योंको पढ़ावें इसभांतिके पढ़ानेसे बहुतशीघ्र विद्वान् होसक्ते हैं यही सोचकर श्रीभार्गवबंशावतंश मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) ने बहुतसा द्रव्यव्ययकर उक्त पण्डितों से टीका रचायाहै आशाहै कि जो विद्यार्थी इसपुस्तकको क्रमसे पढ़ैंगे वे शीघ्रही पूर्ण बोधहोकर विद्वान् होजावेंगे अन्यथा पढ़ाने से बहुतसमय लगकर बोध नहीं होताहै—क्योंकि बहुधा यही पण्डितों की रीतिहै कि वे स्वर व्यञ्जन नाममात्रको बालकों को पढ़ाकर व्याकरणका प्रारम्भकरादेतेथे और बालकोंको तोतेकी तरहसे कण्ठहीकरातेथे जब उन बालकों को अच्छीभांति अक्षरके पहिचानका ज्ञान नहीं है तो वे कैसे पूर्ण विद्वान् रट २ के पढ़ने से होसकेथे—आशाहै कि जो लोग इसपुस्तक के क्रम से व्याकरणका अध्ययन करेंगे वे थोड़ेही समयमें स्वल्प परिश्रमसे विद्वान् होजावेंगे—जब व्याकरणमें विद्वान् होजावेंगे तो उनको ज्योतिष वैद्यक और अठारहो पुराण काव्यादि में कुछ भी परिश्रम न करना पड़ेगा थोड़ेही परिश्रम करने में महान् विद्वान् होजावेंगे—

केनिंगकालेजके संस्कृताध्यापक श्रीपण्डित गंगाधरशास्त्रीनेभी इसपुस्तकको अवलोकनकर सार्टीफ़िकट के तौरपर अपनी सम्मति प्रकटकी है कि निश्चय यह पुस्तक उत्तम और बालकों को हितैषी है ॥

मिताक्षरा सटीकका विज्ञापन ॥

संसार में मर्यादा स्थितरखने के अभिप्राय और सर्वसाधारण के उपकार दृष्टि से भगवान् याज्ञवल्क्यने अनेक प्राचीन आचार्यों और महर्षियों के मत लेकर मिताक्षरानामक धर्मशास्त्र "आचार" "व्यवहार" और " प्रायश्चित्त नामक तीनभागों में निर्माण कियाथा। यह "याज्ञवल्क्यस्मृति" भारतवासी

मात्र चतुर्वर्णोंका मुख्य धर्मशास्त्रहै और इसीके अनुसार यहां के निवासियों के धर्मसम्बन्धी समस्तकार्य होते चलेआते हैं ॥

आचाराध्याय नामक प्रथमखण्ड में गर्भाधान से लेकर मरणपर्यन्त के समस्त संस्कार चतुर्वर्णों और विविध जातियों की उत्पत्ति ब्राह्मण आदि चतुर्वर्णों और ब्रह्मचर्यादि चतुराश्रमोंके धर्माचरण, साधारण शिक्षा, आठप्रकार के विवाहों के लक्षण, भक्ष्याभक्ष्य पदार्थोंका विवेक, दान लेने देनेकी विधि, सर्वप्रकार के श्राद्धोंका निर्णय, नवग्रहों की शांति राजाओं के धर्म आचारादि अनेक विषय विस्तारपूर्वक वर्णन किये गये हैं ॥

"व्यवहारकाण्ड" में न्यायसभा निरूपण, सबप्रकारके दीवानी और फौजदारी मुक़द्दमों के निर्णय करने की विधि; भूमिसम्बन्धी झगड़ोंका विस्तार; ऋणलेने, देने, गिरवीरखने और व्याज लगानेकी विधि; धरोहरका विवाद; साक्षियों के सत्यासत्यका विचार और दण्ड; दस्तावेजोंका विचार; खरे, खोटे और कमतौल वस्तुओंकाविचार, विपदेनेवालेका विचार; नातेदारीकावृत्तान्त; हिस्साबांटकी विधि; संस्कार विहीन भाई-बहिनों के संस्कारके अधिकार और और विधि; १२ प्रकारके पुत्रोंका वर्णन; वारिस होनेका विचार; दत्तकलेनेकी विधि; स्त्रीधन और कन्याधनका निर्णय सीमाके झगड़ोंका निपटारा; पशु व्यतिक्रम विचार, परधन, परस्त्रीहरण आदिका विचार; देय अदेय दानोंकाविचार; वस्तु क्रय विक्रय विचार; सेवाधर्म विचार; राजसम्बन्धी गूढ़संवित सभय संकेतों के व्यतिक्रमका? विचार वेतन, मजूरी, किराया आदि विषयक झगड़ों का विचार; जुवारी आदि दुराचारियोंका विचार; गाली-गलौज तथा मार-पीट का विचार; चोर, डाकू, लुटेरे आदिकों का विचार और नाना अपराधों और कुकर्मों तथा राजाश्रय नाना व्यवहारोंका अति विस्तार पूर्वक वर्णन है ॥

प्रायश्चित्तकाण्ड में जलदान प्रकार व अशौच सूतक दिनावधि कथन व सद्यः शौच व्यवस्था जगदुत्पत्ति प्रपंच विस्तार व वुद्ध्यादि समवाय व प्रायश्चित्तकरणदोष व नरकादिनामस्वरूप व अतिपातक और पातकादिलक्षणभेद व सकाम सुरापानादि महापातक प्रायश्चित्तकथन व स्वर्णापहारादिप्रायश्चित्त व अवकृष्टवध प्रायश्चित्त कथन और प्रत्येक वातों के स्वरूप व नियमादि वर्णन कियेगयेहैं परन्तु यह विस्तृतग्रन्थ संस्कृतमें होनेकेकारण सर्वसाधारण के देखनेमें न आताथा इसकारण भारतवासी पुरुषों के उपकारार्थ यन्त्रालयाध्यक्ष श्रीमान् मुन्शी नवलकिशोरने वहुतसाधन पारितोषिककी रीतिपर देकर आगरा निवासी मर्यादा प्रिय पण्डित दुर्गाप्रसाद शुक्लसे सरलसाधारण भाषामें अनुवादकराय स्वयन्त्रालयमें मुद्रितकराया आशा है कि जो कोई मर्य्यादा प्रिय पुरुष इसको दृष्टिगोचर करेंगे वह प्रसन्नहोकर इसको ग्रहण करेंगे और यन्त्रालयाध्यक्षको धन्यवाददेंगे--